सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

८२

(१ नवम्बर, १९४५ – १९ जनवरी, १९४६)

सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

८२

(१ नवम्बर, १९४५ – १९ जनवरी, १९४६)

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार

भूमिका

प्रस्तुत खण्डकी अवधिमें (१ नवम्बर, १९४५–१९ जनवरी, १९४६) देश और शासकों दोनोंके लिए ही प्रत्याशा और व्यग्रता बनी रही। आम लोगोंसे सम्बन्धित राजनीतिक गतिविधि तो सितम्बरमें वाइसराय द्वारा घोषित कार्यक्रमके अनुसार केन्द्रीय विधान-सभा तथा प्रान्तीय विधान-मण्डलोंके चुनावों तक ही सीमित रही। इन चुनावोंके बाद एक संविधान निर्माण समितिका गठन किया जाना था, जिसमें मुस्लिम लीगका सहयोग मिल भी सकता था और नहीं भी। इस समितिका कार्य स्वतन्त्र भारतके संवैधानिक ढाँचेको तैयार करना था। उसे भी मुस्लिम लीग स्वीकार या अस्वीकार कर सकती थी। यह सब देखते हुए इस पूरी अवधिमें ब्रिटेनके संविधान-विशेषज्ञ (जैसाकि 'ट्रान्सफर ऑफ पॉवर', जिल्द ६ के दस्तावेजोंसे प्रकट होता है) एक ऐसा वैकल्पिक फार्मूला तैयार करने में लगे रहे जो जिन्नाको मान्य हो सके। क्योंकि उनके विचारसे जिन्नाको सन्तुष्ट करना जरूरी था।

एक बात तो बिलकुल स्पष्ट थी कि अब ब्रिटेनकी सरकार पहलेकी तरह भारतपर शासन नहीं कर सकती थी। स्थिति बहुत तेजीसे उनके हाथोंसे निकलती जा रही थी और उन्हें यह डर था कि कहीं कोई व्यापक विद्रोह न हो जाये। फील्ड मार्शल ऑचिन्लेकके अनुसार अगर ऐसा होता तो भारतपर फिर से विजय प्राप्त करने के लिए अत्यन्त संगठित अभियान जरूरी हो जाता। २१ तथा २३ नवम्बरको कलकत्तामें सरकार विरोधी प्रदर्शनकारियोंकी भीड़को तितर-बितर करने के लिए पुलिसको कमसे-कम १४ राउंड गोलियाँ चलानी पड़ीं। इस घटनामें ३० व्यक्ति मारे गये और लगभग २०० घायल हो गये।

देश-भरमें आर्थिक संकट बढ़ता ही जा रहा था। बम्बई, बंगाल, बिहार और संयुक्त प्रान्तमें तो खाद्यान्नकी भारी कमी थी। बंगालके एक बड़े हिस्सेमें लोग बाढ़ तथा महामारीसे त्रस्त थे (पृ० २९२-९३)। इस खण्डमें प्रस्तुत अवधिमें अधिकांश समय—लगभग सात सप्ताह गांधीजी बंगालमें ही रहे। अपनी यात्राके बारेमें उन्होंने कहा, "मैं सिर्फ इसलिए आया हूँ कि बंगालके अकाल-पीड़ित लोगोंको अपनी उपस्थितिसे जो भी सांत्वना दे सकूँ वह दूँ और उनके कष्टोंको दूर करने के लिए जो-कुछ कर सकता हूँ, करूँ" (पृ० १५६)। गवर्नर केसीसे लगातार हुई अपनी बातचीतमें उन्होंने पीड़ित जनताको राहत पहुँचाने के साधनों तथा उपायोंपर जोर दिया। उन्होंने नदीके जलको व्यर्थ जाने देने के बजाय उसे उपयोगमें लाने के गवर्नरके प्रस्तावका स्वागत किया, लेकिन यह भी कहा कि यह एक दीर्घकालीन योजना है। "इस बीच लाखों लोगोंको कामके समयके हर पलका अपने

लाभके लिए समुचित उपयोग करने की शिक्षा देनी चाहिए" (पृ० १९३)। इसके लिए गांधीजी ने खादी योजनाका सुझाव दिया, जिसे सरकारको रचनात्मक कार्यक्रमोंमें संलग्न कार्यकर्ताओंके सहयोगसे कार्यान्वित करना था, "ताकि करोड़ों ग्रामवासियोंके खाली समयको काममें लगाकर उनमें से हर व्यक्तिको लगभग तत्काल राहत दी जा सके" (पृ० २१४)। उन्होंने यह भी संकेत किया कि जैसे गवर्नरकी योजनामें सवाल बर्बाद होने वाले जलके उपयोगका है, वैसे ही यहाँ प्रश्न उस श्रमको उपयोगमें लाने का है जिसका उपयोग नहीं हो रहा है (पृ० २१४)।

इसी बर्बाद होने वाले श्रमको गांधीजी रचनात्मक कार्यक्रमोंमें लगाना चाहते थे। उनका विश्वास था कि यही "पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने का सत्यमय और अहिंसक मार्ग है। उसके पूर्णतया कार्यान्वयनका अर्थ पूर्ण स्वराज्य है" (पृ० ७०)।

उन्होंने बंगालकी जेलोंमें बन्द राजनीतिक कैदियोंके मामलेमें भी गवर्नरसे बातचीत की। उन्होंने बताया कि "सभी दस वर्षसे अधिककी सजा भुगत चुके हैं और उनमें से अधिकांश तो पन्द्रह वर्षसे भी अधिककी" (पृ० २२९)। इनमें वे कैदी भी शामिल थे जिनपर मुकदमा ही नहीं चला, उन्हें केवल "एकपक्षीय गोपनीय प्रमाणोंके आधारपर ही बन्दी बना लिया गया था"। इन सबकी रिहाईके लिए गांधीजी ने गवर्नरपर दबाव डाला। गांधीजी कुछ समय निकालकर अलीपुर तथा डमडमकी जेलोंमें कैद ऐसे ही कुछ बन्दियोंसे मिलने भी गये। वहाँके अधिकारियोंके अत्याचारपूर्ण व्यवहारके खिलाफ कई शिकायतें थीं — उदाहरणके तौरपर फेनी ताल्लुकाके ९८ गांवोंमें से २२ गांवोंको, जिन्हें युद्धके दौरान खाली करवा लिया गया था, ग्रामवासियोंको लौटाने में देरी (पृ० ४०६), कुछ सैनिकोंके उन्मत्त होकर लूट-पाट, आगजनी और बलात्कारकी घटनाएँ (पृ० ४१२), किसानोंको आलूके बीज उपलब्ध न होने जैसे तथा इसी तरहके अन्य कई मामले। इन सभी शिकायतोंपर तुरन्त ध्यान देने की आवश्यकता थी और इसके लिए गांधीजी ने गवर्नरसे हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया। गांधीजी ने गवर्नर केसीके साथ गवर्नमेन्ट हाउसमें कमसे-कम ६ बार मुलाकात की, जिसके बारेमें गवर्नर "हर रात" वाइसरायको गांधीजी के अनोखे विदाई-दृश्यके बारेमें इस प्रकार बताते थे कि हर मुलाकातके बाद "हमारे लगभग १५० कर्मचारी (मुसलमान और हिन्दू) भवनके दरवाजे तथा बरामदेमें गांधीजी के दर्शन तथा उनके जोरदार अभिवादनके लिए पंक्तिबद्ध होकर खड़े रहते थे" ('ट्रान्सफर ऑफ पॉवर', जिल्द ६, पृ० ६१७)। गांधीजी ने वाइसरायकी बंगाल-यात्राका फायदा उठाया और १० दिसम्बरको उनसे मिलने गये।

बंगालमें गांधीजी का अधिकांश समय तो लोगोंसे मिलने-जुलने में ही बीत जाता था, जिनसे वे प्रतिदिन संध्या-प्रार्थनाके बाद मिलते थे। इनमें राजनीतिक तथा सामाजिक कार्यकर्ताओंके साथ-साथ रचनात्मक कार्यक्रममें संलग्न कार्यकर्ता भी होते थे। प्रार्थना तथा अन्य सार्वजनिक सभाओंमें हजारोंकी संख्यामें एकत्रित लोगोंसे

गांधीजी शान्त तथा अनुशासित रहने (पृ० २६४-६५, २९३ आदि), चरखा चलाने, खादी अपनाने (पृ० २६४-६५, २९३, ३१५-१६, ३५४ आदि), निर्भय रहने (पृ० २७२-७३) तथा ईश्वरमें विश्वास रखने का आग्रह करते थे। अपनी एक सभामें उन्होंने कहा, "आज हम सब लोग अन्धकारसे घिरे हुए हैं। ईश्वरसे हमारी प्रार्थना है कि वह हमें अन्धकारसे प्रकाशकी ओर, असत्यसे सत्यकी ओर ले जाये और हमें शान्ति मिले — शान्ति न केवल भारतके लिए, बल्कि समस्त संसारके लिए" (पृ० १६४-६५)।

इस दौरान 'हरिजन' साप्ताहिकोंका प्रकाशन स्थगित रहा और गांधीजी का लेखन ज्यादातर असंख्य पत्रोंके उत्तर देने तक ही सीमित रहा। यहाँ तक कि इस खण्डके कुल ५९९ शीर्षकोंमें से पत्र, टिप्पणी, तार आदिकी ही संख्या ४९३ है, जबकि भाषणोंकी रिपोर्ट, भेंट, बातचीतकी संख्या कुल मिलाकर ७२ है। इनमें से कुछएक पत्र तो वाइसरायके निजी सचिवों जेन्किन्स तथा बादमें एबेल को लिखे गये हैं, जो शीलभद्र याजी, राममनोहर लोहिया तथा प्रभुदयाल विद्यार्थी आदि राजनीतिक कैदियोंके साथ जेलमें हुए दुर्व्यवहारसे सम्बन्धित है (पृ० ३७, १२०-२१, १९०-९१, २४३), कुछ पत्र स्वतन्त्रता सेनानियोंके मृत्यु-दण्डकी सजा कम कराने के सम्बन्धमें हैं। साथ ही बर्मा तथा मलाया भेजे जाने वाले कांग्रेसके चिकित्सा दलको, जिसे सरकारने जाने की अनुमति नहीं दी, स्वीकृति दिलाने (पृ० ४०३) और जवाहरलाल नेहरू तथा कांग्रेसके अन्य नेताओंपर हिंसा भड़काने का आरोप लगाने से सम्बन्धित पत्र भी हैं। इस आरोपको विषय बनाकर गांधीजी का वाइसराय तथा भारत मन्त्रीके साथ काफी पत्र-व्यवहार हुआ और ऐसी अफवाहें भी थीं कि इन नेताओंको शायद गिरफ्तार कर लिया जायेगा। नेहरूकी जोरदार हिमायत करते हुए गांधीजी ने जेन्किन्सको लिखा, "भूल जाओ और क्षमा कर दो" का सिद्धान्त "केवल सेना द्वारा युद्धमें किये गये अत्याचारों पर ही लागू हो सकता है, लेकिन लोगोंकी अक्षम्य हत्या, नृशंसता, घूसखोरी और भ्रष्टाचार आदिके सम्बन्धमें निश्चय ही लागू नही हो सकता... यदि सरकार का दामन पाक है तो उसे प्रचारसे डरने का कोई कारण नही है" (पृ० ७२)।

आजाद हिन्द फौजके भूतपूर्व सैनिकोंके मुकदमेके सिलसिलेमें भी गांधीजी की वाइसरायके साथ लिखा-पढी चलती रही और जब उनके एक पत्रको समाचारपत्रोंने "तोड़-मरोड़कर पेश किया" तो वे चिन्तित हो उठे और उन्होंने जेन्किन्सको लिखा, "जनतापर अथवा सरकारपर मेरा जो भी प्रभाव है वह विशुद्धतः नैतिक है" (पृ० ६-७)।

उस समय गांधीजी को चरखा संघ तथा कस्तूरबा निधिके कार्योंसे सम्बन्धित प्रबन्धात्मक समस्याओंको भी काफी समय देना पड़ा (पृ० ३२-३३, ३९, ५४, २४८, २७७ आदि)। यह समस्या थोड़ी-सी जटिल भी हो गई, क्योंकि कुछ कार्यकर्ताओंने दूसरोंके उकसाने पर या फिर स्वयं ही केन्द्रीय विधान-सभाके चुनावो

में भाग लेने का निर्णय कर लिया था। इस सम्बन्धमें गांधीजी के विचार बिलकुल स्पष्ट थे। उनका कहना था कि रचनात्मक कार्योंसे जुड़े लोगोंको सक्रिय राजनीतिसे अपने-आपको अलग रखना चाहिए। क्योंकि वे एक समयमें दो काम नहीं कर सकते। उन्होंने लिखा कि चरखा संघका कार्यकर्ता "सच्चा मतदाता रहेगा और कांग्रेसकी तरफसे जो खड़ा किया जाता है उसको मत देगा, लेकिन वह दूसरोंको मनाने की झंझटमें नहीं पड़ेगा। उसकी ओरसे सभाओंमें व्याख्यान नहीं देगा।...एक ही आदमी दो घोड़ोंपर सवारी कैसे करे? जो चरखा संघमें जाता है वह सारा समय चरखा संघका ही काम करे" (पृ० १९)।

नैसर्गिक उपचारके प्रति गांधीजी की रुचि निरन्तर बढ़ती रही। इस सम्बन्धमें अपने एक-पत्रमें उन्होंने लिखा, "वर्षों तक सुषुप्तिमें जो था, वह आज अनायास जाग्रत अवस्थामें आ गया है। उसे मैं कैसे रोकूं?" (पृ० ९८-९९)। इस समय उनका पूरा ध्यान उरुलीकांचनमें गरीबोंके लिए एक नैसर्गिक उपचार चिकित्सालय आरम्भ करने में लगा रहा। उन्होंने दिनशा मेहताको एक पत्रमें लिखा, "पहली जनवरीसे इसे अमीरोंके बजाय गरीबोंकी संस्था बन जाना चाहिए।...पहली जनवरीसे अमीर लोग गरीबोंके बाद आयें तो भले आयें, लेकिन गरीबोंकी तरह रह सकें तभी" (पृ० ७९)। इस संस्थाके कार्य-संचालनकी गांधीजी ने ब्यौरेवार योजना बनाई जिसमें रहने की व्यवस्थासे लेकर, स्वच्छता, हिसाब-किताब, संकेत-पट्टिकाएँ आदि शामिल थीं। मुन्नालाल गं० शाहको एक पत्रमें गांधीजी ने लिखा, "वहांकी रसोईमें मांस और गोमांस भी बनता है यह बात मुझे मालूम है।...तुम्हें इससे डरकर वहांसे भागना नहीं है। इतना ही काफी होगा कि तुम स्वयं मांसाहार न करो, गोमांस न खाओ। लेकिन दूसरोंको खाने से रोका नहीं जा सकता" (पृ० २२१)।

गांधीजी हमेशा व्यक्तिको सबसे अधिक महत्त्व देते थे। उन्होंने कहा, "जो व्यक्तियोंके सन्दर्भमें गलती करते हैं वे अपने उद्देश्योंमें बहुत सफल नहीं हो सकते, क्योंकि व्यक्तियोंसे उद्देश्य कभी अलग नहीं होते" (पृ० १०१)। परिणामतः इस खण्डके अधिकतर पत्रोंमें पत्र-लेखकोंकी व्यक्तिगत कार्य सम्बन्धी तथा परस्पर सम्बन्धों आदिकी समस्याओंकी भरमार है। मुन्नालाल गं० शाह तथा उसकी पत्नी और गडोदिया तथा शर्माके बीच कुछ गलतफहमियाँ थीं जिन्हें दूर करना जरूरी था (पृ० ११६ तथा २०५-६)। एक पत्र-लेखिकाको घूमने के बारेमें बताते हुए गांधीजी कहते हैं, "अच्छा होगा कि तू घूमते-घूमते पढ़ना छोड़ दे। घूमते-घूमते पढ़ने से आँखें खराब हो जाती हैं। और कभी विचार भी खो जाते हैं।... किन्तु आँखोंका काम तो आसपासका दृश्य और यह देखना होता है कि हमारे रास्तेमें कोई अड़चन है या नहीं" (पृ० ८९)। एक अन्य पत्र-लेखकको नम्रताके विषयमें सलाह देते हुए गांधीजी लिखते हैं, "लघुतामें ही प्रभुता निहित है और प्रभुतामें लघुता है। इसलिए हमें तो रजकण बनकर ही सेवा करनी चाहिए" (पृ० १८६)।

कला, संगीत तथा सामाजिक संस्कृति जैसे विषयोंपर भी गांधीजी ने अपने विचार व्यक्त किये हैं। 'कला कलाके लिए' के सिद्धान्तको नकारते हुए तथा टॉल्स्टॉय की भावनाको गुंजित करते हुए उन्होंने मुन्शीको लिखा, कलामें "रस उत्पन्न करने में कृतार्थता मानना, तो मुझे हमेशा ही भयंकर लगा है। व्यभिचारको छोड़कर पाखण्ड, हिंसा और असत्यको सहज ही रसपूर्ण बनाया जा सकता है" (पृ० १०)।

शान्तिनिकेतनमें अपने दो दिनके प्रवासके दौरान गांधीजी ने वहाँके संगीतके विषयमें कहा, "शान्तिनिकेतनका संगीत बड़ा मोहक है लेकिन वहाँके प्राध्यापक क्या इस निष्कर्षपर पहुँचे हैं कि बंगला संगीत ही उसकी चरम सीमा है? क्या हिन्दुस्तानी संगीतके पास... संगीतकी दुनियाको देने को कुछ नहीं है? यदि है तो उसको शान्तिनिकेतनमें उचित स्थान मिलना चाहिए। बल्कि मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि पाश्चात्य संगीतको भी, जिसने बहुत अधिक प्रगति की है, भारतीय संगीतमें मिश्रित होना चाहिए" (पृ० २६८)। उन्होंने यह भी महसूस किया कि स्वर-संगीतके अतिरेकमें जीवन-संगीतके खो जाने की आशंका दिखाई देती है। "संगीत ही हो तो फिर चलने-फिरने का संगीत क्यों नहीं, प्रयाणका संगीत क्यों नहीं, हमारी एक-एक हलचल, एक-एक प्रवृत्तिका संगीत क्यों नही?" (पृ० २६८)

आर्य समाजके विषयमें समय-समयपर व्यक्त अपने पूर्व विचारोंको पुनः दोहराते हुए गांधीजीने कहा, "आर्य समाजकी बहुत-सी बातें तो मुझे बहुत प्रिय हैं, लेकिन 'सत्यार्थप्रकाश' को मैं धर्मग्रन्थके रूपमें स्वीकार नहीं कर सकता।... आर्य समाजमें जितना अच्छा है उसे हिन्दू-धर्म ग्रहण कर रहा है, और ऐसी ग्रहणशीलता हिन्दू-धर्मकी विशेषता है" (पृ० ११-१२)।

राजनीतिक व्यवहारमें आतंकवादके पक्षमें गांधीजी किसी समझौतेके लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने इयन स्टीवन्सको बताया, "मैंने कितने ही आतंकवादियों और अराजकतावादियोंसे हिंसाके इस सवालपर विस्तारसे बातचीत की है। चाहे अरब करें या यहूदी, हिंसा तो भयंकर चीज ही है। यदि हिंसाकी यह भावना जन-साधारणमें व्याप्त हो गई तो संसारका भविष्य अन्धकारपूर्ण है। अन्ततः अपना विनाश करते हुए वह प्रजातिका ही नाश कर देती है" (पृ० १५८)।

कलकत्तामें हुई कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठकके लिए तैयार किये गये अपने प्रस्तावमें गांधीजी ने अहिंसामें अपने विश्वासको पुनः दोहराया। १९४२ के स्वतः उद्वेलित जन आन्दोलनका हवाला देते हुए प्रस्तावमें कहा गया कि "१९२० में कांग्रेस द्वारा अपनाई गई अहिंसा-नीति आज भी अक्षुण्ण है और सार्वजनिक सम्पत्ति जलाये जाने, तार काटे जाने, गाड़ियोंके पटरियोंसे उतारे जाने और डराने-धमकाने की कार्रवाइयोंके लिए अहिंसामें कोई स्थान नहीं है" (पृ० २१३)।

गांधीजी की सत्यकी सतत खोजमें उनके कुछ और विचार इस खण्डमें प्रतिबिम्बित होते हैं। पिलेट द्वारा पूछे गये प्रश्नका उत्तर इतना सरल नही है। गांधीजी

कहते हैं, "जिस दृष्टिसे मैं सत्य देखता हूँ उसे ही लिखता हूँ। परम सत्य ही परमेश्वर है। वह अगम्य है। अधिकसे-अधिक उसके लिए 'नेति-नेति' ही कह सकते हैं। जिस सत्यका हम दर्शन करते हैं वह सापेक्ष है और वह बहुरूपी है, अनेक है और अपने-अपने समयके लिए अखंडित सत्य है। उसमें दंभके लिए गुंजाइश ही नहीं है और उस तक पहुँचने का रास्ता एक ही है, वह है अहिंसा। शुद्ध और परम सत्य हमारा आदर्श होना चाहिए। उसीका ध्यान करते हुए हम वहाँ पहुँचते हैं और वहीं पहुँचना मोक्ष है" (पृ० ४१)। और यह खोज केवल विश्वास द्वारा ही सम्भव है। इस सम्बन्धमें गांधीजी कहते हैं, "विश्वास जब तर्कसे सम्बन्धित बातोंके क्षेत्रमें प्रवेश करता है तब वह पंगु हो जाता है। जहाँ तर्कका क्षेत्र समाप्त होता है वहाँसे विश्वासका क्षेत्र शुरू होता है। विश्वासपर आधारित निष्कर्ष अटल होते हैं, किन्तु तर्कपर आधारित निष्कर्ष श्रेष्ठतर तर्कके समक्ष डगमगा सकते हैं और गलत साबित हो सकते हैं। विज्ञानकी मर्यादा बताने का मतलब उसके महत्वको कम करना नहीं है। हमारा काम न विज्ञानके बिना चल सकता है और न तर्कके बिना—दोनों अपनी-अपनी जगह अनिवार्य हैं" (पृ० ३९२)।

सत्यके पालनमें अनासक्तिका बहुत महत्व है। यह पूछे जाने पर कि वे किस प्रकार शारीरिक रूपसे स्वस्थ रह पाते हैं, गांधीजी ने उत्तर दिया कि "यह मनको अनासक्त कर लेने के अभ्यासके कारण है। अनासक्तिसे मेरा मतलब यह है कि किसी कामका वांछित परिणाम निकले या नहीं, उस कार्यका हेतु यदि शुद्ध है और साधन सही है, तो फिर मनुष्यको चिन्ता नहीं करनी चाहिए। वास्तवमें इसका मतलब यह है कि यदि मनुष्य साधनका ध्यान रखे और बाकी सब-कुछ ईश्वरपर छोड़ दे, तो अन्तमें सब-कुछ ठीक ही होगा" (पृ० १६०)।

इसके साथ ही गांधीजी ने अतीतसे ही बँधे रहने को अधिक महत्व देना ठीक नहीं समझा। उनके विचारमें, क्या हुआ यदि १९४२ में ब्रिटिश सरकारने कांग्रेसके साथ सहयोग करने के बजाय उसका विरोध किया? उन्होंने बीती बातोंपर आँसू बहाने से इनकार किया और लोगोंसे भी ऐसा ही करने को कहा। उनका कहना था कि लोगोंको अपना सारा ध्यान और शक्ति वर्तमान समस्याओंको हल करने में लगाना चाहिए (पृ० ३३४)। इसी भावनाको उन्होंने 'रोजके विचार'में व्यक्त किया: "भूतकाल हमारा है, हम भूतकालके नहीं हैं। हम वर्तमानके हैं और भविष्यको बनाने वाले हैं, भविष्यके नहीं" (पृ० ४७५)।

आभार

इस खण्डकी सामग्रीके लिए हम निम्नलिखित संस्थाओं, व्यक्तियों, पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओंके प्रकाशकोंके आभारी हैं:

संस्थाएँ: साबरमती आश्रम संरक्षक तथा स्मारक न्यास और संग्रहालय, नवजीवन ट्रस्ट और गुजरात विद्यापीठ ग्रन्थालय, अहमदाबाद; राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, राष्ट्रीय अभिलेखागार और नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली; विश्वभारती, कलकत्ता; स्वार्थमोर कॉलेज पीस कलेक्शन, फिलाडेलफिया और वुडब्रुक कॉलेज, बर्मिंघम।

व्यक्ति: श्रीमती अमृतकौर; श्री अमृतलाल चटर्जी, कलकत्ता; श्री ए० के० सेन; श्री एन० वी० खरे; श्री एस० आर० वेंकटरामन; श्री क० मा० मुन्शी; श्री कान्तिलाल गांधी, बम्बई; श्री घनश्यामदास बिड़ला, कलकत्ता; श्रीमती चम्पा र० मेहता; श्री छगनलाल गांधी; श्री जी० एन० कानिटकर; श्री जीवणजी डा० देसाई; श्रीमती जेसी हॉयलैण्ड; श्री डाह्याभाई म० पटेल; श्री प्यारेलाल, नई दिल्ली; श्रीमती प्रेमा कंटक, सासवड; श्री मंगलदास पकवासा; श्रीमती मीराबहन, आस्ट्रिया; श्री मुन्नालाल गं० शाह, सेवाग्राम; श्रीमती रत्नमणि चटर्जी; श्रीमती लीलावती आसर, बम्बई; श्रीमती वनमाला देसाई; श्री शान्तिकुमार न० मोरारजी, बम्बई; श्रीमती शारदा गो० चोखावाला, सूरत; श्री शिवाभाई जी० पटेल, बोचासण; श्री सीताचरण दीक्षित और श्रीमती हरि-इच्छा कामदार।

पुस्तकें: 'कंस्ट्रक्टिव प्रोग्राम: इट्स मीनिंग ऐंड प्लेस'; 'गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७'; 'गांधीयन कॉन्स्टिट्यूशन फॉर फ्री इंडिया'; 'द इंडियन एनुअल रजिस्टर, १९४५'; 'पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद'; 'बा बापुनी शीली छायामां'; 'बापुना पत्रो – ४: मणिबहेन पटेलने'; 'बापुना पत्रो – २: सरदार वल्लभभाईने'; 'बापू – मैंने क्या देखा, क्या समझा?'; 'बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष'; 'बापूके आशीर्वाद' (रोजके विचार); 'महात्मा: लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गांधी, जिल्द ७'; 'वेवल: द वाइसरायज जर्नल' और 'श्री भाईलालभाई पटेल, सित्तेरमी जन्मगांठ अभिनन्दन ग्रन्थ'।

पत्र-पत्रिकाएँ: 'अमृतबाजार पत्रिका'; 'खादी-जगत्'; 'विश्वभारती न्यूज'; 'हरिजन'; 'हितवाद'; 'हिन्दुस्तान टाइम्स' और 'हिन्दू'।

अनुसंधान और सन्दर्भ सम्बन्धी सुविधाओंके लिए हम नई दिल्ली स्थित नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालयके आभारी हैं।

पाठकोंको सूचना

हिन्दीकी जो सामग्री हमें गांधीजी के स्वाक्षरोंमें मिली है, उसे अविकल रूपमें दिया गया है। किन्तु दूसरों द्वारा सम्पादित उनके भाषण अथवा लेख आदिमें हिज्जोंकी स्पष्ट भूलोंको सुधार दिया गया है।

अंग्रेजी और गुजरातीसे अनुवाद करने में अनुवादको मूलके समीप रखने का पूरा प्रयत्न किया गया है, किन्तु साथ ही भाषाको सुपाठ्य बनाने का भी यथेष्ट ध्यान रखा गया है। छापेकी स्पष्ट भूलें सुधारने के बाद अनुवाद किया गया है, और मूलमें प्रयुक्त शब्दोंके संक्षिप्त रूप यथासम्भव पूरे करके दिये गये हैं। नामोंको सामान्य उच्चारण के अनुसार ही लिखने की नीतिका पालन किया गया है। जिन नामोंके उच्चारणमें संशय था, उनको वैसा ही लिखा गया है जैसा गांधीजी ने अपने गुजराती लेखोंमें लिखा है।

मूल सामग्रीके बीच चौकोर कोष्ठकोंमें दी गई सामग्री सम्पादकीय है। गांधीजी ने किसी लेख, भाषण आदिका जो अंश मूल रूपमें उद्धृत किया है, वह हाशिया छोड़कर गहरी स्याहीमें छापा गया है। लेकिन यदि कोई अंश उन्होंने अनूदित करके दिया है तो उसका हिन्दी अनुवाद हाशिया छोड़कर साधारण टाइपमें छापा गया है। भाषणोंकी परोक्ष रिपोर्ट तथा वे शब्द जो गांधीजी के कहे हुए नहीं हैं, बिना हाशिया छोड़े गहरी स्याहीमें छापे गये हैं। भाषणों और भेंटोंकी रिपोर्टोंके उन अंशोंमें, जो गांधीजी के नहीं हैं, कुछ परिवर्तन किया गया है और कहीं-कहीं कुछ छोड़ भी दिया गया है।

शीर्षककी लेखन-तिथि जहाँ उपलब्ध है, वहाँ दायें कोनेमें ऊपर दे दी गई है। परन्तु जहाँ वह उपलब्ध नहीं है, वहाँ उसकी पूर्ति अनुमानसे चौकोर कोष्ठकोंमें की गई है, और आवश्यक होने पर उसका कारण स्पष्ट कर दिया गया है। जिन पत्रोंमें केवल मास या वर्षका उल्लेख है, उन्हें आवश्यकतानुसार मास या वर्षके अन्तमें रखा गया है। शीर्षकके अन्तमें साधन-सूत्रके साथ दी गई तिथि प्रकाशनकी है। गांधीजी की सम्पादकीय टिप्पणियाँ और लेख, जहाँ उनकी लेखन-तिथि उपलब्ध है अथवा जहाँ किसी दृढ़ आधारपर उसका अनुमान लगाया जा सका है, वहाँ लेखन-तिथिके अनुसार और जहाँ ऐसा सम्भव नहीं हुआ है, वहाँ उनकी प्रकाशन-तिथिके अनुसार दिये गये हैं।

साधन-सूत्रोंमें 'एस० एन०' संकेत साबरमती संग्रहालय, अहमदाबादमें उपलब्ध सामग्रीका, 'जी० एन०' राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नई दिल्लीमें उपलब्ध कागज-पत्रोंका, और 'सी० डब्ल्यू०' सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय (कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी) द्वारा संगृहीत कागज-पत्रोंका सूचक है।

सामग्रीकी पृष्ठभूमिका परिचय देने के लिए मूलसे सम्बद्ध कुछ परिशिष्ट भी दिये गये हैं। अन्तमें साधन-सूत्रोंकी सूची और इस खण्डसे सम्बन्धित कालकी तारीखवार घटनाएँ दी गई हैं।

विषय-सूची

परिशिष्ट

चित्र-सूची

१. तार : प्रभुदयाल विद्यार्थीको

पूना
१ नवम्बर, १९४५

प्रभुदयाल
मार्फत काका कालेलकर
महिला आश्रमके सामने
वर्धा
तुम आ सकते हो ।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११६७२) से

२. पत्र : मणिलाल गांधीको

पूना
१ नवम्बर, १९४५

चि० मणिलाल,

मैं तुम्हें चि० अरुण[1] का पत्र सुधार किये विना भेज रहा हूँ। मैंने उसे समझाया, कनु[2] और आभा[3] ने भी समझाया। लेकिन उसे कुछ भी अच्छा नही लगा। तुम्हारे मना करने के बावजूद मैंने उसे तुम्हारा पत्र दिखाया, क्योंकि यदि उसकी तनिक भी जाने की इच्छा होती तो मैं उसे नही रोकता। बात यह है कि उसे यह जगह बहुत पसन्द आई है। अंकुश है, लेकिन इतना नही जो उसे खले। इसलिए तू वहाँ सबको समझा देना कि वे लोग अरुणके बिना ही दीवाली मना लें। मै तो भरसक उसकी पढ़ाईका ध्यान रखता हूँ। अमीनभाई बहुत प्रेमसे चित्रकला सिखाते हैं। वह खूब खेलता है, खाता है तथा सारे समय मजे करता है। वह कनुसे चिपका रहता है।

मनु[4] मेरी मालिश करती है और सुशीला[5] मुझपर फव्वारा चलाती है। मेरी जरूरतोंका पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है। इसलिए मेरी खातिर तुझे आने की जरूरत नहीं, चिन्ता करने की भी जरूरत नही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४७६४) से

१. मणिलाल गांधीके पुत्र
२. नारणदास गांधीके पुत्र कनु गांधी
३. कनु गांधीकी पत्नी
४. मनु गांधी
५. सुशीला नैयर

३. पत्र : मगनलाल मेहताको

१ नवम्बर, १९४५

चि० मगन[1],

साथमें चि० चम्पा[2]का पत्र है। इसे पढ़कर मुझे तो ऐसा लगा कि तुम्हारा यह कर्तव्य है कि तुम तुरन्त राजकोट जाओ और उसकी जो भी सहायता कर सको करो। जिसपर तेरा मन जमे उससे राजकोटमें ही सलाह लेना। यदि बम्बईसे किसी सलाहकारको ले जाने का विचार हो तो वैसा करना। चम्पाको मैंने पत्र लिखा है[3] कि यहाँ बैठा-बैठा मैं उसकी क्या मदद कर सकता हूँ! चम्पाका पत्र पढ़कर लौटा देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४. पत्र : शामलदास गांधीको

१ नवम्बर, १९४५

चि० शामलदास,

सरदारके सम्बन्धमें तूने जो रेखाचित्र प्रस्तुत किया है, वह अच्छा तो है, लेकिन उसमें महादेवको क्यों नहीं शामिल किया? अगर मणिबहनके बिना सरदार की कल्पना की जा सकती हो तभी महादेवके बिना भी की जा सकती है। क्या उसका उल्लेख भूलसे ही रह गया है? या महादेवका चित्र छोड़ देने में कोई कला है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य · प्यारेलाल

१. दीर्घकाल तक गांधीजी के निकटके साथी डॉ० प्राणजीवनदास मेहताके पुत्र
२. मगनलाल मेहताके अग्रज रतिलाल मेहताकी पत्नी
३. देखिए खण्ड ८१, पृ० ३६०।

५. पत्र : अबुल कलाम आजादको

१ नवम्बर, १९४५

भाई साहब,

आपका खत मिला। आपकी सेहतके बारेमें तो और क्या लिखूं? जितनी जल्दी आप कहीं आरामके लिये चले जावें इतना मुल्कके लिये अच्छा है।

आपने तीन नाम वर्किंग कमिटिके बारेमें भेजे है। इस बारेमें आप कमिटिके मौजूदा मेंबरोको पूछ ले और बादमें नाम जाहिर करे वह अच्छा है। मेरा खयाल कुछ ऐसा है कि अभी थोड़े अरसेमें काग्रेसको मिलना होगा। अगर ऐसा है तो नये चूनावमें ही मेम्बरो पूरी की जावे। वह अच्छा नहीं होगा क्या? अगर आज ही सब नाम भरने ही चाहिये तो जो तीन नाम आपने भेजे हैं वह तो दुरस्त ही है ऐसा मैं समझता हूं। मगर आखिर तो जो मेम्बर लोग कहें वही सही होगा।

आपका,

मो० क० गांधी

मौलाना अबुल कलाम आजाद
१९-ए, बालीगंज सर्कुलर रोड
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६. पत्र : देशपाण्डेको

पूना
१ नवम्बर, १९४५

भाई देशपाडे,

मुझको सुनाया गया है कि श्री भोपटकर[1] के बारेमें निन्दायुक्त वचन प्रभात फेरीमें जो है वे बोलते है। उसकी तलाश करो। ऐसी किसी आगेवानी [अगुए] की निन्दा करते हैं तो उसे रोकने की चेष्टा करो। किसी व्यक्तिके निन्दायुक्त वचन निकालने से क्या फायदा? नुकसान तो मैं प्रत्यक्ष रूपसे देखता हूं। और काग्रेसमें जब तक [हैं तब तक] किसी भी जबानसे निन्दायुक्त वचन नही निकलने चाहिये।

आपका,

मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. अखिल भारतीय हिन्दू महासभाके महामन्त्री एल० बी० भोपटकर

७. पत्र : महादेवशास्त्री दिवेकरको

१ नवम्बर, १९४५

पंडितजी,

आपकी पुस्तक[1] मैं अथसे इति तक सुन गया हूं। आजकल ऐसी स्थिति चलती है कि मैं कातने के समय पढ़ने लायक कोई पुस्तक एक मित्रसे पढ़वाकर सुन लेता हूं। पुस्तक पढ़कर मुझे निराशा हुई। आपके लिखने परसे मैंने मान लिया था कि पुस्तकसे मुझे ज्ञान मिलेगा और हिन्दु मुस्लिम मसलेपर कुछ प्रकाश भी पड़ेगा। बचपनसे मुझे मुसलमानोंका सहवास मिला है और विलायत जाने के बाद ईश्वरने कुछ ऐसी ही हालत बना दी [कि] खिस्ती, मुस्लीम और पारसियोंके साथ मेरा घनिष्ट संबंध रहा। हिन्दु तो थे ही। उनमें जो विद्वान थे उनके संपर्कमें आया। इससे इन चारों धर्मके पुस्तक भी पढ़ने में आये। मैंने फल यह निकाला कि उन उन धर्मीओंके पुस्तक पढ़ने पर ही सच्ची बात हमें मिलती है। उन धर्मोंकी टीका भी मैंने काफी देखी। मुस्लीमके जिन टीकाकारोंकी बात आपने लिखी है वह भी ऐसा कहा जाय कि मैंने सब पढ़ ली थी। वो ही पुस्तकोंकी बात दक्षिण आफ्रिकामें मुसलमानोंसे हुई। एक अंग्रेज मुसलमान हो गया था। उनसे भी हुई और यहाँ आकर मैंने मौलाना शिबलीके ग्रंथ पढ़े। नतीजा यह हुआ है कि मैं सीखा कि सर्व धर्म सत्यासत्यसे भरे हैं। और सर्व धर्मकी जड़ एक और शुद्ध है। उस एक धर्ममें से दूसरे निकले हैं इसलिये सब एक-सा है। इसका निचोड़ सर्वधर्म समानत्व नामका व्रत एकादश व्रतम शामिल करके विनोबाजी ने एक मराठी श्लोक बनाया है जो नित्य प्रार्थनाके समय पढ़ा जाता है।[2]

> अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह,
> शरीरश्रम, अस्वाद, सर्वत्र भय वर्जन,
> सर्वधर्म समानत्व, स्वदेशी, स्पर्शभावना,
> ही एकादश सेवावी नम्रत्वे व्रत निश्चये।

और उसीका आश्रय लेकर मेरा वर्तन चलाने की कोशीश कर रहा हूं, और ऐसे मेरे साथी भी हैं जो करते हैं।

यों भी यह खत लम्बा हो गया लेकिन आपने परिश्रम उठाया है और अपनी

१. देखिए खण्ड ८१, पृ० ४४५ भी।
२. देखिए खण्ड ६१, पृ० ४० भी।

किताबकी अधिक नकल मुझे भेजी है इसलिए मुझे लगा कि आपको कमसे कम मेरी भूमिका तो बता दूं।

आपसे दलील मैं नहीं करना चाहता हूं। जिस वस्तुका निर्देश आपने किया है उसका उत्तर तो मेरे पास है लेकिन वह देने की मैं आवश्यकता नही समझता हूं। इसलिए इतना काफी समझता हूं।

आपका,

मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८. पत्र : इनायतुल्ला खाँको

पूना

१ नवम्बर, १९४५

अल्लामा साहेब[1],

आपका खत—अंग्रेजी खत—मिला। अंग्रेजीमें क्यों?

जो छपा हुआ कान्स्टीट्युशन आपने भेजा है वह मिल गया है। मैं यह पढ़ गया हूं। उसे बनाने में मेहनत तो की गई है लेकिन उससे फायदा होने के बारेमें मुझे शक है। मैं कुछ ऐसा मानता हूं कि अगर हम एक दिल हो जावें तो कान्स्टीट्युशन बनाना आसान है। कान्स्टीट्युशनके मारफत एक होना मैं करीब करीब नामुमकिन मानता हूं। यह मेरा ख्याल है।

आपका,

मो० क० गांधी

नवाब अल्लामा मशरीकी साहेब

इछरा

लाहौर

उर्दूकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. भारत तथा विश्वमें मुसलमानोंका प्रभुत्व कायम करने के उद्देश्यसे स्थापित खाकसार संगठनके नेता

९. पत्र : शामलदास गांधीको

[१ नवम्बर, १९४५ के पश्चात्][1]

चि० शामलदास,

तेरा पत्र मिला। मैंने तो लिखा ही था कि उसका उल्लेख भूलसे ही रह गया था।[2] अब मैं समझा। लेकिन यह उतावली ऐसी है जिसे माफ नहीं किया जा सकता। "उतावला सो बावरा", यह बात मनमें अंकित कर ले। इस जन्म-तिथि की[3] खबर तुझे थी ही। अगर नहीं थी, तो यह भारी गुनाह है।

तुझे मैंने कुशल पत्रकार माना है। लेकिन ऐसा लगता नहीं है। एक अच्छे [पत्र] कार्यालयमें तो सभी फोटो-चित्रोंके ब्लॉक तैयार रहते हैं। बहुतोंमें तो लेख भी तैयार रहते हैं। 'जन्मभूमि' का विशेषांक देखना। बहुत अच्छा है।

'वन्दे मातरम्' कार्यालय, बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१०. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
२ नवम्बर, १९४५

प्रिय सर एवन[4],

मालूम नहीं, संलग्न सामग्री,[5] जो कि कल मेरी निगाहमें आई, आपने देखी है या नहीं। वाइसराय महोदयको यह मालूम होना चाहिए कि अपने पत्रका[6] यह तोड़-मरोड़कर पेश किया गया रूप मेरी करनी नहीं है। मुझे विश्वास है कि मेरे

१. शामलदास गांधीके नाम गांधीजी के इससे पहलेके पत्रके उल्लेखसे; देखिए पृ० २।

२. महादेव देसाईके उल्लेखका अभाव

३. ३१ अक्तूबरको सरदार पटेलकी जन्म-तिथिकी

४. वाइसरायके निजी सचिव

५. समाचारपत्रोंकी कतरनें, जिनमें यह खबर छपी थी कि आजाद हिन्द फौजके जो कैदी सैनिक अदालतके समक्ष अपने खिलाफ मुकदमेकी सुनवाईका इन्तजार कर रहे थे उनके बारे में गांधीजी वाइसरायसे लिखा-पढ़ी कर रहे थे।

६. तात्पर्य, शायद, वाइसरायके नाम गांधीजी के १९ अक्तूबर, १९४५ के पत्रसे है।

कार्यालयमें जो गिने-चुने कार्यकर्ता हैं वे इतने वफादार हैं कि मेरी अनुमति लिये बिना कुछ भी नही कहेंगे; और उन्हें यह अनुमति नही देने का सीधा-सादा कारण यही है कि जनतापर अथवा सरकारपर मेरा जो भी प्रभाव है वह विशुद्धतः नैतिक है और समयसे पहले किसी चीजके प्रकाशित होने से उसका प्रभाव नष्ट हो जाता है। मैं जानता हूँ कि मैंने वाइसराय महोदयको जो-कुछ लिखा है उसमें कुछ भी गोपनीय नहीं है। लेकिन पत्रमें जिन परिणामोंकी तजवीज की गई है वे जब तक घटित नही हो जाते अथवा वाइसराय महोदय अन्यथा निश्चय नही करते तब तक यह प्रकाशनके लिए नहीं है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

संलग्न पत्र : २

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेण्ट, १९४४-४७, पृ० ४२

११. पत्र : अमृतकौरको

पूना
२ नवम्बर, १९४५

चि० अमृत,

यह तो सच ही है कि तुम मुझे भूल नहीं सकती। तुम्हारे पत्र नियमित रूपसे आते रहे हैं। उनसे मुझे सारी अपेक्षित जानकारी मिल जाती है।

नेक शम्मी[1] तुम्हारा और तुम्हारे परिवारका समाचार देते रहते हैं और मुझे उत्तर देने से मना करते हैं। मैंने उनके कहे पर भरोसा किया है।

प्यारेलाल काफी ठीक है और उसने थोड़ा-बहुत काम भी शुरू कर दिया है। उम्मीद कर रहा हूँ कि वह काममें लग जायेगा।

सरदार कल बम्बईसे लौटेंगे।

ईश्वरकी इच्छा हुई तो मेरा कार्यक्रम इस प्रकार है: यहाँसे १९ को प्रस्थान, २० को बम्बईमें, २१ से २९ तक सेवाग्राममें, ३० की सुबह कलकत्ताके लिए गाड़ीमें सवार होकर १ दिसम्बरको वहाँ पहुँचूँगा।

गोमती[2] लम्बे समयसे ज्वरग्रस्त है, और अब छगनलाल गांधीने खाट पकड़ ली है। बेचारी काशी[3]!

1. अमृतकौरके भाई ले० कर्नल शमशेर सिंह
2. किशोरलाल मशरूवालाकी पत्नी
3. छगनलाल गांधीकी पत्नी

मैं ठीक हूँ। मेरे बारेमें चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं। तुम्हें स्वस्थ रहना है। तुम्हारी वहाँकी मित्र-मण्डलीको प्यार। स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१७१) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७८०७ से भी

१२. पत्र : भारतन कुमारप्पाको

नैसर्गिक उपचार गृह, पूना
२ नवम्बर, १९४५

प्रिय भारतन,

तुम्हारा पत्र कल मिला।

भाईलाल[1] की योजनाके विषयमें तुमने बहुत सावधानी और समझदारी-भरी राय दी है। लेकिन मैं तुमसे जो जानना चाहता था वह यह नहीं है। क्या मैंने तुम्हें यह बताया था कि प्रस्तावना लिखने के लिए तुमने मुझे अपनी पुस्तक[2] की टाइप की हुई जो पाण्डुलिपि दी थी वह मैंने उसे दे दी थी, और मुझे अच्छी तरह याद है कि उसने मुझसे कहा था कि उसकी योजना तुम्हारी प्रस्थापनाके सर्वथा अनुरूप है? मैंने उससे कहा और अभी भी इस बातको दुहराता हूँ कि यदि मैंने तुम्हारी प्रस्थापनाको ठीक समझा है तो उसकी योजना उसकी भावना और शब्दोंके सर्वथा विपरीत है। मैंने जो मोटा हिसाब लगाया वह केवल यह जानने के लिए कि यदि उसकी योजनाको इतना बढ़ाया जाये कि उसमें ७,००,००० गाँवोंका समावेश हो जाये तो क्या वह सफल होगी? मेरा उत्तर यह था कि वह एक निश्चित समयमें सफल नहीं हो सकती। इस बुनियादी आपत्तिके अलावा यह तथ्य भी है कि यद्यपि वह एक अनुभवी इंजीनियर है और इसलिए यथार्थ दृष्टि रखने वाला व्यक्ति है, तथापि उसने अपनी योजना मुख्यतः इस तरहके अनुमानपर खड़ी करने का साहस किया है कि लोग यह काम करेंगे, वह काम करेंगे और बाकी सब चीजें उसके अनुरूप हो जायेंगी। जो बात मैंने कही है वह यदि सही है और तुम्हारी पुस्तकसे सचमुच उसी प्रकार प्रतिध्वनित होती है, जिस प्रकार मेरे सहज विश्वाससे, तो तुम्हें लिखकर वैसा कहना चाहिए। अगर मेरी दलील सही है तो

१. भाईलालभाई पटेल, आधुनिक उद्योग-कौशलकी सहायतासे गाँवोंका विकास करने के विचारके प्रबल हिमायती; बादमें वे गुजरातमें स्वतन्त्र पार्टीके नेता बने; देखिए "पत्र : भाईलालभाई पटेलको", २६-१२-१९४५ भी।

२. कैपिटलिज्म, सोशलिज्म और विलेजिज्म?

तुम्हारे लिए अपनी रायको संशोधित करने का तरीका यह है कि जो-कुछ तुम कह चुके हो उसमें इतना और जोड़ दो कि अपनी पुस्तककी जो व्याख्या तुमने की है उसे देखते हुए, करोड़ों लोगोंके सन्दर्भमें ही नहीं, बल्कि एक सीमित दायरेमें भी, योजनाका विफल होना निश्चित है, क्योंकि उसने मुख्यतः अनुमानोंके आधार पर एक ऐसी चीज गढ़ी है, जो एक अनुभवी इंजीनियरको कभी नहीं करना चाहिए। क्या तुमने इस बातपर भी ध्यान दिया है कि उसकी योजनामें हिस्सोंमें विभाजित [आटा] मिल लगाने की तजवीज है, जिसपर ग्रामवासियों या किसी एक समझदार ग्रामवासीका स्वामित्व होगा? जरा सोचो कि इसका मतलब क्या है। यह तो वास्तवमें राज्यके स्वामित्वाधीन केन्द्रमें स्थित एक विशाल मिल या मिलोंका रूप ले लेगी। दूसरे शब्दोंमें, ७,००,००० गाँव ७०० या ७० नगरोंमें बदल जायेंगे। या यों भी कह सकते हैं कि आबादीका एक बहुत बड़ा हिस्सा भुखमरी, अकाल आदिका ग्रास बन जायेगा या तलवारके घाट उतार दिया जायेगा अथवा बारूदसे उड़ा दिया जायेगा।

स्नेह।

बापू

श्री भारतन कुमारप्पा
मार्फत सेठ शूरजी वल्लभदास
कच्छ कैंसिल, सैन्डहर्स्ट ब्रिजके सामने
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१३. पत्र : क० मा० मुन्शीको

२ नवम्बर, १९४५

भाई मुन्शी,

मैंने कदाचित तुमसे कह रखा है कि मैं चरखा चलाते समय मौन रखता हूँ। सुनता जरूर हूँ, लेकिन जहाँ तक हो सके हर किसीकी बात नहीं। इसलिए बालजीभाई मुझे पढ़कर सुनाते हैं। इसी तरह मैं तुम्हारा हिन्दी साहित्य सम्मेलनमें[1] दिया हुआ पूरा भाषण सुन गया। तुमने मेरे त्यागपत्र[2] के बारेमें जो-कुछ कहा है वह मुझे अच्छा लगा है। और तुमने राष्ट्रभाषा-विषयक अपने जो विचार दृढ़तापूर्वक व्यक्त किये

१. क० मा० मुन्शीकी अध्यक्षतामें उदयपुरमें आयोजित

२. गांधीजी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलनसे २५ जुलाई, १९४५ को त्यागपत्र दिया था। हिन्दी साहित्य सम्मेलनको गांधीजी की यह नीति स्वीकार नहीं थी कि राष्ट्रभाषामें न तो फारसी शब्दोंकी और न ही संस्कृत शब्दोंकी बहुलता होनी चाहिए बल्कि इन दोनोंके मिश्रणसे बनी "हिन्दुस्तानी" होनी चाहिए और वह देवनागरी और फारसी दोनों लिपियोंमें लिखी जानी चाहिए।

हैं, वे भी मुझे पसन्द आये हैं। लेकिन मेरा खयाल है कि तुमने लेखकोंके बारेमें जो कहा है वह ठीक नहीं है। यदि ये विचार हानिकारक नहीं होते तो यह बात भी मैं दरगुजर कर देता। यदि सुनने में मुझसे कोई भूल हुई हो तो उसे सुधारना। मैंने ऐसा समझा है : लेखक यदि अपनी कलामें रस उत्पन्न कर सके तो वह कृतार्थ हुआ। रस उत्पन्न करने में कृतार्थता मानना, तो मुझे हमेशा ही भयंकर लगा है। व्यभिचारको छोड़कर पाखण्ड, हिंसा और असत्यको सहज ही रसपूर्ण बनाया जा सकता है, तो क्या उस सबका समावेश कलामें हो सकता है? तुम्हारी सलाहसे मैं 'पृथ्वी-वल्लभ'[1] पढ गया। मेरे विचारसे इसके लोकप्रिय होने का कारण इसमें उस तरहके रसका होना नहीं है, बल्कि उसमें जो रहस्य निहित है उसमें है। दूसरे, तुमने संस्कृतसे निकली हुई सुन्दर भाषाओंका सुन्दर ढंगसे एकीकरण किया है। लेकिन जिस तरह तुम उस इतिहास[2] को भूल नहीं सके उसी तरह क्या तुम इतिहासका जानकार होने के नाते मुसलमानोंके इतिहासको भूल सकते हो? तुम भूल भी जाओ तो क्या तुम हिन्दुस्तानसे उसे भुलवा सकते हो? अंग्रेजोंके चले जाने के बाद क्या उनके सम्बन्धसे उत्पन्न सभी परिणामोंको इतिहासके दर्पणसे पोंछा जा सकेगा?

मैंने ये दो विचार तुम्हारे सामने कुछ संकोचके साथ प्रस्तुत किये हैं, क्योंकि मैं अपनेको न तो कलाका पारखी मानता हूँ और न इतिहासका जानकार। लेकिन संसारमें यहाँ-वहाँ आँख खोलकर भ्रमण करने से जो अनुभव मुझे प्राप्त हुए हैं उनमें से इतना तुम्हें बताना मैंने अपना फर्ज समझा है। मैं समझता हूँ कि इस पत्रमे राष्ट्रभाषा-सम्बन्धी तुम्हारे विचारोंका स्वागत करते हुए जिस नियमका पालन मैंने किया है वही नियम कदाचित इन दो बातोंपर भी लागू होता है।

तुमने समाचारपत्रोंमें 'क्रॉनिकल' में प्रकाशित लेखमें जो सुधार किया है वह मुझे पसन्द आया। स्वयं मेरा इरादा भी इस सम्बन्धमें प्रश्न करने का था, लेकिन इतनेमें तुम्हारा उत्तर पढ़ने को मिला। जवाहरलालके पत्रके सम्बन्धमें यह क्या घोटाला है? अथवा यह मनगढ़न्त बात है?

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ७६९०) से। सौजन्य : क० मा० मुन्शी

१. क० मा० मुन्शी-कृत एक ऐतिहासिक उपन्यास
२. गुजरातका

१४. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

२ नवम्बर, १९४५

चि० नरहरि,

तुम्हारे प्रश्न बहुत अच्छे हैं। इतना तो मेरे मनमें स्पष्ट है कि सार्वजनिक सस्थाओंमें अलग-अलग धर्मोंके लोग हो अथवा न हो, लेकिन जिस धर्मके लोगोंकी संख्या अधिक हो उस धर्मके लोग, अन्य धर्मोंके लोगोंके उन सस्थाओंमें न होने पर भी, अपने त्योहार इस ढंगसे नहीं मना सकते जिससे अन्य धर्मोंके लोगोंकी धार्मिक भावनाको ठेस पहुँचे। गणपति उत्सव आदि तो केवल राजनीतिक ही है, उनके साथ धर्मका कोई नाता-रिश्ता नही है। इसीलिए तो हम उन्हें मना नही सकते। लेकिन जो त्योहार मनाना धर्मका अंग हो उसे तो मनाना ही होगा। उदाहरणार्थ, आश्रममें इमाम साहब मेरी इच्छा और अनुरोधसे अजान देते थे और हम प्रार्थना करते थे। अजान देना इस्लामकी आवश्यक बात है। ईसाइयोंके गिरजेके घंटेकी तुलनामें अजानको श्रेष्ठ माना गया है। मुझे लगता है कि सार्वजनिक संस्थाओंके सम्बन्धमें तुम्हारे प्रश्नका उत्तर मैंने ऊपर दे दिया है। यदि कुछ रह गया हो तो फिर पूछना।

हिन्दू-धर्मके अन्तर्गत अभी क्या-क्या होना चाहिए, इस प्रश्नका उत्तर सरल नही है। मैं खुद क्या करता हूँ, यह लिख देना मेरे लिए बिलकुल आसान है। मेरे मनमें यह बात स्पष्ट भी है। लेकिन समाजको कहाँ तक जाना चाहिए, अथवा समाजके विरोधके बावजूद उसके द्वारा किये जाने योग्य सुधारोंकी हिमायत कहाँ तक की जानी चाहिए, यह बात मेरे मनमें स्पष्ट नही है। किशोरलालको तो याद होगा — और यदि यह मेरे मनकी कोरी कल्पना न हो तो मुझे तो याद है — कि उसने सुझाव दिया था कि प्रार्थनाके श्लोकोंमें से गणपति, सरस्वती और पृथ्वीके विषयमें जो बातें आती हैं उन्हें निकाल देनी चाहिए। लेकिन मैं यह बात स्वीकार नहीं कर सका। मेरे विचारमें, जिस रूपा-कारयुक्त सरस्वतीका वर्णन किया गया है वह तो मात्र कल्पना है। गणपति भी काल्पनिक है और वह केवल '३ॐ' का वर्णन है। लेकिन लोक मान्यतामें तो केवल शब्दार्थ ही आता है, और इसीलिए हमारे पास सरस्वती, गणपति आदि देवताओंकी मूर्तियाँ हैं। इसलिए यदि हम उन्हें निकाल दें तो हिन्दू-धर्मके बजाय कोई नया ही धर्म सामने आ जायेगा या कह सकते हैं कि वह केवल आर्यसमाजका रूप ले लेगा। आर्यसमाज की बहुत-सी बातें तो मुझे बहुत प्रिय हैं, लेकिन 'सत्यार्थप्रकाश' को मैं धर्मग्रन्थके रूपमें स्वीकार नही कर सकता। दयानन्द सरस्वती महान् व्यक्ति थे, और जो कहते थे उसमें खुद विश्वास भी करते थे, इसलिए उनका प्रभाव तो पड़ा ही। आर्यसमाजमें

जितना अच्छा है, उसे, मेरी दृष्टिमें, हिन्दू-धर्म ग्रहण कर रहा है, और ऐसी ग्रहण-शीलता हिन्दू-धर्मकी विशेषता है। इससे अधिक गहराईमें अभी न मैं उतरना चाहता हूँ और न तुम्हें ही उतारना चाहता हूँ। यदि मुझे १२५ वर्ष या अभी बहुत दिन और जीना हो तो, और मेरी अनासक्ति जितनी मैं चाहता हूँ उतनी गहरी हो सकी तो, मेरे विचार बहुत स्पष्ट और दृढ़ हो जायेंगे और मुझे भाषा भी ऐसी मिल जायेगी जिसपर सरस्वती विराजमान होगी। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक मेरे अब तकके नीरस वचनोंसे ही निबाह करना। छिट-फुट विचार तो मैं प्रसंगवश प्रकट करता ही रहता हूँ और करता रहूँगा। अगर होना होगा तो कालान्तरसे इसीमें से बहुत-कुछ सरल होकर सामने आयेगा। अभी तो "नेति नेति" की ही स्थिति है। इसमें से कुछ सन्तोष प्राप्त हो तो प्राप्त करना। मुझे दुःख है कि जिस स्पष्टतासे तुमने प्रश्न पूछा उस स्पष्टतासे मैं उत्तर नहीं दे सकता।

गणपति उत्सवके बारेमें मै लिख चुका हूँ। उसमें इतना और जोड़ूँगा:

१. जहाँ गणपति मन्दिर हो वहाँ अभी तो आरती आदि होनी ही चाहिए। आरती और पूजामें सुधारकी गुंजाइश है। आजकी आरती बेसुरी[1] है, संगीतमय नही है। उसे बहुत ही सादगीसे संगीतमय और मधुर बनाया जा सकता है। पूजामें भी अच्छे पुजारियोंको लगाकर गम्भीरता लाई जा सकती है।

२. दशहरेके उत्सवमें धर्म बिल्कुल नहीं है, केवल रूढ़ि ही है। मैं तो बचपनसे ही उसके विरुद्ध रहा हूँ। यदि लोगोंको शस्त्र-सज्जित करना हो तो उसमें दशहरेका कोई स्थान नहीं है। शस्त्रकी पूजा नहीं बल्कि सभीको — बच्चेको भी — शस्त्रका उपयोग सिखाना चाहिए — जैसा कि पश्चिममें किया जाता है।

३. चरखा जयन्तीपर चरखा चलाना ही उसकी पूजा है। लेकिन इसे रूढ़िके रूपमें मानना चरखेका अपमान करना है। यदि तुम यह प्रश्न उठाओगे कि चरखा चलाते समय दिनमें भी मैं घीका दीया क्यों जलाने देता हूँ तो मेरा उत्तर यह होगा कि इसमें बहुत हद तक मेरी सहिष्णुता है और दुर्बलता भी। 'गीता' की पूजाके या गीता-जयन्ती आज जिस प्रकार मनाई जाती है उसके मैं हमेशा खिलाफ ही रहा हूँ और गीता-जयन्तीके अवसरके लिए 'गीता' की स्तुति लिखवाने के सुझावको मैंने अस्वीकार कर दिया है।

४. किसी नेताके छाया-चित्रकी पूजा करना, आरती उतारना आदि ऐसी चीजें हैं जो मुझे अच्छी नहीं लगतीं। वैसे मैंने सर्वत्र इसका विरोध नहीं किया है, लेकिन मनमें तो किया ही है। लेकिन इस प्रकारकी मनुष्य-पूजा हिन्दुओंकी रग-रगमें समाई हुई है, इसलिए मैंने उदासीनता बरती है। इसमें सबसे बड़ा गुनहगार भी मैं ही हूँ, क्योंकि मेरी मूर्तिकी पूजा बहुत व्यापक हो गई है। इसे किसी तरहसे बन्द नहीं किया जा सकता, इसलिए दूसरे नेताओंकी भी पूजा शुरू होने पर मुझे एक प्रकारकी झूठी सान्त्वना मिली है, लेकिन इससे यह दोष कोई कम नही हो जाता। कहना मुश्किल है कि यह चीज हमें कहाँ ले जायेगी। इसमें इतना तथ्य अवश्य है

१. मूलमें यहाँ "जंगली" शब्द है।

कि खुद मनुष्य किसी-न-किसी प्रकारसे मूर्ति है और इसलिए वह मूर्तिपूजक रहेगा ही। विभिन्न धर्मावलम्बी पूजाकी रीति तो अलग-अलग रखेंगे ही, लेकिन मूलमें तो मूर्तिपूजा ही है।

५. शिलान्यासके अवसरपर ब्राह्मणोंको निमन्त्रित करने, नारियल फोड़ने आदि प्रथाओंका मुझे शत्रु समझो। लेकिन इसके बावजूद मैंने इन्हें सहन किया है, ऐसा मानो। किन्तु जबसे मेरा मन हम सबको एक ही जाति अर्थात अति शूद्रके रूपमें देखने लगा है तबसे इन सभी विधियोंने मेरे मनमें एक भिन्न रूप ले लिया है। इस नई विधिका आरम्भ तेन्दुलकर और इन्दुके विवाहके समय हुआ। इतने दिन बीत गये लेकिन इसके आरम्भमें मुझे कोई दोष नहीं दिखाई दिया है और उस अवसरपर तो वह बहुत शोभामय सिद्ध हुआ था।

वनु[1] का अच्छा चल रहा है। अगर क्लिनिक[2] कायम रहा तो वह पूरा वर्ष निकाल लेगी और उससे वह कुछ भी खोयेगी नहीं, बल्कि मेरे विचारसे कुछ पायेगी ही। मुझे यह बात खटकती है कि उसकी ओर जितना चाहता हूँ उतना ध्यान नहीं दे पाता। लेकिन मेरा काम यहाँ भी इतना ज्यादा बढ़ गया है और अपने समयका इतनी सावधानीसे उपयोग करता हूँ कि उसमें से किसी और कामके लिए कुछ भी समय बचा नहीं पाता।

सरदार कल आयेंगे। दिनशा उनके साथ है। वह आज ही लौट जायेगा।

प्यारेलालका बुखार कुछ दिन हुए उतर गया है। कमजोरी धीरे-धीरे जा रही है। मेरा मन तो वहीं लगा हुआ है और जल्दीसे-जल्दी वहाँ पहुँचने के लिए बेचैन है। लेकिन मेरे धर्मने मुझे यहाँ रोक रखा है। सरदारके आने पर अधिक समाचार मिलेंगे।

बावला[3] का कैसा चल रहा है? मणि[4] तुम्हारे साथ है या आश्रममें? क्या वह ठीक है? क्या दुर्गाबहन[5] ठीक हो गई?

किशोरलाल[6] सेवाग्रामकी ठण्ड कैसे सहन कर सकेगा? लेकिन गोमती[7] के इस अवस्थामें रहते वह कहाँ जाये? इसपर विचार करना। घरमें अँगीठी रखकर तो गर्मी पैदा की ही जा सकती है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१३८ बी) से

१. नरहरि द्वा० परीखकी पुत्री वनमाला परीख
२. नैसर्गिक उपचार गृह, पूना
३. महादेव देसाईके पुत्र नारायण देसाई
४. नरहरि द्वा० परीखकी पत्नी
५. महादेव देसाईकी पत्नी दुर्गा देसाई
६ और ७. किशोरलाल मशरूवाला तथा उनकी पत्नी

१५. पत्र : सुरेन्द्र मशरूवालाको

२ नवम्बर, १९४५

चि० सुरेन्द्र,

तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर मुझे शान्ति मिली है। मेरे आने तक तुम वहाँ रहोगे, अतः गोमतीवहनके बारेमें मैं कुछ निश्चिन्त रहूँगा। सुशीलावहन[1] ने उसकी खातिर वहाँ जाने की तत्परता दिखाई थी, किन्तु जब तक वहाँसे और अधिक जानकारी नही मिलती तब तक यहाँके कामसे अलग करने की आवश्यकता मुझे नजर नही आती। तुम्हारा पत्र मिलने के पूर्व ही मुझे पता चल गया था कि दवाएँ बन्द हो गई है और इस जानकारीसे मुझे प्रसन्नता हुई थी। मेरे वहाँ पहुँचने की आखिरी तारीख २१ है।

बापूके आशीर्वाद

आश्रम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१६. पत्र : रामचन्द्र किल्लावालाको

२ नवम्बर, १९४५

भाई रामचन्द्र,

तुम्हारा पत्र मिला। उन दोनों व्यक्तियोंके सम्बन्धमें कोई आन्दोलन तो ऐसे लोगोंको ही करना चाहिए जो उन्हें जानते हों। तभी उसे उचित माना जायेगा। मौलाना साहब और कांग्रेस सभी कैदियोको छुड़वाने का भगीरथ प्रयत्न कर रहे हैं। इससे तुम्हें सन्तुष्ट होना चाहिए।

यदि तुम उन दोनोंके बारेमें संक्षिप्त किन्तु पूरी जानकारी देने वाला विवरण भेज सको तो अगर मेरे कुछ करने-जैसा होगा तो वैसा करने में मैं चूकूंगा नहीं। एक उपाय तो यह है ही कि तुम स्वयं अथवा जो उन लोगोंको जानते हों, वे पूरा विवरण अखबारोंको दे दें।

बापूके आशीर्वाद

रामचन्द्र किल्लावाला
२२, राम मन्दिर रोड
विले पार्ले

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. डॉ० सुशीला नैयर

१७. पत्र : कैलाश मास्टरको

१२ नवम्बर, १९४५

चि० कैलाश,

तेरा पत्र मिला। मुझे स्वीकार करना चाहिए कि तेरे सम्बन्धमें मुझे निराश होना पड़ा है। प्रभुदासने तुझे आसमानपर चढ़ा दिया। मैंने उसके द्वारा की गई प्रशंसाको अक्षरशः स्वीकार कर लिया और आश्रमके मंन्त्रीसे तुझे दाखिल कर लेने की जोरदार सिफारिश की, किन्तु तू उस प्रशसाके योग्य नही निकली, और तू चिन्ता पैदा कर रही है। अब भी यदि तू ठिकाने पर आ गई हो तो अच्छा ही है। प्रभुदास की माताजी अशक्त हो गई है, हालाँकि उनकी बुद्धि तो ठीक ही है और उसके पिता शय्याग्रस्त है, इसलिए यदि तू उनकी कन्या बनकर रही होती तो उनके बारेमें मेरी चिन्ता कितनी ज्यादा कम हो जाती? जब तक तुझमें सच्ची सेवा-वृत्ति जाग्रत नही होती, जब तक तू सामान्य रूपसे स्वादको जीत नही लेती और सभी बालकोंको अपनाने की सामर्थ्य प्राप्त नही कर लेती, मेरी समझमें नही आता कि तब तक तू बालमन्दिरको कैसे शोभान्वित कर सकेगी? बड़े बच्चोंकी पाठशाला चलाने की अपेक्षा बालमन्दिर चलाना ज्यादा मुश्किल है। इस बातको बहुत कम लोग समझते हैं। आजकल बालमन्दिरोंकी हवा चल रही है। "वहाँ बच्चोंको सिखाने को क्या है?" ऐसे अज्ञानमें रहने वाले बहुत-से लोग हैं। मैं चाहता हूँ कि तू ऐसे अज्ञानमें न फँसी रहे। यह पत्र तुझे बालमन्दिरका अनुभव प्राप्त करने से रोकने के लिए नहीं लिख रहा हूँ, बल्कि मैं यह मानता हूँ कि वह अनुभव प्राप्त करते हुए उसके पूरकके रूपमें यदि तू काशीबहनकी सेवा करे तो अच्छा होगा। शान्ताबहनको यह पत्र पढ़वा देना। जैसा तुझे ठीक लगे वैसा करना।

सोचना कि एक छोटा-सा श्लोक लिखनें में भी तूने कितनी बड़ी गलतियाँ की है। तेरे देवनागरीके अक्षर तो तनिक भी सुडौल नही है। ऐसे अक्षरोंमें श्लोक उद्धृत करने से क्या लाभ हो सकता है? यदि तूने इस श्लोकको समझा होता और उसका अर्थ गुजरातीमें दे देती तो कितना अच्छा लगता? तेरी गुजराती लिखावटके बारेमें भी आलोचनाकी गुंजाइश तो है ही। तेरे हस्ताक्षर भी अभी पके नही हैं। और हस्ताक्षर भी क्या कागजके कोनेमें घसीटे जा सकते हैं? हस्ताक्षरके अक्षर तो इतने बेढंगे हैं कि तेरे देखने के लिए इसके साथ लौटा रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८. पत्र : अतुलानन्द चक्रवर्तीको

पूना
२ नवम्बर, १९४५

भाई अतुलानन्द,

तुमारा खत मिला, किताब भी। मैं पढ़ता हूं। फिर जल्दी लिखुंगा। 'कॉल इट पॉलिटिक्स'[1] खतम हुई? हिंदी समजते तो है न?

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १४८५) से। सौजन्य : ए० के० सेन

१९. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

२ नवम्बर, १९४५

भाई जाजूजी,

आपका पत्र कल ही मिला। कल ही आ सकता था। यह पत्र पहुंचने के समय आप बंगाल चले गये होंगे। चर्खा संघकी सभा २७, २८ रखें।

सियालकोठके पत्रपर मैं लेख भेज दूंगा। इसलिये अलग नहीं लिखता हूं।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें पुस्तकका नाम अंग्रेजीमें है।

२०. पत्र : रामनारायण दुबेको

[२ नवम्बर, १९४५

भाई रामनारायण दुबे,

आपका पत्र मिला। आपकी किताब भेज रहे लेकिन मुझे समर्पण करने की बात तो छोड़ ही दें। किताबमें अगर सच्ची शक्ति होगी तो वह शक्ति ही सच्चा समर्पण है। किताब मैं ध्यानसे पढ सकूंगा ऐसा मैं नही कह सकता हूं। लेकिन देखने से वह मुझे खैंचे तो दूसरी बात है।

मुझको मिलने की तो जब मैं सेवाग्राममें स्थिर हो जाऊं तब देख लीजिये।

रामनारायण दुबे
द्वारा पंडित रामनारायण मिश्र
कालभैरव, बनारस

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स]। सौजन्य प्यारेलाल

२१. पत्र : जयसुखलाल गांधीको

[३ नवम्बर, १९४५ के पूर्व][1]

महुवाको तो हवाखोरीकी जगह माना जाता है। इसलिए यह बन्दरगाह तुम्हें माफिक आना चाहिए।

मुझे ऐसा ध्यान है कि महुवामें पढ़ने की सुविधा उपलब्ध है। किसी समय दूधाभाई वहाँ एक हरिजन पाठशाला चलाते थे और उसमें अच्छी संख्यामें विद्यार्थी आया करते थे। अब वह पाठशाला चलती है या नही, यह पता लगाकर लिखना।

तुम लोग ऐसी जगहपर गये हो जहाँ बहुत सेवा-कार्य हो सकता है। वहाँ धर्मान्ध लोग रहते हैं। वहाँ कोई खादी नहीं पहनता; इक्के-दुक्के लोग ही खादी पहने दिखाई देंगे। वह क्षेत्र बिलकुल अछूता-सा है। और फिर राज्यका बड़ा बन्दरगाह होने की वजहसे उसपर राज्यका प्रभाव भी देखा जा सकता है।

तुमसे जितना बन सके उतना करना। मुझे लिखते रहना। मेरा ऐसा खयाल है कि

१. पत्रमें सरदार पटेलके बम्बई जाने के उल्लेखके आधारपर। वे ३ नवम्बर, १९४५ को बम्बईसे वापस आये थे।

रायचन्दभाईका पुत्र भी वहीं है। ऐसा नहीं है कि वह रायचन्दभाईका काम करता हो। वह मुझे पत्र लिखा करता था। उसके विचार तो अच्छे हैं। लेकिन उसकी खोज-खबर करने की जरूरत नहीं। कदाचित् सहज ही तुम्हें उसके बारेमें पता चल जाये।

सरदार पाँच दिनके लिए बम्बई गये हैं और वे जहाँ होते हैं वहाँसे उनके चले जाने पर वह जगह सूनी लगती है। उनका स्वभाव ही इतना विनोदी और मिलनसार है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बा बापुनी शीळी छायामां, पृ० २३४

२२. चरखा संघ और राजनीति

चरखा संघके मन्त्री श्री जाजूजी को उपरोक्त पत्र[1] एक खादी-सेवककी ओरसे मिला है। जाजूजी ने मुझे भेजा है। इस दृष्टिसे भेजा है कि मैं इस प्रश्नकी चर्चा 'खादी-जगत्' में करूँ और अपना अभिप्राय दूँ। चरखा संघ छोटी संस्था नहीं है। आज भी चरखा संघके नौकर कहिए या सेवक कहिए सारे हिन्दुस्तानमें हैं। उनकी संख्या तीन हजार है। इसे मैं बहुत छोटी संख्या मानता हूँ। खादी जब हिन्दुस्तानमें फैल जायेगी तब संख्या बहुत बढ़नी चाहिए। अगर जितने देहात हैं उतने सेवक मिले सकें, तब भी चरखा संघके दफ्तरमें सात लाख नाम होने चाहिए। इसके लिए काफी पैसे चाहिए। इस डरसे कोई यह न माने कि इतने सेवक होना असम्भव है। मैंने ऐसा कभी नहीं माना। जब काम शुभ रहता है और उसके लिए लोगोंमें सेवाकी तैयारी रहती है तब पैसे मिल ही जाते हैं। जीवन-भर मैंने संस्थाएँ बनाने का और चलाने का ही काम किया है। मेरे अनुभवमें एक भी संस्था ऐसी नही रही है कि जो पैसेके अभावसे मिट गई हो या छोटी रह गई हो। इससे उल्टा, मेरा अनुभव यह है कि संस्था सिर्फ कार्यकर्त्ता अथवा सेवकके अभावसे मिटी है या छोटी रही है। इसके उत्तरमें कोई ऐसा न कहे कि बड़े-बड़े कारखाने चलते हैं और सरकारी नौकरीमें भरतियाँ होती हैं वह पैसेसे नही तो और कैसे होता है। जो ऊपरकी बात पूरी तौरसे नही समझे हैं वही ऐसी शंका उठाते हैं। मैंने ऐसा नही कहा कि पैसेसे कुछ काम ही नही हो सकता है। अगर पैसेसे बहुत काम न होता, तो हम पैसेके गुलाम कैसे बनते? मैं तो यह भी कहूँगा कि बगैर पैसेके हम आगे बढ़ ही नहीं सकते। लेकिन मेरा कहना तो यह है कि अगर पैसेके गुलाम बनना है तो लोक-सेवाकी बात छोड़नी ही चाहिए और गुलामोंके

१. पत्र यहाँ नहीं दिया गया है। इसमें सुझाव दिया गया था कि चरखा संघके कार्यकर्ताओंको अपने खाली समयमें चुनावकी सरगरमीमें भाग लेने की इजाजत दी जाये तो अच्छा हो।

नसीबमें कुचला जाना ही है। यदि पैसेको हम अपना गुलाम समझकर, साधन समझकर, उसका उपयोग करें और वह भी सेवा-भावसे, तो सदुपयोग करते हैं। सेवा-कामके लिए हमारी पहली और अनिवार्य हाजत और आवश्यकता मनुष्य है और जब ऐसे सेवक मिल जाते हैं तब पैसे उनके पीछे दौड़कर आते हैं। पैसे ढूंढ़ने के लिए ऐसे लोगोंको जाना नही पड़ता। इस कारण मैंने कहा है कि सात लाख या इससे भी अधिक सेवक मिलें तो पैसे हमारी तिजोरीमें ही पड़े हैं, ऐसा समझना चाहिए। यह कहा जा सकता है कि लोगोंको ललचायें या लुभायें, इतने पैसे हम नही देते। यह बात मैं कबूल करूँगा। यहाँ तो भावना ही है। चरखा संघ जैसी पारमार्थिक संस्थामें जो लोग आते हैं वह सेवाके लिए, दरमाहा (माहवार तनख्वाह) के लिए नही। दरमाहा लेते तो हैं, क्योंकि जैसे धनिकको ऐसे ही गरीबको भी खाना-पीना तो है ही, लेकिन वह जिन्दा रहने के लिए और सेवाकी शक्ति रखने के लिए। ऐसे सेवक न तो शौकके लिए खाते हैं, न पीते हैं और न पहनते हैं।

अगर यह मान लिया जाये कि चरखा संघके सेवक इस प्रकारके हैं तो उनको राजप्रकरणमें काम करने का समय ही नही रहता। माना कि चरखा संघके दफ्तरमें आठ घण्टे दिये और बाकीका समय मौज, शौक या दूसरे कामोंमें लगा दिया, तब तो चरखा संघका काम नहीं चल सकता, क्योंकि उन्हीको चरखा संघको बनाना है और बिगाड़ना है। इसलिए आठ घण्टेके बाहरका समय भी उस कामको बढ़ाने की शक्ति पाने के लिए खर्च करें, जैसे कि खादी बनाने की क्रियाएँ सीखना, खादी-शास्त्र पढ़ना और ऐसे जो कार्य करने चाहिए उन्हें भलीभाँति करना।

इसका यह मतलब नहीं हुआ कि चरखा संघके काम करने वालोंको राजप्रकरणमें और दूसरे कामोंमें रस नही है। रस तो है और रहना चाहिए। लेकिन उस रसको अंकुशमें रखकर वह सब रस चरखा संघके मार्फत ही पैदा करता है और लूटता है। तब ही वह सच्चे राजप्रकरणको पहचानता है। वह सच्चा मतदाता रहेगा और कांग्रेसकी तरफसे जो खड़ा किया जाता है उसको मत देगा, लेकिन वह दूसरोंको मनाने की झंझटमें नही पड़ेगा। उसकी सभामें व्याख्यान नहीं देगा। उस काममें अपना समय नही देगा। कांग्रेसका काम व जनताका काम एक ही है। कांग्रेस जनताकी ही है। काग्रेसने चरखा संघको पैदा किया है, चरखा संघ भी जनताका है। जैसे राजप्रकरण काग्रेसका है वैसे ही चरखा संघ भी कांग्रेसका है। एक ही आदमी दो घोड़ेपर सवारी कैसे करे? जो चरखा संघमें जाता है वह सारा समय चरखा संघका ही काम करे। जो राजप्रकरण में जाता है वह राजप्रकरणका ही काम करे। इस तरह दोनों अपना-अपना काम बाँट कर एक-दूसरेको पूरी मदद देते हैं। मैंने जो-कुछ कहा है वही उसकी जड़ है। जिससे चरखा संघका यह नियम रहा है कि जो चरखा संघमें काम करने वाले है वे राजप्रकरणमें क्रियात्मक हिस्सा न लें।

पूना, ३ नवम्बर, १९४५
खादी-जगत्, दिसम्बर, १९४५

२३. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

पूना
३ नवम्बर, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा कोई पत्र ही नही आया, यह ठीक बात नही है। मैंने जो सलाह दी थी उसका उत्तर मिलने पर ही तुम्हारे अन्य प्रश्नोंका उत्तर देने की बात थी और अभी भी है।

कंचन जल रही है। उसका ताप तुम्हारे बिना और कौन शान्त कर सकता है? यदि तुम उसे मुक्त कर दो तो भी वह किसी अन्य व्यक्तिसे विवाह नही करेगी। वह किसी अन्य व्यक्तिके साथ गुप्त रूपसे संग करके अपनी कामवासनाको तृप्त करनेवाली नहीं है। फिर भी वह अपनी कामाग्निमें जल रही है। वह ब्रह्मचर्यके महत्त्वको नही समझती। उसने कामवासनाको तृप्त करने के लिए ही विवाह किया है। तुमने विवाहके समय उसके सम्मुख ब्रह्मचर्यकी शर्त नही रखी थी। अब उसकी कामेच्छाको तृप्त करना क्या तुम्हारा धर्म नहीं है? यदि तुम सर्वथा निर्विकार हो तो फिर मुझे कुछ नहीं कहना है। तुम कंचनको सन्तान देकर पूरी तरह संयमका पालन करो, या उसे क्रोधसे नही बल्कि प्रेमसे शान्त करो। तुम्हें किशोरलाल, गोमती, छगनलाल और बोरडेकी सेवा करनी चाहिए और कंचनको भी करनी चाहिए। मुझे लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४२८) से। सी० डब्ल्यू० ५६०१ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

२४. पत्र : कंचन मु० शाहको

३ नवम्बर, १९४५

चि० कंचन,

तेरा पत्र मिला। मुझे तुझपर दया आती है, उतनी ही मुन्नालालपर भी। मैंने तो उसे साफ-साफ लिख दिया है कि वह तेरे साथ घर बसाकर रहे और यदि तुम दोनों स्वेच्छासे संयमका पालन न कर सको तो भले ही सन्तान हो। लेकिन यदि उसका मन नहीं मानता, तो तू उसके साथ बलात्कार तो नही करना चाहेगी। इसलिए

तुझे शान्त रहना चाहिए। यह पत्र तू मुन्नालालको दिखाना। यदि वह नहीं माने तो तुझे सब-कुछ ईश्वरपर छोड़कर काममें जुट जाना चाहिए। अभी तो मेरी इच्छा है कि यदि तेरा शरीर साथ दे तो तू गोमतीबहनकी सेवा कर और दूसरे रोगियोंकी भी। मेरे वहाँ आने पर मेरे साथ तेरे जाने की बात करेंगे। तू मेरे साथ मद्रास जाना चाहती थी। अब तू बंगाल और मद्रास, दोनों जगह जाना चाहती है। यह विचारणीय है। मिलने पर विचार करेंगे। इस बीच तू शान्त रह, स्वस्थ हो जा और खूब सेवा कर। तू अच्छी सेविका है। सेवा ही तेरा पति, तेरा शौक, तेरा सब-कुछ हो। लेकिन यदि ऐसा न हो तो भी कोई हर्ज नहीं। चाहे जो हो, लेकिन मनमें कुछ और, मुँहमें कुछ और वाली स्थिति नहीं होनी चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२६०) से। सी० डब्ल्यू० ६९८५ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल ग० शाह

२५. पत्र : छगनलाल गांधीको

३ नवम्बर, १९४५

चि० छगनलाल,

तुम भी बीमार पड़ गये! जब योद्धा ही बीमार पड़ने लगें तब क्या किया जा सकता है? जल्दी स्वस्थ हो जाओ। जिस सेवाकी जरूरत हो, निस्संकोच होकर लेना।

काशी[1] ठीक होगी।

तुम तो पत्र नहीं लिख सकते। काशी लिखे।

बापूके आशीर्वाद

गुजराती (सी० डब्ल्यू० ९२२४) से। सौजन्य : छगनलाल गांधी

१. छगनलाल गांधीकी पत्नी

२६. तार : जानकीदेवी बजाजको

पूना
४ नवम्बर, १९४५

जानकीदेवी बजाज
बजाजवाड़ी
वर्धा

मदालसाके पुत्र-जन्मकी सूचनाके तुम्हारे दो तार मिले। आशा है माँ-बेटा ठीक प्रगति कर रहे होंगे।

बापू

[अंग्रेजीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० २६४

२७. पत्र : प्रेस्टन ग्रोवरको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
४ नवम्बर, १९४५

प्रिय ग्रोवर,

तुम्हारे अन्दरका पत्रकार बोल रहा है। मैं तुम्हारी इस बातसे पूरी तरह सहमत हूँ कि मेरा वक्तव्य दिलचस्प हो या न हो, लेकिन निस्सन्देह वह बहुत अर्थपूर्ण होता है। समाचारपत्रोंके लिए न भी हो, तुम्हें अपने लिए तो वह किसी दिन मिल जायेगा। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि जनता या समाचारपत्र कोई भी इस बातके लिए आतुर नहीं है कि मैं क्या कहता या करता हूँ। इसलिए बाहरी बाधाओंसे मुक्त रहकर मैं जितना समय लूँ, मुझे लेने दो।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्री प्रेस्टन ग्रोवर
एसोसिएटेड प्रेस ऑफ इंडिया
टाइम्स ऑफ इंडिया बिल्डिंग
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२८. पत्र : मदालसाको

पूना
४ नवम्बर, १९४५

चि० मदालसा,

अब तो तू दो लड़कोंकी माँ बन गई है। जानकीबहनको इतनी खुशी हुई है कि उन्होंने मुझे दो तार भेजे। यदि उनका तार न मिला होता तो मुझे मालूम ही न होता। मैंने उत्तरमें तार दिया है।[1] वह उन्हें मिल गया होगा।

तेरा पत्र मिला, पढ़कर खुशी हुई। मैं दौरेसे जब वापस आऊँगा तब तू मुझे अपने घर ले जाना।

तेरी सास तेरे पास है, यह बहुत अच्छी बात है। तुम दोनों प्रसन्न होगे।

तुम सबको,

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३२६

२९. पत्र : सुशीला गांधीको

पूना
४ नवम्बर, १९४५

चि० सुशीला,

मैं नहीं जानता कि तुझे मालूम है या नहीं, परन्तु किशोरलाल और गोमतीबहन दिन-ब-दिन कमजोर होते जा रहे हैं। सेवाग्रामकी सर्दी उन्हें माफिक नहीं आ रही। किसीसे सेवा करवाने में भी संकोच करते हैं। गोमतीबहन तो बीमार ही है। वह एक प्रकारके टायफाइडसे पीड़ित है। उसका लगातार रहने वाला बुखार अभी कुछ कम तो हुआ है। ऐसी आशा और कामना है कि बुखार बिलकुल उतर जायेगा। लेकिन खाट छोड़ने में तो और भी समय लगेगा, और वह अपनी देख-भाल खुद कर सके इसमें तो और भी समय लगेगा। चाहे जिसकी सेवा तो वह लेगी नहीं। यदि सम्भव हो तो इन दोनोंमें से कोई भी किसीकी सेवा ग्रहण न करे। अब यदि कोई इन दोनोंके पास हो और इनकी सेवा करे तो मुझे अच्छा लगेगा। इन दोनोंको अच्छा लगने की तो कोई बात नहीं है, क्योंकि मेरे जानते इन्होंने सेवा प्राप्त न होने की शिकायत किसीसे की नहीं है। लेकिन मेरा मन तो शिकायत करता है न? यदि तू वहाँसे मुक्त होकर सेवाग्राम जा सके तथा यदि तेरा स्वास्थ्य उनकी सेवा करने लायक हो तो तू वहाँ जा और उनकी पूरी सेवा कर। यदि यह सम्भव हो तो मेरे विचारसे यह बहुत अच्छी व्यवस्था होगी। ऐसा होने पर तुझे मेरे साथ कलकत्ता चलने के अपने इरादेको

१. देखिए पृ० २२।

भी बदलना होगा। मेरा खयाल है कि घूमते-फिरते आश्रम लौटने तक फरवरी मास आ जायेगा। और तब तक तो सर्दी भी खत्म हो जायेगी और उम्मीद है कि ये दोनों भी ठीक हो जायेंगे। मैं २१ तारीखको सेवाग्राम पहुँचने की आशा रखता हूँ और मैं चाहता हूँ कि तब तक तुम दोनों सेवाग्राम पहुँच जाओ। हाँ, यह जरूर चाहता हूँ कि मणिलाल मेरी सेवा करने के लिए नहीं, बल्कि अपने कार्यकी दृष्टिसे अनुभव प्राप्त करने तथा लोगोंको पहचानने के लिए मेरे साथ सफर करे। इसलिए वह सारा समय वहाँ नहीं होगा। अरुण तो मेरे साथ सेवाग्राम आयेगा ही। पढ़ने में वह चाहे जैसा भी निकले, लेकिन मेरे विचारसे वह अपनेको एक अच्छा सेवक सिद्ध कर रहा है। वह हमेशा कनुके साथ रहता है; इसलिए सेवा करना तो सीख ही लेगा। इसलिए वह भी मदद करेगा। वैसे, यदि इस बातपर कि अरुण आश्रममें ही पले-बढ़े, जैसा कि अरुण अभी कहता है, तुम दोनों मेरी खातिर नहीं बल्कि स्वतन्त्र रूपसे सहमत हो, तो वह पढ़ेगा भी और ज्ञान भी प्राप्त करेगा। फिर, अभी-अभी उसकी अमीन-भाईसे दोस्ती हुई है। अमीनभाई विद्वान हैं और आश्रममें ही रहते हैं। लेकिन कदाचित् तू उन्हें नही पहचानती होगी। मणिलालको तो उन्हें जानना ही चाहिए। तेरी ही तरह उन्हें भी चित्रकला आती है, लेकिन तेरेसे बहुत अच्छी। अरुण अभीसे उनसे सीख रहा है। और अमीनभाईका तो यह कहना है कि यदि उसे दो वर्षका समय दिया जाये तो उतने समयमें वह इतनी चित्रकला सीख लेगा जितनी अच्छेसे-अच्छे स्कूलमें भरती होने पर भी नहीं सीखी जा सकती। कदाचित् यह अत्याशा हो, लेकिन उससे हमें क्या? उनका साथ इसके लिए अच्छा है, इतना तो स्पष्ट ही है। अरुणके बारेमें इतना सब लिखने का मेरा हेतु यही है कि उसमें सेवाभाव है। वह आश्रममें तेरे साथ रहेगा, इसलिए तू आश्रमसे ऊबेगी नहीं और किशोरलाल तथा गोमतीबहन सहज ही तेरी सेवा प्राप्त कर सकेंगे। अगर उन्हें यह लगा कि तेरे वहाँ सेवा करने से तेरा नुकसान होता है तो वे उसे सहन नहीं करेंगे। इसके अतिरिक्त मैं यह भी कह दूँ कि काशी भी अब जर्जर हो गई है। उसका शरीर अब कम चलता है और छगनलाल खाटपर पड़ा हुआ है। उसमें लगातार बुखार रहने लगा है। यदि छगनलालका बुखार गोमतीबहनकी तरह ज्यादा समय तक रहा तो उसकी देखरेख की भी जरूरत होगी। मेरे खयालसे यदि उसकी खातिर भी तू आश्रममें रहेगी तो अच्छा होगा। इस प्रकार मैं जो तेरा धर्म समझता हूँ वह मैंने तुझे बता दिया है। तुम दोनोंको जो करना हो, वह विचारपूर्वक करना। और यदि वहाँ तुम्हारी आवश्यकता न हुई तो तुम दोनों आश्रम तो जरूर चले आना और अपने विचार मुझे वहाँसे ही लिख भेजना। इला[1] तो तुम्हारे साथ ही होगी, लेकिन मुझे लगता है कि वह किसीपर भार नहीं बन सकती, और तुम्हारे बिना रह भी नहीं सकती।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९६५) से

१. सुशीला गांधीकी सबसे छोटी पुत्री

३०. पत्र : अनसूया साराभाईको

पूना
४ नवम्बर, १९४५

चि० अनसूयाबहन,

तुम्हारा पत्र मिला। दीवाली है कहाँ? कौन उसे मनायेगा? तुम अच्छी हो न? चि० शंकरलाल[1] कैसा है? मैं ठीक हूँ। सरदारके स्वास्थ्यमें अब भी दिखने लायक सुधार नही हुआ है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११५६४) से

३१. पत्र : गजानन नायकको

पूना
४ नवम्बर, १९४५

चि० गजानन,

तुम्हारा पत्र मिल गया है। उसे पढ़कर मैं प्रसन्न हुआ हूँ। मैंने तुझे जो समझाया है यदि उसे तू पूरी तरह आत्मसात् करे तभी सच्ची सेवा होगी।

बापूके आशीर्वाद

गजानन नायक
अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ
मगनवाड़ी
वर्धा

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य . प्यारेलाल

१. शंकरलाल बैंकर

३२. पत्र : जानकीदेवी बजाजको

पूना
४ नवम्बर, १९४५

चि० जानकी मैया,

अब तो पांच गज ऊंची हुई होगी। मेरा तार[1] मिल गया होगा। अब तुमारे माया छोड़ना चाहीये और सिर्फ जमनालालका गोसेवाका काम देखना है। उसमें निपुणता आनी चाहीये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५८५२) से

३३. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

पूना
४ नवम्बर, १९४५

चि० घनश्यामदास,

दीनशाने आप भाइयोंके साथ बात की है उसपर असर यह है कि नासिक जाने का उसका उत्साह नहीं है।[2] इसलिये नासिकका विचार छूटा समजो। मकानका जैसे चलता है ऐसे चलने दो। अगर मैं दीनशाका उत्साह नासिककी ओर देखुंगा तो बात करूंगा। उस समय मकान या जमीन होंगे तो इसे लेंगे।

हम सब यहांसे १९ तारीखको मुंबई पहुंचेंगे। मुंबईसे मैं २० तारीखको वर्धाके लिये रवाना हूंगा।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०७४) से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

१. देखिए पृ० २२।
२. देखिए "वक्तव्य : समाचारपत्रोंको", २१-११-१९४५ भी।

३४. पत्र : मनरंजन चौधरीको

४ नवम्बर, १९४५

चि० मनरंजन चौधरी,

तुम्हारा तार मिला। मैं इलेक्शन[1] के बारेमें कुछ रस नही ले रहा हूं। मैं बहुत कम जानता हूं इसलिए मैंने कोई तार तो नही दिया। लेकिन कांग्रेसके उम्मीदवारके सामने क्यु खड़े रहते हैं? यूं तो आप भी कांग्रेसके ही हैं। कांग्रेस हिन्दुओंकी दुश्मन तो नहीं है। कांग्रेस उम्मीदवार दुष्ट हो तो दूसरी बात। ऐसा है तो मुझको भी कह देना अच्छा लगेगा। अखबारोंसे मैं पाता हूं कि हर जगहपर कांग्रेसके उम्मीदवारोंका सामना करना ही हिन्दु महासभाने अपना धर्म बना लिया है। ऐसा है तो वह धर्म, धर्म होना चाहिये अधर्म तो नही। सर राधाकृष्णनने कराचीमें व्याख्यान दिया है उसमें हिन्दु महासभाके लोग सिंधमें जो कर रहे हैं उसका वर्णन किया है। वे सबको और तुम्हारे तो खास देखने लायक है: वे सब सच है और जो मैं सुन रहा हूं वे सच है तो न उसमें हिंदू धर्मकी रक्षा है न हिन्दुस्तानकी। यह तुम्हारे जैसेके लिये तो बहुत ही विचारणीय है। तुम्हारा तार सरदारको भी बताया। वे कल रातको बम्बईसे वापस आये हैं। उनको भी तार देखकर खेद हुआ।

बापुके आ[शीर्वाद]

श्री मनरंजन चौधरी
१४३/३, अपर सर्कुलर रोड
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे. प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. प्रान्तीय विधान-सभाओंके चुनाव १९४५-४६ की सर्दियोंमें और केन्द्रीय विधान-सभा चुनाव नये बजटके पूर्व होने वाले थे।

३५. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
५ नवम्बर, १९४५

प्रिय सर एवन,

आपके पहली तारीखके उस पत्र[1] के लिए धन्यवाद जिसमें खादीके बारेमें गत २९ तारीखके मेरे पत्रपर की गई कार्रवाईकी सूचना दी गई है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ७०

३६. पत्र : शिवाभाई पटेलको

पूना
५ नवम्बर, १९४५

चि० शिवाभाई,

तुम्हारा कार्ड मिला। कातने वालेंको बधाई। यदि तुमने सूतके आँकड़े राजकोटमें नारणदास गांधीको न भेजे हों तो भेजना। रुपया भेजने में पैसे खर्च न करके उस पैसेका वहीं हरिजन-सेवामें उपयोग करना।

सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९५२१) से। सी० डब्ल्यू० ४४० से भी; सौजन्य : शिवाभाई जी० पटेल

१. पत्र इस प्रकार था : "मैंने आपका २९ अक्तूबरका वह पत्र वाइसराय महोदयको दिखा दिया है जिसमें आपने खादीकी दुकानोंको जमाखोरी व मुनाफाखोरीके विरुद्ध लगाये प्रान्तीय नियन्त्रणोंसे मुक्त रखने को कहा है। यह पत्र उद्योग और नागरिक संभरण विभागको भेजा जा रहा है। वह विभाग प्रान्तीय अधिकरणोंको आपके विचारोंसे अवगत करा देगा।"

३७. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
६ नवम्बर, १९४५

प्रिय सर एवन,

फैजाबाद जिलेके श्री वसुदा सिंहकी ओरसे वाइसराय महोदयको भेजी याचिकाकी एक नकल सरकारकी सहानुभूति प्राप्त करने के उद्देश्यसे मुझे भी भेजी गई है। याचिकासे मालूम होता है कि यह मामला राजनीतिक है, जिसका सम्बन्ध १९४२ के उपद्रवोंसे है। वाइसराय महोदयने अष्टी चिमूर[1] के मामलोंपर निर्णय देते समय जिस सिद्धान्तसे काम लिया था, इसपर भी सहज ही वही सिद्धान्त लागू होता है। इसलिए क्या मैं वाइसराय महोदयसे अनुरोध कर सकता हूँ कि जैसा कि आम तौरपर किया गया है इस मामलेमें भी मृत्युदण्डको आजन्म कारावासमें बदल दिया जाये?[2]

और चूँकि मृत्युदण्डके लिए १९ तारीख निश्चित की गई है, इसलिए क्या मैं उनसे यह अनुरोध कर सकता हूँ कि वे इस मामलेपर जल्दी विचार करें?

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ५६

३८. पत्र : शारदा गो० चोखावालाको

पूना
६ नवम्बर, १९४५

चि० बबुड़ी,

तेरा पत्र मिला। तू इस तरह अपना दिल क्यों छोटा करती है? मै २१ तारीखको सेवाग्राम पहुँचूंगा। यदि तब तू आये तो अच्छा होगा। वही जो बन्दोबस्त करना

१. अष्टी और चिमूर (मध्य प्रान्त) में भारत छोड़ो आन्दोलनके दौरान हुई हिंसाकी वारदातोंके सम्बन्धमें तीस व्यक्तियोंको फाँसीकी सजा सुनाई गई थी। बादमें सजा बदलकर उन्हें आजीवन कारावास दिया गया। देखिए खण्ड ७९, पृ० ३६० भी।

२. सजाको आजीवन कारावासमें बदल दिया गया था; देखिए "पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको", २५-११-१९४५।

होगा, करूँगा। यदि वहाँ सर्दी ज्यादा हो तो भी वहाँसे नहीं हिलना। बाकी रोगादि तो शरीरके साथ लगे ही रहते हैं। इन्हें खुशी-खुशी सहन करना चाहिए। ऐसा करने से ही आधा कष्ट दूर हो जाता है। तू समझदार और अनुभवी है। तुझे हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।

आनन्द[1] आनन्दपूर्वक होगा।

शकरीबहन[2] भी ठीक होंगी।

तुम दोनोंको,

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००६२) से। सौजन्य: शारदा गो० चोखावाला

३९. पत्र : चम्पा मेहताको

पूना
६ नवम्बर, १९४५

चि० चम्पा,

तू अचानक ही चली आई। अच्छा किया। रतिलाल[3] तेरे पीछे-पीछे न आये, तो काफी है। आश्रमके जीवनमें इस तरह घुल-मिल जाना जिस तरह दूधमें शक्कर। अब दूसरी तरहसे आश्रममें नहीं रहा जा सकता। जो सुविधा मिल सके उसीमें सन्तोष पाना। इस तरहसे रहना जिससे कि तू और बच्चे बीमार न हों। मैं वहाँ २१ तारीखको पहुँचने की आशा करता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०९५) से। सौजन्य: चम्पा र० मेहता

१. शारदा गो० चोखावालाका पुत्र
२. शारदा गो० चोखावालाकी माँ
३. चम्पा मेहताके पति

४०. पत्र : तारा मोडकको

६ नवम्बर, १९४५

प्रिय बहन,

तुम्हारा पत्र मिला। 'शिक्षण पत्रिका' भेजती रहना, और यदि कुछ पूछना हो तो अवश्य पूछना।

बापूके आशीर्वाद

ताराबहन मोडक
९९६, हिन्दू कॉलोनी
दादर
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४१. पत्र : लीलावती परीखको

६ नवम्बर, १९४५

चि० लीलावती,

तेरा पत्र मिला। तुझे पूरी बात अपने पिताजी से कह देनी चाहिए और फिर उनकी सलाह लेनी चाहिए। यदि तेरी इतनी भी हिम्मत न पड़े तो मुझे डर है कि तुझसे कुछ भी होने वाला नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

लीलावती परीख
[मार्फत] ओच्छवलाल नाथाभाई सेठ
कल्याण मोतीकी चाल
कमरा नं० ३०/३१
बम्बई–४

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४२. पत्र : वसुमती पण्डितको

६ नवम्बर, १९४५

चि० वसुमती,

तेरा ३१-१०-४५ का पत्र मिला। तेरे पत्रसे लगता है कि मेरा पिछला पत्र तुझे मिला ही नहीं। मेरी तबीयत तो जरा भी खराब नहीं है, बिलकुल ठीक है।

मैं यहाँसे १९ तारीखको बम्बई जाऊँगा, २१ को सेवाग्राम पहुँचूँगा और ३० दिसम्बरको कलकत्ता जाऊँगा। वहाँ पौने दो महीने रहूँगा। फिर शायद १५ दिन मद्रासमें रहूँगा और वहाँसे लौटते हुए सेवाग्राममें कुछ दिन रहूँगा। सम्भवत. ५-७ दिन वहाँ रहकर सरहदी सूबेके लिए चल पड़ूँगा। वहाँसे लौटकर ही सेवाग्राममें स्थिर होऊँगा, जिसका अर्थ यह हुआ कि फिलहाल मैं स्थायी रूपसे सेवाग्राममें रह ही नहीं सकता। इसलिए यदि तेरी कुछ समय आश्रममें रहने की इच्छा हो तो मेरी अनुपस्थितिमें ही रह सकती है। लेकिन जैसा तेरे मनको ठीक लगे वैसा करना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

६ नवम्बर, १९४५

बापा,

तुम्हारा पत्र मिला। लीला जोगके लिए चैक भी मिला। तुम्हारे पत्रको तो मैं मृदुलाबहनको भिजवा ही दूँगा। फिर भी चैक भेजना तो उचित ही है।[1]

सुशीला पैके बारेमें तुम जो कहते हो सो ठीक ही है। मेरा यह विचार कदापि नहीं था कि दोनोंमें से एकको स्थायी बनाया जाये। लेकिन जब तक सुचेता रहेगी, भले वह प्रत्याशीके रूपमें रहे अथवा परीक्षार्थीके लिए, उसे तो संयोजक मन्त्रिपदका उम्मीदवार ही माना जायेगा न? इसलिए सुशीला पैके मामलेमें भी ऐसा ही माना जाये। सुशीला पैकी इच्छा भी ऐसा ही मनवाने की थी। किन्तु मैंने देखा कि यह बात सुचेताके गले नहीं उतरी। इसलिए यदि सुशीला पै वहाँ आयेगी तो सिर्फ कामका

१. देखिए "पत्र : मृदुला साराभाईको", ७-११-१९४५।

अवलोकन करने और यह देखने के लिए कि कार्यालयका काम उसे रास आयेगा या नहीं। सुचेता मुझे अपना अन्तिम निर्णय बताने वाली है, लेकिन तुमसे मिलने के बाद ही बतायेगी।

बापू

ठक्कर बापा
बजाजवाडी
वर्धा

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४. पत्र : जोशको

६ नवम्बर, १९४५

भाई जोश,

आपका खत मिला। मुझे मालूम था कि आपका जोश उतरेगा। अब तो मैं समझा कि मुझसे खासी बात करनी है। १३ तारीखको आईए। दोपहर ३ बजेका वक्त रखता हूं।

आपका,
मो० क० गांधी

जोश साहब
ताहिर प्लेस
शंकर सेठ रोड, पूना

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४५. पत्र : ब्रजकृष्ण चाँदीवालाको

पूना
६ नवम्बर, १९४५

चि० ब्रजकृष्ण,

तुमारा पो० का० मिला। सुशीलाबहनने लंबा खत लिखा है। उसमें मेरे विचार बताये हैं। अब तो मिला होगा। आज खुरशेदबहनको थोड़ा लिखा है। उसे भी देखो। मैं १९, २० मुंबई हूंगा, २१ सेवाग्राम, १ दिसंबर कलकत्ता।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २४८८) से

४६. पत्र : एम० एस० केलकरको

पूना
६ नवम्बर, १९४५

भाई केलकर,

तुम्हारा खत मिला। मैंने नैसर्गिक उपचारगृह खोलने का निश्चय तो क्या, इरादा तक नहीं किया है। इच्छा तो बरसोंसे रही है, लेकिन इच्छा-मात्र ही है। तुम्हारे खयाल ऐसे हैं कि किसी संस्थामें रह नही सकते। मेरे जैसा आदमी तुम्हारे पाससे काम ले ले वह अलग बात है। तुम्हारे लिए तो अलग संस्था ही होनी चाहिये। लेकिन वह भी कभी बनने वाली नहीं है वह मैं जानता हूं। इसलिए जैसा चलता है चलने दो और जैसी सेवा चलती है चलने दो। दूसरा उपाय नहीं सूझता है।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

एम० एस० केलकर
द्वारा जी० बी० सहस्रबुद्धे
वीविंग मास्टर, मोहता मिल्स
आकोला

पत्रकी नकलसे]: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

४७. पत्र : शैलेन बोसको

पूना
६ नवम्बर, १९४५

चि० शैलेन,

तुमारा खत मिला। ईश्वरकी कृपा बड़ी है। बेलाको आशीर्वाद।

बापुके आ[शीर्वाद]

श्री एस० सी० बोस
५९, फोर्बं स्ट्रीट
बोम्बे फोर्ट

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४८. पत्र : नोरालमल फुलोमलको

६ नवम्बर, १९४५

भाई नोरालमल,

तुम्हारा खत मिला। तुम्हारी हालतके बारेमें सुनकर कष्ट हुआ। ईश्वर तुम्हारा भला करे। जल्दी अच्छे हो जाओ। मुझे उर्दू या देवनागरीमें लिखो। सिन्धी और उर्दू हर्फ तो एक-से ही हैं। भाषाका थोड़ा फर्क है। अच्छे होकर हिंदुस्तानी सिख लो। तुम्हारे बीस रुपये मिले हैं।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

श्री नोरालमल फुलोमल
सब डिवीशनल क्लार्क, पी० डब्ल्यू० डी०
नारा सीचाई
सक्कर, सिंध

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९. पत्र : एम० आर० बोन्द्रेको

६ नवम्बर, १९४५

भाई बोन्द्रे,

ता० ११ मी के पहले जब आना है तब आ जाओ। मैं साड़े पांच बजे, जब आओगे तब थोड़ी मिनटके लिये मिल लूंगा। नलिनी अच्छी होगी।

बापुके आ[शीर्वाद]

एम० आर० बोन्द्रे
११सी, हरिनिवास
शिवाजी पार्क
लेडी जमशेदजी रोड
मुंबई–२८

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५०. पत्र : विचित्र नारायण शर्माको

६ नवम्बर, १९४५

चि० विचित्र,

तुम्हारा खत मिला। अच्छा हुआ कि इस वक्त आफतमें से बच गये हैं।

सरलाबहनसे सब बातें कर ली है। और भी अवकाश मिलने पर कर लेता हूं। और करता रहूंगा। मैं सेवाग्राम २१ तारीखको पहूंचने की आशा रखता हूं।

बापुके आ[शीर्वाद]

विचित्र नारायण
गांधी आश्रम
मेरठ
[सं]युक्त प्रान्त

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५१. पत्र : रामचन्द्र रंगनाथ दिवाकरको

६ नवम्बर, १९४५

भाई दिवाकर,

तुम आये तो सही मगर मेरे पाससे कुछ समय तो नही मांगा। तुम आओगे और मेरे साथ बात करोगे ऐसा मैंने माना था इसलिए तुमने जो मुझे भेजा है उस बारेमें मैंने कुछ लिखा नही।

इन्कमटेक्सकी तुम्हारी बात नहीं चलने वाली है। बाकी ठीक सा लगता है। मैंने कुछ [मसौदा[1]] बना रखा है उसकी नकल तुमको भेजता हूं। उससे मेरे खयालका कुछ पता चलेगा। इस बारेमें कुछ लिखना है तो लिखो। मैं यहासे १९ तारीखको सुबह रवाना हूंगा।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५२. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
७ नवम्बर, १९४५

प्रिय सर एवन,

श्री शीलभद्र याजीके सम्बन्धमें आपके १ नवम्बरके पत्र[2] के लिए धन्यवाद। वाइसराय महोदयने वक्तव्यसे उठने वाले कुछ मुद्दोंकी और आगे जाँच करने का जो आदेश दिया है उसके परिणामकी मैं व्यग्रतासे प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

हृदयसे आपका.
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ६०

१. उपलब्ध नहीं है।

२. शीलभद्र याजीने शिकायत की थी कि नजरबन्दीके दौरान उनके तथा कुछ अन्य लोगों के साथ जेलमें दुर्व्यवहार किया गया था; देखिए खण्ड ८१, पृ० ३६३। जेन्किन्सने वाइसरायकी ओर से इस आरोपसे इनकार किया था। लेकिन आगे जाँच कराने का वादा किया था।

५३. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
७ नवम्बर, १९४५

प्रिय सर एवन,

श्री हरिदास मित्र और तीन अन्य लोगोंकी दया याचिकाके सम्बन्धमें आपके १ तारीखके पत्रके लिए धन्यवाद।[1] मृत्यु-दण्डको [आजीवन] कारावासमें बदलने के लिए वाइसराय महोदयको मेरा धन्यवाद देने की कृपा करें।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ५१

५४. पत्र : प्रवीण गांधीको

७ नवम्बर, १९४५

चि० प्रवीण,

तूने अच्छा किया कि मुझे पत्र लिखा और अपना परिचय भी दिया। तेरी मुझे याद तो थी, किन्तु यदि तूने लिखा न होता तो मुझे ब्योरा याद न आता।

तूने पत्र लिखने की भूल करने के लिए क्षमा माँगी है। तेरी यह बात अच्छी लगी है। और इससे यह भी पता चलता है कि तुझे पहलेसे ही पोस्टकार्डकी व्यवस्था कर लेनी चाहिए थी। तूने अपने हस्ताक्षर बिगाड़ दिये हैं। उसे सुधार लेना।

१. सुभाषचन्द्र बोसके छोटे भाई शरतचन्द्र बोसके दामाद हरिदास मित्र तथा ज्योतिषचन्द्र बोसको शत्रु एजेन्ट अध्यादेशके अधीन, जापानी पनडुब्बी द्वारा भारतमें उतारे गये तीन भारतीय गुप्तचरोंकी सहायता करने के अपराधमें मृत्यु-दण्ड सुनाया गया था। एक गुप्तचरने आत्महत्या कर ली। अन्य दोपर उक्त दोनों अभियुक्तोंके साथ मुकदमा चलाया गया और उन्हें मृत्यु-दण्ड सुनाया गया। चारोंने वाइसरायके समक्ष दयाकी याचिका प्रस्तुत की और चारोंकी सजाको काले पानीकी सजामें बदल दिया गया था।

तारा[1], मोहन[2], रामू[3], और गोपालकृष्ण[4] आदिको यह पत्र पढ़वा देना और उनसे मेरे आशीर्वाद कहना।

बापूके आशीर्वाद

प्रवीण
[मार्फत] देवदास गांधी
नई दिल्ली

गुजरातीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य . प्यारेलाल

५५. पत्र : मृदुला साराभाईको

७ नवम्बर, १९४५

चि० मृदुला,

मैं इसके साथ लीला जोगके तीन महीनेके वेतनका ३७५ रुपयेका चैक भेज रहा हूँ। चैक भेजते हुए बापाने जो पत्र लिखा है वह भी इसके साथ है। यह सिर्फ तेरी जानकारीके लिए है। लीला जोगको यह चैक देकर उसकी रसीद मुझे भेज देना और इस प्रकार किस्सा खत्म। बापाके पत्रकी नकल भेजने का कारण यह है कि तू जान सके कि बापा अपने विचारोंपर दृढ़ हैं। इस सम्बन्धमें मेरा कहना यह है कि आपसमें गलतफहमी हो गई है। ऐसा नहीं है कि कोई जान-बूझकर झूठ कह रहा है। इसका मतलब है कि अंग्रेजीके "रेड टेप" (लाल फीता) शब्दोंमें कुछ तत्त्व है, अर्थात् यह कि जो-कुछ हो उसे लिखवा लेना चाहिए, जिससे और कुछ कहा ही न जा सके। इस लाल फीतेका कुटुम्बीजनोंमें भी स्थान है और नहीं भी है। ऐसा कहने का अर्थ इतना ही है कि उनमें से कोई किसीसे बँधा हुआ नही है और बिना किसी टकरावके आपसी व्यवहार चलता रहता है, लेकिन जैसे ही टकराव होने को होता है वैसे ही लिख डालने की बात शुरू हो जाती है।

हम लोगोंका पत्र-व्यवहार गुजरातीमें तो प्रकाशित[5] हो ही गया होगा। तू [कस्तूरबा ट्रस्टके] ट्रस्टीके पदसे इस्तीफा नहीं दे रही है, यह वाक्य अन्तमें मैंने असावधानीसे लिख दिया था। यह वाक्य मैंने अंग्रेजी अनुवादमें से निकाल दिया है। तुझे जो नकल भेजी थी, उसमें तो यह था ही। किन्तु कोई पाठक गलत अर्थ न करे, इस डरसे मैं ऊपर ऐसा वाक्य लिख गया था। इस बातको भूल जाने के बावजूद अन्ततः मैंने बातको स्पष्ट तो कर ही दिया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देवदास गांधीकी कन्या
२, ३ और ४. देवदास गांधीके पुत्र
५. मृदुला साराभाईके त्यागपत्रके साथ उनके नाम लिखा गांधीजी का १५ अक्तूबर, १९४५ का पत्र हिन्दू और बॉम्बे क्रॉनिकल, ८-११-१९४५ के अंकमें प्रकाशित हुआ था।

५६. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

७ नवम्बर, १९४५

चि० किशोरलाल,

मैं कैलाशके बारेमें समझ गया। तुम्हारी जैसी उदारता मुझमें नहीं है। मैं वह कहाँसे लाऊँ? या यों कह सकते हो कि तुम्हारी और मेरी उदारतामें अन्तर है। हम चाहे जिस तरहसे इसे देखें, परिणाम एक ही निकलता है। जो हो सो ठीक है। यदि कैलाश सचमुच इतनी ही भोली है तो भी मेरे विचारसे उसे अपने माता-पिताके पास रहना चाहिए। उनकी सेवा करते हुए वह जो सीख सके सो सीखे। यह तो मेरा विचार है। बाकी तो तालीमी संघमें सीखे और निपुण हो जाये, उससे मुझे प्रसन्नता ही होगी। मैं यह नहीं चाहता कि वह पढ़ाई-लिखाई छोड़कर सेवा करे। मैं तो विशुद्ध सेवाको ही पढ़ाई-लिखाई मानने वाला हूँ। नई तालीमके मूलमें यही विचार है।[1]

गोमती अच्छी हो रही होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स; सौजन्य: प्यारेलाल

५७. पत्र : के० रामरावको

७ नवम्बर, १९४५

भाई रामराव,

पंडितजी ने कहा तब भी तुम्हारे संदेश[2] क्यों मांगना चाहिये? मेरे निकट रहते हुए इतना पता नहीं चला कि संदेशा मांगने से सचमुच नुकसान ही होता है? मैं जानता हू कि यह बात समझना मुश्किल है लेकिन तुम्हारे जैसेके लिये मुश्किल नहीं होना चाहिए। मनुष्य व संस्था दूसरोंकी स्तुतिसे बढ़ते हैं कि अपने गुणोंसे, शक्तिसे या उसमें दिन-प्रति-दिन वृद्धि करने से? जो दूसरोंकी स्तुतिपर निर्भर रहते हैं वे दिन-प्रति-दिन पंगु बनते हैं ऐसा कबूल करोगे?

'हेरल्ड' की कुरबानी तो सच्ची है लेकिन कुरबानीको दूसरोंकी स्तुति की अपेक्षा रहती है क्या? और जिसे रहती है उससे कुरबानी क्या होगी?

मेरी उम्मीद है कि मेरी राष्ट्रभाषा समझ लोगे। कमसे-कम तुम्हारी लड़की समझा देगी।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. देखिए पृ० १५ भी।

२. नेशनल हेरल्ड के लिए

५८. पत्र : नरेन्द्र देवको

७ नवम्बर, १९४५

भाई नरेन्द्र देव,

आपका खत मिला। ऐसा मौका आता है जब, जिनके साथ घनिष्ठ संबंध है उनके बारेमें भी लिखना पडता है। सामान्य नियम तो यह है कि ऐसे संबंधीजन एक-दूसरोके बारेमें स्तुतिवाक्य न लिखे। इस वचनके समर्थनमें मैं काफी लिख तो सकता हूं लेकिन आप जैसेका क्या लिखूं? कमसे कम मुझको ऐसे कामोंसे मुक्त रखना ही अच्छा है। मूझे दुःख है कि 'संसार' नामक दैनिक पत्र मैंने देखा भी नहीं है। अगर यहां आता है तो मूझे बताया भी नही जाता है, इतने दैनिक भेजने की कृपा संपादक करते हैं। आजकल मैं अखबार पढ़ता ही नही हूं ऐसा कहा जाय। मेरे लिए जो उपयोगी मानी जाय उसकी कतरनें काट लिये जाते हैं और मेरे सामने रखे जाते हैं। अगर मै एकको [सन्देश] भेजुं तो दूसरोंको क्यों नही? दूसरे भी लिखते हैं और मांगते भी है।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५९. पत्र : वामनराव जोशीको

७ नवम्बर, १९४५

भाई वामनराव,

आपका सुन्दर खत मिला। वह रसिक भी है।

निजि कामके लिए जिस दृष्टिसे मैं सत्य देखता हूं उसे ही लिखता हूं। स्वतंत्र सत्य भी परमेश्वर है। वह अगम्य है। ज्यादेमें यादा उसके लिये 'नेति नेति' ही कहें। जिस सत्यका हम दर्शन करते हैं वह सापेक्ष है और वह बहुरूपी है, अनेक है और अपने अपने समयके लिए अखंडीत सत्य है। उसमें दंभको तो अवकाश ही नहीं है और उसे पहुंचने का रास्ता एक ही है, वह अहिंसा। शुद्ध और स्वतंत्र सत्य हमारा आदर्श होना चाहिये। उसीका ध्यान धरते हुए हम वहा पहुंचते हैं और वही पहुंचना मोक्ष है। मैंने जो लिखा है उसका अनुभव मुझे तो ६० वर्षसे हुआ है और आज भी कर रहा हूं।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६०. पत्र : होशियारीको

७ नवम्बर, १९४५

चि० होशियारी,

अब तुम ऐसी शांत हो गई है, और ऐसे कामोंमें लग गई है कि मेरे खतकी कोई जरूरत ही नहीं रहनी चाहिये। ऐसा समझकर मैं बेफ़िकर रहा हूं।

गजराज[1] से क्यों नहीं लिखवाती है? अच्छी बात है कि थोड़े दिनोंमें चाचाजी[2] आते हैं। ईश्वर कृपा होगी तो हम सब २१ तारीखको पहूंचेंगे।

विनोबाजी से मिलने गई थी वो बड़ा अच्छा हुआ।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६१. पत्र : खुर्शेद नौरोजीको

पूना

८ नवम्बर, १९४५

प्रिय बहन,

जिस डाकसे तुम्हारा पत्र आया उसीसे उसका कार्ड आया, जिसमें लिखा है कि जब तक वह न कहे तब तक मैं कुछ न करूँ। जो भी हो, स्मारकके निमित्त चन्दा देने की किसी अपीलसे मेरा नाम नहीं जुड़ना चाहिए। जिन गुणों को हम सबसे अधिक मूल्यवान समझते हैं उन्हें अपने जीवनमें उतारकर हम अपने-आपमें ही सत्यवतीको जीवित रखें। धनी लोग किसी ऐसे कार्यके लिए पैसा दें जो सत्यवतीको अच्छा लगता था और जो स्वयं उन्हें पसन्द है।

मैं अपना स्थायी आवास पूना नहीं ला रहा हूँ। वह बिलकुल गप्प थी। सेवाग्राम छोड़ने का मतलब कर्तव्यसे भागना होगा और यह अपराध मुझे कदापि नहीं करना चाहिए।

जगन्नाथको सरकारी नौकरी तो करनी ही नही चाहिए। क्या करना चाहिए, यह कहने की स्थितिमें मैं नही हूँ।

१. होशियारीके पुत्र

२. बलवन्तसिंह

जो सूची तुम चाहती हो वह तुम्हें भेजने के लिए प्यारेलालसे कह रहा हूँ। तो अन्ततः तुम्हें अपनी पसन्दका काम और वातावरण मिल ही गया।
स्नेह।

बापू

श्रीमती खुर्शेदबहन नौरोजी
८२, दरियागंज
दिल्ली

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६२. पत्र : बचुको

८ नवम्बर, १९४५

चि० बचु,

तेरी लिखावट बहुत ही खराब है। यह लिखावट तेरे योग्य नहीं है। मेरी दृष्टिमें अक्षर चित्र होता है और कोई भी चित्र घसीटने से कदापि नहीं बनता। चित्र चाहे नौसिखियेका बनाया हो या महान चित्रकारने, उसकी रूपरेखा तो एक ही होती है। नौसिखिये और कुशल कलाकार दोनोंके द्वारा खीचे गये तोतेका आकार तो एक-सा ही होगा, लेकिन उन दोनोंकी कलासे यह पता चल जायेगा कि कौन नौसिखिया है और कौन सिद्धहस्त कलाकार। इसी तरह नौसिखियेके हाथके लिखे 'अ' का और एक सिद्धहस्त व्यक्तिके हाथके लिखे 'अ' का आकार तो एक जैसा ही होगा, अन्तर केवल उसको लिखने की कलामें होगा। लेकिन तेरे अक्षरके चित्रोंमें तो कोई भी समानता नहीं है। इसमें ज्यादा दोष तो मैं तेरा नहीं, तेरे शिक्षकका मानूंगा। अब यदि इस पत्रका आशय तू अच्छी तरहसे समझ गया हो और उसके बाद भी तू अक्षरके बदले टेढ़ी-मेढ़ी आकृतियाँ ही घसीटे तो दोष तेरा मानूंगा। अब तो तेरा शरीर पहलवान जैसा हो गया होगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५९०४) से

६३. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

पूना
८ नवम्बर, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। इसका उत्तर देना मुश्किल है। लेकिन तुम्हें कंचनसे इतना तो साफ-साफ कह देना चाहिए कि तुम उसे अपनी पत्नी नहीं मानते और वह भी तुम्हें अपना पति नहीं माने। तुम्हें उससे सेवा नहीं लेनी चाहिए। वस्तुतः देखा जाये तो तुम दोनोंको एक जगह नहीं रहना चाहिए। मैं तुम्हारी अलग व्यवस्था करने को तैयार हूँ। यह, मेरे लिए बहुत कठिन कार्य होगा, लेकिन तुम्हारा पत्र इसी कदमकी अपेक्षा रखता है।

सेवा तो तुम उन रोगियोंकी ही कर सकते हो जिन्हें उसकी जरूरत हो।

अब तो मेरा खयाल है कि हम २१ तारीखको मिलेंगे, इसलिए ज्यादा नहीं लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८४२७) से। सी० डब्ल्यू० ५६०२ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

६४. पत्र : माधवदास कापड़ियाको

पूना
८ नवम्बर, १९४५

चि० माधवदास[1],

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। मैं यह तो नहीं कह सकता कि मैंने पूरा पत्र पढ़ लिया है, लेकिन मुझे जितना जानना चाहिए उतना चि० कनुने मुझे पढ़कर सुना दिया है। जैसा तुमने लिखा है, यदि तुम उसी तरह जम-बस गये हो तो मुझे बहुत खुशी होगी और बाकी आत्माको भी, वह जहाँ भी होगी, सन्तोष होगा। कुँवरजीभाई आदि तुम्हारे प्रति इतना स्नेह दिखाते हैं, इसमें मैं तो केवल बाका पुण्य ही देखता हूँ। यही लोग सगोंसे भी अधिक सगे हो गये हैं। इसलिए यदि तुम लोग परस्पर एक-दूसरेके सहायक बन सको तो यह बहुत अच्छी बात होगी और मैं यह समझूँगा कि तुम्हारा नया जन्म हुआ है।

कुँवरजी और मणिलालको मैं पत्र लिखूँगा। मणिलाल अथवा अन्य सम्बन्धियोंको लेकर मन छोटा मत करो। ये सब तुम्हारी भरसक सेवा करेंगे ही। यदि मणिलाल

१. कस्तूरबाके भाई

को तुम्हें चाबी भेजते हुए तनिक भी संकोच हो रहा होगा तो उसका कारण मैं हूँ। मेरे पास मेरी अपनी तो फूटी कौड़ी भी नहीं है, और मैं नहीं समझता कि तुम्हारे लिए पैसा खर्च करने का मुझे अधिकार है। मेरा तो खयाल है कि मैंने तुम पर जो पैसा खर्च किया है वह सब इन भाइयोंको मुझे लौटा देना चाहिए। मणिलाल तो गरीब आदमी माना जायेगा। वह फीनिक्समें गृहस्थके रूपमें अपने खर्चके लायक जितनी कमाई कर सकता है, उससे अधिक यदि मैं उसे कमाने दूँ तो पापका भागी बनूँगा। इसलिए अपनी कमाईमें से भी वह ज्यादा तो नहीं दे सकता और न तुमपर खर्च ही कर सकता है। कुँवरजीके साथ तुम्हारा घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया है, यह उसे कदाचित् पूरी तरह मालूम न हो। चाहे जो हो, चाबियोंके बारेमें मैं उसे लिख रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७२५) से

६५. पत्र : कुँवरजी मेहताको

पूना
८ नवम्बर, १९४५

चि० कुँवरजी,

चि० कनुने मुझे तुम्हारे पत्रका पूरा सार बता दिया है। तुम मामाकी इतनी ज्यादा सेवा कर रहे हो और उसे अपना बुजुर्ग समझ रहे हो, इसमें मुझे तो केवल उदारता और बाका पुण्य ही दिखाई देता है। मामा यदि बिलकुल स्वस्थ हो जाये तो उसका सारा श्रेय केवल तुम्हें ही मिलेगा। इसमें मैं थोड़ा-सा हिस्सा भाई कृष्ण वर्माका भी मानता हूँ। उसने मामापर जो खर्च किया है वह भी अभी तक मुझसे वापस नहीं लिया है, और बाकी खातिर उसने मामाकी जैसी बन पड़ी वैसी सेवा की है। यदि वह अपना हाथ नहीं बढ़ाता तो मेरे सम्मुख यह समस्या थी कि मैं मामाको कहाँ रखूँ।

तुम मामाको अपने पड़ोसमें एक छोटी-सी दुकान खोलकर देने का जो विचार कर रहे हो वह अच्छा है, लेकिन इसपर तुरन्त अमल नहीं करना। जब तुम्हारे कहने के मुताबिक मामाका घर समेट लिया जाये, उसका मन बिलकुल हट जाये और जब वह पूर्णतया स्वस्थ हो जाये, तभी अपने परिवारके किसी व्यक्तिकी भागीदारीमें मामाको दुकान करवाने में मैं कोई दोष नहीं देखता। वह अथवा तुममें से कोई लोभमें आकर सट्टेमें न पड़े।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७२३) से

६६. पत्र : मणिलाल गांधीको

पूना

८ नवम्बर, १९४५

चि० मणिलाल,

तेरा पत्र और पोस्टकार्ड मिले। तेरा पत्र अरुण ले गया है और वह अभी तक उससे वापस नहीं मिला है। वह अभी तो बहुत मस्त है। जो भी आता है उससे तुरन्त दोस्ती कर लेता है। इसलिए अब मुझे उसकी चिन्ता नहीं होती। परिश्रम न करने के बावजूद वह थोड़ा-थोड़ा सीखता ही रहता है। इसलिए फिलहाल तुममें से किसीको उसकी चिन्ता करने की जरूरत नहीं।

तू पुस्तकोंके लिए बम्बई पहुँच जाना। कदाचित् तू वहाँ पहुँच ही गया हो। बीचमें यदि तुझे यहाँ आना हो तो खुशीसे आना। मेरी खातिर तो बिलकुल नहीं आना, क्योंकि मेरा सारा प्रबन्ध तो समुचित रूपसे हो गया है। और जहाँ तक मैं समझ सकता हूँ, तुझे अरुणकी खातिर भी यहाँ आने की जरूरत नहीं। इसलिए यदि तू आयेगा तो केवल मौजकी खातिर ही। १९ तारीख को सबेरे हम बम्बईके लिए रवाना होंगे। मैं तो तुझे यही सलाह दूंगा कि तू मेरी बम्बईमें ही प्रतीक्षा करना अथवा जैसा कि मैंने लिखा है सेवाग्राममें मेरी बाट जोहना। किशोरलालभाई, गोमतीबहन, छगनलालभाई और काशीबहनकी भरसक सेवा करना तुम दोनोंका धर्म है।

इलासे कहना कि उसे याद करके मैं क्या करूँ। वह एक भी वचनका पालन नहीं करती। वह तो मुझे छोड़ने वाली नहीं थी, फिर भी छोड़कर भाग गई और जल्दीसे इतना भी नहीं सीख लेती कि मुझे पत्र लिख सके। अब वह झटपट सुन्दर अक्षरोंमें पत्र लिखना सीख जाये।

मुझे लगता है कि अब मामाकी चाबियाँ[1] श्री कुँवरजी मेहता, आदर्श दुग्धालय, मलाडके पतेपर भेज दी जायें तो अच्छा। मामाने चाबियाँ माँगी हैं। मुझे लम्बा पत्र लिखा है। वह सामान बेच देना चाहता है। अब तो वह स्थिर जान पड़ता है।

तुझे यह बात लिखना भूल गया कि मामाकी चाबी कुँवरजीभाईको भेज देना। कनुका कहना है कि इस बारेमें तो [पत्रमें ऊपर] लिख दिया गया है। मैंने इसे पूरा पढ़ा नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९६६) से

१. देखिए पृ० ४४-४५।

६७. पत्र : लीलावती आसरको

पूना
८ नवम्बर, १९४५

चि० लीलावती,

तेरा कार्ड मिला है। तू जल्दी चली गई, लेकिन तुझे जल्दी जाने का फल नहीं मिला, यह दुःखकी बात तो है ही। लेकिन मनुष्य जो संकल्प करता है उसके पालनमें फलेच्छा तो रखी ही नहीं जाती। यदि हम फलेच्छाके साथ सम्बन्ध रखें तो संकल्प स्वेच्छासे बदलते रहेंगे और संकल्प-रहित व्यक्ति बेपेंदीके लोटेकी तरह लुढ़कता रहेगा। सही शब्द "डिसेक्सन" नहीं "डिसेक्शन" है।

मेरा रक्तचाप थोड़ा-सा बढ़ा हुआ है, लेकिन काबूमें है।

तेरी पढ़ाई ठीक चल रही होगी, और मैंने कसरतके लिए तुझे आसन आदि करने का जो सुझाव दिया है उसे भूलना नहीं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०२०७) से। सौजन्य : लीलावती आसर

६८. पत्र : कानम और निर्मला गांधीको

८ नवम्बर, १९४५

चि० कानम,

तेरा पोस्टकार्ड मिला। तेरी लिखावटमें अभी उतना सुधार तो नहीं हो पाया है जितना मैं चाहता हूँ। तूने अपनी छुट्टीके थोड़े दिन विनोबाजी के साथ बिताये, यह तो बहुत अच्छा किया। और तूने उनसे संस्कृतके पाठ लिये, यह तो साथ-साथ धार्मिक भी हुआ ही।

ऊषा[1] मजेमें होगी। तू देवनागरी अक्षरोंके साथ अंग्रेजी अंक क्यों लिखता है?

चि० नीमू,

आज मुझे सुमि[2] का पत्र मिला है, जिसमें उसने १२५ रुपये चोरी हो जाने के बारेमें लिखा है। यह तो 'दुबले ढोरकी किलनी ज्यादा'-जैसी बात हुई। इसका निचोड़ यह है कि बच्चोंको यथासम्भव कमसे-कम पैसे दिये जाने

१. कानमकी छोटी बहन
२. सुमित्रा, निर्मला गांधीकी कन्या

चाहिए। इतने पैसे देने के लिए तू देवदासको लिख सकती थी या फिर मनी-आर्डरसे भी भेज सकती थी।

बापूके आशीर्वाद

कॉनम रामदास गांधी
खलासी लाइन्स
नागपुर

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

६९. पत्र : क० मा० मुन्शीको

८ नवम्बर, १९४५

भाई मुन्शी,

मैंने तुम्हें जो पत्र लिखा था, मुझे भय है कि उसमें मैं अपने विचारोंको पूरी तरहसे अभिव्यक्त न कर पाया होऊँ।[1] इस बीच भाई रामनारायण[2] ने मुझे निम्न पत्र लिखा है, जो विचार करने लायक है। इसमें उसने जो लिखा है उससे मैं सहमत हूँ। मैं तो बहुत घूमा-फिरा हुआ व्यक्ति हूँ, इसलिए निम्न वाक्योंमें मेरे अपने अनुभवकी [प्रतिध्वनि है। यदि तुम्हें इसमें कोई तथ्य नजर न आये तो इसे फेंक देना।[3]

> पू० बापूसे कहना कि यूँ तो मैं सदा ही मानता था लेकिन आजकल कुछ पुस्तकोंका तर्जुमा करते हुए और साफ हो गया है कि अगर हिन्दुस्तानी जबानको सबकी यानी आम लोगोंकी बोली बनाना है तो उसमें धार्मिक शब्दके सिवाय बाकी भण्डार ज्यादातर संस्कृत के बजाय अरबी-फारसीके लफ्जों या उनके बिगड़े हुए रूपोंका ही बनाना पड़ेगा। सात-आठ सौ सालके हिन्दू-मुसलमानी सम्पर्क और असर ने उर्दूको हिन्दीसे ज्यादा आमफहम बनाया है। यह हर उस आदमी का खयाल होगा जिसके दिलमें कोई तास्सुब [पक्षपात] न होकर सच्चाई, ईमानदारी ही मुख्य होगी। देशका भला इसीमें है कि इस सचाईको मानकर चलें।
>
> — रामनारायण

बापूके आशीर्वाद

कन्हैयालाल मुन्शी
२६, रिज रोड, बम्बई

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ९-१०।
२. रामनारायण चौधरी
३. इसके आगेका अंश हिन्दीमें है।

७०. पत्र : काशी गांधीको

पूना
[८ नवम्बर, १९४५

चि० काशी,

तुम्हारे दो शब्द पढ़कर मुझे प्रसन्नता हुई। इन दिनों मैं किशोरलालभाई, गोमतीबहन और तुम सब लोगोंके बारेमें सोचता रहता हूँ। ताजी खबर यह है कि छगनलालको मलेरिया ही है। अतः मैं यह मान लेता हूँ कि उसका बुखार उतर गया होगा और शरीरमें फिरसे ताकत आ गई होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७१. पत्र : रमणलाल शाहको

पूना
८ नवम्बर, १९४५

चि० रमणलाल,

तुमने मुझे दो पंक्तियाँ लिख भेजी, यह मुझे अच्छा लगा। तुममें सेवाभाव तो खूब है ही। इस पूरे भावको किशोरलालभाई और गोमतीबहनकी सेवामें उतारो। अगर तुम सेवामय हो जाओगे तो तरह-तरहके जो विचार तुम्हें परेशान करते रहते हैं, उनसे बच जाओगे और तुम्हारे जीवनसे [सेवाकी] सुगन्धि फैलेगी।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजरातीसे : रमणलाल शाह पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

७२. पत्र : रामप्रसादको

८ नवम्बर, १९४५

चि० रामप्रसाद,

बाइसिकलके बारेमें मैंने रामेश्वरदासजी को लिख दिया है। आजकलमें उत्तर मिल जायेगा। तुमने अखबारकी कतरन भेजकर अच्छा किया।

जहाँ तुम मकान बनवा रहे हो उसके आसपासकी जमीन खुदवाई जा रही है, उसका क्या होगा? रास्ते बनवाते हुए ककडी प्राप्त करने के लिए दोनों ओर गड्ढे खोदने का सरकारी तरीका गलत है। इस बारेमें मुझे कोई सन्देह नहीं है। अपने भ्रमणके दौरान दक्षिण आफ्रिका, इंग्लैंड या यूरोप के अन्य भागोंमें मैंने रास्ते तो देखे हैं, किन्तु ऐसे गड्ढ़े नही देखे जो वर्षाके मौसममें पानीसे भर जायें और बादमें मच्छरोंका उपद्रव खड़ा करे।

आशा है, तुम, कान्ता और बालक स्वस्थ होंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७३. पत्र : रामनारायण चौधरीको

८ नवम्बर, १९४५

चि० रामनारायण,

तुम्हारा कार्ड मिला। मुझे अच्छा लगा। ऐसी 'बिन मागी राय' भेजते रहो। तुमने जो लिखा है[1] उसका प्रतिबिम्ब मैंने अपने भ्रमणमें पाया है।

बापुके आशीर्वाद

बापू – मैंने क्या देखा, क्या समझा?, पृ० १६४

१. यह कोगोंपर युद्धके दुष्प्रभावके बारेमें था।

७४. पत्र : कुसुमको

८ नवम्बर, १९४५

चि० कुसुम,

'कुसुम' अवतरण चिह्नमें दिया है उसका मतलब यह है कि तुम्हारा सच्चा नाम वह नहीं है। वैधव्यसे व्याकुल क्यों हो गई? सच्ची विधवा मानती ही नही है कि अपना पतिका देह छूट गया, इसलिये देहाधारी आत्मा भी छूट गया। विवाह होता है वह कुछ पुतलेके साथ नही लेकिन पुतलेमें भी आत्मा रहती है उसके साथ। विधवाका पुनर्लग्न निषिद्ध माना जाता है। उसका कारण भी यही है। इस कारण सिर पटकना, आत्मघात करना, व० विचार आते है वह सब धर्म और नीतिके विरुद्ध है। तुम्हारा धर्म तो है कि सेवा ही करना और सेवा-वृत्तिसे चर्खा चलाने को प्रधान स्थान देना। चर्खाकी पूर्व क्रिया और पीछली क्रिया भी सीख लेना। उसका शास्त्र भी पढ़ लेना, जिससे कातने की क्रियाका महत्त्व बराबर समझा जाय। तुमने तुम्हारी उमर नही बताई है, और न अभ्यास [शिक्षा] बताया है।

बापुना आ[शीर्वाद]

'कुसुमबहन'
द्वारा श्री राजेन्द्रकुमार अग्रवाल
५, पन्नालाल रोड
अलाहाबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७५. पत्र : कैलाशनाथ काटजूको

८ नवम्बर, १९४५

भाई काटजू,

आपका खत मिला। बहुत ही अच्छा लगता है। लेकिन आपका तार मिलने के बाद ही मैंने वाइसरायको तो लिख ही दिया था। आपके खतमें जितना मुझे चाहिये मिल गया है। आवश्यकता होने पर उसका मैं उपयोग करूंगा। और आपके नामका भी। लेकिन उम्मीद ऐसी है कि काम ऐसे ही निपट जायेगा। इस वक्त आप बड़े काममें दब गये हैं। प्रकृति [तबियत] अच्छी होगी। वहां कब तक ठहरना होगा?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

७६. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

पूना
९ नवम्बर, १९४५

प्रिय सी० आर०,

अनासक्त भावसे लिखे तुम्हारे विवरणात्मक पत्रको पढ़कर मनको बहुत शान्ति मिली और जो भी चिन्ता थी, जाती रही।

निस्सन्देह मैंने कभी भी यह नहीं सोचा कि मौलाना साहबके वक्तव्य अथवा गोपालस्वामी द्वारा मेरे व्यक्तिगत पत्र[1] के प्रकाशित किये जाने के लिए तुम किसी प्रकार जिम्मेदार हो। जिस ढंगसे यह पत्र प्रकाशित किया गया, उसपर मुझे कोई क्षोभ नहीं है। वह लाचार था। उसका प्रभाव अच्छा हुआ या बुरा, इसका कोई खास महत्त्व नहीं है।

तुमने अपने स्वास्थ्यके सम्बन्धमें कुछ नहीं लिखा है।

हमें आशा करनी चाहिए कि सब कुछ ठीक होगा। ..[2] ने तुम्हारा पत्र पढ़ लिया है।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २१११) से

७७. पत्र : डाह्याभाई मनोरदास पटेलको

पूना
९ नवम्बर, १९४५

भाई डाह्याभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम नहीं आये, इसमें लाभ ही था और है। मुझसे मिलने की अपेक्षा सेवामें लीन रहने में अधिक लाभ है। अभीसे शरीरके दुर्बल हो जाने की बात नहीं करनी है।

यदि सारी सेवा प्रभु-प्रेमके निमित्त की जाये तो वह भार-रूप प्रतीत नहीं होती।

बापूके आशीर्वाद

श्री डाह्याभाई मनोरदास पटेल
धोलका, प्रांतीज रेलवे

गुजराती (सी० डब्ल्यू० २७१५) से। सौजन्य : डाह्याभाई म० पटेल

१. २७ अक्तूबर, १९४५ का यह पत्र ३१-१०-१९४५ के हिन्दू में प्रकाशित हुआ था; देखिए खण्ड ८१, पृ० ४६०-६१।

२. साधन-सूत्रमें एक शब्द अस्पष्ट है।

७८. पत्र : मृदुला साराभाईको

९ नवम्बर, १९४५

चि० मृदुला,

तेरा पत्र मिला। पत्र-व्यवहार प्रकाशित हो गया,[1] उसके पीछे भी एक मजेदार बात है। एक तरफ तो बापा लिखता है कि उसे प्रकाशित करवाने में मैंने जल्दबाजी की है, क्योंकि मैंने उसकी इस बातको स्वीकार कर लिया था कि संयोजक समितिकी बैठकके बाद ही उसे प्रकाशित किया जाये। यदि यह बात उसने लिखवा ली होती तो कितना अच्छा होता! मुझे तो ऐसा कुछ याद नहीं पड़ता। कनुका कहना है कि उस समय वह उपस्थित था और मैंने बापासे कहा था कि यदि कुछ हुआ हो और उस मामलेको प्रकाशित करवाना हो, तो अच्छा यह होगा कि जल्दीसे-जल्दी ऐसा किया जाये। खैर, शायद ऐसा हुआ होगा। तुझे कुछ और याद रहा—कि मैं अन्तमें अपना ही छोटा-सा निवेदन दे दूंगा। मुझे यह तो खयाल है कि मैंने इस तरहकी बात कही थी, किन्तु मैंने इस सम्बन्धमें कोई निर्णय नहीं किया था। और अधिक विचार करने पर लगा कि चूँकि तुझे लिखा मेरा पत्र[2] पूरा विवरण देता है, इसलिए उसे ही देना उचित मानकर प्रकाशित करवा दिया। अब यदि यह कदम उठाने में भूल हुई हो तो उसका निवारण किस तरह हो सकता है? जो-कुछ हुआ है उसे प्रकाशित करवाने में मुझे तो कोई दोष नजर नहीं आता। समाचार-पत्रोंमें क्या प्रकाशित हुआ है, वह तो मैंने पढ़ा नहीं है। यदि तू अंग्रेजी अनुवादकी बात करती हो तो उसके बारेमें तो मैं अपनी स्वीकृति दे चुका था। किन्तु वही प्रकाशित हुआ है या नहीं, यह मैंने नहीं देखा। किन्तु फिलहाल मैं इस किस्सेको खत्म हुआ मानता हूँ। यह तो अच्छा ही है कि तू १२ को आ रही है। यह पत्र तो डाकमें डाल ही दिया जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१ और २. देखिए पृ० ३९ भी।

७९. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

९ नवम्बर, १९४५

बापा,

तुम्हारा तारीख ६-११-४५ का पत्र मिला। तुम रसोई अलग अवश्य करो। शामलाल अर्थात् उसकी पत्नीपर बहुत बोझ नहीं डाला जा सकता।

सुशीला पैके बारेमें अभी कुछ निश्चय नहीं किया गया है। उसकी माँग संयुक्त संयोजकके रूपमें रहने की है। यह बात शायद सुचेताको अच्छी न लगे। वह तुमसे बातचीत करने के बाद मुझे लिखेगी। सुशीला पै बहुत अच्छी कार्यकर्त्री है। वह विदुषी तो है ही। अनेक वर्षो तक राजकोट स्थित वनिता विश्रामकी मुख्य अधिष्ठात्री रहने के बाद स्वेच्छासे ही उसने वह पद छोड़ दिया। वह ऐसी महिला है जो बहुत आगे बढ़ सकती है। हो सकता है कि वह मात्र क्लर्कके रूप में आना न चाहे। चाहे जिस हैसियतसे आये, लेकिन रहेगी वह आजमाइशी तौरपर[1] ही। मैंने उसे पुन: नहीं लिखा, क्योंकि मैं सुचेताके पत्रकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। कामका बँटवारा किस तरह किया जायेगा, यह तुम देख लेना। मकानपर उतना ही खर्च करना जितना सुविधाके खयालसे आवश्यक हो। मैं यह मान लेता हूँ कि इसके लिए तुम्हें संयोजक समितिकी अनुमति नहीं लेनी पड़ेगी। मैं नियमावली नहीं देख रहा हूँ। यह उत्तरदायित्व मैंने शामलालपर डाल दिया है। वस्तुत: नियमावली तो कण्ठस्थ ही होनी चाहिए। कभी मेरा भी ऐसा जमाना था। लेकिन वर्षों हुए, उस जमानेको भूल गया हूँ, बल्कि भुलाना पड़ा है।

यह पत्र लिखने के बाद तुम्हारा आजका पत्र मिला। उसका उत्तर सुशीला देगी।

बापू

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. गांधीजी ने यहाँ रोमन लिपिमें "आजमाइशी तौरपर" का अंग्रेजी पर्याय "प्रोविजनली" भी लिख दिया है।

८०. पत्र : सुमित्रा गांधीको

९ नवम्बर, १९४५

चि० सुमी,

तेरा पत्र मुझे अच्छा लगता है। तूने अपनी लिखावट बहुत सुधार ली है। एक ही खामी है कि तू ऊपरकी मात्रा हर बार एक जैसी नहीं लगाती। मात्रा को तू मोतीके लोलक-जैसा बना देती है। आजकल लड़कियोंने इसे फैशन बना लिया है, किन्तु यह गलत है। मात्राकी रेखा तिरछी ही होती है। बहुत हुआ तो रेखाके शीर्षपर हलका-सा बिन्दु होता है।

मुझे यह तनिक भी अच्छा नहीं लगा कि तेरी जेबसे सवा सौ रुपये चोरी हो गये। और नीमूपर तो खीज आती है। यह पैसा वह मनीआर्डरसे भी भेज सकती थी। तू देवदाससे तो ऐसा लेन-देन कर ही सकती है और करना चाहिए।[1]

मैंने तेरी लिखावटकी प्रशंसा की, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि उसमें अब सुधारकी गुंजाइश नहीं है। तू स्वयं ही जाँचकर सुधार लेना। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना—शारीरिक स्वास्थ्यका भी और मानसिकका भी। मुझे लिखना कि नागपुरमें रहते हुए तूने कितना पाया।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८१. पत्र : कृष्णलाल तुलसीदास मणियारको

९ नवम्बर, १९४५

चि० बचु,

तूने मुझे पोस्टकार्ड लिखकर बहुत अच्छा किया। मैंने कनुकी लिखावट भी देखी। तुम सब लोगोंके लिए नववर्ष[2] सुखमय सिद्ध हो और तुम सब थोड़ी-बहुत देशसेवा करने वाले बन जाओ। हिन्दुस्तानके लिए वर्तमानका युगधर्म भी यही हो सकता है। मुझे प्रसन्नता है कि तू वहाँ जयपुर बैंकमें लग गया है। अब इसी

१. देखिए पृ० ४७-४८ भी।
२. गुजराती सम्वत्के अनुसार

काममें अधिकाधिक कुशलता प्राप्त करके बैंकमें ही लगे रहना, जिससे तू उस काममें नाम कमा सके। मैं ऐसे दो लोगोंके बारेमें जानता हूँ जो, तेरी ही तरह, क्लर्कसे भी निचले पदपर काम करके शिखरपर पहुँचे और बहुत प्रसिद्ध हुए। दोनों गुजर गये हैं। वे दोनों गुजराती थे, किन्तु यह बात नगण्य है कि वे गुजराती थे या नहीं। यदि व्यक्तिमें एक ही काममें लगे रहने की निष्ठा और उसमें कुशलता प्राप्त करने की इच्छा हो तो वह आगे बढ़ेगा ही। तू आगे बढ़ और फिर इसके द्वारा देशकी सेवा कर।

बापूके आशीर्वाद

कृष्णलाल तुलसीदास मणियार
मार्फत बैंक ऑफ जयपुर लि०
रिची रोड
अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८२. पत्र : महादेवशास्त्री दिवेकरको

९ नवम्बर, १९४५

श्रीमान पंडितजी,

आपका पत्र मिला। धन्यवाद। आपकी बात मैं समझा हूं। आपके साथ चर्चा करना मैं नहीं चाहता।

आपका,
मो० क० गांधी

महादेवशास्त्री दिवेकर
मीरज

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८३. पत्र : वि० शा० मोडकको

९ नवम्बर, १९४५

भाई मोडक,

आपका खत मिला। ५० वर्षसे मैंने नाटकमें जाना छोड़ा है, न मैं उसमें रस लेता हूं। आप मुझे माफ करें।

आपका,
मो० क० गांधी

वि० शा० मोडक
नाट्य संमेलन
राजूरकर बिल्डींग, मैदान रोड
अहमदनगर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८४. पत्र : न० गो० अभ्यंकरको

९ नवम्बर, १९४५

भाई अभ्यंकर,

आपका सुंदर अक्षरोंसे लिखा हुआ मराठी पत्र मिला। भाषा समझने में मुझे कोई कष्ट नहीं पड़ा। भाई अष्टेकरके बारेमें जिस तरहसे मेरा धर्म समझता हूं वैसा ही पालन कर रहा हूं। और क्या लिखू? मेरा दुःख मैंने जाहिर किया है। यथाशक्ति सबकुछ समझने की कोशिश करता हूं। मेरे पास 'लोकशक्ति'[1] में लिखी हुई पंक्तिया भी आ गई है।

आपका,
मो० क० गांधी

न० गो० अभ्यंकर
१३०, बुधवार
जोगेश्वर सामने
पुना–२

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पूनासे प्रकाशित और एन० बी० लिमये द्वारा सम्पादित कांग्रेसका अधिकृत दैनिक

८५. पत्र : सुव्रत राय चौधरीको

१० नवम्बर, १९४५

भाई सुव्रत राय[1],

आपका ता० २४-१०-४५ का पत्र कल मिला। राष्ट्रभाषामें यह उत्तर लिखने के लिये मुझे क्षमा करोगे ना? आपका कार्यक्रम बड़ा है, अच्छा है। इसमें मेरे तरफसे मैं कुछ कहुं उससे क्या वृद्धि हो सकती है? आप लोगोंका जय हो, और आपके मारफत हिंदुस्तानकी सही खिदमत हो।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

८६. पत्र : सैयद अब्दुल्ला ब्रेल्वीको

१०/११ नवम्बर, १९४५

भाई ब्रेल्वी,

आपके अखबारमें उदयपुरके हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी रिपोर्ट थी। उसमें कई चीजें लिखी हैं, जिनका भाई मुनशी इनकार करते हैं। रिपोर्टमें लिखा है कि पं० जवाहरलालने अच्छा संदेशा भेजा था उसे दबा दिया गया और पढ़ा नही गया। भाई मुनशी कहते हैं कि ऐसा संदेशा उनके पास आया ही नही था, दबाने की तो बात ही क्या। अगर ऐसा है और किसीने झूठ लिख दिया था तो उसे दस्तखत तो करना ही चाहिये।[2] ज[वाहर] लाल तो वहां है, उनसे भी बात कर सकते हैं। मैं यह चाहूंगा कि हिंदोस्तानमें एक अखबार तो ऐसा हो कि जिसमें शुरू से आखिर तक सच ही हो, गन्दगी न हो और लोग जिसकी इज्जत करें। ऐसा अखबार 'क्रॉनिकल' ही क्यों न हो, जिसका एडीटर ब्रेल्वी है, ब्रेल्वी जो आज एडीटरोंकी अंजुमनका सरदार है।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. भारतीय छात्रोंकी कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी मजलिस नामकी संस्थाके अध्यक्ष
२. देखिए पृ० ९-१० भी।

८७. तार : राजेन्द्रप्रसादको

एक्सप्रेस

पूना
११ नवम्बर, १९४५

डॉक्टर राजेन्द्रप्रसाद
बेतिया

आपका तार मिला। अखबारोंसे मालूम हुआ कि गोपको कल फाँसीपर चढ़ा दिया गया।[1] इतना विलम्ब क्यों?[2]

गाँधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य : प्यारेलाल

८८. पत्र : जयसुखलाल गांधीको

पूना
११ नवम्बर, १९४५

चि० जयसुखलाल,

तुम्हारा ५ तारीखका पत्र मिला। तुमने जो तथ्य प्रस्तुत किये हैं क्या मैं दीवान साहबको पत्र लिखने में उनका उपयोग कर सकता हूँ? स्थिति बहुत गम्भीर जान पड़ती है। इसका उपाय भी होना चाहिए। वहाँके लोगोंसे मिलकर तुमसे जो बने, वह करना। स्वयंसेवक मिलकर सफाईका बहुत काम कर सकते हैं। रायचन्दभाईका नाम मैं भूलसे ही लिख गया। तुमने मेरी भूल सुधारकर ठीक ही किया।

तुम्हारा घर और आफिस एक ही स्थानपर हैं या अलग-अलग? मनु[3] अपना समय कैसे व्यतीत करती है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी माइक्रोफिल्म (एम० एम० यू०/२४) से

१. महेन्द्र गोपको १९४२ के आन्दोलनके सिलसिलेमें फाँसीकी सजा सुनाई गई थी और १० नवम्बरको उन्हें भागलपुर केन्द्रीय जेलमें फाँसी दे दी गई थी।

२. राजेन्द्रप्रसादने ९ नवम्बरको अन्तिम क्षण वाइसराय और बिहारके गवर्नरसे मृत्यु-दण्डको आजीवन कारावासमें बदल देने का अनुरोध किया था।

३. जयसुखलाल गांधीकी पुत्री

८९. पत्र : कंचन मु० शाहको

पूना
११ नवम्बर, १९४५

चि० कंचन,

तेरा पत्र मिला। तूने मुझसे जो बात की थी उसीके आधारपर मैंने तुझे लिखा था। जैसा तू चाहती है वैसा तो कोई भी नहीं कर सका। यदि तू ऐसा कर सकी तो मैं समझूंगा कि तूने बहुत प्रगति की है।

रेहाना और सरोजबहनको आशीर्वाद। मिलने पर और बात करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

चि० कंचनबहन
मार्फत रेहानाबहन
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
वर्धा

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२५९) से। सी० डब्ल्यू० ६९८३ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

९०. पत्र : मृदुला साराभाईको

११ नवम्बर, १९४५

चि० मृदुला,

मैं तेरे तीन पत्रोंका उत्तर एक साथ दे रहा हूँ। तेरा व्यक्तिगत पत्र तो मुझे अच्छा लगा, किन्तु उसका एक वाक्य अखरा। तू यह क्यों मानती है कि तेरा 'स्टैण्ड' (स्थिति)—इसका अर्थ तू ही करेगी—मुझे खटकता है? यह ठीक है कि मैं बदला हुआ लग सकता हूँ, किन्तु वह आभास-मात्र है। जो मुझे जानता है वह ऐसा नहीं कहेगा। ऐसे जानने वालोंमें मैं तुझे एक मानता हूँ, किन्तु इस सबकी चर्चा मुझे तुझसे क्यों करनी चाहिए? तू मेरे लिए बालिका है, जब कि मैं वृद्ध हूँ। जब तू मुझसे ऊब जायेगी—और ऐसा होना सर्वथा सम्भव है—तो उस समय तू मुझे छोड़ देगी।

जब तुझे आना हो तब आ जाना और उस समय जो स्पष्ट करवाना हो सो करा लेना।

'सर्वेयर' [सर्वेक्षक] के बारेमें तू जो कहती है उसमें सचाई है। जब तू मुझसे मिले तो उस समय रत्नप्रभाबहनके सम्बन्धमें पूछना। प्रधान सम्बन्धी तेरा पत्र मैं शामलालको भेज रहा हूँ और तेरा व्यक्तिगत पत्र फाड रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९१. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

पूना
११ नवम्बर, १९४५

बापा,

तुम्हारा पत्र मिला। जैसा तुमने लिखा है वैसा मुझे तो तनिक भी याद नहीं था, किन्तु बहुत याद करने पर मुझे ऐसा भास हुआ कि इस मामलेके सम्बन्ध में हमारी बातचीत हुई तो थी। ऐसा नहीं लगता कि इस सम्बन्धमें हमारे पत्र-व्यवहारमें इसका कोई संकेत हो। चि० कनुका कहना है कि जब बातचीत हुई थी, उस समय वह वहाँ उपस्थित था, और उसे इतना याद पड़ता है कि तुमने सुझाव तो दिया था, किन्तु मैंने उसे स्वीकार नहीं किया था, क्योंकि यदि हम त्यागपत्र[1] प्रकाशित करवाना स्थगित कर देते तो उससे कोई अर्थ ही नहीं सधता। इसके बावजूद यदि प्रधानको त्यागपत्र स्वीकार करने का अधिकार ही न हो, तो वस्तुस्थिति दूसरा रूप ले लेती है। किन्तु यह मामला मैं जो निरन्तर कहता आया हूँ उसे सही सिद्ध करता है—अर्थात् मुँहसे कही हुई बातको निरर्थक समझना चाहिए। लिखा हुआ ही सच होता है और सो भी मेरे जैसे व्यक्तिके लिए, जिसकी स्मरण-शक्ति सर्वथा मंद है। अतः यदि बात लिखित रूपमें हो तो उससे दोनों पक्षोंकी रक्षा हो सकेगी। तुम्हारे द्वारा प्रयुक्त जो "खैर" शब्द पत्रके अन्तमें है उसे "खैर" न मानना। इस मामलेसे तुम्हें जो शिक्षा मिली है उसे याद रखना। मेरे विचारसे तो मामला अपने-आपमें सर्वथा नगण्य है, किन्तु उसमें निहित सार बड़ी चीज है। समाचार-पत्रोंको त्यागपत्रकी नकल भेजने वाला तो मैं ही हूँ।

बापू

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ५३ भी।

९२. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

११ नवम्बर, १९४५

बापा,

धर्मदेवजी को लिखे तुम्हारे पत्रकी नकल मिली।[1] मुझे दुःख हुआ और आश्चर्य भी। ज्यादा बात तो हम वहीं मिलने पर करेंगे। उनके आश्रमके पैसेके बारे में यदि मैंने कुछ कहा हो तो मुझे उसकी याद नहीं है। यह चीज भी किसी हद तक बताती है कि जबानी बातकी क्या कीमत है।[2]

सुचेताबहनका पत्र भी नहीं मिल रहा है। जो हो सो ठीक है। मिलने पर इसपर[3] भी चर्चा करेंगे।

बापू

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९३. पत्र : रतिलाल तन्नाको

११ नवम्बर, १९४५

भाई रतिलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे सन्देशोंमें कुछ रह नहीं गया है और यदि ऐसा न भी हो तो भी ढेबरभाई[4] के सम्बन्धमें मुझसे सन्देश माँगा ही नहीं जा सकता। यदि तुम इस बातका रहस्य न समझ सको तो स्वयं ढेबरभाईसे पूछ लेना।

बापूके आशीर्वाद

रतिलाल तन्ना
जानी बिल्डिंग
राजकोट

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए "पत्र : धर्मदेव शास्त्रीको", १४-११-१९४५ भी।
२. देखिए पिछला शीर्षक भी।
३. देखिए पृ० ३२-३३ और ५४।
४. उ० न० ढेबर

९४. पत्र : मोहनलाल गढडावालाको

११ नवम्बर, १९४५

भाई मोहनलाल,

चि० कनुको लिखा तुम्हारा पत्र मैंने पढ़ा और उसके बाद हम मिले भी।

जयसंगभाईकी मुझे अच्छी तरह याद है; और उनके साथ हुई मुलाकातोंकी स्मृति ताजी और मधुर है। जब स्वर्गीय पूंजाभाई जीवित थे तब हम अक्सर मिलते थे। उन्होंने यदि कोई रकम मेरी सार्वजनिक सेवाओंके निमित्त देने का विचार किया हो तो मैं उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लूंगा। यदि वे मेरी पसन्दके किसी कामके लिए रकम निर्धारित करना चाहें तो कर सकते हैं। चाहें तो वे उसी कार्य-विशेषके लिए उस रकमको अपने पास जमा रख सकते हैं और जब मुझे उसकी जरूरत पड़ेगी तो मैं मँगा लूंगा। इन सेवाओंमें जात-पाँत या धर्मका कोई भेद किये बिना सभी गरीबोंके लिए पंचगनीमें आरोग्य-भवन और धर्मशाला बनवाने का काम भी आ जाता है।

बापूके आशीर्वाद

मोहनलाल गढडावाला
मार्फत दुर्लभदास मोतीचन्द शाह
२६९, मस्जिद बन्दर रोड
इम्पीरियल बैंक, माण्डवी ब्रांचके निकट
बम्बई – ३

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९५. पत्र : ना० वि० बावडेकरको

पूना
११ नवम्बर, १९४५

भाई बावडेकरजी,

आपका लंबा खत मिला। मैं कुछ नहीं कर सकता। अब राज्यके लोगों के [प्रजा] मंडलके [सदस्य] छूटे हैं। उनसे मश्वरा करो।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री ना० वि० बावडेकर
फ० सं० प्र० परिषद
फलटन राज

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९६. पत्र : ललिता बोसको

पूना
११ नवम्बर, १९४५

चि० ललीता,

अगर तू हिंदी नही पढ़ सकती है तो कोई तो पढा देंगी? क्यो अंग्रेजीमें लिखुं?

कागद तूने टाइप किया है? क्या करती है?

नेताजी वाले चित्र भेजे सो अच्छा किया। सुंदर है।

बापुके आशीर्वाद

श्री ललिता बोस
३८-२, एलगिन रोड
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९७. पत्र : श्रीपतिचरण साहुको

पूना
११ नवम्बर, १९४५

भाई श्रीपतिबाबु,

आपका खत मिला। मैं नहीं जानता कि ईश्वर मुझे बंगालमें कितनी शक्ति देगा। आप सब साहित्य तैयार रखें। मैं नहीं मानता कि कोई दुःख ऐसा है जिसका निवारण न हो।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री श्रीपतिचरण साहु
द्वारा कलकत्ता इंश्योरेन्स लिमिटेड
१५, क्लाइव स्ट्रीट
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९८. पत्र : भगवतीचरण शुक्लको

पूना
११ नवम्बर, १९४५

चि० भगवती,

अब आश्रममें तो लग्न नहीं हो सकते हैं। आश्रमके बाहर वर्धामें करा दे सकता हूं। मेरी हाजरी नहीं हो सकती है। विधि हरिजनके हाथसे होगी जैसी टेंडुलकरजी के बारेमें हुई।[1] अच्छा होगा अगर सिविल मैरेज एक्टके मुताबिक किया जाय।

बापुके आशीर्वाद

भगवतीचरण शुक्ला
नागपुर टाईम्स आफिस, नागपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

९९. पत्र : राजेन्द्रप्रसादको

११[2] नवम्बर, १९४५

भाई राजेनबाबु,

आपका तार मिला। कितनी देरसे? महेन्द्र गोप तो फांसी चढ़ गया कल और तार आज मिला!!! ऐसा क्यों? मैंने इस केसमें अभिप्राय नहीं दिया था? जैसे मैंने महेन्द्र चौधरी[3] का मांगा है ऐसे ही इसका भी करो तो अच्छा है। यह केस सचमुच पोलिटिकल था?

मुझे प्रमाण चाहिये।

तबियत अच्छी होगी।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ११-१२ भी। इन्दुमतीके साथ तेन्दुलकरका विवाह १८ अगस्त, १९४५ को हुआ था।

२. साधन-सूत्रमें "१०" है जो भूलसे लिखा गया है, क्योंकि महेन्द्र गोपको १० नवम्बरको फाँसी दी गई थी; देखिए पृ० ५९।

३. एक राजनीतिक कैदी, जिन्हें डाकाजनी और हत्याके अपराधमें ७ अगस्त, १९४५ को भागलपुर केन्द्रीय जेलमें फाँसी दे दी गई थी; देखिए खण्ड ८०, पृ० ४५१-५२ और खण्ड ८१, पृ० २०।

१००. पत्र : जी० ई० बी० एबेलको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
१२ नवम्बर, १९४५

प्रिय श्री एबेल,

आजाद हिन्द फौजके कतिपय कैदियोंके सम्बन्धमें लिखे मेरे पत्र[1] के उत्तरमें आपका ६ तारीखका पत्र[2] मुझे मिला। उसके लिए धन्यवाद। मेरा उद्देश्य तो समाचारपत्रोंमें इस सम्बन्धमें मैंने जो-कुछ पढ़ा, सिर्फ उसे नहीं, बल्कि इस मामलेमें देशकी भावनाको वाइसराय महोदयके ध्यानमें लाना था।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

जी० ई० बी० एबेल
वाइसरायके निजी उप-सचिव
नई दिल्ली

[अंग्रेजीसे]

गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ४१-४२

१०१. पत्र : जी० ई० बी० एबेलको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
१२ नवम्बर, १९४५

प्रिय श्री एबेल,

समाचारपत्रोंकी कुछ कतरनोंकी ओर मैंने वाइसराय महोदयका ध्यान दिलाया

१. देखिए खण्ड ८१, पृ० ४७५-७६।

२. पत्रमें कहा गया था: "वाइसराय महोदयने आजाद हिन्द फौजके कतिपय सदस्योंके मुकदमेके सिलसिलेमें सर इवन जेन्किन्सको लिखा आपका २९ अक्तूबरका पत्र पढ़ा। उन्होंने मुझे आपको यह लिखने के लिए कहा है कि उन्होंने आपके विचारोंको ध्यानपूर्वक पढ़ा है और उनका ख्याल है कि आपके विचार समाचारपत्रोंमें प्रकाशित उन लेखोंपर आधारित हैं, जिनमें अकसर तथ्योंका सही निरूपण नहीं किया गया होता। वाइसराय महोदय उन मामलोंके गुण-दोषपर कोई राय नहीं दे सकते जो अभी न्यायाधीन हैं।"

था, उस सम्बन्धमे लिखे मेरे इसी २ तारीखके पत्र[1] के उत्तरमें आपके ६ तारीखके पत्रके लिए धन्यवाद ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधोजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ४३

१०२. पत्र : लॉर्ड पेथिक-लॉरेन्सको

पूना
१२ नवम्बर, १९४५

प्रिय लॉर्ड लॉरेन्स[2],

कैसा सुन्दर संयोग है कि आपका विवाह-दिवस और मेरा जन्म-दिवस एक ही दिन पड़ते है? आपकी बधाइयोंके लिए धन्यवाद।[3] क्या मैं भी आपको बधाई दे सकता हूँ? विवाह भी क्या एक नवजन्म ही नही है?

आपसे मेरा पहला परिचय क्या स्त्री-मताधिकार आन्दोलनके दिनोंमें लेडी लॉरेन्सके माध्यमसे नहीं हुआ था?[4] तब मैं सविनय प्रतिरोधकी कलामें एक नौसिखिया था, और स्वर्गीया श्रीमती पैंकहर्स्ट तथा उनकी पुत्रीसे मेरे कुछ तीव्रतापूर्ण मतभेद थे, लेकिन आपकी पत्नी तथा स्वर्गीया श्रीमती डेस्पार्डसे नहीं।[5]

आप दोनोंको शुभकामनाएँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

महामहिम लॉर्ड पेथिक-लॉरेन्स
११, ओल्ड स्क्वेयर
लिंकन्स इन, लन्दन डब्ल्यू० सी० २

[अंग्रेजीसे]
गांधोजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० १७४

१. देखिए पृ० ६-७।

२. भारत-मन्त्री

३. अपने ४ अक्तूबरके पत्रमें लॉर्ड पेथिक-लॉरेन्सने कहा था : "अभी-अभी मालूम हुआ है कि आपका जन्म-दिवस और मेरा विवाह-दिवस दोनों एक ही दिन पड़ते हैं। किंचित विलम्बसे ही सही, मैं आपको अपनी तथा अपनी पत्नीकी शुभकामनाएँ भेजता हूँ और आशा करता हूँ कि इस अशान्त विश्वमें हम सब उज्ज्वलतर भविष्यके निर्माणमें योगदान कर पायेंगे।"

४. गांधीजी अपने इंग्लैण्ड प्रवासके दौरान १९०६ में महिला मताधिकारके सिलसिलेमें आयोजित एक सभामें श्रीमती पेथिक-लॉरेन्ससे मिले थे।

५. गांधीजी ने महिला मताधिकार आन्दोलनके सिलसिलेमें उग्रपंथिताकी हिमायत करने वाली कुछ महिलाओंकी आलोचना की थी, जिसका श्रीमती एमलीन पैंकहर्स्ट और उनकी पुत्रीने बुरा माना था। उस अवसरपर श्रीमती पेथिक-लॉरेन्सने गांधीजी का पक्ष लिया था।

१०३. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

पूना
१२ नवम्बर, १९४५

चि० किशोरलाल,

मुझे दुःख देनेकी तुममें शक्ति ही कहाँ है? तुममें और मुझमें यही तो अन्तर है। मैंने तो शायद इसे अपना धन्धा ही बना लिया है। इसका भी मुझे कोई दुःख नहीं है। वस्तुस्थिति मैंने तुम्हारे सामने रख दी है। यह अच्छा लगता है कि मेरे और अपने सुझावमें तुम कोई अन्तर नहीं देखते। मैंने प्रोफेसरसे भी बात की है। तुम सहायता करना और अपनी शर्तके अनुसार कमेटीमें बने रहना।

गोमती अभी पूरी तरहसे ठीक नहीं हुई है। इसके बावजूद वह हर काम की देखभाल करना चाहती है, यह उचित नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

आश्रम
सेवाग्राम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१०४. पत्र : छगनलाल गांधीको

पूना
१२ नवम्बर, १९४५

चि० छगनलाल,

मणिलाल शिकायत करता है कि तुम कमजोरीके बावजूद काम करते हो। ऐसा क्यों करते हो?

बापूके आशीर्वाद

सेवाग्राम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१०५. पत्र : हरि गणेश फाटकको

पूना
१२ नवम्बर, १९४५

भाई हरिभाऊ,

आज ७-३० बजे प्रार्थनाके बाद आ सकते हैं तो आ जाओ। यह समय अनुकूल न हो तो दूसरा बताईये।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१०४) से

१०६. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

पूना
१२ नवम्बर, १९४५

बापा,

मैंने हरिभाऊको आज ही बुलाया था। मैं यहां निकाल [समाधान] कर लूंगा। चिन्ता न करें। दोनों खत निपट जाने पर भेजूंगा।

बापु

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१०७. प्रस्तावना : 'कंस्ट्रक्टिव प्रोग्राम : इट्स मीनिंग ऐंड प्लेस' की

.. 'कंस्ट्रक्टिव प्रोग्राम' मैंने सर्वप्रथम १९४१ में लिखा था।[1] यह उसका पूर्णतः संशोधित संस्करण है। इसमें शामिल किये गये विषयोंको किसी क्रमसे व्यवस्थित नहीं किया गया है — उनके महत्त्वके अनुसार तो क्रम नहीं है। जब भी किसी पाठकको पता चले कि स्वराज्यकी दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण कोई विषय इस कार्यक्रम में शामिल नहीं किया गया है तब वह यह न समझ ले कि उसे जानबूझकर छोड़ दिया गया है। उसे निस्संकोच मेरी सूचीमें उसे जोड़कर मुझे सूचना देनी चाहिए। मेरा यह दावा नहीं है कि मेरी सूची पूर्ण है; यह तो केवल उदाहरणके रूपमें प्रस्तुत की गई है। पाठक देखेंगे कि इसमें बहुतसे नये और महत्त्वपूर्ण विषय जोड़े गये हैं।

पाठकोंको, चाहे वे कार्यकर्ता और स्वयंसेवक हों या न हों, निश्चित रूपसे समझ लेना चाहिए कि रचनात्मक कार्यक्रम पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने का सत्यमय और अहिंसक मार्ग है। उसके पूर्णतः कार्यान्वियनका अर्थ पूर्ण स्वराज्य है। बिलकुल मूलसे ही राष्ट्रका निर्माण करने के उद्देश्यसे बनाये गये इस सम्पूर्ण रचनात्मक कार्यक्रमको सफल बनाने में जुटे हुए चालीस करोड़ लोगोंकी कल्पना करके देखिए। क्या कोई इस बातसे इनकार कर सकता है कि इसका मतलब हर मायनेमें, विदेशी प्रभुत्वकी समाप्तिके अर्थमें भी, पूर्ण स्वराज्य ही है? जब आलोचक इस बातपर हँसते हैं तब उनका मतलब दरअसल यह होता है कि इस कार्यक्रम को पूरा करने के प्रयत्नमें चालीस-के-चालीस करोड़ लोग कभी सहयोग नहीं करेंगे। इसमें सन्देह नहीं कि उनके इस उपहासमें काफी सचाई है। लेकिन मेरा उत्तर यह है कि इसके बावजूद यह आजमाकर देखे जाने लायक तो है ही। यदि सच्चे कार्यकर्ताओंका एक दल अटल संकल्पसे काम ले तो यह कार्यक्रम अन्य किसी भी कार्यक्रमके ही समान, बल्कि अधिकांश कार्यक्रमोंसे कहीं अधिक, व्यवहार्य है। बहरहाल, अगर अहिंसाको आधार बनाकर चलना है तो मेरे पास इस कार्यक्रमका कोई विकल्प नहीं है।

सविनय अवज्ञा, सार्वजनिक हो या व्यक्तिगत, रचनात्मक कार्यक्रममें सहायक है और सशस्त्र विद्रोहका पूर्ण विकल्प भी है। प्रशिक्षण जितना सशस्त्र विद्रोहके लिए आवश्यक है उतना ही सविनय अवज्ञाके लिए भी। सिर्फ तरीके अलग-अलग हैं। दोनों मामलोंमें कार्रवाई अवसर आने पर ही की जाती है। सैनिक

१. देखिए खण्ड ७५, पृ० १४१-८३।

विद्रोहके लिए प्रशिक्षणका मतलब है शस्त्रोंका, और अन्तत शायद परमाणु बम-रूपी शस्त्रका, उपयोग करना सीखना। सविनय अवज्ञाके लिए उसका मतलब है रचनात्मक कार्यक्रम।

इसलिए कार्यकर्ता कभी सविनय प्रतिरोधके अवसरकी ताकमें नहीं रहेंगे। यदि रचनात्मक प्रयत्नको विफल करने का प्रयत्न किया जाये, तो वे उस स्थिति का सामना करने को हमेशा तैयार रहेंगे। एक-दो उदाहरणोंसे स्पष्ट हो जायेगा कि कहाँ उसका उपयोग किया जा सकता है और कहाँ नहीं। जैसा हम जानते हैं राजनीतिक समझौते रोके गये हैं और रोके जा सकते हैं, लेकिन आदमी-आदमीके बीचकी व्यक्तिगत मैत्रीको नहीं रोका जा सकता। ऐसी निःस्वार्थ और सच्ची मित्रताको राजनीतिक समझौतोंका आधार होना चाहिए। इसी प्रकार केन्द्रीभूत खादीको सरकार विफल कर सकती है, लेकिन कोई भी ताकत खादी के व्यक्तिगत उत्पादन और उपयोगको नहीं रोक सकती। खादीका उत्पादन और उपयोग लोगोंपर थोपा नहीं जाना चाहिए, बल्कि इसे स्वतन्त्रता आन्दोलनकी एक मदके तौरपर उन्हें बुद्धिपूर्वक और खुशीसे अपनाना चाहिए। यह काम गाँवोंको इकाइयाँ बनाकर ही किया जा सकता है। ऐसे कार्यक्रममें भी उसे आरम्भ करने वालोंके मार्गमें बाधा डाली जा सकती है। मगर इस तरहके लोगोंको तो सारी दुनियामें अग्नि-परीक्षासे गुजरना पड़ा है। कष्ट-सहनके बिना स्वराज्य नहीं मिल सकता। हिंसात्मक संघर्षमें सबसे पहले और सबसे अधिक क्षति सत्यकी होती है; अहिंसात्मक लड़ाईमें सत्य सदा विजयी रहता है। इसके अतिरिक्त जिन लोगोंसे सरकार बनी है उन्हें शत्रु नहीं समझना चाहिए। उन्हें ऐसा मानना अहिंसाकी भावनाके प्रतिकूल है। हमें उनसे अलग तो होना ही है, लेकिन मित्रोंकी तरह।

यदि इन प्रारम्भिक विचारोंको पाठक ठीक समझते हों तो रचनात्मक कार्यक्रम उन्हें अत्यन्त रुचिकर लगेगा। यह उतना ही दिलचस्प लगना चाहिए जितना कि तथा-कथित राजनीति और तकरीरबाजी लगती है, और महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी तो निश्चय ही उनसे अधिक है।

पूना, १३ नवम्बर, १९४५

[अंग्रेजीसे]

कंस्ट्रक्टिव प्रोग्राम : इट्स मीनिंग ऐंड प्लेस

१०८. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको

नैसर्गिक उपचार गृह
६, टोडीवाला रोड, पूना
१३ नवम्बर, १९४५

प्रिय सर एवन,

पण्डित जवाहरलाल नेहरूके गिरफ्तार किये जाने की आशंकाके बारेमें मैंने अभी-अभी लन्दनसे भेजा गया रायटरका सन्देश पढ़ा है।[1]

यदि ब्रिटिश शासक सत्ताका त्याग नहीं करना चाहते और भारतकी जनताको उसका अधिकार नहीं देना चाहते तब तो मैं स्वीकार करता हूँ कि पण्डित नेहरूके भाषण उग्र हैं। लेकिन यदि अंग्रेजोंकी कथनी सही है तो वे भाषण उग्र नहीं हैं। जवाहरलालपर घृणा अथवा विद्वेषका दोषारोपण करना गलत होगा। वे भारतीय सिविल सेवाके लोगोंके बारेमें निःसन्देह बहुत कटु बातें कहते हैं। लेकिन जब वे ऐसा कहते हैं तो जनताके मनकी बात ही कहते हैं; और सही बात ही कहते हैं। वाइसराय महोदय द्वारा प्रतिपादित "भूल जाओ और क्षमा कर दो" का सुन्दर सिद्धान्त केवल सेना द्वारा युद्धमें किये गये अत्याचारोंपर ही लागू हो सकता है, लेकिन लोगोंकी अक्षम्य हत्या, नृशंसता, घूसखोरी और भ्रष्टाचार आदिके सम्बन्धमें निश्चय ही लागू नहीं हो सकता। यदि पण्डित नेहरूके कथन गलत हैं तो एक खुले और निष्पक्ष न्यायाधिकरण द्वारा उनकी जाँच की जानी चाहिए। यदि सरकारका दामन पाक है, तो उसे प्रचारसे डरने का कोई कारण नहीं है।

१. एक खबरके अनुसार, संयुक्त प्रान्तके गवर्नर सर मॉरिस हैलेटने वाइसरायसे जवाहरलाल नेहरूको गिरफ्तार करने की अनुमति माँगी थी। वाइसरायके इनकार करने पर उन्होंने भारत-मन्त्रीसे निवेदन किया था। १२ अप्रैलको वाइसराय भवनसे एक प्रेस विज्ञप्ति जारी करके कहा गया कि खबर मनगढ़न्त है (ट्रान्सफर ऑफ पॉवर, जिल्द ६, पृ० ४८१)। लेकिन अब यह मालूम हो चुका है कि वेवल नेहरू, पटेल, पन्त तथा अन्य कांग्रेसी नेताओं द्वारा उन दिनों दिये जा रहे भाषणोंको हिंसा भड़काने वाला मान रहे थे और "शीघ्र ही... जोर-जोरसे एक बार फिर कांग्रेसका दमन करने" का विचार कर रहे थे (वेवल—द वाइसरायज जर्नल, पृ० १८० और उसके आगे)।

जो बातें स्पष्ट हैं उनके बारेमें बहस करके मैं वाइसराय महोदयका समय नष्ट नही करना चाहूँगा।[1]

हृदय से आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेण्ट, १९४४-४७, पृ० ५७

१०९. पत्र : शारदा गो० चोखावालाको

पूना
१३ नवम्बर, १९४५

चि० बबु,

तेरा पत्र मिला। तेरा "अन्तिम" प्रयत्न कैसा और क्यो, यह नही लिखा।[2] इतनी देर नही होनी चाहिए कि फिर उसपर काबू पाना मुश्किल हो जाये।

मैं जानता हूँ कि चोखावाला व्यस्त है। मैं उनसे पत्र लिखने का विवेक दिखाने की अपेक्षा नही रखता, क्योंकि आशा रखना गलत है।

शकरीबहनके आधे सिरमें दर्द क्यो उठता है?

तुम सबको,

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००६३) से। सौजन्य: शारदा गो० चोखावाला

१. भारत-मन्त्रीको पत्र लिखकर वेवलने कहा कि गांधीजी के स्वास्थ्यकी वर्तमान अवस्थाको देखते हुए... सम्भव है कि यह पत्र पटेल या नेहरूने लिखा हो और गांधीजी ने केवल उसपर हस्ताक्षर किये हों। (ट्रान्सफर ऑफ पॉवर, जिल्द ६, पृ० ४८)। अपने जर्नल के १८५ वें पृष्ठपर उन्होंने पत्रको दुर्भावनापूर्ण बताया।

२. देखिए पृ० २९-३०।

११०. पत्र : जीवणजी डा० देसाईको

पूना
१३ नवम्बर, १९४५

चि० जीवणजी,

तुम्हारा पत्र मिला।

रचनात्मक कार्य सम्बन्धी पुस्तिकामें मैं करीब आठ दिनोंसे लगा हुआ हूँ। मतलब यह कि जब भी मुझे समय मिलता है मैं उसीमें लगा देता हूँ। दो दिन हुए, मैंने उसे पूरा कर दिया था, लेकिन मैंने उसमें इतना ज्यादा संशोधन-परिवर्तन किया है कि थोड़े-से हिस्सेको फिरसे लिखकर भेजने का इरादा रखता हूँ। इसी में दो दिन लग गये। अभी दो-एक दिन और लगेंगे। लेकिन यह पुस्तिका अपेक्षाकृत नई और सम्पूर्ण होगी। इसे और भी सँवारा जा सकता था। लेकिन लोभरूपी टीला तो बनता और बढ़ता ही रहता है न? वह जड़ कहाँ है?

सरदारके जीवन चरित[1] के सम्बन्धमें समाचारपत्रोंमें जो प्रकाशित हुआ, उस सबको सच नहीं मानना। मैंने तो उसे नहीं देखा है। जब मैंने वादेके मुताबिक सरदारको अभिनन्दन-ग्रन्थ भेंट किये जाने की बात सुनी तब मैंने उसे रुकवा दिया, और उसके स्थानपर सरदारका प्रामाणिक जीवन चरित तैयार करने का सुझाव दिया। इसे सरदारको भेंट करने की भी कोई जरूरत नहीं होगी। इसलिए जब मुझसे सन्देश माँगा गया तब मैंने इनकार कर दिया और अभिनन्दन-ग्रन्थकी योजना रुकवा दी। अभिनन्दन-ग्रन्थके आयोजकोंमें मुन्शी[2] प्रमुख थे, इसलिए मैंने सुझाव दिया कि यदि वे इस कार्यको हाथमें लेंगे तो वे इसको अच्छी तरहसे कर सकेंगे। उसके बाद क्या हुआ और क्या हो रहा है इसकी मैंने खोज-खबर नहीं ली। मैं नहीं जानता कि तुम स्वयं जीवन चरित लिख रहे हो अथवा किसीसे लिखवा रहे हो। इसके बारेमें तुम सीधे मुन्शीजी से पूछना। इस कार्यमें पाटिल और तेन्दुलकर भी हैं। तेन्दुलकर को मुन्शीके सहायकके रूपमें काम करना है। और यदि मुन्शी अपनी स्वीकृति दे दें तो तुम्हारे पास जितनी सामग्री आये वह सब इकट्ठा करके तुम मुन्शीजी को भेज देना। यदि मुन्शी यह कार्य न करने वाले हों तो मुझसे फिर पूछना। मेरा यह भी सुझाव था कि इस ग्रन्थके प्रकाशनकी तिथि आजसे ही घोषित कर दी जाये और उसका पालन किया जाये।

पत्रिकाओं[3] के बारेमें मैं तो तैयार ही हूँ। मैं इसे किस हद तक निभा पाऊँगा, यह तो मैं नहीं जानता। लेकिन यह जरूर मानता हूँ कि यदि यह कार्य आसानीसे हो सके तो मुझे अवश्य करना चाहिए। इसके लिए तुम्हें किसीकी

१. उनके ७० वें जन्म-दिवसके अवसरपर, जो ३१ अक्तूबरको था।

२. क० मा० मुन्शी

३. हरिजन और उससे सम्बन्धित प्रकाशन

खुशामद नही करनी है। तुम्हें अथवा मावलंकरको मजिस्ट्रेटसे मिलना चाहिए और उससे इसके बारेमें पूछना चाहिए। यदि वह स्वीकृति दे तो परवाना (लाइसेन्स) ले लेना चाहिए। मौखिक अथवा लिखित रूपसे किसी प्रकारके बन्धनमें नहीं पड़ना चाहिए। अगर सरकारको भी इन पत्रिकाओंकी दरकार हो तभी हमें यह काम करना चाहिए। यदि किसी लेखके प्रकाशित होते ही जमानतकी माँग की जाये तो यह स्थिति असह्य होगी। यदि सरकारको हमारी पत्रिकाओंकी जरूरत महसूस होगी तो उसे हमारी जरूरतका कागज हमें देना ही होगा। उसे हमें कागज देना ही कितना होगा? उसमें विज्ञापन तो होगा नही। हमें बहुत सारी प्रतियाँ निकालनी होंगी। जितनी माँग होगी उतनी तो निकालनी ही चाहिए। मुझे उम्मीद है कि हम पहले जितनी प्रतियाँ निकाला करते थे, कमसे-कम उतनी तो निकालनी ही पड़ेंगी। मुझे इसके बारेमें पूरी तफसीलसे लिखना, और पहले अंकके लिए थोड़ा समय देना। इसलिए तुम यह मानकर चलना कि अगर मैं यात्रा पर हूँ तो भी तैयार ही हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९५७) से। सी० डब्ल्यू० ६९३१ से भी; सौजन्य : जीवणजी डा० देसाई

१११. पत्र : जुगतराम दवेको

१३ नवम्बर, १९४५

चि० जुगतराम,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हें मेरा आशीर्वाद तो है ही, किन्तु आशीर्वाद तो बेल है, इसलिए वह बाड़ या तनेके सहारे ही चढ़ सकती है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह एक प्रकारके संकेतका काम करता है। मतलब यह कि यदि तुम्हारा तना मजबूत हो तो आशीर्वाद-रूपी बेल उसपर चढ सकती है। यहाँ तनेका अर्थ है सूक्ष्म ज्ञान और भाव।

तुमने वैकुण्ठभाई[1] को बुलाया है, यह ठीक किया है।

बापूके आशीर्वाद

जुगतराम दवे
स्वराज आश्रम
वेडछी
डाकखाना वालोड, जिला सूरत

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. वैकुण्ठलाल मेहता

११२. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

पूना

१३ नवम्बर, १९४५

चि० जवाहरलाल,

हमारी कलकी बातसे मुझे तो बड़ा आनंद हुआ। उससे अधिक बात कल तो कर नहीं सकते थे और मेरा खयाल ऐसा है कि हम एक ही वक्त मिलकर सब काम पूरा नहीं कर सकेंगे। समय-समयपर हमें अवश्य मिलना चाहिये। मैं तो ऐसे बना हूं कि अगर आज मेरी शक्ति इधर-उधर जाने की रहे तो मैं ही तुमको ढूंढ़ लूं, एक-दो दिन साथ रह लूं, कुछ वार्तालाप कर लूं और भाग जाऊं। ऐसी आज मेरी स्थिति नहीं रही है, लेकिन ऐसा मैंने किया है इतना समझो। मैं चाहता हूं कि हम एक-दूसरोंको समझें ऐसे ही लोग भी हमको समझ लें। अन्तमें ऐसा हो सकता है कि हमारा मार्ग ही अलग है तो अलग सही। हमारा हृदय तो एक ही रहेगा, क्योंकि एक है। कलकी बातसे मैं यह समझा हूं कि हम दोनों में विचार-श्रेणीमें या तो वस्तु समझने में बड़ा अन्तर नहीं है। तुमको किस तरह से समझा हूं वह बताना चाहता हूं जिससे अगर फरक है तो मुझे बता दोगे।

(१) तुम्हारी दृष्टिसे हरेक इन्सानकी बौद्धिक, आर्थिक, राजकीय और नैतिक शक्ति कैसे बढ़े वो ही सच्चा प्रश्न है। मेरा भी वही है।

(२) और उसमें भी हरेक इन्सानको ऊंचे चढ़ने का एक सा हक और मौका होना चाहिये।

(३) इस दृष्टिसे देखते हुए देहातकी और शहरकी एक ही हालत होनी चाहिये। इसलिए खाना, पीना, रहना, पहनना और रमन-गमन एक-सी होनी चाहिए। आज तो यह स्थिति पैदा करने के लिये अपने कपड़े, खोराक और मकान अपने-आप पैदा करना और बनाना चाहिए। और ऐसे ही अपना पानी या बत्ती भी अपने आप पैदा करना चाहिए।

(४) इन्सान जंगलमें रहने के लिये पैदा नहीं हुआ है, लेकिन समाजमें रहने के लिये पैदा हुआ है। एकपर दूसरा सवारी न कर सके यह विचार करते हुए पता चलता है कि युनिट एक काल्पनिक देहात या ग्रुप होना चाहिये, जो स्वावलंबी रह सके और उस ग्रुपमें एक-दूसरेपर अवलंबन तो होना ही होगा। इस तरह सोचने से सारी दुनियाके इन्सानोंके संबंधका नकशा बन जाता है।

यहां तक मैं अगर ठीक समझा हूं तो दूसरा हिस्सा मैं शुरू करूंगा। जो खत मैंने तुमको पहले लिखा था उसका अंग्रेजी राजकुमारीसे करवा लिया था वह मेरे पास पड़ा है। इसकी अंग्रेजी भी करवा लेता हूं और उसे साथमें ही भेजता हूं।[1] अंग्रेजी करवाकर मैं दो काम कर लेता हूं। एक तो मैं अपना कहना तुमको अंग्रेजीमें ज्यादा समझा सकता हूं तो समझाऊं, और दूसरा मैं तुम्हारी बात पूरे-पूरी समझा हूं कि नहीं उसका भी अंग्रेजी करने से मुझे ज्यादा पता चलेगा।

इंदुको आशीर्वाद।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्रसे : गांधी-नेहरू पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

११३. पत्र : आर० वी० गोगटेको

१३ नवम्बर, १९४५

भाई गोगटे,

आपने सब स्पष्टतया मुझको कहा। अच्छा लगा है। दो प्रश्नका उत्तर देने का मैंने कहा था। एक अमेरिकन ढंगपर मैं मुग्ध नहीं हूं। उनका उत्साह और साहसपर मुझे कदर है लेकिन आज तो हम इस तरह नहीं चल सकते हैं और मैं तो चलना भी नहीं चाहता हूं। इसलिये मुझे आपकी नवीन ग्रामयोजना अच्छी नहीं लगती है। मेरी सलाह है कि अगर समय मिले तो यहांके ग्राम देखो, और जो काम दो कुमारप्पाभाई मेरे साथ हैं वह कर रहे हैं, और दूसरे तीन कर रहे हैं उसको देखो।

अमेरिकाके साथ नैतिक व्यवहार रखना मुझे हमेशा प्रिय लगा है, लेकिन हमारे तरफसे एजन्सी रखना मुझे नहीं जंचा है और आज भी नहीं जंचता है। इसमें मनको मनाने की या फुसलाने की ज्यादा बात है। अगर हम हिन्दुस्तानमें ही शक्ति पैदा करेंगे तो उसका असर अपने-आप होने वाला है। ब्रिटिश सल्तनत के तरफसे लाखों रुपये खर्च करके असत्यका फैलावा होता है, क्या उसीकी नकल हम सत्यके फैलावके लिये करें? अमेरिकामें पादरी लोग ऐसा करते हैं। मैं जानता हूं। और मुझे यह भी मालूम है कि सत्यका प्रचार और असत्यका प्रचारमें भेद है और होना ही चाहिए। और तो क्या लिखूं?

प्रोफेसर आर० वी० गोगटे
यू० एन० आर० आर० ए०
इम्पीरियल होटल, नई दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. इसका अमृतकौर द्वारा किया हुआ अनुवाद ए बंच ऑफ ओल्ड लेटर्स में प्रकाशित हुआ है।

११४. पत्र : भूलाभाई देसाईको

१४ नवम्बर, १९४५

भाई भूलाभाई,

भाई जवाहरलालने मुझसे कहा है कि उन्होंने जलियाँवाला बागके बारेमें बख्शी टेकचन्दसे बातचीत की थी।[1] उनका विचार है कि यदि तुम दोनों उनके साथ मिलकर ट्रस्टके दस्तावेजका काम पूरा कर डालो तो अच्छा हो। बख्शी टेकचन्द पंजाबसे सम्बन्धित सब-कुछ सँभाल लेने को तैयार हैं। अब उनसे विचार-विमर्श करके जैसा आवश्यक हो वैसा कर लेना।

तुम्हारा तार मिल गया था। तुम्हारा पत्र अभी तक नहीं मिला है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

११५. पत्र : कृष्ण वर्माको

१४ नवम्बर, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

नेचुरोपैथी (नैसर्गिक चिकित्सा) या अन्य कोई चीज धनाभावके कारण नहीं अटकती। वह अटकती है शुद्धता और शुद्ध कार्यकर्ताओंके अभावमें। तुमने जो आँकड़े उद्धृत किये हैं वे कागजपर ही रहेंगे। यदि मामला इतनी आसानीसे अमलमें आने वाला होता तो आज हम बहुत ऊँचे उठ गये होते। ४ के २० करने में ही पसीना बहाना पड़ता है, २० के १०० और १०० के ५०० करना तो सपना ही है। किन्तु कोई बात नहीं। मनुष्य तो प्रयास ही कर सकता है न? तुम्हें यहाँ आने की जरूरत नहीं। मेरा सारा समय निर्धारित हो चुका है। २० तारीखको मैं बम्बईमें रहूँगा। उस समय आकर मिल लेना। मैं उसी दिन वर्धाके लिए रवाना हो जाऊँगा।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० कृष्ण वर्मा
नैसर्गिक उपचार गृह
मलाड
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ८१ भी।

११६. पत्र : राधा गांधीको

१४ नवम्बर, १९४५

चि० राधा,

तेरा पोस्टकार्ड मिला। तू पूर्णतया विनयशील है। क्या यह माना जा सकता है कि अब तू राजकोटमें ही जम गई है?

मणिलाल और सुशीला अकोलामें ही हैं। उनका पुत्र अरुण मेरे ही साथ है। तेरा पोस्टकार्ड मैं मणिलालको भिजवा दूंगा।

आशा है, तुम सब सानन्द होंगे। तुम्हें कोई सेवा-कार्य अवश्य करना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

११७. पत्र : दिनशा मेहताको

पूना
१४ नवम्बर, १९४५

चि० दिनशा,

मेरा सोच-विचार तो चलता ही रहता है। ३१ दिसम्बरको यह संस्था बन्द हो जानी चाहिए। पहली जनवरीसे इसे अमीरोंके बजाय गरीबोंकी संस्था बन जाना चाहिए। आज तक तुमने अमीरोंके बाद गरीबोको लेने का आग्रह रखा है, लेकिन असली गरीब तो तुम्हारे पास तक पहुँच ही नही सकते और अगर कोई पहुँच भी जाये तो जो पैमाना अमीरके लिए है वही गरीबपर लागू किया जायेगा, जिससे वह तो पिस ही जायेगा। पहली जनवरीसे अमीर लोग गरीबोंके बाद आयें तो भले आयें, लेकिन गरीबोंकी तरह रह सकें तभी। इस संस्थामें जितनी स्वच्छता आज है उससे अधिक होनी चाहिए। स्वच्छताके लिए पैसेकी जरूरत नही है बल्कि सावधानीकी, प्रेम, सच्चाई और ज्ञानकी जरूरत है। इसलिए यह स्वच्छता आजसे ही हो तो ठीक, लेकिन आशका है कि शायद ऐसा न हो सके, क्योंकि यहाँ कोई किसीकी सुनता नही और हर आदमी अपने मनका मालिक है। किसीको कुछ करने की गरज भी होती है तो वह तुम्हें खुश रखने-भरके लिए ही। इसमें सुधार तो तभी हो सकता है जब मैंने जिन बातोंका ऊपर उल्लेख किया है उनमें से कोई आदमी आजसे ही शुरू कर दे। अगर यह बात तुम्हारे गले

नहीं उतरे तो अन्तमें तुम्हें और मुझे दोनोंको पछताना पड़ेगा, क्योंकि मैं स्वच्छताको परमेश्वरका अंग मानता हूँ। अंग्रेजीकी कहावत "क्लीनलीनेस इज नेक्स्ट टु गॉडलीनेस" ("ईश्वरपरायणताके बाद स्वच्छताका ही स्थान है") को सुधारकर मैं कहना चाहूँगा, *"क्लीनलीनेस इज गॉडलीनेस"* ("स्वच्छता ही ईश्वर-परायणता है")। यदि यह स्वच्छता बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकारकी हो तभी वह ईश्वरका रूप कही जा सकती है।

पहली जनवरीसे यहाँ नामपटल लगना चाहिए—मराठी, देवनागरी, उर्दू और अंग्रेजी लिपियोंमें। मनमें इसका बिलकुल ठीक रूप तो नहीं गढ़ा है, लेकिन यह कुछ इस प्रकार होगा: "गरीबोंके लिए नैसर्गिक उपचार यहाँ होता है।" "हेल्थो-टोरियम" नाम हटा देना चाहिए। कोई भी नाम रखने की जरूरत नहीं। गरीब संस्थाको यह शोभा नहीं देता। सच तो यह है कि किसीको शोभा नहीं देता। अंग्रेजी सभ्यतामें यह "वल्गर" कहा जायेगा।

विदेशोंकी बनी-बनाई चीजें—चाहे उनपर पेटेन्ट लिखा हो या नहीं—हमें इस्तेमाल नहीं करनी चाहिए। उदाहरणार्थ, ईसबगोलकी अंग्रेजी बोतल, रॉबिन्सन बार्ले, या क्वेकर ओट्स, सेनेटोजन, हॉर्लिक्स, मॉल्टेड मिल्क अथवा मर्क्स ग्लुकोज गरीबोंके लिए नहीं चल सकता। यहाँसे यह सिखाया नहीं जा सकता, भले ही यहाँ मैं होऊँ या सरदार अथवा कोई राजा। हमें सेनेटोजन यहीं बनाना चाहिए, हॉर्लिक्स और माल्टेड मिल्कसे मिलती-जुलती चीज यहीं बननी चाहिए, ग्लुकोज-जैसी चीज भी यहीं मिलनी चाहिए।

अभी रसोईघर जिस तरह चलता है उस तरह नहीं चल सकता। अभी तो तुम्हारे पास राजाको जिमाने की शक्ति है। कलसे इस शक्तिका त्याग कर देना चाहिए। जिस उदारतासे यहाँ फलों आदिका इस्तेमाल होता है वह मुझे बहुत चुभता है। इसमें परिवर्तन करना ही उचित है। क्या गुड़ और नीबूसे हमारा काम नहीं चल सकता?

तुम्हें लिखने की आदत डालनी चाहिए। तुम्हारी गुजराती भले ही बेढंगी हो, लेकिन उसे अच्छी भाषामें प्रस्तुत [करने का प्रबन्ध] किया जा सकता है, क्योंकि यहाँसे समय-समयपर छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ तो प्रकाशित होनी ही चाहिए। यह सब करने के लिए तुम्हें बहुत ध्यान देना पड़ेगा। महीनेमें चार-पाँच हजार रुपये कमाते हुए तुम यह कैसे कर सकोगे, यह मुझे नहीं मालूम। यदि यह काम न कर सके तो याद रखना कि विश्वविद्यालयकी बात स्वप्न ही रह जायेगी। मुझमें काम करने की अथाह शक्ति है, विचार करने की भी शक्ति है, लेकिन मेरे पास जादुई छड़ी नहीं है कि उसे फेरकर विश्वविद्यालयकी सृष्टि कर दूँ और फिर इसके लिए जो ज्ञान चाहिए वह ज्ञान भी मेरे पास नहीं है। इसलिए मैं अपंग हूँ। अगर अपंग न होता तो खुद ही अपना नैसर्गिक उपचारगृह खोलकर बैठ जाता और वहीं

से अपना सारा काम करता। लेकिन यह तो ईश्वरने मुझे दिया नहीं, हालांकि मनमें उत्साह था और आज भी है और इसीलिए तुमसे जुड़ा हुआ हूँ। लेकिन तुम ठहरे बादशाह। अपने ज्ञानको तुमने बढ़ने नहीं दिया है। यही तुम्हारे मार्ग की बड़ी बाधा है। इसको पार कर पाओगे तभी तुम्हारा स्वप्न साकार होगा। और अगर तुम्हारा मन कहे कि ऐसा नहीं हो सकता तो अभीसे मुझे त्याग दो। उस हालत में मुझे दुःख नहीं होगा। सरदार तो मेरे लिए ही चिन्तामें पड़ा हुआ है कि यह काम मैं कैसे कर सकूंगा। उसकी चिन्ता निरर्थक है, क्योंकि इसके सम्बन्धमें किसी किस्मका आग्रह नहीं है, बल्कि यह सब ईश्वर करवा रहा है। उसे बन्द कराना होगा तो बन्द भी करा देगा। लेकिन तुम मुझपर भरोसा रखते जान पड़ते हो, इसलिए मुझे अपनी अपंगताके बारेमें तुम्हें सचेत कर ही देना चाहिए। तुममें जो कमी और दोष देखता हूँ वे भी तुम्हें ठीक-ठीक बता ही देने चाहिए। कुछ और सूझेगा तब आगे लिखूंगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

११८. पत्र : बख्शी टेकचन्दको

१४ नवम्बर, १९४५

भाई बक्षि टेकचद,

भाई जवाहरलाल पंडित एक दिन यहां रह गये तब उन्होंने कहा कि जालियनवाला बागके बारेमें आप ट्रस्ट डीड बनाने को तैयार है और देखभालके लिए भी ट्रस्ट डीड बनाने का काम ४२ के पहले भूलाभाईको दिया था। लेकिन कुछ-न-कुछ विघ्न आते रहे। लड़ाई छिड़ गई और ट्रस्टका काम वैसे ही रहा। आप भूलाभाईसे मश्वरा करे और ट्रस्ट डीडका काम पूरा करें[1] तो मुझको तो बहुत अच्छा लगेगा।

भाई मुकरजी जो जालियनवाला बागके सक्रेटरी वर्षोंसे है वे आपको मिलेंगे। उनको पहुंचने [में] कुछ दिन लगेंगे।

आप फिर जाहिर काममें आ गये हैं वह मुझको अच्छा लगता है।

आपका,

मो० क० गांधी

सर बक्षि टेकचंद
लाहौर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

1. देखिए पृ० ७८।

११९. पत्र : धर्मदेव शास्त्रीको

१४ नवम्बर, १९४५

भाई धर्मदेव शास्त्री,

आपका पत्र मिला। बापाने भी आपके बारेमें लिखा है। मैंने आपसे बापाके बारेमें कुछ कहा था क्या कि बापासे मैं मदद दिलवाऊंगा? मुझे कुछ ख्याल नहीं है। मेरी स्मरणशक्ति निकम्मी हो गई है। मैं जो-कुछ कहूं और वह कामकी बात है तो मेरे पाससे लिखवा लेना चाहिये।[1] बापा और लिखते हैं कि शर्दीके कारण वहांसे इस्पताल भी कोई अन्य जगह ले जाना पड़े या सब काम भी बन्द करना पड़े। ऐसी हालतमें काम करना कुछ अच्छा है क्या? अगर वहीं से काम करने वाले और कामको जारी रखने वाले न मिल सकें तो क्या किया जाय? सब कठीन बात लगती है। सब चीज मुझे संक्षेपमें लिखो।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२०. तार : अब्दुल गफ्फार खाँको

पूना
१५ नवम्बर, १९४५

बादशाह खान
चरसड्डा

क्या आपको वह पत्र मिला जिसमें बताया गया था कि लेडी डॉक्टर तैयार है? अगर अभी उसकी जरूरत हो तो तार भेजें।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ४२।

१२१. पत्र : मंगलदास पकवासाको

१५ नवम्बर, १९४५

भाई मंगलदास,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं देखता हूँ कि तुम बड़ी तेजीसे काम कर रहे हो। और यह मुझे अच्छा लगता है। मैं तो यहींसे जो बन पड़े सो कर रहा हूँ।

मैं तुम्हारी और मोतीलालकी राय पढ़ गया। मैं उससे सहमत हूँ। किन्तु लगता है, एक बातपर तुम दोनोंने ही बिलकुल विचार नहीं किया। शब्द तो ये हैं कि "[खादी] खरीदने लायक हो तो उसे बेचने से इनकार नहीं करना चाहिए।" अब प्रश्न यह है कि किस खादीको "खरीदने लायक" मानना चाहिए। अर्थात् जिस खादीका उत्पादन मेरी शर्तोंके अनुसार हुआ हो उसे ही "खरीदने लायक" माना जायेगा न? मैं ऐसा क्यों नहीं कह सकता कि अपनी खादी मैं उसीको दूँगा जो अधिकतम पैसा देगा? इससे और भी सवाल उठते हैं, किन्तु मैं उनकी चर्चा करना नहीं चाहता। अभी वे अप्रासंगिक भी हैं। मुझे जो दोष दिखाई देता है उसकी ओर इंगित करना अप्रासंगिक नहीं है और इस दोषके कारण मैं तुम्हारी रायको प्रकाशित नहीं कर सकता, इसलिए यह लिखना पड़ा है। इसलिए यदि ये सुधार किये जा सकें (सो भी यथार्थ रीतिसे) तो निश्चय ही मैं ये सुधार करवाने का इच्छुक हूँ, ताकि इसे प्रकाशित कर सकूँ। किन्तु यदि मेरे सोचने के ढंगमें ही दोष हो तो फिलहाल मुझे इसे आगे नहीं बढ़ाना चाहिए।

मैं १९ तारीखको सुबहकी गाड़ीसे वहाँ पहुँचने की आशा करता हूँ। सरदार आदि हम सब लोग होंगे। २० तारीखकी शामको मैं वर्धा रवाना हो जाऊँगा।

अब मुन्शीके बारेमें। 'क्रॉनिकल' में प्रकाशित जो लेख[1] तुमने दिखाया था वह मुझे खटका था। वह लेख मुझे दुर्भावनापूर्ण लगा था। मुन्शी अपने काम से यहाँ आये थे। मैंने इस बारेमें उनसे पूछा। उन्होंने उस लेखकी अनेक भूलें मुझे बताईं, लेकिन उसमें अन्य अनेक दोष भी थे। जवाहरलालका सन्देश[2] वहाँ पहुँचा हो तो भी मुन्शीको वह नहीं मिला। बादमें जवाहरलालके आने पर जब मैंने उससे पूछा तो उसने कहा कि ऐसा कोई सन्देश भेजने का खयाल भी

१. देखिए पृ० ९-१०।

२. हिन्दी साहित्य सम्मेलनके लिए

उसे नहीं है। सम्भवतः उसने किसीसे सन्देश भेजने को कह दिया हो, किन्तु उस सन्देशकी कोई कीमत नहीं थी। इससे सार यह निकलता है कि समाचारपत्रों में सचाई बहुत कम होती है और गप्पें ही भरी होती हैं। यदि कोई व्यक्ति उन पर विश्वास करके तदनुसार व्यवहार करता है तो उसे हारना पड़ता है। मैं तुम्हें हारा हुआ नहीं देखना चाहता।

बापूके आशीर्वाद

मंगलदास पकवासा
२९, डूंगरसी रोड
मलाबार हिल
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२२. एक पत्र

१५ नवम्बर, १९४५

भाई,

मैं तुम्हारा पत्र ध्यानपूर्वक पढ़ गया। यह मुझे अच्छा लगा है, क्योंकि तुमने प्रयासपूर्वक अपना मन साफ किया है। मैं इस निर्णयपर पहुँचा हूँ कि ऐसी स्थिति में मेरी गैरहाजरीमें तुम्हें काम शुरू नहीं करना चाहिए। और जब तुमने हजार रुपयेका माल मँगा लिया है तो उसे निकाल देने के बाद मरहमके कामसे अपना हाथ खींच लो। फिर जब मैं उस तरफ आऊँ और उस समय यदि तुम तैयार होगे तो मैं अपनी देख-रेखमें काम शुरू करा दूंगा। [लेकिन] यदि उस समय तुम इसके लिए तैयार नहीं होगे तो उसके लिए मैं तुम्हें दोषी नहीं मानूंगा।

बापूकी दुआ

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२३. पत्र : मदनमोहन मालवीयको

१५ नवम्बर, १९४५

भाई साहब,

मुकरजी आपके पास यहा मैंने जो किया है उसका ब्यान सुनायेंगे। जो हुआ है सो लिखा है। अगर फुरसद है और इतनी स्वस्थता भी तब ही सुने, अन्यथा चेक[1] में दस्तखत देकर ही उनको रवाना करें।

आपको लिखना तो क्या हो सकता है। घ्यानमें तो आप हमेशा रहते ही हैं।

आपका कनिष्ट बन्धु,

मो० क० गांधी

पं० मालवीयजी
बनारस युनिवर्सिटी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२४. पत्र : अम्मु स्वामीनाथनको

१५ नवम्बर, १९४५

प्रिय भगिनी,

आपका खत मिला। मैं इलेक्शनमें न कुछ रस लेता हूं न कुछ भाग लेता हूं। इसलिये मुझको इसमें से बिलकुल मुक्त रखो।

मुझको राष्ट्रभाषामें लिखो या मातृभाषा — तामिल[2] में लिखो। अंग्रेजी अंग्रेजों के लिये रखो। इतना आरंभिक काम तो करो।

बापुके आ[शीर्वाद]

श्री अम्मु स्वामीनाथ[न]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. जलियाँवाला बाग ट्रस्ट-बोर्डके लिए
२. अम्मु स्वामीनाथनकी मातृभाषा मलयालम थी; उनके पतिकी तमिल थी।

१२५. पत्र : वासुदेव दास्तानेको

१५ नवम्बर, १९४५

भाई दास्ताने,

विचारी अक्का[1] या वत्सला[2] क्या कह सकती है? सब लड़कियां अच्छी हैं। तुमको कमसे-कम कष्ट देना चाहती हैं। किसीका उपकार भी कमसे-कम लेना चाहती हैं। लेकिन जानते हुए भी जो आधार तुमपर रखती हैं वह तो मैं ही देख सकता हूं ना? इसमें मैं दोष किसीका नहीं पाता। हमारी परिस्थिति ही ऐसी है कि उसमें से हम सर्वदा नहीं निकल पाते। इसलिये मैं कहता हूं तुम्हारे गृहस्थाश्रम चलाना चाहिए और उसे जितना शुद्ध करोगे और रहोगे इतनी ही तुम्हारी सच्ची देश-सेवा होगी। आज हम सब नशेमें पड़े हैं। नशा कुछ शराब, गांजा, अफीमका ही थोड़ा हो सकता है? अभिमानका नशा, स्वराज्यका नशा बाजदफा शराबके नशेसे भी खराब होता है, ऐसा मैंने पाया है। स्वधर्म जानना, उसीमें रत रहना वही अपने लिए श्रेष्ठ धर्म है। इसलिए मैं यह भी कह दूं कि मैं तुम्हारे साथ विचारोंकी ही आप ले[3] कर सकता हूं। लेकिन तुम्हारा विचार मैं नहीं कर सकता। मेरे विचारोंमें से जितना हजम हो सकता है उतना ही करो और आगे बढ़ो।

मैं तो चाहता ही हूं कि व० क०[4] के साथ आप लोगोंको बात करनी ही चाहिये। मैं बहुत आगे नही बढ़ सकता हूं। मेरी हैसियत तो 'टिनेंट ऐट विल'[5] जैसी है। फरक बहुत है। मैं अपने-आप ऐसा बना हूं और बेचारा क्षणभंगुर भाडुत[6] शाश्वत बनना चाहता है। भर्तृहरिमें एक श्लोक देखने में आया। विषयी और विषय-रहितमें हकिकत तो एक ही है। विषय-रहित अपने-आप विषयको छोड़कर आनंदित रहता है और विषयीको भी बार-बार विषयको छोड़ना ही

१ और २. वासुदेव दास्तानेकी पुत्रियाँ

३. आदान-प्रदान

४. वर्किंग कमेटी

५. गांधीजी ने इन अंग्रेजी शब्दोंको रोमन लिपिमें लिखा है। अर्थ है "मालिककी इच्छा पर किरायेदार"।

६. किरायेदार

पड़ता है और वह दुखित होता है। इसमें काफी ज्ञान भर्तृहरिने दे दिया है। वह अमृत हम सब पीयें और सुखी बनें।

. चुनावके बारेमें मैंने अपने कुछ विचार कृपलानीजी को भेज दिये हैं। मैं इस बारेमें शंकररावजी के साथ बात कर रहा हूं। अब मेरा घूमने का समय आ रहा है और मैं उनके साथ घूमूंगा और कुछ बात भी सुनाऊंगा।

बापूके आ[शीर्वाद]

श्री वासुदेव दास्ताने
वकील साहब
भुसावल

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१२६. भाषण : खड़कवासलामें[1]

१५ नवम्बर, १९४५

एक संक्षिप्त भाषणमें गांधीजी ने कहा कि मेरे पास कहने को नया कुछ नहीं है। मैं बूढ़ा हो चला हूँ और मैंने मौन रहकर अपनी शक्तिको संचित करने का निश्चय किया है। उन्होंने स्वास्थ्य-केन्द्रके जरिये गाँववालोंकी सेवा करने और शिशु-पालनकी जानकारीका प्रचार करने के प्रयत्नकी सराहना की। उन्होंने कहा कि भारतके सात लाख गाँवोंमें ऐसे कार्यके लिए बहुत गुंजाइश है।[2] गांधीजी ने [आगे] कहा :

कुछ एक स्त्रियोंको निरापद प्रसवकी सुविधाएँ प्रदान करना कोई बहुत सन्तोषकी बात नहीं है। आप आसपासके लोगोंको प्रसूति-विज्ञानके सम्बन्धमें जो शिक्षा दे सकेंगे, उसीसे आपकी सफलताका अन्दाज लगाया जायेगा।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दुस्तान टाइम्स, १६-११-१९४५, और महात्मा, जिल्द ७, पृ० १९

१. गांधीजी वल्लभभाई पटेल और शंकरराव देवके साथ सिंहगढ़ किलेके नीचे बसे एक गाँवको देखने और वहाँ गाँववालों द्वारा तैयार की गई सड़कका उद्घाटन करने के लिए गये थे। वे लोग पूना रोटरी क्लब द्वारा संचालित स्वास्थ्य और प्रसूति विभाग भी देखने गये।

२. इसके बादका अंश महात्मा से लिया गया है।

१२७. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

पूना
१६ नवम्बर, १९४५

चि० कान्ति,

तेरा पत्र मिला। अपनी मुश्किलोंका वर्णन तूने ठीक किया है। तुझे अनुभव भी खूब मिल रहा है। इन अनुभवोंसे तू मिठास पैदा करना ही सीखना। कुछ लोगोंको कड़वे अनुभव होते हैं, इसलिए वे कटु बन जाते हैं, असफलताका अनुभव मिलने से निराश हो जाते हैं। यदि तू भी ऐसा करेगा तो तेरी 'गीता' की शिक्षा व्यर्थ मानी जायेगी। हमें ब्राह्मण-अब्राह्मण, हिन्दू-मुसलमान और प्रान्त-भेदमें से अपना रास्ता बनाकर अपने कामको आगे बढ़ाना है।

शान्ति[1] ठीक हो गया होगा।

बाल[2] इंजीनियरिंगमें सबसे बड़ी डिग्री प्राप्त करके डॉक्टर बनकर आ गया है। वह यहाँ चार-पाँच दिन रहा। वह काका साहबके साथ काशी गया है। उसने आश्रम से जो-कुछ पाया था, वह सब भूल गया हो, ऐसा नहीं जान पड़ता। बोलचालमें सादगी तो है ही। यहाँ उसने प्रार्थनामें पूरा भाग लिया। रसपूर्वक भजन गाकर सुनाये।

विशेष समय मिलने पर।

सुरू[3] आनन्दपूर्वक होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३७९) से। सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

१२८. पत्र : लीलावती आसरको

१६ नवम्बर, १९४५

चि० लीलावती,

तेरा पोस्टकार्ड मिला। मेरी लिखावट [में पत्र] पाने का लोभ तुझे छोड़ देना चाहिए। यह मैं प्रार्थनाके उपरान्त दीया-बत्तीके समय लेटे-लेटे लिखवा रहा हूँ। कभी-कभी तो दो पंक्तियोंसे ही काम निकाल लेना पड़ता है, और कभी जरा विस्तारसे लिखना पड़ता है। कब मुझे स्वयं लिखना चाहिए, कब और किससे लिखवाना चाहिए, यह सब तू मुझपर ही छोड़ दे।

१. कान्तिलाल गांधीका पुत्र
२. बाळ कालेलकर
३. कान्तिलाल गांधीकी पत्नी सरस्वती

तूने व्यायाम करना शुरू कर दिया है[1] तो अब उसे छोड़ना मत। तू १०८ नमस्कार तक जा सकती है। सूर्य नमस्कार करते समय बहुत-से आसन भी किये जा सकते हैं। अतः तेरे लिए कौन-से आसन अनुकूल होंगे, यह मुख्यतः स्वयं तुझे पता लगा लेना चाहिए। इसपर भी विचार कर लेना कि १०८ नमस्कार तक किये जा सकते हैं या नहीं। भूखे रहकर वजन घटाने में कोई लाभ नहीं। यदि रोग के कारण शरीर बढ़ गया हो तो उसे घटाना पड़ता है, किन्तु वह भी भूखको मारकर नहीं करना चाहिए। नियमित रूपसे व्यायाम करने और युक्ताहारके बावजूद वजन बढ़े तो बढ़ने देना चाहिए; उसकी तनिक भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

तूने 'स्टण्ट' शब्दका प्रयोग गलत स्थानपर किया है। स्टण्टका गुजराती में 'धतिंग' अनुवाद किया जा सकता है। खुराकमें रद्दोबदल या वजन घटाने के लिए किये जाने वाले उपायके लिए स्टण्ट शब्दका प्रयोग कदापि नहीं किया जा सकता। जो लोग अपने पढ़े हुएको आत्मसात करने वाले हैं अर्थात् परीक्षामें उत्तीर्ण होने या न होने का विचार तक किये बिना केवल ज्ञान-संवर्धनके लिए पढ़ते हैं, वे अपना यह काम करते हुए अपने शरीरको अधिकसे-अधिक बनाते हैं; क्योंकि शरीरको नीरोग, बलवान और कान्तिमान बनाये रखना भी ज्ञानका अंग है। मैं तेरे इस अध्ययनमें तुझे पूरी तरहसे प्रोत्साहन देता हूँ। वह अध्ययन उपाधि पाने के लिए नहीं, बल्कि उसके बहाने ज्ञान प्राप्त करने के लिए है। ग्रे[2] को तू एक बार पहले ही पढ़ चुकी है, इसलिए उसे दूसरी बार पढ़ना तो तेरे लिए हँसी-खेल होना चाहिए। जितनी बार तू उसे पढ़ेगी उतना ही अधिक ज्ञान प्राप्त करेगी।

अच्छा होगा कि तू घूमते-घूमते पढ़ना छोड़ दे। घूमते-घूमते पढ़ने से आँखें खराब हो जाती हैं और कभी विचार भी खो जाते हैं। घूमते-घूमते पढ़े हुए पर विचार किया जा सकता है, उसे आत्मसात किया जा सकता है या फिर दिनमें किये गये काम आदिके बारेमें विचार किया जा सकता है। किन्तु आँखोंका काम तो आसपासका दृश्य और यह देखना होता है कि हमारे रास्तेमें कोई अड़चन है या नहीं। कोई आँख मीचकर नहीं चल सकता, किन्तु मेरे जैसे जो व्यक्ति किसी का सहारा लेकर चलते हैं वे तो आँख मीचकर चलने में निहित लाभ लूटते हैं। किन्तु यह तेरे लिए नहीं है।

लक्ष्मीदासके विवाहमें उपस्थित न होने का तूने जो इरादा किया है उस पर जमी रहना।

पत्रमें दो स्थानोंपर मेरे हस्ताक्षर हैं, जो बताते हैं कि मेरी स्मरण-शक्ति खराब है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ४७।

२. हेनरी ग्रे की **एनॉटमी ऑफ ह्यूमैन बॉडी**

१२९. पत्र : अतुलानन्द चक्रवर्तीको

पूना
१६ नवम्बर, १९४५

भाई अतुलानन्द,

आपका कार्ड मिला है। मैंने जो इतिहासको जानने वाले सज्जन हैं और हिन्दु-मुस्लिम प्रश्नको जिन्होंने गौरसे पढ़ लिया है उनको देखने के लिए भेजा है। उनके उत्तरकी इन्तेजारीमें हूं। एक बड़े कांग्रेसमेनने मुझसे कहा, "कांग्रेसके तरफसे आज ऐसी कोई चीज लिखेंगे, उसका परिणाम अच्छा नही आवेगा, क्योंकि वायुमंडल ही ऐसा है कि एक-दूसरोंने सही बात तटस्थ रूपसे सुनने के लिये अपने कान बंद कर लिये हैं। ऐसी हालतमें जो-कुछ भी किया जाय उसका अनर्थ होने वाला है।" इस कारण मेरा उत्साह नहीं है कि उसे छपवाना। मैं खुद चलते हुए वायुमंडलको समझते हुए ऐसा कुछ विचार रखता हूं और इसी कारण और आपके परिश्रमका मैं सहसा अन्याय न करूं इसलिये इतिहासज्ञ व्यक्तिको देखने के लिये भेज दिया है। हां, इतना तो मैं देख सकता हूं कि जितनी शीघ्रतासे आप इसका प्रकाशन चाहते हैं उतनी शीघ्रतासे होना असंभव है। देखें, अभी नतीजा क्या आता है, आखरमें मैं क्या निर्णय करता हूं।

अब तो बंगाल आने में मुझे बहुत विलंब नहीं होगा। पहली डिसेंबरको पहूंचने की आशा रखता हूं, उस वक्त मिलोगे। इतना तो कह दूं कि आखरी फैसला अंग्रेजी लिखे-पढ़े लोगोंको नही करना है, लेकिन जो लोग अपनी मातृभाषाको जानते हैं या राष्ट्रभाषाको ऐसे करोडोंके हाथोंमें फैसला है। इसलिये आप असल वस्तु मातृभाषामें लिखें—बंगलामें। और अन्य प्रान्तोंके लिये राष्ट्रभाषा, हिन्दुस्तानी दोनों लिपिमें। अगर मैं ठीक कह रहा हूं तो राष्ट्रभाषाको दोनों लिपिमें पढ़ना-लिखना शरू कर दो। रवीबाबूके लेख और गीतका कोई असर बंगालीपर होने वाला था अगर वे अंग्रेजीमें लिखते ?

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १४८६) से। सौजन्य : ए० के० सेन

१३०. पत्र : कृष्णचन्द्रको

पूना
१६ नवम्बर, १९४५

चि० कृ० च०,

हम 'गीताई'[1] हजम कर लें। सब मधुर एक सूरमें अर्थ समजकर गीताई गा सके उसके बाद ही 'ओज़बिला'[2] इ० का विचार कर सकें। ऐसा करे तो, जंद [अवेस्ता] का भी ऐसा ही करना होगा। [एक काम सफल करके दूसरेमें पड़ना ठीक होगा।

सब जगहपर प्रार्थनाका एक समय रखना ठीक लगता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५३६) से

१३१. पत्र : लीला जोगको

१६ नवम्बर, १९४५

प्रिय भगिनी,

आपने ३७५ रुपयेके चेककी पहोंच भेज दी इसलिये धन्यवाद।

आपको राष्ट्रभाषाका थोड़ा भी ज्ञान नहीं है क्या? अगर वह नही है तो मातृभाषाका तो होगा ही। देहाती औरतोंकी सेवा करने के लिए जो बहनें तैयार होती हैं वह अंग्रेजी[की] मार्फत तो अपना काम शायद ही कर सकें और मैं तो देहाती हूं, उसको अंग्रेजीमें क्यों?

आपका,
मो० क० गांधी

श्री लीला जोग
३०, शिवाजी पार्क
दादर
बम्बई–२८

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. भगवद्गीता का विनोबा भावे द्वारा किया हुआ मराठी अनुवाद
२. दैनिक प्रार्थनामें शामिल कुरानकी एक आयत

१३२. पत्र : एन० व्यासतीर्थको

१६ नवम्बर, १९४५

भाई व्यासतीर्थ,

तुम्हारा खत मिला। तुम जानते होंगे कि सामान्य शादीयोंमें मुझको रस नही रहा है। रस तो है हरिजनके साथ इतर जनकी शादी होने में। क्योंकि अगर वर्णाश्रममें जो धर्म पड़ा है उसका पालन करना चाहते हैं तो हम सब एक ही जाति हों और वह हरिजनकी। और हम सब सचमुच हरिजन बने हैं यह कैसे सिद्ध किया जाय? और "भंगी" और "ब्राह्मण" का विवाह स्वच्छंदके कारण नही लेकिन धर्मपालनके कारण सामान्यतः न करे तो? फिर भी तुम्हारा विवाह अगर सेवाभावसे ही होगा और दोनों संयमी जीवन व्यतीत करेंगे तो मेरे आशीर्वाद है ही।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१३३. पत्र : अवन्तिकाबाई गोखलेको

१७ नवम्बर, १९४५

प्रिय बहन,

तुम्हारा प्रेम मैं पग-पगपर देख सकता हूँ, किन्तु इस प्रेममें तुम्हें विवेक तो रखना ही चाहिए। कल मुझे जो देखना था वह मैं देख नहीं सका और जो करना था सो कर नहीं सका। मैंने सिर्फ तमाशा[1] देखा। तमाशोंसे मैं घबराता हूँ और इनमें रुचि लेने की मेरी उम्र भी गुजर चुकी है। मुझे देखने थे सेनेटोरियमके सभी घर, पाखाने, और उनके बारेमें सुझाव भी देना था। डॉक्टरोंसे बातचीत और बीमारोंके साथ विनोद करना था। कहा जा सकता है कि इनमें से कुछ भी नही हुआ। नरगिसबहनको मैं विशेष रूपसे साथ लाया था। वह भी कुछ नहीं देख सकी। तमाशेमें तो उसे मैं कभी ले ही नही जाता। तुम्हारे प्रेमके वशीभूत होकर कल मैं अत्यधिक काममें से तीन घण्टे निकाल

१. महाराष्ट्रका पारम्परिक संगीतमय लोक-नाट्य.

पाया था। आजकल मेरे लिए तीन घण्टे बचा लेना कोई ऐसी-वैसी बात नही है। वे मेरे नहीं, बल्कि जनताके हैं। और तुम्हारे हाथो तो मेरा एक मिनट भी व्यर्थ नही जाना चाहिए। अब इतना करना। वहाँ जो झोंपड़ियाँ बनी हुई हैं उनमें से प्रत्येकपर कितना खर्च आया और इसमें से सेप्टिक टैंकपर कितना खर्च हुआ, यह जानकारी तथा एक झोंपड़ी और सेप्टिक टैंकका नक्शा यदि तुम्हें मिल सके तो वह भी मुझे चाहिए। सेप्टिक टैंक अच्छा ही माना जायेगा। वहाँ आसपास बेकार घास थी और टैंकसे निकलने वाला खादयुक्त कीमती पानी मुझे निरर्थक बहता जान पड़ा। यदि इनमें सहज ही सुधार किया जा सके तो अच्छा। काँच फैक्टरीमें क्या-क्या चीजें बनती हैं?

बापूके आशीर्वाद

अवन्तिकाबाई गोखले
तलेगाँव

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१३४. पत्र : हरभाई त्रिवेदीको

१७ नवम्बर, १९४५

भाई हरभाई,

आजकल तुम क्या कर रहे हो? मुझे तो इस बातका तनिक भी भान नही है कि तुम्हारी मानसिक स्थिति कैसी है, किन्तु चि० चन्दू जाग गई है। उसने भी बहुत दिनों बाद पत्र लिखा है और सो भी तुम्हारे ही बारे में। मैं उस पत्रकी नकल तुम्हें भेज रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम इस पत्रका जवाब मुझे लिख भेजो।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१३५. पत्र : सुमित्रा गांधीको

१७ नवम्बर, १९४५

चि० सुमी,

तेरा पत्र मिला। अक्षरोंकी छटा जितनी कम होगी वे उतने ही अधिक कलात्मक होंगे। मैं दिन-प्रतिदिन यह अनुभव करता जा रहा हूँ कि लिखावटको अत्यधिक कलात्मक बनाया जा सकता है। "स्टडी"[1] किस चिड़ियाका नाम है? मै समझता हूँ कि पानीकी तंगी दूर हो गई होगी।

हम सब यहाँसे १९ तारीखको निकलेंगे और २१ को सेवाग्राम पहुँच जायेंगे।

बापूके आशीर्वाद

सुमित्रा गांधी
पिलानी

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१३६. पत्र : वैकुण्ठलाल मेहताको

१७ नवम्बर, १९४५

भाई वैकुण्ठ,

चलनके अनुसार तुम्हारे पत्रमें वही है जो होना चाहिए। मेरी सलाह यह है कि तुम भाई कुमारप्पा और सतीशबाबूको लिखो कि वे अपना विचार बतायें। इस बातका भी उल्लेख कर देना कि यह सुझाव मेरा है। उसके बाद मैं अपनी राय बनाऊँगा। अभी काफी समय है, इसलिए चिन्ताकी कोई बात नहीं। तुम मेरे सुझावपर अमल करोगे, इसलिए मेरे करने और याद रखने को बहुत थोड़ा बाकी रहेगा और मैं तत्काल अपनी सम्मति दे सकूँगा।

आशा है, तुम स्वस्थ होगे। यदि तुम २० तारीखको मिलने के लिए आना चाहो तो अवश्य आ जाओ। वैसे, मुझे इसकी जरूरत नजर नहीं आती।

बापूके आशीर्वाद

वैकुण्ठभाई ल० मेहता
पो० बॉक्स ४७२
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. अर्थात् अध्ययन; यहाँ अंग्रेजी शब्दका प्रयोग किया गया है।

१३७. पत्र : टी० एस० अविनाशलिंगम्को

१७ नवम्बर, १९४५

भाई अविनाशलिंगम्,

किसी कमेटीका सभापति कमेटीके ही कामके लिए आशीर्वाद दे तो वह अपनेको ही दिया कहा जा सकता है ना? यह कोई अच्छी बात है क्या? कमसे-कम मुझको तो ऐसी चीजोंसे बचा लेना ही चाहिये।

आपका,

मो० क० गांधी

श्री टी० एस० अविनाशलिंगम्
कस्तूरबा गांधी नेशनल मेमोरियल फण्ड कमेटी
पो० आ० श्री रामकृष्ण विद्यालयम्
कोयम्बटूर जिला

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१३८. पत्र : इनायतुल्ला खाँको

१७ नवम्बर, १९४५

अल्लामा साहेब,

आपका खत मिला और दो खाकसार अमलदार भी मिल गये। मैं बहुत राजी हुआ। मैं १९ तारीखको बम्बई पहुंचूंगा लेकिन वह तो मेरा खामोशी का दिन होगा। खामोशी शामको करीब साढ़े सात बजे खुलेगी। उस वक्त एक मिटिंग चन्द हिन्दुस्तानी सिखाने वालोंकी रखी है। २० को वर्धाकी ट्रेन पकड़ना है। फिर भी आप तीन बजे आयेंगे ऐसा मैंने खाकसार अमलदारोंसे कह दिया है। और उस वक्त आपकी इन्तेजार करूंगा। इसमें कोई तबदीली करनी है तो बिर्ला हाऊसमें आप मुझे खबर भेज दें।

आपका,

मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१३९. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

पूना
१८ नवम्बर, १९४५

प्रिय सी० आर०,

तुम्हारा प्यारा-सा पत्र मिला। सुब्बारायनने मुझसे चन्द मिनट बातचीत की। वे तुम्हारे बारेमें चिन्तित हैं। किसी भी लोकतान्त्रिक संगठनमें, खासकर ऐसे संगठनमें जिसने हिंसाका परिहार कर दिया हो, ऐसी बातें तो होती ही रहेंगी। लेकिन उनका अन्त ठीक होना चाहिए। किसीके वहाँ जाने से कोई मदद नही मिलने वाली है। "अनुभवसे ही सीखा जाता है।" बहुत सारी गलत चीजें हो रही हैं। लेकिन मैं चिन्ता नहीं करता और आस्थापूर्वक अपना काम करता चला जाता हूँ।

हम कल सवेरे रवाना हो रहे हैं। मैं २७ तारीखको वम्बईसे रवाना होऊँगा, और ३० नवम्बरको सेवाग्रामसे चलूँगा।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २११३) से

१४०. पत्र : जीवणजी डा० देसाईको

पूना
१८ नवम्बर, १९४५

चि० जीवणजी,

इसके साथके पत्रको पढ़कर अपनी राय लिख भेजना कि इसके बारेमें क्या किया जाना चाहिए। यह रकम अनुवादकी जो बिक्री हुई है उसकी रॉयल्टीके रूपमें भेजी गई है। लेकिन चूँकि हम इस रकमके अधिकारी नही हैं, इसलिए मुझे इसे 'नवजीवन' कार्यालयके खातेमें डालने के बजाय मेरे हाथमें पड़े अन्य कार्योंमें लगाने की इच्छा होती है। फिर यह इच्छा भी होती है कि यह रकम तुम्हींको भेज दूं, इसलिए चैक साथ ही भेज रहा हूँ। अब यदि स्वतन्त्र रूपसे सोचने पर तुम्हें ऐसा लगे कि पैसा 'नवजीवन' कार्यालयमें नहीं जाने देना चाहिए तभी मुझे भेजना। अभी तो अलग-अलग खातोंमें जो पैसा आता है उसीका उपयोग कर रहा हूँ। उनमें मुझे इस पैसेकी विशेष जरूरत नही दिखाई देती। अतः हम दोनों तटस्थ होकर विचार कर सकते हैं।

मैंने रचनात्मक कार्यक्रम सम्बन्धी पुस्तिका बहुत कठिनाईसे सुधारकर कल तुम्हें भेजी है। और भूलसे वह रजिस्ट्रीके विना ही भेज दी गई।

इसलिए जब तक तुम्हारी ओरसे इसकी प्राप्तिकी सूचना नहीं मिलती तब तक मुझे चिन्ता बनी रहेगी, क्योंकि मेरे पास उसकी नकल नहीं है। लेकिन मैं न्यूटनके इस प्रकरणसे सन्तोष प्राप्त कर धीरज रख रहा हूँ कि किसीने वर्षोंकी मेहनतसे लिखी उसकी चोजको जला डाला तो उसे थोड़ा-सा दुःख तो हुआ, किन्तु वह नये सिरेसे लिखने बैठ गया। मैं आशा करता हूँ कि वह खोयेगी नहीं और यदि खो गई तो दूसरी प्रतिमें सुधार कर दूँगा। इसमें थोड़ा समय तो जरूर लगेगा। इसलिए यदि वह सही-सलामत तुम्हें मिल जाये तो तुम तार पर पैसा खर्च कर देना और यदि नहीं मिले तो अपने सुझाव सहित एक प्रति और भेज देना, ताकि मैं उसपर काम करने में जुट जाऊँ।

संलग्न :

एक चैक और एक पत्र

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९५८) से। सी० डब्ल्यू० ६९३२ से भी; सौजन्य जीवणजी डा० देसाई

१४१. पत्र : माधवदास कापड़ियाको

पूना
१८ नवम्बर, १९४५

चि० माधवदास,

तुम्हारा पूरा पत्र पढ़ गया हूँ। समझा भी हूँ। उसके विवेचनमें पड़ने की क्या कोई जरूरत है? "जैसी करनी वैसी भरनी", यह निरपवाद नियम है। इसे बदलने की सामर्थ्य किसीमें नहीं है। फिर तो हमें खुद अपने बारेमें विचार करना रह जाता है। "देहीके सभी स्नेही स्वार्थ-प्रेरित होते हैं।" भाई कुँवरजीके रूपमें तुम्हें सच्चे स्नेही मिल गये हैं।[1] इस कल्पतरुकी छायामें तुम्हें फूलना-फलना और जैसा मुझे लिखा है वैसा करना है। फिर तो मुझे पूर्ण आनन्द ही रहेगा।

१९ तारीखकी दोपहर बम्बई पहुँचूँगा। पूरा दिन मौन रहेगा। दो बजे तक तो मैं देहकी सेवामें लगा रहूँगा। उसके बाद किसी भी समय यदि तुम, कुँवरजी अथवा अन्य भाई-बहन मेरे पास आना चाहो तो आ सकते हो और २-३ मिनट में कुछ कहना हो तो कह सकते हो। अन्यथा तुम्हें या किसी व्यक्तिको आने का कष्ट उठाने की जरूरत नहीं। मेरे आने को तो न आना ही समझना।

बापूके आशीर्वाद

श्री माधवदास
मार्फत श्री कुँवरजी मेहता
गंगा सदन, मरवा रोड, मलाड

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७२८) से

१. देखिए पृ० ४४-४५ भी।

१४२. पत्र : जतीन्द्रदासको

पूना
१८ नवम्बर, १९४५

चि० प्राराम अथवा जतीन्द्रदास,

मैं कल ही तुम्हें लिखना चाहता था, किन्तु समय नहीं मिला, और आज तुम्हारा पत्र मिला। आज भी मैं विस्तारसे नहीं लिख सकता। तुम अच्छा काम कर रहे हो। यदि तुम इस समय आने की उतावली करोगे तो जो-कुछ किया है सब बेकार हो जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१४३. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

पूना
१८ नवम्बर, १९४५

चि० घनश्यामदास,

तुमने जो कुछ भी हो सकता था वह नासीककी जमीनके बारेमें किया है उसमें मुझे कुछ सन्देह नहीं है। दिनशा विचित्र प्रकृतिका मनुष्य है, लेकिन बहुत अच्छा, उदार और सरल स्वभावका है। नैसर्गिक उपचारकोंमें वही एक है जिसपर मेरी नजर स्थिर हुई है, और उसमें जो खूबियां हैं उसीका मैं सेवन करता रहूंगा और कर सकूंगा तो उसके मारफत मरीजोंकी सहायमें काफी मदद मिल सकेगी। इसी कारण जब मैंने देखा कि नासीक जाने की उनकी स्वतन्त्र प्रबल ईच्छा नहीं है, तब मैंने छोड़ दिया। और साथ-साथ मैंने इतना निर्णय भी कर लिया कि संस्थाका नया सत्र यहांसे ही शुरू करूं और इसको गरीबोंके लिए चलाना। आज तक धनिक ही आये हैं और उनके पीछे-पीछे गरीब। अब गरीबोंके पीछे-पीछे जो धनवान मरीज आना चाहेंगे उनको ही रखा जायेगा। धनवानोंको वही सुविधा मिलेगी जो गरीबोंके लिए होगी। लेकिन इसके साथ इतना भी निश्चय है कि स्वच्छताके नियमोंका यथा-शक्ति पालनकी चेष्टा होगी। यह काम कठिन तो है। उत्तरावस्थामें इतना रस पैदा नहीं करना चाहिये। लेकिन वर्षों तक सुषुप्तिमें जो था वह आज अनायाससे जाग्रत अवस्थामें आ

गया है। उसे मैं कैसे रोकूं? ईश्वरको कराना है वही करायेगा। जिसमें आप भी ट्रस्टी हैं उसको आज तो स्थगित किया है। यहांकी प्रवृत्तिसे उसे पैदा होना है तो पैदा होगा। जो होगा वह सब तरहसे ठीक ही होगा। अगर मुझे नासीक जाना होगा या इसीको चलाने में द्रव्यकी आवश्यकता रहेगी तो लिखूंगा। अब तो देख रहा हूं। थोड़े पैसे मेरे पास पड़े हैं, उसमें से इसे चलाऊंगा। क्योंकि अब के ट्रस्टकी शरत यह है कि व्यवस्था दिनशाके हाथमें नहीं रहेगी, उसके लिये जवाबदारी, ऐसा ही कहें कि, मेरी रहेगी।

आपने जो खत शीवनाथ सिंहजी का भेजा है वह मैं पढ़ गया।[1] मुझपर उसका अच्छा असर नहीं हुआ है। उसने लम्बा-चौड़ा बहुत लिख डाला है, फिर भी मैं उनको थोड़ा लिखता तो हूं।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०७५) से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

१४४. पत्र : वनमाला परीखको

पूना
१९ नवम्बर, १९४५

चि० वनुड़ी,

बहुत लोभ तो पापका मूल है। तू कंजूस क्यों है? अपने प्राणोंकी बलि देकर भी तू यहाँ मणिकी स्वच्छता शुरू कराना और करना। यह सब प्रेम के साथ करना। फिर समझूंगा कि जिससे तेरा विवाह होगा उसे तू सुखी बनायेगी, खुद सुखी होगी और देश-सेवा करेगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७९५) से। सी० डब्ल्यू० ३०१८ से भी; सौजन्य : वनमाला देसाई

१. इसमें नैसर्गिक उपचारकी चर्चा की गई थी। घनश्यामदास बिड़लाने सुझाव दिया था कि अगर पत्र गांधीजी को पसन्द आये तो वे लेखकको बुला सकते हैं।

१४५. पत्र : गजानन कानिटकरको

पूना
१९ नवम्बर, १९४५

भाई बालुकाका,

आपकी प्रसादी मिली है। मौन सेवन करके अनासक्त होकर काम करो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ९७६) से। सौजन्य : जी० एन० कानिटकर

१४६. पत्र : डंकन ग्रीनलीजको

सेवाग्राम जाते हुए
१९ नवम्बर, १९४५

प्रिय डंकन,

आपका पत्र मिला। मुझे पूरी उम्मीद है कि मैं मद्रास आऊँगा और हमारी मुलाकात होगी। ज्यादा लिखने के लिए वक्त नहीं है।

स्नेह।

बापू

प्रोफेसर डंकन ग्रीनलीज
भीमिलीपट्टम
आन्ध्र

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१४७. पत्र : खुर्शेद नौरोजीको

सेवाग्राम जाते हुए
१९ नवम्बर, १९४५

प्रिय बहन[1],

जो व्यक्तियोंके सम्बन्धमें गलती करते हैं वे अपने उद्देश्योंमें बहुत सफल नहीं हो सकते, क्योंकि व्यक्तियोंसे उद्देश्य कभी अलग नहीं होते। तुम यही कहना चाहती हो कि व्यक्तियोंको उन उद्देश्योंसे अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हों या करने के लिए प्रेरित किये जा सकते हों। लेकिन यह बिलकुल गलत है। सत्य-रूपी ईश्वर हमारा मार्ग-दर्शन करे।

बापू

[पुनश्चः]

मेरे पास कोई शाही सौदागार नहीं है। तुम सम्मेलनमें हो, कस्तूरबा कोष के मन्त्री[2] को सारा ब्योरा भेज दो।

श्री खुर्शेदबहन नौरोजी
८२, दरियागंज, दिल्ली

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१४८. पत्र : एन मस्कारिनको

सेवाग्राम जाते हुए
१९ नवम्बर, १९४५

प्रिय भगिनी,

आपका पत्र मिला। मेरा कहना तो यह है कि मेरी बहिनको जाहिरमें आना ही नहीं था। अब तो हुआ। मुझे तो बंगाल और मद्रास जाना है। सेवाग्राममें कब स्थिर हुंगा जानता ही नहीं हूं।

बापुके आशीर्वाद

श्री मस्कारिन
स्टेट कांग्रेस
त्रिवेन्द्रम्, त्रावणकोर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. सम्बोधन गुजरातीमें है।
२. अमृतलाल वि० ठक्कर

१४९. पत्र : एन० जी० रंगाको

सेवाग्राम जाते हुए
१९ नवम्बर, १९४५

भाई रंगा,

तुम्हारा खत मिला। दिल जो प्रेरणा करे वही करो। मैं कुछ भी कहूं अगर शंका है तो ठहरो। मैं जानता हूं कि तुम्हारा प्रथम धर्म आंध्रके किसानोंका संघ मजबूत करना है ऐसा कि जगत देखें। मेरा आना मुश्किल है।

बापुके आशीर्वाद

प्रो० रंगा
नीडुब्रोलु
आन्ध्र

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१५०. पत्र : आर० अच्युतनको

[सेवाग्राम जाते हुए
१९ नवम्बर, १९४५

भाई अच्युतन,

आपका खत मिला। लेकिन इंग्रेजीमें क्यों? राष्ट्रभाषामें क्यों नहीं? आपने जो दलीलें की सही हैं। इतना याद रखो कि जो अपनेको मदद देता है वही कुछ पाता है।

बापुके आशीर्वाद

श्री आर० अच्युतन्
कंस्ट्रक्टिव सेक्शन
डाकघर बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१५१. पत्र : खण्डुभाई देसाईको

१९ नवम्बर, १९४५

भाई खण्डुभाई,

मजूर महाजनको एक मजूर क्या सन्देश दे? मैंने किसीको अपने-आपको सन्देश दिये जाने की बात नहीं सुनी[1]।

बापूके आशीर्वाद

श्री खण्डुभाई देसाई
मजूर महाजन संघ
लाल दरवाजा
अहमदाबाद
बी० बी० ऐंड सी० आई० रेलवे

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१५२. पत्र : इनायतुल्ला खाँको

बिड़ला हाउस
१९ नवम्बर, १९४५

अलामा साहेब,

आपका खत मिला। आप चाहते हैं ऐसा तो मेरेसे बन ही नहीं सकता। ११ बजे तो मैं मालीश करवाता हूंगा। सारा दिन यों भी भरा ही है। एक मिनिटकी भी फुरसत रखी नहीं है। मुसीबतसे ३ बजेका ही हो सकता है। यह सही बात है कि मैंने जो भाई मेरे पास आ गये थे उनसे कहा था कि अगर हमारी मुलाकात खानगी ही रहनी चाहिए तो मैं किसी भी जगहमें जा सकूंगा। लेकिन जिघर मिलने की बात आप करते हैं वहां तो खानगीकी बात हो ही नही सकती। लेकिन सबसे ज्यादा दिक्कत तो आपकी शर्त है उस बारेमें ही। कांग्रेसके नामसे मैं कुछ कह नहीं सकता, बोल नहीं सकता, मेरी ही तरफसे जो कुछ मैं कहूं हो सकता है और मैंने तो मेरी राय भी मेरा ख्याल है, आपको लिख दी हैं[1] कि जो कान्स्टीट्यूशन आपने बडी मेहनतसे बनाया है वह

१. देखिए पृ० ५।

चल नहीं सकता है न वह दूसरे लोगोंको ललचाने वाला है। जैसा मैंने कहा है और जैसे मैं मानता हूं पहली बात तो सब कौमोंके बीच मुहब्बत होगी और सबको साथ बैठने की और एक चीज तय करने की दरकार हो तब ही कान्स्टीट्यूशन बनेगा। इसलिए कांग्रेस क्या करेगी वह तो एक तरफ रह जाता है। लेकिन मैं खुद भी आपके कान्स्टीट्यूशनके बारेमें आपके साथ नहीं इत्तफाक कर सकता, अगरचे जैसे मैंने कहा है उसमें खूबियां तो भरी हैं और आपने जो मेहनत उठाई है उसकी मुझे कदर है, ऐसा होते हुए मुझे लगता है कि उस वक्त भी हम मिल नहीं सकेंगे। मेरी उम्मीद तो थी और अभी भी है कि हमारे मिलने का नतीजा कुछ भी हो हम एक-दुसरेसे मिल तो लें और एक-दूसरोंकी बात समझने [की] कोशिश तो करें। आपका खत ऐसी कोई आशा मुझको नहीं दिलाता है।

आपका,

मो० क० गांधी

उर्दूकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१५३. बातचीत : हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके कार्यकर्ताओंके साथ

बम्बई

[१९ नवम्बर, १९४५][1]

यह पूछे जाने पर कि जिस व्यक्तिको उर्दू लिपि पसन्द नहीं है और जो केवल देवनागरी लिपिमें राष्ट्रभाषा सीखना चाहता है उसपर उर्दू लिपि क्यों थोपी जानी चाहिए, महात्मा गांधी ने उत्तर दिया :

यह पसन्द-नापसन्दका सवाल नहीं है। यदि आपको उर्दू लिपि अच्छी नहीं लगती तो इसका मतलब मेरी रायमें यह हुआ कि आपको हिन्दुस्तानी पसन्द नहीं है। उर्दू लिपिको सीखना ही होगा। बिना प्रयत्न और बलिदानके हम स्वाधीनता प्राप्त करने का स्वप्न नहीं देख सकते। जहाँ तक बम्बई, गुजरात और महाराष्ट्रका ताल्लुक है, नागरी लिपिको सीखने का प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि सब लोग पहलेसे ही नागरी लिपि जानते हैं। तब हिन्दुस्तानी प्रचारकी बात कहाँ आती है? अन्य लिपि सीखने में यह मत समझिए कि ऐसा करके आप किसीपर एहसान कर रहे हैं। आपको इसे अपना कर्तव्य समझना चाहिए। यह एक राष्ट्रीय कार्य है और इसे हर व्यक्तिको करना चाहिए। दोनों लिपियोंको सीखने से आप इस भाषाके हिन्दी और उर्दू दोनों रूपोंके क्रमिक विकासको ज्यादा अच्छी तरह समझ सकते हैं। मैं संस्कृतनिष्ठ हिन्दी समझ सकता हूँ, लेकिन आम जनताका क्या होगा? दोनों लिपियाँ सीखना हमारा कर्तव्य है। तभी हम ईमानदारीके

१. २५-११-१९४५ के बॉम्बे क्रॉनिकल से

साथ विनम्रतापूर्वक देशकी सेवा कर सकेंगे। मेरे विचारमें तो जिस व्यक्ति को उर्दू लिपि पसन्द नहीं है उसे स्वराज्य भी पसन्द नहीं है। आम जनता शुद्ध हिन्दी अथवा शुद्ध उर्दू नहीं समझती, इसलिए हिन्दुस्तानीका विकास इस तरह किया जाना चाहिए कि अनपढ़ आम जनता भी उसे समझ सके।

कोरे नारोंसे स्वतन्त्रता हासिल नहीं होगी। यथासम्भव कमसे-कम कष्ट उठाने और अपनी भौतिक प्रगतिकी ओर ध्यान लगाये रहने से तो आपका स्वराज्य एक स्वप्न बनकर रह जायेगा। मुझे नागरी और उर्दू, दोनों ही समान रूपसे प्यारी हैं। इसलिए जब मैं यह कहता हूँ कि आप उर्दू लिपि सीखिए तब मेरे मन में दूसरी लिपिके प्रति कोई द्वेष-भाव नहीं होता। हमारा स्वराज्य हमें उपहारके रूपमें नहीं दिया जा सकता, इसे हमें अनवरत प्रयत्नोंसे प्राप्त करना होगा।

अपने लोगोंको समझने और अपने देशके लिए स्वराज्य प्राप्त करने के लिए आप इस देशकी दो महत्वपूर्ण लिपियोंको सीखने का थोड़ा-सा कष्ट करने से न कतरायें। विश्वास बनाये रखने के लिए हमें शत-प्रतिशत निष्ठावान होना पड़ेगा। यह कोई रोटीका टुकड़ा नहीं है, जिसके टुकड़े किये जा सकते हों। किसी देशके लोगों की भाषाको विभाजित नहीं किया जा सकता — वह सत्यके समान एक और अविभाज्य होती है। इसलिए आप पसन्द करें या न करें, आपको उर्दू सीखनी होगी और उससे प्यार करना होगा।

यह पूछे जाने पर कि क्या लिपिको भाषा जितना महत्त्व दिया जाना चाहिए, गांधीजी ने कहा :

व्यवहारमें भाषा और लिपि दोनों जरूरी हैं। आखिरकार अगर हम अपने उन मुसलमान भाइयोंको लिखना चाहें जो केवल उर्दू लिपि ही जानते हैं तो इस समस्याको कैसे सुलझायेंगे? इसपर यदि हम यह तर्क करते हैं कि "हमें उनसे क्या लेना-देना है?" तो मैं कहूँगा कि स्वराज्यकी चिन्ता भी क्यों की जाये? मैं तो तेरह-की-तेरह लिपियोंको सीखना और उन सबको समान रूपसे जानना चाहता हूँ। आपने अंग्रेजी सीखने में जितना समय लगाया है यदि उसका सातवाँ हिस्सा भी आप इन लिपियोंको सीखने में लगाते तो आप अब तक तेरहों लिपियोंको अच्छी तरह सीख चुके होते। उर्दू लिपि सीखना कोई मुश्किल काम नहीं है। वह बहुत आसानीसे भली-भाँति सीखी जा सकती है।

एक प्रचारकने पूछा कि ऐसा क्यों न किया जाये कि जब विद्यार्थी नागरी सीख ले तब उसे उर्दू लिपि सिखाई जाये, महात्माजी ने उत्तर दिया :

यदि मैं शिक्षक होता तो एक ही समयमें चार-पाँच लिपियाँ सिखाता। उर्दू लिपिको सीखने में मुझे आठ दिन भी नहीं लगे। कमसे-कम चार-पाँच अध्यापक ऐसे होने चाहिए जिन्हें दोनो लिपियोंकी पूरी जानकारी हो और जो उन्हें सिखा सकते हों। शिक्षक विद्यार्थीको एक लिपि सिखाने के बाद दूसरी सिखाये

अथवा दोनों लिपियोंकी साथ-साथ शिक्षा दे, यह बात शिक्षकपर छोड़ देनी चाहिए। लेकिन उसे प्रमाणपत्र देने से पहले विद्यार्थियोंकी दोनों लिपियोंमें परीक्षा लेनी चाहिए।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन और लिपिके प्रश्नपर बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डनके दृष्टिकोणके सम्बन्धमें महात्मा गांधी ने कहा :

टण्डनजी मेरे मित्र हैं। मैं उन्हें प्यार करता हूँ। हम दोनों बहुत अर्से तक एक साथ रहे हैं। लेकिन अब इस प्रश्नपर हम दोनोंने भिन्न-भिन्न रास्ते अपनाये हैं; लेकिन हम एक-दूसरेके मार्गमें बाधा नही बनते। खुद मैं तो गंगा और जमुनाके मिलनके बाद सरस्वतीके दर्शन करना चाहता हूँ।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, २६-११-१९४५

१५४. पत्र : इनायतुल्ला खाँको

बिड़ला हाउस
२० नवम्बर, १९४५

अलामा साहेब,

आपका खत मिला। मुझको बहुत दर्द हुआ है। मैंने जो चीज बड़ी मुहब्बत से की है उसके मानी आप उलटे ही समझे हैं। मैं लाचार हूं। मैंने जो आपको लिखा वह प्रेसमें जाने के लिये कभी नहीं था और जहां तक मेरा ताल्लुक है कि मैं आपसे यही कहुंगा कि हमने जो खत व किताबत चलाई है वह प्रेसमें नहीं जानी चाहिए। फिर भी आप प्रेसमें भेजना मुनासिब समझते [हों] तो भेज सकते हैं। मुआफ कीजिए मैं अंग्रेजीमें जवाब [नहीं] देता। आप मानते हैं कि अगर हम उर्दू या हिंदुस्तानकी किसी भी जबानमें लिखें तो उसमें से गलत मानी निकल सकते हैं और अंग्रेजीमें लिखने से एक ही माने निकलते हैं। मैं उससे उलट ही मानता हूं।

उर्दूकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१५५. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

वर्धा
२१ नवम्बर, १९४५

मेरे पूनामें जाकर रहने और पूना या नासिकमें एक बड़े-से भूखण्डपर नैसर्गिक उपचार गृह खोलने के सम्बन्धमें जो समाचार प्रकाशित हुए हैं उनसे उत्पन्न भ्रम दूर करने या उनका खण्डन करने की मैंने जानबूझकर कोशिश नहीं की। अनधिकृत रूपसे प्रकाशित ज्यादातर खबरोंकी तरह ये सब भी गलत थी। ऐसी बातें मुझे हमेशा महँगी पड़ी हैं, कदाचित् जनताको मुझसे भी ज्यादा महँगी पड़ी है। तथापि इस अफवाहमें थोड़ी सचाई भी थी। डॉ० दिनशा मेहतासे जब मेरा परिचय नहीं था तभीसे वे मुझे जानते हैं, और जबसे मेरा उनसे परिचय हुआ है, मुझे वे अच्छे लगे हैं। मैं जितने नैसर्गिक उपचारकोंको जानता हूँ उनसे सबसे पहलेसे ही मैं खुद नैसर्गिक उपचारक रहा हूँ। उनमें से डॉ० दिनशाने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया है और मेरी तरह वे भी स्वप्नद्रष्टा हैं। वे एक नैसर्गिक उपचार विश्वविद्यालयकी स्थापना करना चाहते हैं और मेरी भी यही इच्छा है। उन्होंने पूना और सिंहगढ़के अपने कारोबार एक ट्रस्ट को सौंप दिये हैं। ट्रस्टकी अनुसूचियोंके अनुसार उनका अनुमानित मूल्य मोटे तौरपर ५०,००० रुपये है। मैं भी ट्रस्टियोंमें से एक हूँ। अन्य दो स्वयं डॉ० मेहता और श्री जहाँगीर पटेल हैं, जिन्हें नैसर्गिक उपचारमें दिलचस्पी है। अभी तक तो डॉ० मेहताकी संस्था धनवान लोगोंके लिए ही रही है और इन लोगोंके बाद जितने गरीबोंको आसानीसे लिया जा सकता है उतनेको लिया जाता रहा है। सभी रोगी आवासी रहे हैं।

आगामी पहली जनवरीसे इस संस्थाको गरीबोंकी सेवामें समर्पित किया जायेगा। धनवानोंको इसी शर्तपर लिया जायेगा कि वे गरीबोंके साथ रहने को तैयार हों, और गरीब रोगियोंकी बनिस्बत अधिक सुख-सुविधाओंकी अपेक्षा न करते हों। गारंटी यह होगी कि वहाँ विलासिता-रहित स्वच्छताका स्तर इतना ऊँचा रहेगा जितना कि इस तरहकी किसी भी संस्थामें सम्भव है। इसमें अन्तरंग और बहिरंग दोनों प्रकारके रोगियोंका उपचार किया जायेगा, लेकिन स्वभावतः बहिरंग रोगी अन्तरंग रोगियोंसे अधिक होंगे।

बिड़ला परिवार वर्षोंसे मुझमें दिलचस्पी लेता रहा है। वे लोग नासिक में इस संस्थाके लिए जितनी जमीनकी जरूरत हो उतनी जमीन और साथ ही

मकान भी देने को तैयार थे। लेकिन जब तक मैं ट्रस्टमें पूनामें स्थित कारोबारों को भी शामिल नहीं कर लेता तब तक डॉ० दिनशा पूरे मनसे नासिकमें संस्था की स्थापनाके विचारके पक्षमें नहीं थे। मैं यह बोझ अपने सिर नहीं ले सकता था। फलतः नासिककी योजना, कमसे-कम फिलहाल तो, स्थगित ही कर देनी पड़ी।[1] जहाँ तक संस्थाके तकनीकी पहलूका सम्बन्ध है, डॉ० दिनशा अब भी उसके एकमात्र निदेशक रहेंगे। यदि इस संस्थाको फूलना-फलना है तो उसे गरीबों के मूक आशीर्वाद, धनी लोगोंकी आर्थिक सहायता, भारतके सच्चे नैसर्गिक चिकित्सकोंके सक्रिय सहयोग तथा आयुर्वैज्ञानिक बन्धुओंकी सहानुभूतिकी जरूरत होगी। जिस जमीनमें यह स्थित है वह गरीबोंकी जरूरतोंको देखते हुए बहुत कम है। इसके अतिरिक्त यह संस्था अपने मौजूदा स्थानमें ही स्थित रहेगी भी या नहीं, यह पट्टेदारपर निर्भर करेगा।

[अंग्रेजीसे]
हितवाद, २२-११-१९४५

१५६. तार : अमतुस्सलामको

वर्धागंज
२१ नवम्बर, [१९४५][2]

अमतुल सलाम
मार्फत हुमायूँ कबीर
२६, अमराली एवेन्यू
कलकत्ता

तुम्हारा पत्र मिला। बीमारीका समाचार पढ़कर दुःख हुआ। चिन्ता मत करो। पूरी तरह स्वस्थ होने के बाद मेरे पास कलकत्ता आ जाओ।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८८) से

१. देखिए पृ० २६ और ९८-९९।
२. साधन-सूत्रमें वर्ष स्पष्ट नहीं पढ़ा जा सका है तथापि अमतुस्सलामकी बीमारी (देखिए पृ० ११५) और गांधीजी की कलकत्ता-यात्राके उल्लेखसे वर्षका अनुमान लगाया गया है। गांधीजी १ दिसम्बर, १९४५ को कलकत्ता पहुँचे थे।

१५७. तार : हीरालाल शर्माको

वर्धागंज
२१ नवम्बर, १९४५

डॉ० शर्मा
खुर्जा

दोनों पत्र मिले।

बापू

[अंग्रेजीसे]
बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० ३४३

१५८. पत्र : चन्द्रशंकर शुक्लको

सेवाग्राम
२१ नवम्बर, १९४५

चि० चन्द्रशंकर,

मैंने लिखना आरम्भ ही किया था कि इतनेमें तुम्हारा पत्र मेरे सामने रख दिया गया। तुम्हारे बारेमें सूचना तो मिलती ही रहती है। और जब उसमें सरदार हों तो फिर पूछना ही क्या? तुमने जो पुस्तकें बताई थीं वे मुझे मिल तो गई हैं। उनपर एक नजर डाल जाने की इच्छा तो होती है, लेकिन क्या करूँ? जोड[1] की पुस्तक जब तुम्हें मिल जाये तो भेज देना। और इसी प्रकार होज[2] की पुस्तक भी। मैं तुम्हारे स्वास्थ्यके बारेमें समझता हूँ, किन्तु यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम अपना काम चला सकते हो। पहले तो तुम्हारा पत्र पढ़कर मुझे ऐसा लगा कि क्या यह महादेवका है? तुमने और दो-तीन अन्य लोगोंने उनकी लिखावटकी ऐसी ही नकल की है, किन्तु सबमें तुम ऊपर हो।

बापूके आशीर्वाद

चन्द्रशंकर शुक्ल
कृष्ण भवन
बंगडी माता रोड
रावपुरा
बड़ौदा

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. सी० ई० एम० जोड
२. चार्ल्स होज

१५९. पत्र : कमलनयन बजाजको

सेवाग्राम
२२ नवम्बर, १९४५

चि० कमलनयन,

मेरे जाने से पहले तू यहाँ नहीं पहुँचेगा, ऐसा समझकर यह पत्र लिख रहा हूँ। तुझे मालूम होना चाहिए कि नागपुर बैंक जमनालालजी का है, उन्होंने इसे परोपकारार्थ खोला था। गरीबोंके लिए यह बचत बैंक बन सके, उनका ऐसा विचार था और आज भी यही होना चाहिए। इसलिए यह बैंक टूटना नहीं चाहिए। यानी बैंक ऑफ इंग्लैण्ड, इम्पीरियल बैंक आदि जब टूट जायें और यहाँ कोई वज्रपात हो तभी नागपुर बैंक टूटे, अर्थात् वह अन्तमें टूटे, शुरूमें नहीं। उसकी ऐसी साख बन जानी चाहिए। तू जमनालालजी का वारिस है। उसका सच्चा अर्थ तो यही है कि तू उस साखका वारिस है और यह समझकर ही मैंने जलियाँवाला ट्रस्टको सलाह दी कि वहाँके पैसे वहीं [नागपुर बैंकमें] रखें और [उसमें] अधिक भेजने की चेष्टा करें। यही सलाह मैंने कुमारप्पाको दी है कि ग्रामोद्योगके पैसे वहीं रखे। यह विश्वास गलत साबित नहीं होना चाहिए। फिर भी, कल आते ही स्टेशनपर मुझे भारतन ने दूसरी ही बात बताई। उसने तो प्रेमपूर्वक बात की और चूँकि मैं उसका प्रमुख हूँ, इस वजह से उसने मुझसे पूछा। कुमारप्पाने पत्र लिखकर मुझसे पूछा था कि...[1] बैंकमें ग्रामोद्योगके पैसे रखें या नहीं। वैकुण्ठभाईने यह सलाह दी थी, इसलिए उसने यह मान लिया कि मैं भी स्वीकार कर लूंगा। परन्तु मैंने तो शंका उठाई और स्वीकार नहीं किया। मगर कुमारप्पा उस बैंकमें पैसे जमा करा चुका था। अब वहाँसे पैसे वापस निकाल ही लेने चाहिए। पर उस हालतमें ब्याज खोना पड़ेगा। ब्याज खोने पर भी यदि न वापस लिया जा सके तो? इसलिए भारतनने मेरी सलाह माँगी। कुमारप्पा अभी यहाँ नहीं है। परन्तु मैंने कहा कि अगर वे लोग आपत्ति करें तो झगड़ा करके भी पैसे वापस ले ही लेने चाहिए। नही तो मैं मानूँगा कि वह रकम जोखिममें है। और यह तो चर्म-रज्जुके लिए भैंसको मारने-जैसा होगा। ... बैंककी स्थिति क्या है, यह तो मैं आज भी ठीकसे नहीं जानता। उसका धुंधला खयाल जरूर है। लेकिन नये बैंकोंके प्रति मेरे मनमें अरुचि और अविश्वास है। इसलिए उनमें पैसा रखने के लिए मैं जल्दीसे तैयार होऊँगा ही नहीं। फिर सवाल यह पैदा हुआ कि ... बैंकमें नहीं रखते तो नागपुर बैंक

१. साधन-सूत्रमें यहाँ नाम नहीं दिया गया है।

में क्यों? वह भी तो अपेक्षाकृत नया बैंक ही कहलायेगा न? यह भी एक प्रकार से सच ही है। भारतनने साथ ही यह भी कहा कि नागपुर बैंकके तो एक-दो महीनेमें ही बन्द होने की बात सुनी जा रही है। कारण कि उसे नुकसान हुआ है और लोगोंके पैसे डूबने का अन्देशा है, इसलिए पहलेसे ही रकम क्यो न निकाल लें? मैंने यह बात नही मानी और मनमें दृढ़ रहा। पर इस अफवाह का मूल जानने की इच्छा हुई। उस समय राधाकृष्ण[1] साथ था। मैंने उससे पूछा। उसने मुझे समझाया। मै आश्वस्त हुआ और मैंने भारतनसे कहा कि पैसे नागपुर बैंकमें ही रखने है। फिर भी मुझे लगा कि तुझे यह बात बतानी चाहिए, इसलिए यह पत्र लिखा है। तू इसपर विचार करना और सावधान रहना। जमनालालका वारिस होना कोई ऐसी-वैसी बात नहीं है। तू उनके पुत्रके रूपमें उनका वारिस है। मैं उनके दत्तक यानी माने हुए पिताके रूपमें उनका वारिस हूँ। उनका नाम निष्कलंक रहे, मेरा स्वार्थ इसमें है। उनका उठाया हुआ काम किसी प्रकार चलता रहे, इतना ही नहीं, परन्तु अधिक चमके, तभी तू और मैं उनके सच्चे वारिस माने जायेंगे।

तू पैसे कमायेगा और बड़ा सेठ कहलायेगा, यह सम्भव है। परन्तु उनके उत्तर जीवनके पारमार्थिक कामका क्या होगा, उत्तर जीवनमें खोले बैंकका क्या होगा? गरीब गायका, खादीका, ग्रामोद्योगका क्या होगा? उनकी इच्छा से मैं वर्धामें आकर बसा हूँ न — वह भी सरदारका मीठा क्रोध सहकर। वे मुझे यहाँके एकके बजाय दस बगीचे बिना परिश्रमके दिला सकते थे, लेकिन जमनालाल नहीं दिला सकते थे। इसलिए मैंने दस बगीचे छोड़ दिये। परन्तु अब मैं जमनालाल को खो बैठा हूँ, ऐसा जरा भी आभास अपने मनमें नही होने देना चाहता। उसकी कुंजी तेरे हाथमें है, राधाकृष्णके हाथमें है, और जानकीदेवीके हाथ में है। जानकीदेवी तो निरक्षर है। और उनसे जिस विकासकी मैंने आशा रखी थी वह तो जमनालालके जाने के बाद खत्म ही हो गई। इस कारण बैंकके सम्बन्धमें मैं उन्हें समझा भी नहीं सकता। समझाने की कोशिश तक नही की। राधाकृष्ण बहुत चतुर है, उसे अनुभव है, परन्तु पढ़ा-लिखा तो नहीं ही कहलायेगा न? तू तो विलायत हो आया है। व्यापारीके रूपमें थोड़ा-बहुत नाम भी कमाया है। तेरे अन्दर आत्मविश्वास तो अपेक्षासे अधिक ही है। जो भी हो, वारिसके रूप में हो या गद्दीनशीन होने की हैसियतसे हो, मुझे तुझसे अपेक्षा रखनी ही है। इसलिए कहता हूँ कि तू अपने पिताका नाम परोपकारीके रूपमें उज्ज्वल करने के लिए मर मिटना। यदि तुझे अपनेमें ऐसा करने की शक्ति दिखाई न दे तो नम्रतापूर्वक मुझे चेतावनी दे देना। परोपकारी पिताके सब पुत्र अपने पिताके पीछे-पीछे नही चल सकते या नही चलते हैं। इस कारण यदि तू ऐसा

१. कमलनयन बजाजके चचेरे भाई राधाकृष्ण बजाज

न करे तो कोई तेरी ओर उँगली नही उठा सकता। फिर मैं तो उँगली उठाने वाला कौन होता हूँ? परन्तु दादाकी हैसियतसे तुझे सलाह तो दे सकता हूँ, चेतावनी तो दे सकता हूँ। फिर तू जो-कुछ करेगा उसे चुपचाप स्वीकार कर लूँगा। इसमें तो मैंने तुझे बहुत-कुछ लिख दिया है। उसपर अच्छी तरहसे विचार करना, और नागपुर बैंकके सम्बन्धमें मैंने भारतनको जो सलाह दी है वह ठीक है या नहीं, इसका जवाब मुझे पहुँचा देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३०५८) से

१६०. भाषण : समग्र ग्रामसेवा विद्यालयमें[1]

सेवाग्राम
२२ नवम्बर, १९४५

यहाँ जो विद्यार्थी विद्याभ्यासके लिए आये हैं उनसे मैं बहुत आशा रखता हूँ। मैं ही नहीं, किन्तु जनता जो इस काममें रस लेती है वह भी काफी आशा रखती है। हिन्दुस्तानमें बहुत-से ऐसे पढ़े-लिखे लोग हैं जो हमारे कार्यक्रमकी टीका-टिप्पणी करते हैं और निन्दा भी करते हैं। कुछ सिद्धान्तकी दृष्टिसे भी इसका विरोध करते हैं। ऐसे लोगोंके बारेमें मैं अभी कुछ नहीं कहना चाहता, यद्यपि मैं उसका भी जवाब दे सकता हूँ। लेकिन जो लोग इस काममें दिलचस्पी लेते हैं और चाहते हैं कि हम इसमें कुछ हिस्सा लें उनकी बात हमें सुननी चाहिए। ऐसे लोगोंके दिलमें खादी, ग्रामोद्योग, गोसेवा, हरिजनसेवाके सम्बन्ध में काफी आशा भरी है। उनकी आशा सफल करने के लिए हमें भरसक प्रयत्न करना चाहिए। पेट भरने का साधन पाने के लिए आप अगर यहाँ आये होंगे तो उससे यह आशा सफल नहीं होगी।

सरकारी विद्यालयोंमें काफी लोग जाते हैं। वहाँ डिग्री हासिल करते हैं। वे सोचते हैं कि इस शिक्षासे हम धन प्राप्त करेंगे, कीर्ति हासिल करेंगे, कमसे-कम सरकारी दफ्तरमें क्लर्क बनेंगे या चपरासी तो हो ही सकते हैं। चपरासी थोड़े ही कायमके लिए रहेंगे? आगे तरक्की होगी ही और कुछ पैसे तो यूँ ही मिलेंगे। मतलब यह कि वे समझते हैं कि सरकारी नौकरी मिल गई तो जीवन सलामत हो जाता है। यह एक ऐसी चिन्ता है जिसपर गौर करना चाहिए। सरकारने अपने विद्यालयोंमें बहुत सहूलियतें दी हैं। बड़े-बड़े मकान दिये हैं, बड़ी-बड़ी

१. इस संस्थाने २ अक्तूबर, १९४५ से काम करना आरम्भ किया था।

छात्रवृत्तियाँ दी हैं, प्रवासकी सहूलियत दी है। इसके मुकाबलेमें हम कैसे खड़े रह सकेंगे?

इस प्रश्नको हल करने के लिए कई रास्ते मै पहले बता चुका हूँ। आप यहाँ सहूलियतों या वेतनके मोहसे नहीं आये हैं। अगर आपको अपने ध्येयमें सफलता पानी है तो आप याद रखें कि आप यहाँ सिर्फ कारीगरी सीखने नही आये हैं। कारीगरी तो सीखना है ही, लेकिन उतनेसे सन्तोष न मान लें। देहातमें कारीगर तो पड़े हैं। वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी यही काम करते आये हैं। उनका मुकाबला आप कैसे कर सकते है? क्रिया तो आप सीखें परन्तु उसके साथ-साथ शास्त्रीय ज्ञान होना चाहिए। बार-बार यह प्रश्न उठना चाहिए कि हम यह क्यों कर रहे है, किस तरह करें, इसका सम्बन्ध स्वराज्यसे कैसे जोड़ा जाये। स्वराज्य अहिंसा से पाना है। हिन्दुस्तानके देहातमें करोड़ों पड़े हैं, उन्हें उबारना है, उनकी सेवा करनी है, उन्हें इसकी कीमत बतानी है। अगर आप ऐसा समझते हैं कि मिल वाले लोगोंको पेट-भर दे सकते हैं और उससे आपको सन्तोष होता है तो आपको यहाँ नहीं पढ़ना चाहिए। लेकिन मिलवाले तो मुट्ठी-भरको ही दे सकते हैं। करोड़ोंका खयाल मिलवाला करता ही नही। मुझे कोई मिलवाला अभी तक नही मिला है जिसने कहा हो कि मिलके जरिये हम करोड़ोंको काम दे सकते हैं।

आप कितना महाभारत काम करने आये हैं! आपको करोड़ोंकी सेवा करनी है। आप लोग ६१ है, यह महत्त्वका प्रश्न नही है। यदि आप शास्त्रज्ञ होकर गये तो काम हो गया। आप ६१ को करोड़ोंके संरक्षक या ट्रस्टी बनना है। यह सिलसिला चल पड़ा तो आपकी संख्या बढ़ती ही जायेगी। यह विद्यालय गंगोत्री-जैसा है। बादमें गंगाके समान उसका प्रवाह विस्तृत होता चला जायेगा। यह मेरा स्वप्न है। पचीस वर्षोंसे मैं इसे देख रहा हूँ। जो आशा रखता हूँ वह नहीं फली, परन्तु फिर भी मैं निराश नही हूँ, क्योंकि मैं कभी निराश होता ही नहीं। बड़ा काम जल्दी नही चलता। अहिंसा धीरे-धीरे चलती है लेकिन अचूक चलती है। उसका रास्ता सीधा है। विमान-वेगसे चलने वालोंको भी वह पीछे डाल देगी। मेरा यह दृढ़ विश्वास है।

जो ज्ञान आप यहाँसे प्राप्त करके जायेंगे उसे देहातियोंको देना है। उनमें उसके लिए रस पैदा करना है। लेकिन यह काम आसान नहीं। मैं सेवाग्राममें वर्षोंसे पड़ा हूँ। यहाँ चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ, गोसेवा संघ आदिके दफ्तर है। यहाँ अच्छे कार्यकर्ता पड़े हैं। सहूलियतें भी जो और जगह नही है वे यहाँ हैं। फिर भी मैं जो करना चाहता था वह नही कर सका। इससे आपको निराश नहीं होना चाहिए। लेकिन आपके मनमें यह प्रश्न उठना चाहिए कि हम यह क्यों नहीं कर सके। शिक्षकोंके पास इसका उत्तर होना चाहिए। यहाँ जो लोग बैठे हैं वे दगा-फरेबके लिए नहीं। कभी-न-कभी इसकी कुंजी हाथमें आयेगी, इस

दृढ़ विश्वाससे वे यहाँ बैठे हैं। सेवाग्रामका गुणा करना है। एक गाँवका विचार नहीं करना है। हिन्दुस्तानका, मैं तो सारे संसारका विचार भी कर लेता हूँ। अगर एक सिर्फ सेवाग्रामको ही देखना होता या अहिंसा और सत्यका खयाल छोड़कर हमें करना होता तो इसे हम कर दिखाते, लेकिन इससे संसारकी पीड़ा नहीं टलती। संसारमें हिन्दुस्तान एक बिन्दु है। सेवाग्राम उस बिन्दुका भी बिन्दु है। सेवाग्राममें जो हो सकता है वह सारे संसारमें भी हो सकता है। इसके लिए १०० वर्ष भी मैं व्यतीत कर सकता हूँ।

जो मेरे पास है वह यदि आप सन्तोषसे सीखना चाहें तो मैं सिखा दूंगा, लेकिन वह पैसे कमाने का नहीं। ऐसे तो मैं हजार-दो हजार रुपये कमा सकता हूँ। दक्षिण आफ्रिकामें बीस साल रहा हूँ। टूटी-फूटी अंग्रेजी भी बोल सकता हूँ। आजकल तो महात्मा भी हूँ। इससे मुझे दो हजार कोई भी दे देगा। लेकिन मैं यह नहीं चाहता। और इससे ही मैं करोड़ों इकट्ठा कर सकता हू लेकिन घर में रखने के लिए नहीं। मेरे लिए मुझे रोटीसे अधिक कुछ नही चाहिए। इसी तरह आपको भी सूखी रोटीसे सन्तोष होना चाहिए। यहाँका काम आसान नहीं है। अगर आपको इसमें सन्तोष न हो तो यहाँसे आपको जाना चाहिए। दूसरी तरफ आपको काफी पैसा मिल सकता है। लेकिन यहाँ रहना है तो सन्तोषसे रहना चाहिए। यदि आप यह भावना रखेंगे कि मैं करोड़ोंके साथ एक होता हूँ तो तेजस्वी बनेंगे।

आप लोग यहाँ भिन्न-भिन्न प्रान्तोंसे आये हैं। एक भोजनालयमें भोजन करते हैं—एक साथ रहते हैं। आपका दिल साफ हो जाना चाहिए। हम सब एक हैं। मैं तो अब कहने लगा हूँ कि हम सब हरिजन हैं—हरिजन क्या, भंगी हैं। ऐसा आपका मन हो जायेगा तभी काम चलेगा। आपको प्रतिक्षण जाग्रत रहकर काम करना होगा। आपकी परीक्षा होगी, प्रमाणपत्र भी मिलेगा। लेकिन उससे आपकी कीमत नहीं होगी। प्रमाणपत्र दूसरोंको दिखलाने के नहीं हैं। उससे आपको सिर्फ यह मालूम होगा कि आप कहाँ तक आ गये हैं। उससे आगे बढ़ना है। आप जो काम करेंगे उससे आपकी योग्यताका पता लगेगा, प्रमाणपत्र दिखाने से नहीं। और जगह प्रमाणपत्रोंकी कदर है, पर हमें मूल्य बदलना है, जीवनकी दृष्टि बदलनी है, वस्तुओंको देखने का तरीका बदलना है।

खादी-जगत्, दिसम्बर, १९४५

१६१. पत्र : अमतुस्सलामको

सेवाग्राम
२३ नवम्बर, १९४५

चि० अमतुल सलाम,

जल्दी करने के खयालसे मैं यह पत्र गुजरातीमें ही लिखवा रहा हूँ। तेरा पत्र मिला। मैंने तो यहाँ तुझे देखने की आशा की थी, लेकिन उसके बजाय मुझे तेरा वस्तुतः दुःखसे भरा पत्र देखने को मिला। इसमें तूने अपनी आदतके मुताबिक अपना दुखड़ा नहीं रोया था, बल्कि तू बहुत गलत समयमें बीमार पड़ गई, इस बातका दुःख मैंने देखा। इससे मैं भी दुःखी हुआ। इसके अतिरिक्त मगनभाई[1] ने तेरी स्थितिका सजीव वर्णन किया और जाजूजी[2] से तेरी सेवा-भावना तथा हिम्मतका इतना सुन्दर विवरण सुनने को मिला जिससे हृदय खुशीसे भर उठा। अब तो थोड़े ही दिनोंमें हम लोग मिलेंगे। तू हर्षोन्मत्त होकर तुरन्त ही सोदपुर न चली आना। स्वस्थ होकर आना।

तूने हुमायूँ[3] के घरमें आश्रय लिया है, यह बात मुझे अच्छी लगी है। मेरी तबीयत अच्छी है। यहाँ जो लोग बीमार थे, वे ठीक हो गये हैं और होते जा रहे हैं।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०२) से

१६२. पत्र : मदालसाको

२३ नवम्बर, १९४५

चि० पगली मदालसा,

तेरा पत्र मिला। अब श्रीमनजी आ गये हैं तो अब जो वे कहें सो करना। तेरे सलाहकार बहुत हैं। यह खराब है। इसलिए जिस एकपर भरोसा कर सकें, उसीकी बात सुन और उसीके अनुसार चल। दूसरेकी बात सुन ही मत। और

१. मगनभाई देसाई
२. श्रीकृष्णदास जाजू
३. हुमायूँ कबीर

जब कोई कहने आये तो कान बन्द कर ले। तब तू झटपट ठीक हो जायेगी। चिन्ता तो कतई न कर। बालकको जन्म दिया है तो अब उसका अच्छी तरह पालन-पोषण करना ही है। उसकी खातिर ही सही, पागलपन छोड़कर ज्ञानी न सही, समझदार बने तो यही काफी है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३२६-२७

१६३. पत्र : लक्ष्मीनारायण गाडोदियाको

सेवाग्राम
२३ नवम्बर, १९४५

भाई गाडोदियाजी,

आपके खत आये और डा० शर्माके भी आये——और बहुत आये ऐसा कहा जाय। लेकिन मैंने इन चीजोंमें पड़ना दुरस्त नहीं माना। अब मैं पाता हूं कि इसमें थोड़ा वक्त तो देना ही होगा। आप अपनी स्वच्छता दृढ़तासे प्रगट करते हैं और उसे न मानने का मेरे पास अब तक तो कुछ कारण ही नहीं है। आपकी स्वच्छताका स्वीकार करने का कारण तो आपने मुझे बताया ही है। दूसरोंका विरोध करके भी आपका समर्थन किया है। लेकिन डा० शर्माके हमलाने और दूसरे आपके खादी व्यवहारके बारेमें मेरे पास हमले आये हैं, उन्होंने मेरे मंतव्यमें कुछ शिथिलता डाल दी है। डा० शर्माको मैंने एक-दो सख्त खत लिखे। उसके उत्तर में जो खत आया है वह भेजता हूं। उसमें आपको भेजने का भी दृढ़ताके साथ लिखा है। आप जो उत्तर देना चाहें वह इस पत्रको वापस करने के साथ भेज दें।

यह खत मैं दुःखित हृदयसे भेजता हूं। डा० शर्माने जो शिकायत की है वह नयी नहीं है। मैं जेलसे छूटा उसके बाद कुछ महिनोंके बाद ही मेरे पास आ गये थे, तब भी यही शिकायत की थी। लेकिन उसपर मैंने कुछ वजन नहीं दिया। यही खत चि० सरस्वती भी पढ़े। वह भी जो कहना चाहे वह कहे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१६४. पत्र : सरयू धोत्रेको

सेवाग्राम
२४ नवम्बर, १९४५

चि० सरयू,

तेरा पत्र पाकर मुझे प्रसन्नता हुई। किन्तु तू जो कर रही है उसके औचित्यके बारेमें मेरे मनमें सन्देह बना हुआ है। इसके बावजूद जिन्हें तू पति मानती है उनका कल्याण कर और इतना काफी है कि अन्य किसी व्यक्ति के बारेमें तेरे मनमें तनिक भी विकार न आये। यदि तू कभी-कभी मुझे लिखती रहे तो मुझे अच्छा लगेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१६५. पत्र : बाबूभाईको

सेवाग्राम
२४ नवम्बर, १९४५

भाई बाबूभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे तनिक भी सन्तोष नहीं मिलता। इसमें मेरी भूल हो सकती है, किन्तु जब मैं सन्तुष्ट नहीं हूँ तो यह कैसे कह सकता हूँ कि सन्तुष्ट हूँ? मैंने जिस रूपमें धर्मको जाना और उसका पालन किया है, तुमने जो लिखा है उसमें उसका कोई स्थान मुझे नजर नहीं आता। धर्म संघ इस प्रकार नहीं बनते। तुम्हारा अंग्रेजीका समर्थन बहुत लचर है। यदि तुम गुजरातको शोभान्वित कर सकते और यदि अब भी शोभान्वित कर सको तो मैं उसे काफी मानूँगा। उसकी सुगन्ध अपने-आप फैलेगी। साथका पत्र[1] सरयूको दे देना।

बापूके आशीर्वाद

अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पिछला शीर्षक।

१६६. पत्र : नवीन गांधीको

२४ नवम्बर, १९४५

चि० नवीन,

तेरा पत्र मिला। इसे मैं बहुत स्पष्ट नहीं मानता, किन्तु मेरा काम तो चल जायेगा। यह पत्र मैं डॉ० कृष्ण वर्माको भेज रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि जो वस्तु जैसी हो उसका वैसा ही स्पष्ट निरूपण करना तू सीख ले।

बापूके आशीर्वाद

नवीन गांधी
४५, नेहरू रोड
विले पार्ले

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१६७. तार : दाऊद गजनवीको

[२४ नवम्बर, १९४५ या उसके पश्चात्][1]

मौलाना दाऊद गजनवी[2],
डॉ० गोपीचन्द[3] जैसा चाहें वैसा करने को स्वतन्त्र हैं।

गांधी

मूल अंग्रेजीसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह दाउद गजनवीके २४ नवम्बरके उस तारके उत्तरमें भेजा गया था जिसमें उन्होंने गांधीजी से डॉ० गोपीचन्द भार्गवको पंजाब विधान-सभाके चुनावमें खड़े होने देने की अनुमति माँगी थी

२. पंजाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष

३. पंजाबके प्रमुख कांग्रेसी कार्यकर्ता

१६८. तार : डॉ० गोपीचन्द भार्गवको

वर्धा

[२४ नवम्बर, १९४५ या उसके पश्चात्][1]

आप जैसा चाहें वैसा करें।

बापू

मूल अंग्रेजीसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१६९. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको

सेवाग्राम

२५ नवम्बर, १९४५

प्रिय सर एवन,

कामके बोझ और पूनासे सेवाग्राम आने की तैयारीमें व्यस्त रहने के कारण श्री वसुदा सिंहके बारेमें आपके गत ९ तारीखके पत्र[2] की प्राप्तिकी सूचना देने का ध्यान नहीं रहा। इस बीच समाचारपत्रों और बिहारसे आये व्यक्तिगत तारोंसे मालूम हुआ कि वाइसराय महोदयने मृत्युदण्डको आजीवन कारावासमें बदल दिया है। इसके लिए उन तक मेरा धन्यवाद पहुँचा दें तो कृपा होगी।

हृदय से आपका,

मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

गांधीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ५६-५७

१. देखिए पिछला शीर्षक।

२. इसमें गांधीजी को सूचित किया गया था कि वसुदा सिंहकी दयाकी याचिका संयुक्त प्रान्तके गवर्नरके विचाराधीन है, इसलिए उन्हें फाँसी देने की कार्रवाई स्थगित कर दी गई है।

१७०. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको

सेवाग्राम
२५ नवम्बर, १९४५

प्रिय सर एवन,

आपके गत १६ तारीखके पत्रके लिए धन्यवाद जिसमें आपने पण्डित जवाहरलाल नेहरूके विषयमें मेरे १३ तारीखके पत्र[1] की प्राप्तिकी सूचना दी है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ५८

१७१. पत्र : ई० एम० जेन्किन्सको

सेवाग्राम
२५ नवम्बर, १९४५

प्रिय सर एवन,

यह अपने १० अक्तूबर के पत्र[2] के क्रममें लिख रहा हूँ। उसके बाद मैंने समाचारपत्रोंमें इस तरहके अन्य विवरण भी देखे हैं और अब मेरे साथ एक ऐसा नौजवान (श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी) है जो अपनी किशोरावस्थामें ही मेरे पास आया था — किसीकी सिफारिश लेकर नहीं, बल्कि एक असहाय बालकके रूपमें। यह १९३५ की बात है। तबसे अब तक वह कभी भी मेरी निगरानीसे दूर नहीं रहा है। १९४२ के उपद्रवोंके सिलसिलेमें वह गिरफ्तार कर लिया गया था और अब रिहा भी हो चुका है। वह जीर्ण अवस्थामें वर्धा आया था। तब मैं पूनामें था। उसने अपने आने की खबर भेजी तो मैंने तार भेजकर उसे पूना आ जाने को कहा, क्योंकि वहाँ मैं उसकी बेहतर देखभाल कर सकता था।

१. देखिए पृ० ७२-७३।
२. देखिए खण्ड ८१, पृ० ३६३।

और जरूरत होने पर डॉ० मेहताके उपचार गृहमें, जहाँ मैं ठहरा हुआ था, उनकी सहायता भी ले सकता था। उसने भयंकर यातनाकी कहानी सुनाई है, जिसका विस्तृत विवरण मैं अभी नहीं देना चाहता।[1]

इसके अलावा मुझे डॉ० लोहियाके मित्रोंके पत्र मिले हैं। उन्होंने बताया है कि स्वयं डॉ० लोहियाको भी यातना दी गई है। वे एक सुयोग्य, सुसंस्कृत व्यक्ति हैं। उन्होंने भारतकी स्वतन्त्रताकी खातिर ऐशो-आरामकी जिन्दगीको तिलांजलि दे दी है। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूँ और उन्हींके जरीये उनके पिताको भी।

समाचारपत्रोंमें प्रकाशित सभी विवरणोंपर और उपर्युक्त दो घटनाओंपर अविश्वास करना कठिन है। मेरा सुझाव है कि वाइसराय महोदय मामलेकी और अधिक गहरी छानबीन करें और जो बयान दिये गये हैं उन्हें अतिशयोक्तिपूर्ण और ध्यान न देने योग्य समझकर अनदेखी न करें। इस बातसे तसल्ली होती है कि मेरे १० अक्तूबरके पत्रके उत्तरमें लिखे अपने १ नवम्बरके पत्रमें आपने बताया है[2] कि यद्यपि वाइसराय महोदय इस विवरणको अतिशयोक्तिपूर्ण मानते हैं, तथापि वे जाँच-पड़ताल कर रहे हैं। मेरा निवेदन है कि ऐसे अन्य सभी बयानोंकी भी छानबीन की जाये, और अगर उनका इरादा ऐसा करने का हो तो उक्त दो मामलों तथा जिन अन्य मामलोंके विषयमें भी मैं विश्वासपूर्वक कुछ कह सकता हूँ उनके सम्बन्ध में जो भी ब्योरे मेरे पास हैं उन्हें भेजने को मैं तैयार हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ६३

१. ५ मार्च १९४६ को भारत-मन्त्रीके नाम अपने पत्रमें वाइसरायने लिखा : "अब यह प्रमाणित हो गया है कि विद्यार्थी कभी भी दिल्ली नहीं लाया गया और उसके आरोप सरासर मनगढ़न्त हैं। देवदास गांधीने यह बात स्वीकार की है..." द ट्रान्सफर ऑफ पॉवर, जिल्द ६, पृ० ११११।

२. देखिए पृ० ३८, पा० टि० १।

१७२. पुर्जा : ग० वा० मावलंकरको[1]

मौन दिवस, सोमवार, २६ नवम्बर, १९४५

सेवार्थ १२५ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा करना और अधिकाधिक सेवा करना। लेकिन यदि अकेले मैं ही यह कामना करूँ तो जिस तरहसे अकेला वृक्ष सूख जाता है वही हाल मेरा भी होगा।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १२५६) से। संस्मरणों से भी

१७३. पत्र : रामानन्द तीर्थको

सेवाग्राम
२६ नवम्बर, १९४५

भाई रामानंद स्वामी,

आपका खत मिला। जैसे मैंने लिखा है अब मुझे कुछ पूछना नहीं चाहीये। पंडित जवाहरलालजी प्रमुख हैं। उन्हींको पूछना चाहिये और वे कहें सो करो।

आपका स्वास्थ्य अच्छा हो गया होगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. ग० वा० मावलंकर अपने जन्मदिवसपर गांधीजी का आशीर्वाद लेने सेवाग्राम गये थे। मौन दिवस होने के कारण गांधीजी ने अपना आशीर्वाद एक पुर्जेपर लिखकर दिया था।

१७४. पत्र : भारतन कुमारप्पाको

सेवाग्राम

[२६ नवम्बर, १९४५

चि० भारतन,

इतनी हिंदी तो पढ़ो। 'हरिजन' के लिये मैं तुमको नहीं ले जा रहा हूं। यह तो एक संभवकी बात कही। तुमपर कोई बंधन नहीं है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१७५. बातचीत : हैदराबाद राज्य कांग्रेसके सदस्योंके साथ

रातके ८ बजे, २६ नवम्बर, १९४५

मैंने सोचकर ही कहा है। मैंने पहले ऐसा नहीं कहा है क्योंकि सब अस्तव्यस्त था। अब बात दूसरी है। वह तो मैंने पढ़ लिया है। मैं खुद दुखित हूं कि बराबर मार्गदर्शन नहीं कर पाता। इतना तो है ही [कि] जवाब दे दो [कि] बेन [प्रतिबन्ध] उठ जाय और स्टेट कांग्रेसकी हस्तीको भी स्वीकार किया जाय, बादमें जवाहरलालजी से पूछा जाय।

एक नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१७६. पत्र : मणिबहन पटेलको

[सेवाग्राम][1]
२७ नवम्बर, १९४५

चि० मणि,

तेरे दो पत्र मिले। कानजीभाई[2] के नाम लिखा पत्र तुझे भेज रहा हूँ। इसे तू अपनी डाकके साथ भेज देना।

यरवडा समझौतेके बारेमें एक सवालपर विचार कराना। समझौतेमें दस वर्षकी बात है। परन्तु वह १९३५ के कानूनमें नहीं है। तो उसका अमल कानूनन कराया जा सकता है या नहीं? पकवासा[3] इसपर विचार करे। जरूरी हो तो वकीलसे भी मिले। मेरी राय स्पष्ट है। कानून सहायता नहीं करेगा। किन्तु राजनीतिक तौरपर लड़ा जा सकता है, इस विषयमें दो मत नहीं हो सकते। यह जरूर सोचना होगा कि इस समय यह लड़ाई छेड़ी जाये या नहीं। परन्तु इसकी चर्चा तुम लोगोंके यहाँ आने पर करेंगे।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–४ : मणिबहेन पटेलने, पृ० १३७

१७७. पत्र : शारदा गो० चोखावालाको

सेवाग्राम
२७ नवम्बर, १९४५

चि० बबुड़ी,

तेरा पत्र मिला। तू तुरन्त स्वस्थ हो जाये, तो मुझे बहुत खुशी होगी। मैं तो ३० तारीखको यहाँसे रवाना हो रहा हूँ। लेकिन सफरमें भी तेरा समाचार पाने की आशा करूँगा। चिमनलाल[4] मेरे साथ जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००६४) से। सौजन्य : शारदा गो० चोखावाला

१. साधन-सूत्रमें "पूना" है।
२. कनैयालाल नानाभाई देसाई, गुजरात प्रदेश कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष, १९४६-५६
३. मंगलदास पकवासा, बम्बई विधान-परिषद्के अध्यक्ष
४. शारदाबहनके पिता चिमनलाल शाह

१७८. पत्र : माधवदास कापड़ियाको

सेवाग्राम
२७ नवम्बर, १९४५

चि० माधवदास,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। तुम्हारा कार्यक्रम पढ़ा। मेरी इच्छा है कि तुम वहाँ इसी प्रकार सेवा करते रहो। डॉ० केसाणीका उपचार करके अच्छे हो जाओ। डॉ० कृष्ण वर्माके बारेमें तुमने जो लिखा सो मैं समझा। तुम्हें स्पष्ट रूपसे उनसे बात करनी चाहिए। मैं तो उन्हें लिखने वाला हूँ ही और जो अन्य लोग उनके बारेमें कुछ कहते हैं उन्हें भी साफ-साफ लिखना चाहिए। गोलमोल बात कहने से किसी व्यक्तिके सुधरने की बात मैं नहीं जानता, बल्कि मेरे ध्यानमें ऐसे लोगोंके उदाहरण हैं जो अपने बारेमें गोलमोल बात कही जाने से बिगड़े ही हैं। गोलमोल बातें करके अच्छे परिणामकी अपेक्षा रखने का अर्थ यह हुआ कि अच्छा करने के लिए बुरा कहा और किया जा सकता है।

मुझे कुँवरजीका पत्र मिला है। मैं उन्हें आज नहीं लिख रहा हूँ। मैं समय बचा रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० २७२६) से

१७९. पत्र : जहाँगीर पटेलको

२७ नवम्बर, १९४५

भाई जहाँगीर,

यह अच्छा हुआ कि तुम वहाँ पहुँच गये। हिसाब वगैरह रखने के लिए यहाँसे किसीको भेजने की तजवीज कर रहा हूँ। इस बारेमें काफी सोच-विचार कर रहा हूँ। तुमसे तो जितनी मिल सके उतनी मदद हमें चाहिए ही।

आशा है, माताजी अच्छी होंगी।

बापूके आशीर्वाद

जहाँगीर पटेल
पटेल ब्रदर्स
१०, चर्चगेट स्ट्रीट
फोर्ट, बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८०. पत्र : जोहरा चावड़ाको

२७ नवम्बर, १९४५

चि० जोहरा,

तेरा पत्र मिला। तू इतना विनोद कर सकती है, यह मैं नहीं जानता था। यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि तूने एक कोठरीको शीशेकी तरह चमका दिया है। सभीको इसी तरह चमका देना और तुम सब उसीमें अपना मुँह देखना। इस तरह शीशेका खर्च बच जायेगा।

तू खूब सोई और यदि इसी प्रकार सोया करेगी तो तू बहुत जल्दी अच्छी हो जायेगी। बीमार व्यक्ति जितना सो सके उतना सोना चाहिए।

बनुका पत्र मुझे मिल गया है, फिर भी आज उसे नहीं लिख रहा हूँ। मैं तो बहुत भीड़में काम कर रहा हूँ।

बापूके आशीर्वाद

जोहराबहन

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८१. पत्र : कृष्णचन्द्रको

सेवाग्राम
२७ नवम्बर, १९४५

चि० कृष्णचन्द्र,

चंपाबहन[1] यहां जो दूसरे रहते हैं, ऐसी ही स्थितिमें रहने वाली है। सरला के शिक्षणके बारेमें मैंने साफ कर दिया है कि यहां रहकर बाहरके शिक्षणकी न व्यवस्था कर सकती है, न कोई सुविधाकी अपेक्षा रख सकती है। यहां जो शिक्षण मिल सकता है वही ले सकती है, और शरीर जितना काम दे सके इतना काम आश्रम सेवामें देना होगा। खाना-पीना यहां मिल सकता है उसीसे संतुष्ट रहना और सब खर्च भरना होगा। चर्खा इ० तो आता ही है।

१. देखिए पृ० ३०।

कानजीभाईको नियमबन्ध्य रखने की प्रेमपूर्वक कोशिश की जाय। अगर तो[1] प्रेमपूर्वक सहन किये जाय। प्रेमकी बात प्रेम ही जानता है। इसमें यंत्रवत करना गुनाह होगा।

२. कैलाशबहेनके साथ मैंने बातें कर ली हैं। वह आश्रममें रहेगी; मसला तो मिलता ही है। इसमें भी चाबी प्रेम है। ऐसे ही ओमप्रकाशका।

३. गोविन्दको तालीमी संघमें रखना मुझको प्रिय लगेगा — लेकिन शंकरन समझ जाय तब।

४. माधजीभाईका कुछ जानता नहीं हूं। अब ही उनकी पत्निसे और उनको मिला। उनके बारेमें जैसे कि[शोरलालभाई] और नरहरिभाई कहें ऐसा करो।

५. गोविन्द रेड्डीके बारेमें कुछ कहने का नहीं रहता है।

६. मोहनसिंहजी[2] का परिचय करना मुझको अच्छा लगेगा, लेकिन समय नहीं देखता हूं। उनका उपयोग लोहारी, सुथारी कार्यमें करना सबसे अच्छा लगता है।

७. सचालन-काम भली भांती करते हुए, जो समय मिले उसमें कुछ वर्ग लेना अच्छा है। लेकिन मैंने भी बरसों तक संचालनका ही काम किया है ना? और मेरी दृष्टिसे संचालन ही मेरा [प्रशिक्षण] वर्ग बन गया था। मैं शिक्षक था और शिष्य भी। सचालकको दृष्टि प्रत्येक व्यक्तिपर रहती है और वह कैसे बैठते हैं, कैसे खाते हैं, कैसे सोते और क्या पढ़ते हैं वह सब देखना है। इस ढांचेमें तुम्हारे लिए कोई वर्ग रहता है तो वह ठीक ही है। जैसे कि कोचरबमें सर्व शिक्षा आश्रममें ही दी जाती थी तो जितने शिक्षा देने के लायक थे उन सबका मैंने विभाग कर लिया था। शायद एक या दो घंटा ही रखा था। उसमें मेरा हिस्सा भी रख लिया था, उतना मैं करता था।

८. कामदारोंको कपासकी सब क्रिया तो सीखनी ही है, और वह भले खादी विद्यालयमें दी जाय। अक्षर-ज्ञान देना ही चाहिए। कैसे ई० में मैं नहीं जा सकूंगा।

९. अलफ़ातेहा[3] और मज़दा[4] विनोबा बनावे तब भी अरबी और पहल्वीमें ही होना चाहिए। साथमें अर्थके कारण विनोबाका ले सकते हैं। उसको असलमें बोलने में मेरी दृष्टिसे वजूद है। मैं यहां तक नहीं आया हूं कि सब चीज मातृभाषा या राष्ट्रभाषामें ही होनी चाहिये।

१. नहीं तो
२. मोहनसिंह ठाकुर; देखिए "पत्र : मोहनसिंह ठाकुरको", ३०-११-१९४५।
३ और ४. आश्रमकी प्रार्थनामें शामिल कराने के लिए कुरान और जंद-अवेस्ता के अंश

१०. तुम ठीक कहते हो।

११. तुमने ठीक कहा है। मैं तो एक ही कमरेका आदि हूं और मैंने अलग-अलग कमरे रखे ही नहीं हैं। ख्रिस्त सेवा संघमें भी ऐसा ही है — थोड़ा फर्क है।

१२. पहनने-ओढ़ने के बारेमें मैंने बहुत लिखा है उसे देखो।

१३. अब तो मैं ही मसाला खाता हूं। लेकिन मेरी उम्मीद है कि केवल औषध रूप ही। डा० मेहताके आग्रहसे, खानेमें मसाला है, [लेकिन मनमें] उसका ख्याल तक नहीं है। बड़ा परिवर्तन तो यह है कि उसको जैसे स्वादमें बड़ा स्थान है ऐसे औषधमें भी। घऊं [गेहूँ] स्वादके लिए अनेक तरहसे पकाते हैं और पेट भरने के लिए रोटी भी।

१४. दूधका प्रमाण ठीक है। हो सकता है कि एक रतल भी काफी हो।

१५. गजराजने ता[लीमी]-सं[घ] जाना शुरू किया है। मैं सोच रहा हूं कि उसको सारा वक्त वहीं रखे।

१६. विचार करके मुझको ज्यादा लिखना है तो लिखो। इसमें दो पक्ष हैं।

१७. इस बारेमें पुरुषोत्तम गांधी[1] को लिखो।

१८. इसमें व्यक्तिको देखना और आश्रमकी सुविधाको। मेरी दृष्टिमें आ सकता है कि एक आदमी जो योग्य है [उसे आश्रममें] ८ दिनके लिए भी आने दूं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५३७) से

१८२. पत्र : महेशदत्त मिश्रको

२७ नवम्बर, १९४५

चि० महेश,

तुम्हारा कार्ड मिला। मैंने तो कभी तुमको निकम्मा नहीं माना है। छुट्टी मिलने पर मुझे लिखो तो सही। सुविधा होने पर मैं बुला भी सकता हूं।

मेरा ठिकाना : खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर, २४ परगना।

बापुके आशीर्वाद

महेश दत्त
९, हेमिल्टन रोड
अल्लाहबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. नारणदास गांधीके ज्येष्ठ पुत्र

१८३. पत्र : उर्मिला देवीको

सेवाग्राम
२७ नवम्बर, १९४५

चि० उर्मिला,

मेरी उम्मीद है कि मेरी इतनी हिन्दी समझ लेगी। मैं जवाहरलालसे अवश्य बात करूंगा।

तुम्हारे बारेमें यहांकी तजवीज हो जायगी। कमरा मिलेगा और कमरे के नजदीक ही पाखाना होगा। खाना भी अलग बना सकोगी।

सोदपुरमें मैं काममें गिरफ्तार रहूंगा लेकिन जब आना चाहती है तब आ सकती है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१८४. सूत-शर्तका आग्रह क्यों ?[1]

२७/२८ नवम्बर, १९४५

यह दलील पुरानी है।[2] मनुष्य बहुत-सी अच्छी बातें करना चाहता है, लेकिन आलस्यके कारण नहीं करता। जब नियम बन जाता है तो मनुष्यसे काम होता है। अपना जो काम वह नही कर पाता था उसे करने का बल मनुष्यको मिलता है। इसलिए सूतकी शर्त अनिवार्य कर देने से लोगोंको हम किसी तरह मजबूर नहीं करते, बल्कि जो कातना चाहते हैं उनके लिए एक मार्ग बना देते हैं, एक रास्ता निकाल देते हैं। जो सूत कातना नहीं चाहते वे मजबूर होकर कितने दिन कातेंगे? दिखाने के लिए कातेंगे तो दम्भ करेंगे। दम्भी अपना ही नुकसान करता है। उससे खादीको हानि नहीं पहुँचेगी। उल्टे मैं तो यह कहूँगा कि प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए या मजबूर होकर भी अगर कोई कातने लगे तो कातते-कातते

१. साधन-सूत्रके अनुसार यह "२७ तथा २८ नवम्बर, १९४५ को गांधीजी की चरखा संघ के खादी मण्डलके साथ हुई चर्चाका सारांश" है।

२. एक सदस्यने कहा था कि जो खरीदार सूत "न देना चाहे उसे . . . सिर्फ कीमत देकर खादी" खरीदने की सहूलियत दी जाय। सूतकी शर्तको अनिवार्य रखने का मतलब तो लोगों को मजबूर करना है।

उसे कातने में रस पैदा हो सकता है और बादमें वह स्वेच्छासे कातने लग सकता है। अगर अभ्यासके बाद भी उसे रस पैदा न हो, उसे मजबूरी ही मालूम पड़े तो वह खादीको छोड़ देगा, तो छोड़ दे। उससे हमारा कुछ बिगड़ता नहीं है।

सूत-शर्तके कारण, अगर खादी भण्डार बन्द हो जायेंगे तो हो जायें। मैं बेपरवाह हो गया हूँ। कोई खादी ले या न ले। मैं दुकान नहीं चलाना चाहता। मैं तो लोगोंको कातना सिखाना चाहता हूँ। बम्बईमें तीन सौ-साढ़े तीन सौ चरखे चलते हैं। लेकिन इतने से क्या हुआ? मुझे तो वहाँ जितने घर हैं उतने चरखे चलाने हैं। शहरोंको अगर अहिंसक बनाना है तो इसके सिवा दूसरा रास्ता नहीं है। सरकारके पास उल्कापात[1] है और मेरे पास चरखा है। उल्कापात से चरखा बचा सकता है। उससे बचने के लिए और सब उपाय बेकार हैं।

अगर सूतकी शर्त लगाने से भण्डारोंकी बिक्री घट जाये, और नुकसान होने से भण्डार बन्द करने पड़ें तो बन्द कर दो। खादी बेचने के लिए भण्डार नहीं रखने हैं। आप कहेंगे कि अगर शहरोंके भण्डार बन्द हो जायें तो देहातों में खादी बेचनी होगी। लेकिन देहातोंमें शहरोंकी तरह खादी कैसे बिकेगी? मैं मानता हूँ कि देहातमें खादी नहीं बिकेगी, बिकनी ही नहीं चाहिए। देहातमें खादी बेचना नहीं है, खादी पहनना है। खुद कातकर खादी पहनना है। खादी भण्डारोंके लिए हम सरकारसे लाइसेंस लें, इससे तो यह अच्छा है कि खादी मर जाये, दुकानें मिट जायें। खादीको अगर दूसरोंके रहमपर जीना पड़े तो वह रह नहीं सकती। उसके नसीबमें फिर मिट जाना ही बदा है। खादीकी दृष्टि क्या है यह आप समझ लेंगे तब आपको घबराहट नहीं होगी। भण्डार कैसे चलेंगे और केन्द्र कैसे चलेंगे, इसका डर न रहेगा। जब हमने कदम उठाया है, साहस किया है, तो हमें आपत्तियोंके लिए प्रस्तुत रहना होगा। अगर इसमें धक्का खाना पड़ा, तो भले ही खाना पड़े, उसको हम सह लेंगे।

आप ऊन और रेशमके बारेमें पूछते हैं। उन्हें कौन पहनता है? क्या उन्हें गरीब पहन सकते हैं? चन्द धनिकोंके लिए हम झंझटमें क्यों पड़ें? ये चीज सार्वदेशिक नहीं बन सकती। जिस तरह हम भण्डारोंमें दूसरी चीजें रखते हैं, उसी तरह चाहें तो ऊनी और रेशमी कपड़े भी रखें। लेकिन वह हमारा काम नहीं, वह हम समझ लें। ऊन और रेशमके लिए सूतकी शर्त अभी न लगायें। सूत-चलन अभी हम जारी न करें। ग्रामोद्योगकी चीजोंके लिए क्या हम सूत माँगेंगे? वैसे ही ऊन और रेशमको भी समझें। हम सच्चे रहेंगे तो खादीका महत्त्व कम होने वाला नहीं है। ऊन और रेशमका कपड़ा बेचकर भण्डारका खर्च निकालने का यदि हम सोचते हों, तो उससे खादीको लाभ नहीं, नुकसान होगा। अगर हम ऊन-रेशमके सहारे खादी चलायेंगे तो उसे हम पंगु बनायेंगे। फिर वह चल न सकेगी। वह खुद चल सकती है। उसे किसीके भरोसे रहने की आवश्यकता नहीं है।

१. यहाँ तात्पर्य आघात पहुँचाने या दमन करने की शक्तिसे है।

खादीको कोई मिटा नहीं सकता। मिल उसे क्या मिटा सकती है? मिल खुद मिट जायेगी। उसके लिए हमें चिन्ता नहीं है।

भण्डारोंमें कपाससे लेकर खादी बुनने तककी सब क्रियाएँ चलनी चाहिए। बिक्रीका काम तो उसके सामने एक तुच्छ काम है। काकूभाई बम्बई भण्डारके मन्त्री हैं। उनको विशेषता मैं देखना चाहता हूँ। उनके हाथमें कलम नहीं बल्कि चरखा देखना चाहता हूँ। चरखेमें, खादीकी सब क्रियाओंमें उनको प्रवीण होना चाहिए। मै अगर भण्डारमें रहूँ, तो सूत कातूंगा, तुनाई करूँगा। लोगोंको भण्डारों द्वारा कताई सिखानी है, बुनाई सिखानी है, लोगोको खुदके लिये कातना सिखाना है। आज हम चरखा सिखाने की कुछ कोशिश तो करते हैं, लेकिन खादीको घर-घर पहुँचाना हो तो ओटना, धुनना, आदि सभी क्रियाएँ लोगोंको सिखानी होंगी। पूनी खरीदकर सूत कातना मैं ठीक नही समझता। पूनी स्वयं बनानी चाहिए। यन्त्र-पिंजनकी पूनी आज चल रही है, वह अब बन्द हो जानी चाहिए। हर आदमी को तुनाई करके पूनी बनानी चाहिए और खुद बनाई हुई पूनीसे ही सूत कातना चाहिए। तभी उसने खादीको अपनाया, ऐसा कहा जा सकता है। मै तुनाईका प्रेमी हो गया हूँ। मठिया-जैसी घटिया दर्जेकी कपाससे भी तुनाईके जरीये २० अंक तकका सूत निकाल सकते हैं। मिलोंमें तो ऐसी कपाससे ६-७ अंकका सूत भी नहीं कतता। धुनाईसे तुनाई मै पसन्द करता हूँ। उसमें न क्षय-रोग होने का डर है और न दमा होने का। राजमहलमें रहने वाली महारानी भी इसे आसानीसे कर सकती है। छोटे बच्चे और बूढ़े भी तुनाईसे पूनी बना सकते हैं। ऐसी यह सीधी और सादी क्रिया है।

आज हमें खादीका प्रचार पीठपर खादी लादकर फेरी करते हुए या भण्डारोंमें बेचकर नहीं करना है। हमें किसीको तैयार खादी नहीं देनी है। हम कहेंगे यह चरखा ले लो, यह रुई ले लो, इसे धुनो, पूनी बनाओ और कातो। अपने गाँवमें ही बुनकरसे खादी बुनवा लो और पहनो। मैं तो यह कहूँगा कि भण्डारोंमें खादी ही क्या बल्कि पूनी और रुई भी नहीं रखनी है। लोग माँगें तो हम कपास उन्हें दे दें और कताईके सरंजाम[1] का और सिखाने का प्रबन्ध कर दें। फिर आप देखेंगे कि खादीकी या कपड़ेकी हिन्दुस्तानमें कोई दिक्कत न रहेगी। कपड़ेका राशनिंग किया जाता है, लेकिन कपड़ेका अकाल फिर भी दूर नहीं हो पाता। वह मैं दूर कर सकता हूँ। कपड़ेकी बात मुझे सौंप दी जाये तो मैं सबको कपड़ा दे सकता हूँ। मैं बंगाल जा रहा हूँ। यदि मेरी बात मान ली जाये, तो वहाँ कपड़ेका अकाल कैसे रह सकता है वह मैं देखूँगा।

आप पूछते हैं कि अस्पतालके लिए खादी दें या न दें। अस्पतालके बीमार लोग सूत कहाँसे लायेंगे? वे कैसे सूत कात सकते हैं? अस्पतालकी तरह ही कांग्रेस कमेटियाँ, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, बैंक आदि संस्थाओं तथा प्रदर्शनी, कांग्रेसकी बैठकों

१. तात्पर्य उपकरणोंसे है।

आदि कामोंमें हजारों रुपयोंकी खादी लगती है, ये कहाँसे सूत लायेंगे? क्या बिना सूत उन्हें खादी देना ठीक न होगा? मैं कहता हूँ अगर ये संस्थाएँ सूत नहीं दे सकतीं तो उनको खादीका लोभ छोड़ देना चाहिए। वे सूत माँगकर ला सकते हैं, अपने सदस्योंसे कतवा सकते हैं या मित्रों आदिसे भी प्राप्त कर सकते हैं। मैं सूत-शर्तके बारेमें अपवाद नहीं करना चाहता। पूनाके दिनशा मेहताके प्राकृतिक चिकित्सालयको मैंने अपनाया है। वहाँ मैं मिलका कपड़ा थोड़े ही इस्तेमाल कर सकूँगा? मैंने दिनशासे कहा, मैं अपना सूत तुम्हें दूँगा, उससे तुम खादी ले लो। चाहे कोई राजा हो या महाराजा हो, सबको सूत देना होगा।

सूत-शर्तके प्रस्तावमें अड़ोस-पड़ोससे पैसा देकर सूत खरीदने की सहूलियत रखी गई है। लेकिन यह मेरे मंशेके विरुद्ध है। मैं ऐसा नहीं चाहता। मैंने तो यह कहा था कि अपने मित्रोंसे या पड़ोसीसे सूत ले सकते हैं, लेकिन वह पैसेसे नहीं। मित्रोंसे हम पैसा देकर थोड़े ही कोई चीज लेते हैं? वह तो सौदा हुआ। अगर हमारे पास कोई चीज न हो तो हम अपने पड़ोसीसे ले लेते हैं। वह चीज हमारे पास आ जाने पर हम उसे लौटा भी देते हैं। पड़ोसीके नाते वह उसे लेता भी नहीं। लेकिन उसमें पैसेकी कोई बात नहीं होती। नौकरसे कतवाने की बात भी प्रस्तावमें है। उसका मतलब भी यह है कि जिस तरह हमारे परिवारके लोग सूत कातते हैं और वह सूत हम अपना कहकर दे सकते हैं, उसी तरह हमारे घरके जो नौकर हैं उन्हें भी हमारे परिवारके अंग समझकर उनका सूत हम अपना कह सकते हैं। लेकिन सिर्फ कातने के लिए अगर कोई नौकर रखे तो वह ठीक नहीं होगा। वह तो सूत खरीदना ही हुआ। घरके कामोंके लिए रखे हुए नौकर अगर थोड़ा समय सूत कातें और वह हमें दें तो इसमें आपत्ति नहीं। बम्बईके 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' के कार्यालयमें खादी चाहिए थी। वे मेरी तरफ आये। उन्होंने कहा, "हम सूत कहाँसे लायेंगे?" मैंने कहा, "तुम्हारे आफिसमें कितने ही पट्टेवाले (चपरासी) हैं, कितने ही नौकर हैं जो सिर्फ पते चिपकाने का ही काम दिन-भर करते रहते हैं, उनको एक-दो घण्टेका समय दे दो, उनको कातना सिखा दो और फिर उस सूतसे तुम खादी ले सकते हो।"

शहरोंमें सूत कातने के लिए क्लब बनाने के बारेमें मैंने सुझाया था। लेकिन मैं देखता हूँ कि उसका दूसरा ही अर्थ लगाया गया। बम्बईमें क्लब बना, वह एक सूत बेचने का जरिया बन गया। वहाँ पर मजदूरोंसे लोग कातते हैं और उनका सूत खरीदकर ग्राहक भण्डारोंसे खादी लेते हैं। यह तो सत्यका खून हुआ। मैंने तो यह कहा था कि बड़े-बड़े शहरोंमें रहने के लिए भी काफी जगह नहीं होती, छोटे-छोटे कमरोंमें रहना पड़ता है, जगहकी तंगी होती है। वहाँ चरखा रखना, धुनना आदि कामोंमें मुसीबत होगी। इसलिए भण्डारोंमें, मोहल्ले-मोहल्ले में कताईके क्लब बना दिये जायें और वहाँपर आकर लोग सूत कातें, धुनें, पूनी बनायें।

इससे उनको जगहकी तंगीके कारण सूत कातने में जो अड़चन होगी, वह दूर हो सकती है। साथ ही लोग एक जगहपर कातने आयें, तो उनको सिखाने

का प्रबन्ध भी आसानीसे हो सकता है। लेकिन मेरी कल्पनाके कताईके क्लब के बदले दूसरी तरहके क्लब चलाये गये। ये बन्द हो जाने चाहिए। हमें सत्य से निकल नहीं जाना चाहिए। हमें अपने दिलको धोखा नहीं देना है। हमें खादी बेचने का लोभ अब छोड़ देना चाहिए। अब खादी सिखाने का लोभ रखना होगा। इससे खादीकी बिक्री अगर बिलकुल बन्द हो जाये तो भी कुछ हर्ज नहीं। लेकिन जिस खादीकी मैं कल्पना करता हूँ उसकी इससे वृद्धि ही होगी।

आप पूछते हैं कि बम्बई भण्डारका स्वरूप अब क्या हो। मैं भी चाहूँगा कि मेरा ख़याल साफ़ बतला दूँ। पहले तो उस भण्डारको हमें कालबादेवी-जैसे मध्य बाजारसे उठा लेना चाहिए। दादर, पारला [विले पारले], ऐसे किसी उपनगरमें या उससे भी दूरके स्थानमें, जहाँ आसानीसे हमें भरपूर ज़गह मिले, वहाँ ले जाना चाहिए। भण्डारकी आजकी प्रवृत्तिमें भी तबदीली करनी होगी। व्यवस्थापक ग्राहकोंको खादी खरीदने के लिए आकर्षित नहीं करेगा। वह तो वहाँ बैठकर तकलीपर सूत कातेगा, अपने साथीदारोंसे कतवायेगा। ग्राहकोंके साथ बातचीत करेगा, उन्हें खादीकी नई नीति समझाने की कोशिश करेगा। कोई सीखने के लिए तैयार हो तो उसे कताई सिखलायेगा। वह भी तैयार पूनीसे नहीं, बल्कि कपासकी ओटाईसे लेकर धुनाई करके संयुक्त कताई सिखलायेगा। इस नई जगहमें वह कुछ कारीगर जमा कर लेगा, करघे चलवायेगा, कातने वालोंका सूत बुनवा देगा, चरखे आदि सरंजाम तैयार करवायेगा, ग्राहकोंका सरंजाम दुरुस्त कर देगा। वहाँकी हवा शुद्ध होगी, वायुमण्डल शुद्ध होगा, सफाई व टीपटाप होगी। चरखे तैयार होंगे व वातावरण इस कदर आकर्षक होगा कि वहाँ बैठकर कातने का दिल होगा। वहाँ आकर जो खादी खरीदना चाहें उनका भी इन्तजाम होगा। आज तक बम्बई भण्डार "क्लीअरीग हाऊस" रहा। अब भी रहेगा। पर ढंग दूसरा होगा। आज तक बम्बईके ग्राहक क्या चाहते हैं उस ओर हम नजर डालते थे। किसी खास फैशनके रूमालकी माँग हो तो हम उत्पत्ति केन्द्रोंको कहते थे, ऐसे रूमाल बनाओ। खास किनारी देकर आन्ध्रको कहते थे इस तर्ज की साड़ियाँ बनाइए। वैसा माल बनाने के लिए उन स्थानोंपर भण्डारके प्रतिनिधि तक भेजते थे। हमने मछलीपट्टममें साड़ियाँ छपवाना शुरू करवाया। इससे जो कला मरने लगी थी उसका जीर्णोद्धार हुआ। लेकिन अब यदि हम अपनी पतवार नहीं बदल देंगे तो वही चीज खादीको मिट्टीमें मिला देगी। अब तो कार्यालयोंको अपने इर्द-गिर्दकी जरूरतें पूरी करनी है। उसी नजरसे माल बनाना है। वहीं खपाना है। किस्में कैसी हों, इस बारेमें बम्बईके आदेश पर कार्यालयोको नहीं चलना है। वहाँ जो किस्में बची हों वह बम्बईको ले लेनी हैं। वे ही खपानी हैं और उसमें सन्तोष मानना है। शहरोंको मनचाही किस्में मँगा देना, यह अब हमारा धर्म नहीं है। बल्कि वे अपनी जरूरतकी चीजें कैसे बना लेवें, इसकी शिक्षा देना हमारा धर्म है।

इसीलिए मैंने कहा कि बाजारसे भण्डारको उठा लेना है। शहरके पड़ोसमें कोई रमणीक लम्बी-चौड़ी जगह लो। जंगलमें मंगल करो। ऐसा कहा जाता है कि पुराने जमानेमें सूरत शहरके बाहर अंग्रेजोंने ताप्ती नदीके किनारे अपनी बड़ी कोठी डाली थी। वहाँसे वे राज चलाने लगे। उनकी प्रवृत्ति हिन्दुस्तानकी खादी व दूसरे ग्रामोद्योगोंको कुचल डालने की थी। हमारी प्रवृत्ति उन्हें सजीवन करने की होगी। उस जगहमें कोई भूला-भटका कारीगर आया तो उसे करघेपर बैठा दीजिए। कताई, धुनाई या और-और ग्रामोद्योग उनसे जारी करवाइए। एक नमूनेदार देहात ही बसा लीजिए। खादी भण्डारको एक आकर्षक केन्द्र बना दीजिए। बम्बईकी अशान्तिमें [जो] शान्ति लेना चाहें, वे वहाँ आयेंगे। कुछ नहीं तो हर शनिवारको यहाँ आयेंगे। खादी भी वहींसे ले जायेंगे व कताई-धुनाई भी सीख जायेंगे। वहाँ देहाती तरीकेसे अपनी चीजें निर्माण करोगे तो शहरी लोगोंको भी देहाती जीवनका रस चखा सकोगे।

बम्बईके लोगोंके प्रति हमारी जिम्मेदारीका खयाल करते हो तो मैं तो कहूँगा कि "जिम्मेदारी कैसी है?" अगर बम्बईके लोगोंकी भावना, रसवृत्ति आज की-सी रही तो करोगे क्या? घोड़ोंकी रेस, जुआ, सिनेमा, नाटक, नाच इनमें आप लोग रस ले सकेंगे क्या? जिन्हें उसी ओर जाना है उनके लिए हम क्या कर सकते हैं? हाँ, अगर ग्राम-जीवनकी सुविधा कोई चाहे तो हम उन्हें अवश्य न्योता दें। उनकी सुविधाएँ कर दें। यही हमारा फर्ज अदा करना होगा।

आप कहते हैं कि बम्बई राजकीय मानस रखने वाला शहर है, वहाँ खादी की नई नीति तभी पनप सकती है जब उन लोगोंको हम यह समझा सकें कि मुल्ककी राजकीय स्थिति भी उस नई नीतिपर मुनहसिर है व उसके बगैर हमारा राजकारण हम ताकतवर व अभेद्य नहीं बना सकते। मैं तो इतना ही उत्तर दूंगा कि खादी यदि अहिंसाका प्रतीक हो तो ही मेरे पास उसकी कीमत है। मगर एक अमेरिकनने कहा था कि शब्द नहीं उगते, काम उगता है। अपनी श्रद्धा व तपश्चर्याने खादी भण्डारका व आसपासका वायुमण्डल आप कैसा निर्माण कर सकते हैं, उसीपर आपकी कामयाबी निर्भर रहेगी।

खादी-जगत्, जनवरी, १९४६

१८५. कस्तूरबा निधिकी शिक्षा-सम्बन्धी नीति

२८ नवम्बर, १९४५

कस्तूरबा निधिके मातहत शिक्षाका जो भी काम चले — चाहे बच्चोंकी तालीम हो या सयानोंकी — उसमें शिक्षा शरीर-श्रम और हस्त-उद्योगोंके द्वारा ही दी जाय।

इस शिक्षाका काम ठीक चलाने के लिये खास तालिमयाफ्ता (ट्रेंड) शिक्षकोंकी जरूरत होगी। इन शिक्षकोंको स्वीकृत ट्रेनिंग स्कूलोंमें तालिम देने का इन्तजाम करना चाहियें।

जब तक ऐसे शिक्षक तैयार नही होते तब तक शरीर-श्रम और हाथ-उद्योगों के साथ-साथ शिक्षा चल सकती है लेकिन वह उद्योगकी शिक्षा भी ठीक होनी चाहिये।

अध्यापकोंको चाहिये कि जब तक उन्हें बाकायदा ट्रेनिंग नहीं मिलती तब तक वे नई तालिमका साहित्य पढ़कर जहां तक हो सके अपना काम नई तालिमके ढगसे ही चलाने की कोशिश करे।

मो० क० गांधी

एक नकलसे : कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

१८६. पत्र : वनमाला परीखको

सेवाग्राम
२८ नवम्बर, १९४५

चि० वनुड़ी,

तेरा पत्र मिला। तेरी पवित्रताके बारेमें मुझे कोई शंका नहीं है, दृढ़ता के बारेमें भी नहीं। लेकिन तू जो-कुछ करती है उसके औचित्यके विषयमें खुद तुझे शंकाका आभास-भर भी हो तो तुझे विचारपूर्वक उचित सुधार कर लेना चाहिए। मान ले, तू किसीसे विनोदमें कहे, "मैं तो विवाहिता हूँ, मेरे दो-चार लड़के हैं, सामने बैठे सज्जन मेरे पति हैं, वे लड़के मेरे हैं, सास स्वर्गवासी हो गई हैं," तो इस तरहके विनोद तो हो सकते हैं, लेकिन उनमें समाया भय तो स्पष्ट देखा जा सकता है। इसीलिए नाटकोंमें होने वाली कुछ बातोंके विषय में आज भी बड़े-बड़े लोगोंके बीच टीका-टिप्पणी होती रहती है। यदि कोई विवाहित पुरुष नाटकमें राम बने और विवाहित स्त्री सीता, तो यह दोनोंके लिए कहाँ तक उचित है? और फिर दर्शकोंपर इस राम-सीताका कैसा प्रभाव पड़ता होगा, यह भी बहुत विचारणीय है। आजके युग-प्रवाहमें बहकर हम चाहे जो करें, जो पसन्द करें, दूसरोंको चाहे जो पसन्द करते देखें, पर यह तो

अलग बात है। यह सब मैं लिखना नहीं चाहता और न मेरे पास इतना वक्त ही है, पर तू तो विचारशील भी है, इसलिए इस पत्रमें थोड़े शब्दोंमें मैंने तेरे सामने एक बड़ा प्रश्न पेश किया है।

तेरी तबीयत ठीक रहती होगी और तुम सब आरोग्य भवनको सभी प्रकारसे स्वच्छ बनाने में जुट गये होगे। अब तो तेरे पास और भी बहुत-से लोग आ गये हैं। इन सबका उपयोग सफाईके काममें कर लेना। मुन्नालालको वहाँ भेजने की कोशिश कर रहा हूँ। लगभग सात दिनमें उसके वहाँ पहुँचने की आशा करता हूँ।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

जोहराका पत्र मिला, उसे फाड़ दिया है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७९६) से। सी० डब्ल्यू० ३०१९ से भी; सौजन्य : वनमाला म० देसाई

१८७. पत्र : हरि-इच्छा कामदारको

सेवाग्राम
२८ नवम्बर, १९४५

चि० हरि-इच्छा,

इतने सारे बच्चोंकी माँ बन जाने पर भी तू वैसी ही नासमझ है। काम इतना अधिक हो कि खुद पत्र न लिख सकूँ और किसीसे लिखने के लिए कह दूँ तो इसमें बुरा क्या है? तूने सारे पारिवारिक समाचार देकर ठीक किया। जब मैं आश्रममें स्थायी रूपसे रहने लगूँ तब तू अवश्य आना और जितनी इच्छा हो उतने समय रहना। अपने बेटेको साथ लाना। तुझे शायद मालूम न हो कि पूनामें वालजी[1] मुझे रोज किताब पढ़कर सुनाने के लिए आते थे। मैं चुपचाप कातता रहता और वे आधा-पौना घण्टा पढ़कर सुनाते रहते थे।

तेरी तबीयत अच्छी होगी। अभी तो मैं बंगाल और मद्रासकी यात्रापर जा रहा हूँ। फरवरीसे पहले वापस आने की सम्भावना नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

श्री हरि-इच्छाबहन पी० कामदार
खाडिया पोल
राजमहल रोड
बड़ौदा

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ७४७५) से। सी० डब्ल्यू० ४९२१ से भी; सौजन्य : हरि-इच्छा कामदार

१. वालजी गोविन्दजी देसाई

१८८. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

सेवाग्राम
२८ नवम्बर, १९४५

चि० कान्ति,

तेरा पोस्टकार्ड मिला और विवरण भी। सम्भव है, विवरण तूने तैयार किया हो। यदि ऐसा हो तो उसकी अंग्रेजी कमजोर मानी जायेगी। यह सामान्यतया दोष-रूप नही माना जाना चाहिए, लेकिन इस देशमें ऐसा माना जाता है, क्योंकि हम विदेशी भाषाको शुद्ध रूपसे लिखने और बोलने में गर्वका अनुभव करते हैं, हालाँकि ऐसा होना नही चाहिए। मैं तो भाषा-मात्रका पुजारी हूँ। मैं शुद्ध भाषा लिखने का खास ध्यान रखने वाला हूँ, फिर भी अपनी बात समझाने का लोभ कहीं अधिक रखता हूँ और भूल होने से घबराता नही हूँ। यदि ऐसा नही होता तो मैं हिन्दी आदि बोल ही नही पाता। इतना सब लिखने के बाद मेरी राय यह है कि विवरणकी अंग्रेजीमें भूलें है, और उसे सुधारकर तुझे भेजने का मेरे पास समय नही है। विवरण अच्छा है, इसलिए जो पढ़ना चाहता है उसे पढ़ने के लिए दे देता हूँ। अब इसे जाजूजी के पढ़ने के लिए भेज रहा हूँ।

तू अपने बनाये हुए संगठनको तोड़ दे इसका मुझे दुःख नहीं होगा। तेरे उसमें से निकल आने से वह टूटे हुए के समान ही होगा। मेरी केवल इतनी ही इच्छा है कि मुझे तेरे स्वभावमें जो उतावलापन और क्रोध दिखता है, इसमें उसका लेशमात्र भी नहीं होना चाहिए। साथियोंकी उपेक्षाके बावजूद कभी-कभी यह धर्म हो जाता है कि जो संघ गठित किया हो उसमें विनम्रतापूर्वक कायम रहा जाये। यह बात तो मैं तबसे करता आ रहा हूँ जब मैं तुझसे भी छोटा था और इसमें मुझे लाभ तो हुआ ही है। सहनशीलता विचार करने योग्य गुण है। तू तो 'गीता' का जानकार है। उसमें निहित गूढ़ तत्त्वोंपर मनन करना। इतनी चेतावनी देने के बाद मैं तेरे निर्णयको स्वीकार करना चाहता हूँ। अपने पास आये विद्यार्थियोंको यदि तू शिक्षा देगा और इस तरह लोगोंके जीवनमें गहरे प्रवेश करेगा तो उसमें से कदाचित् नया संघ भी पैदा हो सके। अब कपासकी समस्त क्रियाओंपर तू आरम्भसे ही ज्यादा ध्यान देना। मुझे दिन-ब-दिन इस बातका एहसास हो रहा है कि इसमें बहुत रहस्य है।

तेरी परीक्षाका परिणाम शुभ हो।

मैं ३० तारीखसे यात्रा आरम्भ कर रहा हूँ। मणिलाल कल रात आया और देवदास कल सुबह दिल्ली चला गया। वह कस्तूरबा स्मारक कोषके सिलसिलेमें आया था।

चि० सरू और शान्तिको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३८०) से। सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

१८९. पत्र : दिनशा मेहताको

सेवाग्राम
२८ नवम्बर, १९४५

चि० दिनशा,

तुम्हारा पत्र मिला, भाई जहाँगीरका भी।

तुम्हें कुछ सुझाव तो देना है ही, लेकिन कुछ समय बचा पाऊँ तभी। फिलहाल तो मैं इतना ही लिख रहा हूँ। जो सफाईके काममें लगे हों उन्हें पूरा प्रोत्साहन देना। और अपना काम करते हुए तुम स्वयं जितना ध्यान दे सको उतना देना। तुमने सारा फर्नीचर निकाल देने का निर्णय कर ही लिया होगा। फर्नीचरको कीमत निकालने के लिए तुम उसे बम्बई ले जाकर बेचना चाहो तो वैसा करो अथवा यदि तुम चाहो कि मैं उसे बेचूँ तो तदनुसार मुझे सूचित करो, जिससे मैं जहाँ भी रहूँ वहाँसे इसकी व्यवस्था कर सकूँ। हम उसे कौड़ियोंके दाम नहीं बेचेंगे।

यहाँसे भाई मुन्नालाल छह-सात दिनमें वहाँ पहुँचेंगे। वे सफाईके काममें भाग लेंगे। मैं समझता हूँ कि वे हिसाब-किताब रख सकते हैं और हाट-बाजार का जितना काम है उतना कर सकते हैं। वे इन तीनों कामोंमें कुशल हैं और ये काम उन्होंने किये भी हैं। मैं समझता हूँ कि श्री मनगे हिसाब-किताब और हाट-बाजारका काम करते हैं। मेरा विचार उन्हें इन कामोंसे सर्वथा मुक्त रखने का है। मुझे इस बारेमें कोई सन्देह नहीं है कि उन्हें स्वयंको किसी अन्य कामके लिए तैयार रखना चाहिए। उन्हें नैसर्गिक उपचारक बनना चाहिए। कुछ अभ्यास भी कर लेना चाहिए। यदि तुम मेरी अनुपस्थितिमें भाई मुन्नालाल को वहाँ आने से रोकना चाहो अथवा तुम्हारा कुछ और विचार हो तो तुम आश्रमको तार दे सकते हो। १ जनवरीसे हम जो काम आरम्भ[1] करना चाहते हैं उसे अपने बीच तो यथासम्भव जल्दीसे-जल्दी आरम्भ कर देना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. उरुली कांचनमें नैसर्गिक उपचार-गृह

१९०. पत्र : सत्यदेवको

सेवाग्राम
२८ नवम्बर, १९४५

भाई सत्यदेव,

आपका खत मिलने पर बहुत राजी हुआ हूं। जिस हुक्मकी आप बात करते हैं, उसकी नकल चाहिए। जैसा आपने लिखा है वैसा तो मेरे दिमागमें आ नहीं सकता। मैं तो मानता हूं कि आपके बयानमें कुछ भी गैरसमझ है। आप पंडित जवाहरलालको भी पूछें और मुझे उत्तर कलकत्ता भेजें। वहां मैं सोदपुर खादी प्रतिष्ठानमें सतीशबाबूके यहां उतरूंगा।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१९१. प्रश्नोत्तर

प्र० : रचनात्मक कार्यका उद्देश्य ही जनताको अहिंसात्मक राज्यपद्धति के लिए तैयार करना बतलाया जाता है। क्या यह व्याख्या ठीक समझी जा सकती है? या "ऐसी समाज-व्यवस्था और राज्य-व्यवस्था, जिसमें एक आदमी को दूसरे आदमीके श्रमसे नाजायज फायदा उठाने के लिए गुंजाइश नहीं है" यह व्याख्या ठीक होगी?

उ० : आपकी व्याख्या ठीक तो है, लेकिन अधूरी है। कैसे अधूरी है सो आपके दूसरे प्रश्नके उत्तरमें बताया जायेगा।

प्र० : यदि यह व्याख्या सही है तो तात्त्विक दृष्टिसे मालूम होता है कि ऐसी समाज-व्यवस्था और राज्य-व्यवस्थाका निर्माण हम यन्त्र-शक्तिका ज्यादासे-ज्यादा उपयोग करके भी कर सकते हैं। तो क्या अहिंसक राज्य-पद्धतिके लिए ज्यादासे-ज्यादा मात्रामें हस्त-व्यवसायकी जरूरत है? यदि है तो कैसी?

उ० : अहिंसाके टुकड़े नहीं होते। अहिंसा मनुष्य-मात्रका गुण है या यों कहिए कि अहिंसा उसकी जाग्रत अवस्थामें उसका गुण होना चाहिए। मनुष्य अहिंसा-परायण हो, यही उसकी जाग्रत अवस्थाका बड़ा चिह्न है। अगर इस

तरहसे अहिंसाको देखा जाये तो मालूम होता है कि हमें अपनी हाजतें अपने हाथोंसे ही पूरी करनी चाहिए। अगर हम ऐसा न करें तो इसके लिए हमें दूसरी शक्तिपर निर्भर रहना पड़ेगा, और जब तक यह स्थिति रहेगी तब तक हम अपनेको निर्भय महसूस नहीं करेंगे। और दूसरा भय यह भी रहा है कि अगर हम यन्त्रका उपयोग ज्यादासे-ज्यादा करें तो हमें उनकी रक्षा करने के लिए बड़ा उद्योग करना पड़ेगा, अर्थात् फौज रखनी पड़ेगी, जैसा कि आज जगत् में हो रहा है। बात तो यह है कि हमको बाहरके आक्रमणका कोई डर न रहे, फिर भी भीतर ही जिनके हाथोंमें बड़े यन्त्र होंगे उनके दास बनकर तो रहना ही होगा। अणु बमको ही लीजिए। अणु बम जिनके पास है उनका डर आज उनके मित्रको भी होता है। तात्त्विक दृष्टि हमको यन्त्रोंके व्यवसायसे बचा लेती है।

प्र० : सूत कातने के पक्षमें एक कारण ऐसा दिया जाता है कि उससे मनुष्य स्वावलम्बी बनता है। क्या इस दृष्टिसे परावलम्बी आदमीकी बनिस्बत स्वावलम्बी आदमी समाजकी ज्यादा सेवा कर सकता है? क्या आपका यह कहना है कि स्वावलम्बीमें और समाज-सेवाकी शक्तिमें कोई ऐसा सम्बन्ध है जिससे हम ऐसा कह सकें कि जो मनुष्य अधिकसे-अधिक स्वावलम्बी हो वह समाजकी अधिकसे-अधिक सेवा कर सकता है?

उ० : इस शंकाका समाधान करने के लिए भी अहिंसक दृष्टिको सामने रखना होगा, क्योंकि मैंने जो व्यवस्था बतलाई है, उसकी जड़में सत्य और अहिंसा है। हमारा प्रथम कर्तव्य तो यह है कि हम समाजके लिए भार-रूप न हों, अर्थात् स्वावलम्बी बनें। अर्थात् स्वावलम्बनमें ही एक प्रकारकी सेवा तो आ गई। अगर इस दृष्टिसे हम स्वावलम्बी बन जाते हैं, तो सेवाकी दृष्टिसे जितना समय बचा सकें उसमें समाजकी सेवा करेंगे। यदि यह मान लें कि सभी स्वावलम्बी हो गये हैं, तब तो किसीको कष्ट होगा ही नहीं। उस हालतमें किसी की सेवा करने की आवश्यकता ही नहीं रहती, लेकिन अभी हम वहाँ तक पहुँचे ही नहीं हैं। इसीलिए तो समाज-सेवाकी बात होती है — अगर हम स्वावलम्बन को आखिरकी स्थिति तक ले जायें, तो भी, क्योंकि मनुष्य सामाजिक प्राणी है, कुछ-न-कुछ समाज-सेवा उसे लेनी पड़ेगी। अर्थात् मनुष्य जितना स्वावलम्बी है उतना ही परावलम्बी भी है। जब समाजको ठीक रखने के लिए ऐसा परावलम्बन होता है तब उसका नाम परावलम्बन न रहकर सहयोग हो जाता है। सहयोगमें सुगन्ध है, और सहयोगियोंमें कोई दुर्बल और कोई सबल नहीं रहता, सब एक-दूसरेके बराबर होते हैं। परावलम्बनमें अपंगताकी बू आती है। एक कुटुम्बके लोग जैसे स्वावलम्बी रहते हैं वैसे परावलम्बी भी रहते हैं। लेकिन 'मेरे-तेरे' का भाव कुटुम्बमें नहीं रहता। इसलिए वे सब सहयोगी कहे जाते हैं। उसी तरह समाज या देश या मनुष्यजातिको एक कुटुम्ब मान लिया जाये, तो सब मनुष्य सहयोगी बन जाते हैं। ऐसे सहयोगका चित्र यदि हम अपनी कल्पनामें लायेंगे

तो पता चलेगा कि हमको जड़ यन्त्रका सहारा लेने की आवश्यकता नहीं रहेगी। अथवा इन यन्त्रोंका सहारा ज्यादासे-ज्यादा नहीं, बल्कि कमसे-कम लेना पड़ेगा और उसीमें समाज सुरक्षित और स्वरक्षित बनेगा।

प्र० : यदि ऐसा है तो खेतीकी बनिस्बत आप कातने पर जो ज्यादा जोर देते हैं क्या उसका कारण राजकीय है? या यह कि लोग जितनी आसानीसे कात सकते हैं उतनी आसानीसे सब लोग खेती नहीं कर सकते?

उ० : मेरे नजदीक राजकीय, सामाजिक, आर्थिक जैसा कोई विभाग आवश्यक नहीं है। जिस चीजमें राजकारण है उसमें समाजकारण भी है और अर्थकारण भी। एकमें दूसरे आ ही जाते हैं। समझने के लिए हम विभाग करते हैं सही। हमको विभाग करने पड़ते हैं। खेतीपर मैंने जोर नही दिया, उसका एक सबल कारण यह है कि मैं खेतीका ज्ञान नहीके बराबर रखता हूँ। इसलिए अगर मैं उसपर वजन दूँ भी तो उसके बारेमें बतलाऊँ क्या? चरखेके विषयमें ऐसा नही है। उसका मुझे काफी ज्ञान हो गया है। दूसरा कारण यह है कि विदेशी आक्रमणके सबबसे चरखेका नाश हुआ और किया गया। खेतीका तो नाश हो ही नहीं सकता था। लेकिन खेतीका यहाँ तक रूपान्तर किया गया कि जनताका दासत्व बढ़ा। चरखेपर जोर देने का तीसरा कारण यह था कि खेतीमें हाथकी जो विशेषता है उसका कमसे-कम प्रदर्शन होता है। खादी बनाने में और उसकी सब क्रियाओंमें हाथ और अँगुलियोंका जितना उपयोग होता है उतना शायद ही और किसी उद्योगमें होता हो।

चौथा कारण यह है कि विदेशियोंका कब्जा पहले जमीनपर ही होता है और वे जमीनकी मार्फत दूसरी बातोंपर कब्जा करते हैं। इसलिए जमीनकी सुधारणामें सरकारकी सहायता बहुत जरूरी होती है। इन सब और इसी तरह के कारणोंसे कातने पर जोर दिया गया है।

प्र० : मनुष्य-समाजके भौतिक विकासका एक तत्त्व तो ऐसा मालूम होता है कि मनुष्य स्वावलम्बनमें परावलम्बनकी तरफ दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। क्या आप ऐसा समझते हैं कि यह प्रवृत्ति ठीक नहीं है, और आखिरमें इसकी विरोधी प्रवृत्तिका पुनरागमन होगा?

उ० : इस प्रश्नका मतलब मैं ऐसा समझा हूँ कि समाज यन्त्रकी ओर बढ़ रहा है। अगर मैं सवाल ठीक समझा हूँ, तो मेरा उत्तर यह है कि समाजको यन्त्रोंकी गुलामीसे छूटना ही होगा। क्योंकि यन्त्रकी गुलामीसे हमारी इन्द्रियों की और हमारी वृत्तिकी गुलामी बहुत बढ़ जाती है।

प्र० : क्या आपका यह विश्वास है कि केवल प्रचारसे रचनात्मक कार्यक्रम अपना उद्देश्य आपके जीवन-कालमें सफल कर पायेगा? मनुष्यकी स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर) देखकर क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि प्रचारके साथ-साथ कुछ कानूनी मदद (लेजिस्लेटिव एड) भी रचनात्मक

कार्यक्रमका अमल जनतासे आम तौरसे कराने के लिए जरूरी है, विशेषतः मौजूदा यान्त्रिक युगमें? ऐसी मदद जनताके चुने हुए प्रतिनिधियोंसे ली गई तो क्या उसमें अहिंसा तत्वका भंग होगा? यदि होगा, तो क्यों?

उ० : मैंने बहुत बार कहा है कि हमें अपनी शर्तोंपर तो सरकारका सहयोग लेना ही है, बल्कि सारे जगत्का सहयोग लेना है। एक समय था कि जब मैं मानता था कि धारासभासे हमको रचनात्मक कामके लिए कमसे-कम सहयोग मिल सकता है। अब मैं समझ गया हूँ कि अगर धारासभामें लोकमत के प्रतिनिधि जा सकें तो उनकी मार्फत रचनात्मक कार्यमें सहायता मिल सकती है। इसके साथ-साथ हमें यह तो याद रखना ही होगा कि अगर हम प्रतिकूल संयोगोंमें भी रचनात्मक कार्य नहीं कर सकते, तो हम उसकी कीमत नहीं जान सकते। जगत् तो जान ही नहीं सकता। मैं तो तटस्थ भावनासे लेकिन अनुभव से कह सकता हूँ कि रचनात्मक कार्य करने में हम जितने आगे बढ़े हैं, उतनी ही लोक-शक्ति भी बढ़ी है। अगर हम रचनात्मक कार्यको सर्वमान्य बना सकें और सर्व जनताको मार्फत अमलमें ला सकें तो स्वराज्य हमारे हाथोंमें ही है।

सेवाग्राम, २९ नवम्बर, १९४५
खादी-जगत्, दिसम्बर, १९४५

१९२. पत्र : जे० एस० हॉयलैण्डको

सेवाग्राम, वर्धा
२९ नवम्बर, १९४५

प्रिय हॉयलैण्ड[1],

एक लम्बे अर्सेके बाद आपका पत्र पाकर बहुत प्रसन्न हुआ और मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि प्रोफेसर प्रिवा[2] और उनकी पत्नी[3] आपके साथ थे। बेशक वुडब्रुकमें, जैसा कि आपने याद दिलाया है, चौदह वर्ष पूर्व हमारे बीच जो समागम हुआ वह मुझे स्मरण है। मेरा खयाल है कि वुडब्रुक इतनी लम्बी अवधिके दौरान काफी विकसित हो चुका होगा, और हम सब जो "स्कूल फॉर द इम्बेसील्स" देखने गये थे वह, पता नहीं, अब कैसा चल रहा है।[4]

१. क्वेकर सम्प्रदायके एक सदस्य और एगथा हैरिसन और होरेस अलेक्जेण्डरके साथ इंडिया कंसिलियेशन ग्रुपके भी सदस्य; नागपुर-स्थित हिस्लप कॉलेजके शिक्षकके रूपमें सोलह वर्षों तक भारतमें रहे; बादमें वुडब्रुकके क्वेकर कॉलेजमें अध्यापन करने लगे।

२ और ३. एडमण्ड तथा इवॉन प्रिवा

४. गांधीजी १८ अक्तूबर, १९३१ को वुडब्रुक गये थे; देखिए खण्ड ४८, पृ० २०३।

सबको मेरा प्यार। मैं होरेस और एगथाके आगमनकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री जॉन एस० हॉयलैण्ड
वुडब्रुक सेटिलमेन्ट
बरमिंघम–२९

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४५१२) से। सौजन्य : वुडब्रुक कॉलेज और श्रीमती जेसी हॉयलैण्ड

१९३. पत्र : उत्तमचन्द शाहको

२९ नवम्बर, १९४५

चि० उत्तमचन्द,

तुममें मेरी इतनी श्रद्धा है कि मुझे विश्वास है कि नये कार्यमें भी तुम्हें यश मिलेगा और नई नीतिके अनुरूप चरखा संघका काम कमसे-कम गुजरातमें तो आगे बढ़ेगा ही। अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखना धर्म समझना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९४४३) से

१९४. पत्र : मणिलाल और सुशीला गांधीको[1]

[३० नवम्बर, १९४५ के पूर्व][2]

अरुण अच्छा है, लेकिन उसमें बहुत कमी है। वह जोड़ भी नहीं जानता, फिर भी बात जोड़, घटाना, गुणा, भाग सबकी करता है। जब मैंने कल इसकी जाँच की तब वालजीभाईने इसके बारेमें अपना जो विचार बताया था वह समझमें आया। लेकिन दोष उसका नहीं है। दोष माँ-बापका और अब यहाँ हम सब जितने लोग हैं उनका है। और यहाँ वाले लोगोंमें पहले तो मैं ही हूँ न?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९६०) से

१. यह अपने माता-पिता अर्थात् सुशीला गांधी और मणिलाल गांधीको लिखे अरुणके पत्रकी दूसरी ओर लिखा हुआ है।

२. अरुणके उल्लेखसे, जो ३० नवम्बर, १९४५ को गांधीजी के सोदपुर रवाना होने तक उनके साथ सेवाग्राममें थे।

१९५. प्रस्तावना : 'गांधियन कॉन्स्टिट्यूशन फॉर फ्री इंडिया' की

कदाचित् 'गांधियन कॉन्स्टिट्यूशन' प्रिंसिपल अग्रवाल[1] की पुस्तकके लिए उचित शीर्षक नहीं है। इसे कदाचित् एक सुविधाजनक और सुसम्बद्ध शीर्षकके रूपमें स्वीकार किया जा सकता है। इसका ढाँचा वस्तुतः प्रिंसिपल अग्रवालका तैयार किया हुआ है, और यह मेरे लेखोंके उनके अध्ययनपर आधारित है। वे कई वर्षोंसे उनकी व्याख्या करते आये हैं। और चूंकि उन्हें इस बातकी बहुत फिक्र है कि वे मेरे लेखोंकी किसी भी तरहसे गलत व्याख्या न करें, इसलिए वे मुझे दिखाये बिना कोई चीज प्रकाशित नहीं करते। इसमें लाभ और हानि दोनों हैं। लाभ तो स्पष्ट है। हानि यह है कि पाठक लेख-विशेषको हर तरहसे मेरा दृष्टिकोण समझने की भूल कर सकते हैं। इसलिए मैं उन्हें चेतावनी देता हूँ कि वे ऐसी कोई भूल न करें। यदि मुझे इन पृष्ठोंमें लिखे हर शब्दको अपनाना हो तो इन्हें मैं ही क्यों न लिख दूं! हालांकि मैंने इस संविधानको अन्य कार्योंके रहते मैं जितनी सावधानीके साथ इसे पढ़ सकता था उतनी सावधानी के साथ दो बार पढ़ने की कोशिश की है, फिर भी मै इसमें दिये गये प्रत्येक विचार और प्रत्येक शब्दको जाँच नहीं सका हूँ। और फिर मेरी शिष्टता और व्यक्तिगत स्वतन्त्रताकी भावना मुझे ऐसी धृष्टता करने की इजाजत भी नहीं देती। इसलिए मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि इस पुस्तिकामें इस बातका प्रचुर प्रमाण है कि लेखकने इसे यथासम्भव सही रूपमें प्रस्तुत करने के लिए बहुत सावधानीसे काम लिया है। इस पुस्तिकामें ऐसा कुछ नहीं है जो मुझे उन चीजों से असंगत लगा हो जिनका मैं प्रतिपादन करना चाहूँगा।

लेखकने कृपापूर्वक वे सब संशोधन इसमें कर लिये है जो मुझे आवश्यक लगे।

'कॉन्स्टिट्यूशन' शब्दसे पाठक यह समझने की भूल न करें कि लेखकने सम्पूर्ण संविधान देने का दावा किया है। उन्होंने पुस्तिकाके शुरूके पृष्ठोंमें बिलकुल स्पष्ट कर दिया है कि मेरी कल्पनाका संविधान कैसा होगा, इसकी यहाँ केवल रूपरेखा प्रस्तुत की गई है। भारतके लिए सविधान प्रस्तुत करने के लिए जो अनेक प्रयत्न किये गये हैं, मैं मानता हूँ, प्रिंसिपल अग्रवालकी यह कृति उनमें एक विचारपूर्ण योगदान है। उनके इस प्रयत्नकी खूबी यह है कि उन्होंने वह काम कर दिखाया है जो मैं समयाभावके कारण नहीं कर पाया था।

मो० क० गांधी

कलकत्ता जाते हुए रेलगाड़ीमें; ३० नवम्बर, १९४५

[अंग्रेजीसे]

गांधियन कॉन्स्टिट्यूशन फॉर फ्री इंडिया

१. श्रीमन्नारायण अग्रवाल

१९६. पत्र : तालीमी संघकी प्रबन्ध समितिको

३० नवम्बर, १९४५

कल मैं तालीमी सघका छात्रावास देखने चला गया। आश्रममें होशियारी-बहन[1] है न? उसके लड़के गजराजको तुम्हारे स्कूलमें भेजा है। उसका आग्रह था कि मैं उसका स्कूल देख लूं। कल सबेरे भी आया और पूछा कि आओगे न? मैंने कहा कि तुम्हारे स्कूलमें आकर क्या करूंगा। मैं वह जगह देखूंगा जहां तुम्हें सोना है। मेरा विचार तो उसकी मांको भी भेजने का था। पर खैर। सो अपनी प्रतिज्ञा पालन करने के लिए सबेरे घूमने के बाद वहा चला गया। मैंने वहां जो देखा उससे मुझे दुःख हुआ। मेरी आंखोंने नही होनी चाहिए वैसी गंदगी और अव्यवस्थाका दर्शन किया। मैं ज्यादा समय देना नही चाहता था, लेकिन जो मैंने देखा मुझसे बरदाश्त न हो सका और आधा-पौना घंटा पाण्डेको समझाने में लग गया।

मैंने देखा कि बच्चोंके अस्पतालके बरामदेके आगे पानी पड़ा था। मेरी आंखोंको खटका। वही लड़के हाथ-मुंह धोते हैं। इससे मच्छर पैदा होता है। इतना पानी व्यर्थ जाता है। हम किसी कुंडीमें ले, नही तो पास वृक्ष पड़े हैं, उनमें धोएं। यदि हजार लड़के हों तो आफत हो जाये। कमरेसे गुजरकर दूसरी तरफ बरामदेके सामने यही हाल था।

फिर मैं वहा गया जहां बच्चे सोते है। बाहर ही काफी कचरा था। अन्दर गया। चटाइयां व्यवस्थित ढंगसे न थी। एक बिस्तर खुलवाया। बहुत गन्दा था। चादर फटी हुई थी। एक-दो जगह सिया भी था, पर बहुत भद्दा। बाकी जगह वैसा ही फटा था। थिगली लगानी चाहिए थी। बहुत फट गया था तो दोहरा करके सी लिया होता। मैंने तो जेलमें कई दफा ऐसी गुदड़ी बनवाई। गरम हो जाती है और पक्की। गद्देकी रुई दब चुकी थी। एक मोटी भारी चीज बन गई थी। गरम नहीं थी। उसकी रुई निकालकर धुनना चाहिए था। गद्देके नीचेसे बहुत-से कपड़ेके टुकड़े निकले। बहुत गन्दे। मैं उनको साफ रखता, थिगली लगाने के काम लाता। चटाई बहुत गन्दी थी। उसे धोना चाहिए।

जमीन देखी। सोने की जगह है। पर बहुत बुरी हालतमें। सब टूटी-फूटी है। पाण्डेने कहा गोबर नही मिलता। गोबर हो तो अच्छा है, पर इसके बिना

१. बलवन्तसिंहकी भतीजी। बलवन्तसिंहके अनुसार, गजराजने गांधीजी से शिकायत की थी कि तालीमी संघ बहुत गन्दी जगह है।

भी काम चलता है। साउथ अफ्रिकामें गोबर कहां था? केवल मिट्टीसे काम चलता था। दीवारपर चीजें रखने के लिए लकड़ी लगी थी। उसपर हाथ लगाया, मिट्टीसे भर गया। पाण्डेके हाथको अपना हाथ मिला। वह भी मिट्टीसे भर गया। लड़केने कलमदान रखा था चटाईपर। कहां रखे बेचारा? पर रखने का कोई ढंग न था। एक-एक कलम और निबको देखा। दवात देखी। मेरा तो यह तरीका है न? और नई तालीमका भी होना चाहिए। मेरी दृष्टिसे सब गलत था। छोटी-छोटी चीजें हैं, पर छोटी चीजोंसे बड़ी बनती हैं। इनमें पैसेकी जरूरत नहीं। दृष्टिकी सूक्ष्मता होनी चाहिए, कला होनी चाहिए। यह सिखाना हमारा फर्ज है। नई तालीमका उद्देश्य है। अगर नहीं किया तो शिक्षकका दोष है। तुम्हारा दोष है। मैं तो यह भी मानूंगा कि मेरा दोष है। चलाने वाला तो मैं ही हूं न? शुरू किया और छोड़ दिया। अगर कोई यह कहे कि इस तरह तो मैं एक ही लड़केको सम्हाल सकता हूं तो मैं कहूंगा कि एक ही लो, ज्यादा न लो। ज्यादा लेते हैं तो सम्हाल नहीं सकते, तो उसमें असत्य आ जाता है।

बाहर निकला तो मेरी नजर उन टाटोंपर पड़ी जो तुमने बरामदेमें लगा रखे हैं। इसके लिए तुमसे लड़ना है। बरामदा होता है हवा और धूपके लिए। टाट बांधने से दोनों रुक जाती हैं। पिछला कमरा तो बिलकुल निकम्मा हो जाता है। अगर यह कहो कि लड़के ज्यादा हों तो क्या करें? तो यह कहूंगा कि हम इतने ही लें जिनका प्रबन्ध कर सकें। ज्यादा न लें।

पाण्डेकी मांको देखा। निहायत गन्दे कपड़े पहिने थी। नौकर-सी लगती थी। हिन्दुस्तानी भी नहीं जानती थी। और दो महीने यहां हमारे बीचमें हो गये। पाण्डेके अपने कपड़े भी ठीक न थे। गला खुला था। कफ भी खुले थे। हम मजदूर हैं, कुर्तेकी बाहें आधी होनी चाहिए। पीतल या कांचके बटन हमारे लिए निकम्मे हैं।

आशादेवी[1] से कुछ थोड़ी-सी बात हुई। लेकिन पूरा लिखता हूं, क्योंकि चीजें हैं बहुत छोटी-छोटी, पर महत्त्वपूर्ण। इनके बिना हम अपने उद्देश्यसे बहुत दूर जा पड़ते हैं।

यह मैं पढ़ गया हूं। ठीक लगता है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ५८८८) से। सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

१. आशादेवी आर्यनायकम्

१९७. पत्र : मोहनसिंह ठाकुरको

सेवाग्राम
३० नवम्बर, १९४५

चि० मोहनसिंह,

तुमसे मैं बहुत बातें करना चाहता था। लेकिन कर नहीं पाया, उसका मुझे दुःख है।[1] यह लिखवाता हूं तो सुशीलाबहन खबर देती है कि तुमने पम्प दुरुस्त कर लिया है। मैं तो जानता ही था कि तुम्हारे हाथमें दुरुस्त हो ही जायेगा। तुम्हारेमें यांत्रिक शक्ति बहुत है सो तो मैं जानता ही था। उसका पूरा विकास करो और आश्रममें जो कोई ऐसा कार्य आ जाये उसे करते ही रहो। चर्खेमें क्या क्या शक्ति है, उसे देखते रहो।

कनुभाई शिबिर चलाता था उसमें तुम्हारी मदद अनिवार्य हो गयी थी यह मैं देख रहा था। तुमने सामान्य भट्टीसे और टमाटरके रससे ही जो रोटियां बनाईं, बिस्कुट बनाए, उन्हें देखकर तुम्हारी रसोई-शक्तिका भी मुझे ज्ञान हुआ। मैं चाहता हूं कि इसका भी विकास करो और संपूर्ण लाभ आश्रमको दो।

बापूके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० १०४३०) से। सौजन्य : नवजीवन ट्रस्ट

१९८. भाषण : महिला आश्रममें[2]

वर्धा
३० नवम्बर, १९४५

मैं बंगाल कोई चार-पांच व्यक्तियोंकी सेवा करने के लिए नहीं, बल्कि करोड़ों लोगोंकी सेवाके निमित्त जा रहा हूं।

लड़कियों द्वारा किये गये गरबा नृत्यके सम्बन्धमें गांधीजी ने कहा :

१. देखिए पृ० १२६-२८।

२. साधन-सूत्रके अनुसार आश्रमवासियोंने नृत्य और संगीतसे गांधीजी का मनोरंजन किया और उन्हें खादीकी साड़ी, धोती और एक माला भी भेंट की।

निःसन्देह गरबा नृत्य जगत्-प्रसिद्ध है, लेकिन यह समय ऐसे नृत्यका नहीं है।

उन्होंने कहा कि मैं मानवताकी सेवा करने के लिए बंगाल जा रहा हूँ और चाहता हूँ कि लड़कियाँ मुझे आशीर्वाद दें और मेरे कार्यक्रमकी सफलता के लिए प्रार्थना करें।

महिला आश्रमकी लड़कियोंने पिछली गांधी जयन्तीके अवसरपर अखण्ड चरखा यज्ञमें काते गये सूतकी जो साड़ी गांधीजी को भेंट की थी, उसका जिक्र करते हुए गांधीजी ने कहा कि मैं इस साड़ीको अपने साथ नहीं ले जाना चाहूँगा।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, १-१२-१९४५

१९९. बुद्धियुक्त अहिंसाका अर्थ[1]

मेरी दृष्टिमें आल इंडिया कांग्रेस समितिका अर्थ स्पष्ट है। रचनात्मक कार्य अगर अहिंसाकी दृष्टिसे अहिंसाके ज्ञानके साथ न किया जाये तो उसका स्वराज्य दिलाने का जो बड़ा नतीजा है वह हिन्दुस्तानको नहीं मिल सकता। ऐसे तो हमारे देहातोंमें काफी काम होते आये हैं। लेकिन उनके करने में न तो अहिंसा का ज्ञान था और न अहिंसाकी दृष्टि ही। इसलिए नतीजा इतना ही निकला कि हम एक हद तक पैसेकी दृष्टिसे बिलकुल कंगाल नहीं बने थे—जैसे कि आज है। लेकिन जब विदेशी हमला शुरू हुआ तब हम देहाती धन्धोंको एकके-बाद-एक छोड़ने लगे और अस्पृश्यता-निवारण, आदिवासियोंकी तरक्की करना, स्त्रियोंका हक पुरुषों-जितना ही होना, तालीम लेना, गरीब और धनिकका भेद मिटाना वगैरह तो करते ही नहीं थे। अहिंसाकी दृष्टि जब पैदा हुई और मुल्कको सचमुच स्वतन्त्र बनाने का एक ही राजमार्ग अहिंसा और सत्यका स्वीकार माना गया तब हमारी दृष्टिकी मर्यादा हिन्दुस्तान तक या कहो जगत् तक चली गई, और हिन्दुस्तान परतन्त्र होते हुए भी हिन्दुस्तानकी प्रतिष्ठा सारे जगतमें फैल गई। मेरा अचल

१. गांधीजी ने यह बात इस प्रश्नके उत्तरमें कही थी: "कहा जाता है कि अहिंसाको व्यवहार्य बनाने के लिए उसे प्रगतिशील और ज्ञानयुक्त बनाना होगा। ऐसी प्रगतिशील और ज्ञानयुक्त अहिंसामें कई बातें आ सकती हैं, जैसे कि मिल्कियतका नाश करना, सरकारी मुलाजिमों या और किसीको पकड़कर कोठरीमें बन्द कर देना, भूमिगत रहना, फरार होना वगैरह। अगर हमने किसी की जान न ली और किसीको चोट न लगने दी तो अहिंसाका पूरी तरह पालन हो जाता है?" इस भावको और स्पष्ट करने के लिए अ० भा० कां० क० ने बादमें "अहिंसाके बुद्धियुक्त स्वीकार" ये शब्द जान-बूझकर जोड़ दिये हैं।

विश्वास है कि अगर हम ऊपरके सवालमें जो बताया गया है उसके मुताबिक मनुष्यके नाशको छोड़कर दूसरी सब अहिंसाकी मर्यादा भूल जायें तब अहिंसा अहिंसा ही नहीं रहेगी, उसमें से सत्य चला जायेगा, उसकी व्यापकता मिट जायेगी और स्वराज्य कभी मिल नहीं सकता है। अहिंसाके अर्थमें अगर दूसरोंकी मिल्कियतका नाश करना, सरकारी मुलाजिमोंसे परहेज करना, जमीनके भीतर छिप जाना वगैरह आ सकता है तो करोड़ों लोगोंको हम न तो जगा सकते हैं, न उनको निर्भयताकी सच्ची तालीम ही दे सकते हैं। अगर हम अहिंसासे काम करना चाहते हैं तो मेरी मर्यादाका स्वीकार अत्यन्त आवश्यक है। अगर हम उस मर्यादाको फेंक देते हैं तो हमारे लिए अहिंसाको छोड़ना और लोगोंको हिंसा के लिए तैयार करना यही एक रास्ता है। वह रास्ता निकम्मा है, ऐसा तो इस दारुण युद्धने साबित कर दिया है। हिंसाका मार्ग खुले तौरसे लेकर हम लोगोंको और जगत्को धोखा देने से बच जाते हैं, इतना तो फायदा पाते हैं।

खादी-जगत्, नवम्बर, १९४५

२००. भाषण : नई तालीमपर[1]

नवम्बर, १९४५

नई तालीमका अर्थ है उद्योगके मार्फत तालीम देना। वह मूलोद्योग आसपासके वातावरण, उपज इत्यादिको देखकर चुनना होगा। उदाहरणार्थ, जहाँ कपास नहीं उगती वहाँ बाहरसे कपास लाकर खादीको तालीमका जरिया बनाना ठीक न होगा।

अगर खादीका उद्योग लेकर नई तालीम स्वाश्रयी सिद्ध की जा सके तो वही चीज दूसरे उद्योगोंको भी लागू की जा सकती है। तालीम स्वाश्रयी बनाने का अर्थ यह है कि जैसे आजके सरकारी स्कूलोंमें भी लड़के घरसे खाना खाते हैं, कपड़े पहनते हैं उसी तरह नई तालीमके स्कूलोंमें किताबोंपर और फीस इत्यादि पर जो खर्च होता है वह बच जायेगा।

नई तालीममें तो किताबोंको स्थान ही नहीं। रुई, धुनकी, तकली इत्यादि सामानपर शुरूमें थोड़ा खर्च करना पड़ेगा, उसके बाद तो जो खर्च निकालना होगा वह केवल शिक्षकोंकी तनख्वाह और आवश्यक स्टेशनरी तथा कोई चपरासी इत्यादि रखना पड़े तो उसका खर्च इतना ही होगा।

फर्ज कीजिए कि एक स्कूलमें ३० लड़के हैं। वे खेतमें कपास लाने से लेकर सूत निकालने, कपड़ा बनाने तककी सब क्रियाएँ अपने हाथोंसे करेंगे। हर

१. यह "नई तालीममें स्वावलम्बन" शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था।

एक क्रियाके मार्फत शिक्षक उन्हें ज्ञान देगा, जिससे कि उनकी बुद्धि दिन-प्रतिदिन अधिक तेजस्वी होती जायेगी। परिणाममें वे लड़के खादीकी क्रियाओंमें नित्य नई शोधें किया करेंगे, जिससे कि खादीका उद्योग अधिक उपजाऊ और मूल्यवान बनता जायेगा।

लड़कोंका बनाया हुआ कपड़ा उनके माता-पिता मुँह-माँगे दामपर ले जायेंगे। शिक्षकका यह काम होगा कि लड़कोंके द्वारा वह उनके माता-पितामें जागृति पैदा करे, जिससे कि वे विदेशी और मिलके कपड़ोंको छूएँ भी नहीं, वस्त्र-स्वावलम्बन और खादीका वातावरण पैदा हो। हमें अपना वातावरण पैदा करना ही होगा। आज जहाँ खादी पहुँची है उसके लिए हमें वातावरण पैदा करना ही पड़ा था। परिणाममें आज खादीको कोई उखाड़कर फेंक नही सकता। यही चीज नई तालीमके बारेमें भी कही जा सकती है। शिक्षक अगर आवश्यक वातावरण पैदा नहीं कर सकता तो नई तालीम स्वाश्रयी नही बन सकती, नई तालीम चल ही नहीं सकती। अगर वह वातावरण बनाने में, लड़कोंकी बुद्धिको तेजस्वी करने में सफल होता है तो शुरूसे लेकर आखिर तकका नई तालीमका सारा-का-सारा खर्च लड़कोंके बनाये कपड़ोंकी कीमतमें से निकल आयेगा।

लड़के हमारे स्कूलोंसे निकलने के बाद कमाई करने के लायक होंगे। हम उन्हें काम देने का वचन नहीं देते। सरकारी स्कूलोंमें बड़ा खर्च करके तालीम पाने वालोंको भी सरकार नौकरी देने का वचन नही देती। मगर हमारे लड़के सरकारी स्कूलोंसे निकले हुए लड़कोंकी अपेक्षा अधिक तेजस्वी होंगे और आसानी से अपने लिए धन्धा ढूँढ़ लेंगे।

याद रखना है कि सरकारी मदरसोंके लिए जब वातावरण पैदा करना था तब तो रास्ता होते हुए भी कुछ कष्ट करना पड़ा था। हमें जो वातावरण पैदा करना है वह पुनरुद्धार है। जो मिटाया गया है उसको नये सिरेसे और नये ढंग से उठाना है और उसको हम स्वराज्य पाने का शान्तिमय तरीका समझते हैं। इस तरहसे करना हमें आसान होना चाहिए। आसान नहीं लगता है, क्योंकि हमने गाँवोंमें सही दृष्टिसे और सच्चा प्रयोग ही नहीं किया। अब नई तालीम मिली है। उसमें यदि यह चमत्कार और शक्ति नहीं है तो है क्या?

बचपनसे लड़का-लड़की हमारे हाथोंमें आयें और सात वर्ष तक या उससे भी अधिक साल तक हमारे मार्फत उद्योगके जरिये शिक्षण पायें, इसका अर्थ हम पूरा ग्रहण नहीं कर पाते और आधुनिक शिक्षण हमें दिया जाता है कि शिक्षण स्वावलम्बी हो ही नहीं सकता, उसीसे हमारे मनमें दुविधा पैदा होती है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि नई तालीम अगर स्वावलम्बी न हो तो शिक्षकवर्ग उसे नहीं समझते। मेरे नजदीक दूसरे लक्षणोंमें से स्वावलम्बिता नई तालीमका एक बड़ा अंग या लक्षण है।

अगर यह बात लड़के-लड़कियोंके लिए सही है तो प्रौढ़-शिक्षणमें तो स्वावलम्बिता होनी ही चाहिए। ऐसा मानना कि प्रौढ़को शिक्षणकी बात ही समझाना मुश्किल है तो फिर मुझे कहना पड़ेगा कि यह पुरानी भ्रमणा (भ्रान्ति) है। हमारी नई तालीममें तीन 'आर'[1] (३ आर्स)का सिखाना प्रौढ़ तालीमका लक्षण भी नहीं है। प्रौढ़ तालीमका अर्थ है कि प्रौढ़ोंको उनकी भाषाके मार्फत हम उन्हें शुद्ध और सामाजिक जीवनका सब शिक्षण देंगे। अगर यह स्वावलम्बी आसानीसे न बने तो मेरी दृष्टिमें उस शिक्षणमें बड़ा दोष है। यह भी भूलना नहीं चाहिए कि नये शिक्षणमें सम्पूर्ण सहयोग आरम्भमें ही अमल में लाना चाहिए। सहयोगका पूरा अर्थ जो जानते हैं उनके मनमें स्वावलम्बिता का प्रश्न उठ नहीं सकता।

प्रश्न : आज सरकारी मदरसोंमें वे ही बच्चे पढ़ने जाते हैं, जिनके माता-पिता उनके खाने-पहनने का भार उठा सकते हैं। नई तालीमके बारेमें हमारी यह अपेक्षा है कि गाँवके सब बच्चे स्कूलमें आयें। उनमें से बहुत-से बच्चे ऐसे होंगे जिनके घरमें जरूरी खाना या कपड़ा नहीं है। इस बारेमें नई तालीमकी क्या जिम्मेवारी है?

उत्तर: मैंने आदर्श बताया है कि खुराक और कपड़े माँ-बाप देंगे। आज लड़के खाते हैं, कपड़े भी पहनते हैं। जितना माँ-बाप खर्चते हैं उतना देंगे। हम जो खुराक देंगे उसमें शास्त्र होगा। उसमें दूधके कारण खर्च बढ़ेगा। वह खर्च हमारी पाठशालापर चढ़ेगा। लेकिन जब हम माता-पिताको विद्यार्थीकी खुराक का खर्च उठाना सिखाते हैं तो वे दूध भी देंगे। जो बिलकुल गरीब हैं, ऐसे कम होंगे लेकिन सचमुच हैं तो हम सब खर्च उठा सकते हैं।

कपड़ोंके बारेमें मैं तो निश्चिन्त हूँगा, क्योंकि लड़कों-लड़कियोंके लिए मेरा आदर्श कपड़ा लंगोटी या जैसा कपड़ा बेबी पहनती है वह है—वह चाहे छोटा-सा कच्छा ही हो। हम उसे आरामसे बना सकते हैं। जब लड़कीकी छाती उभड़ती है तब उसके लिए छातीका कुछ करना पड़ेगा। यह है दक्षिणकी छातीका रूमाल। जाड़ेके दिनोंमें अलग बात है। उसके लिए ओढ़ने का नहीं दें, लेकिन पहनने का दें। यह सब हमारी मिलकियत होगी और उसे उसी उम्रके लड़के-लड़कियाँ पहनते होंगे। याद रखा जाये कि ये लड़के-लड़कियाँ करीब हमारे ही पास रहेंगे। यह सब खर्च हम आरामसे उठा सकते हैं। और गरीब और धनिकके कपड़े हमारी दृष्टि से एक ही होंगे। साफ और शरीरमें ठीक बैठें, ऐसे कपड़े होंगे तो सुशोभित भी लगेंगे, जैसे स्वच्छ और सुघड़ बिलकुल नंगे बच्चे लगते हैं।

प्रश्न : (क) वस्त्र-स्वावलम्बनका वातावरण तैयार हुआ तो कपड़े ज्यादा प्रमाणमें खरीदे जायेंगे क्या?

(ख) माँ-बाप अगर खरीदना भी चाहें तो मुँह-माँगे दामपर ले जाने की आर्थिक योग्यता उनमें है क्या?

१. अर्थात् पढ़ना, लिखना और हिसाब जोड़ना

उत्तर: मुँह-माँगे दामका अर्थ अपने स्थानसे बाहर नही करना। उसका अर्थ इतना ही है कि आज उसे [खादीको] लोग छूते भी नहीं, लेकिन अपने लड़कोंके बनाये-सिलाये कपड़े हम जो योग्य दाम रखें उससे उठा लेंगे। बड़ा नफा करने की बात तो कहीं भी नहीं आयेगी। एक-एक चीजके दाम जुदा-जुदा होंगे लेकिन सरेराश[1] तो हमारी दोनों बाजू करीब-करीब एक-सी होंगी। शौकके मालका दाम ज्यादा रहेगा तो भी प्रमाणमें वह सस्ता होगा। जो देंगे वे खुशीसे देने वाले होंगे। जब वस्त्र-स्वावलम्बन आयेगा तब तो सब खादीमय होंगे और खुशीसे खादीमय होंगे। उस युगमें तो नई तालीम पराकाष्ठाको पहुँच चुकेगी। मुझे कोई कुछ पूछेगा भी नही अगर मेरे ही जीते यह समय आ गया।

मेरे सब उत्तर चालू समयके लिए, चालू स्थितिके लिए हैं।

प्रश्न: नई तालीमके लिए शिक्षकोंको तैयार करने का जो बड़ा क्षेत्र आज हमारे सामने है उसमें किस दिशामें हमें स्वावलम्बिताका प्रयोग करना है?

उत्तर: तुम्हारा प्रश्न है जो शिक्षक बनने आये हैं वे कैसे स्वावलम्बी बनें? अगर छोटे-छोटे विद्यार्थी स्वावलम्बी बन सकते हैं तो शिक्षकोंको तो बनना ही है। प्रश्न सिर्फ अपने खाने-पीने और शिक्षणका खर्च उठाने का है। मेरा कहना है कि शिक्षक यदि खुद स्वावलम्बी नही बनेंगे तो विद्यार्थियोंको कैसे बनायेंगे? सीधी बात है कि बड़े आदमी जो वेतनके कारण नही सेवाभावसे ही आये हैं वे तो कोई निरीक्षण नही माँगेंगे—सब धन्धे एहतियातसे, सावधानीसे सीखेंगे। कुछ बिगाड़ असावधानीसे नहीं करेंगे। ऐसे लोग तो जो उद्यम करेंगे उसमें से अपना पूरा खर्च उठा लेंगे। तुम्हारा शिक्षण-क्रम ऐसा होना चाहिए जिनसे शिक्षक-विद्यार्थी अपना खर्च उठा सकें। ऐसा क्रम बनाने में तुम्हारी भी परीक्षा होगी। इसलिए मुझे तो यह प्रश्न बहुत प्रिय लगता है, क्योंकि यह अच्छा सहयोग है कि तुमने आरम्भमें ही यह प्रश्न उठाया है। आर्यम्[2] ने लिखा, "मैं तो समझ गया और मानता हूँ।" उसका अर्थ यह है कि उसके मनमें जो है, मेरे मनमें भी वही होना चाहिए।

इस दृष्टिसे अगर तुम्हारा क्रम नही बना है तो मुझे बताओ, शायद तुम्हारी मददसे मैं बनाऊँगा। इसलिए मैं तो कहूँगा कि लकड़ी भी मुफ्त नही होनी चाहिए। याद रखो कि हम सहयोगसे काम लेना चाहते हैं। सही सहयोग भी सीखना चाहते हैं। इसलिए सबकी बुद्धि सबके चातुर्यकी उपज एक ही थैलीमें जाना चाहिए। जैसे-जैसे मैं लिखता जाता हूँ, मुझे ज्यादा रस आता है, मेरा वचन ज्यादा सिद्ध होता जाता है कि स्वावलम्बन हमारी सिद्धिकी कुंजी है। पुराना प्रमाण है।

खादी-जगत्, नवम्बर, १९४५

१. औसतन
२. आर्यनायकम्

२०१. पत्र : कालिदास देव शर्माको

कलकत्ता जाते हुए ट्रेनमें
१ दिसम्बर, १९४५

भाई कालीदास,

आपके खतका नीचे उत्तर है।

ब्रधरहुड लीग[1] को तत्त्व रखना चाहिये। जो अतरसे मानते हैं कि कांग्रेस की मदद देना ब्रधर लीगको मदद देना है वे कांग्रेसको मदद दें।

कोम्युनिस्ट पार्टीके क्या हाल हुए हैं?[2] अगर आपकी लीग कांग्रेसकी दृष्टि से कांग्रेसका ही काम करती है तो विरोध हो ही नही सकता। एशिया एशिया-वासीके लिये है, वह सनातन तत्त्व है। विदेशीको कहना, एशियासे चले जाओ, हृदयकी वेदनाकी सूचक आवाज है।

यह छपवाने के लिये नही है।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८२३२) से

२०२. पत्र : श्रीमन्नारायणको

कलकत्ता जाते हुए ट्रेनमें
१ दिसम्बर, १९४५

भाई श्रीमन्,

आज तुम्हारी पुस्तिका[3] और मेरे दो शब्द[4] भेजता हूं।

मैं कल रातके ९-३० बजे सब खतम किया। बीचमें खाने की और कातने की ही फुरसद ली। दो शब्दके बारेमें कुछ सुधारणाकी दरकार है तो कहो।

१. इन्टरनेशनल ब्रदरहुड लीग (अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृसंघ), जिसकी स्थापना कृष्णनाथ शर्माने की थी।

२. इन दिनों कांग्रेस कमेटीके साम्यवादी सदस्योंके खिलाफ अनुशासनहीनताके लिए जाँच चल रही थी।

३. गांधियन कॉन्स्टिट्यूशन फॉर फ्री इंडिया

४. देखिए पृ० १४४।

पुस्तिकामें मैंने जो दुरस्ती की है सो ठीक न लगे तो पूछो।

तुम देखोगे कि तालुका, जिला वि० पंचायतोंको मैंने अनिश्चित कर दी है। वे सलाहकार ही हैं। ऐसे मंडलको कानूनी प्रबन्धमें स्थान क्यों दें? उसकी आवश्यकताके बारेमें शक है। जब ग्राम सचमुच जिन्दा हो जाते हैं तब सलाहकार मंडलोंकी आवश्यकता कम रहनी चाहिये। प्रान्तकी पंचायत यह सब काम कर लेगी और जो तालुका व जिलाके मार्फत करवाना होगा, करवा लेगी। इसमें कुछ विचार-दोष है तो मुझे बताओ। मैंने तो शीघ्रतासे पढ़ सकता था वैसे पढ़ लिया।

पाकीस्तान और राजाओंके बारेमें मेरी कल्पनामें स्थान हो सकता है या नहीं, विचार योग्य है। याद रखो कि गांधी योजना तब ही शक्य हो सकती है जब अहिंसाके मार्फत वहां तक पहूंचे।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

पुस्तिका व प्रस्तावना अलग बुकपोस्ट रजिस्टरसे भेजे हैं।

पांचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३०८

२०३. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

कलकत्ता जाते हुए ट्रेनमें
१ दिसम्बर, १९४५

भाई जाजूजी,

परिपत्र १२ और ख्वजाबाबूका खत पढ़ गया हूं। मेरा अभिप्राय है कि जो निधि हमारे पास है उसमें से दस्तकारीकी तालीम और प्रौढ़ शिक्षाके लिए काफी हो सकती है। अगर दोनों वस्तु बराबर चले तो कम ही होगी। अन्य पांच चीजें इस निधिमें नहीं आनी चाहिये। इसका मतलब यह नहीं कि पांच चीजें हमें नहीं करनी है या उसका महत्त्व कम है। उसे हम अन्य पैसेसे चलायेंगे। अगर सात वस्तुका खयाल करें तो संभव है कि किसीको भी न पहुंचे। इसलिए मेरा अभिप्राय है कि दोके लिए ही उस निधिको अंकित करें, और बादमें निधिमें वृद्धि होगी तब भी दो तक उसका व्यय महदूद करे। सब करने में मेहनत और बुद्धिप्रयोग तो है ही।

उचित हो तो इस पत्रका उपयोग कर सकते हैं। परिपत्र और ख्वजाबाबू के खत वापिस करता हूं।

बापुके आशीर्वाद

नत्थी २

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२०४. भेंट : समाचारपत्रोंको[1]

१ दिसम्बर, १९४५

मैं अमेरिकासे परिचित हूँ, और अमेरिका मुझसे।[2] अमेरिकाके जो लोग मेरा सन्देश चाहते हैं, वे वास्तवमें मुझे नहीं जानते। आप मुझे कुछ कहने के लिए प्रेरित कर रहे हैं, लेकिन आप मेरे हरिजन-कोषके लिए चन्दा क्यों नहीं देते?

एक अन्य पत्रकारने महात्माजी से पूछा: "आपने जो-कुछ कहा है, क्या हम उसे प्रकाशनार्थ भेज सकते हैं?" महात्माजी ने हँसते हुए कहा:

आप उसपर मनन कीजिए, उसे पचाइए, उसके तत्वको ग्रहण कीजिए। आप अपनी पत्रकार-बुद्धिका प्रयोग करें तो आप देखेंगे कि मैंने जो चीज आपको दी है वह कोई सनसनी पैदा करने के लिए नहीं है।

वर्तमान समयके महत्त्वपूर्ण प्रश्नोंके बारेमें गांधीजी की प्रतिक्रियाओंके विषय में की गई जिज्ञासाके उत्तरमें उन्होंने कहा:

हमारे सामने बहुत बड़ी-बड़ी समस्याएँ हैं, और जैसे-जैसे तथा जब वे उठेंगी, मैं उनके बारेमें अपने विचार प्रकट करूँगा।

उन्होंने इससे ज्यादा कुछ कहने से इनकार कर दिया।

एक पत्रकारने वर्धासे शुरू होने वाली उनकी यात्राके बारेमें पूछा तो गांधीजी ने अपनी लोक-प्रसिद्ध हाजिरजवाबीका परिचय देते हुए विनोदपूर्वक कहा:

आप मेरे साथ यात्रा करते आ रहे हैं, और यदि आपकी सहज पत्रकार-बुद्धि इस प्रश्नका उत्तर नहीं देती तो आपको अपने पदसे इस्तीफा दे देना चाहिए और जीवनमें कोई दूसरा अधिक उपयोगी काम करना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, २-१२-१९४५

१. गांधीजी जब कलकत्ता जा रहे थे तो खड़गपुर स्टेशनपर बहुत-से पत्रकार उनके डिब्बेमें आ गये और मौरीग्राम तक उनके साथ रहे।

२. एक पत्रकारने गांधीजी से "अमेरिका और अमेरिकावासियोंके लिए एक सन्देश" देने को कहा था।

२०५. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
१ दिसम्बर, १९४५

भाषण आरम्भ करते हुए गांधीजी ने कहा कि १९१४ में जब मैं इंग्लैंड में था, तभीसे मैं बंगला भाषा सीखने का प्रयत्न करता रहा हूँ। मैंने कुछ प्रगति अवश्य की, हालाँकि बंगलाका अध्ययन मैं जारी नहीं रख सका। मेरी यह अभिलाषा रही है कि मैं बंगालके लोगोंसे बंगलामें बात कर सकूँ, ताकि मैं उनके हृदयको छू सकूँ। मुझे दुःख है कि इस मौकेपर मैं वैसा नहीं कर सकता। मेरी यह भी राय है कि कोई भारतीय तब तक अपने-आपको भारतका पूर्ण नागरिक नहीं कह सकता जब तक कि वह विभिन्न प्रान्तोंके लोगोंके साथ उन्हींकी भाषामें बात न कर सके। विभिन्न भाषाओंमें ऐसी प्रवीणता न प्राप्त कर पाने पर प्रत्येक भारतीयको कमसे-कम हिन्दुस्तानी तो अवश्य सीख लेनी चाहिए, क्योंकि केवल वही भारतकी राष्ट्रभाषा हो सकती है।

इसके बाद उन्होंने अपनी वर्तमान बंगाल-यात्राका हेतु बताते हुए कहा कि जेलसे रिहा होने के बादसे ही मैं बंगाल आने को उत्सुक था, लेकिन स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण नहीं आ सका। इसके अलावा, मैं तब तक बंगाल नहीं आना चाहता था जब तक कि मुझे भरोसा न हो कि यहाँके अधिकारी मेरा स्वागत करेंगे और मेरे इधर-उधर आने-जाने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं होगा। मैं न तो किसी प्रकारके प्रतिबन्धका आदेश स्वीकार करने को तैयार था और न यही चाहता था कि देशको वर्तमान परिस्थितियोंमें मैं इस प्रकारके आदेशोंके विरुद्ध सविनय अवज्ञा करूँ। बंगाल-यात्राका रास्ता साफ हो जाने के बाद भी मुझे उसे कई महीनों स्थगित रखना पड़ा, क्योंकि सरदार वल्लभभाई पटेलको नैसर्गिक उपचारकी आवश्यकता थी और मेरा उनके पास रहना जरूरी था। फिर भी मुझे खुशी है कि अन्ततः मैं बंगाल आ सका हूँ।

आगे अपनी बंगाल-यात्राका उद्देश्य समझाते हुए उन्होंने कहा कि मैं सिर्फ इसलिए आया हूँ कि बंगालके अकाल-पीड़ित लोगोंको अपनी उपस्थितिसे जो भी सान्त्वना दे सकूँ वह दूँ और उनके कष्टोंको दूर करने के लिए जो-कुछ कर सकता हूँ वह करूँ। मैं इस प्रान्तकी राजनीतिमें, या आगामी चुनावोंमें हिस्सा लेने नहीं आया हूँ। सच तो यह है कि जैसा आप सभी जानते हैं कि इन चीजोंमें मेरी बहुत कम दिलचस्पी है। यह बताने की जरूरत नहीं कि मेरी किस चीजमें दिलचस्पी है।

बगालमें हरिजनोंके लिए धन एकत्रित करते हुए

अन्तमें महात्माजी ने उपस्थित लोगोंसे अस्पृश्यता-निवारण-कार्यके प्रति अपनी सहानुभूतिके प्रतीक-स्वरूप और हरिजनोंकी दशा सुधारने के लिए अपनी क्षमता-भर चन्दा देने का अनुरोध किया। प्रसंगवश उन्होंने बताया कि जेलसे रिहा होने के बाद अब तक उन्होंने हरिजनोंके लिए २ लाख रुपया इकट्ठा किया है। उन्होंने कहा कि हस्ताक्षर करने को जो फीस मैं लेता हूँ, वह सब हरिजन-कार्यमें लगती है। पाँच रुपये देकर कोई भी व्यक्ति मेरे हस्ताक्षर ले सकता है। गरीब होने की दुहाई देकर कोई यह फीस देने से बच नहीं सकता, क्योंकि मेरी रायमें हस्ताक्षर इकट्ठा करने का शौक अमीरोंका शौक है। बहरहाल, हरिजनों से ज्यादा गरीब कोई नहीं है, और किसीको भी हरिजनोंको उस हस्ताक्षर-फीससे वंचित करने का हक नहीं है क्योंकि उसे देने के लिए मैं पहलेसे ही प्रतिबद्ध हूँ।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, २-१२-१९४५

२०६. बातचीत : इयन स्टीवन्सके साथ[1]

सोदपुर

[१ दिसम्बर, १९४५ या उसके पश्चात्][2]

गांधीजी : इस आधारपर दलील करने से तो आप दक्षिण आफ्रिकामें व्याप्त पक्षपातको भी समझ सकेंगे। मूल कारण तो दोनों जगह एक ही है — अर्थात् प्रजाति तथा आर्थिक दर्जेको अक्षुण्ण रखने की भ्रान्त धारणा। फर्क सिर्फ परिमाण का है। अगर आप अलग-अलग व्यक्तिको लेकर उनपर तथ्योंको लागू करके देखेंगे तो जो स्थिति उभरकर सामने आयेगी वह यहाँके प्रजातिगत पक्षपातकी बराबरीकी ही है।

इयन स्टीवन्स : नहीं, नहीं, यहाँ तो वह बहुत कम है।

गां० : हाँ, लेकिन वह संख्याके भारी अन्तरके कारण है। लेकिन सचमुच जिस व्यक्तिको झेलना पड़ता है उसके मामलेको लीजिए। उसका अनुभव दक्षिण आफ्रिका या अमेरिकाके अश्वेत लोगोंके अनुभवसे कुछ भिन्न नहीं है।

इ० स्टी० : हम अंग्रेज लोग सवालके इस पहलूको तो भूल ही जाते हैं।

गां० : आदत स्वभावका अंग बन जाती है। यह भी जरूरी नहीं कि उसके पीछे कोई सोचा-समझा इरादा हो।

१. प्यारेलालकी यह रिपोर्ट "विद एन इंग्लिश फ्रेंड" (एक अंग्रेज मित्रके साथ) शीर्षकसे प्रकाशित हुई थी। कलकत्ताके स्टेट्समैन के संवाददाता इयन स्टीवन्सका विचार था कि रंगभेद और प्रजातिगत पृथक्करण अपने सबसे बुरे रूपमें दक्षिण आफ्रिकामें मौजूद है। वे गांधीजी की इस रायसे सहमत नहीं थे कि अमेरिकामें भी वह उतना ही तीव्र है।

२. गांधीजी १ दिसम्बर, १९४५ को सोदपुर पहुँचे थे।

इ० स्टी०: पंजाब और दिल्लीमें विभिन्न प्रजातियोंके लोग और जगहोंकी अपेक्षा ज्यादा मुक्त भावसे घुलते-मिलते हैं। क्या यह इस कारण है कि इन दोनों जगहोंपर संख्याका अन्तर अपेक्षाकृत कम है?

गांधीजी का यह मत था कि इस मामलेमें बंगालमें इससे ठीक उल्टी तसवीर है। वह शायद इसलिए कि वहाँ हिंसात्मक भावनाकी अभिव्यक्ति दिल्ली या पंजाबकी अपेक्षा अधिक व्यापक पैमानेपर हुई। पंजाबमें बेशक कुछ हद तक हिंसात्मक भावना दिखाई दी। लेकिन बंगालके मुकाबले तो वह कुछ भी नहीं था। चटगाँव शस्त्रागारपर डाका डालने की जो घटना हुई थी, उसके टक्करकी कोई चीज न तो और कहीं करने की कोशिश की गई, और न उसका कहीं अनुकरण ही किया गया।

इ० स्टी०: मैंने अकसर इसपर विचार किया है और मैं यह देखकर हमेशा हैरान हुआ हूँ कि ये बंगाली युवक, जो स्वभावसे इतने नम्र हैं, किस प्रकार हिंसाकी धारामें बह गये हैं।

गां०: मैंने इसका उत्तर खुद ढूंढ़ लिया है। उन्हें लगता है कि विगत काल में उन्हें अनुचित रूपसे बदनाम किया गया है। लॉर्ड कर्जनने उनकी सौम्यता की बार-बार खिल्ली उड़ाई। इससे वे चिढ़ गये। इसलिए वे कहते हैं: "हम धनवान भले न हों, लेकिन हम नामर्द नहीं हैं।" अतः उन्होंने यह भ्रामक तरीका अपनाया और दुस्साहसमें हर प्रान्तसे आगे निकल गये। उन्होंने मौतको, गरीबी को, यहाँ तक कि लोकमतको भी चुनौती दी। मैंने कितने ही आतंकवादियों और अराजकतावादियोंसे हिंसाके इस सवालपर विस्तारसे बातचीत की है। चाहे अरब करें या यहूदी, हिंसा तो भयंकर चीज ही है। यदि हिंसाकी यह भावना जन-साधारणमें व्याप्त हो गई तो संसारका भविष्य अन्धकारपूर्ण है। अन्ततः अपना विनाश करते हुए वह प्रजातिका ही नाश कर देती है।

इ० स्टी०: और पिछले दो-तीन सालमें यह सारे संसारमें फैल गई है।

गां०: अब जनरल मैकआर्थर[1] का सबसे ताजा उदाहरण लीजिए। उन्होंने सारे जापानी राष्ट्रको दो श्रेणियोंमें विभाजित कर दिया है—एक श्रेणी उनकी है जिन्हें वे युद्ध-अपराधी कहते हैं, और दूसरी श्रेणीमें वे लोग हैं जो युद्ध-अपराधियोंकी श्रेणीमें नहीं आते। इसे पढ़ते हुए मुझे लगा कि जापानी जाति जैसी गर्वीली, संवेदनशील और पश्चिमी देशोंके ढंगपर सुसंगठित जातिके लोगों के बीच लोकतन्त्र स्थापित करने का यह कोई अच्छा तरीका नहीं है। गेरीबाल्डी के समयमें इटलीके लोगोंने जो किया था, जापानी लोग वही चीज कहीं ज्यादा व्यापक पैमानेपर करेंगे। आप मानव-जातिके साथ इस ढंगसे व्यवहार

१. डगलस मैकआर्थर, अमेरिकी जनरल; द्वितीय विश्व-युद्धके बाद जापानपर काबिज सेनाओं के सेनापति

नहीं कर सकते। दुनियाके एक हिस्सेमें जो-कुछ होगा, उसका असर दुनियाके दूसरे हिस्सोंपर भी होगा। दुनिया सिमटकर इतनी छोटी हो गई है।

इसपर उन भाईने कहा कि उनकी रायमें, सिद्धान्त-रूपमें देखें तो दुनिया की उतनी अवनति नहीं हुई है जितनी कि पिछले तीन सालोंमें होना सम्भव था। उनकी इस बातसे गांधीजी ने सहमति व्यक्त की, हालाँकि उन्होंने कहा कि ऐसा मानने के उनके कारण भिन्न हैं।

इ० स्टी० : ऐसा मानने का मेरा कारण यह है कि हालाँकि पिछले तीन वर्षोंके दौरान जनताको जबरदस्त दुःख और कष्ट सहना पड़ा है—जैसे कि इंडोनेशिया और अन्य स्थानोंमें—लेकिन मानव-मस्तिष्क उस अनुपातमें विकृत नहीं हुआ है।

गां० : मेरी आशाका आधार स्थितिका तटस्थ भावसे किया गया विवेचन है। आगा खाँ महलमें नजरबन्दीके दौरान मुझे पढ़ने और सोचने की फुर्सत थी। जिस चीजने मेरा ध्यान खींचा वह यह थी कि आचरणमें तो गिरावट आई है, लेकिन मनुष्यके मस्तिष्कने बहुत प्रगति कर ली है। आचरण विचारके साथ-साथ नहीं चल पाया है। मनुष्य कहने लगा है, "यह चीज गलत है, वह चीज गलत है।" जहाँ पहले वह अपने आचरणको उचित बताता था, वहाँ अब वह अपने या अपने पड़ोसीके अनुचित आचरणको उचित नहीं बताता। वह गलती को सुधारना चाहता है, लेकिन यह नहीं जानता कि खुद उसीका आचरण उसका साथ नहीं देता। उसके विचार और आचरणका अन्तर्विरोध उसे जकड़े हुए है। उसका आचरण तर्क-संचालित नहीं है। और फिर अहिंसाके पक्षमें मेरी यह स्थायी भविष्यवाणी तो है ही कि एक दिन उसका बोलबाला अवश्य होगा—मनुष्य चाहे कुछ करे अथवा न करे। यह चीज मेरी आशावादिताको जीवित रखती है। मेरा व्यापक निजी अनुभव भी मेरे इस विश्वासकी पुष्टि करता है कि अहिंसा अपने-आप कार्य करती रहती है। मानव-रूपी उपकरणोंकी कमजोरियों के बावजूद वह अपना रास्ता बनाकर रहेगी और सारी बाधाओंको पार कर लेगी। हम अपने निष्कर्षपर किस प्रकार पहुँचे हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन यह निष्कर्ष हमें चुस्त और प्रसन्न रखता है।

इसके बाद बातचीतका रुख १२५ वर्ष तक जीने के गांधीजी के प्रिय विषय की ओर मुड़ गया। मुलाकाती सज्जन जानना चाहते थे कि गांधीजी किस प्रकार शारीरिक रूपसे स्वस्थ रह पाते हैं। गांधीजी ने कहा कि बाहरी तौर पर तो मेरे शारीरिक स्वास्थ्यका कारण खाने-पीने और सोने में नियमित आचार का कड़ाईसे पालन और नैसर्गिक उपचारके सिद्धान्तोंके प्रति, जिन्हें मैंने अपने जीवनमें १९०१ से ही दृढ़तासे अपना रखा है, मेरा लगाव है। गांधीजी ने बताया

कि वे १९०१ तक शीशीमें मिलने वाली दवाका इस्तेमाल किया करते थे, लेकिन फिर उसे उन्होंने लगभग फेंक ही दिया, और गत पैंतालीस वर्षोंसे उन्होंने कमोबेश प्राकृतिक चिकित्साके सिद्धान्तोंके अनुसार ही जीवन बिताया है।

गां० : लेकिन इससे भी ज्यादा यह मनको अनासक्त कर लेने के अभ्यास के कारण है। अनासक्तिसे मेरा मतलब यह है कि किसी कामका वांछित परिणाम निकले या नहीं, उस कार्यका हेतु यदि शुद्ध है और साधन सही हैं, तो फिर मनुष्यको चिन्ता नहीं करनी चाहिए। वास्तवमें इसका मतलब यह है कि यदि मनुष्य साधनका ध्यान रखे और बाकी सब कुछ ईश्वरपर छोड़ दे, तो अन्तमें सब कुछ ठीक ही होगा।

गांधीजी ने कहा कि मेरा यह विश्वास 'भगवद्गीता' पर आधारित है, जिसे मैं "कर्मका शब्द-कोश" मानता हूँ।

मुलाकाती मित्रने 'भगवद्गीता' और ऑल्डस हक्सले[1] की 'एंड्स एंड मीन्स' नामक पुस्तकमें गहरी समानताकी चर्चा की। ऑल्डस हक्सलेका नाम आने पर गांधीजी ने कहा कि इससे मुझे पुराने दिनोंकी याद हो आई, जब मैं ऑल्डस हक्सलेके पिता[2] की रचनाओंको १८८९ में लन्दनमें अपने विद्यार्थी-कालमें पढ़ा करता था।

इ० स्टी० : लेकिन एक शारीरिक पक्ष भी तो है ही न?

गा० : हाँ, है; लेकिन मैं मानसिक पक्षको ज्यादा महत्त्व देता हूँ। हम जैसा सोचते हैं वैसे ही बन जाते हैं। विचार तब तक पूरा नहीं होता जब तक उसे कर्ममें अभिव्यक्ति न मिले, और कर्म विचारोंको मर्यादित कर देता है। जब इन दोनोंके बीच पूर्ण संगति होती है तभी जीवन सम्पूर्ण और स्वाभाविक होता है।

इ० स्टी० : लेकिन मनुष्यके पूर्व जीवनकी विरासतके बारेमें आप क्या करेंगे? उसे तो हिसाबकी बहीसे काटा नहीं जा सकता।

गां० : इसका उत्तर मेरे पास है। मेरा वर्तमान जीवन चाहे जितना सही हो, किन्तु यदि मेरा विगत आचरण ऐसा नहीं रहा हो जिससे मुझे पूर्ण आयु प्राप्त होना लाजिम हो तो भी मन और शरीरके बीच पूर्ण अनासक्ति प्राप्त करके मैं विगत भूलोंके प्रभावका मार्जन कर सकता हूँ। अनासक्ति मनुष्यको विगत गलत आचरणके प्रभावों और साथ ही विरासत और परिवेश-जनित बाधाओं

१. अंग्रेज उपन्यासकार और आलोचक, जीवनके परवर्ती कालमें हिन्दू दर्शनके प्रति अधिकाधिक आकर्षित होते चले गये।

२. गांधीजी का तात्पर्य शायद टी० एच० हक्सलेसे था जो जीववैज्ञानिक तथा लेखक थे और ऑल्डसके पिता नहीं, बल्कि पितामह थे।

का भी निराकरण करने की सामर्थ्य देती है। सामान्यतः कहें तो प्रकृतिके नियम का जाना-अनजाना हर उल्लंघन — जैसे क्रोध, बदमिजाजी, अधैर्य, दाम्पत्य जीवन की भूलें — अपनी कीमत अवश्य वसूल करता है। लेकिन यह माना जा सकता है कि यदि मनुष्यने पूर्ण अनासक्ति प्राप्त कर ली है तो वह इन सबके असरको मिटा सकता है। "तू पुनर्जन्म लिये बिना अमर नहीं हो सकता।" दूसरे शब्दोंमें कहें तो अगर मनुष्य पुनर्जन्म ले तो वह अमर हो सकता है। मृत्युसे पहले इसके मार्ग में कोई बाधा नहीं है। आप चाहें तो यहीं, इसी क्षण एक नये अध्यायका आरम्भ कर सकते हैं और एक नये जीवनकी शुरुआत कर सकते हैं; यदि आप अनासक्तिरूपी कुल्हाड़ीसे अपने अतीत तथा उसकी विरासतसे अपनेको पूर्णतः अलग कर ले तो वह आपके इस नये जीवनकी धारामें भी किसी तरह बाधक नहीं होगा।

पिछली बार जब ये सज्जन गांधीजी से मिलने आये थे तब वक्ता अकेले गांधीजी थे और वे सिर्फ श्रोता बने रहे। इस बार गांधीजी का इरादा था कि वे सिर्फ उनके प्रश्नोंके उत्तर देंगे और बोलने का काम उन्हींके जिम्मे रहने देंगे, लेकिन इन सज्जनने उनके इरादेको बदल दिया। बातचीतके अन्तमें पराजित गांधीजी ने कहा :

मैं अपनी हार स्वीकार करता हूँ; आखिर आप मँजे हुए पत्रकार हैं न।

इ० स्टी० : मैं तो एक सामान्य मनुष्य हूँ।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ७-४-१९४६

२०७. बातचीत : फ्रेंड्स एम्बुलेन्स यूनिटके सदस्यके साथ[1]

कलकत्ता
[१ दिसम्बर, १९४५ या उसके पश्चात्][2]

फ्रें० ए० यू० का सदस्य : हम आप लोगोंके साथ मैत्री करने को चाहे जितने इच्छुक हों, किन्तु अतीतकी परम्पराने आपको अपनी गिरफ्तमें जकड़ रखा है

१. फ्रेंड्स एम्बुलेन्स यूनिट १९१४ में आरम्भ की गई एक युद्धकालिक संस्था थी, जिसे १९३९ में फिरसे इसलिए गठित किया गया कि शान्तिवादी विचारधाराके लोग उसके जरिये दुःखी और पीड़ित जनोंकी सेवा कर सकें। यूनिट १९४२ में मिदनापुरके तूफानके बाद और फिर १९४३ में बंगालके अकालके दौरान भारत आई थी। १९४५ में भारतमें व्यापक तौरपर फैली अकालकी स्थितिके कारण यह फिर भारत आई। यूनिटके सदस्यके साथ गांधीजी की बातचीतका यह विवरण प्यारेलालने तैयार किया था और यह "एन इंग्लिश मैन्स डिफीकल्टी" (एक अंग्रेजकी कठिनाई) शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था।

२. गांधीजी १ दिसम्बरको कलकत्ता पहुँचे थे।

और वह आपको व्याकुल कर देती है। मुझे तो लगता है कि किसी युवा बंगाली विद्यार्थीको अंग्रेजोंके उज्ज्वल पक्षका बोध कराने का इसके सिवा शायद कोई रास्ता नहीं है कि उसे कुछ दिन इंग्लैण्डमें रहने का अवसर दिया जाये। भारतका वातावरण इतना विषाक्त है कि मैं तो सोचता हूँ कि क्या यह बेहतर नहीं होगा कि अंग्रेज अभी यहाँ आकर कोई काम करने की कोशिश करने के बजाय बेहतर दिनोंका इन्तजार करें।

गांधीजी: जो सच्चा मित्र है और जो अपनेको यहाँके लोगोंसे श्रेष्ठ मानते हुए नहीं, बल्कि सेवाको भावना लेकर आयेगा उसका यहाँ अवश्य स्वागत होगा। भारत जब अपना उचित स्थान प्राप्त कर लेगा तब उसे इस तरहकी जितनी सहायता मिल सके, सबको आवश्यकता होगी। जैसा कि आपने कहा है, अंग्रेजोंके प्रति अविश्वास तो है ही। भारतीय विद्यार्थियोंको इंग्लैण्ड भेजने से भी वह अविश्वास मिटने वाला नहीं है। आपको उसे समझना और ऐसा आचरण करना है जिससे वह दूर हो जाये। उसकी जड़ें इतिहासमें समाई हुई हैं। स्वर्गीय चार्ली एन्ड्रयूज और मैं दोनों ऐसे मित्र थे जैसे सगे भाई हों। हम अपने मनमें उठने वाले हर विचारकी चर्चा एक-दूसरेसे करते थे। उन्होंने तो भारतीय वेश-भूषाको भी अपना लिया था, हालाँकि कभी-कभी उसमें वे बहुत अजीबो-गरीब लगते थे। लेकिन सन्देहसे वे भी नहीं बच पाये। उन्हें "जासूस" तक कहा गया। वे बहुत संवेदनशील व्यक्ति थे। इस प्रकारके निराधार आक्षेपोंसे उन्हें अकथनीय व्यथा पहुँचती थी, और इस निराधार अविश्वासको दूर करने के लिए मुझे बहुत कोशिश करनी पड़ी। इन आलोचकोंसे मैं कहता था, "अगर वे जासूस हैं, तो मैं भी जासूस हूँ।" अन्तमें सी० एफ० ए० की शुद्ध भावनाकी विजय हुई।

'पियर्सन'[1] सी० एफ० एन्ड्रयूजके शिष्य और मित्र थे। अविश्वासका पात्र उन्हें भी बनना पड़ा। फिर, स्टोक्स[2] को लीजिए। उन्होंने अपने मनमें कहा, "मुझे भारतकी सेवा करनी है तो भारतीय बनना होगा।" उन्होंने एक ईसाई राजपूतानीसे विवाह भी किया। राजपूतोंने उनका बहिष्कार किया। आरम्भ में सरकार भी उनपर अविश्वास करती थी। लेकिन उन्होंने ऐसा आचरण किया जिससे सरकार और भारतीयों, दोनोंका अविश्वास मिट गया।

तो जब सी० एफ० एन्ड्रयूज तथा स्टोक्स और ऐसे ही अन्य लोगोंको भी अविश्वासका शिकार बनना पड़ा, तो आपपर अविश्वास किया जाये, इसमें

१. डब्ल्यू० डब्ल्यू० पियर्सन, बंगालमें कार्यरत एक अंग्रेजी मिशनरी कार्यकर्ता तथा कुछ समय तक शान्तिनिकेतनमें अध्यापक भी रहे

२. सैम्युअल स्टोक्स, अंग्रेज मिशनरी और सी० एफ० एन्ड्रयूजके सहयोगी। वे कांग्रेसके सदस्य थे और १९२० के जेल-यात्रियोंमें भी शरीक थे, हिन्दुओंको ईसाका सन्देश देने के लिए स्वयं हिन्दू बन गये और अपना नाम सत्यानन्द रख लिया और कोटगढ़में पहाड़ी जनजातियोंके उत्थानके लिए काम किया।

कोई आश्चर्य नहीं है। आज तक भारतीय अंग्रेजोंको शासक जातिके ऐसे सदस्यों के रूपमें ही जानते आये हैं जो या तो अपनेको श्रेष्ठ मानकर उनके प्रति कृपाकी दृष्टि रखते हैं या घोर तिरस्कारकी। आम आदमी ऐसे अंग्रेज और नेक, विनम्र यूरोपीयके बीच, साम्राज्यका निर्माण करने वाले पुराने ढंगके जिस अंग्रेजको उसने जाना है उसके तथा अपने पूर्वजोंके कृत्यके लिए पश्चात्ताप करने की तड़पसे भरा जो नया नमूना उभर रहा है उसके बीच कोई भेद नहीं करता। इसलिए जिनमें त्याग-बलिदानका जोश नहीं है उनसे मैं कहूँगा, "अभी आप भारत न आयें।" लेकिन अगर आप वीर हैं तो कोई कठिनाई नहीं होगी। यदि आप डटे रहे तो अन्तमें आपकी सच्ची कीमत अवश्य पहचानी जायेगी। जो भी हो, आपमें से जो लोग यहाँ हैं उनके वापस जाने का कोई कारण नहीं है।

ये सज्जन गांधीजी से चीनकी सहकारी समितियोंकी इंडस्को आयोजनाके सम्बन्धमें भी उनकी राय जानने में सफल हो गये। गांधीजी ने बताया कि उसके क्या-क्या दोष हैं। अव्वल तो इंडस्को विषम कालकी उपज है। इसका उत्पाद युद्धकालिक तथा युद्ध-प्रयोजनोंके निमित्त है, जिसको जापानियोंकी घेराबन्दीसे बल मिला है। दूसरे, इसका संगठन विदेशी मिशनरी उद्यमकर्ता कर रहे हैं, जिनका काम धर्मान्तरणके उद्देश्यसे प्रेरित और दूषित है।

गां० : यदि आप भारतमें सिर्फ चीनकी सहकारी समितियोंकी नकल करने की कोशिश करेंगे तो विफल होंगे। यहाँ आपको भारतीय ईसाइयोंके बीच काम करना है। उनका स्वभाव अलग है, चरित्र अलग है और उनकी परिस्थितियाँ भिन्न हैं। जिस सहकारिताकी जड़ें देशकी मिट्टीमें जमी होती हैं वह हमेशा सफल होती हैं। इसलिए भारतका मिजाज और यहाँकी मिट्टीके लिए किस प्रकारकी सहकारिता सबसे उपयुक्त है, इसका पता आपको खुद लगाना होगा। जो लोग धर्मान्तरण करके रूढ़ ईसाई-धर्ममें चले गये हैं वे भी अब रुख बदलने लगे हैं।

फ्रें० ए० यू० का सदस्य : "रुख बदलने" से क्या आपका मतलब यह है कि वे वापस जाने लगे हैं?

गां० : हाँ, मेरा मतलब है, वे पाश्चात्य ईसाइयतके बजाय सच्ची ईसाइयत की ओर, ईसाकी ओर वापस जाने लगे हैं। उन्हें इस बातका एहसास होने लगा है कि ईसा एशियाई थे। यह जान लेने के बाद वे अपनी 'बाइबिल' भारतीय दृष्टिसे पढ़ रहे हैं। आपको भारतीय ईसाइयतके मर्मका अध्ययन जे० सी० कुमारप्पाकी पुस्तक 'प्रैक्टिस एंड प्रिसेप्ट्स ऑफ जीसस' के माध्यमसे करना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
हरिजन, ३१-३-१९४६

२०८. सन्देश : राजेन्द्रप्रसादके जन्म-दिवसपर

[२ दिसम्बर, १९४५]

राजेन्द्रप्रसाद एक सच्चे देशभक्त हैं। राजेन्द्रप्रसाद दीर्घायु हों।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ४-१२-१९४५

२०९. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर

२ दिसम्बर, १९४५

प्रार्थनाके बाद सभाको सम्बोधित करते हुए गांधीजी ने कहा कि मैं आप लोगोंका शुक्रिया अदा करना चाहूँगा और आपको बधाई देना चाहूँगा कि आप लोग प्रार्थनाके दौरान मौन और शान्त रहे। आज शामकी इस सभामें निःसन्देह बहुत लोग उपस्थित हुए हैं। शनिवारको प्रार्थना-सभामें इसकी अपेक्षा कम भीड़ थी। दोनों दिन आप लोगोंने अद्भुत अनुशासनका परिचय दिया है। इसलिए मैं आप लोगोंको धन्यवाद देना चाहूँगा और आशा करूँगा कि आप भविष्यमें भी शान्तिपूर्ण व्यवहार करेंगे।

आज शाम जो भजन गाया गया है उसका विशेष महत्त्व है। गांधीजी ने कहा कि आज जो स्थिति है, उसको देखते हुए यह भजन बहुत उपयुक्त है। भजन अत्यन्त मधुर धुनमें गाया भी गया।

भजनमें भगवानसे प्रार्थना की गई है कि वह मानवताको अन्धकारसे प्रकाश की ओर ले जाये। उसमें कहा गया है कि मानवता घोर अन्धकारमें फँस गई है और उसकी दृष्टि खो गई है। इसलिए हम लोग ईश्वरसे प्रार्थना कर रहे हैं कि वह हमें शक्ति दे और हमें प्रकाशकी ओर ले जाये।

भजनका भावार्थ यह है कि हमें सब प्रकारके बन्धनोंसे छुटकारा मिले और ज्ञानका प्रकाश प्राप्त हो। बन्धनोंसे छुटकारा मिलने की बातमें स्वराज्य प्राप्ति भी शामिल है। भारत दासतासे मुक्ति पाना चाहता है।

१. प्रस्तुत सन्देश दिनांक "२ दिसम्बर" के समाचारमें दिया गया था और डॉ० राजेन्द्र प्रसादके ६१वें जन्म-दिवसके अवसरपर विशिष्ट रूपसे मुखपृष्ठ में प्रकाशित हुआ था।

आज हम सब लोग अन्धकारसे घिरे हुए हैं। न केवल भारत, बल्कि सारा विश्व अन्धकारसे घिरा हुआ है। भारत शान्ति चाहता है, समस्त विश्वकी भी यही कामना है। हम सब यात्री उस अन्धकारमें भटकते रहे हैं। हम सब अन्धे हैं और हम प्रकाशकी अनुपस्थितिका एहसास भी नहीं कर सकते।

हमने ईश्वरसे जो प्रार्थना की है वह इस ग्रामकी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात है। जब मैं दक्षिण आफ्रिकामें था, उन दिनों अकेले प्रार्थना किया करता था। जब मैं भारत आया तब मैंने सामूहिक रूपसे प्रार्थना करने की जरूरतको समझा। तबसे मैं सामूहिक प्रार्थना करता आया हूँ। वैसे, हरएक व्यक्तिको अपने तरीकेसे प्रार्थना करने की जरूरत तो है ही।

आज हमारी ईश्वरसे प्रार्थना है कि वह हमें अन्धकारसे प्रकाशकी ओर, असत्यसे सत्यकी ओर ले जाये और हमें शान्ति मिले — शान्ति न केवल भारतके लिए, बल्कि समस्त संसारके लिए।

गांधीजी ने कहा कि मुझे नारेबाजी पसन्द नहीं है। नारेबाजीसे वातावरणकी शान्ति भंग होती है, जबकि प्रार्थनाके लिए शान्ति होना बहुत जरूरी है। इसलिए मेरा आपसे अनुरोध है कि आप नारे लगाकर वातावरणकी शान्ति भंग न करें।

भाषणके अन्तमें गांधीजी ने सभामें उपस्थित लोगोंसे कहा कि वे अपने बीचसे अस्पृश्यताको मिटा दें। अस्पृश्यता मानवताके माथेपर एक कलंक है।

गांधीजी ने एकत्र लोगोंसे अनुरोध किया कि वे हरिजन-कोषमें यथासम्भव सहायता दें।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, ३-१२-१९४५

२१०. भाषण : प्रार्थना-सभाके उपरान्त[1]

सोदपुर

२ दिसम्बर, १९४५

आपको मुझसे कितना प्रेम है, सो मैं जानता हूँ। मैं भी आपको प्यार करना चाहता हूँ। मैं भी आपका दिल जीतना चाहता हूँ। लेकिन ऐसा मैं कामके जरिये करना चाहता हूँ। मेरे दर्शन मत माँगिए और न ही मेरे पैर छूने की कामना कीजिए। मैं ईश्वर नहीं हूँ; मैं मनुष्य हूँ। मैं बूढ़ा हूँ, और बहुत ज्यादा

१. साधन-सूत्रके अनुसार, बहुत-से लोग आश्रममें तब पहुँचे जब प्रार्थना समाप्त हो चुकी थी। उनके आग्रहपर गांधीजी फिरसे आश्रमके बाहर मैदानमें आये और वहाँ उन्होंने यह भाषण दिया।

थकान मैं सहन नहीं कर सकता। अगर मैं बार-बार आपके सामने आऊँ तो मेरी शक्ति क्षीण हो जायेगी। तब मैं अपना काम नहीं कर सकूँगा।

इसलिए आपसे प्रार्थना है कि आप मेरे दर्शनकी माँग न करें या पैर छूने के लिए सामने खड़े होने को न कहें। अगर आप प्रार्थनाके समय आयें तो मेरे दर्शन हो जायेंगे। लेकिन मैं आपको समझाना चाहता हूँ कि मुझे शान्ति चाहिए। नारे लगाना या तालियाँ पीटना मुझे पसन्द नहीं है। इनसे मुझे चिढ़ पैदा होती है। अगर आपको मुझसे प्रेम है तो आप वैसा नहीं करेंगे।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, ३-१२-१९४५

२११. पत्र : अमृतकौरको

सोदपुर
३ दिसम्बर, १९४५

चि० अमृत,

तुम्हारा पत्र अभी-अभी (११.४५ पर) मिला। दोपहर बाद डाक निकलना बन्द हो जाती है। तुम्हें दिल्ली या शिमलामें जितने दिन रुकने की जरूरत हो रुक सकती हो। जब आ सको तब आ जाओ। मैं कमसे-कम १० तारीख तक कलकत्तामें हूँ। उसके बाद सब-कुछ अनिश्चित है।

प्यारेलाल मजेमें है और काममें व्यस्त है। सुशीला सेवाग्राममें मदालसाकी देखभाल कर रही है। वह ५ तारीखको यहाँ आने वाली है।

सब ठीक है।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ४१७२) से; सौजन्य : अमृतकौर। जी० एन० ७८०८ से भी

२१२. पत्र : निर्मल कुमार बोसको

सोदपुर
३ दिसम्बर, १९४५

प्रिय निर्मल बाबू[1],

आपका प्यारा-सा पत्र मिला। आपका जैसा मन हो वैसा ही कीजिए।

मेरी रचनाओंकी व्याख्या करने के लिए आपको कुछ समयके लिए, जब मौसम ठंडा हो, वर्धा आना चाहिए।

कदाचित् आपकी अमीबाइसिस बीमारीको दूर नहीं किया जा सके, लेकिन नैसर्गिक उपचार द्वारा उसपर नियन्त्रण जरूर पाया जा सकता है। मेरा सुझाव है कि जब मैं पूनामें रहूँ तब आप वहाँके उपचारगृहमें आयें। १ तारीखसे यह गरीबोंके लिए खुल जायेगा।

आपका,
बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०५११) से

२१३. पुर्जा : आर० जी० केसीको[2]

[३ दिसम्बर, १९४५][3]

क्या आप चाहते हैं कि मैं कल आऊँ? ७.३० बजे शामका समय मेरे लिए अधिक ठीक रहेगा। यदि ७ बजेका समय आपको ठीक लगता हो तो मैं उस समय भी आसानीसे आ सकता हूँ।

आपसे किये वादेके मुताबिक मैं आपके लिए बहुत सारा साहित्य लेकर आया हूँ — इसके बारेमें ज्यादा बात कल करेंगे।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८०९ और ८१०) से

१. कलकत्ता विश्वविद्यालयमें भूगोल तथा नृवंशशास्त्रके प्राध्यापक; वे गांधीजी से पहले-पहल १९३४ में वर्धामें मिले थे और तभीसे उनके विचारोंके अध्ययन और प्रचारके काम में लग गये थे।

२ और ३. साधन-सूत्रमें बंगालके गवर्नर, आर० जी० केसीने अपनी टिप्पणीमें लिखा है: "ये पुर्जे मुझे मो० क० गांधीने ३ दिसम्बर, १९४५ को दिये थे जब उनका मौनवार था — "बातचीत" के दौरान, मैं ही डेढ़ घंटे बोलता रहा, वे कुछ नहीं बोले।"

२१४. पत्र : अरुणा आसफ अलीको

सोदपुर
३ दिसम्बर, १९४५

चि० अरुणा[1],

तुम्हारा पत्र ध्यानसे पढ़ा। काश, तुमसे खुलेआम मिल सकता और तुम्हें कुछ दिन अपने साथ रख सकता! मैं तुम्हें इतना प्यार करता हूँ कि पत्रके जरिये—यानी लिखकर—तुमसे बात कर ही नहीं सकता। जान लो कि मैं उदासीनताके कारण नहीं, बल्कि जान-बूझकर चुप रहा हूँ। मैं सत्यका पता लगाने की कोशिश कर रहा हूँ। तुम मेरी मदद कर रही हो। करती रहो। मेरी सलाहपर चलने के बजाय उसके आशयको ठीकसे समझकर तुम मेरी ज्यादा मदद कर सकती हो।

अभी इतना ही।

आशा है, तुम सकुशल होगी।

बापूके आशीर्वाद

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२१५. पत्र : नर्गिस कैप्टेनको

सोदपुर, कलकत्ता
३ दिसम्बर, १९४५

प्रिय बहन[2],

तुम्हारे पत्रके लिए धन्यवाद देने को बस ये दो पंक्तियाँ लिख रहा हूँ। निस्सन्देह तुमने जिन चीजोंका उल्लेख किया है, मिलने पर उनके बारेमें बताओगी ही। मुझे दुगनी गतिसे काम करना पड़ रहा है। लेकिन अब तक ठीक हूँ। हाँ, झ०के शब्द मैंने पढ़े थे। तुम दोनोंको प्यार।

बापू

श्रीमती नर्गिसबहन कैप्टेन
डनलेविन लॉज
पूना–५

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कांग्रेसके नेता आसफ अलीकी पत्नी। वे कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टीकी सदस्या थीं और भारत छोड़ो आन्दोलनमें उन्होंने प्रमुख भूमिका निभाई थी। तभीसे वे भूमिगत प्रवृत्तियाँ चला रही थीं।

२. सम्बोधन गुजरातीमें है।

२१६. पत्र : शरतचन्द्र बोसको

सोदपुर
३ दिसम्बर, १९४५

प्रिय शरत,

इसे लिखते समय मैं पीठके बल लेटा हुआ हूँ, क्योंकि मेरे पेटपर मिट्टीकी पट्टी चढ़ी हुई है।

नाथालाल भी मुझसे मिले। उनको तुमने जो जवाब दिया, मुझे अच्छा लगा। लेकिन जब तुम्हें फुर्सत हो, हमें इसकी और चर्चा अवश्य करनी चाहिए।

गीता[1] के विवाहके लिए मुझे अपने- घर आने को मत कहो। वह कल मुझसे मिल गई। वह बड़ी हो गई है। तुम जानते ही हो कि विवाहके सम्बन्ध में मेरे विचार कैसे विकसित हुए हैं। मैं उपस्थित रहूँ या न रहूँ, गीता और उसके (भावी) पतिको मेरे आशीर्वाद तो हैं ही (इतना लिखते-लिखते मैं सो गया था)।

मुझे तुम्हारे घर, पुराने घर, मोना[2] के पास और शेष देशबन्धु[3] परिवारसे मिलने तो आना ही है। तुम्हीं बताओ कि कैसे और कब आऊँ। कार्य-समिति की बैठक[4] के बाद ही आ सकता हूँ।

स्नेह।

बापू

श्री शरतचन्द्र बोस
१, वुडबर्न पार्क
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. शरतचन्द्र बोसकी पुत्री
२. चित्तरंजनदासकी पुत्री; देखिए "पत्र : मोनाको", ६-१२-१९४५ भी।
३. चित्तरंजनदास
४. जो कलकत्तामें ७ से ११ दिसम्बर तक होने वाली थी

२१७. पत्र : अमतुस्सलामको

३ दिसम्बर, १९४५

बेटी अ० स०,

तू बीमार हो गई थी। ऐसे नहीं होना चाहीये। तू कहती है सो ठीक है। तुझे उचित लगे सो कर। अलग २ देहातोंमें जाय वह ठीक होगा।

मेरी फिकर मत कर। ईश्वर चाहेगा तब तक मेरी तबीयत ठीक ही रखेगा। जब मौका मिले तब आ सकती है। बगैर कामके नहीं आना अच्छा है।

और तो कुछ लिखने का नहीं है। रातको लिख रहा हूं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५४०) से

२१८. पत्र : कृष्ण वर्माको

सोदपुर
४ दिसम्बर, १९४५

भाई कृष्ण वर्मा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारे विरुद्ध मेरा आरोप तो यह है कि तुम आडम्बर बहुत करते हो और झूठका आश्रय लेते हो। तुम्हारे बारेमें मेरा अपना अनुभव इससे ठीक उलटा है, किन्तु तुम विवेकहीन हो, उतावले हो और तुम्हारे विचारों में सामंजस्य नहीं है। इसी कारण तुम्हारा काम फबता नहीं। मैंने तो तुमसे कहा ही है कि यदि तुम बहुत-से लोगोंको सफाईसे न रख सको तो एकको ही रखो। यदि मैं किसीको यहाँसे भेजूं तो मुझे भय है कि तुम उसे सहन नहीं कर सकोगे। इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि तुम जैसा मैं कहूँ वैसा ही करो। इसके बावजूद यदि तुम आग्रह करोगे तो मैं यहाँसे किसीको भेजने की बातपर विचार करूँगा, किन्तु ऐसा करना उचित नहीं होगा। क्योंकि यदि तुम ऐसा करोगे तो बादमें पछताओगे।

डॉ० कृष्ण वर्मा
नैसर्गिक उपचार अस्पताल
मलाड, बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२१९. पत्र : वल्लभराम वैद्यको

सोदपुर
४ दिसम्बर, १९४५

भाई वल्लभराम,

तुम्हारा पत्र मिला। जब मैं आश्रम पहुँचकर स्थिर हो जाऊँ उस समय यदि तुम आना चाहो तो अवश्य आ जाना।

मेरे दृष्टिकोणसे मेरे विचारोंमें जो प्रगति हुई है, शायद तुम उससे परिचित नही हो। उक्त विचार मेरे सभी लेखोंके मूलमें तो थे ही, किन्तु हालमें वे और अधिक स्पष्ट हुए हैं। इसलिए एक ही जाति, अन्तर्जातीय या अन्तर्प्रान्तीय विवाहोंमें भी मेरी दिलचस्पी नहीं रह गई है। अतः मैं विवाहोंके बारेमें यथासम्भव कहीं कुछ नही कहता हूँ। मैं मुश्किलसे ही इन विवाहोंमें गया होऊँगा और अब तो मैंने न जाने का निश्चय ही कर लिया है। मेरी मान्यता तो यह है कि यदि हम वर्णाश्रमकी विशेषताको बचाये रखना चाहते हैं तो हिन्दू-मात्रको न केवल शूद्र बल्कि अतिशूद्र बन जाना चाहिए और अपनेको ऐसा ही समझना भी चाहिए। और इसकी सच्ची निशानीके तौरपर यथार्थ विवाह अतिशूद्र और तथाकथित अन्य वर्णोंके बीच ही होने चाहिए। ये विवाह भी भोगके लिए नही, बल्कि संयमपूर्वक [गृहस्थ जीवन बिताने] और संयमके लिए होने चाहिए।

अब मैं चि० रमाकान्त और चि० ताराको आशीर्वाद भेज सकता हूँ। वे सुखी हों, वे संयमी बनें और उनका सम्बन्ध दुहरा सेवामय हो। मेरा ऐसा अनुभव है कि सामान्यतः विवाह हो जाने के बाद एक सेवककी बजाय दो [सेवा] नही करते, बल्कि दोनों सेवासे विरत हो जाते हैं। इसमें अपवाद हो सकते हैं और मैं कामना करता हूँ कि यह विवाह भी अपवाद सिद्ध हो। इस मामलेमें प्रत्येक क्षेत्र में तुम्हारा अपना शुद्ध संयम उनके लिए सहायक सिद्ध होगा।

वैद्यकीय बोर्ड शिथिल नही पड़ा है, बल्कि उनका काम विशाल है। इसके अतिरिक्त उसने विभिन्न चिकित्सा-पद्धतियोंको भी मिलाने का विचार किया है, इसलिए लगता है कि कुछ समय तो लगेगा ही। यहाँ मैं यह भी जोड दूँ कि आयुर्वेदके प्रति मेरा अत्यन्त लगाव है, किन्तु आयुर्वेदिक चिकित्सकोंके प्रति मेरा अनुभव मधुर सिद्ध नही हुआ है। लेकिन फिलहाल तो यह असंगत बात है। जब तुम समय निकालकर यहाँ आओगे तब हम इस बारेमें और अधिक चर्चा करेंगे।

गुजरातीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

२२०. पत्र : शैलेन चटर्जीको

सोदपुर
४ दिसम्बर, १९४५

भाई शैलेन,

हृदयगत प्रार्थनाकी खुबी यह मानी जाती है और मेरा अनुभव है कि जो दूसरी शक्तिसे नहीं हो सकता है वह प्रार्थना-शक्तिसे हो सकता है। उसमें स्वराज बिंदुमात्र है। *बात यह है कि यह प्रार्थना तोतेकी [तरह] नहीं होनी चाहिये।* प्रार्थना वो ही होती है जो मनुष्य-जीवनको पल्टा देती है।

तुम्हारा दूसरा प्रश्न घोर अज्ञान बताता है। मैंने कहां कहा कि मैं १२५ वर्ष तक जीवित रहूंगा। अगर मैं ऐसी धृष्टता करूं तो जैसे प्रश्नकर्ता कहता है, वैसे मैं भगवान ही बन गया। उल्टा एक (श्वासके) सांसके बाद दूसरा ले सकूंगा कि नहीं उसका भी मुझे पता नहीं। मैंने जो कहा है वह यह है कि सेवा करते-करते १२५ वर्ष तक जीवित रहना चाहता हूं। और मैंने यह भी कहा है कि ऐसी इच्छा सब करें। इच्छा करना हमारा काम है। मैं भगवानके भक्तोंमें से एक अदना भक्त हूं।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२२१. भाषण : प्रार्थना-सभामें[1]

सोदपुर
४ दिसम्बर, १९४५

गांधीजी ने समझाया कि उपस्थित जन-समुदाय जब तक शान्तिपूर्वक चुपचाप न बैठे तब तक प्रार्थनाका वास्तविक उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता।

मैंने अभी देखा कि हमारी प्रार्थना समाप्त होने के बाद लोगोंकी एक भीड़ प्रार्थना-सभामें घुसी है। मैं आपको याद दिला दूं कि प्रार्थना (बंगालके समयके अनुसार) शामके ठीक ५ बजे शुरू होती है। जो लोग प्रार्थनामें सम्मिलित होना चाहें उन्हें यहाँ इससे पहले आ जाना चाहिए।

१. साधन-सूत्रके अनुसार इस सभामें अंग्रेज, अमेरिकी और चीनी लोग भी थे और छात्राएँ भी काफी बड़ी संख्यामें मौजूद थीं।

आगे बोलते हुए गांधीजी ने कहा कि मुझे खुशी है कि मेरी प्रार्थनामें लोग इतनी बड़ी संख्यामें शरीक हुए। मुझे इसकी भी बहुत खुशी है कि दुर्भाग्यवश जो लोग देरसे आये उन्होंने भी उपस्थित समुदायकी भावनाको ग्रहण कर लिया है और श्रोता-समूहके एक छोरपर खड़े होकर उन्होंने मेरी बात बहुत शान्त भाव से सुनी। प्रार्थनामें भाग न ले सकने के बावजूद वे बहुत खामोश थे। प्रार्थनाका उद्देश्य सामान्य जनको यही चीज सिखाना है। इसे आत्म-संयम कहते हैं और मानव-जीवनका यह एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। पिछले सोलह वर्षोंसे मैं इसका आचरण कर रहा हूँ। जब भी मुझे किसी सभा या समारोहमें पहुँचने में देर हो जाती है तो मैं वहाँ न जाना ही ठीक समझता हूँ, क्योंकि अन्यथा, मैं जानता हूँ, लोगोंको अड़चन होगी ही। ऐसी स्थितिमें पड़ जाने पर मैं मित्रोंसे अनुरोध करूँगा कि सभामें शामिल होने के उनके अनुरोधको न मान सकने के लिए वे मुझे क्षमा करें। जो लोग प्रार्थनामें भाग लेने के लिए आये थे उनसे उन्होंने आग्रहपूर्वक कहा कि वे आत्म-संयमके गुणको सीखें और अपने जीवनमें उसका विकास करें।

अन्तमें गांधीजी ने कहा कि कलकत्तामें अपने प्रवासके दौरान मैं आत्म-संयम और प्रार्थनाके सामाजिक तथा अन्य महत्त्वपूर्ण पहलू समझाने की कोशिश करूँगा।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, १५-१२-१९४५

२२२. पत्र : शान्तिलाल देसाईको

५ दिसम्बर, १९४५

चि० शान्तिलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारी एक टिप्पणी तो मैंने अपनी फाइलमें ही रख छोड़ी है, ताकि मैं उसे फुर्सतमें पढ़कर तुम्हें वापस लौटा सकूँ। दूसरी टिप्पणी मैंने पढ़ तो ली है, किन्तु मुझे मालूम नहीं कि अब वह कहाँ है। वह खोई नहीं है, किन्तु मैं यह मानता हूँ कि वह तुम्हें यथाशीघ्र मिलनी चाहिए। इस मामलेमें कुछ ढिलाई हुई है जिसका मुझे दुःख है, लेकिन मैं यह नहीं जानता कि यह ढिलाई क्यों हुई।

तुमने मणिभाईके बारेमें सूचना देकर ठीक किया। उनसे मैंने बात कर ली है। मेरी नजर तो उनपर ठहरी ही हुई है। उन्हें दिनशाके चिकित्सा-केन्द्र में रख लेने की मेरी उत्कट इच्छा है। मैं मानता हूँ कि वहाँ [दिनशाके चिकित्सा-केन्द्र] का अनुभव ग्रामीण-क्षेत्रमें बहुत काम आयेगा। इसके अतिरिक्त मुझे भी

वहाँ कुछ समय तो बिताना ही है, इसलिए उस दौरान वे बार-बार मेरी देखरेख में आते ही रहेंगे, तब मैं स्वयं उनसे और अधिक परिचय कर लूँगा।

आशा है, तुम्हारा वहाँ अच्छी तरह चल रहा होगा।

श्री शान्तिलाल देसाई
अनाविल विद्यार्थी आश्रम
नानपूरा, सूरत

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२२३. पत्र : जीवणजी डा० देसाईको

सोदपुर
५ दिसम्बर, १९४५

चि० जीवणजी,

तुम्हारा पत्र और चैक मिले। कापीराइटके बारेमें तुमने जो सुझाव दिया है उस हद तक हमें जाना चाहिए या नहीं, यह प्रश्न विचारणीय है। यदि कोई व्यक्ति अनुमति माँगे और हम उसे अनुमति दे दें तो इसका अर्थ यह होगा कि हमने पुस्तक पढ़ ली है अथवा पढ़वा ली है और वह हमें पसन्द है। इस सम्बन्धमें आनन्द हिंगोरानीने विभिन्न बोर्डोंका सुझाव दिया था ताकि तमिल बोर्ड तमिल अनुवादके बारेमें निर्णय करे और मलयालम बोर्ड उस भाषाके बारेमें सुझाव दे। इस प्रकार विभिन्न भाषाओंके लिए पृथक् बोर्ड होगा। इस तरहके झंझटमें पड़ना हमारे लिए कहाँ तक उचित होगा और कहाँ तक वह शोभा देगा, यह विचारणीय है।

टॉल्स्टॉयकी पुस्तकके एक ही भाषामें अनेक अनुवाद हुए हैं। इन सबका कोई स्तर भी नहीं है, और उन पुस्तकोंके शीर्षक भी अलग-अलग दिये गये हैं। सभी बिक जाती हैं, किन्तु जो अत्यन्त प्रामाणिक, श्रमसाध्य और सुन्दर अनुवाद करने वाले हैं उनकी अधिकाधिक पुस्तकें बिक जाती हैं। 'बाइबिल' के बारेमें भी ऐसा ही हुआ है। प्रामाणिक अनुवाद तो वह है ही, किन्तु अन्य बहुत-से इस क्षेत्रमें हैं और उन्हें कोई रोकता नहीं, अपितु प्रत्येकका अपना-अपना पाठक-वर्ग है।

तुमने 'आत्मकथा' का प्रश्न उठाया है। एक तमिल प्रकाशकने एक अनुवाद प्रकाशित किया है, किन्तु यह दूसरा है। हमें यह कैसे मालूम होगा कि किसका अनुवाद वास्तवमें अच्छा है? अथवा दूसरे अनुवाद करने वालेको रोक देना अच्छा है, इसमें मुझे कोई बहुत तथ्य नजर नहीं आता। यहाँ तक कि जब हमने कापीराइट लागू करने का निर्णय किया था तो उस समय भी मैं इस हद तक

नहीं गया था। यह ऐसा मामला है जिसपर न तो वकीलके दृष्टिकोणसे और न आर्थिक दृष्टिकोणसे ही विचार किया जा सकता है। हमें इसपर सर्वथा नैतिक और व्यावहारिक दृष्टिकोणसे विचार करना चाहिए। और इस दृष्टिकोणसे विचार करने पर मेरा मन तो यही कहता है कि जिस व्यक्तिने हमें पत्र लिखा है उसे अनुवाद प्रकाशित करने की अनुमति दे दी जाये। किन्तु मैंने उसे उत्तर नहीं दिया है। तुम सबसे मिलकर विचार-विमर्श करना और जो उत्तर दिया जाना चाहिए वह मुझे भेज देना। उसपर विचार करने के बाद मैं उसे उत्तर दे दूंगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९५९) से। सी० डब्ल्यू० ६९३३ से भी; सौजन्य : जीवणजी डा० देसाई

२२४. पत्र : सोनावणेको

सोदपुर
५ दिसम्बर, १९४५

भाई सोनावणे,

तुम्हारा पत्र मिला। अच्छा किया कि लिखा। मेरी उम्मीद है कि वकालत अच्छी तरहसे चलेगी। एसेम्बलीमें न जाने का विचार मुझको अत्योत्तम लगता है।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२२५. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
५ दिसम्बर, १९४५

प्रार्थनाकी विधि और प्रयोजनके बारेमें बोलते हुए गांधीजी ने कहा कि इसका प्रयोजन व्यक्तिकी अपनी अन्तरात्मासे साक्षात्कार कराना है। जिस हद तक यह साक्षात्कार सिद्ध होता है उस हद तक व्यक्ति अपने अगले २४ घंटोंके लिए नई आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करता है।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ६-१२-१९४५

२२६. पत्र : आर० जी० केसीको

सोदपुर
६ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

आप 'कंस्ट्रक्टिव प्रोग्राम'[1] की एक प्रति चाहते थे, सो मैंने वह सुलभ करा दी थी। लेकिन आजकी डाकमें उसके संशोधित संस्करणके एक प्रूफकी प्रति आई है। उसे आपके देखने के लिए भेज रहा हूँ। जो अंश पसन्द हों, पढ़ लीजिएगा। यह प्रति मुझे लौटाने की जरूरत नहीं है।[2]

कामकी भारी भीड़के बीच दूसरी चीजें मैं यथासम्भव जल्दीसे-जल्दी इकट्ठा करने की कोशिश कर रहा हूँ।

आपसे और श्रीमती केसीसे मिलकर मुझे जो प्रसन्नता हुई उसे फिरसे पाना चाहूँगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

बंगालके गवर्नर महोदय
कलकत्ता

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८११) से। गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, पृ० १०५ भी

१. देखिए खण्ड ७५, पृ० १६१-८३।

२. अपने ९ दिसम्बर, १९४५ के पत्रमें आर० जी० केसीने पुस्तिकाके सन्दर्भमें लिखा था कि वे कुटीर कताई-बुनाईके सम्बन्धमें गांधीजी के विचारोंसे पूर्णतः सहमत थे, लेकिन किसानों द्वारा अपनी जमीनमें कपास पैदा किये जाने के खिलाफ थे, क्योंकि इससे उनकी मुख्य फसल धानकी खेतीके क्षेत्रमें कमी आती। इसके अतिरिक्त उनकी रायमें, गांधीजी की योजना किसानोंको मानसून पर निर्भर रहने तथा सिंचाईके अभावसे उत्पन्न होने वाली अन्य कठिनाइयोंसे भी छुटकारा नहीं दिलाने वाली थी।

२२७. पत्र : मोनाको

सोदपुर
६ दिसम्बर, १९४५

प्रिय बेबी,

तुम्हारा प्यारा पत्र मिला। तुम्हारा भरापूरा परिवार देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। मगर मैं इतना व्यस्त था कि उन सबके साथ जी-भरकर खेल नहीं सका।

अगर तुम अभी अपना वादा पूरा नहीं कर पाई हो तो फिर कोशिश करो।

तुम्हें आने की तकलीफ उठाने की जरूरत नहीं है। तुम्हारी अनुपस्थितिको मैं गलत नहीं समझूंगा।

तुम सबको प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२२८. पत्र : ए० के० एम० जकारियाको

सोदपुर
६ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

श्री प्यारेलालके नाम आपका इसी ३ तारीखका पत्र देखकर प्रसन्नता [हुई।] आप शामके ५.१५ के ठीक पहले किसी भी दिन आ सकते हैं। अगर उस समय मुझे कामसे कहीं जाना पड़ा तो क्षमा करेंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

जनाब ए० के० एम० जकारिया
६८, सैयद अमीर अली एवन्यू
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२२९. पत्र : आगाखाँको

खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर (कलकत्ताके निकट)
६ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

यह पत्र आपके अहातेमें स्थित छोटे-से श्मशानके बारेमें लिख रहा हूँ। आपको शायद मालूम होगा कि जब मैं यरवडामें आगाखाँ महलमें कैदी था, उस समय पहले महादेव देसाईकी और फिर मेरी पत्नीकी अस्थियाँ आपके अहातेमें दफनाई गई थी। उनका दाह-संस्कार सरकारके आदेशपर वहाँ किया गया था। सरकारने मुझे महलसे बाहर सामान्य श्मशानमें दाह-संस्कार नहीं करने दिया। सरकारकी कृपा और आपके लोगोंकी उदारताके फलस्वरूप मित्रगण उस श्मशान तक श्रद्धांजलि अर्पित करने जाते रहे हैं। मैं सरकारसे अनुरोध करता रहा हूँ कि वह उस छोटी-सी जमीनको खरीद ले और भक्तोंके वहाँ तक पहुँचने के रास्तेके सम्बन्धमें भी कुछ अधिकार प्राप्त कर ले। अब चूँकि आप भारत आये हुए हैं, इसलिए क्या मैं आपसे आशा रखूँ कि आप जैसा ठीक समझें उस ढंगसे मेरे इस अनुरोधके पूरे किये जाने का मार्ग प्रशस्त करेंगे?

आशा है, आप स्वस्थ-प्रसन्न होंगे और आपके भारतसे वापस जाने के पहले हमारी मुलाकात हो सकेगी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

हिज हाइनेस आगाखाँ

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२३०. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको

सोदपुर
६ दिसम्बर, १९४५

चि० शान्तिकुमार,

तुम्हारे पत्रका उत्तर बड़ी मुश्किलसे अब दे पा रहा हूँ। साथमें आगाखाँको लिखा

पत्र[1] है; उसे पढ़ लेना। यदि ठीक लगे तो पहुँचा देना। सर पुरुषोत्तमदास[2] को दिखाना चाहो तो दिखा देना।

तुम दोनोंको,

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४८०६) से। सौजन्य : शान्तिकुमार मोरारजी

२३१. पत्र : मदालसाको

सोदपुर
६ दिसम्बर, १९४५

चि० मदालसा,

तुझे तो जवाबकी जरूरत नहीं, पर मुझे है। तुझे फिर बुखार आ गया, यह ठीक नहीं। धूपमें लेटने की आदत डालना। चाहे तो भले समय धीरे-धीरे बढ़ाती जाना। पहले तो धूपमें कपड़े ओढ़कर सोया कर, और फिर ज्यों-ज्यों धूप गरम लगती जाये त्यों-त्यों ओढे हुए कपड़े हटाती जा — यहाँ तक कि अन्तमें नग्न सो सके। इससे छाती तो ठीक हो ही जायेगी, साथ ही मेरा खयाल है कि शरीर भी रोगमुक्त हो जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३२७

१. देखिए पिछला शीर्षक।
२. पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास

२३२. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

सोदपुर
६ दिसम्बर, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारे दो पत्र मिले। मैंने कोई सुझाव दिया हो किन्तु कोई व्यक्ति उसके विरुद्ध राय जाहिर करे, तो [ऐसी स्थितिमें] मेरे कथनानुसार ही व्यवहार करना चाहिए। यह मानकर कि तुम पूना गये होंगे मैं यह पत्र वहींके पतेपर भेज रहा हूँ।

चाहे जो तुम्हारे सुनने में आये किन्तु इस कारण तुम्हें डरना क्यों चाहिए? तुम अपने काममें जुटे रहो और बिना कारण बोलो ही मत। वहाँ तो तुम्हें तीन ही कामोंको शोभान्वित करना है: हिसाब-किताब रखना, हाट-बाजार करना और सफाई बनाये रखना। सफाई बनाये रखने के बारेमें तुम्हें जब-तब अपनी राय भी जाहिर करनी पड़ सकती है, लेकिन बाकी कामोंके बारेमें तो तुम्हें कुछ भी नहीं कहना है। यदि हिम्मत और श्रद्धा रखोगे तो तुम्हें यश ही मिलेगा। किन्तु यदि न भी मिले तो क्या हुआ?

लगता है कि कंचनका स्वास्थ्य ठीक रहता है। मुझे उससे बातचीत करने का कम ही समय मिल पाता है। वह काम करती है और प्रसन्न रहती है।

मैंने तुम्हारा पत्र फाड़ दिया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६१५) से। सी० डब्ल्यू० ७१९७ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

२३३. पत्र : बलभद्रको

सोदपुर
६ दिसम्बर, १९४५

भाई बलभद्र,

आपका खत मिला। सत्यवती[1] [कि] चली जाने से आपका अधिक परिचय मुझे अवश्य प्रिय होगा।

श्री बलभद्रजी
६, प्यारेलाल बिल्डींग
काश्मीरी गेट, दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. स्वामी श्रद्धानन्दकी पौत्री

२३४. पत्र : कृष्णचन्द्रको

सोदपुर
६ दिसम्बर, १९४५

चि० कृष्णचंद्र,

१. ओम प्रकाशजी के बारेमें मेरा तो ख्याल है कि एम० ए० की उपाधी की कोई आवश्यकता नही है। उर्दूका ज्ञान उत्तम प्रकारका करने की, बढ़ाने की आवश्यकता है ही। उसके लिए उपाधी क्या करेगी? भाईके बुलाने पर यदि वे घर जाना चाहें तो अवश्य जा सकते हैं।

२. साधुको मैंने नायकमजी के सुपर्द किया था, क्योंकि मैंने महसूस किया कि तुम्हारे सरपर देखभाल करने का केस नही रखना चाहिए। वह जाना चाहे तो जाने दो। यदि रहे तो सब नियमोंका पालन करके ही रहे। पाखाना साफ करना प्रथम कर्तव्य है। वह किसी तरहसे बोझारूप होना ही नहीं चाहिए। कनु मुझे बताता है उसपर से तो वह बिलकुल नालायक मनुष्य सिद्ध होता है।

नये सेवाग्रामके बारेमें जो उचित माना जाय वही किया जाय। उसमें तो जाजूजी कहें वैसे ही किया जाय।

शंकरनजी का खत इसके साथ है, पढ़ो। उसमें [उनकी] बहिन और लड़केके बारेमें उत्तर आ जाता है।

जो बहिन सिर्फ हिन्दी ही सीखना चाहती है वह आरामसे अपने आप सीख सकती है। लेकिन हिन्दी ही सीखने का प्रबन्ध हम नहीं कर सकते हैं। प्रबन्ध दोनों लिपिके लिए ठीक हो सकता है। यह वस्तु बहुत ही बुद्धिग्राह्य है और उनकी बुद्धि जाग्रत करके उनको समझाना। हम किसीको दोनों लिपि सीखने के लिए मजबूर न करें लेकिन जो सीखना चाहें उनके लिए सुविधा कर दें।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४८३५) से

२३५. पत्र : वी० ए० सुन्दरम्‌को

सोदपुर
६ दिसम्बर, १९४५

चि० सुंदरम्,

तुम्हारा खत मिला। मैं असेम्बलीके चुनावमें जरा-सा भी रस नहीं लेता हूं। तुम्हारा खत पंतजी[1] को भेज देता हूं। सुरेश मुझे अच्छी तरह याद है। सुरेश-जैसेको भी असेम्बलीमें जाने की इच्छा होती है उससे मुझे आश्चर्य होता है।

आशीर्वादम्
बापु[2]

श्री वी० ए० सुन्दरम्
कृष्ण कुटीर
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
बनारस

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० २८९५) से। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य : प्यारेलाल

२३६. भाषण : प्रार्थना-सभामें[3]

सोदपुर
६ दिसम्बर, १९४५

अपना भाषण आरम्भ करते हुए गांधीजी ने सोदपुर रेलवे स्टेशन की उस दुर्घटनाका जिक्र किया जिसमें एक आदमी या तो चलती गाड़ीमें, जिसे सोदपुर स्टेशनपर रुकना नहीं था, चढ़ने की कोशिशमें या ऐसे ही किसी अन्य कारणसे कुचलकर मर गया।

१. गोविन्द वल्लभ पंत
२. ये दो शब्द तमिल लिपिमें हैं।
३. इस सभामें अब्दुल गफ्फार खाँ और जवाहरलाल नेहरू भी उपस्थित थे।

आप लोग सोच सकते हैं कि करोड़ों भारतीयोंमें कोई एक व्यक्ति ऐसी किसी परिस्थितिमें यदि मौतका शिकार बन जाता है तो वह कौन-सी बड़ी बात हुई। लेकिन ऐसा सोचना बिल्कुल गलत है। अगर आप इस तरह सोचेंगे तो भारतमें भ्रातृत्वकी स्थापना नहीं कर पायेंगे और उसको मुक्ति नहीं दिला सकेंगे। इसके बजाय आपको सोचना चाहिए कि उस दिन जिस व्यक्तिकी मृत्यु हुई वह आपमें से ही एक था और उसके दुःखद अन्तपर आपको शोक करना चाहिए।

गांधीजी ने कहा, शायद मैं ही उसकी मृत्युके लिए किसी हद तक जिम्मेवार हूं, क्योंकि वह या तो मेरे दर्शन करने या प्रार्थनामें शामिल होने यहाँ आया था। कुछ दोष प्रार्थना-सभामें भाग लेने वालोंका भी है, क्योंकि प्रार्थना समाप्त होते ही वे स्टेशनकी ओर भागे और गाड़ी पकड़ने के लिए एक-दूसरेसे स्पर्धा करके उन्होंने ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी जिससे उसकी मृत्यु ही गई। इसलिए आप सब मेरे साथ यह प्रतिज्ञा कीजिए कि भविष्य में आप ऐसी परिस्थिति उत्पन्न नहीं करेंगे जो आपके किसी भाईकी मृत्युका कारण बने।

यह सब इसलिए हुआ कि आप अनुशासित नहीं हैं। प्रार्थनाका उद्देश्य मनुष्यको अनुशासन सिखाना है जिसकी अत्यन्त आवश्यकता है। अगर आप लोग प्रार्थना करने के फलस्वरूप मानसिक रूपसे अनुशासित हो जायें तो भविष्यमें आप उस दिनकी तरह फिर वह गलती कभी नहीं करेंगे।

यदि प्रार्थनाके द्वारा आप मानसिक रूपसे अनुशासित हो जायें तो आप ऐसी अवस्थाको प्राप्त कर लेंगे जो भारतकी मुक्तिसे भी अधिक उत्तम और महान है।

भारतकी आजादीकी रक्षा शायद तमंचों और तलवारोंकी सहायतासे की जा सकती है। लेकिन अगर उन हथियारोंके समर्थक अनुशासित नहीं हुए तो उनका क्या मूल्य है? इसलिए कोई देश चाहे हिंसासे प्रतिबद्ध हो या अहिंसा से, अनुशासन तो सभी लोगोंके लिए सर्वोपरि महत्त्वकी चीज है।

जैसा कि मैंने दो दिन पहले कहा था, अनुशासनके बिना स्वराज्य प्राप्त करना कठिन है।

यदि आप पूर्णतः ध्यानावस्थित होकर प्रार्थना करें तो पायेंगे कि आपकी सभी कठिनाइयाँ आसान हो गई हैं।

अन्तमें दक्षिण आफ्रिकाकी एक घटनाका जिक्र करते हुए गांधीजी ने कहा कि एक जहाज चट्टानसे टकरा गया और अब वह डूबने वाला ही था। उसका कप्तान दृढ़संकल्प और अनुशासित व्यक्ति था। उसने अपना मानसिक सन्तुलन बनाये रखा और महसूस किया कि वह सबको नहीं बचा सकता। इसलिए वह

जितने लोगोंको बचा सकता था उतनेको बचाने का प्रबन्ध कर दिया और फिर प्रभुकी स्तुति करते हुए डूबते हुए जहाजके साथ अकेले जलमग्न हो गया। अगर वह अनुशासित आदमी न होता तो जहाजके जिन यात्रियोंकी जानें उसने बचाईं उन सबकी जानें नहीं बचा पाता। इसलिए जिस चीजकी अत्यन्त आवश्यकता है वह है अनुशासन, और प्रार्थनामें मन-प्राणसे भाग लेकर सब लोग इसे प्राप्त कर सकते हैं।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ७-१२-१९४५

२३७. तार : आगाखाँको

सोदपुर
७ दिसम्बर, १९४५

हिज हाइनेस आगाखाँ
बम्बई

तारके लिए बहुत धन्यवाद। आपसे मिलकर और साम्प्रदायिक समस्याका समाधान जानकर मुझे प्रसन्नता होगी। मौलाना अस्वस्थ हैं लेकिन काम कर रहे हैं। फरवरीमें वर्धा पहुँचने की आशा है। पत्र लिख रहा हूँ।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२३८. पत्र : जीवणजी डा० देसाईको

सोदपुर
७ दिसम्बर, १९४५

चि० जीवणजी,

रचनात्मक कार्य सम्बन्धी [पुस्तिकाकी] तुम्हारी प्रूफ कॉपी मुझे कल मिली। इसका उपयोग मुझे यहीं करना था, इसलिए कर लिया है। किन्तु यह प्रूफ तो मैं पहले ही देख चुका था। इसके साथ कोई पत्र नहीं है, इसलिए उसे भेजने का कारण मैं स्पष्ट समझ नहीं सका। तुमने मेरी प्रस्तावनापर शीर्षक दिया है, किन्तु जिस पृष्ठसे मूल पुस्तिका आरम्भ होती है उसपर कोई शीर्षक नहीं है।

इस कारण मैं समझता हूँ कि छपाईसे पहले इसे ठीक-ठाक करने का काम तो अभी वहाँ बाकी है ही। मैंने इस बारेमें प्यारेलालजी से तुम्हें लिखने को तो कहा ही है, किन्तु सवेरेके समय तुम्हें इतना लिखवा देना मैं उचित समझता हूँ।

मेरा खयाल है कि मैं आवरणके बारेमें तुम्हें पहले ही कुछ लिख चुका हूँ। मेरा सुझाव यह है कि तुमने [पुस्तिकामें] जो १८ शीर्षक दिये हैं उन्हें आवरण पर यथाक्रम उद्धृत कर देना चाहिए और उनके सामने पृष्ठ-संख्या दे देनी चाहिए, जिसमें पाठकको सुविधा हो और यह बताया जा सके कि उसमें किस-किस विषय का समावेश है। यही चीज आवरणपर चक्रके अन्दर भी दी जा सकती है। बीचमें चरखेको रखकर अन्य शीर्षकोंको ग्रहोंके रूपमें दिया जा सकता है। किन्तु निःसन्देह इसमें एक कठिनाई आती है। साम्प्रदायिक एकताको ग्रह के रूपमें कैसे दिया जा सकता है? और यदि दिया जाये तो मेरी मूल कल्पना में दोष आ जाता है, क्योंकि मूल कल्पना यह है कि खादी मुख्य हस्तशिल्प है तथा अन्य उद्योग खादी-रूपी सूर्यके आसपास अवस्थित होकर उसकी परिक्रमा कर रहे हैं। इसमें यदि हम आदिवासियों, किसानों, विद्यार्थियों और साम्प्रदायिक एकता आदिको भी स्थान दे सकें तो कल्पना सफल हुई मानी जायेगी। इसलिए शायद यह अच्छा होगा कि चक्रमें देने का विचार छोड़ दिया जाये अथवा चक्रके भीतर खादी और ग्रामोद्योगोंको ही स्थान दिया जाये। किन्तु हमें इसके पीछे तनिक भी समय नष्ट नहीं करना चाहिए, क्योंकि पुस्तिका शीघ्र प्रकाशित होना आवश्यक है। यह भी आवश्यक है कि इस पुस्तिकाके अनुवाद भी साथ-साथ प्रकाशित हो जायें। यदि इस पुस्तिकाके अन्तमें पूरकके रूपमें अन्य पठनीय पुस्तकोंके नाम भी दे दिये जायें तो अच्छा होगा। जैसे राजेन्द्रबाबूकी पुस्तक, गुलजारीलालका निबन्ध आदि। यदि उक्त पुस्तकोंके नाम तत्काल तुम्हारे ध्यान में न आयें तो तुम इसे छोड़ भी सकते हो। आज शायद प्यारेलाल तुम्हें तार भी देंगे कि "प्रूफकी दूसरी प्रति भेजो।" इसके पीछे उद्देश्य यह है कि यदि मुझे प्रूफमें संशोधन करना हो तो डाकके आने-जाने में लगने वाला समय बच जाये। क्योंकि जो प्रति मैंने दे दी है वह अब मेरे हाथमें आने वाली नहीं है।[1]

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९६०) से। सी० डब्ल्यू० ६९३४ से भी; सौजन्य : जीवणजी डा० देसाई

१. यह प्रति बंगालके गवर्नर आर० जी० केसीको दी गई थी; देखिए पृ० १७६।

२३९. पत्र : जतीनदास अमीनको

सोदपुर
७ दिसम्बर, १९४५

चि० अमीन,

सुशीलाके हाथ भेजा हुआ तुम्हारा पत्र मिल गया है। वह परसों यहाँ पहुँची। ऐसा लगता है कि तुम अभी तक शान्त नहीं हुए हो। यदि तुम शान्त हो जाओ तो बहुत अधिक सेवा कर सकते हो। वहाँ तुम थोड़ा ही काम लेना। यदि तुम उसे शोभान्वित कर सकोगे तो बहुत अच्छा माना जायेगा।

तुमने जो लिखा है वह बिलकुल सही है। लघुतामें ही प्रभुता निहित है और प्रभुतामें लघुता है। इसलिए हमें तो रजकण बनकर ही सेवा करनी चाहिए।

तुम्हारा कैमरा तो उधर जानेवाले किसी व्यक्तिके हाथ ही भिजवाना है न? आशा है, तुम्हें जल्दी तो नहीं होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२४०. पत्र : मनोरंजन चटर्जीको

सोदपुर
७ दिसम्बर, १९४५

भाई मनोरंजनबाबू,

आपका तार मिला। मैं डा० श्यामाप्रसादजी को लिखता हूं और डा० सुशीला नायर या प्यारेलालजी को वहां भेज दूंगा।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री मनोरंजन चटर्जी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए अगला शीर्षक।

२४१. पत्र : श्यामाप्रसाद मुकर्जीको

सोदपुर
७ दिसम्बर, १९४५

भाई श्यामाप्रसादजी,

आप क्यों बीमार पड़े हैं? डा० विधान मुझे कहते थे कि आप तबियतकी कुछ परवा नहीं करते हैं और जो काम हाथमें लेते हैं उसके पीछे ही पड़े रहते हैं। यह गुण भी है और अवगुण भी। जब मर्यादामें रहकर पीछे पड़ते हैं तब तो अच्छा है। मर्यादासे बाहर जाकर पड़ते हैं तब बुरा है। मेरी उमीद है कि जैसे अखबारोंमें है वैसे पूरा आराम लेकर ही काममें लग जायेंगे।

आपका,
मो० क० गांधी

श्यामाप्रसाद मुकर्जी
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२४२. पत्र : सुरेन्द्रनाथ विश्वासको

सोदपुर
७ दिसम्बर, १९४५

भाई सुरेनबाबू,

आपका हकिकतसे भरा हुआ खत मिला। वह मुझे उपयोगी होगा।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री सुरेन्द्रनाथ विश्वास
१/२३, प्रिंस गुलाम मुहम्मद रोड
कालीघाट
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२४३. पत्र : चारुप्रभा सेनगुप्तको

सोदपुर
७[1] दिसम्बर, १९४५

चि० चारुप्रभा,

आजकल मैं सब हिन्दीओंको राष्ट्रभाषामें ही लिखने की कोशीश करता हूं। हम एक-दूसरोंको कब तक अंग्रेजीमें लिखते रहेंगे?

१० तारीख तक तो मैं बहुत कामोंमें फंसा हूं। उसके बाद कहां तक यहा रहूंगा उसका पता नहीं है। फिर भी मै चि० अरुणा[2] को लिखता हूं।

बापुके आ[शीर्वाद]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८७१०) से। सी० डब्ल्यू० १४९६ से भी; सौजन्य : ए० के० सेन

२४४. पत्र : अरुणा सेनगुप्तको

सोदपुर
७ दिसम्बर, १९४५

चि० अरुणा,

माताजी मुझे लिखती है कि मैं तुमको आने के लिये लिख भेजूं। १० तारीख तक तो मैं कार्यसे भरा हूं। उसके बाद मैं कहां हूंगा उसका पता नहीं है। अखबारोंमें देखो और मैं यदि सोदपुरमें हूं तो किसी दिन शामको ५ बजे प्रार्थनामें आना। प्रार्थनाके बाद २ मिनट बात कर लूंगा।

बापुके आ[शीर्वाद]

श्रीमती अरुणा सेनगुप्त
९३/३/२, हरि घोष स्ट्रीट
कलकत्ता

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८७११) से। सी० डब्ल्यू० १४९७ से भी; सौजन्य : ए० के० सेन

१. प्यारेलाल पेपर्समें उपलब्ध पत्रकी एक नकलपर तिथि ८ दिसम्बर है।
२. चारुप्रभा सेनगुप्तकी पुत्री; देखिए अगला शीर्षक।

२४५. भेंट : समाचारपत्रोंको

७ दिसम्बर, १९४५

यह पूछे जाने पर कि क्या गांधीजी कांग्रेस कार्य-समितिकी बैठक[1] के विषय में कुछ कहना चाहेंगे, उन्होंने उत्तर दिया :

नहीं, मैं थका हुआ हूँ।

एक अन्य प्रश्नके उत्तरमें गांधीजी ने कहा :

मैं आपको क्या दे सकता हूँ? मौलाना यहाँ हैं। आप उनसे जो लेना चाहें, ले सकते हैं। उन्होंने मुझे यहाँ बुलाया है, लेकिन उन्होंने मुझे न खाने को खाना और न पीने को पानी ही दिया है। और मेरा काम खत्म होने के बाद वे मुझे वापस भेज रहे हैं। मौलाना स्वयं आपके लिए भोजन तैयार कर रहे हैं और जब खाना तैयार हो जायेगा तब मौलाना आपको दे देंगे।

कारके लिए प्रतीक्षा करते हुए गांधीजी ने मौलाना साहबकी ओर मुड़ कर कहा :

मौलाना साहब, ये सम्वाददाता और फोटोग्राफर लोग मजा ले रहे हैं और हमारी कारको रोक रहे हैं।

इसपर खूब जोरोंकी हँसी हुई। एक सम्वाददाताने गांधीजी का ध्यान नई दिल्लीको इस घोषणाकी ओर दिलाया कि वाइसरायने महात्मा गांधीसे मिलना स्वीकार कर लिया है। सम्वाददाताने पूछा कि क्या इसका मतलब यह है कि आपने मुलाकातका समय माँगा था।

गांधीजी ने उत्तर दिया कि यह समाचार समाचारपत्रोंमें प्रकाशित हुआ है। इससे अधिक कुछ कहने से उन्होंने इनकार कर दिया।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ८-१२-१९४५

१. यह बैठक कांग्रेस अध्यक्ष अबुल कलाम आजादके निवास-स्थानपर हुई थी। सम्वाद-सूत्र के अनुसार, "गांधीजी एक घंटेसे अधिक समय तक बोले थे और इस दौरान उन्होंने राजनीतिक स्थिति, आजाद हिन्द फौज, कांग्रेस संविधानमें आवश्यक परिवर्तनों, केन्द्रीय तथा प्रान्तीय विधान-सभाओंके चुनावोंमें कांग्रेसकी सफलताकी सम्भावनाओं तथा कुछ अन्य विषयोंकी चर्चा की। गांधीजी ने आर० जी० केसीके साथ अपनी बातचीतका वृत्तान्त भी सुनाया।"

२४६. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
७ दिसम्बर, १९४५

गांधीजी ने कहा कि मैंने देखा कि लोग मेरे यहाँ आने के बाद ही शान्त हुए। यह आदर्शके अनुरूप नहीं है। जिस स्थानपर प्रार्थना की जानी हो उसे आपको मन्दिर समझना चाहिए और प्रार्थनामय मनसे ही वहाँ उपस्थित होना चाहिए। आप लोगोंको चाहिए कि आप चुपचाप यहाँ आयें और शान्ति बनाये रखें तथा इसी मनःस्थितिमें यहाँसे चले जायें।

जो लोग प्रार्थनामें शामिल होते हैं यदि वे लोग मौन और शान्त रहें तो पूरे कलकत्ताके लोग भी यहाँ इकट्ठे हो जायें तो भी मुझे बड़ी खुशी होगी।

आगे बोलते हुए गांधीजी ने कहा कि प्रार्थनामें बंगला गीत भी रखे गये हैं, क्योंकि उपस्थित लोगोंमें ज्यादातर बंगाली हैं। लेकिन अन्य लोगोंकी खातिर मैं एक ऐसी पुस्तिका छपवाना चाहता हूँ जिसमें देवनागरी और उर्दू लिपिमें सारे गीत और अन्य भजन मुद्रित हों। इस प्रस्तावित पुस्तिकाकी कीमत शायद दो पैसे होगी, और वह पाठकोंके लिए स्थायी लाभकी चीज होगी, क्योंकि वे जब चाहेंगे तब इसे पढ़ सकेंगे।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ९-१२-१९४५

२४७. पत्र : जी० ई० बी० एबेलको

शिविर : खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर (कलकत्ताके निकट)
८ दिसम्बर, १९४५

प्रिय श्री एबेल,

श्री यांजीके बारेमें आपका २६ नवम्बरका पत्र[1] मिला। आपके सुविचारित

१. जी० ई० बी० एबेलने अपने पत्रमें लिखा था कि शीलभद्र याजीका यह आरोप अतिरंजित है कि जेलमें उन्हें खराब खाना दिया जाता था और ऐसी स्थितिमें रखा जाता था जो मनुष्यके उपयुक्त नहीं है। देखिए पृ० ३७ भी।

उत्तरके लिए आपका आभारी हूँ। अब मैं उक्त सज्जनसे सम्पर्क स्थापित करके यह जानने का प्रयत्न कर रहा हूँ कि उनका क्या कहना है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री जी० ई० बी० एबेल
वाइसरायके निजी सचिव

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ६१

२४८. पत्र : जी० ई० बी० एबेलको

शिविर : खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर (कलकत्ताके निकट)
८ दिसम्बर, १९४५

प्रिय श्री एबेल,

आपके १ तारीखके पत्र[1] के लिए धन्यवाद। मैं आपको डॉ० राम मनोहर लोहियाके बारेमें यथासमय विस्तारसे लिख भेजूँगा और मैंने श्री प्रभुदयाल विद्यार्थीको लिख दिया है कि वे नई दिल्ली जाकर स्वयं जानकारी दें।[2]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ६३-६४

१. जी० ई० बी० एबेलने गांधीजी को लिखा था कि विद्यार्थी तथा लोहियासे सम्बन्धित विवरण वे सीधे गृह-सदस्यको भेज दें।
२. वैसे, ९ दिसम्बरको एक तार भेजा गया था। देखिए पृ० १२०-२१ भी।

२४९. पत्र : आर० जी० केसीको

तात्कालिक

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
८ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

यह पत्र मैं बहुत झिझकके साथ लिख रहा हूँ। मैं जितना देखता और सुनता हूँ, मुझे बंगालमें हो रही घटनाओंपर उतना ही अधिक दुःख होता है। यहाँ मैं एक नमूना देता हूँ, जिसपर तुरन्त ध्यान दिया जाना चाहिए।

सतीशबाबूने मुझे बताया है कि आलू उगाने वाले लोगोंको आलूके बीज नहीं मिल रहे हैं और एक हफ्तेमें आलूके बोने का समय खत्म हो जायेगा। बाजार में आलूके बीज सरकारी नियन्त्रणमें हैं; लेकिन किसान उसे प्राप्त नहीं कर सकते।

सतीशबाबू जो खबर लाये हैं, यदि वह सच है तो जाहिर है कि इसमें कोई भारी गड़बड़ है। मालूम नहीं आप इसमें कुछ मदद कर सकते हैं या नहीं। आप श्री डे नामक एक होशियार व्यक्तिके बारेमें बता रहे थे, जिन्हें आपने ऐसे कार्यों के लिए रखा है। क्या आप उन्हें अथवा किसी अन्य अधिकारीको मेरे पास भेज सकते हैं, जो तत्काल कार्रवाई करके इस मामलेको सँभाल सके?

मैं यह पत्र तुरन्त भिजवा रहा हूँ। बंगालके विशाल पटलपर देखें तो यह प्रश्न बहुत छोटा है, लेकिन आलू पैदा करने वाले गरीब लोगोंका सारा दारोमदार इसीपर है, क्योंकि उनकी जीविका दावपर लगी हुई है।[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८१३) से। गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ११३ भी

१. गांधीज एमिसरी में सुधीर घोषने लिखा है कि अपने आपात्कालीन अधिकारोंका उपयोग करके सरकारने मुनाफाखोरोंके भण्डारोंका सारा आलू जब्त कर लिया और २५० मन किसानोंमें उसी दिन बाँट दिया गया।

२५०. पत्र : आर० जी० केसीको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
८ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

रेडियोसे आज प्रसारित होने वाला आपका भाषण मैंने अभी-अभी पढ़कर समाप्त किया है। भाषण पढ़ने में दिलचस्प और सूचनाप्रद है। यदि नदियोंके पानीको बंगाल की खाड़ीमें व्यर्थ जाने देने के बजाय रोका जा सके और बंगालके लोग उसका उपयोग कर सकें तो उससे बड़ा लाभ होगा। लेकिन यह एक दीर्घकालीन योजना है। इस बीच लाखों लोगोंको कामके समयके हर पलका अपने लाभके लिए समुचित उपयोग करने की शिक्षा दी जानी चाहिए। यदि वे इस कलाको सीख लेंगे तो वे रोके हुए पानीका अच्छा उपयोग कर सकेंगे। आपने ठीक ही कहा है:

> **बंगालके करोड़ों किसान आधेसे ज्यादा समय बेकार रहते हैं। वे संसारकी बेरोजगारीकी सबसे बड़ी समस्या और मानव-शक्तिकी बर्बादीका सबसे बड़ा उदाहरण है।**

मैंने इस समस्याके समाधानकी एक पूरी योजना आपके सामने रखी है, जिसका कार्यान्वयन आज ही बहुत कम सरकारी खर्चपर हो सकता है। आप मनुष्यके श्रमको पैसेसे भी बड़ा मानें तो आप देखेंगे कि आपको आयका एक ऐसा अप्रयुक्त और अजस्र स्रोत मिल गया है जो उपयोगके साथ बढ़ता ही जाता है। यदि मैं आपका सलाहकार होता तो भाषणके मुद्रित होने से पहले आपके "आइए, हम समस्या पर विचार करें" वाले वाक्यके ठीक बाद एक-दो अनुच्छेद और जोड़ देता, जिसमें मानव-प्रयत्नके तात्कालिक उपयोगका रास्ता बताया गया होता। इसके बाद आप दीर्घकालीन समाधानके रूपमें अपनी मोहक योजना प्रस्तुत कर सकते थे।

आपने भाषणके अन्तमें जो कहा, क्या वह ठीक है? आप कहते हैं:

> **मेरे विचारसे इसका समाधान हमारी राजनीति, हमारे धर्म अथवा हमारी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षामें नहीं, बल्कि हमारे परिवेशके स्थायी तत्वों, अर्थात् बंगालकी भूमि और जलमें निहित है।**

ब्रिटिश अधिकारियोंकी इस विचारधारा और उसके अनुरूप किये गये कार्यों में बहुत बड़ा दोष था जिसे वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक-दूसरेको विरासतमें देते आये हैं। जब तक बंगालका सारा जनसमुदाय बंगालके शासनमें दिलचस्पी नहीं लेता, तब तक आपकी विशाल योजनाका कोई फल नहीं निकलेगा। इसलिए धर्म और व्यक्तिगत

महत्त्वाकांक्षा भी इसमें मिली हुई है। हमारे परिवेशके ये भी उतने ही स्थायी तत्त्व हैं जितनी बंगालकी भूमि और जल, और ये उनके समान ही परिवर्तनशील भी हैं।

आपने अपने विचारपूर्ण भाषणके सम्बन्धमें मेरी राय जाननी चाही थी और मुझे जो लगा सो मैंने लिख दिया।

आलूके बीजोंके सम्बन्धमें मैंने आज आपको जो पत्र लिखा था उसपर आपकी तत्काल कार्रवाईके लिए[1] आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८१२) से; गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० १०७-८ भी

२५१. पत्र : आगाखाँको

शिविर : खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर (कलकत्ताके निकट)
८ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका लम्बा तार मिला, जिसका मैंने निम्नलिखित उत्तर[2] दिया है।

निस्सन्देह आपके सुझाव पाकर मुझे प्रसन्नता होगी। मुझे इस बातसे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इस मामलेमें आप अपने अलावा किसी औरकी ओरसे कुछ नहीं कहेंगे। सवाल सिर्फ यह है कि हम मिलें कैसे, कब और कहाँ। बंगाल, असम और मद्रासके लिए मेरा एक निश्चित कार्यक्रम है, और अनुमान है कि इसे निबटाने में मैं लगभग फरवरी महीनेके मध्य तक व्यस्त रहूँगा और तब सेवाग्राम लौटूंगा। इसलिए अगर मुझे यह मालूम हो जाये कि फरवरीमें आप कहाँ रहेंगे तो कोशिश करके देखूंगा कि क्या कर पाता हूँ।

मौलाना साहबने कार्य-समितिकी बैठकके सिलसिलेमें अपने आराममें खलल डाला है। वे बहुत ठीक तो नहीं हैं, लेकिन मुझे यकीन है कि वे आपको खुद ही लिखेंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

हिज हाइनेस आगाखाँ
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

1. देखिए पृ० १९२ की पाद-टिप्पणी।
2. देखिए पृ० १८४।

२५२. पत्र : सत्यानन्दको

सोदपुर
८ दिसम्बर, १९४५

प्रिय सत्यानन्दबाबू,

आपका पत्र पाकर प्रसन्नता हुई। लोगोंके कष्ट-निवारणके लिए मुझसे जो-कुछ भी बन पड़ रहा है, कर रहा हूँ। कह नहीं सकता कि इस प्रयत्नका ईश्वर क्या फल देगा।

आशा है, आप स्वस्थ होंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

अंग्रेजोकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२५३. पत्र : नोइल बारवेलको

सोदपुर
दिसम्बर, १९४५

प्रिय श्री बारवेल,

आपके सौहार्दपूर्ण पत्रके लिए धन्यवाद। मेरा कार्यक्रम पहलेसे ही इस प्रकार निश्चित है और जहाँ भी जाता हूँ इस बुरी तरह घिरा रहता हूँ कि यह कह पाना मेरे लिए कठिन है कि जिस संस्थाका आपने उल्लेख किया है उसे देखने का आनन्द उठा सकूँगा। लेकिन अगर आप और श्रीमती बारवेल यहाँ आसानीसे आ सकें तो चन्द मिनटोंके लिए आपसे मिलकर मुझे खुशी होगी। सोमवार तक तो मेरा एक क्षण भी खाली नहीं है, लेकिन सोमवारको ज्यादा ठीकसे समझ पाऊँगा कि मेरी स्थिति क्या है।

क्या आप अगले मंगलवारको फोन कर सकते हैं या किसी सन्देशवाहकको भेज सकते हैं?

हृदयसे आपका,

श्री नोइल बारवेल
६, मिडलटन स्ट्रीट
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२५४. पत्र : बलवन्तभाई दादूभाई देसाईको

सोदपुर
८ दिसम्बर, १९४५

चि० बलवन्तभाई,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। किसी तरहका शक मत करो।

बापूके आशीर्वाद

श्री बलवन्तभाई दादूभाई देसाई
डाकोर

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२५५. पत्र : किशोरलाल घ० मशरूवालाको

सोदपुर
८ दिसम्बर, १९४५

चि० किशोरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। ताराकी...[1] कर ही डालता हूँ। उसका पत्र उसके स्वभावका प्रतिबिम्ब है। फिलहाल वह जो काम कर रही है उसके और कस्तूरबा ट्रस्टके कामके बीच कोई टकराव नहीं होगा। उसे सुशीलाबाई[2] की भी थोड़ी-बहुत सहायता मिल जायेगी। यदि वह महिला आश्रममें नहीं रहना चाहे तो अकोलामें रह सकती है और यदि उसे वेतन भी देना पड़े तो उसमें कोई अड़चन नहीं होगी। चि० ताराका पत्र मैं बापाको दे रहा हूँ। मेरी उत्कट इच्छा है कि तुम दोनों बम्बई जाकर अच्छी तरह रहो।

यह कितने आश्चर्यकी बात है कि अपनी मोटरके दुर्घटनाग्रस्त होने का मुझे पता ही नहीं चला किन्तु यह दुर्घटना तो हुई ही। ऐसी सैकड़ों दुर्घटनाएँ तो रोज ही टल जाती होंगी। और यदि अखबारोंमें इन घटनाओंका उल्लेख किया जाता है तो हमें मोटर आदिमें सफर करना बन्द कर देना होगा। यदि प्रभुदयाल वहाँ हो तो उससे रुकने को कहना।

बापूके आशीर्वाद

श्री किशोरलाल मशरूवाला
सेवाग्राम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें यह अंश रिक्त है।
२. सुशीलाबाई मुकुन्दराव जोशी, वर्धाके महिला आश्रमकी एक अध्यापिका

२५६. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

सोदपुर
८ दिसम्बर, १९४५

चि० नरहरि,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे ऐसा लगता है कि भाई विष्णुदत्तके मित्रने जैसे प्रश्न पूछे हैं, उन्हें प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए। यदि मैं 'हरिजन' का संचालन करता होता तो कभी-कभी ऐसे सवालोंके जवाब दे भी देता। सामान्यतः ऐसे प्रश्न पूछने वाले लोग निठल्ले होते हैं। यदि प्रभुदयाल वहाँ हो तो उससे रुकने को कहना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२५७. पत्र : शान्तिलाल त्रिवेदीको

सोदपुर
८ दिसम्बर, १९४५

चि० शान्तिलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। सरलाबहनने तुम्हारे साहस और सेवाके बारेमें विस्तार से बातें कीं, जिससे मुझे प्रसन्नता हुई।

ऊनके बारेमें तुमने जो लिखा है वह जानकर मुझे खुशी हुई। सफरके दौरान हुए अपने अनुभवोंको यदि तुम किसी पत्रिकामें प्रकाशित करवा दो तो कदाचित् वे उपयोगी हो सकते हैं। पर वे संक्षिप्त और कामके होने चाहिए।

श्री शान्तिलाल त्रिवेदी
गोविन्द निवास
अल्मोड़ा

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२५८. पत्र : तारा नानाभाई मशरूवालाको

सोदपुर
८ दिसम्बर, १९४५

चि० तारी,

किशोरलालके नाम तेरा पत्र पढ़ा। तू कब तक ऐसी डरी-डरी रहेगी? तेरे नामकी घोषणा प्रतिनिधिके रूपमें की जायेगी। ठक्कर बापा तुझे विस्तारसे लिखेंगे। सुशीलाबाईसे जितनी सहायता मिल सकेगी उतनी तो तू लेगी ही। यदि वह महिला आश्रमके कामसे बच सके और तेरे साथ अकोलामें रह सके तो बेशक यह बहुत अच्छा होगा। मैं समझता हूँ कि उसका वेतन कस्तूरबा ट्रस्टसे दिया जा सकता है। मुझे विस्तारपूर्वक लिखना, अथवा बापाको लिखना।

आशा है, तुम सब स्वस्थ और प्रसन्न होगे। सुशीलाबहन और बालक मेरे साथ नहीं हैं; मणिलाल है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२५९. पत्र : आत्मारामको

सोदपुर
८ दिसम्बर, १९४५

भाई आत्माराम,

प्रार्थना करते समय न करने-जैसे विचार भी आ जाते हैं यह बुरी बात तो है। लेकिन घबराहटकी नहीं है। प्रार्थनाके किसी श्लोकको लेकर उसमें ध्यानावस्थित हो जाना। यह भी नहीं हो सकता है तो हृदयसे रामनाम लेना और वहां तक कि दूसरे कोई विचार आ ही न सकें। यह बात कठिन तो है। लेकिन साध्य है। ऐसा मेरा और दूसरोंका अनुभव है ही और इसी कारण रामनामको रामबाण कहा है।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६०. पत्र : खुशीरामको

सोदपुर
८ दिसम्बर, १९४५

भाई खुशीराम,

भाई जयरामदासने आपकी उदार वृत्तिके बारेमें मुझे कहा है। जो देना है वह गैरजरूरी शर्तके बिना ही देना अच्छा है। और ट्रस्ट बन रहा है वह सब सुनकर मैं बहुत राजी हुआ हूं।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६१. पत्र : श्रीमती एस० आर० दासको

सोदपुर
८ दिसम्बर, १९४५

प्रिय भगिनी,

आपको देखकर मैं खुश तो हुआ, लेकिन साथ-साथ मुझे दुःख भी हुआ। ऐसा गिरा हुआ शरीर देखने को मैं तैयार नहीं था। उर्मिलादेवीने मुझे पांच सौका चेक दिया। वह मैं आदिवासियोंके लिए खर्च करूंगा। आदिवासी क्या, यह समझती तो है ना? ठक्कर बापा और खेरसाहेब आदिवासियोंका काम कर रहे हैं।

बापुके आशीर्वाद

श्रीमती एस० आर० दास
१, आकलैण्ड प्लेस
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६२. पत्र : उद्धवको

सोदपुर
८ दिसम्बर, १९४५

भाई उद्धव,

आपने अपने भाईके स्वर्गवासपर और कोई क्रिया न करके केवल सूत्रयज्ञ ही किया यह मुझको तो बहुत हीं अच्छा लगा है। ऐसे ही सब करें तो बहुत ही लाभ हो सकता है।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६३. पत्र : बी० बी० सक्सेनाको

सोदपुर
८ दिसम्बर, १९४५

भाई सक्सेना,

आपका किशोरलालजी पर लिखा हुआ पत्र उन्होंने यहां भेजा है। मैं फरवरी के पहले सेवाग्राम पहुंच ही नहीं सकूंगा। अच्छा तो यह होगा कि जिस बारेमें आप मेरे साथ बहस करना चाहते हैं उस बारेमें आप लिख भेजें। इस तरह हम दोनोंका वक्त बचेगा — पैसा तो बचेगा ही।

आपका,
मो० क० गांधी

प्रो० बी० बी० सक्सेना
वनस्थली विद्यापीठ
वनस्थली (जयपुर)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६४. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
८ दिसम्बर, १९४५

सोदपुर आश्रममें प्रार्थना-सभामें उपस्थित लोगोंने ऐसी आदर्श व्यवस्था बनाये रखी जिससे गांधीजी वहाँ पहुँचते ही प्रार्थना आरम्भ कर पाये, इसके लिए उन्होंने लोगोंको बधाई देते हुए सामूहिक प्रार्थना-पद्धतिके महत्त्व और क्रमिक विकासपर प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि १९३६ में जब मैं मगनवाड़ी, वर्धामें था उन दिनों लगभग आधे दर्जन जापानी भिक्षु मुझसे मिलने आये। जो भिक्षु उनका प्रधान था उसने कहा कि मैं अपने एक-दो शिष्योंको आश्रम भेजना चाहता हूँ। मैंने उसकी बात मान ली। पहले एक भिक्षु आया और बादमें दूसरा। उनमें से एक तो जापान के साथ युद्ध छिड़ने तक मेरे साथ रह रहा था और युद्ध छिड़ने पर उसे हिरासतमें ले लिया गया। इस बौद्ध भिक्षुको जो भी काम दिये गये थे, सबको वह समयकी पूरी पाबन्दीके साथ सुव्यवस्थित ढंगसे किया करता था। कामके बीच उसे जो समय मिलता था, उस दौरान वह एक छोटा-सा ढोल बजाते हुए जापानी भाषामें भजन गाता रहता था। ऐसा वह चक्कर लगाते हुए करता था। जो भजन वह गाता था वह अनन्त सत्ताकी प्रशस्तिमें लिखा एक बौद्ध भजन था। मैंने उस भजनको अपनी प्रार्थनामें शामिल कर लिया। आज प्रार्थनामें सबसे पहले वही गाया गया था।

दूसरी चीज थी संस्कृतका एक श्लोक, जो मेरे विचारमें सबको ठीक लगने वाला है। उसमें मनुष्यकी अवलम्ब-रूप धरती माताका आह्वान किया गया है। अगर किसीको इसपर किसी तरहकी आपत्ति हो तो मैं यही कहूँगा कि मैं लाचार हूँ। मेरे लिए सभी धर्म आदरके योग्य हैं। मैं सभी धर्मोंमें विश्वास करता हूँ। लेकिन अपने धर्मको छोड़ने का मुझे कोई कारण दिखाई नहीं देता। शायद यह संस्कृतका श्लोक प्रतीकात्मक है, लेकिन मेरी रायमें बहुत-से उत्तम विचार और भाव प्रतीकात्मक भाषामें ही व्यक्त किये गये हैं।

तीसरी चीज थी कुरानकी एक आयत। इसे कांग्रेसके प्रसिद्ध नेता अब्बास तैयबजीकी पुत्री[1] के कहने पर शामिल किया गया था। उसका स्वर बहुत मधुर है। एक बार आश्रम आने पर जब उसने आश्रमवासियोंको कुरानकी शिक्षा देने की इच्छा प्रकट की तो मैं इससे तुरन्त सहमत हो गया। उसने कुरानसे

१. रेहाना तैयबजी

एक आयतको प्रार्थनामें शामिल करने का सुझाव दिया और उसे शामिल कर लिया गया।

प्रार्थनामें गाई गई चौथी चीज पहलवी भाषामें लिखे 'जेन्द अवेस्ता' से ली गई है। जब मैं आगाखाँ महलमें उपवास कर रहा था, उन दिनों डॉ० विधान राय तथा अन्य चिकित्सकोंके अलावा डॉ० गिल्डर भी वहाँ थे। वे पारसी हैं। 'जेन्द अवेस्ता' का पद उन्हींसे प्राप्त हुआ और उसे प्रार्थनामें शामिल कर लिया गया।

भजनोंके बारेमें कोई कठोर नियम नहीं है। वह प्रार्थनाके समय और स्थानपर निर्भर है। इस समय प्रार्थना बंगालमें की जा रही है और बंगाली अधिक संख्यामें उपस्थित हैं, इसलिए प्रार्थनामें हम बंगला भजन रोज गाते हैं।

मैं चाहता हूँ कि सभी प्रार्थनाएँ एक पुस्तिकामें संगृहीत कर ली जायें और हिन्दुस्तानीमें उनके अर्थ भी दे दिये जायें। मेरी इच्छा है कि वह देवनागरी और उर्दू दोनों लिपियोंमें और सम्भव हो तो बंगलामें भी मुद्रित की जायें।

आप सब प्रार्थनाका श्रवण सही भावनासे करें और उसमें जो उच्च आदर्श प्रस्तुत किये गये हैं उनपर आचरण करें।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ९-१२-१९४५

२६५. तार : प्रभुदयाल विद्यार्थीको

कलकत्ता
९ दिसम्बर, १९४५

प्रभुदयाल
आश्रम
सेवाग्राम, वर्धा

नई दिल्ली जाकर देवदाससे मिलो। निर्देश उसीके पास हैं।

[

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११६७३) से

२६६. पत्र : समरेन्द्रनाथ रायको

सोदपुर
९ दिसम्बर, १९४५

प्रिय समरेन्द्र,

सतीश बाबूसे यह जानकर दुःख हुआ कि तुम्हारे पिताजी[1] का स्वर्गवास हो गया। तुम्हें शायद मालूम हो कि तुम्हारे पिता मेरे मित्र थे। हमारी मुलाकात और विचारोंका आदान-प्रदान अक्सर होता था। तुम सबके प्रति मेरी संवेदना है।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

श्री समरेन्द्रनाथ राय
३३/२, बीडन स्ट्रीट
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२६७. पत्र : सुशीला गांधीको

सोदपुर
९ दिसम्बर, १९४५

चि० सुशीला,

तेरा पत्र मिला। तेरी भावना शुद्ध है इसलिए [तेरे पास] सब-कुछ है। मेरी राय यह है कि मेरे साथ रहने में कोई विशेष बात नहीं है। चाहे कहीं भी रहकर तू सेवा करे, तो मैं यह मानूंगा कि तू मेरे साथ ही है। मुझे ऐसा नजर नहीं आता कि मेरे साथ न होने के कारण तू कुछ गँवा रही है। हवामें नमी है और ठण्डी भी है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९६७) से

१. काशीनाथ राय, ट्रिब्यूनके सम्पादक, जिनका देहान्त ९ दिसम्बर, १९४५ को हो गया था

२६८. पत्र : सीता गांधीको

सोदपुर
९ दिसम्बर, १९४५

चि० सीता,

तू तो गले पड़ जाने वाली लगती है। तेरे पत्र लिखे बिना मेरा पत्र कैसा ? यह तो मैं जानता हूँ कि तू अच्छी है और खूब मेहनत करती है। तू पास हो जा। जब तू आ सके तब मेरे पास आ जाना। तू नाव खेती है, यह अच्छी बात है। यह एक अच्छा व्यायाम है। देशकी नौकाको भी खेना।

मेहनत करते हुए अपने स्वास्थ्यका भी ध्यान रखना।

सभीको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९६८) से

२६९. पत्र : श्रीमन्नारायणको

सोदपुर
९ दिसम्बर, १९४५

चि० श्रीमन्,

तुमारा खत आज मिला। मैंने थोड़ा ही फेरफार किया। वापिस करता हूं। मदालसा अच्छी है सुनकर बहुत खुश हूआ। उसे कहो रोज उसका ख्याल करता हूं।

मेरी शरदीकी बात निकम्मी समजो। थोड़ी थी लेकिन मैं 'महात्मा' हूं न?

बापुके आशीर्वाद

पांचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३०८-९

२७०. पत्र : भगवती प्रसादको

सोदपुर
९ दिसम्बर, १९४५

चि० भगवती,

तुम्हारा खत मिला। गोंदीयामें विवाह कैसे होगा? कोई विधि होगी कि मैजेस्ट्रिटके पास होगा वगैरह तुमने नहीं लिखा है। मैं तुम दोनोका शुभ तो चाहता ही हूं। ऐसे विवाहके बारेमें, अगर वह स्वेच्छाचारके लिये नहीं है लेकिन संयम पालनके लिये है, सेवाका क्षेत्र बढ़ाने के लिए है और सेवावृत्तिकी वृद्धि करने के लिये होता है तो मेरा कोई विरोध हो ही नहीं सकता है, बल्कि उत्तेजन ही देता हूं। इसलिए ऊपरके प्रश्नका उत्तर मैं चाहता हूं।

लड़कीका भाई क्या करता है? लड़की मुझे क्यों नहीं लिखती है? इतने वर्षमें जब यह आश्रममें आई थी तबसे आज तक उसने क्या किया? इन सब चीजोंको जानने की आकांक्षा मुझे अवश्य रहेगी।

बापुके आशीर्वाद

श्री भगवती प्रसाद
मार्फत देवीप्रसाद दमोहे
रेंज आफिसर, सेंट्रल एक्साइज
गोंदिया

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७१. पत्र : लक्ष्मीनारायण गडोदियाको

सोदपुर
९ दिसम्बर, १९४५

भाई लक्ष्मीनारायण,

आपका पत्र मुझे मिला। मुझे तो बहुत ही अच्छा लगा है। आपका खत तो मैं शर्माजी को बताना चाहता ही हूं। आपने कुछ मनाई तो नहीं की है। ऐसे ही आवश्यकता पड़ने पर श्री जाजूजी और विचित्रनारायणको भी बताऊंगा। सारी घटना मुझे तो आश्चर्य-सी लगती है।

खादीके बारेमें और खबर मैं निकालूंगा क्योंकि इस बारेमें दूसरे लोगोंने भी शिकायत की है।

श्री लक्ष्मीनारायण गाडोदिया
पो० आ० बाक्स नं० १७
दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७२. पत्र : हीरालाल शर्माको

सोदपुर
९ दिसम्बर, १९४५

चि० शर्मा,

तुम्हारे खतकी नकल मैंने गाडोदियाजी को भेजी थी। उनका लम्बा उत्तर आ गया है और वह लिखते हैं कि जो बात तुमने कही है वह सब-की-सब बनाई हुई है; जितना अंश उसमें सही है उसमें न शर्मकी बात है, न कभी छुपाई गई है। मैं तो इतनी ही आशा करता हूं कि तुमने कुछ भी गलत काम नहीं किया है और यदि किया हो तो सरल चित्तसे कबूल कर लेना चाहिये। गाडोदियाजी के खत की नकल[1] भेजता हूं।

बापूके आशीर्वाद

श्री हीरालाल शर्मा
खुर्जा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७३. पत्र : सरस्वती गडोदियाको

सोदपुर
९ दिसम्बर, १९४५

चि० सरस्वती,

तुम्हारे खतमें ऐसी कौन-सी चीज है कि जिससे उसको खानगी रखा जाय या कहा जाय? फिर भी क्योंकि तुमने लिखा है, मैं उसे खानगी रखूंगा। उसका मतलब यह नहीं करूंगा कि मेरे काम करने वालोंसे भी खानगी रहे। जैसे कि पत्र मैंने नहीं पढ़ा, लेकिन मैं खाता रहा और चि० कनु पढ़ता रहा।

१. यह उपलब्ध नहीं है।

डा० शर्माजी को भी तुम्हारा खत बताना होगा न? ऐसा न करूं तो तुम्हारा पत्र जो मुझे अच्छा और शुद्ध लगता है वह निकम्मा बन जाता है। फिर भी मैं प्रत्युत्तरकी राह देखूंगा। मेरी सलाह यह है कि उपरोक्त खत तो क्या लेकिन हम जो कुछ लिखें या करे उसे खानगी न रखें। खानगी रखने-जैसा या छुपाने जैसा करे ही नही। यह सबसे बड़ी बात है।

बापूके आशीर्वाद

मार्फत श्री लक्ष्मीनारायण गाडोदिया
पो० आ० बाक्स नं० १७, दिल्ली

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७४. पत्र : राधाकान्त मालवीयको

सोदपुर
९ दिसम्बर, १९४५

भाई राधाकान्त,

तुम्हारा पत्र पढ़ गया। मैं चुनावमें कुछ भी रस नही लेता हूं। जानता हूं कि कांग्रेसको तो जीतना ही है।

बाबूजी ने अलग मंडल निकाला सो मुझे तो पसंद नहीं पड़ा था। लेकिन उनको मैं रोकने वाला कौन था? तुमारे उसे चलाना अयोग्य मानता हू। बाबूजी करें सो अलग बात है। हिंदु महासभाके हिस्सेके बारेमें तो व[किंग] क[मिटी] से बात करो। मुझे तो वह भी अच्छा नहीं लगता। दो खत वापिस।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७५. पत्र : श्यामलालको

सोदपुर
९ दिसम्बर, १९४५

चि० श्यामलाल[1],

तुम बहुत जल्दीसे आगे चल रहे हो। अगर शक्तिको देखकर चलते हो तो शुभ ही है और क[स्तूरबा] नि[धि] का काम इस त्यागसे ही आगे बढ़ेगा। त्यागकी शक्तिका नाप हमें हमेशा नहिं निकाल सकते हैं, उससे क्या? ईश्वर तुमारी शक्ति कायम रखे।

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२७६. पत्र : वासुदेवको

सोदपुर
९ दिसम्बर, १९४५

भाईश्री,

आपका खत बहुत खराब अक्षरोंमें लिखा गया है। सो भी अंग्रेजीमें। क्या इतने विचार हिन्दुस्तानीमें नहीं बताया जा सकता है?

छपा हुआ निवेदन पढ़ा। अच्छा नहीं लगा। उसमें आडंबर है, नम्रता नहीं है। अतिशयोक्ति भी है। मैंने विद्यार्थियोंके लिए जो लिखा है उसे पढ़ो। लिखने से काम नहीं बनेगा। काम करने से बनता है। रचनात्मक काम आसान भी है और कठिन भी है। राजेन्द्रबाबूसे मिलो। वे कहें सो करो।

आपका,
मो० क० गांधी

वासुदेव
यूथ लीग
पटना

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कस्तूरबा स्मारक ट्रस्टके सचिव

२७७. पत्र : मोतीलाल रायको

सोदपुर
९ दिसम्बर, १९४५

भाई मोतीबाबू,

आपको मैं अंग्रेजीमें कहां तक लिखता रहूं ? आजकल तो हो सके वहां तक मैं सबको राष्ट्रभाषामें या मातृभाषामें ही खत लिखता हूं। शायद आपके पास राष्ट्रभाषा पढ़ने वाला न हो ऐसी शकासे इस पत्रका बंगालीमें अनुवाद भी भेजता हूं। यह खत आपको अमतुलसलाम देगी और बात भी करेगी। उसने मुझे प्रवर्तक संघकी खादी नीतिके [बारेमें] काफी शिकायतें सुनाई है। अमतुलसलाम बहेन मेरे साथ मेरी पुत्री बनकर वर्षोंसे रही है। बहुत महेनती और काम करने वाली और जानने वाली है। इस कारण वह बोरकामतामें कुछ वर्षोंसे खादी काम कर रही है। अभी वहां प्रवर्तक संघका भी कार्य चलता है। अमतुलसलामका काम सिर्फ पारमार्थिक है और लोक सेवाका ही...[1] खादी काम अमतुलसलाम—करे...[2] पारमार्थिक नहीं है...[3] के लिये है। वह यह भी बताती है कि वह काम चर्खा संघके नीतिका विरोधी है और बन पडे तो नाशक भी हो सकता है। आप इस चीजोंको जाने और होने दें ऐसा मेरा दिल नहीं मानता है। इसलिये समझने के लिए अमतुलसलामको मैं भेजता हूं। ज्यादा बात वह समझायेगी।

चर्खा संघने जो पैसे उधार दिये है वह अब तक वापस नही हुए है वह दुःखकी बात है। अब वह पैसे मिलने ही चाहिये। ट्रस्टके है। ट्रस्ट कैसे छोड़ सकता है?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ११०५८) से

२७८. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

सोदपुर
१० दिसम्बर, १९४५

चि० चिमनलाल,

साथमें यूनाइटेड कमर्शियल बैंकमें खोले गये खातेके कागजात है। खातेके मेरे अथवा तुम्हारे हस्ताक्षरसे चलाये जाने की व्यवस्था है। और भी दो हस्ताक्षर देने का

१, २ और ३. साधन-सूत्रमें यहाँ अक्षर स्पष्ट नहीं हैं।

विचार किया है। ये दो व्यक्ति कौन हों, यह नहीं सोचा है। तुम्हारे विचारमें कोई हो तो लिखना। अभी तो शायद दो ही काफी हैं। दोमें से एकके मरने पर विचार करने का प्रसंग आयेगा।

साथमें [भेजे फार्मपर] अपने हस्ताक्षरका नमूना भेजना। मैंने तो हिन्दुस्तानीमें दिये हैं और उसीमें करने का विचार किया है। तुम भी ऐसा कर सकते हो। सोच-विचारकर जैसा करना हो, करना। साथमें इससे सम्बन्धित अन्य कागज भी हैं। उन्हें सँभालकर रखना। [हस्ताक्षरका] नमूना मुझे भेजना।

अभी तो मैं यहीं हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६४८) से

२७९. पत्र : क्षितिकंठ झाको

सोदपुर
१० दिसम्बर, १९४५

भाई खितिकंठ,

तुमारा खत मिला। मेरे नजदीक बैठना ही हो तो कोई रोज आना। लेकिन बैठने के क्या? जो मैंने बताया हुआ काम करते हैं वे मेरे नजदीक बैठते हैं।

बापुके आशीर्वाद

श्री खितिकंठ झा
खादी प्रतिष्ठान
ग्रामसेवा केन्द्र
ठाकुरदांडी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७४७७) से। सी० डब्ल्यू० ४९२३ से भी; सौजन्य : परशुराम मेहरोत्रा

२८०. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
१० दिसम्बर, १९४५

आज जब हम अपने लक्ष्यकी प्राप्तिके लिए पूरे जोरसे प्रयत्न कर रहे हैं; हमें किसीको यह कहने का मौका नही देना चाहिए कि हम अनुशासित नही हैं और इसलिए स्वराजके योग्य नहीं हैं। आज नही तो कल, सत्ता हमारे हाथ आयेगी ही। लेकिन यदि हम अनुशासित नहीं हैं तो हम उस सत्ताका प्रयोग कैसे करेंगे?

गांधीजी ने लोगोंको याद दिलाया कि ब्रिटिश सरकार ही एकमात्र ऐसी बाधा नहीं है जिससे हमें छुटकारा पाना है। यदि लोग अनुशासित नहीं होंगे तो सत्ताके हमारे हाथ आ जाने पर भी हम उसे कायम नहीं रख सकेंगे, और कोई अन्य आकर उसे हमारे हाथोंसे छीन लेगा।

अनुशासनहीन, नासमझ और बेकारकी उछलकूद मचाने वाले तो केवल जंगली जानवर होते हैं। लेकिन यदि मनुष्य भी ऐसी हरकतें करने लगेंगे तो रेलगाड़ियोंके ड्राइवर और गार्ड अपना काम किस तरह कर पायेंगे।[1] अकसर यह भी देखने में आता है कि सीमित क्षमता वाली छोटी नौकाएँ बहुत ज्यादा भीड़ हो जाने से डूब जाती हैं। हमारी संख्या करोड़ों है, कदाचित् इसीलिए हम इस तरहकी दुर्घटनाओंमें होने वाले नुकसानकी ओर ध्यान नहीं देते। अगर एक गाड़ीमें भीड़ होने के कारण चढ़ना मुश्किल हो तो दूसरीका इन्तजार कीजिए, लेकिन उसीमें चढ़कर भीड़को और भी बढ़ाकर ऐसा न कीजिए कि ड्राइवर और गार्डके लिए गाड़ी चलाना असम्भव हो जाये।

गांधीजी ने आगे कहा कि आपको अनुशासन तो सीखना ही है। उसे सीखने के दो तरीके हैं। सेनामें जवान इसे कवायद द्वारा सीखते हैं। लेकिन उसे दूसरी तरहसे सिखाने के लिए प्रार्थना है। प्रार्थना आपको न केवल अगले जन्मके लिए मुक्ति दिलाती है, बल्कि इस जन्ममें भी दिलाती है। यदि आप लोग इस जन्ममें मुक्ति प्राप्त करने में असफल रहे, तो क्या आपके अगले जन्ममें उसे प्राप्त करने की सम्भावना हो सकती है? अन्तमें गांधीजी ने कहा कि ऐसी परिस्थितियोंमें आपको विचारवान मनुष्योंकी तरह आचरण करना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ११-१२-१९४५

१. तात्पर्य उन मुसाफिरोंके आचरणसे है जो इसके पिछले दिन सोदपुर आने और वहाँसे जाने के लिए इंजन और गार्डके डिब्बोंमें घुस गये थे।

२८१. भाषण : कलकत्तामें[1]

१० दिसम्बर, १९४५

गवर्नमेन्ट हाउसके बाहर लोगोंकी भीड़को सम्बोधित करते हुए गांधीजी ने कहा कि शामको जब मैंने गवर्नमेन्ट हाउसमें प्रवेश किया तब मैंने अपनी कार के आसपास लोगोंको खड़े पाया। इसलिए अब मैं आपके पास पैदल चलकर आया हूँ।

आप लोग स्थिर और शान्त रहें। मैं बूढ़ा आदमी हूँ और प्रदर्शनों आदि को बरदाश्त नहीं कर सकता। यदि आप लोग मुझे कारसे नहीं जाने देंगे तो मुझे सोदपुर पैदल चलकर जाना पड़ेगा।

गांधीजी ने आगे कहा कि मैं आपकी और देशकी सेवा करने के लिए यहाँ आया हूँ। अनुशासनकी आवश्यकता समझाते हुए उन्होंने कहा कि अपने शान्तिके सन्देशके कारण प्राचीन कालमें भारतने महान प्रतिष्ठा पाई थी। हम लोग शान्ति और अनुशासन द्वारा ही स्वाधीनता प्राप्त कर सकेंगे।

सोदपुर आश्रमकी प्रार्थना-सभाओंका जिक्र करते हुए गांधीजी ने कहा कि हालाँकि हजारों लोग प्रार्थनामें भाग लेने के लिए आते हैं, फिर भी वहाँ पूर्ण शान्ति रहती है।

तब गांधीजी ने वहाँ उपस्थित लोगोंसे पूछा कि क्या आप लोग मुझे कार से जाने देंगे। लोगोंने आदरपूर्वक मान लिया और गांधीजी कारमें बैठ गये तथा लोगोंने बीचमें से जाने का रास्ता बना दिया। गांधीजी नमस्कारकी मुद्रामें हाथ जोड़े हुए कारसे सोदपुर आश्रमके लिए रवाना हो गये।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ११-१२-१९४५

१. रातके ८ बजकर ४० मिनटपर, वाइसरायके साथ बातचीत करने के बाद। इस बातचीतके वाइसराय द्वारा लिखे विवरणके लिए देखिए परिशिष्ट २।

२८२. कांग्रेस कार्य-समितिका प्रस्ताव[1]

[११ दिसम्बर, १९४५ या उसके पूर्व][2]

अगस्त १९४२ में प्रमुख कांग्रेसजनोंकी गिरफ्तारीके बाद नेतृत्वहीन जनताने खुद बागडोर सँभाल ली और लगभग अपनी ही प्रेरणापर काम किया। जहाँ उसे शौर्य और बलिदानके अनेक कृत्योंका श्रेय है वहीं कुछ ऐसे कार्य भी किये गये जिनकी गिनती अहिंसामें नहीं की जा सकती। इसलिए सभी सम्बन्धित लोगोंके मार्गदर्शनके निमित्त कार्य-समितिके लिए आग्रहपूर्वक यह कह देना आवश्यक है कि १९२० में कांग्रेस द्वारा अपनाई गई अहिंसा-नीति आज भी अक्षुण्ण है, और सार्वजनिक सम्पत्ति जलाये जाने, तार काटे जाने, गाड़ियोंके पटरियोंसे उतारे जाने और डराने-धमकाने की कारंवाइयोंके लिए अहिंसामें कोई स्थान नहीं है।

कार्य-समितिकी राय है कि १९२० के कांग्रेस प्रस्तावमें जिस अहिंसा-नीतिका वर्णन किया गया है और तबसे समय-समयपर जिसका विस्तार और व्याख्या की जाती रही है, तथा उसके अनुरूप कारंवाई किये जाने के फलस्वरूप भारतने अभूतपूर्व प्रतिष्ठा प्राप्त की है।

कार्य-समितिकी राय यह भी है कि कांग्रेसके रचनात्मक कार्यक्रम, जिनकी शुरुआत चरखे और खादीको केन्द्र बनाकर हुई है, इस अहिंसा-नीतिके प्रतीक हैं और कांग्रेसके अन्य सभी कार्यक्रम, जिनमें संसदीय कार्यक्रम भी शामिल है, उनके अधीन हैं तथा उनका उद्देश्य महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित रचनात्मक कार्यक्रमको बढ़ावा देना है।

कार्य-समितिका विचार है कि जब तक भारतकी आम जनता रचनात्मक कार्यक्रमको यथासम्भव व्यापक पैमानेपर नहीं अपनाती तब तक स्वराज्य-प्राप्तिके लिए सामूहिक या अन्य किसी प्रकारकी सविनय अवज्ञा करने की कल्पना नहीं की जा सकती है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १२-१२-१९४५

१ और २. गांधीजी द्वारा तैयार किये गये इस प्रस्तावको कार्य-समितिने अपनी कलकत्ताकी पाँच दिनोंकी बैठकके अन्तिम दिन अर्थात् ११ दिसम्बरको पारित किया था।

२८३. पत्र : आर० जी० केसीको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१२ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका इसी १० तारीखका पत्र मिला। धन्यवाद।

ऐसा तो नहीं है कि मैंने आपकी सिंचाई-योजनाको महत्व नहीं दिया।[1] मैंने सिर्फ इतना किया है कि उसमें एक चीज और जोड़ दी है, ताकि करोड़ों ग्राम-वासियोंके खाली समयको काममें लगाकर उनमें से हर व्यक्तिको लगभग तत्काल राहत दी जा सके; और यह तो निर्विवाद तथ्य है कि उनके पास खाली समय है। आपकी टिप्पणीसे यह जाहिर होता है कि आप मेरे सुझावसे सर्वथा सहमत हैं। तब फिर बंगाल सरकारको इस योजनाका प्रवर्तन करके, जहाँ तक कपड़ेकी कमीका सवाल है, तत्काल आशाजनक स्थिति उत्पन्न करने में क्या बाधा है? मैंने ऐसा कभी नहीं कहा है कि भौतिक परिवेशपर नियन्त्रण पाये बिना सुखकी प्राप्ति सम्भव है। लेकिन मैं बहस नहीं करना चाहता। अगर आपके मनमें घरेलू कताई और बुनाई तथा अन्य ग्रामीण दस्तकारियोंके प्रति सहज सम्मान हो तो मैंने एक रास्ता सुझा दिया है। हर किसान अपनी जरूरतकी कपास पैदा करे, यह योजनाकी कोई अनिवार्य शर्त नहीं है, और निश्चय ही किसी भी किसानको खाद्यान्नोंकी फसलका क्षेत्र कम करके कपास पैदा करने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उसे ऐसी सलाह भी नहीं दी जानी चाहिए। जैसे आपकी योजनामें सवाल बर्बाद होने वाले जलके उपयोगका है, वैसे ही यहाँ प्रश्न उस श्रमको उपयोगमें लाने का है जिसका उपयोग नहीं हो रहा है।

अगर आपको यह चीज व्यवहारिक और तत्काल लागू की जाने लायक लगे तो मैं आपको एक विशद योजना सुलभ करा सकता हूँ जिसे, जैसा कि मैंने आपको बताया था, अखिल भारतीय चरखा संघके नियन्त्रणमें काम करने वाले विभिन्न खादी संगठनों द्वारा कार्यान्वित किया जा सकता है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ११०

1. देखिए पृ० १९३-९४।

२८४. पत्र : आर० जी० केसीको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१२ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

गोप पैलेसके सम्बन्धमें लिखा आपका १० तारीखका कृपा-पत्र मिला।[1] यह ऐसा नाजुक मामला है कि मैं नहीं समझता कि मेरे हस्तक्षेप करने से कोई लाभ होगा। और यदि वर्तमान शासनके स्थानपर जल्द ही लोकप्रिय शासन स्थापित होने वाला है तो फिर जल्दबाजी क्यों की जाये?

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ११२

२८५. पत्र : प्रेमा कंटकको

सोदपुर
१२ दिसम्बर, १९४५

चि० प्रेमा,

चि० सुशीला[2] ने भाई श्यामलालको निम्नलिखित पत्र[3] लिखा है:

मैंने तो मान लिया था कि सुशीला इस कामकी जिम्मेदारी तुरन्त ले लेगी और इसीलिए मैंने श्यामलालके इस सुझावका स्वागत किया कि वही उसे लिख

१. मिदनापुरकी सीमापर स्थित इस महलमें उस समय ब्रिटिश मिलिटरी अस्पताल था और बंगाल सरकारका स्वास्थ्य विभाग क्षय रोग उपचार-गृह खोलने के लिए उसे खरीदना चाहता था। आर० जी० केसीने गांधीजी से अनुरोध किया था कि उसके मालिकपर, जो एक कांग्रेसी था, अपने प्रभावका उपयोग करके सरकारको यह महल खरीदने में सहायता दें।

२. सुशीला पै

३. यहाँ इसका अनुवाद नहीं दिया गया है। सुशीला पैने कस्तूरबा स्मारक-कोष समिति की महाराष्ट्र-स्थित प्रतिनिधि बनने से इनकार कर दिया था और अपने स्थानपर प्रेमा कंटकका नाम सुझाया था।

देंगे। परन्तु जब सुशीला तेरी ही सिफारिश करती है और तू फिर भी स्वयं आने से इनकार करती है, तब तेरी ही सलाह लेता हूँ कि इस मामलेमें क्या करना उचित है। काम अधिक अच्छा हो सके और सुशोभित हो सके, ऐसा ही करना चाहिए न? सुशीलासे मिलकर जवाब देना हो तो मिलकर देना। जो सुझाव देना हो वह देना। उपर्युक्त पतेपर उत्तर देगी तो मैं जहाँ होऊँगा वहाँ मिल जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४४१) से। सी० डब्ल्यू० ६८८० से भी; सौजन्य : प्रेमा कंटक

२८६. पत्र : डॉ० एन० बी० खरेको

सोदपुर
१२ दिसम्बर, १९४५

भाई खरे[1],

मैं समझता हूं कि आप मुझे मिलने के लिये इंतझार है।[2] आप कल शाम को ८ बजे आ सकें तो ठीक होगा।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४८६९) से। सौजन्य : एन० बी० खरे

१. (१८८४-१९६७); १९३७-३८ में मध्य प्रान्तके कांग्रेसी मुख्यमन्त्री, और १९४३-४६ में वाइसरायकी कार्यकारिणी परिषदके सदस्य

२. वाइसरायकी कार्यकारिणी परिषद्में शामिल होने के बाद एन० बी० खरे कांग्रेससे अलग हो गये थे। अब चुनावोंसे पूर्व उनके कुछ समर्थक चाहते थे कि वे फिरसे कांग्रेसमें शामिल हो जायें। इसी सिलसिलेमें वे गांधीजी से मिलना चाहते थे।

२८७. पत्र : राधाकान्त मालवीयको

सोदपुर
१२ दिसम्बर, १९४५

भाई राधाकान्त,

आपका खत कल रातको मिला। वर्किंग कमिटी खतम हो गई है। मेरी मर्यादा समझो और जिस बारेमें आप लिखते हैं उस बारेमें मेरी अनिच्छा भी समझो।

श्री राधाकान्त मालवीय
१६, ताराचन्द दत्त स्ट्रीट
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२८८. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
१२ दिसम्बर, १९४५

गांधीजी ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति रास्तेमें पड़े साँपकी बगलसे यह समझकर गुजर जाये कि वह साँप नहीं, बल्कि रस्सीका टुकड़ा है तो वह भयभीत नहीं होगा। लेकिन तभी यदि उसका साथी उसे यह बता दे कि जिसे उसने रस्सीका टुकड़ा समझा वह रस्सी नहीं, बल्कि जीवित साँप था तो वह एकदम भयभीत हो उठेगा। क्या यह आश्चर्यकी बात नहीं है कि परिस्थितियाँ एक होने पर भी एक स्थितिमें उस व्यक्तिके मनमें भयका लेशमात्र न हो और दूसरीमें वह बुरी तरहसे भयभीत हो उठे और इस तरह बच जाने पर भगवानको धन्यवाद देने लगे।

उपर्युक्त उदाहरणसे क्या शिक्षा मिलती है, यह बताते हुए गांधीजी ने कहा कि सुख और दुःखका उद्गम और कहीं न होकर मनुष्यके अपने मनमें ही है। अर्जुनके कृष्णसे यह पूछने पर कि स्थितप्रज्ञ कौन है, उन्होंने बताया कि स्थितप्रज्ञ वही व्यक्ति है जिसे सुख और दुःख व्याप्त नहीं होते।[1] ऐसा वही व्यक्ति कर सकता है जिसने अपनी इन्द्रियोंको वशमें कर लिया है। आत्मसंयमी व्यक्तिके लिए जीवन सरल और मोक्ष सहज हो जाता है।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, १३-१२-१९४५

१. भगवद्गीता, अध्याय २, श्लोक ५४ और ५६

२८९. भाषण : प्रार्थना-सभामें[1]

सोदपुर
१३ दिसम्बर, १९४५

महात्मा गांधीने कहा कि जिस ज्ञानसे विश्वका सच्चा कल्याण होता हो उस ज्ञानको हृदयकी शुद्धिके बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता। जो लोग इन प्रार्थना-सभाओंमें आते हैं उन्हें इनसे कुछ लाभ उठाना चाहिए, अन्यथा उनका इन सभाओंमें भाग लेना व्यर्थ है। आपको अपने चित्तको एकाग्र करना चाहिए, तभी आपको अपने हृदयमें ईश्वरके अस्तित्वकी अनुभूति हो सकेगी। लेकिन यदि आप यह सोचकर चुप रहते हैं कि मैंने ऐसा कहा है तो आपको प्रार्थनासे कोई लाभ नहीं होगा। एकाग्रतासे आपके हृदय शुद्ध होंगे और आपके अन्तर्ज्ञानमें वृद्धि होगी। हर व्यक्तिको यह सोचना चाहिए कि वह आत्मशुद्धिके लिए प्रार्थना-सभामें जा रहा है। ऐसा करने पर ही आपका निर्बाध बौद्धिक विकास होगा और अपने मनोविकारोंको नियन्त्रित करके आप सच्ची शान्ति प्राप्त कर सकेंगे।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १४-१२-१९४५

२९०. पत्र : आगाखाँको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१४ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका कृपापूर्ण तार मिला। मैं मद्राससे पूना होकर नहीं लौटूँगा। सम्भावना यह है कि मैं फरवरीमें विजयवाड़ाके रास्ते वर्धा लौटूँगा। तब आपकी सुविधानुसार बम्बई या पूनामें मुलाकातकी कोई ऐसी तारीख तय की जा सकती है जो दोनोंकी सुविधाके अनुरूप हो।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

हिज हाइनेस आगाखाँ
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रके अनुसार सभामें बहुत बड़ी संख्यामें स्त्रियाँ और एक सौसे भी अधिक हरिजन बालक शामिल हुए थे।

२९१. पत्र : बिशप फॉस वेस्टकॉटको[1]

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१४ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका राँचीसे लिखा (तिथि-रहित) कृपापत्र मिला।

सुधीरने पुस्तक मुझे दे दी है। उसके लिए आपको धन्यवाद। उसे पढ़ने का समय निकालने की कोशिश करूँगा।

मैं आपकी इस बातसे पूर्णतः सहमत हूँ कि घृणाकी भावनासे भारतकी समस्या कभी हल नहीं हो सकती, क्योंकि मैं तो इस सामान्य कथनमें विश्वास रखता हूँ कि घृणाकी भावनासे विश्वकी कोई समस्या न तो सुलझी है और न सुलझेगी। लेकिन मैं यह भी मानता हूँ कि ऐसी घृणाके कारणोंका पता लगाकर उन्हें दूर करना जरूरी है। जहाँ तक भारतका सम्बन्ध है, इन कारणोंको दूर करने का उपाय यह है कि वरिष्ठ, अर्थात् शासक पक्षने जो अन्याय किया है उसे वह समाप्त करे। मेरी कार्य-पद्धतिसे, जिसमें मेरी पूर्ण आस्था है, इस काम को यथासम्भव जल्दीसे-जल्दी किया जा सकेगा।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सेवाग्रामके शान्त वातावरणमें कुछ दिन मेरे साथ समय बिताने की बात आप याद रखेंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

परम पूज्य बिशप फॉस वेस्टकॉट
मार्फत बिशप्स हाउस
राँची

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कलकत्ताके बिशप तथा भारतके मेट्रोपोलिटन बिशप

२९२. पत्र : कमलादेवी चट्टोपाध्यायको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१४ दिसम्बर, १९४५

प्रिय कमलादेवी,

तुम्हारा २ दिसम्बरका पत्र आज सुबह ही मुझे मिला। सम्मेलन[1] के उपरान्त जब तुम्हें लगे कि कस्तूरबा स्मारकके कामसे तुम्हें मैसूर जाना है तो रियासत में प्रवेश करने तथा इस निश्चित उद्देश्यसे ही तुम वहाँ जाओगी, इस बातकी यथेष्ट पूर्वसूचना देने के बाद तुम्हें रियासतमें प्रवेश करके उसके जो भी परिणाम निकलें उनका सामना करना चाहिए। यदि रियासत तुम्हारे कार्योंमें हस्तक्षेप करने की धृष्टता करती है तो ऐसी कार्रवाईकी वैधताको चुनौती देना उचित हो सकता है। लेकिन इस सम्बन्धमें अभी न तो कुछ कहने की जरूरत है और न ही कुछ कहा जा सकता है।

जो लोग बेकार हो जायेंगे,[2] उनके बारेमें जवाहरलाल क्या कोई केन्द्रीय योजना नहीं तैयार कर रहा है, या शायद कांग्रेस? मुझे कुछ धुँधला-सा ही खयाल है। लेकिन इतनी बात स्पष्ट जानता हूँ कि यह एक बड़ी समस्या है, जिसे कोई एक व्यक्ति हल नहीं कर सकता। तालीमी संघ तो बहुत थोड़े-से लोगोंको ही ले सकता है, और फिर यह जरूरी है कि वे लोग विशेषज्ञ हों और इस कामसे प्रेम करने वाले हों। अखिल भारतीय चरखा संघ कुछ और लोगोंको खपा सकता है, लेकिन ऐसे लोगोंको ही जो ग्रामीण जीवनकी सादगी और गरिमाको समझते हों। जो लोग तुम्हारे ध्यानमें हैं वे क्या इसे अपना सकते हैं?

अपने भावी कार्योंके बारेमें तुमने जो लिखा है उसे मैं समझता हूँ, और मुझे तो यह बात ज्यादा अच्छी लगेगी कि तुम किसी गाँवमें बस जाओ और हल

१. १९४६ में कमलादेवी चट्टोपाध्यायकी अध्यक्षतामें आयोजित किया जाने वाला अखिल भारतीय महिला सम्मेलन

२. तात्पर्य सैनिक कर्मचारियों तथा युद्ध-सेवामें लगे श्रमिकोंके युद्धकी समाप्तिके फलस्वरूप नौकरीसे हटाये जाने से है। अ० भा० कांग्रेस कमेटीने बम्बईकी अपनी २१-२४ सितम्बरकी बैठकमें इस सम्भावनापर चिन्ता प्रकट की थी।

पर तो नहीं — क्योंकि वह तुम्हारे लिए शायद बहुत मुश्किल हो — लेकिन चरखेपर अपना हाथ आजमाओ जो किसीके लिए मुश्किल नहीं है।

स्नेह।

तुम्हारा,
बापू

श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय
मार्फत महिला सम्मेलन कार्यालय
लैमिंगटन रोड, बम्बई–७

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९३. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

सोदपुर
१४ दिसम्बर, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। तनिक चौंका। वहाँकी रसोईमें मांस और गोमांस भी बनता है, यह बात मुझे मालूम है। इसका उपाय धीरजके साथ ही करना होगा। तुम्हें इससे डरकर वहाँसे भागना नहीं है। इतना ही काफी होगा कि तुम स्वयं मांसाहार न करो, गोमास न खाओ। लेकिन दूसरोंको खाने से रोका नहीं जा सकता। यदि वे खुद ही विचार करके खाना बन्द करे तो ठीक। इसलिए मेरी सलाह है कि मैंने जो कहा है वह तुम धैर्यपूर्वक करते रहो।

मैं तुम्हें ज्यादा समय तो वहाँ रखना नहीं चाहता। लेकिन यदि तुम बही-खाता लिखना सीख लो और उसमें प्रवीण हो जाओ तथा सफाईके कामपर नियन्त्रण पा लो तो मैं उसे काफी समझूंगा। बाकी फेर-बदल तो मेरे आने पर ही किया जा सकता है। जहाँगीरजी अब शायद आ गये होंगे।

कंचन काममें निमग्न रहती है। इतना जरूर कह सकता हूँ कि उसमें अभी पूरी ताकत नहीं आई है, लेकिन उम्मीद है कि आ जायेगी। दुर्लभभाई हमेशाके लिए चले गये अथवा थोड़े दिनके लिए? यह बात मालूम हो तो लिखना।

सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६१०) से। सी० डब्ल्यू० ७१९३ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

२९४. पत्र : अतुलचन्द्र घोषको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१४ दिसम्बर, १९४५

भाई अतुलबाबू,

मैं क्या करूं? हमेशा युवा नहीं रह सकता हूं। इसलिए जो सेवा मैं एक स्थानपर बैठकर कर सकता हूं उसमें संतुष्ट रहूं। मानभूमवासियोंसे कहें कि अहिंसासे हम सबकुछ कर सकते हैं और उसका प्रतीक चर्खा है।

बापूके आशीर्वाद

बाबू अतुलचंद घोष
निवारण आश्रम
पुलिया (मानभूम)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९५. पत्र : वा० गो० गावंडेको

सोदपुर
१४ दिसम्बर, १९४५

भाई मावंडे[1],

आपका निवेदन भाई रामकृष्णने दिया है। हमेशा जो चीज किसीको भेजी जाय, चाहे छोटी या बड़ी लेकिन वह ऐसी होनी चाहिये कि आरामसे पढ़ा जाय। आपने जो भेजा है उसके अक्षर अस्पष्ट हैं। जब तक आदमीका दिल उसपर जम न जाय तब तक उसे पढ़ नहीं सकता। मेरे पास इतना वक्त कहां? लाचारीसे कहना पड़ता है कि पढ़ नहीं सका। मेरे लिखने का तात्पर्य जो कुछ भी करें या निवेदन भेजें वह सब साफ शुद्ध और स्पष्ट होने चाहियें।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री वा० गो० गावंडे
महाल
नागपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पतेपर गावंडे है, लेकिन पत्रकी शुरुआत मावंडेसे की है।

२९६. तार : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१५ दिसम्बर, १९४५

तुम्हारा पत्र मिला। आवश्यक सहायता प्राप्त करके जितना भी सम्भव हो उतना काम करो।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६१४) से। सी० डब्ल्यू० ७१९४ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

२९७. पत्र : जी० ई० बी० एबेलको

शिविर : खादी प्रतिष्ठान
प्रोदपुर (कलकत्ताके निकट)
१५ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

संयुक्त प्रान्तसे एक व्यक्तिने इस आशयका पत्र लिखा है कि वहाँ गुड़ बनाने पर रोक लगा दी गई है। गुड़ बनाना एक ग्रामोद्योग है। गन्ना-उत्पादक अपने खेतोंमें कोल्हूसे गन्नेका रस निकालकर तथा कड़ाहोंमें उसे उबालकर गुड़ बनाते हैं। इसलिए मैंने सोचा कि पत्र-लेखक जरूर भूल कर रहा है और फलतः मैंने उससे उस आदेशकी नकल भेजने को कहा जिसके आधारपर उसने अपनी बात लिखी थी। उसने उस चौंकाने वाले आदेश[1] की एक नकल भेजी है, जो पत्रके साथ संलग्न है। बादमें गन्ना-उत्पादकोंने आदेशके प्रति अपना विरोध प्रकट करते हुए प्रस्ताव पास किये हैं और धमकी दी है कि अगर वह वापस न लिया गया तो वे उसे मानने से इनकार कर देंगे। फलतः अधिकारियोंने आदेशमें कुछ छूट दे दी है। इस छूटके आदेशकी प्रति भी साथमें भेज रहा हूँ। मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि गरीब लोगोंके लिए इसका क्या महत्व है, यह आप भी समझते हैं। मूल आदेश चीनी मिलोंको संरक्षण देने के लिए जारी

१. आदेशमें कहा गया था कि कतिपय निश्चित क्षेत्रोंमें कोई गुड़ नहीं बनायेगा, कोल्हू नहीं लगायेगा और न गन्नेको निर्धारित चीनी मिलोंके अलावा कहीं ले जायेगा।

किया गया हो, ऐसा नहीं हो सकता; इसके बजाय उसका उद्देश्य गुड़ या शक्कर के रूपमें चीनीके उचित उपयोग और वितरणकी व्यवस्था करना रहा होगा। अगर ऐसा है तो इससे उसका उद्देश्य ही विफल हो जाता है। संशोधित आदेश यद्यपि मूल आदेशसे कम खराब भी हो, लेकिन ग्रामीणोंके दृष्टिकोणसे सोचें तो वास्तवमें उससे भी उद्देश्यकी पूर्ति नहीं होती। गाँवमें बनाये गुड़के लिए अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

यह चूँकि कोई प्रान्तीय मामला नहीं है, बल्कि भारतमें जहाँ भी गन्ना पैदा किया जाता है ऐसे सभी क्षेत्रोंपर लागू होता है, इसलिए राहतके लिए मैं वाइसराय महोदयसे सविनय निवेदन कर रहा हूँ।[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री जी० ई० बी० एबेल
वाइसराय महोदयके निजी सचिव
वाइसरायज हाउस
नई दिल्ली

[अंग्रेजीसे]

गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ७०-७१

२९८. पत्र : सी० के० नारायणस्वामीको

खादी प्रतिष्ठान
सादपुर (कलकत्ताके निकट)
१५ दिसम्बर,[2] १९४५

प्रिय नारायणस्वामी,

पूना छोड़ने के बादसे बराबर यात्रामें रहने के कारण मैं पत्र-व्यवहारमें पिछड़ गया हूँ। आशा है, मेनन अपने काममें ठीक प्रगति कर रहा होगा।

जहाँ तक रचनात्मक कार्यक्रमका सम्बन्ध है, मैं इतना कह सकता हूँ कि वह पहलेसे अच्छा चल रहा है। लेकिन क्या तुम्हारे पास कुछ व्यावहारिक सुझाव हैं? अपने पत्रमें तुमने जो-कुछ कहा है वह शहरी मानसिकताके लिए ही ठीक है। तुम्हें और मुझे यही करना है कि हम ग्रामीण मानसिकताके अनुरूप सुझावोंके बारेमें

१. अपने ४ जनवरी, १९४६ के पत्रमें जी० ई० बी० एबेलने लिखा कि संयुक्त प्रान्त के एक छोटे-से इलाकेके अलावा और कहीं गुड़ बनाने पर प्रतिबन्ध नहीं है, और इस प्रतिबन्ध का भी उद्देश्य प्रान्तमें चीनी तथा गुड़के उत्पादन और वितरणको योजनाबद्ध करना है।

२. साधन-सूत्रमें यहाँ 'अक्तूबर' है, लेकिन उस समय गांधीजी पूनामें थे।

२७७. पत्र : मोतीलाल रायको

सोदपुर
९ दिसम्बर, १९४५

भाई मोतीबाबू,

आपको मैं अंग्रेजीमें कहां तक लिखता रहूं? आजकल तो हो सके वहां तक मैं सबको राष्ट्रभाषामें या मातृभाषामें ही खत लिखता हूं। शायद आपके पास राष्ट्रभाषा पढ़ने वाला न हो ऐसी शंकासे इस पत्रका बंगालीमें अनुवाद भी भेजता हूं। यह खत आपको अमतुल्सलाम देगी और बात भी करेगी। उसने मुझे प्रवर्तक संघकी खादी नीतिके [बारेमें] काफी शिकायतें सुनाई है। अमतुलसलाम बहेन मेरे साथ मेरी पुत्री बनकर वर्षोंसे रही है। बहुत महेनती और काम करने वाली और जानने वाली है। इस कारण वह वीरकामतामें कुछ वर्षोंसे खादी काम कर रही है। अभी वहां प्रवर्तक संघका भी कार्य चलता है। अमतुलसलामका काम सिर्फ पारमार्थिक है और लोक सेवाका ही...[1] खादी काम अमतुलसलाम—करे...[2] पारमार्थिक नहीं है...[3] के लिये है। वह यह भी बताती है कि वह काम चर्खा संघके नीतिका विरोधी है और बन पड़े तो नाशक भी हो सकता है। आप इस चीजोंको जाने और होने दें ऐसा मेरा दिल नहीं मानता है। इसलिये समझने के लिए अमतुलसलामको मैं भेजता हूं। ज्यादा बात वह समझायेगी।

चर्खा संघने जो पैसे उधार दिये हैं वह अब तक वापस नहीं हुए हैं वह दुःखकी बात है। अब वह पैसे मिलने ही चाहिये। ट्रस्टके हैं। ट्रस्ट कैसे छोड़ सकता है?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ११०५८) से

२७८. पत्र : चिमनलाल नरसिंहदास शाहको

सोदपुर
१० दिसम्बर, १९४५

चि० चिमनलाल,

साथमें यूनाइटेड कमर्शियल बैंकमें खोले गये खातेके कागजात हैं। खातेके मेरे अथवा तुम्हारे हस्ताक्षरसे चलाये जाने की व्यवस्था है। और भी दो हस्ताक्षर देने का

१, २ और ३. साधन-सूत्रमें यहाँ अक्षर स्पष्ट नहीं हैं।

विचार किया है। ये दो व्यक्ति कौन हों, यह नहीं सोचा है। तुम्हारे विचारमें कोई हो तो लिखना। अभी तो शायद दो ही काफी है। दोमें से एकके मरने पर विचार करने का प्रसंग आयेगा।

साथमें [भेजे फ़ार्मपर] अपने हस्ताक्षरका नमूना भेजना। मैंने तो हिन्दुस्तानीमें दिये हैं और उसीमें करने का विचार किया है। तुम भी ऐसा कर सकते हो। सोच-विचारकर जैसा करना हो, करना। साथमें इससे सम्बन्धित अन्य कागज भी हैं। उन्हें सँभालकर रखना। हस्ताक्षरका] नमूना मुझे भेजना।

अभी तो मैं यहीं हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०६४८) से

२७९. पत्र : क्षितिकंठ झाको

सोदपुर
१० दिसम्बर, १९४५

भाई क्षितिकंठ,

तुमारा खत मिला। मेरे नजदीक बैठना ही हो तो कोई रोज आना। लेकिन बैठने के क्या? जो मैंने बताया हुआ काम करते है वे मेरे नजदीक बैठते है।

बापुके आशीर्वाद

श्री क्षितिकंठ झा
खादी प्रतिष्ठान
ग्रामसेवा केन्द्र
ठाकुरदांडी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७४७७) से। सी० डब्ल्यू० ४९२३ से भी; सौजन्य : परशुराम मेहरोत्रा

२८०. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
१० दिसम्बर, १९४५

आज जब हम अपने लक्ष्यकी प्राप्तिके लिए पूरे जोरसे प्रयत्न कर रहे हैं; हमें किसीको यह कहने का मौका नही देना चाहिए कि हम अनुशासित नही हैं और इसलिए स्वराजके योग्य नहीं हैं। आज नही तो कल, सत्ता हमारे हाथ आयेगी ही। लेकिन यदि हम अनुशासित नही हैं तो हम उस सत्ताका प्रयोग कैसे करेंगे?

गांधीजी ने लोगोंको याद दिलाया कि ब्रिटिश सरकार ही एकमात्र ऐसी बाधा नहीं है जिससे हमें छुटकारा पाना है। यदि लोग अनुशासित नहीं होंगे तो सत्ताके हमारे हाथ आ जाने पर भी हम उसे कायम नहीं रख सकेंगे, और कोई अन्य आकर उसे हमारे हाथोंसे छीन लेगा।

अनुशासनहीन, नासमझ और बेकारकी उछलकूद मचाने वाले तो केवल जंगली जानवर होते हैं। लेकिन यदि मनुष्य भी ऐसी हरकतें करने लगेंगे तो रेलगाड़ियोंके ड्राइवर और गार्ड अपना काम किस तरह कर पायेंगे।[1] अकसर यह भी देखने में आता है कि सीमित क्षमता वाली छोटी नौकाएँ बहुत ज्यादा भीड़ हो जाने से डूब जाती हैं। हमारी संख्या करोड़ों है, कदाचित् इसीलिए हम इस तरहकी दुर्घटनाओंमें होने वाले नुकसानकी ओर ध्यान नहीं देते। अगर एक गाड़ीमें भीड़ होने के कारण चढ़ना मुश्किल हो तो दूसरीका इन्तजार कीजिए, लेकिन उसीमें चढ़कर भीड़को और भी बढ़ाकर ऐसा न कीजिए कि ड्राइवर और गार्डके लिए गाड़ी चलाना असम्भव हो जाये।

गांधीजी ने आगे कहा कि आपको अनुशासन तो सीखना ही है। उसे सीखने के दो तरीके हैं। सेनामें जवान इसे कवायद द्वारा सीखते हैं। लेकिन उसे दूसरी तरहसे सिखाने के लिए प्रार्थना है। प्रार्थना आपको न केवल अगले जन्मके लिए मुक्ति दिलाती है, बल्कि इस जन्ममें भी दिलाती है। यदि आप लोग इस जन्ममें मुक्ति प्राप्त करने में असफल रहे, तो क्या आपके अगले जन्ममें उसे प्राप्त करने की सम्भावना हो सकती है? अन्तमें गांधीजी ने कहा कि ऐसी परिस्थितियोंमें आपको विचारवान मनुष्योंकी तरह आचरण करना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ११-१२-१९४५

१. तात्पर्य उन मुसाफिरोंके आचरणसे है जो इसके पिछले दिन सोदपुर आने और वहाँसे जाने के लिए इंजन और गार्डके डिब्बोंमें घुस गये थे।

२८१. भाषण : कलकत्तामें[1]

१० दिसम्बर, १९४५

गवर्नमेन्ट हाउसके बाहर लोगोंकी भीड़को सम्बोधित करते हुए गांधीजी ने कहा कि शामको जब मैंने गवर्नमेन्ट हाउसमें प्रवेश किया तब मैंने अपनी कार के आसपास लोगोंको खड़े पाया। इसलिए अब मैं आपके पास पैदल चलकर आया हूँ।

आप लोग स्थिर और शान्त रहें। मैं बूढ़ा आदमी हूँ और प्रदर्शनों आदि को बरदाश्त नहीं कर सकता। यदि आप लोग मुझे कारसे नहीं जाने देंगे तो मुझे सोदपुर पैदल चलकर जाना पड़ेगा।

गांधीजी ने आगे कहा कि मैं आपकी और देशकी सेवा करने के लिए यहाँ आया हूँ। अनुशासनकी आवश्यकता समझाते हुए उन्होंने कहा कि अपने शान्तिके सन्देशके कारण प्राचीन कालमें भारतने महान प्रतिष्ठा पाई थी। हम लोग शान्ति और अनुशासन द्वारा ही स्वाधीनता प्राप्त कर सकेंगे।

सोदपुर आश्रमकी प्रार्थना-सभाओंका जिक्र करते हुए गांधीजी ने कहा कि हालाँकि हजारों लोग प्रार्थनामें भाग लेने के लिए आते हैं, फिर भी वहाँ पूर्ण शान्ति रहती है।

तब गांधीजी ने वहाँ उपस्थित लोगोंसे पूछा कि क्या आप लोग मुझे कार से जाने देंगे। लोगोंने आदरपूर्वक मान लिया और गांधीजी कारमें बैठ गये तथा लोगोंने बीचमें से जाने का रास्ता बना दिया। गांधीजी नमस्कारकी मुद्रामें हाथ जोड़े हुए कारसे सोदपुर आश्रमके लिए रवाना हो गये।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ११-१२-१९४५

१. रातके ८ बजकर ४० मिनटपर, वाइसरायके साथ बातचीत करने के बाद। इस बातचीतके वाइसराय द्वारा लिखे विवरणके लिए देखिए परिशिष्ट १।

२८२. कांग्रेस कार्य-समितिका प्रस्ताव[1]

[११ दिसम्बर, १९४५ या उसके पूर्व][2]

अगस्त १९४२ में प्रमुख कांग्रेसजनोंकी गिरफ्तारीके बाद नेतृत्वहीन जनताने खुद बागडोर सँभाल ली और लगभग अपनी ही प्रेरणापर काम किया। जहाँ उसे शौर्य और बलिदानके अनेक कृत्योंका श्रेय है वहीं कुछ ऐसे कार्य भी किये गये जिनकी गिनती अहिंसामें नही की जा सकती। इसलिए सभी सम्बन्धित लोगोंके मार्गदर्शनके निमित्त कार्य-समितिके लिए आग्रहपूर्वक यह कह देना आवश्यक है कि १९२० में कांग्रेस द्वारा अपनाई गई अहिंसा-नीति आज भी अक्षुण्ण है, और सार्वजनिक सम्पत्ति जलाये जाने, तार काटे जाने, गाड़ियोंके पटरियोंसे उतारे जाने और डराने-धमकाने की कार्रवाइयोंके लिए अहिंसामें कोई स्थान नही है।

कार्य-समितिकी राय है कि १९२० के कांग्रेस प्रस्तावमें जिस अहिंसा-नीतिका वर्णन किया गया है और तबसे समय-समयपर जिसका विस्तार और व्याख्या की जाती रही है, तथा उसके अनुरूप कार्रवाई किये जाने के फलस्वरूप भारतने अभूतपूर्व प्रतिष्ठा प्राप्त की है।

कार्य-समितिकी राय यह भी है कि कांग्रेसके रचनात्मक कार्यक्रम, जिनकी शुरुआत चरखे और खादीको केन्द्र बनाकर हुई है, इस अहिंसा-नीतिके प्रतीक हैं और कांग्रेसके अन्य सभी कार्यक्रम, जिनमें संसदीय कार्यक्रम भी शामिल है, उनके अधीन हैं तथा उनका उद्देश्य महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित रचनात्मक कार्यक्रमको बढ़ावा देना है।

कार्य-समितिका विचार है कि जब तक भारतकी आम जनता रचनात्मक कार्यक्रमको यथासम्भव व्यापक पैमानेपर नहीं अपनाती तब तक स्वराज्य-प्राप्तिके लिए सामूहिक या अन्य किसी प्रकारकी सविनय अवज्ञा करने की कल्पना नही की जा सकती है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १२-१२-१९४५

१ और २. गांधीजी द्वारा तैयार किये गये इस प्रस्तावको कार्य-समितिने अपनी कलकत्ताकी पाँच दिनोंकी बैठकके अन्तिम दिन अर्थात् ११ दिसम्बरको पारित किया था।

२८३. पत्र : आर० जी० केसीको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१२ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका इसी १० तारीखका पत्र मिला। धन्यवाद।

ऐसा तो नहीं है कि मैंने आपकी सिंचाई-योजनाको महत्व नहीं दिया।[1] मैंने सिर्फ इतना किया है कि उसमें एक चीज और जोड़ दी है, ताकि करोड़ों ग्राम-वासियोंके खाली समयको काममें लगाकर उनमें से हर व्यक्तिको लगभग तत्काल राहत दी जा सके; और यह तो निर्विवाद तथ्य है कि उनके पास खाली समय है। आपकी टिप्पणीसे यह जाहिर होता है कि आप मेरे सुझावसे सर्वथा सहमत हैं। तब फिर बंगाल सरकारको इस योजनाका प्रवर्तन करके, जहाँ तक कपड़ेकी कमीका सवाल है, तत्काल आशाजनक स्थिति उत्पन्न करने में क्या बाधा है? मैंने ऐसा कभी नहीं कहा है कि भौतिक परिवेशपर नियन्त्रण पाये बिना सुखकी प्राप्ति सम्भव है। लेकिन मैं बहस नहीं करना चाहता। अगर आपके मनमें घरेलू कताई और बुनाई तथा अन्य ग्रामीण दस्तकारियोंके प्रति सहज सम्मान हो तो मैंने एक रास्ता सुझा दिया है। हर किसान अपनी जरूरतकी कपास पैदा करे, यह योजनाकी कोई अनिवार्य शर्त नहीं है, और निश्चय ही किसी भी किसानको खाद्यान्नोंकी फसलका क्षेत्र कम करके कपास पैदा करने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि उसे ऐसी सलाह भी नहीं दी जानी चाहिए। जैसे आपकी योजनामें सवाल बर्बाद होने वाले जलके उपयोगका है, वैसे ही यहाँ प्रश्न उस श्रमको उपयोगमें लाने का है जिसका उपयोग नहीं हो रहा है।

अगर आपको यह चीज व्यवहारिक और तत्काल लागू की जाने लायक लगे तो मैं आपको एक विशद योजना सुलभ करा सकता हूँ जिसे, जैसा कि मैंने आपको बताया था, अखिल भारतीय चरखा संघके नियन्त्रणमें काम करने वाले विभिन्न खादी संगठनों द्वारा कार्यान्वित किया जा सकता है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ११०

१. देखिए पृ० १९३-९४।

२८४. पत्र : आर० जी० केसीको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१२ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

गोप पैलेसके सम्बन्धमें लिखा आपका १० तारीखका कृपा-पत्र मिला।[1] यह ऐसा नाजुक मामला है कि मैं नहीं समझता कि मेरे हस्तक्षेप करने से कोई लाभ होगा। और यदि वर्तमान शासनके स्थानपर जल्द ही लोकप्रिय शासन स्थापित होने वाला है तो फिर जल्दबाजी क्यों की जाये?

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ११२

२८५. पत्र : प्रेमा कंटकको

सोदपुर
१२ दिसम्बर, १९४५

चि० प्रेमा,

चि० सुशीला[2] ने भाई श्यामलालको निम्नलिखित पत्र[3] लिखा है:

मैंने तो मान लिया था कि सुशीला इस कामकी जिम्मेदारी तुरन्त ले लेगी और इसीलिए मैंने श्यामलालके इस सुझावका स्वागत किया कि वही उसे लिख

१. मिदनापुरकी सीमापर स्थित इस महलमें उस समय ब्रिटिश मिलिटरी अस्पताल था और बंगाल सरकारका स्वास्थ्य विभाग क्षय रोग उपचार-गृह खोलने के लिए उसे खरीदना चाहता था। आर० जी० केसीने गांधीजी से अनुरोध किया था कि उसके मालिकपर, जो एक कांग्रेसी था, अपने प्रभावका उपयोग करके सरकारको यह महल खरीदने में सहायता दें"।

२. सुशीला पै

३. यहाँ इसका अनुवाद नहीं दिया गया है। सुशीला पैने कस्तूरबा स्मारक-कोष समिति की महाराष्ट्र-स्थित प्रतिनिधि बनने से इनकार कर दिया था और अपने स्थानपर प्रेमा कंटकका नाम सुझाया था।

देंगे। परन्तु जब सुशीला तेरी ही सिफारिश करती है और तू फिर भी स्वयं आने से इनकार करती है, तब तेरी ही सलाह लेता हूँ कि इस मामलेमें क्या करना उचित है। काम अधिक अच्छा हो सके और सुशोभित हो सके, ऐसा ही करना चाहिए न? सुशीलासे मिलकर जवाब देना हो तो मिलकर देना। जो सुझाव देना हो वह देना। उपर्युक्त पतेपर उत्तर देगी तो मैं जहाँ होऊँगा वहाँ मिल जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४४१) से। सी० डब्ल्यू० ६८८० से भी; सौजन्य : प्रेमा कंटक

२८६. पत्र : डॉ० एन० बी० खरेको

सोदपुर
१२ दिसम्बर, १९४५

भाई खरे[1],

मैं समझता हूं कि आप मुझे मिलने के लिये इंतज़ार हैं।[2] आप कल शाम को ८ बजे आ सकें तो ठीक होगा।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४८६९) से। सौजन्य : एन० बी० खरे

१. (१८८४-१९६७); १९३७-३८ में मध्य प्रान्तके कांग्रेसी मुख्य मन्त्री, और १९४३-४६ में वाइसरायकी कार्यकारिणी परिषदके सदस्य

२. वाइसरायकी कार्यकारिणी परिषद्में शामिल होने के बाद एन० बी० खरे कांग्रेससे अलग हो गये थे। अब चुनावोंसे पूर्व उनके कुछ समर्थक चाहते थे कि वे फिरसे कांग्रेसमें शामिल हो जायें। इसी सिलसिलेमें वे गांधीजी से मिलना चाहते थे।

२८७. पत्र : राधाकान्त मालवीयको

सोदपुर
१२ दिसम्बर, १९४५

भाई राधाकान्त,

आपका खत कल रातको मिला। वर्किंग कमिटी खतम हो गई है। मेरी मर्यादा समझो और जिस बारेमें आप लिखते हैं उस बारेमें मेरी अनिच्छा भी समझो।

श्री राधाकान्त मालवीय
१६, ताराचन्द दत्त स्ट्रीट
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२८८. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
१२ दिसम्बर, १९४५

गांधीजी ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति रास्तेमें पड़े साँपकी बगलसे यह समझकर गुजर जाये कि वह साँप नहीं, बल्कि रस्सीका टुकड़ा है तो वह भयभीत नहीं होगा। लेकिन तभी यदि उसका साथी उसे यह बता दे कि जिसे उसने रस्सीका टुकड़ा समझा वह रस्सी नहीं, बल्कि जीवित साँप था तो वह एकदम भयभीत हो उठेगा। क्या यह आश्चर्यकी बात नहीं है कि परिस्थितियाँ एक होने पर भी एक स्थितिमें उस व्यक्तिके मनमें भयका लेशमात्र न हो और दूसरीमें वह बुरी तरहसे भयभीत हो उठे और इस तरह बच जाने पर भगवानको धन्यवाद देने लगे।

उपर्युक्त उदाहरणसे क्या शिक्षा मिलती है, यह बताते हुए गांधीजी ने कहा कि सुख और दुःखका उद्गम और कहीं न होकर मनुष्यके अपने मनमें ही है। अर्जुनके कृष्णसे यह पूछने पर कि स्थितप्रज्ञ कौन है, उन्होंने बताया कि स्थितप्रज्ञ वही व्यक्ति है जिसे सुख और दुःख व्याप्त नहीं होते।[1] ऐसा वही व्यक्ति कर सकता है जिसने अपनी इन्द्रियोंको वशमें कर लिया है। आत्मसंयमी व्यक्तिके लिए जीवन सरल और मोक्ष सहज हो जाता है।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, १३-१२-१९४५

१. भगवत्गीता, अध्याय २, श्लोक ५४ और ५६

२८९. भाषण : प्रार्थना-सभामें[1]

सोदपुर
१३ दिसम्बर, १९४५

महात्मा गांधीने कहा कि जिस ज्ञानसे विश्वका सच्चा कल्याण होता हो उस ज्ञानको हृदयकी शुद्धिके बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता। जो लोग इन प्रार्थना-सभाओंमें आते हैं उन्हें इनसे कुछ लाभ उठाना चाहिए, अन्यथा उनका इन सभाओंमें भाग लेना व्यर्थ है। आपको अपने चित्तको एकाग्र करना चाहिए, तभी आपको अपने हृदयमें ईश्वरके अस्तित्वकी अनुभूति हो सकेगी। लेकिन यदि आप यह सोचकर चुप रहते हैं कि मैंने ऐसा कहा है तो आपको प्रार्थनासे कोई लाभ नहीं होगा। एकाग्रतासे आपके हृदय शुद्ध होंगे और आपके अन्तर्ज्ञानमें वृद्धि होगी। हर व्यक्तिको यह सोचना चाहिए कि वह आत्मशुद्धिके लिए प्रार्थना-सभामें जा रहा है। ऐसा करने पर ही आपका निर्बाध बौद्धिक विकास होगा और अपने मनोविकारोंको नियन्त्रित करके आप सच्ची शान्ति प्राप्त कर सकेंगे।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १४-१२-१९४५

२९०. पत्र : आगाखाँको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१४ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका कृपापूर्ण तार मिला। मैं मद्राससे पूना होकर नहीं लौटूंगा। सम्भावना यह है कि मैं फरवरीमें विजयवाड़ाके रास्ते वर्धा लौटूंगा। तब आपकी सुविधानुसार बम्बई या पूनामें मुलाकातकी कोई ऐसी तारीख तय की जा सकती है जो दोनोंकी सुविधाके अनुरूप हो।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

हिज हाइनेस आगाखाँ
बम्बई

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रके अनुसार सभामें बहुत बड़ी संख्यामें स्त्रियाँ और एक सौसे भी अधिक हरिजन बालक शामिल हुए थे।

२९१. पत्र : बिशप फॉस वेस्टकॉटको[1]

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१४ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका राँचीसे लिखा (तिथि-रहित) कृपापत्र मिला।

सुधीरने पुस्तक मुझे दे दी है। उसके लिए आपको धन्यवाद। उसे पढ़ने का समय निकालने की कोशिश करूँगा।

मैं आपकी इस बातसे पूर्णतः सहमत हूँ कि घृणाकी भावनासे भारतकी समस्या कभी हल नहीं हो सकती, क्योंकि मैं तो इस सामान्य कथनमें विश्वास रखता हूँ कि घृणाकी भावनासे विश्वकी कोई समस्या न तो सुलझी है और न सुलझेगी। लेकिन मैं यह भी मानता हूँ कि ऐसी घृणाके कारणोंका पता लगाकर उन्हें दूर करना जरूरी है। जहाँ तक भारतका सम्बन्ध है, इन कारणोंको दूर करने का उपाय यह है कि वरिष्ठ, अर्थात् शासक पक्षने, जो अन्याय किया है उसे वह समाप्त करे। मेरी कार्य-पद्धतिसे, जिसमें मेरी पूर्ण आस्था है, इस काम को यथासम्भव जल्दीसे-जल्दी किया जा सकेगा।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सेवाग्रामके शान्त वातावरणमें कुछ दिन मेरे साथ समय बिताने की बात आप याद रखेंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

परम पूज्य बिशप फॉस वेस्टकॉट
मार्फत बिशप्स हाउस
राँची

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कलकत्ताके बिशप तथा भारतके मेट्रोपोलिटन बिशप

२९२. पत्र : कमलादेवी चट्टोपाध्यायको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१४ दिसम्बर, १९४५

प्रिय कमलादेवी,

तुम्हारा २ दिसम्बरका पत्र आज सुबह ही मुझे मिला। सम्मेलन[1] के उपरान्त जब तुम्हें लगे कि कस्तूरबा स्मारकके कामसे तुम्हें मैसूर जाना है तो रियासत में प्रवेश करने तथा इस निश्चित उद्देश्यसे ही तुम वहाँ जाओगी, इस बातकी यथेष्ट पूर्वसूचना देने के बाद तुम्हें रियासतमें प्रवेश करके उसके जो भी परिणाम निकलें उनका सामना करना चाहिए। यदि रियासत तुम्हारे कार्योंमें हस्तक्षेप करने की धृष्टता करती है तो ऐसी कार्रवाईकी वैधताको चुनौती देना उचित हो सकता है। लेकिन इस सम्बन्धमें अभी न तो कुछ कहने की जरूरत है और न ही कुछ कहा जा सकता है।

जो लोग बेकार हो जायेंगे,[2] उनके बारेमें जवाहरलाल क्या कोई केन्द्रीय योजना नहीं तैयार कर रहा है, या शायद कांग्रेस? मुझे कुछ धुंधला-सा ही खयाल है। लेकिन इतनी बात स्पष्ट जानता हूँ कि यह एक बड़ी समस्या है, जिसे कोई एक व्यक्ति हल नहीं कर सकता। तालीमी संघ तो बहुत थोड़े-से लोगोंको ही ले सकता है, और फिर यह जरूरी है कि वे लोग विशेषज्ञ हों और इस कामसे प्रेम करने वाले हों। अखिल भारतीय चरखा संघ कुछ और लोगोंको खपा सकता है, लेकिन ऐसे लोगोंको ही जो ग्रामीण जीवनकी सादगी और गरिमाको समझते हों। जो लोग तुम्हारे ध्यानमें हैं वे क्या इसे अपना सकते हैं?

अपने भावी कार्योंके बारेमें तुमने जो लिखा है उसे मैं समझता हूँ, और मुझे तो यह बात ज्यादा अच्छी लगेगी कि तुम किसी गाँवमें बस जाओ और हल

१. १९४६ में कमलादेवी चट्टोपाध्यायकी अध्यक्षतामें आयोजित किया जाने वाला अखिल भारतीय महिला सम्मेलन

२. तात्पर्य सैनिक कर्मचारियों तथा युद्ध-सेवामें लगे श्रमिकोंके युद्धकी समाप्तिके फलस्वरूप नौकरीसे हटाये जाने से है। अ० भा० कांग्रेस कमेटीने बम्बईकी अपनी २१-२४ सितम्बरकी बैठकमें इस सम्भावनापर चिन्ता प्रकट की थी।

पर तो नहीं — क्योंकि वह तुम्हारे लिए शायद बहुत मुश्किल हो — लेकिन चरखेपर अपना हाथ आजमाओ जो किसीके लिए मुश्किल नहीं है।

स्नेह।

तुम्हारा,
बापू

श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय
मार्फत महिला सम्मेलन कार्यालय
लैमिंगटन रोड, बम्बई–७

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९३. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

सोदपुर
१४ दिसम्बर, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। तनिक चौंका। वहाँकी रसोईमें मांस और गोमांस भी बनता है, यह बात मुझे मालूम है। इसका उपाय धीरजके साथ ही करना होगा। तुम्हें इससे डरकर वहाँसे भागना नहीं है। इतना ही काफी होगा कि तुम स्वयं मांसाहार न करो, गोमांस न खाओ। लेकिन दूसरोंको खाने से रोका नहीं जा सकता। यदि वे खुद ही विचार करके खाना बन्द करें तो ठीक। इसलिए मेरी सलाह है कि मैंने जो कहा है वह तुम धैर्यपूर्वक करते रहो।

मैं तुम्हें ज्यादा समय तो वहाँ रखना नहीं चाहता। लेकिन यदि तुम बही-खाता लिखना सीख लो और उसमें प्रवीण हो जाओ तथा सफाईके कामपर नियन्त्रण पा लो तो मैं उसे काफी समझूँगा। बाकी फेर-बदल तो मेरे आने पर ही किया जा सकता है। जहाँगीरजी अब शायद आ गये होंगे।

कंचन काममें निमग्न रहती है। इतना जरूर कह सकता हूँ कि उसमें अभी पूरी ताकत नहीं आई है, लेकिन उम्मीद है कि आ जायेगी। दुर्लभभाई हमेशाके लिए चले गये अथवा थोड़े दिनके लिए? यह बात मालूम हो तो लिखना।

सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६१०) से। सी० डब्ल्यू० ७१९३ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

२९४. पत्र : अतुलचन्द्र घोषको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१४ दिसम्बर, १९४५

भाई अतुलबाबू,

मैं क्या करूं? हमेशा युवा नहीं रह सकता हूं। इसलिए जो सेवा मैं एक स्थानपर बैठकर कर सकता हूं उसमें संतुष्ट रहूं। मानभूमवासिओंसे कहें कि अहिंसासे हम सबकुछ कर सकते हैं और उसका प्रतीक चर्खा है।

बापुके आशीर्वाद

बाबू अतुलचंद घोष
निवारण आश्रम
पुलिया (मानभूम)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९५. पत्र : वा० गो० गावंडेको

सोदपुर
१४ दिसम्बर, १९४५

भाई भावंडे[1],

आपका निवेदन भाई रामकृष्णने दिया है। हमेशा जो चीज किसीको भेजी जाय, चाहे छोटी या बड़ी लेकिन वह ऐसी होनी चाहिये कि आरामसे पढ़ा जाय। आपने जो भेजा है उसके अक्षर अस्पष्ट हैं। जब तक आदमीका दिल उसपर जम न जाय तब तक उसे पढ़ नहीं सकता। मेरे पास इतना वक्त कहां? लाचारीसे कहना पड़ता है कि पढ़ नहीं सका। मेरे लिखने का तात्पर्य जो कुछ भी करें या निवेदन भेजें वह सब साफ शुद्ध और स्पष्ट होने चाहियें।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री वा० गो० गावंडे
महाल
नागपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. पतेपर गावंडे है, लेकिन पत्रकी शुरूआत भावंडेसे की है।

२९६. तार : मुन्नालाल गंगादास शाहको

१५ दिसम्बर, १९४५

तुम्हारा पत्र मिला। आवश्यक सहायता प्राप्त करके जितना भी सम्भव हो उतना काम करो।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६१४) से। सी० डब्ल्यू० ७१९४ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

२९७. पत्र : जी० ई० बी० एबेलको

शिविर : खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर (कलकत्ताके निकट)
१५ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

संयुक्त प्रान्तसे एक व्यक्तिने इस आशयका पत्र लिखा है कि वहाँ गुड़ बनाने पर रोक लगा दी गई है। गुड़ बनाना एक ग्रामोद्योग है। गन्ना-उत्पादक अपने खेतोंमें कोल्हूसे गन्नेका रस निकालकर तथा कड़ाहोंमें उसे उबालकर गुड़ बनाते हैं। इसलिए मैंने सोचा कि पत्र-लेखक जरूर भूल कर रहा है और फलतः मैंने उससे उस आदेशकी नकल भेजने को कहा जिसके आधारपर उसने अपनी बात लिखी थी। उसने उस चौंकाने वाले आदेश[1] की एक नकल भेजी है, जो पत्रके साथ संलग्न है। बादमें गन्ना-उत्पादकोंने आदेशके प्रति अपना विरोध प्रकट करते हुए प्रस्ताव पास किये हैं और धमकी दी है कि अगर वह वापस न लिया गया तो वे उसे मानने से इनकार कर देंगे। फलतः अधिकारियोंने आदेशमें कुछ छूट दे दी है। इस छूटके आदेशकी प्रति भी साथमें भेज रहा हूँ। मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि गरीब लोगोंके लिए इसका क्या महत्व है, यह आप भी समझते हैं। मूल आदेश चीनी मिलोंको संरक्षण देने के लिए जारी

१. आदेशमें कहा गया था कि कतिपय निश्चित क्षेत्रोंमें कोई गुड़ नहीं बनायेगा, कोल्हू नहीं लगायेगा और न गन्नेको निर्धारित चीनी मिलोंके अलावा कहीं ले जायेगा।

किया गया हो, ऐसा नहीं हो सकता; इसके बजाय उसका उद्देश्य गुड़ या शक्कर के रूपमें चीनीके उचित उपयोग और वितरणकी व्यवस्था करना रहा होगा। अगर ऐसा है तो इससे उसका उद्देश्य ही विफल हो जाता है। संशोधित आदेश यद्यपि मूल आदेशसे कम खराब भी हो, लेकिन ग्रामीणोंके दृष्टिकोणसे सोचें तो वास्तवमें उससे भी उद्देश्यकी पूर्ति नहीं होती। गाँवमें बनाये गुड़के लिए अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।

यह चूँकि कोई प्रान्तीय मामला नहीं है, बल्कि भारतमें जहाँ भी गन्ना पैदा किया जाता है ऐसे सभी क्षेत्रोंपर लागू होता है, इसलिए राहतके लिए मैं वाइसराय महोदयसे सविनय निवेदन कर रहा हूँ।[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री जी० ई० बी० एबेल
वाइसराय महोदयके निजी सचिव
वाइसरायज हाउस
नई दिल्ली

[अंग्रेजीसे]

गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ७०-७१

२९८. पत्र : सी० के० नारायणस्वामीको

खादी प्रतिष्ठान
सादपुर (कलकत्ताके निकट)
१५ दिसम्बर,[2] १९४५

प्रिय नारायणस्वामी,

पूना छोड़ने के बादसे बराबर यात्रामें रहने के कारण मैं पत्र-व्यवहारमें पिछड़ गया हूँ। आशा है, मेनन अपने काममें ठीक प्रगति कर रहा होगा।

जहाँ तक रचनात्मक कार्यक्रमका सम्बन्ध है, मैं इतना कह सकता हूँ कि वह पहलेसे अच्छा चल रहा है। लेकिन क्या तुम्हारे पास कुछ व्यवहारिक सुझाव हैं? अपने पत्रमें तुमने जो-कुछ कहा है वह शहरी मानसिकताके लिए ही ठीक है। तुम्हें और मुझे यही करना है कि हम ग्रामीण मानसिकताके अनुरूप सुझावोंके बारेमें

१. अपने ४ जनवरी, १९४६ के पत्रमें जी० ई० बी० एबेलने लिखा कि संयुक्त प्रान्त के एक छोटे-से इलाकेके अलावा और कहीं गुड़ बनाने पर प्रतिबन्ध नहीं है, और इस प्रतिबन्ध का भी उद्देश्य प्रान्तमें चीनी तथा गुड़के उत्पादन और वितरणको योजनाबद्ध करना है।

२. साधन-सूत्रमें यहाँ 'अक्तूबर' है, लेकिन उस समय गांधीजी पूनामें थे।

सोचें। लेकिन अगर तुम इस निष्कर्षपर पहुँच चुके हो कि गाँव और ग्रामीण मानसिकता समाप्त नहीं हुई है तो हो जायेगी, तो बात और है। वैसे, मेरा स्पष्ट निष्कर्ष है कि दुनियाको अगर कोई मिटने से बचा सकता है तो केवल गाँव और ग्रामीण मानसिकता ही। अपनी चकाचौंधके बावजूद शहर और शहरी मानसिकता हमारी आँखोंके सामने दम तोड़ रही है। इसलिए मैंने तो ग्रामीण जीवनको कायम रखने के उपायों और साधनोंके बारेमें सोचने के अलावा अपने सामने और कोई विकल्प ही नहीं रखा है।

मुसलमानोंकी अशान्तिके बारेमें तुम्हारा ठोस सुझाव क्या है?

तुम्हारा,
बापू

श्री सी० के० नारायणस्वामी
५, हिदायत हाउस
बम्बई-१९

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

२९९. पत्र : जे० सी० गुप्तको

सोदपुर
१५ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

आपके पत्रके[1] लिए बहुत धन्यवाद।

कैदियोंके लिए जितना भी मुझसे हो सकता है, कर रहा हूँ।[2] उनके सम्बन्धमें आप मुझसे मिलने आयें, यह कष्ट आपको देने की जरूरत मैं नहीं समझता।

आपके नेत्रहीन पुत्र और उसकी पत्नीसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।

हृदयसे आपका,

श्री जे० सी० गुप्त
२३, सर्कस एवन्यू, कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. २६-१२-१९४५ के हिन्दू के अनुसार सर्वदलीय राजनीतिक बन्दी रिहाई संघर्ष समिति (ऑल पार्टीज पॉलिटिकल प्रिजनर्स रिलीज कैम्पेन कमेटी) के अध्यक्ष जे० सी० गुप्तने अपने पत्रमें कहा था कि सुधार लागू होने से पूर्वके ४१ राजनीतिक बन्दी कुल मिलाकर कमसे-कम ६०० सालकी सजा भुगत चुके हैं।

२. देखिए पृ० २२९-३०।

३००. पत्र : उत्तिमचन्द गंगारामको

सोदपुर, कलकत्ता
१५ दिसम्बर, १९४५

प्रिय उत्तिमचन्द,

मेरा खयाल है, चौथी किस्तकी रसीद आपको भेजी जा चुकी है, लेकिन आपके पिछले महीनेकी २२ तारीखके पोस्टकार्डका उत्तर मैं नही दे पाया हूँ। मैं यात्रापर रहा।

आपकी पहेलियोंने मुझे और मेरे चतुर मित्रोंको चक्करमें डाल दिया है। इसलिए मुझे हरिजनोंके निमित्त आपसे पुरस्कार पाने की आशा छोड़ देनी चाहिए। मुझे तो मात्र हरिजनों तथा खादी और शायद आदिवासियोंके प्रति भी आपके प्रेम पर ही भरोसा करना होगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री उत्तिमचन्द गंगाराम
बॉम्बे बेकरी
हैदराबाद (सिन्ध)

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०१. पत्र : हरजीवन कोटकको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१५ दिसम्बर, १९४५

चि० हरजीवन,

तुम्हारा १० तारीखका पत्र कल मिला। तुम बहुत अधीर लगते हो। तुमने तारसे मेरा आशीर्वाद माँगा है। हम ठहरे गरीब और हम अपनेसे भी ज्यादा गरीब लोगोंके ट्रस्टी हैं, फिर हमें आशीर्वादकी इच्छा भी क्यों होनी चाहिए? और यदि इच्छा हो भी तो उसकी पूर्ति तार द्वारा क्योंकर की जा सकती है? यही सोचकर मैंने तार देना छोड़ दिया है। तुम्हें आशीर्वाद क्यों चाहिए? आशीर्वादका

रहस्य यह है। जब हम आशीर्वादके उपयुक्त कोई काम करते हैं तो वह काम ही आशीर्वाद-स्वरूप होता है; वह दूसरोंके आशीर्वादकी अपेक्षा नहीं करता। इसलिए दूसरोंसे आशीर्वाद माँगना व्यर्थमें अपनेको धोखा देना है। इससे इतना अर्थ अवश्य निकल सकता है कि आशीर्वाद-रूपी शराब पाकर निर्बल व्यक्तिको क्षणिक प्रोत्साहन मिल जाता है। किन्तु यह प्रोत्साहन बहुत काम नहीं आता। इतना समझ लेने के बाद भी यदि तुम्हें सचमुच मेरे आशीर्वादकी आवश्यकता हो तो खादी सम्बन्धी उपकरण तैयार करने में, बशर्ते कि वे विचारपूर्वक तैयार किये जायें, मेरा आशीर्वाद तो है ही। विचारपूर्वकसे मेरा तात्पर्य यह है कि हम चरखा, अटेरन, तकली आदि बेचने के खयालसे तैयार न करें, बल्कि जरूरतके लायक ही तैयार करें और इस तरह तैयार करें कि उनमें कोई दोष न निकाल सके। हमारा उद्देश्य यह होना चाहिए — और है — कि प्रत्येक वस्तुका उत्पादन स्थानीय रूपसे हो। ऐसा करने पर ही गाँव समृद्ध हो सकेंगे। जो मैं अब कह रहा हूँ वह खादी सम्बन्धी जिस नई विचारधाराका मैंने प्रवर्तन किया है उसमें आ जाता है। ऊपर मैंने जो-कुछ कहा है उसमें यदि कहने से कुछ छूट गया हो तो खुद ही समझकर उसकी पूर्ति कर लेना।

कल सरदार यहीं थे। उन्होंने पूछा कि जब हरजीवन खादी-भण्डारसे अलग हो गया है तो उसकी सूचना मुझे क्यों नहीं दी गई। इसका मैं उन्हें सन्तोषजनक उत्तर नहीं दे सका। तुम समझदार व्यक्ति हो, इसलिए मैंने यह मान लिया है कि तुमने सब-कुछ विधिवत् किया होगा। परन्तु यदि इस सम्बन्धमें कुछ कहना हो तो सरदारको लिखना।

तुम्हारे पत्रसे देखता हूँ कि शारदा तुम्हारे साथ ही है। क्या वह कुछ कर रही है?

बापूके आशीर्वाद

हरजीवन कोटक

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०२. पत्र : राजेन्द्रप्रसादको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१५ दिसम्बर, १९४५

भाई राजेन्द्रप्रसाद,

आपका खत मिला। महेन्द्र चौधरीके बारेमें दूसरे अभिप्राय आने पर मैं काम शुरू कर दूंगा।

आपकी सेहत संपूर्णतया अच्छी होनी चाहिये।

मैं १८ को शांतिनिकेतन जाता हूं। २० को वापिस आऊंगा।

बापुके आशीर्वाद

डा० राजेन्द्रप्रसाद
सदाकत आश्रम
दीघाघाट, पटना

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०३. पत्र : ख्वाजा नाजिमुद्दीनको

खादी प्रतिष्ठान
[सोदपुर, कलकत्ता
१५ दिसम्बर, १९४५

भाई साहेब,

आपकी चिट्ठी [मुझे] चारके लिये आपके वहां आने की बहन अ[मतुल] स[लाम]ने दी है। कैसा अच्छा होता कि मैं आपके वहां आ सकता। लेकिन मेरी हालत मुझे रोक लेती है। इसका मतलब यह हुआ कि हम मिल नहीं सकेंगे? ऐसा हुआ तो मुझे दुःख होगा।

सर नाजिमुद्दीन
कलकत्ता

उर्दूकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०४. पत्र : आर० जी० केसीको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१६ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

मेरे पास चुनावके दौरान होने वाली गुण्डागर्दी तथा पक्षपातकी शिकायतें आती ही जा रही हैं।[1] इन बातोंके विषयमें हमारी बातचीत हो चुकी है, फिर भी लगता है, ये चल ही रही हैं। मैं जानता हूँ कि आप यह सब नहीं होने देना चाहते। क्या इस मामलेमें कुछ किया जा सकता है?

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ११३-१४

३०५. पत्र : आर० जी० केसीको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१६ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

आपके कैदियोंसे सम्बन्धित लिखित सामग्रीका तो मेरे पास ढेर लगता जा रहा है।[2] मेरे पास जो कागजात हैं, उनके अनुसार बंगाल सरकारके पास सुधार लागू किये जाने से पूर्वके पच्चीससे भी अधिक कैदी हैं। सभी दस वर्षसे अधिक की सजा भुगत चुके हैं और अधिकांश तो पन्द्रह वर्षसे भी अधिक की।

इनके अलावा आपके पास ऐसे बन्दी हैं जिनपर कोई मुकदमा नहीं चलाया गया है और जिन्हें ऐसे एकपक्षीय गोपनीय प्रमाणोंके आधारपर बन्दी बना लिया गया जिन्हें उन्होंने देखा भी नहीं, तथा कुछ दण्ड-प्राप्त बन्दी भी हैं। ये सभी राजनीतिक बन्दी हैं।

१. यह मामला गांधीजी के ध्यानमें बंगालके भूतपूर्व मुख्य मन्त्री फजलुल हक लाये थे। गुण्डागर्दी मुस्लिम लीगके समर्थक कर रहे थे।

२. देखिए पृ० २२५ भी।

इन बन्दियोंमें दो महिलाएँ भी हैं, जिन्हें एक छोटी-सी कोठरीमें बन्द रखा गया है।

मुझे बताया गया है कि आतंकवादका कोई भय नहीं है। यह सम्भव है कि सभी बन्दियोंमें जन-सेवाकी भावना हो। किन्तु यह तो उन्हें जेलके सीखचोंमें बन्द रखने का कोई कारण नहीं हो सकता।

मेरा निवेदन है कि बिना किसी झंझटके उन सबको रिहा कर देना चाहिए।

मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि सत्ताके हस्तान्तरण होने से पहले, जिसकी हम दोनोंको आशा है, थोड़ी शालीनता दिखाई जाये।

मैं पहले भी कह चुका हूँ और फिर कहता हूँ कि यदि इन बन्दियोंसे मेरा मिलना वांछनीय समझा जाये तो मैं इसके लिए तैयार हूँ।

मैं १८ तारीखको शान्तिनिकेतनके लिए रवाना होऊँगा और २० की शामको लौट आऊँगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० १३२-३३

३०६. पत्र : धुण्डिराजको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१६ दिसम्बर, १९४५

चि० धुंण्डिराज,

तुम्हारे भेजे आँकड़े मिलते रहते हैं। जब वे मिलते हैं तो उनपर एक नजर डाल लेता हूँ। नई नीतिके अनुसार तुम्हें यह भी सूचित करना चाहिए कि वहाँ कितने लोग सीखने अथवा कातने आते हैं, उनमें से कितने लोग सभी क्रियाएँ जानते हैं, भण्डारके सब लोग [उक्त क्रियाएँ] सीख चुके हैं या नहीं, आदि। यह सारा विवरण तुम्हें आँकड़ोंमें देना चाहिए न?

बापूके आशीर्वाद

श्री धुण्डिराज
खादी भण्डार
३९५, कालबादेवी
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०७. पत्र : सरलादेवी साराभाईको

१६ दिसम्बर, १९४५

प्रिय बहन,

तुम्हारे भाईके गुजर जाने की खबर मुझे चि० मृदुलाके एक पत्रसे मिली। मैं यह भी जान गया था कि तुम इसी सिलसिलेमें राजकोट गई थीं। ऐसी झंझटें तो जन्मके साथ ही जुड़ी हुई हैं। किसीको पहले तो किसीको बादमें — हम सभीको जाना है। इसका शोक करना तो दुर्विवेक ही माना जायेगा न? इसलिए ऐसा विचार मैं क्यों करूँ? और ऐसे विचारकी अपेक्षा तुम्हें मुझसे क्यों करनी चाहिए? अतः यह पत्र लिखने का उद्देश्य तो इतना ही है कि मुझे तेरा ध्यान रहता है।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३०८. पत्र : मृदुला साराभाईको

सोदपुर

१६ दिसम्बर, १९४५

चि० मृदुला,

तेरे मामाके गुजर जाने की खबर मुझे सुशीलाबहनने दी थी और उसने बताया था कि ऐसी मृत्युके प्रति तू कितनी तटस्थ और निर्भय रही है।

बादशाहखान कल चले गये। वे कह रहे थे कि यदि अकबर[1] उनके पास जाने को तैयार हो तो उसका सभो का काम तू सँभाल लेगी अथवा कुछ व्यवस्था कर देगी। यदि यह ठीक हो तो तू अकबरसे बात करके पक्का इन्तजाम कर लेना। इसके बावजूद यदि अकबर सन्तुष्ट न हो तो सभो का काम कौन सँभालने को तैयार है और यह किस तरह होगा सो मुझे सूचित करना, जिससे मैं अकबरको लिख सकूँ। यदि कोई समर्थ व्यक्ति तैयार न हो तो वैसा मुझे बता देना।

सरलादेवीको अभी मैंने प्रतिनिधित्वके बारेमें नहीं लिखा है, क्योंकि भाई मावलंकरने लिखा था कि वे उससे मिलेंगे। इस सम्बन्धमें यदि तू कुछ और जानती हो तो मुझे लिखना। आशा है, तू आनन्दपूर्वक होगी। मैं १८ तारीखको शान्तिनिकेतन जाऊँगा और २० को लौट आऊँगा। २४ को मिदनापुर जाऊँगा। फिलहाल मेरा मुकाम सोदपुर मानना ठीक है।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. अकबरभाई चावड़ा

३०९. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

सोदपुर
१६ दिसम्बर, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा १२ तारीखका लिखा दूसरा पत्र मुझे यहाँ १५ तारीखको मिला। कल मेरा भेजा निम्न तार तुम्हें मिल गया होगा :[1]

तुमने जो विवरण दिया है वह अच्छा है। मुझे विश्वास है कि जैसे गोमांस की समस्या हल हो गई वैसे ही धीरज और मधुरतासे दूसरी समस्याका समाधान भी हो जायेगा।[2] मैंने तुम्हें कुछ कार्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समझकर ही सौंपे हैं, किन्तु चिकित्सा-कार्यके अतिरिक्त पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेने की बात तो मैंने स्वीकार कर ही ली है। अतः यदि यह जिम्मेदारी भी तुम ले लो तो निश्चय ही मुझे अच्छा लगेगा। इसलिए बिना किसी टकरावके तुम जो जिम्मेदारी ले सको सो अवश्य ले लो।

यद्यपि पहली जनवरीको मैं वहाँ नहीं होऊँगा, किन्तु उस दिनसे संस्था[3] केवल गरीबोंके लिए और गरीबोंकी ओरसे ही चलाई जायेगी। उस दिनसे चिकित्सा-कार्यके अतिरिक्त सभी विभागोंके प्रबन्धकी जिम्मेदारी मेरी मानी जायेगी, और मैं यह मानता हूँ कि मेरी ओरसे यह जिम्मेदारी तुम उठा लोगे। किन्तु तुम्हें उतनी ही जिम्मेदारी लेनी है जितनी कि तुम सहज ही निभा सको। मुझे सूचित करना कि किस-किस कामका दायित्व तुम नहीं ले सकोगे।

१ जनवरीके बाद वहाँ कोई धनी रोगी नहीं रह सकेगा। यदि कोई होगा तो वह धनीके रूपमें नहीं रह सकेगा।

डॉ० दिनशाजी ने कहा था कि वे फर्नीचरके बारेमें स्वयं देख लेंगे। उन्हें अपने बम्बईके उपचार-गृहके लिए उसकी जरूरत थी। फिलहाल अन्तरंग विभागमें गरीब रोगी तो बहुत ही कम होंगे या कोई भी नहीं होगा। इसलिए हालाँकि हम व्यवस्था बहुत-से लोगोंके लिए रखेंगे, फिर भी अस्पताल तुरन्त भरने वाला तो नहीं ही है।

१. देखिए पृ० २२३।
२. देखिए पृ० २२१।
३. नैसर्गिक उपचार-गृह

फर्नीचरके मामलेमें हमें अपने विवेकका प्रयोग करना होगा। गुलबाई[1] की इच्छा जान लेना। दम्पत्तिकी जो करने की इच्छा न हो उसे करने का आग्रह मत करना।

जो लोग वहाँ हैं, उनमें से जो जाना चाहें उन्हें जाने देना। वास्तवमें देखा जाये तो पहली जनवरीसे वहाँ रोगियोंमें बालकृष्ण[2], वनु[3] और जोहरा ही रह जायेंगे और उनकी देखभाल करने में तुम्हें कोई कठिनाई ही नहीं होगी। तुम इतना तो समझ ही गये होगे कि उस संस्थाके संचालनका भार वहन करना कोई आसान बात नहीं है। यह तो ऐसा काम है जिसमें सहज ही मनुष्यकी परीक्षा हो जाये।

मैं चाहता हूँ कि तुम कंचनके बारेमें चिन्तामें न पड़ो।

वहाँ सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६१४) से। सी० डब्ल्यू० ७१९४ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

३१०. पत्र : जी० रामचन्द्रन्को

सोदपुर
१६ दिसम्बर, १९४५

चि० रामचन्द्रन्,

अब मैं तुमको अंग्रेजीमें क्यों लिखू? तुम्हारे अंग्रेजीमें लिखना पड़े तो लिखो। बाकी मैं तो चाहता हूं कि हिन्दुस्तानीमें लिखने की कोशिश की जाय।

अंग्रेजीमें ही हम लिख सकें इसमें हिन्दुस्तानको कितना नुकसान पहुंचता है यह मैं कैसे बताऊं?

सौ रुपयेके बारेमें मैंने ठीक तो कर लिया है। तुम्हारे बेफिकर रहना है।

तुम्हारा काम अच्छा चल रहा होगा। जो लिखना है वह मुझे लिखो। मैं १८ तार० को शांतिनिकेतन दो दिनके लिये जाता हूं फिर यहां आ जाऊंगा।

सौन्द्रम अच्छी होगी।

श्री रामचन्द्रन्
गांधी आश्रम
सेलम जिला

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

1. दिनशा मेहताकी पत्नी
2. बालकृष्ण भावे
3. वनमाला परीख

३११. पत्र : जसवन्तराय चुरानीको

सोदपुर
१६ दिसम्बर, १९४५

भाई जसवंतराय,

आपका २० तारीखका खत मिला था। बादमें मैं मुसाफरीमें रहा हूं। आपने डिपोझिट रसीद भेज दी वह अच्छा किया है। बाकी कुछ लिखना होगा तो भाई मुकरजी आपको लिख भेजेंगे।

श्री जसवंतराय चुरानी
१५, लेक रोड
लाहौर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३१२. पत्र : कुमारबाबूको

सोदपुर
१६ दिसम्बर, १९४५

भाई कुमारबाबु,

आपने वासुदेवपुर मुझे ले जाने का छोड़ दिया है उसलिए धन्यवाद। मैं वहां नहीं जा सकूंगा उसका मुझे दुःख है।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३१३. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
१६ दिसम्बर, १९४५

अपनी भाषाके बजाय अंग्रेजी सीखने की प्रवृत्तिकी निन्दा करते हुए महात्मा गांधीने कहा कि "अगर हम इस प्रवृत्तिको बन्द कर सकें तो एक गुलामीसे छुटकारा पा जायेंगे।" उन्होंने आगे कहा, मैं कह नहीं सकता कि कुछ लोगोंकी अंग्रेजी बोलने और लिखने की प्रवृत्तिसे खुद उनका और देशका कितना नुकसान हुआ है। लेकिन जब भी दुनियाके किसी हिस्सेमें कोई अच्छी पुस्तक प्रकाशित होती है, इंग्लैण्डमें चन्द दिनोंके अन्दर वह अनूदित होकर अंग्रेजी-भाषी जनताके पास पहुँच जाती है। महात्मा गांधीने पूछा :

क्या हमें भारतमें यही काम नहीं करना चाहिए? सभी लोग राष्ट्रभाषा समझ सकें, इसमें यद्यपि अभी कुछ समय लगेगा, लेकिन हर क्षेत्रकी अपनी भाषा तो है और कोई भी अच्छी पुस्तक अनूदित करके लोगोंको उनकी अपनी मातृभाषामें पढ़ने के लिए सुलभ कराई जा सकती है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, १८-१२-१९४५

३१४. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

१७ दिसम्बर, १९४५

मैं कलकत्तामें समयसे ज्यादा रुक गया हूँ। मैंने पाया कि कलकत्तामें मेरे लिए, जितना अनुमान था, उससे ज्यादा काम था। इसके अलावा घटनाचक्रने मुझे, जितना सोच रखा था, उससे ज्यादा परिश्रमसे काम करने पर विवश कर दिया। नतीजा यह हुआ कि पहले जिन स्थानोंपर जाने का मेरा इरादा था और मेरे दौरेका संयोजन करने वाले मित्रोंसे जिनके बारेमें मैं प्रारम्भिक तौरपर बातचीत भी कर चुका था उन अनेक स्थानोंको मुझे अपने कार्यक्रमसे निकालने को मजबूर होना पड़ा है। इससे मुझे और मेरे साथी कार्यकर्ताओंको भी निराशा हुई है। लेकिन लोग ऐसा न सोचें कि दौरेमें की गई इस कटौतीके कारण बंगालकी परिस्थितिका

मेरा अध्ययन किसी प्रकार अधूरा रह जायेगा। शान्तिनिकेतन तो अध्ययनके प्रयोजनकी अपेक्षा मैत्री-भावसे ही प्रेरित होकर जा रहा हूँ। वहाँ मैं मुलाकातियोंसे मिलने-जुलने की अपेक्षा नहीं रखता। वहाँ मैं बहुत कम समय रहूँगा और इस दौरान अगर लोग मुझसे मिलने की इच्छा न करें तो कृपा होगी।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, १८-१२-१९४५

३१५. पत्र : मीराबहनको

सोदपुर
१७ दिसम्बर, १९४५

चि० मीरा[1],

यह मौन-दिवसपर लिखा स्नेह-पत्र है। तुम्हारा विस्तारसे लिखा पत्र मैंने काफी दिलचस्पीके साथ पढ़ा। किन्तु कह नहीं सकता कि किसान आश्रम कब पहुँचूँगा। तुमने अंग्रेजी समाचार-पत्रोंको जो विवरण दिया है क्या वह बिलकुल सही है?

स्नेह।

बापू

श्री मीराबाई
किसान आश्रम, मूलदासपुर
डाकघर बहादराबाद, बरास्ता ज्वालापुर
जिला सहारनपुर

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६५१३) से; सौजन्य : मीराबहन। जी० एन० ९९०८ से भी

१. इस पत्रमें तथा मीराबहनके नाम अन्य पत्रोंमें सम्बोधन देवनागरीमें है।

३१६. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

सोदपुर
१७ दिसम्बर, १९४५

प्रिय सी० आर०,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने उन मित्रोंसे तुम्हारे विषयमें जो-कुछ कहा था, उसके योग्य सिद्ध होने के लिए तुम्हें विशेष कुछ नहीं करना है, क्योंकि मेरी बात भावी सम्भावनापर नहीं, बल्कि तुम्हारे द्वारा किये गये पिछले कार्योंपर आधारित थी।

यदि मेरे विचार सुविचारित और सच्चे हैं तो उन्हें अपना असर दिखाने दो। बोलने से काम बिगड़ सकता है। प्रतीक्षा करते रहो, देखते रहो और प्रार्थना करो। देखें, क्या होता है।

तुम्हें नियमपूर्वक पत्र लिखना चाहिए, और यदि तुम बहुत व्यस्त हो तो किसी औरसे लिखने को कह दो। तुम्हारी तबियत कैसी है? जो खबर मुझे दी गई उसके अनुसार तो कुछ अच्छा नहीं है।

यहाँ हालत बहुत ही बुरी है। मैं प्रयत्न तो कर रहा हूँ। मैं १८ तारीखको शान्तिनिकेतन जाऊँगा और २० तारीखको वापस लौटकर २४ को एक हफ्तेके लिए मिदनापुर जाऊँगा। तुम सोदपुरके पतेपर ही पत्र भेजना।

स्नेह।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २११४) से

३१७. पत्र : माखनलाल राय-चौधरीको

सोदपुर
१७ दिसम्बर, १९४५

प्रिय प्रोफेसर,

अगर तुम इसी २२ तारीखको शामके ५.४५ पर, अर्थात् सार्वजनिक प्रार्थनाके तुरन्त बाद आ सको तो टहलते हुए मैं तुमसे बात कर सकता हूँ।

हृदयसे तुम्हारा,
मो० क० गांधी

प्रोफेसर श्री माखनलाल राय-चौधरी
१२, सीताराम घोष स्ट्रीट
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३१८. पत्र : जानकीदेवी बजाजको

सोदपुर
१७[1] दिसम्बर, १९४५

जानकी मैया,

यह अच्छा हुआ कि तुम्हारा तार मिला।

मैं थोड़ी चिन्तामें पड़ गया था। तुम्हें सुशीलाका तार और पत्र मिले होंगे। आशा है, तुमने गायकी बात ध्यानमें रखी होगी। तुम मद्रास आ रही हो न?

बापूके आशीर्वाद

जानकीदेवी बजाज

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५८५१) से। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य: प्यारेलाल

३१९. पत्र : मदालसाको

सोदपुर
१७[2] दिसम्बर, १९४५

चि० मदालसा,

यह अच्छा हुआ कि तेरा दूसरा ऑपरेशन भी हो गया। आशा है, तू अच्छी होगी। तू अच्छा पाठ सीख रही है। जब तू लिखने लायक हो जाये तो मुझे लिखना। रामकृष्ण[3] मजा कर रहा है। वह कुछ सेवा-कार्य भी करता है। कमलनयन[4] आज आ गया। आशा है, शिशु अच्छा होगा। वह ठीकसे बड़ा हो रहा है न?

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३२७। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य: प्यारेलाल

१. प्यारेलाल पेपर्समें "१८" है।
२. प्यारेलाल पेपर्समें "१८" है।
३. और ४. मदालसाके भाई

३२०. पत्र : अरुण गांधीको

सोदपुर
१७[1] दिसम्बर, १९४५

चि० अरुण[2],

तेरी रोज याद आती है, किन्तु आज मौनके दौरान विशेष रूपसे आ रही है। क्या तू प्रतिदिन सावधानीसे कमसे-कम १६० तार कातता है? क्या तार इकसार निकलता है? क्या [कताईके लिए] तू स्वयं चरखा तैयार करता है? क्या तू प्रतिदिनका हिसाब रखता है? यदि तू अपने इस एक वचनका ठीक-ठीक पालन करेगा तो बहुत-कुछ सीख लेगा।

तेरा स्वास्थ्य तो ठीक है न? इला[3] कैसी है? क्या वह कुछ समझदार हुई? तुम सबको —

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ४९६९) से। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य : प्यारेलाल

३२१. पत्र : जे० सी० कुमारप्पाको

सोदपुर
१७[4] दिसम्बर, १९४५

भाई कुमारप्पा,

तुम्हारा काम ध्यानमें आया है। तबियत अच्छी रखो। और ईश्वरको ललचाना नहीं। मैंने कहा है उसे समजा है तो ज्यादा घूमने की जरूरत नहीं है। तुम्हारे तैयार होने की बात है। एक वेदेका पूर्ण ज्ञान और दूसरोंका सामान्य ज्ञान होना चाहिये। हिन्दुस्तानीका अच्छा ज्ञानकी बड़ी आवश्यकता है।

बापुके आशीर्वाद

कुमारप्पा
वर्धा

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०४०६) से। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य : प्यारेलाल

१. प्यारेलाल पेपर्समें "१८" है।
२. मणिलाल गांधीके पुत्र
३. अरुण गांधीकी बहन
४. प्यारेलाल पेपर्समें "१८" है।

३२२. पत्र : राममनोहर लोहियाको

सोदपुर
१७ दिसम्बर, १९४५

भाई राममनोहर,

दुःख है कि आपके पिताजी कल यकायक मर गये। मुझे करीब हमेशा मिलते थे। प्यारेलालजी और प्रभाबहिनको उनका चर्खा काम देखने को मैंने भेजे थे। पिताजी का मृत्यु[जैसा] वे चाहते थे ऐसा हुआ मानता हूं। अपने काममें मस्त थे।

आपका,
मो० क० गांधी

डा० राममनोहर लोहिया,
सेंट्रल जेल
आगरा]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स]। सौजन्य : प्यारेलाल

३२३. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

सोदपुर
१७ दिसम्बर, १९४५

भाई जाजूजी,

आपका खत रामाधनभाईको काश्मीरमें विचित्रभाईकी जगहपर नियुक्त करने के बारेमें मिला है। नियुक्तिमें मेरी संमति है।

बैंकोंमें खाते चलाने के बारेमें अधिकारपत्रोंमें सही भेज दी है।

बिहार चर्खा संघको खत भेज दीया है दस्तखत करके।

बादशाह खानको ठीक उत्तर भेजा है।

...[1] खादीके बारेमें जो हो सकता है किजिये।

बापुके आशीर्वाद

जाजूजी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स]। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यहाँ एक शब्द अस्पष्ट है।

३२४. पत्र : सैयद महमूदको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
१७[1] दिसम्बर, १९४५

भाई महमूद,

आप आये और चले-गये यह कैसे? मैं तो इन्तेजारमें रहा। सोडपूर आना आसान था। सब तैयारी थी। कैसे हो?

मो० क० गांधी

डा० सैयद महमूद
छपरा

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०९२) से। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य: प्यारेलाल

३२५. पत्र : वीणा पटेलको

सोदपुर
१७[2] दिसम्बर, १९४५

चि० वीणा,

तेरा सुंदर खत मिला। यह बताना है कि तू अपनेको कितनी दबा रही थी। खीमजी अच्छा है ही और तू वहां सुखी होगी। मुझे लिखा कर। मैं कल शांतिनिकेतन जा रहा हूं। पिताजी मिलते रहते हैं। वे वर्धा जायेंगे। स्वाधीनाको साथमें ले जायेंगे। धीरेन अच्छा है।

खीमजीको और तुझे,

बापूके आशीर्वाद

वीणा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. प्यारेलाल पेपर्समें "१८" है।

२. साधन-सूत्रमें यहाँ "१८" है, लेकिन पत्रसे लगता है कि पत्र १७ तारीखको ही लिखा गया था, क्योंकि १८ तारीखको गांधीजी शान्तिनिकेतनके लिए रवाना हुए थे।

३२६. भाषण : प्रार्थना-सभामें[1]

सोदपुर
१७ दिसम्बर, १९४५

हम इतने निकट आ चुके हैं और आप लोग ऐसे आदर्श मौनका पालन करते रहे हैं कि आपसे बिछुड़ने पर मनको क्लेश होगा। ईश्वरने चाहा तो मैं मंगलवार को शान्तिनिकेतन रवाना होऊँगा और आशा करता हूँ कि लौटकर पुन: २१ तारीखको आपके साथ प्रार्थनामें सम्मिलित हो सकूँगा।

आज सोमवारको जो भजन गाया गया है वह विशेष रूपसे उपयुक्त है। भजनमें कहा गया है कि जो अपना सर्वस्व दे देता है उसे बिना माँगे ही सब-कुछ मिल जाता है। इसके विपरीत जो किसी वस्तुपर अपना अधिकार न होते हुए भी उसे हथिया लेता है वह सबकुछ खो बैठता है।

मुझे खबर मिली है कि आपमें से कुछ लोग रेलगाड़ीमें बिना टिकट सफर करते हैं और मनमाने ढंगसे ट्रेनकी खतरेकी जंजीर खींचकर रेलगाड़ी रुकवा भी लेते हैं। इस खबरसे मुझे दुःख हुआ है। दोनों बातें गैरकानूनी हैं। किन्तु मैं इनके कानूनी पक्षपर अधिक कहना नहीं चाहता। ये दोनों काम प्रार्थनाकी भावनाके प्रतिकूल हैं। मैं तो यही कह सकता हूँ कि ऐसे काम करने वालोंने प्रार्थनाका अर्थ समझा ही नहीं है। यदि वे उस भजनपर मनन करें जो अभी-अभी गाया गया था तो वे अनुभव करेंगे कि उन्हें बिना टिकट ट्रेनपर सफर नहीं करना चाहिए और न ही उचित कारणके बिना खतरेकी जंजीर खींचनी चाहिए। मैं आशा रखता हूँ कि भविष्यमें ऐसी बातें नहीं होंगी। यदि हम ऐसा आचरण करते रहेंगे तो इससे हमें न तो स्वतन्त्रता प्राप्त होगी और न प्राप्त होने पर हम उसे कायम रख पायेंगे। ईश्वर हमें सही रास्ता दिखाये।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, १८-१२-१९४५

१. उस दिन गांधीजी का मौन-दिवस होने के कारण हिन्दीमें लिखे उनके भाषणको कनु गांधीने पढ़कर सुनाया था, जिसका अंग्रेजी अनुवाद साधन-सूत्रमें प्रकाशित हुआ। इस भाषणकी मूल हिन्दी उपलब्ध नहीं है।

३२७. पत्र : जी० ई० बी० एबेलको

शिविर : खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर (कलकत्ताके निकट)
१८ दिसम्बर, १९४५

प्रिय श्री एबेल,

डॉ० राममनोहर लोहियाके साथ कथित दुर्व्यवहारसे सम्बन्धित पत्र-व्यवहार[1] के सिलसिलेमें मैं आपके अनुरोधपर डॉ० लोहिया द्वारा अपने कानूनी सलाहकारको दिये गये बयानकी एक प्रति साथमें भेज रहा हूँ।[2]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट १९४४-४७, पृ० ९९

३२८. पत्र : पुष्पा देसाईको

सोदपुर
१८ दिसम्बर, १९४५

चि० पुष्पा,

बहुत-से कामोंमें व्यस्त होने के कारण हालमें मैं तुझे नहीं लिख सका। आशा है, तेरा काम ठीक चल रहा होगा और तू हिन्दुस्तानी सीख रही होगी।

इसके साथ चि० ब्रजलालका पत्र है। इसे पढ़ जाना और सँभालकर रख लेना। जब मैं लौटकर आऊँ तो मुझे दे देना। मैंने ब्रजलालको लिख दिया है कि यदि उसे अच्छा लगे तो वह मेरी अनुपस्थितिमें भी सेवाग्राम जा सकता है। यदि वह तुझे समझा-बुझाकर विवाहके लिए तैयार कर सके तो भले कर ले। जहाँ तक मैं तुझे समझता हूँ, तू विवाह करने की बात सहन नहीं कर सकती। लेकिन मुझसे परखने में भूल भी हो सकती है। सच पूछो तो भला कोई मनुष्य क्या अपने हृदयको भी पहचान सकता है? उसे तो केवल ईश्वर ही पहचान

१. देखिए पृ० १२०-२१।
२. जी० ई० बी० एबेलने २० दिसम्बरके अपने पत्रमें इसकी प्राप्तिकी सूचना देते हुए लिखा कि बयान गृह सदस्यको भेज दिया गया है।

सकता है न? इसलिए यदि तू ब्रजलालसे मिलने के बाद भी अपना विचार बदल सके तो यह समझना कि तू जो चाहे सो करने के लिए सर्वथा स्वतन्त्र है। लज्जावश हठ मत करना। स्वच्छ हृदय जो कहे सो करना चाहिए। यदि तू ब्रजलालको लिखेगी तो यह मुझे अच्छा लगेगा और यदि लिखे तो पत्र मुझे भेज देना। मैं उसे भिजवा दूंगा। यदि तुझमें लिखने का उत्साह न हो तो मैं आग्रह नहीं करूँगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२६७) से

३२९. पत्र : दिनशा मेहताको

सोदपुर
१८ दिसम्बर, १९४५

चि० दिनशा,

मैं यहाँ बैठा हुआ भी वहाँके बारेमें सोचता रहता हूँ। मुन्नालालको अच्छी तरह तैयार कर देना। वह मेहनती और ईमानदार है और उसे काफी जानकारी है।

तुमने फर्नीचरका क्या किया? नये वर्षसे हम नये रोगी नहीं लेंगे। यदि कोई गरीब होगा तो उसे लेंगे। आशा है, तुम शान्त होगे। मंट मनागे का तार इसके साथ भेज रहा हूँ। वह जब आना चाहे तब आ जाये। जो व्यक्ति वहाँ रहें वे सोच-समझकर रहें। जो जाना चाहें वे जा सकते हैं। मुझे ऊपर दिये पतेपर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३०. पत्र : गुलबाई मेहताको

सोदपुर
१८ दिसम्बर, १९४५

चि० गुलबाई,

अब तो तुम्हारे [प्रसवके] दिन पूरे होने वाले होंगे। तुम कैसी हो? तुम शान्त हो न? मुझे जो लिखना चाहो सो लिखना। तुम्हें तनिक भी संकोच नहीं करना चाहिए। माँजी कैसी हैं? अर्देशर[1] कैसा है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. गुलबाई मेहताका पुत्र

३३१. पत्र : अनसूयाबाई कालेको

सोदपुर
१८ दिसम्बर, १९४५

प्रिय भगिनी,

आपका पत्र पढ़कर मैं राजी हुआ हूं। मेरी हिन्दीसे आपकी कुछ खराब नहीं है।

पार्लमेन्टरी प्रवृत्तिके अलावा रचनात्मक कार्य कुछ-न-कुछ सबको करना ही चाहिए। और पार्लमेन्टरी प्रवृत्ति भी उसीको उठाने की दृष्टिसे—हेतुसे होनी चाहिये।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री अनसूयाबाई काले
आनंद भवन
धंतोली
नागपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३२. पत्र : बी० पी० सिन्हाको

सोदपुर
१८ दिसम्बर, १९४५

भाई सिंहा,

आपने डाक्तर राममनोहरका निवेदन[1] भेजा है सो मिल गया है। धन्यवाद।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री बी० पी० सिंहा
काशी विद्यापीठ
बनारस कैंट

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० २४३।

३३३. पत्र : एन० जी० रंगाको

सोदपुर
१८ दिसम्बर, १९४५

भाई रंगा,

आपका खत पढ गया। आपका पैम्फलेट पढूंगा। खूब काम कर रहे हो। दोनोंको,

बापूके आशीर्वाद

प्रो० रंगा
निडुब्रोलु

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३४. पत्र : एच० सी० दासप्पाको

[सोदपुर
१८ दिसम्बर, १९४५

भाई दासप्पा,

तुम्हारा खत मिला है। मद्रास पहोंचने पर मिलो। मुझे बहुत शक है कि मैं महीसुर [मैसूर] पहुंच सकुंगा। मद्रासमें दोनों [रहना]।

यशोधराको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

श्री एच० सी० दासप्पा
श्री कस्तूरबा शिविर
पडुरावाल्लि
वी० वी० मोहल्ला पोस्ट
मैसूर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३५. पत्र : शंकरनको

सोदपुर
१८ दिसम्बर, १९४५

चि० शंकरन्,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं समझा। [तुम्हारे] लडके [और] बहिनका खर्च देने के बारेमें लिख दिया है।

तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा करके आ जाओ। वहाका सब हाल मुझे लिखो। कितने दरदी [रोगी] रहते हैं, क्या-क्या उपचार करते हैं वगैरह लिखो।

बापूके आशीर्वाद

श्री शंकरन्
बालेश्वरसिंहजी
जीवन सखा
लूकरगंज
इलाहाबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३६. पत्र : श्यामलालको

सोदपुर
१८ दिसम्बर, १९४५

भाई श्यामलाल,

तुम्हारा खत दुर्गाबाईके बारेमें मिला। उनकी सेवाका स्वीकार कर लो। मुझे पूरा संतोष तो नहीं है। वकालतका काम करते-करते कैसे क[स्तूरबा स्मारक का] काम कर सकेगी? देखें हिंदुस्तानी सीख लेती है क्या? श्री पंजीकरके बारेमें तुम्हारा खत मिला है। लेकिन पंजीकरका खत नही मिला है।

बापूके आशीर्वाद

श्यामलाल
मंत्री
क० गां० स्मा० निधि
वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३७. पत्र : पूर्णिमा बनर्जीको

सोदपुर
ट्रेनपर
१८ दिसम्बर, १९४५

चि० पूर्णिमा[1],

तुझे पता होगा कि जनवरीसे कमेटियोंके बदले प्रतिनिधिके मारफत क[स्तूरबा] स्मा[रक] निधिका काम चलेगा। इस बारेमें जो प्रस्ताव हुआ इसकी नकल इसके साथ रखता हूं। तू प्रतिनिधि होगी? उसकी शर्तका पालन तो तेरे लिए आसान होना चाहिये। मैंने जवाहरलालजी से बात की है। वे कहते हैं अगर इस कामको तू लेगी तो उनको या पंतजी को कुछ हर्ज नहीं है। अर्थात् तुझे अन्य कामोंसे बचा लेंगे। मुझे किसीने कहा था, उनका नाम तो भूल गया हूं, कि तू शायद ऐसेम्बलीमें जाने की कोशिश करेगी। ऐसेम्बलीमें जाने वाली क० स्मा० निधिका काम पूरा नहीं कर सकेंगे क्योंकि प्रतिनिधिको बहुत समय देना पड़ेगा, अगर काम सफलतापूर्वक करना है तो।

अब मुझे सोदपुरके पतेपर लिखना। मैं खत तो कुछ दिन पहले ही लिखना चाहता था, लेकिन भूल गया।

बापुके आशीर्वाद

पूर्णिमा बनर्जी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३३८. पत्र : मंगलदास पकवासाको

सोदपुर
रेलगाड़ीमें [शान्तिनिकेतन जाते हुए]
१८ दिसम्बर, १९४५

भाई मंगलदास पकवासा,

तुम्हारा पत्र और तुम्हारी राय मिली। अपनी राय लिखकर जाजूजी को भेजकर तुमने ठीक किया। अब मैं देखूंगा कि क्या हो सकता है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४७८४) से। सौजन्य : मंगलदास पकवासा

१. अरुणा आसफ अलीकी बहन

३३९. पत्र : ओमप्रकाशको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
ट्रेनपर
१८ दिसम्बर, १९४५

चि० ओमप्रकाश,

तुम्हारा खत मिला। जो भाईके पास जाना ही है और जो काम करना ही है उसके लिए थोड़ा समय निकालकर लेना चाहिए और करके वापस आ जाना चाहिए। बहुत समय नहीं जाना चाहिये यह ख्याल रखना।

उर्दूका अच्छा अभ्यास कर लेना आवश्यक है ही लेकिन ऐसे अभ्यासके लिये उपाधीकी लालच क्या?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३४०. पत्र : कृष्णचन्द्रको

सोदपुर
शान्तिनिकेतन जाते हुए ट्रेनमें
१८ दिसम्बर, १९४५

चि० कृष्णचन्द्र,

तुम्हारे सब खत मिले। जो पत्र पसती [=रद्दी] कागजमें लिखा था वह भी मेरे पास पड़ा है। आज जितना उत्तर दे सकूं उतना दूंगा।

मैं यहां काफी काम कर लेता हूं।

तुनाईके बारेमें मेरा यह विचार है कि तुनाईसे रुई बहुत साफ होती है। वैसी साफ न संचे [मशीन] में होती है और न किसी और साधनसे। दूसरे सब साधनसे तन्तुका असली जोर कुछ अंशमें कमजोर होता ही है। तुनाई, मेरी दृष्टिसे बादशाही क्रिया है। उसमें कंगीको स्थान देना चाहिये। तुनाई हमें सफाईका और धैर्यका पाठ सीखाती है। तुनाईका वक्त जोड़ते हुए सूत निकालने की गति कम लगती है लेकिन उसमें कोई दोष नहीं है। तुनाईमें कोई रोटी देने की शक्ति नहीं है। लेकिन स्वावलंबनमें उसका बड़ा महत्व है। तुनाईकी क्रिया अब तक बहुत नहीं चली इसलिए

उसकी शक्तिका पूरा माप नहीं मिला है। बहुत लोग तुनाईका प्रयोग करेंगे तो हमको उसकी शक्तिका माप मिलेगा। यह खत विनोबाको भी बताना। तुनाई उनकी शोध है। उन्होंने अनुभव भी बहुत लिया है। मेरे विचारमें यदि दोष है तो मैं जानना चाहूंगा।

वह साधु चला गया था तो उसको आश्रम छोड़ने का कहा गया [यह] ठीक ही था। उसका अर्थ, मेरी दृष्टिसे यह नहीं कि हमने रखा वह ठीक न था। [इससे] मेरी क्या दलील है वह समझते होंगे।

बहिनोंका वर्ग होना चाहिये इस बारेमें मुझे शक नहीं है। ओमप्रकाशके बारेमें जो बातें तुम कर सकते हो इससे ही मैं संतोष मानूंगा। इस बारेमें मैं कुछ लिखूं वह ठीक नहीं होगा।

आश्रममें जो लोग रहते हैं और आते हैं उनके खर्चकी मर्यादाके बारेमें मैं कुछ ख्याल न बान्धु वही अच्छा लगता है। क्योंकि मेरा अनुभव आजकल कम ही माना जाय। आप सब लोग तो मेरे अनुभवमें आगे बढ़ गये हैं, और जब एक आदमी एक चीजको छोड़ देता है तब उसका अनुभव कम माना जायगा वैसा ही मेरा भी समझो। एक डाक्तर कितना ही निष्णात हो, बादमें जब वह अपना धंदा छोड देता है तब अपनेको निष्णात नहीं मानता है, और दूसरे, जिन्होंने उनके बाद उपाधियां ली हैं वे निष्णात माने जायेंगे। इसलिए खर्च बांधने का ही निश्चय हो तो निश्चयका अमल करने के पहले मुझे खर्चकी संख्या बताना। उसपर मैं कुछ प्रकाश डाल सकूंगा वह डालूंगा।

आश्रमके कामदारोंके मकानके बारेमें मैंने शांताबहिनसे काफी चर्चा कर ली है, लेकिन मैं तटस्थ हूं। शांताबहिन अब अच्छी होगी।

कामतें और ओमप्रकाशजी के कामके बारेमें यहांसे मैं कुछ नहीं लिखूंगा। मेरा लिखना अनुचित होगा। लेकिन जब तुम्हारे विचारोंको मैं उनके पास रख सकूं ऐसा तुम लिखोगे तब उनको लिखने को मैं तैयार हूंगा।

कैलाशबहिनके बारेमें समझा। उससे बातें करते समय तुमको साथ रखता तो अच्छा होता। हो गया उसकी अयोग्यताका मैं स्वीकार करता हूं। फिर भी मैं इतनी तेजीसे कामोंको निपटा लेता था कि इच्छा होते हुए भी मैं सब समय तुमको सामने नहीं रख सकता था। इसका अर्थ यह न किया जाय कि दुबारा मुझको सावधान नहीं करना है। सावधान मनुष्य भी गफलत कर लेता है। इसलिए विवेकपूर्वक सावधान करने का धर्म अच्छा ही है।

विनोबाका परिचय जितना हो सके उतना कम समझता हूं। बहिनोंको और भाइयोंको अपने साथ अवश्य ले जाओ। इसमें नियम एक समझा जाय कि विनोबा पर अयोग्य आक्रमण न रहें, उनके समयकी कीमत हमारे पास रहनी चाहिए।

घड़ी दिवालपर रखने की ही चाहिए कि दूसरे तरहकी?

नये आने वाले अपना खर्च देकर ही रहें ऐसा सामान्य नियम होना चाहिए। अगर किसीके यों ही रखने का निश्चय किया जाय तब उस नियममें, कारण लिखकर ही किया जाय। ऐसी कोई किताब वहां रखी है ना?

चक्रैयाके बारेमें मेरे पाससे क्या निर्णय चाहते थे, अब क्या चाहते हो?

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्च :]

ट्रेनपर दुबारा नहीं पढ़ा।

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५३६) से

३४१. भाषण : प्रार्थना-सभामें

शान्तिनिकेतन
१८ दिसम्बर, १९४५

गुरुदेव (रवीन्द्रनाथ ठाकुर) एक विशाल और वेगवान पंखों वाले विराट पक्षीके समान थे जिसके सायेमें उन्होंने बहुतोंको आश्रय दिया।[1]

उनकी ही छत्रछायामें पल-पुसकर शान्तिनिकेतनने अपना वर्तमान आकार प्राप्त किया है। बंगाल उनके गीतोंसे गूंज रहा है। उन्होंने न केवल अपने गीतोंसे, बल्कि अपनी लेखनी तथा तूलिकासे भी भारतका नाम विश्वमें गौरवान्वित किया है। उनके संरक्षणदायी पंखोंकी ऊष्माका अभाव हम सबको खटकता है। फिर भी हमें शोक नहीं करना है। उसका उपाय स्वयं हमारे ही हाथोंमें है।

महान व्यक्तियोंके सच्चे स्मारक उनकी संगमरमर, काँसे अथवा सोनेकी प्रतिमाएँ नहीं होतीं, उनका सबसे श्रेष्ठ स्मारक उनकी विरासतको सँवारना और उसकी वृद्धि करना है। जो पुत्र अपने पिताकी विरासतको दफना देता है या बर्बाद कर देता है वह उत्तराधिकारके योग्य नहीं माना जाता।

यह सच है कि शान्तिनिकेतनको वस्तुतः गुरुदेवकी महान परम्पराके योग्य बनाने के पावन कर्तव्यका पालन मुख्यतः रथीबाबू[2] तथा उनके सहयोगियोंको करना है, किन्तु इसी हद तक यह उन सबका भी कर्तव्य है जो गुरुदेवकी छत्रछायामें पले हैं, भले ही उनका शान्तिनिकेतनसे सीधा सम्बन्ध न रहा हो।

जो आये हैं सभीको एक-न-एक दिन संसारसे जाना ही है। कोई मनुष्य जीवनमें जितना कुछ करने की आशा रख सकता है उतना करके गुरुदेव भी इस संसारसे जा चुके हैं। उनकी आत्मा शान्तिमय हो गई है। अब उनके आदर्शोंका

१. आगेके चार अनुच्छेद विश्वभारती न्यूज से लिये गये हैं।
२. रवीन्द्रनाथ ठाकुरके पुत्र रथीन्द्रनाथ ठाकुर

प्रतिनिधित्व करने का काम शान्तिनिकेतनके आप सब कार्यकर्ताओं और आश्रमवासियों का है, वस्तुतः उन सबका है जो गुरुदेवकी भावनासे ओतप्रोत हैं।

शान्तिनिकेतन मेरे लिए शान्तिका निकेतन रहा है और दक्षिण आफ्रिकासे यहाँ आने पर जब मेरे परिवारको यहाँ आश्रय दिया गया तभीसे मेरे लिए यह एक तीर्थस्थल रहा है और जब भी मुझे अवसर मिला है, मैं सुख-शान्तिकी तलाश में यहाँ आता रहा हूँ।

यह सचमुच दुःखकी बात है कि अब हमें उनके संरक्षणकी छाया उपलब्ध नहीं है। लेकिन मुझे इस बातसे सान्त्वना मिलती है कि उन्होंने देशको जो अनेक उपहार भेंट किये हैं उनके रूपमें वे हमारे बीच अपना स्मारक आप ही छोड़ गये हैं।

उन उपहारोंको विनम्रता और कृतज्ञताके भावसे स्वीकार करना और उनके संवर्धनका ध्यान रखना अब हमारा कर्तव्य है। यदि हम उनके कामको जारी रख सकें और जो दायित्व वे हमारे लिए छोड़ गये हैं, स्वयंको उसके योग्य सिद्ध कर सकें तो मेरी समझसे उनके निधनपर शोक करने का कोई कारण नहीं है। मुझे तो ऐसा अनुभव होता है मानो उनकी आत्मा इस आश्रममें ही कहीं निवास करती है और पूर्ण शान्तिकी अवस्थामें है।

आपने उनके जो गीत गाकर मुझे सुनाये उनका अर्थ यद्यपि अभी मेरी समझमें नहीं आ रहा है, किन्तु वे माधुर्य और प्रेरणासे भरपूर थे। मेरी हार्दिक इच्छा है कि मैं आपके बीच यहाँ कुछ दिन रहूँ, लेकिन मुझे खेद है कि इस बार यह सम्भव नहीं है, क्योंकि मुझे कुछ अन्य आवश्यक कार्य पूरे करने हैं।

पिछले कुछ वर्षोंके दौरान भारत कठिन अग्नि-परीक्षासे गुजरा है और जितना इस बंगाल प्रान्तको झेलना पड़ा है उतना किसीको नहीं। बंगालकी व्यथा-कथा, जब मैं जेलमें था और कुछ भी करने में असमर्थ था, तभी मेरे पास पहुँची थी। मैं ईश्वरसे सतत प्रार्थना करता रहा कि वह मुझे बंगालकी सेवा करने और दुःखीजनोंकी सहायता करने यहाँ भेजे। इसलिए इस बार मैं यहाँ बंगालकी सेवा करने और उसके लिए काम करने आया हूँ। इसलिए मुझे दुःखके साथ कहना पड़ता है कि मैं यहाँ ज्यादा समय नहीं ठहर सकता। यहाँसे मैं अपने लिए शान्ति और प्रेरणाका शक्तिस्रोत लेकर चला जाऊँगा। आशा है, आप मेरी कठिनाई समझेंगे और मुझे माफ कर देंगे।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, १९-१२-१९४५, और *विश्वभारती न्यूज*, जिल्द १४, अंक ७

३४२. भाषण : प्रार्थना-सभामें[1]

शान्तिनिकेतन
१९ दिसम्बर, १९४५

शान्तिनिकेतन मेरे लिए नई जगह नहीं है। अपने पुराने सम्पर्कके कारण मैं इस मन्दिरसे भी परिचित हूँ। आश्रमवासियोंको मैं यहाँ आकर अनेक अवसरों पर सम्बोधित कर चुका हूँ। शान्तिनिकेतन मेरे लिए अपने घरके समान है। विश्वको शान्तिके आदर्शकी आवश्यकता है और वही शान्तिनिकेतनका आदर्श है। इसीलिए इससे मुझे बहुत आशाएँ हैं।

गुरुदेव अपने कृतित्वमें जीवित हैं। उन्होंने तो अपने जीवनका लक्ष्य पूरा कर लिया। अब उनके प्रति हमारे कुछ कर्तव्य हैं। यदि हम उन्हें पूरा नहीं कर पाते तो अपने धर्मका निर्वाह नहीं कर पायेंगे।

व्यथित विश्वके लिए शान्तिनिकेतनके सन्देशकी अत्यन्त आवश्यकता है। सुलह-शान्ति कायम करने के लिए गुरुदेवने धरतीके एक छोरसे दूसरे छोर तककी यात्रा की। एक तरहसे उन्होंने शान्तिनिकेतनकी रचना सम्पूर्ण विश्वमें शान्तिकी स्थापना के उद्देश्यसे ही की है। उनके पिताने आश्रमकी स्थापना की थी और उसका पुण्य प्रसाद सारी दुनियाको देने का काम पुत्रको सौंपा गया।

जब हम प्रार्थना-स्थलमें आयें उस समय हमारा चित्त शान्त रहना चाहिए, ताकि हृदय ग्रहणशील अवस्थामें रह सके। इसीलिए हम प्रार्थनाके समय अपनी आँखें बन्द कर लेते हैं। लेकिन आज तो मैं अपनी आँखें खुली ही रखना चाहूँगा ताकि देख सकूँ कि यहाँके शिक्षार्थी सद्भावना और विश्वबन्धुत्वके सन्देशवाहकोंके रूपमें शान्तिके सन्देशके प्रसारके निमित्त अपनेको कैसे तैयार कर रहे हैं।

ऑक्सफर्ड, केम्ब्रिज तथा अन्य प्रसिद्ध विद्यापीठोंके शिक्षार्थियोंकी अपनी अलग पहचान होती है। इस आश्रमके विद्यार्थियोंको मैं शान्ति और बन्धुत्वकी पहचान से विभूषित देखना चाहूँगा। इसके अतिरिक्त, मैं यह भी देखना चाहूँगा कि वे सन्देशको ग्रहण करने के लिए कितने तत्पर हैं और कठिनाइयोंके समक्ष वे कितने निरुद्विग्न और शान्त रहते हैं।[2]

१. यह हर बुधवारकी सुबह आयोजित की जाने वाली एक सभा थी। गांधीजी क्षितिमोहन सेनके आग्रहपर बोले थे।

२. प्यारेलालके अनुसार, "गांधीजी ने देखा कि प्रार्थनाके दौरान कुछ लड़के सीधे होकर नहीं बैठे हुए हैं। कुछ कुलबुला रहे थे और कुछ अन्यमनस्क थे। पिछली शामकी तरह इस अवसर-पर भी उन्होंने उन लोगोंको फटकारा।"

दुनिया आज छोटी हो गई है। इंग्लैण्ड अब सात समुद्र पार नहीं है। इंग्लैण्ड पहुँचने में मुश्किलसे तीन दिन लगते हैं। हम एक-दूसरेके इतने निकट आ गये हैं कि हम सबके सुख-दुःखके सहभागी हो सकते हैं। युद्ध समाप्त हो चुका है। मित्र-राष्ट्र विजयी हुए हैं, पर बेचैनी अभी भी बनी हुई है, बहुत बड़े पैमानेपर दुःख-दर्द फैला हुआ है। ठंडका मौसम आ रहा है। हम उष्ण भूभागके निवासी इस बातकी कल्पना भी नहीं कर सकते कि ठिठुराने वाली ठंडमें पश्चिमके लोगोंको कितनी तकलीफें उठानी पड़ेंगी। हजारों मृत्युके ग्रास बन चुके हैं और हजारोंपर मौतका साया मंडरा रहा है। वे ठिठुराती ठंडसे मरते हैं तो हम अकालसे। मानव-जातिको और कितना कष्ट उठाना है, कोई नहीं जानता।

इस विश्वव्यापी उथल-पुथलके बीच इस आश्रमको अपने शान्तिके आदर्शका पालन करना चाहिए। आप सबको शान्ति और बन्धुत्वके सन्देशका प्रसार करना चाहिए और दीन-दुखियोंके दुख-दर्दको मिटाने के कार्यमें समर्पित हो जाना चाहिए। आपको उस कार्यके लिए खुदको अभीसे तैयार करना चाहिए। आपको दृढ़ निश्चयी और साथ ही निरुद्विग्न बनना चाहिए। गुरुदेवको आपसे जो आशा थी, आपमें उनका जो विश्वास था, उसे साकार करना आपका काम है।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, २०-१२-१९४५

३४३. भाषण : शिलान्यासके अवसरपर[1]

शान्तिनिकेतन
१९ दिसम्बर, १९४५

जन्म-मरण एक ही सिक्केके दो पहलू हैं। वे एक-दूसरेसे अलग नहीं हैं। वे एक ही चीजके दो भिन्न पहलू हैं। किन्तु अज्ञानवश हम एकका स्वागत करते हैं, दूसरेसे भयभीत होते हैं। यह गलत बात है। स्वजनोंकी, विशेषकर चार्ली एण्ड्रयूज और गुरुदेव-जैसे जिन लोगोंने अपना कार्य इतने भव्य रूपसे सम्पन्न किया है, मृत्युपर शोक करने के मूलमें हमारा स्वार्थ ही है। दीनबन्धु जैसे जीवनकालमें धन्य थे वैसे ही मरकर भी धन्य हैं। उन-जैसे लोगोंकी मृत्यु शोकका प्रसंग नहीं हो सकती। जहाँ तक खुद मेरी बात है, मैं कह सकता हूँ कि मैं मित्रों और स्वजनोंकी मृत्युपर शोक करना लगभग भूल चुका हूँ और चाहता हूँ कि आप भी वैसा ही करना सीखें।[2]

१. दीनबन्धु सी० एफ० एण्ड्रयूज स्मारक अस्पतालके शिलान्यासके अवसरपर। सायंकाल आयोजित इस समारोहमें शान्तिनिकेतन और श्रीनिकेतनके कर्मचारियों और विद्यार्थियोंके अलावा आसपासके बहुत-से किसान भी शामिल हुए थे।

२. यह अनुच्छेद विश्वभारती न्यूज से लिया गया है।

मेरे और दीनबन्धुके बीच सगे भाइयों-जैसा प्यार था। मुझे याद है कि श्री गोखलेके कहने पर और गुरुदेवका आशीर्वाद लेकर दीनबन्धु किस प्रकार दक्षिण आफ्रिका पहुँचे और किस प्रकार वे स्थान-स्थानपर गुरुदेवके दिये मंत्रोंका उद्घोष करते फिरते थे। आज मैंने दीनबन्धु एण्ड्रयूजकी स्मृतिमें बनाये जाने वाले अस्पतालका शिलान्यास किया है। यह दीनबन्धु नाम उन्हें उन कृतज्ञ दीनजनोंने दिया है जिन्हें अस्पतालोंकी जरूरत है।

श्रीनिकेतन तथा शान्तिनिकेतनके बीच स्थित होने से यह न केवल इन दो स्थानोंकी बल्कि आसपासके गाँवोंकी भी सेवा करेगा। गाँवोंके प्रतिनिधियोंने आज मेरा जो हार्दिक स्वागत किया है,[1] उससे मैं अभिभूत हूँ। यह उन लोगोंके आशीर्वादका प्रतीक है और उनके आशीर्वादके साथ आपका आशीर्वाद भी शामिल है।

गांधीजी ने इमारत बनाने की सामग्रीकी ऊँची कीमतोंका उल्लेख करते हुए कहा कि अस्पताल बनने में कुछ समय लग सकता है।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, २०-१२-१९४५, और विश्वभारती न्यूज, जिल्द १४, अंक ९

३४४. बातचीत : शान्तिनिकेतनके विभागाध्यक्षोंके साथ[2]

१९ दिसम्बर, १९४५

मुझे कोरा कागज मानकर चलिए। अभी तक मेरे पास सुनी-सुनाई बातें ही पहुँची हैं और ऐसी बातोंका मेरे जीवनमें बहुत कम स्थान है। मैं ठोस तथ्य चाहता हूँ। तथ्योंकी पूरी जानकारीके बिना मैं आपकी कोई सहायता नहीं कर पाऊँगा।

ऐसी बात नहीं कि आपके पास कहने को कुछ है नहीं। इसका मतलब तो यह होगा कि यह संस्था सर्वथा परिपूर्ण है। किन्तु इस दुनियामें कोई भी चीज सम्पूर्ण नहीं है। जो कमियाँ हैं उनके बारेमें मुझे साफ-साफ बताइए। अच्छी बातें तो स्वयं ही प्रकट हो जाती हैं; लेकिन बुरी बातें नहीं, कमसे-कम मेरे सामने तो नहीं ही।

आपकी एक-एक बात मैंने बहुत रुचि और ध्यानसे सुनी है और उनसे मुझे

१. समारोह-स्थलपर पहुँचने पर गांधीजी का स्वागत एक संथाल मुखियाने उनके भालपर टीका लगाकर किया और एक संथाल लड़कीने उन्हें माला पहनाई।

२. प्यारेलालके लिखे "द शान्तिनिकेतन पिल्ग्रिमेज" (शान्तिनिकेतनकी तीर्थयात्रा) से उद्धृत। विभिन्न विभागोंके अध्यक्ष गांधीजी को अपनी कठिनाइयाँ बताने के लिए सायंकाल उनसे अनौपचारिक तौरपर मिले थे।

बहुत-कुछ मालूम हुआ है। जो बातें कही गई हैं उनके बारेमें मैं विस्तारसे अपने विचार नहीं बताना चाहता और न अभी अपने मनमें उठ रहे विचारोंको ही प्रकट करना चाहता हूँ। इसके बजाय मैं सामान्य ढंगकी एक-दो बातें ही कहूँगा।

नन्दबाबू[1] और क्षितिमोहनबाबूकी बातें सुनते समय मेरे मनमें यह विचार आया कि यह वास्तवमें एक समस्या है, लेकिन है यह हमारी ही बनाई हुई। अगर कोई व्यक्ति कोई बड़ा विभाग चला रहा है तो उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह जो-कुछ चाहता है उससे किसी ऐसे आदमीको ठीकसे अवगत कराये जिसे उसका उत्तराधिकारी कहा जा सके। फिर भी, इन दो महारथियोंकी मुख्य समस्या यही है कि अपने-अपने विभागोंके लिए उन्हें उपयुक्त उत्तराधिकारी नहीं मिल पा रहे हैं। यह सच है कि ये विभाग विशेष प्रकारके हैं। मैं इन विभागोंको जानता हूँ और इनके सम्बन्धमें गुरुदेवके विचारोंको भी। लेकिन सामान्य रूपसे कहूँ तो मैं यह कहना चाहूँगा कि ऐसी कोई कठिनाई नहीं है, जिसपर तपश्चर्यासे पार नहीं पाया जा सकता हो। यह शब्द लगभग अनुवादातीत है, इसके सही अर्थको निकटतम अभिव्यक्ति देने वाला शब्द शायद 'सिंगल-माइंडेड डिवोशन' (अनन्य निष्ठा) है। किन्तु वस्तुतः इसमें इससे भी बहुत अधिक अर्थ समाया हुआ है। अपनी विविध गतिविधियोंके दौरान जब कभी मेरे सामने इस तरहकी कठिनाई आई है, तपश्चर्याने उसका हल इस ढंगसे निकाल दिया है जिसकी मैंने कभी आशा भी नहीं की थी। मेरा ईश्वरसे साक्षात्कार अत्यन्त विपरीत परिस्थितियोंमें उस हतभागे देश दक्षिण आफ्रिकामें हुआ। वहाँके अपने बीस वर्षके दीर्घ प्रवास-कालमें मैंने निरपवाद रूपसे पाया कि मेरे लिए वह सही वक्तपर सही सहायकके रूपमें प्रकट हो जाता था।

एक लम्बे कठिन संघर्ष और आत्ममन्थनके उपरान्त मैं जिस मान्यतापर पहुँचा हूँ वह यह है कि गुरुदेव एक व्यक्तिके रूपमें अपनी कृतियोंसे, बल्कि वास्तवमें इस संस्थासे भी, जहाँ अपने कल्पना-पंखोंके सहारे आकाशकी ऊँचाइयोंको नापते हुए उन्होंने अपने अमर गीत गाये, महान थे। उन्होंने इसमें अपनी आत्मा उँडेल दी और इसे अपने जीवन-रससे सींचा। तथापि मैं यह कहने का साहस कर रहा हूँ कि इससे या इसके माध्यमसे उनकी महानताकी पूर्ण अभिव्यक्ति नहीं हो पाई। यह बात शायद सभी महान और अच्छे व्यक्तियोंपर लागू होती है—वे अपनी कृतियोंसे अधिक श्रेष्ठ और महान होते हैं। जिस अच्छाई या महानताके प्रतीक गुरुदेव हैं, किन्तु जिसकी पूर्ण अभिव्यक्ति वे इस संस्थाके माध्यमसे भी नहीं कर सके, यदि आपको उसका प्रतिनिधित्व करना है तो यह काम आप तपश्चर्यासे ही कर सकते हैं।

१. शान्तिनिकेतनके कला-भवनके अध्यक्ष नन्दलाल बोस

तुलसीकृत 'रामायण' में इस आशयकी चौपाइयोंकी एक उत्कृष्ट शृंखला है कि जो अन्य किसी उपायसे सम्भव नहीं वही तपश्चर्यासे सम्भव हो जाता है। यह बात पार्वतीके सन्दर्भमें कही गई है। नारदने भविष्यवाणी की थी कि उन्हें शिवके गुणोंसे युक्त वर मिलेगा किन्तु यदि वे गुण शिवके बजाय किसी दुष्टमें मिल जायेंगे तो उनका जीवन नष्ट हो जायेगा। समस्या इस विपदासे बचने की थी, और ऊपर मैंने जिनका उल्लेख किया है वे चौपाइयाँ इसी सन्दर्भमें लिखी गई हैं। आप इन चौपाइयोंको ध्यानसे पढ़ें। हाँ, आपको उन्हें उनके रूढ़ सन्दर्भसे अलग करके पढ़ना होगा।

चर्चाके दौरान आपने वित्तकी समस्याका जिक्र किया था। मैं आपसे विनती करूँगा कि यह 'वित्त' की बात तो आप अपने दिमागसे निकाल ही दीजिए। मेरा निश्चित मत है कि वित्तके अभावको लेकर किसी सच्चे कार्यकर्ताके समक्ष कभी कोई समस्या उपस्थित नहीं होती। वित्त तो अनुचर है—यदि हम किसी सच्चे कार्यमें लगे हुए हैं तो वह हमारे पीछे-पीछे आयेगा ही। यहाँ मैं एक चेतावनी दे देना चाहता हूँ। ऐसा भी हो सकता है कि कार्यकर्ता सच्चा हो लेकिन जिस कार्य में वह लगा हुआ हो वह सच्चा न हो। उस स्थितिमें उसकी बाधा तो जारी ही रहेगी। ऊपरसे देखने में इस नियमके कुछ अपवाद अवश्य नजर आते हैं। दुनिया बेवकूफों और सफल धूर्तोंसे भरी हुई है। लेकिन ईमानदार स्त्री-पुरुषोंकी बात कहूँ तो मेरा विश्वास है कि वित्तका अभाव कोई ऐसी चीज नहीं है जिससे उन्हें बाधा महसूस होनी चाहिए या उनका उत्साह मन्द पड़ना चाहिए। आपने बहुत बड़ा काम अपने हाथमें लिया है और भविष्यमें शायद इससे भी बड़े काम हाथमें लेने पड़ें। तब आपके सामने यह प्रश्न उठाया जायेगा, 'हम वित्तके सम्बन्धमें क्या करें?' ऐसा प्रसंग आने पर आप पायेंगे कि वित्तके अभावके बजाय कठिनाई कहीं और ही है। आप उसे दुरुस्त कर लें तो फिर वित्तकी समस्या तो स्वतः सुलझ जायेगी।

आपकी[1] कठिनाई आम किस्मकी है। कोई भी दो नावोंपर एक साथ सवारी नहीं कर सकता। अगर आप छात्रावासमें रहने वाले छात्रों और दिन में यहाँ आकर अध्ययन करने वाले छात्रोंको साथ रखेंगे तो ये लोग उनपर छा जायेंगे और उनकी शिक्षामें बाधक होंगे। आपकी संस्थामें इस प्रकारका मिश्रण नहीं चल पायेगा।

फिर कृष्ण कृपलानीने कहा कि उन्हें नहीं मालूम कि उनका लक्ष्य क्या है या वे किन आदर्शोंका प्रतिनिधित्व करते हैं, शान्तिनिकेतन तथा श्रीनिकेतन का कुल मिलाकर उद्देश्य क्या है। मेरा उत्तर यह है कि आपके समक्ष बंगाल या

१. विभूतिभूषण गुप्तकी, जिन्होंने दिवसीय-छात्रोंके प्रवेशसे उत्पन्न कठिनाईका उल्लेख किया था।

भारतका भी प्रतिनिधित्व करने का आदर्श नहीं है, आपको तो सारी दुनियाका प्रतिनिधित्व करना है। इससे कम तो गुरुदेवने सोचा ही नहीं होगा। वे सम्पूर्ण मानवताके प्रतिनिधि थे। और जब तक वे भारतके करोड़ों अभावग्रस्त मूक जनताका प्रतिनिधित्व नहीं करते, वे विश्वका प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते थे। आपका भी यही ध्येय होना चाहिए। जब तक आप भारतकी साधारण जनताकी भावनाका प्रतिनिधित्व नहीं करते तो मनुष्यके रूपमें गुरुदेवको भी प्रस्तुत नहीं कर सकेंगे। आप एक गायक, चित्रकार या महाकविके रूपमें तो उनको चित्रित भले करें, लेकिन व्यक्तिके रूपमें प्रस्तुत नहीं कर पायेंगे और तब इतिहासमें गुरुदेवके विषयमें लिखा जायेगा कि उनकी संस्था विफल रही। मैं नहीं चाहता कि इतिहास यह निर्णय दे।

मैं यह मानता हूँ कि यदि मैं अपना यह दावा साबित करना चाहूँ कि मैं भी आपमें से ही एक हूँ तो मुझे यहाँ आपके बीच अधिक दिन रहना चाहिए था।[1] ऐसा करने में मुझे बहुत खुशी होती। पर मेरी भावी गतिविधि तो ईश्वराधीन है।

[अंग्रेजीसे]

विश्वभारती न्यूज, जिल्द १४, अंक ९

३४५. बातचीत : कार्यकर्ताओं और अध्यापकोंके साथ[2]

शान्तिनिकेतन
२० दिसम्बर, १९४५

मैं आपके ही मुँहसे सुनना चाहता हूँ कि आप किस प्रेरणासे यहाँ हैं और आपके सामने क्या कठिनाइयाँ हैं।

प्र० : क्या शान्तिनिकेतनको राजनीतिक कार्योंमें भाग लेना चाहिए?

उ० : यह कहने में मुझे कोई कठिनाई नहीं है कि शान्तिनिकेतन और विश्व-भारतीको राजनीतिमें भाग नहीं लेना चाहिए। प्रत्येक संस्थाकी अपनी मर्यादाएँ होती हैं। इस संस्थाको भी अपनी मर्यादाएँ तय कर लेनी चाहिए, अन्यथा यह एक साधारण संस्था बन जायेगी। शान्तिनिकेतनको राजनीतिमें भाग नहीं लेना चाहिए, ऐसा कहने का मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि इसके सम्मुख कोई राजनीतिक

१. यह बात रथीन्द्रनाथ ठाकुरके इस अनुरोधके उत्तरमें कही गई थी कि गांधीजी को शान्तिनिकेतनको हर साल कुछ अधिक समय देना चाहिए।

२. प्यारेलालके लिखे "द शान्तिनिकेतन पिल्ग्रिमेज" (शान्तिनिकेतनकी 'तीर्थ-यात्रा) शीर्षक लेखसे उद्धृत। वहाँ उपस्थित लोगोंमें से कई हिन्दी बिलकुल नहीं या बहुत कम जानते थे, इस कारण गांधीजी ने अंग्रेजीमें ही उत्तर दिये। लेकिन उन्होंने चेतावनी भी दी कि अगली मुलाकातमें आपको मुझसे हिन्दीमें बोलना होगा, कमसे-कम मैं हिन्दीके सिवा और किसी दूसरी भाषाका प्रयोग नहीं करूँगा।

आदर्श नहीं होना चाहिए। पूर्ण स्वराज्य सारे देशका आदर्श है, और यही इसका भी आदर्श होना चाहिए। किन्तु इसी आदर्शकी खातिर इसे आजकी राजनीतिक उथलपुथलसे दूर रहना होगा। तीस साल पूर्व भी यहाँ मुझसे यही प्रश्न पूछा गया था और तब भी मैंने यही उत्तर दिया था जो आज दिया है। सच तो यह है कि आज यह बात तबकी अपेक्षा और अधिक लागू होती है।

प्र० : विश्वभारतीको सचमुच अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय बनाने के लिए क्या हमें इसके भौतिक संसाधनोंको बढ़ाने का यत्न नहीं करना चाहिए और जीवनकी सामान्य सुविधाएँ तथा अन्य सुविधाएँ अधिक नहीं देनी चाहिए, ताकि देश भरके विशेष योग्यता वाले विद्यार्थी और शोधकर्ता यहाँ आने को अधिक प्रेरित हों?

उ० : मेरे खयालमें, भौतिक संसाधनोंसे आपका मतलब धनसे है। तब मैं कहना चाहूँगा कि यह प्रश्न ऐसे व्यक्तिसे किया गया है जिसके लिए भौतिक संसाधनोंका अधिक महत्व नहीं है। 'भौतिक संसाधन' तुलनात्मक शब्द ही तो है। उदाहरणार्थ मैं खाने या कपड़ेके बिना नहीं रहता। अपने तरीकेसे मैंने भारतके आम आदमीके भौतिक संसाधनोंका स्तर ऊँचा उठाने का जितना प्रयास किया है उतना शायद और किसी भी व्यक्तिने नहीं किया है। किन्तु मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि विश्वभारती भौतिक संसाधनोंपर या जो भौतिक आकर्षण यह प्रस्तुत कर सकती है उसपर भरोसा रखकर चलेगी तो यह सही ढंगकी प्रतिभाओं और विद्वानोंको आकृष्ट करने में विफल रहेगी। इसका आकर्षण सदाचार और नैतिकताका होना चाहिए, अन्यथा यह संस्था भारतकी अन्य अनेक शिक्षा-संस्थानो जैसी ही बन जायेगी। गुरुदेव जिस आदर्शकी खातिर जिये और मरे, वह यह नहीं था। मेरा यह आशय नहीं कि यहाँ काम करने वाले कार्यकर्ताओं और अध्यापकोंको जीवनके लिए आवश्यक सुख-सुविधाएँ नहीं मिलनी चाहिए। यहाँ अभी भी पर्याप्त भौतिक सुख-सुविधाएँ दिखाई दे रही हैं। यदि मैं यहाँ अधिक समय तक रहूँ और मेरी बात मानी जाये तो सम्भवतः उनमें काफी कमी करनी पड़ेगी। जैसे-जैसे विश्वभारतीका विकास होगा और अधिकाधिक भेंटें और दान मिलेंगे वैसे-वैसे यदि संस्था चाहे तो कालान्तरमें विद्वानों और शोधकर्ताओंके लिए अधिक आकर्षण प्रदान कर सकेगी। किन्तु मुझसे सलाह माँगी जाये तो मैं यही कहूँगा कि इस प्रलोभनमें मत पड़िए। विश्वभारतीको नैतिक मूल्योंकी प्रगति को ही अपना मूलाधार बनाना चाहिए। यदि यह नैतिक मूल्योंका प्रतीक नहीं बनती तो इसकी कोई उपयोगिता नहीं।

प्र० : संस्थाका उच्च नैतिक आकर्षण कम न होने पाये, इसके लिए क्या किया जाये? आप इसके लिए क्या उपाय बतायेंगे?

उ० : आपमें से हर व्यक्तिको नैतिक मूल्योंका सच्चा अर्थ समझना चाहिए। नैतिक मूल्य और भौतिक मूल्यका अन्तर स्पष्ट है। नैतिक मूल्य नैतिकता और

भक्तिकी ओर ले जाता है और भौतिक मूल्य धनलोलुपताकी ओर। पशु और मनुष्यमें यही तो अन्तर है कि मनुष्य नैतिक मूल्योंको समझ सकता है, अर्थात् जिस व्यक्तिकी नैतिकता जितनी अधिक होगी वह पशुसे उतना ही अधिक भिन्न होगा। यदि आप इस आदर्शमें विश्वास रखते हैं तो अपने-आपसे पूछिए कि आप यहाँ क्यों हैं और क्या कर रहे हैं?

निस्सन्देह प्रत्येक कार्यकर्ता और उसके आश्रितोंको भोजन, कपड़ा इत्यादि मिलना ही चाहिए। किन्तु आप सिर्फ उसी कारण तो विश्वभारतीसे सम्बद्ध नहीं हैं कि आपको इससे भोजन, वस्त्र तथा जीवनके लिए आवश्यक अन्य सुविधाएँ मिलती हैं। आप इसके सदस्य इसलिए हैं कि आप इसके बिना रह ही नहीं सकते, और इसलिए कि इस संस्थाके आदर्शोंके निमित्त कार्य करने से आपकी नैतिकता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जाती है। अतएव जो दोष प्रकट हों, संस्थाके कार्य-कलापमें जो भी बाधाएँ आयें, उन सबका कारण ढूँढ़ने पर अन्ततः यही पता चलेगा कि नैतिकता सम्बन्धी आपके दृष्टिकोणमें ही कुछ दोष है। मैं कितनी ही संस्थाओंसे साठ सालसे अधिक समयसे सम्बद्ध रहा हूँ और इसी निष्कर्षपर पहुँचा कि उनके कार्य-सम्पादनकी हरएक कठिनाईका कारण नैतिक मूल्योंकी उनकी दोषपूर्ण समझ ही था।

प्र० : हम ग्रामवासियोंकी सेवा करने का प्रयत्न कर रहे हैं, किन्तु देखते यह हैं कि कदम-कदमपर गाँवोंका सामाजिक वातावरण हमारे कार्योंमें बाधा डालता है। वहाँकी उल्लासहीन जीवन-चर्या, जड़ता और दुःस्वप्न जैसी भयानक सामाजिक कुप्रथाएँ हमारे प्रयासमें बाधा डालती हैं। क्या दूसरे कार्योंमें सफलताकी आशा रखने से पहले हमें इन सबके निवारणके लिए काम नहीं करना चाहिए? और यदि यह काम करना है तो किस प्रकार किया जा सकता है?

उ० : जबसे मैं भारत आया हूँ, मुझे यही महसूस हुआ है कि राजनीतिक क्रान्तिकी अपेक्षा — जिससे मेरा आशय ब्रिटिश शासनकी वर्तमान दासताका अन्त करने से है — सामाजिक क्रान्ति लाना कहीं कठिन है। कुछ आलोचकोंका कहना है कि हमारे सामाजिक उद्धारके बिना भारतका राजनीतिक और आर्थिक उद्धार असम्भव है। किन्तु इस बातको मैं एक बाधा और उलझनमें डालने वाली चाल ही मानता हूँ क्योंकि मैंने यही देखा है कि राजनीतिक मुक्तिके अभावमें हमारे आर्थिक और सामाजिक उद्धारके प्रयत्न भी सफल नहीं हो पाते। साथ ही यह भी सत्य है कि यदि सामाजिक क्रान्ति न हुई तो हमारे जन्मके समय भारतकी जो दशा थी उससे कुछ बेहतर स्थितिमें उसे नहीं छोड़ पायेंगे। किन्तु मैं सामाजिक क्रान्ति लाने का कोई सरल और सुगम मार्ग तो सुझा नहीं सकता; केवल इतना ही कह सकता हूँ कि हमें उसे अपने जीवनकी छोटीसे-छोटी बातोंमें प्रतिबिम्बित करना चाहिए।

कुछ देशोंमें सामाजिक ढाँचेको बदलने के लिए बलका प्रयोग किया गया है। किन्तु मैंने जान-बूझकर इस तरीकेका परित्याग किया है। इसलिए मैं आपको सलाह देता हूँ कि बारम्बार प्रयत्न करते रहिए और कदापि हार मत मानिए। अधीर बनकर ऐसा मत कहिए कि लोग तो बिलकुल निकम्मे हैं, बल्कि कहिए कि हम स्वयं निकम्मे हैं। आप जो समय-सीमा निर्धारित करें, यदि उसके भीतर लोग आपके आह्वानके अनुसार नहीं चलते तो असफलता उनकी नहीं, आपकी है। यह अत्यन्त परिश्रमका काम है, जिसमें कोई शाबाशी नहीं मिलेगी। आप अपने कामके लिए प्रशंसाकी आशा भी नहीं रखते। प्रेमसे प्रेरित होकर जो कार्य हाथमें लिया जाये वह भार नहीं होता—उससे तो परम आनन्द प्राप्त होता है।

प्र० : किसी आश्रममें वेतन देने की व्यवस्था आरम्भ करने से संस्थाके आदर्शका उत्कर्ष होता है या अपकर्ष ?

उ० : यह कहने में मुझे कोई कठिनाई नहीं है कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि नियत वेतन दिया जाता है या कार्यकर्ताओंके खर्चका भार उठाया जाता है। दोनों तरीकोंको आज़माया जा सकता है। जिस जोखिमसे बचना होगा वह यह है: किसी कार्यकर्ताको आश्रमसे बाहर जो वेतन मिल सकता है यदि वही वेतन आश्रम भी दे तो आश्रमकी भावनाका पालन नहीं होगा। कोई व्यक्ति चाहे उच्चतम योग्यता और प्रतिभासे ही क्यों न सम्पन्न हो यदि वह बाज़ार भावसे अपना पारिश्रमिक माँगे तो उस योग्यता और प्रतिभाके बिना ही काम चलाना अधिक उचित होगा। दूसरे शब्दोंमें, हमें तब तक इन्तजार करना चाहिए जब तक कि प्रतिभाशाली व्यक्ति पैसेके बजाय किसी और कारणसे जिसकी भी संस्था प्रतीक है, उसके प्रति आकृष्ट न हो। ऐसा भी न हो कि व्यक्तिकी आवश्यकताके अनुरूप वाले सिद्धान्तके वशीभूत होकर आप बाजार-भावसे भी अधिक पारिश्रमिक देने लगें। विश्वभारतीमें वेतन देने की प्रथामें शिकायतकी कोई बात नहीं। जिन कठिनाइयों का आपने उल्लेख किया है वे केवल थोड़ा-बहुत हेर-फेर करके दूर नहीं की जा सकतीं। जो दोष आपके ध्यानमें हैं उनके मूलभूत कारणोंका पता लगाकर उनका निराकरण कीजिए।

प्र० : हमारे नवयुवकोंमें उदासीनता या आस्थाका अभाव रहते हुए हम किस प्रकार कोई प्रगति कर सकते हैं ?

उ० : आपके मुँहसे यह प्रश्न सुनकर तो मुझे बहुत निराशा होती है। जब आपको अपने शिष्योंमें आस्थाके अभावका दर्शन हो तो आपको अपने-आपसे कहना चाहिए : 'मुझमें ही आस्थाका अभाव है।' यह बात मैंने निजी अनुभवमें बार-बार देखी है। और अपनी इस कमीका दर्शन कर सकना मेरे लिए हर बार स्फूर्ति-दायक अनुभवके समान ही रहा है। बाइबिलमें कहा गया है: "पड़ौसीके राई बराबर दोषकी ओर इशारा करने से पहले अपना पर्वत-जैसा दोष तो दूर करो"[1]

१. सेंट मैथ्यू, ७/५

यह कथन शिष्य और गुरुके प्रसंगमें और भी उपयुक्त लगता है। शिष्य आपमें स्वयं से किसी अत्यन्त श्रेष्ठ वस्तुको पाने की आशा लेकर आपके पास आता है। 'अरे, उसमें तो आस्था ही नहीं है! मैं उसमें कैसे आस्था उत्पन्न करूँ', ऐसी शिकायत करने के बजाय यदि आप अपने पदसे त्यागपत्र दे दें तो बेहतर ही होगा।

प्र० : यहाँ गुरुदेवकी बौद्धिक विचारधाराका तो अच्छा पालन हो रहा है, किन्तु कहना होगा वे जिस आदर्शको लेकर चल रहे थे उसका पूर्ण प्रस्फुटन होता नहीं दीखता। जो संस्था ऐसे परिणामकी ओर ले जाये उसमें कहीं कोई खराबी अवश्य होगी। इसका क्या उपाय है? दूसरे, क्या हमारी संस्थाका उद्देश्य आम आदमीमें संस्कृतिका प्रसार करना होना चाहिए? यह आपका आदर्श है। किन्तु क्या इसके साथ-साथ ऐसी संस्था भी नहीं होनी चाहिए जहाँ दीक्षित लोगोंके लाभार्थ उच्चतर संस्कृतिका परिरक्षण किया जाये? यह आदर्श गुरुदेवका था। इस प्रकारकी संस्था विशिष्ट और कुछ गिने-चुने लोगोंके ही निमित्त होगी। मैं आपके और गुरुदेव दोनोंके ही आदर्शोंका अनुगामी हूँ और इस कारण मेरे मनमें दोनों पक्षोंके बीच द्वन्द्व चल रहा है।

उ० : मैं दूसरे प्रश्नको पहले ले रहा हूँ। आपकी बातमें गुरुदेव और मुझपर दोनोंपर आक्षेप है। मैंने तो हम दोनोंके बीच कोई वास्तविक विरोध नहीं पाया। शुरूमें मुझे गुरुदेव और अपने बीच मतभेद दिखाई पड़ता था, किन्तु अन्तमें मुझे यह सुखद अनुभव हुआ कि हमारे विचारोंमें कोई विरोध नहीं था।

आपके पहले प्रश्नके सम्बन्धमें मैं इतना ही कह सकता हूँ कि आपकी इस भावनामें कि 'आप तो बिलकुल सही हैं किन्तु संस्थामें ही कुछ दोष होगा', मुझे दम्भकी झलक मिलती है। यह दम्भका भाव घातक है। जब अपने मनमें यह महसूस होने लगे कि हम तो ठीक हैं किन्तु आसपासकी दूसरी सभी चीजें गलत हैं, तब आपको समझ लेना चाहिए कि और सब कुछ तो ठीक है, त्रुटि आपके ही अन्दर है।[1]

[अंग्रेजीसे]

विश्वभारती न्यूज, जिल्द १४, अंक ९

१. अपनी रिपोर्टके अन्तमें प्यारेलालने लिखा है: "गांधीजी ने इस समारोहके लिए आधा घन्टेका समय नियत किया था। वे उठने की तैयारी कर ही रहे थे कि तभी रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी भतीजी इन्दिरा देवीने अन्तिम प्रश्न पूछा: क्या यहाँ संगीत और नृत्यकी अति नहीं है? क्या यह आशंका नहीं है कि स्वर-संगीतके तले जीवन-संगीत दब जायेगा?" गांधीजी को तत्काल उत्तर देने का अवकाश नहीं था। इसलिए उन्होंने कलकत्तासे इन्दिरा देवीके उपर्युक्त तथा कुछ अन्य प्रश्नों के भी उत्तर भेजे; देखिए पृ० २६७-६८।

३४६. पत्र : आनन्द तो० हिंगोरानीको

ट्रेनमें
शान्तिनिकेतनसे लौटते हुए
२० दिसम्बर, १९४५

रोजनीशी रोज लिखी जाती है।[1]

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी माइक्रोफिल्मसे। सौजन्य . राष्ट्रीय अभिलेखागार

३४७. भाषण : कांग्रेस कार्यकर्ताओंके समक्ष[2]

रामपुरहाट
२० दिसम्बर, १९४५

हिन्दू-मुस्लिम एकता तभी स्थापित हो सकती है जब बिना किसी राजनीतिक हेतुके मुसलमानोंकी निःस्वार्थ सेवा की जाये।

मुसलमान भी हमारे जैसे ही हैं और हमें उन्हें अपना मित्र मानना चाहिए। यही बात हरिजनोंपर लागू होती है। अगर हम उनके प्रति अन्याय करेंगे तो स्वय भी जिन्दा नहीं रह पायेंगे। जो लोग विधान-सभाओंमें जाना चाहते हैं उन्हें जाने दीजिए, लेकिन वहाँ भी उन्हें रचनात्मक कार्यक्रम कार्यान्वियनको ही अपना काम बनाना होगा। वैसे भी कांग्रेसजनोंका ज्यादातर काम तो विधान-सभाओंके बाहर ही होगा, और उन्हें रचनात्मक कार्यके नये और परिवर्धित कार्यक्रमको लागू करने में पूरे दिलसे लग जाना होगा।

महात्माजी के पूछने पर उन्हें बताया गया कि जिलेकी आबादी लगभग ग्यारह लाख है, जिसमें दो लाख मुसलमान और ७३ हजार संथाल भी शामिल

१. तात्पर्य "रोजके विचार" से है; देखिए अन्तिम शीर्षक। यह पत्र आनन्द तो० हिंगोरानी के नाम सुशीला नैयरके पत्रके नीचे लिखा गया था।

२. गांधीजी ने स्थानीय टाउन हॉलमें वीरभूम और आसपासके जिलोंके करीब ६० कांग्रेस-कार्यकर्ताओंके सामने भाषण किया। गांधीजी का स्वागत करते हुए वीरभूम जिला कांग्रेस कमेटीके मन्त्री सत्येन चटर्जीने कहा कि "गांधीजी की सलाहका हम सभीपर बहुत प्रभाव होगा और प्रत्येक कार्यकर्ता रचनात्मक कार्यको पूरा करने का प्रयत्न करेगा।"

हैं। गांधीजी ने कार्यकर्ताओंसे कहा कि वे संथालोंको भी अपने सेवाके कार्यक्रममें शामिल कर लें।...

कपड़ेकी कमीके सिलसिलेमें कार्यकर्ताओंने गांधीजी को सूचित किया कि १९४२ से पहले जिलेमें ५०० कातने वाले थे। लेकिन सूत हमेशा बाहरसे आता रहा है, क्योंकि बंगालमें उसकी जरूरतके लिए काफी कपास कभी पैदा नहीं की गई। गांधीजी ने कहा कि किसी प्रान्तमें कपड़ेकी कमीको असाध्य समस्या नहीं माना जा सकता। इंग्लैण्डको ही देखिए; वहाँ कपास नहीं पैदा की जाती, फिर भी, वह कपड़ेका सबसे बड़ा निर्यातक है।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, २१-१२-१९४५

३४८. भाषण : सार्वजनिक सभामें[1]

रामपुरहाट
२० दिसम्बर, १९४५

महात्मा गांधीने हिन्दू समाजमें से अस्पृश्यता हटाने की आवश्यकतापर जोर देते हुए कहा कि वह हिन्दू धर्मपर एक घोर कलंक है। हमें समझना चाहिए कि प्रत्येक भारतीय हमारा भाई है, हमारा सगा है। हमें अपने हृदयसे हिन्दू, मुसलमान, हरिजन, भील और संथाल इन सबका भेदभाव मिटा देना चाहिए। यदि हम ये पाठ सीख लें तो समाजमें व्याप्त बुराइयोंमें से बहुतोंको दूर कर सकते हैं।

महात्मा गांधीने कहा कि यह दुःखकी बात है कि आपमें से सब लोग हिन्दुस्तानी नहीं समझ पाते। आपको अपने प्रान्तकी भाषाका ज्ञान तो होना ही चाहिए। किन्तु यदि आप पूरे भारतका भ्रमण करना चाहते हों और आपकी यह इच्छा हो कि दूसरे लोग भी आपके यहाँ आयें तो यह जरूरी है कि हमारी एक सामान्य भाषा हो, और वह भाषा हिन्दुस्तानी ही हो सकती है।

हिन्दुस्तानी क्या है, यह समझाते हुए गांधीजी ने कहा कि हिन्दुस्तानीका एक रूप उर्दू है तथा दूसरा रूप हिन्दी। उन दोनोंमें अन्तर यह है कि उर्दूकी शब्दावलीमें अरबी और फारसी मूलके शब्दोंका बाहुल्य है और उसे फारसी लिपिमें लिखा जाता है, लेकिन हिन्दीमें संस्कृत मूलके शब्दोंकी अधिकता है और उसकी लिपि देवनागरी है। यह बात नहीं कि हमेशासे ही ऐसा था, किन्तु इस समय मैं इस विभाजनके कारणों या इतिहासकी चर्चा नहीं करूँगा। गांधीजी ने जोर देकर कहा

१. २२-१२-१९४५ के हिन्दू के अनुसार गांधीजी ने हिन्दुस्तानीमें भाषण दिया और "डॉ० प्रफुल्लचन्द्र घोषने जनताको उसे बंगलामें समझाया"।

कि जो भारतकी सेवा करना चाहते हैं उन्हें दोनों लिपियों और भाषाके दोनों रूपोंको सीखना होगा। यदि आपको अपने देश और देशवासियोंसे प्रेम है तो यह कष्ट नहीं अखरेगा और यह कोई कठिन काम भी नहीं है।

लोगोंसे खादी पहनने का आग्रह करते हुए गांधीजी ने कहा कि ३० वर्षके अनुभवके बाद में यह कह सकता हूँ कि यदि आपमें अपना कपड़ा खुद तैयार करने की इच्छा-शक्ति हो तो कपड़ेकी कमीको पूरा करने में कुछ भी देर नहीं लगेगी। यह एक विचित्र बात है कि अपने देशमें कपासकी प्रचुर उपज होते हुए भी हम अपनी जरूरतका कपड़ा खुद तैयार नहीं करते या कर पाते हैं और अपने लिए स्वयं कताई-बुनाई नहीं करते।

गांधीजी ने जिलेमें फैले हुए मलेरियाकी चर्चा करते हुए कहा कि इसका एक कारण लोगोंकी घोर निर्धनता है। किन्तु मेरा विचार है कि यदि आप लोग अपने अवकाशके समयका सदुपयोग करें तो निर्धनता भी कम कर सकते हैं। लोगोंको अपनी गन्दगीकी आदतोंको छोड़ना चाहिए और सभी कार्यकर्ताओंका कर्तव्य है कि वे अपने स्वास्थ्यकी रक्षा करना सीखें और दूसरोंको भी ऐसा करना सिखायें।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, २२-१२-१९४५

३४९. भाषण: बर्दवान रेलवे स्टेशनपर

२० दिसम्बर, १९४५

गांधीजी ने उपस्थित लोगोंसे शान्त रहने को कहा और बोले कि नारे लगाने से स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं की जा सकती। मात्र अहिंसाके जरिये ही स्वतन्त्रता प्राप्त हो सकती है और अहिंसाका अस्त्र केवल शान्ति है। आप लोग हिन्दू और मुसलमानमें फर्क करना भी छोड दें।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, २१-१२-१९४५

३५०. पत्र : अवनीन्द्रनाथ ठाकुरको

सोदपुर
२१ दिसम्बर, १९४५

प्रिय अवनीबाबू[1],

आशा है, कल शान्तिनिकेतनसे भेजा मेरा तार आपको मिल गया होगा। कलकत्तामें होते हुए आपके यहाँ आकर आपसे साक्षात्कार हो पाता तो कितना अच्छा होता! लेकिन मैं जानता हूँ कि मुझे अपनेको इस आनन्दसे वंचित ही रखना पड़ेगा।

कल सुबह मैं नन्दबाबूका संग्रहालय देखने गया और वहाँ उन्होंने शीशेकी एक मंजूषामें रखे कुछ विरल नमूने दिखाये जो इस बातका प्रमाण थे कि आप बिलकुल मामूली चीजोंसे, यहाँ तक कि तिनकोंसे भी, किस प्रकार सुन्दर कलाकृतियों की सृष्टि कर देते हैं।

भारत तथा विश्वको ऐसी और भी बहुत-सी कलाकृतियाँ देने के लिए आपको दीर्घायु होना है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री अवनीन्द्रनाथ ठाकुर

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३५१. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
२१ दिसम्बर, १९४५

हम सभी यात्री हैं। मैं दो दिनोंके लिए शान्तिनिकेतन गया था। मैं लौट आया हूँ और यहाँ दो-तीन दिन रुककर फिर मिदनापुर जाऊँगा।

हम सभी यात्री हैं। कभी-न-कभी हमें भी लम्बी यात्रापर जाना होगा। यह उसी लम्बी यात्राकी तैयारी है। हमें छोटी या बड़ी, किसी भी यात्राके लिए

१. रवीन्द्रनाथ ठाकुरके भतीजे

दुःख नहीं करना चाहिए। लेकिन उस लम्बी यात्रापर हमें दुःख जरूर होता है, क्योंकि हम जीवन और मृत्युका महत्व नहीं समझते। जीवन और मृत्यु तो एक समान हैं।

आजका गीत ("एई कोरेछो भालो निठुर हे, एई कोरेछो भालो") इस विचारको बहुत अच्छी तरह व्यक्त करता है। इसमें ईश्वरसे प्रार्थना की गई है कि वह हमारे विकारोंको भस्म कर दे। इसमें सफल होने के बाद ही हमें उस लम्बी यात्राके समय कोई दुःख नहीं होगा।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, २२-१२-१९४५

३५२. पत्र : रथीन्द्रनाथ ठाकुरको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
२२ दिसम्बर, १९४५

चि० रथी,

शान्तिनिकेतन जाना और वहाँ अपने अत्यन्त कम समयके प्रवासके दौरान जितना सम्भव था उतना देख-परख पाना मेरे लिए विशुद्ध आनन्दकी बात थी। मैंने तुमसे कहा था कि वहाँ स्वयं तुमसे या विभागाध्यक्षोंके साथ बातचीत[1] के दौरान मैं जो-कुछ नहीं कह पाया वह लिख भेजूंगा।

१. जैसे मुझे यह व्यवस्था पसन्द नहीं है कि छात्र घरसे यहाँ पढ़ने आयें उसी तरह छात्र-छात्राओंको विश्वविद्यालयी परीक्षाओंके लिए तैयार करने की व्यवस्था भी मुझे पसन्द नहीं है। विश्वभारती तो स्वयं एक विश्वविद्यालय है। इसे किसी सरकारसे मान्यता प्राप्त करने की जरूरत नहीं होनी चाहिए। लेकिन अभी स्थिति यह है कि तुम विश्वभारतीकी उपाधियाँ भी दे रहे हो और साथ ही विद्यार्थियोंको मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालयोंके लिए तैयार भी कर रहे हो। तुम्हारे सामने एक उच्च आदर्श है और तुम्हें उसीके अनुसार आचरण करना है। विश्वविद्यालयकी उपाधियाँ एक प्रलोभन है; तुम्हें इसमें नहीं फँसना है। मनुष्यकी कमजोरीका खयाल रखकर जो छूटें गुरुदेवने बिना किसी नुकसानके दीं वे विश्वभारती गुरुदेवके बिना नहीं दे सकती। कमजोरीका खयाल करके छूटें देने का सिलसिला रूढ़िगत मैट्रिक्युलेशन परीक्षाकी शुरुआतसे आरम्भ हुआ। उस समय भी यह चीज मेरे गले नहीं उतर पाई थी और मेरी समझमें नहीं आता कि हमें उससे क्या मिला है। अभी मैं असहयोगकी बात बिलकुल नहीं सोच रहा हूँ। मुझे चिन्ता सिर्फ इस बातकी है

१. देखिए पृ० २५५-५८।

कि शान्तिनिकेतन गुरुदेवके उच्चतम आदर्शोंका प्रतिनिधित्व करे।

२. शान्तिनिकेतनका संगीत बड़ा मोहक है, लेकिन वहाँके प्राध्यापक क्या इस निष्कर्षपर पहुँचे हैं कि बंगला संगीत ही उसकी चरम सीमा है? क्या हिन्दुस्तानी संगीत — अर्थात् मुसलमान-युगके पूर्ववर्ती और परवर्ती संगीत — के पास संगीतकी दुनियाको देने को कुछ नहीं है? यदि है तो शान्तिनिकेतनमें उसको उचित स्थान मिलना चाहिए। बल्कि मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि पाश्चात्य संगीतको भी, जिसने बहुत अधिक प्रगति की है, भारतीय संगीतमें मिश्रित होना चाहिए। विश्वभारतीकी परिकल्पना विश्वविद्यालयके रूपमें की गई है। मगर यह तो एक सामान्य व्यक्ति के मनमें उठने वाला विचार मात्र है, जिसे वहाँके संगीतके आचार्य तक पहुँचा देना है।

एक सवाल संगीतके बारेमें।[1] मुझे लगता है कि जीवनमें जितना अपेक्षित है उससे अधिक संगीत शायद वहाँ है, या यही बात मैं अन्य रीतिसे कहूँगा। स्वर-संगीतके अतिरेकमें जीवन-संगीतके खो जाने की आशंका दिखाई देती है। संगीत ही हो तो फिर चलने-फिरने का संगीत क्यों नहीं, प्रयाणका संगीत क्यों नहीं, हमारी एक-एक हलचल, एक-एक प्रवृत्तिका संगीत क्यों नहीं? मन्दिरमें प्रार्थनाके समय मैंने यों ही नहीं कहा था[2] कि लड़के-लड़कियोंको मालूम होना चाहिए कि वे कैसे चलें, प्रयाण कैसे करें, बैठें कैसे, खायें कैसे, यानी संक्षेपमें, जीवनका हर कार्य कैसे करें। संगीतकी मेरी कल्पना यही है। जहाँ तक मुझे मालूम है, गुरुदेवका अपना जीवन इन सभी बातोंको प्रतिबिम्बित करता था।

३. जब तक तुम बुनियादी दस्तकारी, अर्थात् हाथ-कताईसे शुरुआत नहीं करोगे, वास्तविक ग्रामोद्धार नहीं हो पायेगा। हाथ-कताईके बिना बुनकरकी कला मृत कला है। तुम्हें मालूम है कि मैंने गुरुदेवसे भी इसकी पैरवी की थी; पहले तो उसका कोई असर नहीं हुआ, लेकिन बादमें वे समझने लगे थे कि मेरा असली आशय क्या था। यदि तुम मानते हो कि कताईके सम्बन्धमें मैंने गुरुदेवका मन्तव्य ठीक समझा है तो तुम शान्तिनिकेतनको चरखेके संगीतसे अनुगुंजित करने में कोई संकोच नहीं करोगे।

चरखे और उससे जुड़ी अन्य वस्तुओंके द्वारा तुम अपने समस्त कौशलका परिचय दे सकते हो। क्या तुम्हें मालूम है कि चरखेको गरीब विधवाओंका सहारा माना जाता है? यह भूखोंकी अन्नपूर्णा है। जब कोई चरखेको यज्ञके रूपमें अपनाता है तो तत्काल मूक जन-साधारणसे उसका तादात्म्य स्थापित हो जाता है।

बापूके आशीर्वाद

श्री रथीन्द्रनाथ ठाकुर
शान्तिनिकेतन

अंग्रेजीकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०५५३) से। सौजन्य : विश्वभारती

१. देखिए पृ० २४२ की पाद-टिप्पणी।
२. देखिए पृ० २५३।

३५३. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

सोदपुर
२२ दिसम्बर, १९४५

चि० कान्ति,

तेरा पत्र मिला। दिलचस्प है। तू एक साथ तीन परीक्षाएँ पास करने के लिए परिश्रम कर रहा है। मेरी कामना है कि तू तीनोंमें सफल हो। अच्छा डॉक्टर बन। अन्तर्प्रान्तीय विवाहकी सफलताका अच्छा उदाहरण बन और चरखा-कार्य अथवा रचनात्मक कार्यमें अद्वितीय बन। वस्तुतः देखा जाये तो इन तीनों परीक्षाओंमें अहिंसाका पाठ निहित है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३८२) से। सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

३५४. पत्र : मृदुला साराभाईको

सोदपुर
२२ दिसम्बर, १९४५

चि० मृदुला,

आशा है तुझे मेरा पत्र मिला होगा। मेरी यात्राकी तारीखें नीचे लिखे अनुसार हैं : मिदनापुरके लिए २४ को रवाना होऊँगा और आशा है कि ४ जनवरी तक वापस लौट आऊँगा। चार-पाँच दिन रुकने के बाद असम जाऊँगा। वहाँ एक सप्ताह लगेगा। वहाँसे लौटने के बाद मद्रास जाऊँगा। ज्यादासे-ज्यादा मुझे २३ [जनवरी] तक मद्रास पहुँचना है।

तू खूब घूम रही है और अनुभव प्राप्त कर रही है। कई बार मैं सोचता हूँ कि क्या यह तुम्हारे लिए अच्छा नही होगा कि इतना अनुभव प्राप्त करने के बाद तुम किसी एक जगहपर जमकर इसका उपयोग करो। मनुष्यके अनेक कर्तव्योंमें अपनी स्वास्थ्य-रक्षाके लिए कोई स्थान तो होगा?

मेरे मामलेमें तो ये प्रश्न उठते ही नहीं, क्योंकि मैं तो उसपर सदासे अमल करता आया हूँ। किन्तु क्या कोई ऐसा स्थायी नियम है कि जो एकपर लागू हो उसे समीपर लागू किया जा सके?

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३५५. पत्र : सरयू धोत्रेको

सोदपुर
२२ दिसम्बर, १९४५

चि० सरयू,

तेरा पत्र मिला। मैंने कभी नहीं सोचा था कि तू कलकत्ता पहुँच जायेगी।

मैं यहाँसे २४ तारीखको मिदनापुरके दौरेपर रवाना होऊँगा और आशा है कि ४ जनवरीको वापस लौटूंगा। उसके बाद ४-५ दिन यहाँ रहना होगा। इस दौरान यदि तू मिल सकेगी तो मुझे प्रसन्नता होगी।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती सरयूबहन
धर्मसंघ, किशोर बँगला
२५, बलराम स्ट्रीट
कलकत्ता

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३५६. पत्र : तारा नानाभाई मशरूवालाको

सोदपुर
२२ दिसम्बर, १९४५

चि० तारा,

तेरा पत्र मिला।

कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्टके अपने काममें तू सफल होगी। सुशीलाको पथरीके दर्दसे जल्दीसे-जल्दी छुटकारा दिलाना। वह अच्छी हो जायेगी। कभी-कभी पथरी आदि होनेका अनुमान गलत साबित होता है। देखा गया है कि ऐसे मामलोंमें डॉक्टर भी भूल करते हैं।

बापूके आशीर्वाद

श्रीमती ताराबहन मशरूवाला
अकोला

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३५७. पत्र : रामानन्द तीर्थको

सोदपुर
२२ दिसम्बर, १९४५

स्वामीजी,

आपका पत्र मिला। मैंने सब पढ लिया। कोई शरत कबूल नहीं की है वह तो अच्छा ही किया। पंडितजी से मेरी बात हो गई थी। उनको सब लिखा करो।[1] आपका स्वास्थ्य अच्छा हो रहा है जानकर खुशी हुई।

स्वामी रामानंद तीर्थ
हैदराबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३५८. पत्र : सरस्वती गांधीको

सोदपुर
२२ दिसम्बर, १९४५

चि० सरू,

तेरा पत्र मिला है। दोनोंके मीठे झगडेका रसिक वर्णन कातिने दिया है। जब दोनों एक-दूसरेका प्रमाणपत्र दोगे या एकने दूसरेको जीत लिया है जानूंगा तब मैं 'पगली' विशेषण खैंच लूंगा, और कुछ 'पगली' के जैसा ही अच्छा विशेषण दूंगा। मोहवश होकर तो इस संसारमें अनेक पति-पत्नि अपना व्यवहार सरल चलाते हैं लेकिन ज्ञानमय ऐक्य और सरलता पैदा करने में ही सच्चा पराक्रम है।

शांति[2] अच्छा होगा।

तुझे एक चीज सीखनी चाहिये। सामान्यतया संसारमें पत्निका समय बहोत करके रसोडेमें जाता है। अगर तु जीने के लिये खाने की कला ज्ञानपूर्वक हस्तगत कर लेगी तो रसोडेमें कमसे-कम समय देना पडेगा। इसके लिये तुझे युक्ताहारके नियम समझ लेना चाहिये। यह कैसे हो सकता है यह सचमुच जानना चाहोगी तो किसी रोज बताऊंगा।

तुमने मद्रास आने की रजा मागी है। सिर्फ मिलने खातर ही मिलना है तो मैं कहूंगा कि पैसे बचा लो, समय बचा लो। समय बचाना वह भी पैसे बचाना है। लेकिन आना ही चाहिये ऐसा लगे तो अवश्य आ जाओ।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३८३) से। सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

१. देखिए पृ० १२२ भी।
२. सरस्वती गांधीका पुत्र

३५९. पत्र : पल्टू झाको

सोदपुर
२२ दिसम्बर, १९४५

पंडितजी,

आपका पत्र मिला।

संस्कृतके बारेमें तो मैंने आपको उत्तर दे दिया है। मैंने वर्णाश्रमके बारेमें काफी लिखा है। मेरे लेखोंका एक संग्रह[1] भी छप गया है। उसकी प्रस्तावना[2] में मैंने अपने आजके विचार लिखे हैं। उसका सार यह है कि हिन्दुका धर्म है कि वे सच्चे भावसे अपनेको हरिजन यानी अतिशुद्र मानें। ऐसा करने से ही हिन्दुधर्म की शुद्धि हो सकती है और हिन्दुधर्म बच सकता है। इसमें आपके प्रश्नोंका उत्तर आ जाता है।

आपके दोनों पुस्तक मैं कब पढूंगा वह नहीं कह सकता हूं। पढ़ने की मेरी इच्छा बनी रहेगी।

आपने अपने कार्डमें नाम ठिकाना अंग्रेजीमें छपवाया है। वह किस दृष्टिसे और किसके लिए?

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५६८२) से

३६०. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
२२ दिसम्बर, १९४५

हम ईश्वरके सिवा और किसीकी दयापर जीवित रहना नहीं चाहते। 'गीता' हमें निर्भय होने की शिक्षा देती है। यदि आप निर्भय हों तो आपको कोई दबाकर नहीं रख सकता। यदि कोई मुझसे सिर झुकाने को कहे — मैं बूढ़ा आदमी हूं और कोई भी आदमी मुझे धक्का दे सकता है या मारकर गिरा सकता है —

१. वर्णव्यवस्था
२. देखिए खण्ड ८०, पृ० २३१-३३।

और मैं कहूँ कि मैं सिर नहीं झुकाऊँगा, तो वह ज्यादासे-ज्यादा यही कर सकता है कि मुझे मार डाले। यह निर्भयता ही स्वराज्य है। यदि प्रत्येक व्यक्ति इसी तरह आचरण करे या ऐसी ही भावना रखे, तो फिर स्वराज्य ही है। इसका यह अर्थ नहीं कि सरकार आज ही चली जायेगी, लेकिन यह अर्थ जरूर है कि कोई भी शक्ति हमारा सिर नहीं झुका सकती। तोतेकी तरह केवल स्वराज्य शब्द रटने से हमें स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं होगी। हमारे कार्य भी उसीके अनुरूप होने चाहिए।

सभामें गाये गये गीतका अर्थ समझाते हुए गांधीजी ने कहा कि गुरुदेव-रचित अनेक गीतोंमें से कोई एक उपयुक्त गीत चुनना कोई सरल बात नहीं है। इस गीत-विशेषमें कविने हमसे कायरताका त्याग करने को कहा है। हम सब एक छोटी-सी नौकामें सवार हैं और ईश्वर हमारा खेवनहार है। जब ईश्वर खेवनहार हो तब हमें किसी चीजसे डरना नहीं चाहिए। ईश्वरके हाथ कमजोर नहीं, वह हमें सकुशल हमारी मंजिल तक पहुँचा देगा।

गांधीजी ने श्रोताओंसे कहा कि आप लोग ईश्वरमें विश्वास रखें। आप लोगोंको जीवन-सागरको तैरकर पार करना है। सोचिए तो, आखिर भय है क्या? यह शब्द खुद आप लोगोंको भयभीत कर देता है। इसलिए आप लोग इस गीतके सारको अपने हृदयमें उतार लें। जब तक मैं कलकत्तामें हूँ तब तक, न आप लोग मुझे छोड़ें और न मैं आप लोगोंको छोड़ूँगा। आप लोग भजनको मेरे साथ मिलकर एक साथ गायें।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, २३-१२-१९४५

३६१. पत्र : रंगनायकी देवीको

सोदपुर
२३ दिसम्बर, १९४५

चि० रंगनायकी,

तुम्हारा पत्र मिला। पत्र और कतरन मैंने डॉ० सुशीला नैयरको दिखा दी है। वह कहती है कि इसमें काफी बड़ी शल्य-क्रिया तो करनी होगी। लेकिन मैं तुम्हें अपने डॉक्टर मित्रके अमेरिका जाने का खर्च उठाने की सलाह नहीं दूँगा। तुम स्वयं वहाँ जाना जरूरी समझती हो तो जा सकती हो, लेकिन इस सम्बन्धमें फैसला तो तुम्हींको करना है।

मैं तो यह सोचता हूँ कि अपने बहरेपनको तुम्हें एक वरदानके रूपमें लेना चाहिए और अन्दरकी आवाजको सुनना चाहिए। जो सुनने लायक है वह तुम्हारे

लिए लिख दिया जायेगा। लेकिन यह तभी किया जा सकता है जब तुम्हारी इच्छा ऐसा करने की हो, अन्यथा नहीं।

बापूके आशीर्वाद[1]

श्री रंगनायकी देवी
फर्स्ट हाउस
श्रीरंगम्, द० भा०

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३६२. पत्र : मणिबहनको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
२४ परगना
२३ दिसम्बर, १९४५

चि० मणिबहन,

काकुभाई[2] ने सुझाव दिया है कि तुम्हें अखिल भारतीय चरखा संघकी बम्बई शाखाका मन्त्रिपद सौंप दिया जाये। उनका कहना है कि इस आशयका पत्र तुमने पढ़ा भी है। यदि तुम उक्त पदको सुशोभित कर सको तो यह मुझे तो बहुत ही अच्छा लगेगा। तुम्हारी योग्यताके बारेमें तो मैं जानता हूँ, किन्तु हिसाब-किताब सँभालने की सामर्थ्य भी तुममें है, इसकी जानकारी मुझे नहीं थी। किन्तु यदि ऐसा है तो इससे मुझे प्रसन्नता ही होगी। अतः सोच-समझकर उत्तर देना। मैं यह नहीं चाहता कि तुम्हारे मन्त्रिपद ग्रहण करने के बाद मुझे यह मानना पड़े कि तुम किसी भी हिसाब-किताब रखने वालेसे कम हो। मैं न तो बहनोंका सरपरस्त माने जाने का इच्छुक हूँ और न उनकी आड़ बनने का। बहनोंमें स्वतन्त्र रीतिसे जूझने और अपने क्षेत्रमें किसी भी पुरुषकी तुलनामें पीछे न रहने की योग्यता आ जाये, यह कामना तो मैं दक्षिण आफ्रिकासे करता ही रहा हूँ। और मैं समझता हूँ कि इस प्रयत्नमें मुझे अच्छी सफलता मिली है।

और क्या यह सही है कि तुम अपने पतिके पद-चिह्नोंका अनुसरण करने के बजाय कृत्रिम रेशमकी मिलमें एजेन्ट हो? अथवा क्या इस मिलकी डायरेक्टर होने में स्वयं तुम्हें असंगतिका अनुभव नहीं होता? इस सम्बन्धमें मैं कोई निर्णय कर सकूँ, उसके पूर्व मैं इस पत्रके उत्तरकी अपेक्षा करूँगा। मुझे खुलकर लिखना। उत्तर

१. हस्ताक्षर देवनागरी लिपिमें हैं।
२. पुरुषोत्तम कानजी जेराजाणी

ऊपर लिखे पतेपर देना। २० जनवरी तक मैं बंगाल और असममें रहूँगा, किन्तु मेरा मुख्यालय सोदपुर ही रहेगा।

यह पत्र लिखने के बाद मुझे तुम्हारा पत्र मिल गया है। किन्तु इसमें सब आ गया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३६३. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

सोदपुर
२३ दिसम्बर, १९४५

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा १६ तारीखका पत्र और १९ तारीखका पोस्ट-कार्ड मिल गया है।[1]

गरीब लोगोंको अस्पतालमें रखने पर उनसे कोई फीस नहीं ली जायेगी, लेकिन वे जितना दे सकेंगे उतना हम ले लेंगे। अर्थात् जैसा सेवाग्राममें होता है वैसा ही हम यहाँ भी करेंगे। फिलहाल तो हमारे खाने-पीने का खर्च ही इतना ज्यादा आता है जिसे सामान्य आदमी उठा नहीं सकता। हमें इस बातपर विचार करना होगा कि ऐसे लोगोंके लिए कैसी खुराककी व्यवस्था की जाये जिससे उनके रोगको दूर किया जा सके और उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रखा जा सके।

(२) अमीरोंमें से तो हम उन्हींको अस्पतालमें रखेंगे जो गरीबोंके साथ उनके समान रहने को तैयार होंगे। यदि उनके लिए विशेष व्यवस्था करनी पड़े तो इस अस्पताल या आरोग्य-भवनमें मुझे उनके लिए गुंजाइश नहीं दीखती। धनवान होने के कारण उन्हें अलगसे कमरा दिया जाना भी मुझे असह्य लगेगा। फिलहाल तो नये कमरे आदि बनवाने का विचार मुझे ठीक नहीं लगता, क्योंकि गरीब रोगियोंमें से कौन रहेगा अथवा हम किसे रखेंगे, यह तो अनुभवसे ही जाना जा सकेगा। जिस समय तंगी महसूस होगी उस समय देख लेंगे। इसलिए मेरी राय तो यही है कि आवश्यक खर्चके अलावा अभी हमें किसी और खर्चमें नहीं पड़ना चाहिए।

(३) कुर्सियाँ आदि तो वहाँसे हटानी ही पड़ेंगी। इसमें से कुछ सामान तो डॉक्टर स्वयं खरीद लेना चाहते थे। मैं नहीं जानता कि उनकी अब भी ऐसी इच्छा है या नहीं। लेकिन यदि उनकी इच्छा न हो तो मुझे आशंका है कि सामान बेचने का प्रबन्ध मुझे ही करना पड़ेगा। मुझे उम्मीद तो है कि हम यह काम कर सकेंगे। फिलहाल जितने बिस्तर हैं, हमें उन्हींसे काम चलाना चाहिए। मुझे लगता है कि हमें अभी तुरन्त अधिक रोगियोंको भरती नहीं करना पड़ेगा।

(४) इसका उत्तर ऊपर आ जाता है।

(५) गरम पानीके लिए जो बायलर है अगर वह बेकार हो गया हो तो उसे हटाकर नया खरीद लेना चाहिए। इस बारेमें मेरी डॉक्टरके साथ कुछ बातचीत

१. ये उपलब्ध नहीं हैं।

हुई तो थी, लेकिन क्या हुई थी, यह मैं भूल गया हूँ। यदि इस सम्बन्धमें पड़ोसके मिल-मालिक अथवा बिड़लाजी की मदद माँगनी पड़े तो मैं माँगने के लिए तैयार हूँ। इस विषयमें डॉक्टर जो कहें वही करो।

(६) १ जनवरीसे रोगी आ ही जायेंगे, ऐसा मानने की कोई जरूरत नहीं। जो रोगी इस समय वहाँ हैं हमें उनकी व्यवस्था तो करनी ही होगी। वे लोग जमीन पर बैठकर, चीनीकी प्लेटमें भी खाना खा सकते हैं।

(७) जितनी खादीकी जरूरत होगी, उतनी खादी प्राप्त करने की व्यवस्था मैंने कर ली है। इसलिए यदि मुझे माप लिख भेजोगे तो मैं उतनी खादी भेज सकूँगा। ३ दर्जन चादरोंके लिए तुमने ही ५-७ थान भेजने की बात कही थी। क्या इतना काफी होगा?

(८) वहाँ सेवकोंमें से जो लोग अलगसे अपना भोजन बनाते और खाते हैं, वे इसे जारी रख सकते हैं या नहीं, इसपर गौर करना। जिन्हें मांसकी जरूरत है उनके लिए मांसकी व्यवस्था करना हमारा धर्म है। उन्हें प्रेमपूर्वक मांस पकाकर खिलाना मैं कर्तव्य मानता हूँ। एक ही रसोईमें दोनों चीजें बनाने में असुविधा अथवा छूतछातकी बात मैं नहीं मानता — और न किसीको ऐसा मानना ही चाहिए। छूतछातका विचार [हमारे धर्मका] अनावश्यक अंग है। जो शाकाहारी हैं वे अपने धर्मका पालन करें। यह तो मैं मानता हूँ कि जिस बर्तनमें मांस पकाया जाये उसीमें शाक-भाजी नहीं पकाई जा सकती। लेकिन इस मामलेमें डॉक्टर तथा गुलबाई जो कहें उसे मानना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। हम अप्रत्यक्ष रूप से लोगोंको शाकाहारी बनाना चाहते हैं, इस बातका शक भी उनके मनमें नहीं आना चाहिए। लेकिन जो व्यक्ति सहज ही इस बातको उचित मानकर शाकाहारी बने उसका हम स्वागत करेंगे।

डॉक्टर जिन रोगियोंके लिए अंडा अथवा मांस जरूरी समझें उन्हें ये उक्त वस्तुएँ देना मैं कर्तव्य समझता हूँ।

(९) उपचारकोंका चुनाव डॉक्टर ही करेंगे।

(१०) उत्तर देने की जरूरत नहीं।

(११) इस समय तो गरीब रोगियोंका मापदण्ड मैं बालकोबा[1] को मानूँगा।

(१२) डॉक्टरकी तरह मैं भी यह मानता हूँ कि अन्ततः हमें इस जगह से किसी अधिक बड़ी जगहमें जाना होगा। मुझे पूरा विश्वास है कि इसके लिए ईश्वर हमारा मार्ग प्रशस्त करेगा।

(१३) फिलहाल सेवाग्रामसे किसीको बुलाने की जरूरत नहीं है। मणिभाईके बारेमें तो मैं लिख चुका हूँ। हम जब उन्हें बुलायेंगे वे तभी आ जायेंगे।

(१४) सारा खर्च मुझे उठाना होगा। वहाँ बैंकमें कुछ नहीं है क्या? मुझे लगता है कि यह प्रश्न मैंने अपने पिछले किसी पत्रमें भी पूछा था। शायद डॉक्टरको लिखे पत्रमें पूछा था।

(१५) तुमने जो राय जाहिर की है, मैं हमेशासे ऐसा ही सोचता आया हूँ। मुझे लगता है कि अब मैंने तुम्हारे सभी प्रश्नोंका उत्तर दे दिया है। तथापि

१. बालकृष्ण भावे

यदि कोई बात समझमें न आये तो मुझे अवश्य लिखना। मुझे सोदपुरके पतेपर ही लिखना।

तुम्हारा पोस्ट-कार्ड आज मिला है। उसमें तुमने जो प्रश्न पूछे हैं उनका जवाब ऊपर आ गया है।

मैंने यह पत्र दुबारा नहीं पढ़ा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६२२) से। सी० डब्ल्यू० ७१९५ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

३६४. पत्र : प्रेमा कंटकको

सोदपुर
२३ दिसम्बर, १९४५

चि० प्रेमा,

तेरा ता० १७-१२-'४५ का पत्र विचित्र है, भाषा भी विचित्र है। ऐसा तेरा यह पहला ही पत्र है। तू काममें बहुत व्यस्त है। यह कितने आश्चर्य और दुःख की बात है कि तू सेविका होने का दावा करती है और समय-समयपर पैसे माँगने में शरमाती है? सेवाकी खातिर पैसे माँगने में शर्म कैसी? रेलगाड़ीसे सिर निकालकर पैसा-पैसा माँगते तूने मुझे देखा तो है ही! भीख माँगने में तूने मदद भी की है। परन्तु जिस पत्रका मैं उत्तर दे रहा हूँ वह तो किसी सेठका पत्र मालूम होता है। अपने स्वार्थके लिए तू पैसे माँगे और शरमाये, इसे तो मैं समझ सकता हूँ। परन्तु सेवाकी खातिर तो सौ बार पैसे माँगे तो भी क्या ज्यादा कहा जायेगा? तूने जो अतिरिक्त पैसोंकी माँग की है उसकी नकल भी नहीं भेजी। यदि तूने मुझे अध्यक्षके नाते पत्र लिखा हो तो तुझे नियमानुसार मन्त्रीको लिखना चाहिए था। मन्त्रीकी मार्फत आये हुए पत्रका उत्तर मैं तुरन्त दे सकता हूँ। यदि तूने मुझे बुजुर्गके नाते लिखा हो तो मुझे इतना ब्योरा देना चाहिए जिससे मैं तुरन्त पैसे भेज सकूँ।

मैंने तो तुझे पुत्री, साथी और सुशीलाकी सगी बहनसे भी ज्यादा घनिष्ठ मानकर तुझसे मार्गदर्शन पाना चाहा था। किन्तु मार्गदर्शन करने के बजाय तूने ऐसा पत्र लिखा, मानो हम एक-दूसरेको जानते ही न हों। यह क्या है, समझमें नहीं आता। इस पत्रका उत्तर सोदपुरके पतेपर भेजना। मैं बंगालका दौरा कर रहा होऊँगा और यहाँसे पत्र वहाँ पहुँचा दिया जायेगा।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४४२) से। सी० डब्ल्यू० ६८८१ से भी; सौजन्य : प्रेमा कंटक

३६५. पत्र : डॉ० एन० बी० खरेको

सोदपुर
२३ दिसम्बर, १९४५

भाई खरे,

आपका पत्र मिला।[1] उसके लिये धन्यवाद। मैं सारा का सारा पढ़ गया हूं। देखें अब क्या होता है।

इसके साथ अखबारकी एक कतरन[2] भेजता हूं। यह मेरी दृष्टिसे तो बिलकुल गलत चीज है। हकीकत तो इससे उल्टी ही है ना?[3]

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४८७०) से। सौजन्य : एन० बी० खरे

३६६. पत्र : टी० जे० केदारको

सोदपुर
२३ दिसम्बर, १९४५

भाई केदार[4],

ऐसी चीज अखबारमें आई है। मैं तो हैरान हुआ हूं। डा० [एन० बी०] खरेको असल टुकड़ा मैंने भेजा है,[5] नकल आपको भेजता हूं। हकीकत तो इससे उल्टी है ना? इस तरह कौन छपवा सकते हैं? ऐसे बिगड़ी चीज कैसे बन सकती है? अगर जो अखबारमें आया है, ऐसा ही मन्तव्य डा० खरे साहेबका भी हो, तब तो दुरुस्ती नहीं हो सकती। सोचो और मुझे लिखो। मेरा पता २० जनवरी

१. एन० बी० खरेने अपने पत्रके साथ गांधीजी के पढ़ने के लिए मलायावासी भारतीयों की सहायताके लिए तैयार की गई भारत सरकारकी एक योजना भी भेजी थी।

२. जिसमें यह खबर छपी थी कि गांधीजी एन० बी० खरेसे मिलने को उत्सुक हैं।

३. एन० बी० खरेने अपने १२ जनवरी, १९४६ के पत्रमें लिखा था कि उन्होंने समाचार-पत्रोंको कोई भेंट नहीं दी थी और उनमें गांधीजी के साथ उनकी भेंटकी खबर पढ़कर उन्हें आश्चर्य हुआ।

४. मध्य-प्रान्तके कांग्रेसी कार्यकर्ता। उन्होंने खरे और गांधीजी के बीच मध्यस्थता की थी; देखिए पृ० २१६, पा० टि० २।

५. देखिए पिछला शीर्षक।

तक सोदपुर ही समझा जाय अगरचे मैं बंगाल और आसाममें इधर-उधर घूमता रहूंगा। सोदपुरके पतेपर भेजे हुये पत्र मुझे मिल जावेंगे।

यह लिखने के बाद आपका खत मिला। मेरे पास तो ऐसी बात किसीने कही नहीं है। मैं जानता हूं कि आपने आश्टी चिमूर केसमें एक कौड़ी भी फी नहीं ली है।[1]

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४८७४) से। सौजन्य : एन० वी० खरे

३६७. पत्र : हरिगणेश फाटकको

सोदपुर
२३ दिसम्बर, १९४५

भाई हरिभाऊ,

आपका अंग्रेजी पत्र मिला। मुझको मराठीमें क्यों नहीं लिखा ? अगर हिन्दुस्तानीमें नहीं लिख सकते थे तो।

सावित्रीबाईका नाम भेजने में कोई गलती नही हुई है। भेजने का आपका धर्म था। ठक्कर बापाको लिखा सो अच्छा ही किया। मैं प्रेमाबहिनके साथ पत्र-व्यवहार कर रहा हूं। सावित्रीबाईका नाम ख्यालमें रखूंगा। उनके पति क्या करते हैं ?

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ६१०३) से

३६८. पत्र : चारुचन्द्र भण्डारीको

२३ दिसम्बर, १९४५

भाई चारुबाबू,

आपका खत दुःखप्रद है। मै क्या करुं? मेरी शक्तिका ख्याल करना चाहीये। मैं चार बजेसे आगे नही जा सकुंगा। मेरी शक्ति होती तो मैं सब जगह चला जाता। मैं तो आपका सव काम आध घंटेमें खतम कर सकता हूं। आप मुझे क्षमा करेंगे। यही मेरी याचना।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६९९) से। सी० डब्ल्यू० १४७० से भी; सौजन्य : ए० के० सेन

१. देखिए पृ० २९ और खण्ड ७९, पृ० ३६० भी।

३६९. पत्र : अन्नासाहब सहस्रबुद्धेको

सोदपुर
२३ दिसम्बर, १९४५

भाई सहस्रबुद्धे,

आपका पत्र मिला। मैंने सब पढ़ लिया है। इस बारेमें इस वक्त तो कुछ करने का है नहीं ऐसा समझा हूं।

बापुके आशीर्वाद

श्री सहस्रबुद्धे
खादी वस्त्रालय
महाल, नागपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३७०. पत्र : त्रिपाठीको

सोदपुर
२३ दिसम्बर, १९४५

भाई त्रिपाठी,

आपने मुझे अंग्रेजीमें खत क्यों लिखा? आप शायद महाराष्ट्री है या गुजराती। अगर ऐसा ही है तीनमें से एक हिन्दुस्तानी भाषामें लिख सकते थे। राष्ट्रभाषामें या मातृभाषामें लिख सकते थे। अगर बंगाली हैं तो बंगालीमें भी लिख सकते थे। आप क्या करते हैं?

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३७१. बातचीत : राजनीतिक कार्यकर्ताओंके साथ[1]

सोदपुर
२३ दिसम्बर, १९४५

पहला [प्रश्न] एक महिलाका था जो यह जानना चाहती थीं कि बाकी कैदी कब रिहा किये जायेंगे। ऐसी खबर थी कि गांधीजी ने उनके बारेमें गवर्नर महोदय से बात की थी। उक्त महिलाने कहा कि इन कैदियोंमें से कुछ तो बहुत ही महत्वपूर्ण कार्यकर्ता हैं, जिनके बिना यह नहीं कहा जा सकता कि इतना बड़ा कांग्रेस संगठन पूरी मुस्तैदीसे काम कर रहा है।

गांधीजी ने कहा कि गवर्नर महोदयके साथ मैंने कई विषयोंपर चर्चा की है, लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि उनके बारेमें मुझसे जिरह की जाये। लेकिन मैं यहाँ उपस्थित लोगोंके साथ मिलकर यही आशा करता हूँ कि अगर हमें शीघ्र ही आजादी मिलने वाली है, तो ये कैदी जितनी जल्दी छोड़ दिये जायें, उतना ही अच्छा होगा। उन्होंने प्रश्न करने वाली महिलासे कहा कि यदि मेरी तरह आपको भी ऐसा विश्वास है कि देशभक्तोंके लिए तो कारागार मुक्तिके द्वारकी तरह है तो आपको उन कैदियोंके लिए चिन्ता नहीं करनी चाहिए। क्या सारा-का-सारा भारत ही एक विशाल कारागार नहीं है?

एक छात्रने पूछा कि विद्यार्थियोंको क्या भूमिका निभानी चाहिए? उत्तरमें गांधीजी ने कहा कि छात्रोंके विभिन्न और परस्पर-विरोधी संगठन हों, यह बात मेरी समझमें नहीं आती। सभी छात्रोंको स्वतन्त्रता-प्रेमी होना चाहिए, और स्वतन्त्रता-प्रेमी प्रत्येक छात्र विचारसे तो कांग्रेसी ही होगा। लेकिन उनका पहला कर्तव्य पढ़ाई करना है। वे सभी देशके सेवक हैं। उनके अन्दर साम्प्रदायिकताकी भावना लेशमात्र नहीं होनी चाहिए और न उन्हें अस्पृश्यता बरतनी चाहिए। उन्हें रचनात्मक कार्यक्रमको अपनाना चाहिए और चरखा तथा चरखेसे सम्बन्धित अन्य चीजोंको अपनाकर उसके जरिये भारतके करोड़ों गरीब गाँववालोंके साथ तादात्म्य स्थापित करना चाहिए। बाकी इतना ही है कि वे हरएककी हर बात आदरपूर्वक सुनें, हर बातको अपने मनमें तोलें और जो ठीक लगे, उसे मानें। लेकिन उन्हें दलगत राजनीतिसे अलग रहना चाहिए।

१. समाचारपत्रोंके लिए जारी किये गये प्यारेलालके "वीकली लेटर" ("साप्ताहिक पत्र") से उद्धृत। चर्चामें बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके सदस्य, विद्यार्थी और श्रमिक नेता शामिल थे। बातचीत गांधीजी के शान्तिनिकेतन रवाना होने के पूर्व दिनके ३ से ५ बजेके बीच हुई।

एक अन्य प्रश्न यह पूछा गया कि क्या "वन्देमातरम्" गानको हटाकर उसकी जगह "कदम-कदम" वाले नये गीतको अपनाया जाना चाहिए। गांधीजी ने कहा कि "वन्देमातरम्" गीतके साथ बलिदानोंकी एक शानदार परम्परा जुड़ी हुई है, और ऐसे गीतको कभी नहीं छोड़ा जा सकता। यह तो ऐसा ही होगा जैसे कोई अपनी माताका त्याग कर दे। लेकिन अच्छी तरह सोच-परखकर "कदम-कदम" गीतको या इस-जैसे कुछ और गीतोंको राष्ट्रीय गीतोंकी श्रृंखलामें जोड़ा जा सकता है।

[प्र० :] क्या १९४२ में जनताने हिंसा की थी?

गांधीजी ने प्रश्नकर्ताका ध्यान अपने उस उत्तरकी ओर दिलाया जो उन्होंने टॉटेनहम पुस्तिकाके जवाबमें दिया था[1], और कहा कि यदि कुल मिलाकर जनता अहिंसक न रही होती तो भारत फिर पीछेकी ओर सरक गया होता। उन्होंने कहा कि सरकारने व्यर्थ ही प्रमुख कांग्रेसियोंको जेलोंमें डालकर जनताको उत्तेजित कर दिया था। उस समय जनतामें पूर्ण अहिंसाका पालन करने के लायक संयम उत्पन्न नहीं हुआ था। मेरी तब यह राय थी कि जनताने जो हिंसा की थी, उसकी बनिस्बत सरकारकी हिंसा बहुत ज्यादा थी, और इस रायको बदलने का मेरे पास आज भी कोई कारण नहीं है।

[प्र० :] मुसलमानोंको कांग्रेसकी ओर खींचने के लिए कांग्रेसजन क्या कर सकते हैं?

गांधीजी ने कहा, इस समय चारों ओर अविश्वासका जैसा वातावरण है, उसमें मुसलमानोंको या किसी गुट या व्यक्तियोंको कांग्रेसमें लाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। लेकिन हर हिन्दू यह जरूर कर सकता है कि वह अपने मुसलमान, बल्कि प्रत्येक गैर-हिन्दू पड़ोसीकी सेवा अपने सगे भाईके समान करे। ऐसी निःस्वार्थ सेवाका अन्तमें प्रभाव पड़कर रहेगा। अहिंसाका यही रास्ता है, जिसे प्रेम भी कहा जाता है।

यह पूछे जाने पर कि पूंजीपतियों और श्रमिक वर्गके बीचके वर्ग-संघर्ष में कांग्रेसकी क्या स्थिति है, गांधीजी ने कहा कि मैं कांग्रेसका चवन्नीका सदस्य भी नहीं हूँ, इसलिए मैं केवल व्यक्तिगत रूपसे यह कह सकता हूँ कि अपने पूँजीपति मित्रों के साथ मेरे जो सम्बन्ध हैं, वह पूंजीपतियोंके प्रति कांग्रेसके रवैयेका द्योतक है। मैं बिड़ला-जैसे पूंजीपतियोंके आतिथ्यको मुक्त रूपसे स्वीकार करता हूँ और उनके धनका गरीबोंकी सेवा करने में उपयोग करता हूँ, लेकिन ये पूंजीपति मुझसे किसी प्रतिदानकी अपेक्षा नहीं करते। इसके विपरीत, गरीबोंकी खातिर मैं उनका जो शोषण करता हूँ उसकी उन्हें खुशी है। पूँजीपतियोंके साथ मेरे सम्बन्धोंका आधार नैतिक है। मैं किसीके भयसे पूंजीपतियोंका साथ नहीं छोड़ सकता। मेरी समझमें ऐसा करना गरीबोंके साथ गद्दारी होगी।

इसी प्रकार कांग्रेसने अपनी आजादीकी लड़ाईमें पूंजीपतियोंसे आर्थिक मदद और सहयोग लिया है, लेकिन वह पूंजीपतियोंकी संस्था न कभी थी और

१. देखिए खण्ड ७७, पृ० १०२-२१३।

नहीं हो सकती है। कांग्रेस श्रमिकोंके अधिकारोंकी रक्षा करने को प्रतिबद्ध है; और जो भी उन अधिकारोंको छीनने की कोशिश करेगा, उनके विरुद्ध वह लड़ेगी। शुरूसे ही कांग्रेसने गरीबोंका साथ दिया है और जाने-अनजाने वह जनता की संस्था बनने का प्रयत्न करती रही है। गांधीजी ने दादाभाई नौरोजीकी प्रसिद्ध पुस्तक 'पॉवर्टी एंड अन-ब्रिटिश रूल इन इंडिया' का उल्लेख करते हुए कहा कि इस पुस्तकसे देखा जा सकता है कि कांग्रेसके इस पितामहको भारतीय जन-साधारणकी कितनी चिन्ता रहती थी।

अब आप समझ सकते हैं कि मैं आपसे कांग्रेसको सहयोग देने को क्यों कहता हूँ। आप कांग्रेसके बाकायदा सदस्य हों या न हों, आपको कांग्रेसका समर्थन करना चाहिए और उसकी सेवा करनी चाहिए। कांग्रेसका तिरंगा ध्वज सत्य और अहिंसाका प्रतीक है। यही एकमात्र ध्वज है जो इस योग्य है कि आप उसे अपनायें। संसारमें सत्यसे बड़ी शक्ति और कोई नहीं है। सत्यसे रहित मनुष्य पशुसे बेहतर नहीं है। अगर आप सत्यको अपनी लाठी और अहिंसाको अपनी ढाल बना लें तो आपकी शक्तिका कोई सामना नहीं कर सकेगा।

मैं स्वयंको आपके जैसा एक मजदूर मानता हूँ। मैं नहीं समझता कि पूँजीपतियों और श्रमिकोंके बीच कोई मूलभूत शत्रुता है। सच तो यह है कि श्रम ही सच्ची पूंजी है। पूँजीपतियोंका तमाम सोना भी आपको एक टुकड़ा रोटी नहीं दे सकता। पूँजीका फल तभी मिलता है जब उसमें श्रमका योग होता है। फिर, पूँजीपतियोंका सोना-चाँदी हर जगह काम नहीं आ सकता, लेकिन श्रम तो एक ऐसा सिक्का है, जो हर जगह चलता है। पूँजीपतिकी सम्पदा तो लूटी जा सकती है, लेकिन श्रमिककी उद्यम-रूपी सम्पदाको कोई नहीं लूट सकता।

इसके अतिरिक्त, पूँजीपतियोंकी संख्या तो बहुत थोड़ी है, श्रमिकोंकी संख्या बहुत ज्यादा है। लेकिन पूँजीपतियोंका संगठन बहुत अच्छा है। और वे एक होकर काम करना सीख गये हैं। अगर श्रमिक लोग भी अपनी आन्तरिक शक्ति को समझ लें और मिलकर काम करने का रहस्य सीख लें, तो फिर पूंजी श्रम पर नहीं, श्रम पूँजीपर राज करेगा।

गांधीजी ने कहा कि अहमदाबाद मजदूर संघ एक आदर्श संगठन है, जिसका अनुकरण आप लोग करें। यह दुनियाका शायद सबसे ज्यादा सुसंगठित मजदूर संघ है। यह संघ अपने कोषसे मुफ्त अस्पताल, बच्चोंके लिए स्कूल और सस्ते गल्लेकी दुकानें चलाता है। इसने कई सफल हड़तालोंका संचालन किया है। सफल हड़तालकी अनिवार्य शर्त यह है कि हड़तालके दौरान हड़तालियोंको अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए जनताकी मेहरबानीपर निर्भर नहीं रहना पड़े। संकटकी स्थितिमें उनके पास कोई वैकल्पिक धन्धा होना चाहिए, जिसका सहारा वे ले सकें। गांधीजी ने बताया कि किस प्रकार एक बार अहमदाबादके श्रमिकों

की २१ दिनकी हड़तालके दौरान[1] उन्होंने हड़तालियोंसे कह दिया था कि वे उन्हें काम तो दे सकते हैं, लेकिन खैरात नहीं। उन्होंने कहा, खैरातने हड़तालियों का नैतिक बल तोड़ दिया होता। सूत कातना इसके लिए एक बहुत ही अच्छा धन्धा है। आप लोग इसे सीखें और अपने घरोंमें सूत कातें। अन्तमें गांधीजी ने कहा कि कोई हड़ताल मालिकोंके प्रति द्वेष भाव रखकर नहीं, बल्कि मजदूरों को उचित अधिकार दिलाने के लिए होनी चाहिए। अधिकार और कर्तव्य आपस में जुड़े हुए हैं और कर्तव्यका ठीक-ठीक पालन करने से ही अधिकार मिलता है।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, २५-१२-१९४५

३७२. पत्र : आर० जी० केसीको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
२४ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

२२ तारीखको जब हम मिले थे तब मैंने वादा किया था कि टॉटेनहम पुस्तिकाका जो उत्तर[2] मैंने दिया था उसकी एक प्रति मैं आपको भेजूंगा। उसे अब भेजते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है और मुझे आशा है कि आप इसे पढ़ने का समय निकाल सकेंगे और सम्भव होगा तो श्रीमती केसीसे भी पढ़ने को कहेंगे।

जब आपसे मुलाकात हुई उस समय मैं नमक-करके बारेमें आपसे पूछना भूल गया। मुझे विश्वास है कि आप इस लोकोपकारी मामलेको भूले नहीं होंगे।

कल कुछ मित्रोंके साथ हुई बैठक[3] में पहला सवाल मुझसे कैदियोंके बारेमें पूछा गया। प्रश्न एक महिलाने पूछा था। मैं यह महसूस करता हूँ कि अगर आपकी सरकार अभी भी इन कैदियोंको जेलमें रखने का आग्रह करती है तो यह बिलकुल गलत होगा। इनमें से कुछ कैदियोंका स्वास्थ्य तो बहुत खराब हो गया है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]

गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेंट, १९४४-४७, पृ० १३३

१. १९१८ में; देखिए खण्ड १४।
२. देखिए खण्ड ७७, पृ० १०३-२१३।
३. देखिए पृ० २८३-८४।

३७३. पत्र : सन्तोष कुमार बसुको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
२४ दिसम्बर, १९४५

प्रिय सन्तोषबाबू,

आपके पत्र तथा साथके कागजातके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मैंने आपके वक्तव्य[1] को अत्यन्त दुःखके साथ पढ़ा है। आपने जो तथ्य दिये हैं, मैं उनका पूरा उपयोग करूँगा। आपके कहे अनुसार मैं कागजात वापस कर रहा हूँ।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री सन्तोष कुमार बसु
६५, डाइमण्ड हार्बर रोड
खिद्दरपुर

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०५५४) से

३७४. पत्र : शान्तिकुमार मोरारजीको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
२४ दिसम्बर, १९४५

चि० शान्तिकुमार,

तुम्हारा पत्र मुझे आज ही मिला। मैं मिदनापुर जा रहा हूँ। मुझे पत्र ऊपरके पतेपर ही भेजना। मुझे आगा खाँका [मेरा पत्र[2]] मिलने का तार मिला है। पत्र आने पर उसकी नकल तुम्हें भेजूंगा। तारमें उन्होंने मुलाकातका सुझाव दिया है। तुमने जो लिखा है वह ठीक है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४८०७) से; सौजन्य : शान्तिकुमार मोरारजी

१ तामलुक सब-डिवीजनके महिषादल थानेके अन्दर जनवरी १९४३ में होने वाली घटनासे सम्बन्धित। सन्तोष कुमार बसुने, जो उस समय बंगाल सरकारके मन्त्री थे, उपद्रवोंके दौरान महिषादल और तामलुकका दौरा किया था।

२ देखिए पृ० २१८।

३७५. पत्र : हीरालाल शर्माको

सोदपुर
२४ दिसम्बर, १९४५

चि० शर्म्मा,

तुमारा खत आज मिला। मैं अभी मिदनापुर जा रहा हूं। इसलिये पहोंच ही भेजता हूं। काम कठिन ही रहा है। देखता हूं क्या किया जाय।

बापुके आशीर्वाद

बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष, पृ० ३४४ के सामने प्रकाशित प्रतिकृतिसे

३७६. भाषण : प्रार्थना-सभामें[1]

सोदपुर
२४ दिसम्बर, १९४५

सोमवार, २४ दिसम्बर ईसाइयोंके लिए बहुत महत्त्वका दिन है। उसके अगले दिन क्रिसमस त्योहार होगा, और यही कारण है कि आजके भजनमें आप लोगोंने 'बुक ऑफ साम्स' में से एक अत्यन्त उत्कृष्ट अंग्रेजी गीतका अनुवाद सुना। आपको इस गीतका अर्थ समझना चाहिए। उसमें रास्ता भूल जाने वाले एक ऐसे व्यक्तिका चित्रण किया गया है जिसे गलत राहपर जाने का पछतावा है। कुछ समय बाद उसे अपनी भूलका एहसास हुआ और वह परमात्मासे मार्ग-दर्शन करने और सही रास्ता दिखाने की प्रार्थना करता है। मार्गमें अनेक बाधाओं से बचने के लिए वह प्रार्थना करता है कि परमात्मा उसका मार्ग प्रशस्त करे। ईश्वरको जानने के लिए वह उत्कंठित है और वह व्यग्रतापूर्वक प्रार्थना करता है कि परमात्मा उसे दूसरे संसारमें ले जाये। वह जानता है कि केवल परमात्मा ही उसे अन्धकारसे प्रकाशके साम्राज्यमें ले जा सकता है।

गांधीजी ने कहा कि यह था गीतका सार। आप लोग अपनी दैनिक प्रार्थना में जो-कुछ कहते हैं वह इससे भिन्न नहीं होता। आप लोग इस बातको याद रखें और संसारके सभी धर्मोंका वैसा ही आदर करें जैसा कि अपने धर्मका करते हैं।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, २५-१२-१९४५

१. साधन-सूत्रके अनुसार मौनवार होने के कारण गांधीजी का लिखित भाषण कनु गांधीने पढ़कर सुनाया था।

३७७. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

२५ दिसम्बर, १९४५

बापा,

मैं सभी विषयोंका समावेश एक पत्रमें करना चाहता हूँ। मै यह पत्र मिदनापुर जाने वाले पानीके जहाजसे लिख रहा हूँ।

तुमने मुझे मलाबारकी कुट्टीमलु अम्मा[1] के बारेमें लिखा है, किन्तु मुझे भय है कि यदि वे विधान-सभाकी सदस्या बन गईं तो हमारा काम पूरा नहीं कर सकेंगी।

पूर्णिमाको मैंने पत्र लिखा है। उसमें कहा है कि यदि वह विधान-सभामें जाना चाहेगी तो मुझे इस बारेमें पूरा सन्देह है कि वह प्रतिनिधि [एजेन्ट] बन सकेगी या नहीं।[2] जवाहरलालसे भी मैंने यही बात की है। किन्तु यदि तुम यह मानते हो कि इसमें कोई हर्ज नहीं है तो शायद मैं अपना विचार बदल दूँ।

मेरे विचारसे जो महिलाओंके साथ काम करेगा, खास तौरपर ग्रामीण महिलाओंके साथ, उसके पास विधान-सभामें जाने का न तो समय होगा और न ही उसमें दिलचस्पी होगी। मैं तो यही सुझाव दूंगा कि तुम कुट्टीमलु अम्माको लिखो कि यदि वह विधान-सभामें जाने का मोह छोड़ दे तभी वह कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्टका काम मन लगाकर कर सकेगी।

अब तुम्हारा दूसरा पत्र—रामस्वरूप खन्नाके बारेमें। मुझे यह याद नहीं कि "जहाँ तक सम्भव हो वहाँ तक", ये शब्द मैंने लिखवाये थे या किसी अन्य ट्रस्टी ने। किन्तु ये शब्द बैठकमें ही जोड़े गये थे। यदि तुम इन शब्दोंको निकालना चाहते हो तो मैं मना नहीं करूँगा। किन्तु इन शब्दोंको निकालने के लिए हमें कायदेके अनुसार ट्रस्टके सभी सदस्योंकी सहमति लेनी चाहिए।

इस सम्बन्धमें श्यामलालका पत्र अभी तक मेरे पास नहीं पहुँचा है।

मिदनापुरके बारेमें हरिजी की रिपोर्ट मैंने पढ़ ली है और अब मैं वहीं जा रहा हूँ।

साहबनगर शिविरके बारेमें सुचेताने बहुत अच्छा और विस्तृत विवरण भेजा है। शिविरकी बहनें भी मुझसे आकर मिल गईं। इससे हमें कुछ लाभकारी

१. ए० वी० कुट्टीमलु अम्मा, कुछ समयके लिए केरल मन्त्रिमण्डलके सदस्य और बादमें केरल कांग्रेस अध्यक्ष के० माधव मेननकी पत्नी

२. देखिए पृ० २४८।

अनुभव मिलने की सम्भावना है। मुझे पत्र तो सोदपुरके पतेपर ही लिखना। मिदनापुर जिलेमें आठ दिन लगेंगे। ३ तारीखको मैं वापस सोदपुर पहुँचूँगा। वहाँ कुछ दिन ठहरकर मैं असम जाऊँगा, जहाँ मुझे अधिकसे-अधिक सात दिन रहना होगा। तत्पश्चात् सोदपुर होते हुए मद्रास। मद्रासके लिए २३ तारीख निश्चित हुई है। देखें वहाँ क्या होता है। क्या तुम मद्रास आने वाले हो?

मैं यह इसलिए पूछ रहा हूँ कि हमने कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट के बारेमें कुछ बातचीत की थी। उड़ीसामें एक दिन रहने की सम्भावना नजर नही आती।

ठक्कर बापा

गुजरातीकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३७८. पत्र : जतीनदास अमीनको

२५ दिसम्बर, १९४५

चि० जतीनदास,

यदि तुम यह कहो कि मुझे अपने पत्र स्वयं ही लिखने चाहिए तो वे निश्चय ही विलम्बसे मिलेंगे, या फिर मैं लिख ही न सकूँ। इसलिए उचित यही होगा कि फिलहाल तुम मेरे हाथके लिखे पत्रोंका विचार छोड़ दो। यह अलग बात है कि जब-तब मैं स्वयं लिख दूँ। यह तुम्हारे १८ तारीखके पत्रके उत्तरमें है, जो मुझे कल सोदपुरमें मिला। मुझे मिदनापुर ले जाने वाले स्टीमरपर मैं यह उत्तर लिखवा रहा हूँ। कन्या विद्यालयके रजत जयन्ती समारोहके सिलसिलेमें तुमने समयसे वहाँ पहुँचकर अच्छा किया। खेलकूदके प्रदर्शनमें तो तुम निश्चय ही मुख्य रूपसे भाग लोगे। और कला-विभागके बारेमें तो कहना ही क्या है! तुम किसी तरहकी उतावली मत करना। मेरे पास जल्दी आने का आदेश मैं तुरन्त जारी करने वाला नहीं हूँ। आखिर तुम वहाँ काम कर ही रहे हो और मुझे विश्वास है कि इसका परिणाम अच्छा ही होगा। इसके अतिरिक्त यह मुझे बहुत ही अच्छा लगेगा कि तुम पिताजी को सन्तुष्ट करो। सच्चा सेवक जहाँ भी रहेगा वहाँ उसे सेवा करने का *अवसर मिल ही जायेगा। इसलिए सेवाका क्षेत्र खोजने का प्रश्न* ही नहीं उठता।

विट्ठल कन्या विद्यालय[1] के बारेमें तुम्हारे लिखने के बाद ही जो उचित होगा वह मैं लिखूंगा।

आशा है, तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी। मुझे सोदपुरके पतेपर ही लिखना। मुझे ऐसा लगता है कि २१ जनवरीको मैं बंगाल छोड़ दूंगा।

जतीन

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३७९. पत्र : सौदामिनी मेहताको

२५ दिसम्बर, १९४५

प्रिय बहन,

तुम्हारा पत्र मिला। बंगालके हरिजन सेवक संघके लिए तुम जो थैली लाईं थी वह तुम्हारे पास ही है न? इसमें कोई हर्ज नहीं कि वह तुम्हारे पास है या नहीं। मैंने तो अच्छी रकम इकट्ठी की है। मुझे यह बताओ कि तुम्हें कितने पैसोंकी जरूरत है। यदि तुम यह कहो कि जितने भी मिल सकें उतने कम होंगे तो मैं तुम्हें आलसी मानूंगा। मेरा यह पिछले ६० वर्षका अनुभव है कि जो कार्यकर्ता सिर्फ खर्च करना जानते हैं और खर्चके अनुपातमें पैदा नहीं कर सकते वे कोई काम नहीं कर सकते। इसकी शुरुआत तो मुझसे ही हुई थी। हम लोगोंने इंग्लैण्डमें वेज होटलमें शाकाहारियोंको एक समितिकी स्थापना की थी, किन्तु उसके सदस्योंसे पैसे इकट्ठे नहीं किये और उसका परिणाम शून्य ही निकला। मुझे हास्यस्पद अनुभव हुए, किन्तु यह याद नहीं पड़ता कि मेरी गतिविधिके कारण कोई शाकाहारी बना हो। बादके मेरे अनुभव उत्तरोत्तर मधुर होते गये, क्योंकि मैंने यह निश्चय कर लिया था कि जिन लोगोंके बीच काम किया जाये उन्हींसे पैसा भी इकट्ठा किया जाना चाहिए। इससे दोनों पलड़े बराबर हो गये। इसके परिणामस्वरूप मैं 'महात्मा' बन गया। यदि तुम भी बनना चाहो तो मैंने सुनहरा रास्ता बता दिया है। यह तो मजाकके लिए था। यह मैं मिदनापुर जाने वाले स्टीमरमें लिखवा रहा हूँ। इसलिए मैं कुछ समय निकाल पाया हूँ। हरिजन-कार्यकर्ताओंसे मिलने के बारेमें मेरे वापस लौटने पर निर्णय करना।

सौदामिनी मेहता
कलकत्ता

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. नडियाद, गुजरातमें

३८०. पत्र : सुचेता कृपलानीको

जहाजपर
२५ दिसम्बर, १९४५

चि० सुचेता;

तेरा विवरण मिला। बहुत अच्छा है। सब हकीकत तूने दी है। उस शिविर की बहनें मुझे परसों मिली, उसके बाद तेरा विवरण मिला। मैंने पूर्णिमाको लिखा है।[1] प्रो[फेसर][2] ठीक होंगे।

बापुके आशीर्वाद

श्री सुचेता देवी
स्वराज भवन
इलाहाबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८१. पत्र : घोलकेको

मिदनापुर जहाजमें
२५ दिसम्बर, १९४५

भाई घोलके,

आपका पत्र मिला है। साथमें अखबारकी कतरन भी। मुझे तो यह सब अच्छा नहीं लगता है। अच्छे भावसे लिखा हुआ संवाद भी नुकसान कर सकता है। मैंने सोचा भी नहीं था कि इस संवादका कुछ भी अंश प्रगट होने वाला है। संवादका कुछ अंश ठीक भी नहीं लगता है: 'नवभारत' और 'नागपुर टाइम्स' की टीकाका मैं क्या कहूं?

नागपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए पृ० २४८।
२. जे० बी० कृपलानी

३८२. पत्र : एच० सी० दासप्पाको

२५ दिसम्बर, १९४५

भाई दासप्पा,

राजकुमारीपर लिखा हुआ तुम्हारा पत्र देखा। हिन्दीमें कब लिखोगे? प्रयत्न तो करो। कि प्रयत्न भी इस जन्ममें नहीं हो सकता?

माइसोरके लिए मुझको लालचकी कोई आवश्यकता नहीं है। कमसे-कम कस्तुरबा शिबिरके लिए तो अच्छा लगेगा, लेकिन मुझे डर है कि तुम्हारे और मुझे त्यागवृत्तिका सेवन करना होगा।

श्री एच० सी० दासप्पा
गुरुकुल आश्रम
केंगरी पोस्ट
वाया बंगलौर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८३. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

२५ दिसम्बर, १९४५

भाई जाजूजी,

आपका पोस्टकार्ड मिला।

कांग्रेसके अधिवेशनमें प्रदर्शनी कांग्रेस करवाना चाहे और खर्च दे तो करवाना चाहिये ही। आपको प्रोफेसरने लिखा है? अथवा आप लिखेंगे कि मैं पुछुं? वहांका प्रबन्ध कौन करेगा? विचित्रके हाथमें रखोगे ना?

मणीबहेनके बारेमें मैंने जो उनको लिखा है उसकी नकल इसके साथ भेजता हूं। मणीबहेनका खत आया है उसकी नकल भी भेजता हूं। अधिक लिखने की आवश्यकता नही है। मेरे मानसका पता मेरे पत्रपर से मिल जायगा।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८४. पत्र : विचित्र नारायण शर्माको

२५ दिसम्बर, १९४५

चि० विचित्र,

गाडोदियाजी और डा० शर्माके बीचमें जो झगडा चलता है उसका तुम्हें पता है? उस बारेमें क्या जानते हो, क्या मानते हो? गाडोदियाजी का खादी काम है। यह भी वे शुद्ध भावसे कर रहे हैं, वे यह कहते हैं। यह कहां तक ठीक है यह भी मुझे बताना।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८५. भाषण : सार्वजनिक सभामें[1]

डायमण्ड हार्बर
२५ दिसम्बर, १९४५

गांधीजी ने श्रोताओंसे कहा कि आप एक आशीर्वाद तो मुझे पहले ही दे चुके हैं। आप लोग यहाँ हजारोंकी संख्यामें एकत्र हुए हैं, फिर भी कोई शोर नहीं है और सब चिलचिलाती धूपमें मौन रहकर शान्तिपूर्वक बैठे हुए हैं। यदि दो घन्टे बाद मैं आपसे दूर जा रहा हूँ तो वह भी दूसरे स्थानसे आपकी सेवा करने के लिए ही। यदि यह बात आप हृदयसे मान लें तो मुझे वास्तवमें बहुत खुशी होगी।

गांधीजी ने कहा कि यहाँ कितने ही स्त्री-पुरुष कताई कर रहे हैं। यह दृश्य मुझे बड़ा ही सुखकर लगता है। आपने इस सब-डिवीजनके कार्यके लिए मुझे जो रु० २५,२५० की थैली भेंट की है उसके लिए भी मैं आपका धन्यवाद करना चाहता हूँ। मेरे लिए यह और भी हर्षकी बात है कि यह राशि ३९०० व्यक्तियों से एकत्र की गई है। यह राशि मैं चारुबाबू[2] को दे रहा हूँ और मुझे विश्वास है कि यह राशि बुद्धिमत्ताके साथ खर्च की जायेगी, जिससे अधिकतम लाभ पहुँचे। मुझे आशा है कि इस राशिको पूँजी बनाकर कार्य आरम्भ कर दिया जायेगा।

इस सब-डिवीजनके निवासियोंने बाढ़, अकाल और महामारीके कारण जो विपत्तियाँ सही हैं उनके विषयमें मैंने पढ़ा है और सुना है। मैं यह भी जानता

१. गांधीजी ने हिन्दीमें भाषण दिया था और सतीशचन्द्र दासगुप्त साथ-साथ उसका बंगलामें अनुवाद करते गये थे।

२. चारुचन्द्र भण्डारी

हूँ कि यदि हम ऐसी विपत्तियोंको धैर्य और दृढ़ताके साथ नहीं सहेंगे तो इस संसारमें जीवित नहीं रह पायेंगे। संसारके किसी-न-किसी भागमें विपत्तियाँ हर क्षण आती रहती हैं और संसार-भरमें मानव-जातिको ऐसे कष्टोंसे गुजरना पड़ता है। आज समस्त विश्वमें मानव-जाति किसी-न-किसी प्रकारके कष्ट भोग रही है। किन्तु यदि लोग उन्हें अपने ऊपर पड़ने वाला दुर्दैवका प्रकोप समझें और उनसे हार मान लें तो वे बुराईमें से अच्छाई हासिल नहीं कर पायेंगे।

खादी प्रतिष्ठानमें प्रतिदिन प्रार्थनाके समय जो भजन गाये जाते हैं उनका मुख्य सन्देश यह है कि कष्ट भोगने वालोंको भी ईश्वरकी कृपा प्राप्त होती है, क्योंकि उन कष्टोंके पीछे भी ईश्वरका वरदान छिपा रहता है।

मुझे यह देखकर दुःख होता है कि अब भी दूर-दूरसे हजारों ग्रामवासी आते चले जा रहे हैं। ऐसा निश्चय किया गया था कि मैं यहाँ साढ़े तीन बजे पहुँच कर दो घन्टे तक आपके साथ रहूँ। यदि मैंने ऐसा ही किया होता तो मेरे कार्यमें व्यवधान पड़ जाता और मैं अपनी इच्छाके अनुरूप आपकी सेवा न कर पाता।

मुझमें आस्था थी और यहाँ आने पर भी वह कायम है। आस्थासे मेरा तात्पर्य चरखेमें मेरी आस्थासे है। मैं आरम्भसे ही कहता आया हूँ कि यदि हमारी चरखेमें आस्था न होगी और हम उसका वास्तविक अर्थ नहीं समझेंगे तो हम सब हिन्दुस्तानमें शान्तिपूर्वक नहीं रह पायेंगे। यह बात मैं ६० वर्षसे कहता आया हूँ और यह बात हिन्दुस्तानपर ही नहीं, सारी दुनियापर — जहाँ-कहीं मनुष्य का वास है, चाहे वह छोटा समुदाय अथवा देश हो या बड़ा, उन सबपर — लागू होती है। जब तक मानव-जाति सत्य और अहिंसाके सिद्धान्तको स्वीकार नहीं करेगी तब तक वह शान्तिपूर्वक नहीं रह सकेगी। और यह भी कह देना आवश्यक है कि गुण्डागर्दी या उपद्रवसे न तो हम स्वराज्य प्राप्त कर पायेंगे और न इससे मनुष्य-जातिकी कोई भलाई हो सकेगी। मुझे पक्का विश्वास है कि यदि भारतके ४० करोड़ लोग वास्तवमें इस सत्य और अहिंसाकी भावनासे ओतप्रोत हो जायें तो स्वराज्य हमारी मुट्ठीमें ही है।

मै आज आपको संक्षेपमें चरखेका महत्व और अर्थ भी बताऊँगा। आप समझ ही सकते है कि दरिद्रतम व्यक्तिके लिए भी एक चरखा रखकर सूत कातना सम्भव है। मैंने चरखेके समान उपयोगी और कोई मशीन नहीं देखी है। सूत कातना एक प्रकारका श्रम है। यदि कोई व्यक्ति अपनी रोटी कमाने के लिए श्रम नहीं करता तो वह दूसरेकी सम्पदा चुराने वाले चोरके ही समान है। चरखा लोगोंको ईमानदारीसे श्रम करने का अवसर प्रदान करता है।

हमारे देशके अंग्रेजी जानने वाले और शिक्षित कहलाने वाले लोग कहते हैं कि सालमें छः महीने परिस्थितिवश बेकार बैठने वाली हमारी जनताके पास भीख माँगने के अलावा और कोई चारा नहीं है। किन्तु मैं यह बताना चाहता हूँ कि

कातने में भी बुद्धिका उपयोग करना होगा। कुछ मिनट पहले मैं स्वयं कात रहा था। चरखा तो बढ़िया था, किन्तु उसमें कुछ खराबी आ गई थी। मुझे कातने से पहले उस नुक्सको सुधारना पड़ा। भारतकी जनताके उपयोगमें आने वाली मशीनमें यदि कुछ नुक्स हो तो हम उसका यथासम्भव पूरा लाभ नहीं उठा सकेंगे। यहाँ तो एक चरखा बिगड़ा था, किन्तु यदि ४० करोड़ चरखे बिगड़ जायें तो हिन्दुस्तान का क्या हाल होगा? जिन्हें यह विश्वास है कि चरखा स्वराज्य-प्राप्तिका साधन है उन्हें ईश्वरकी कृपा भी अवश्य प्राप्त होगी। जब तक हमें ईश्वरमें आस्था न हो तब तक हम अपने मनसे भयको दूर नहीं भगा सकते। कोई भी व्यक्ति या जाति यदि निर्भय न हो तो उसका स्वतन्त्र होना भी असम्भव है। यह तो एक सीधा-सा सत्य है।

गांधीजी ने अपनी बात शान्तिपूर्वक सुनने के लिए एक बार फिर सबको धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि मुझे आशा है कि आपने मेरी बातें सुनीं और समझी होंगी। और यदि आप मेरे भाषणको भली-भाँति समझ नहीं पाये हैं तो आशा है कि भाषणका बंगलामें अनुवाद करके आप सबको उसकी प्रतियाँ बाँट दी जायेंगी। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप चाहते हैं कि मैं अपनी प्रार्थना यहीं करूँ। कुछ मिनटों तक प्रार्थना करने के उपरान्त मैं सबसे विदा लूँगा। इसका यह मतलब नहीं कि मेरा यहाँका कार्य समाप्त हो चुका है। मैं अपने जहाजपर जाकर आप लोगोंके प्रतिनिधियोंके साथ बातचीत करूँगा। यदि मैं अपनी नियत योजनाके अनुसार काम कर सकूँगा तो आप सबके प्रति अपने कर्तव्योंको भी समझ जाऊँगा। भाषणके अन्तमें महात्मा गांधीने कहा:

मैं आप सबसे प्रार्थनाके समय शान्त रहने का अनुरोध करता हूँ। प्रार्थना करते समय आपको पूर्णतः ईश्वरके ध्यानमें रत रहना चाहिए। प्रार्थना करना तोतेके समान शब्दोंको रटना नहीं है। [ईश्वरके साथ] एकात्म हुए विना प्रार्थना निरर्थक है।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, २६-१२-१९४५

३८६. बातचीत : कांग्रेस कार्यकर्ताओंके साथ[1]

महिषादल

[२५ दिसम्बर, १९४५ या उसके पश्चात्][2]

मैं कह नहीं सकता कि जो-कुछ किया गया है वह ठीक किया गया है या वह सब किया जाना चाहिए था। इसके विपरीत, उसमें से बहुत-कुछ तो नहीं ही किया जाना चाहिए था। यह सन्तोषकी बात है कि लोग हाथपर हाथ रखकर बैठे नहीं रहे, लेकिन यह खेदका विषय है कि इतने वर्षके बाद भी वे यह नहीं जान पाये कि कांग्रेस क्या, चाहती है। उन्होंने जो-कुछ किया वह सोच-समझकर नहीं किया। उसका स्वरूप ही ऐसा था कि उसे जारी नहीं रखा जा सकता था।

आपने रेलकी पटरियोंको कैसे उड़ा दिया, सड़कोंको कैसे बेकार कर दिया, कचहरीको किस तरह जलाया, थानेपर कैसे कब्जा कर लिया, समानान्तर सरकार किस प्रकार बना ली, इनका तथा ऐसी ही अन्य बातोंका आपने अपने विवरणमें बड़ा सजीव वर्णन किया है। मगर यह अहिंसक कार्य-पद्धति नहीं है। लोग यह समझने की भूल कर बैठे कि जिसमें हत्या नहीं हो, वह सारा आचरण अहिंसक है। कभी-कभी तो हत्या भी हिंसाका शुद्धतम पक्ष हो सकती है। यदि हम किसी दुष्टको एकदम मार डालते हैं तो जहाँ तक उसका प्रश्न है वह बात तो वहीं खत्म हो जाती है। लेकिन इसके विपरीत किसीको यातना देना तो इससे भी बुरा है। उससे दुष्टता समाप्त नहीं होती, बल्कि उल्टे वह हमारे सिर आ पड़ती है। अधिक [illegible]णोंमें भी प्रतिशोधकी भावना आ गई थी। शायद आप कहें कि उस भावनाके वशीभूत तो उन्हें वैसे भी होना ही था, लेकिन न तो हमें ऐसी इच्छा करनी चाहिए और न ही हमारा यह उद्देश्य है। उनमें दहशत फैलाने से हमें कोई लाभ नहीं होगा।

अगस्त १९४२ में अधिकारीगण अपना संतुलन खो बैठे थे। हमने उन्हें उसके लिए बहाना दिया। लेकिन वे ऐसे लोग हैं जो पराजयको तो जानते ही नहीं, उनकी कायरता उनका बुनियादी स्वभाव नहीं है। इसलिए उन्होंने थानों, कचहरियों, पंचायत अदालतों आदिको कुछ समय तक आपके हाथोंमें खिलौनोंकी तरह रहने दिया लेकिन अपनी तैयारी पूरी होते ही हमें अपनी प्रतिशोधकी ज्वालामें पूरी

१. प्यारेलालके लिखे "नॉन-वायलेंट टेकनीक एंड पैरलल गवर्नमेन्ट" (अहिंसक कार्य-पद्धति और समान्तर सरकार) शीर्षक लेखसे उद्धृत

२. गांधीजी २५ से ३० दिसम्बर तक महिषादलमें थे।

शक्तिसे झोंक दिया। भारत इस तरीकेसे स्वराज्य प्राप्त नहीं कर पायेगा। इसकी पुनरावृत्ति हमें कभी नहीं करनी चाहिए।

आज आपको सिर्फ ब्रिटेनका ही नहीं, तीन बड़ी सत्ताओंका मुकाबला करना है। आप उनके ही हथियारोंसे उनसे सफलतापूर्वक मुकाबला नहीं कर सकते। आप परमाणुबमसे तो आगे जा नहीं सकते। जब तक हर तरहके साम्राज्यवादका मुकाबला करने के लिए हम हिंसक विद्रोहके युग-जर्जर तरीकेके स्थानपर कोई नया तरीका नहीं अपनाते तब तक धरतीकी दलित-शोषित जातियोंके लिए आशाका कोई आधार नहीं है।

रूसके दृष्टान्तसे कोई भ्रमित न हो। हमारी परम्परा रूससे सर्वथा भिन्न है। हमारी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी उससे बिलकुल अलग है। रूसमें पूरी आबादी शस्त्रसज्जित थी; भारतीय जन-साधारणको तो आवश्यक प्रशिक्षण दिया जाये तब भी वह शस्त्र-धारण नहीं करेगा। लेकिन, जब हमारे शासकोंने एक ही झटकेमें जापान-जैसे प्रथम कोटिके सैनिक राज्यको निःशस्त्र कर दिया है तो वे हमें जन-साधारणको शस्त्र-प्रशिक्षण देने देंगे, ऐसा सोचना ही बेकार है। आज जापान विजेताओंके कदमोंमें पड़ा हुआ है। लेकिन अहिंसामें हारका कोई प्रश्न ही नहीं है। किन्तु वह बनावटी नहीं, बल्कि सच्ची अहिंसा होनी चाहिए। यदि वैसी अहिंसाका मैं अकेला प्रतिनिधि रह जाऊं तब भी मुझे कोई विषाद नहीं होगा।

प्र० : हमने जो-कुछ किया और भोगा है उस सबके बाद हमारे मनमें ऐसी शंका तो उठने लगी है कि क्या हमने अपनी शक्तिका सही रूपमें प्रयोग किया है। क्या जन-जागृति दिग्भ्रमित नहीं थी। लेकिन अहिंसक विद्रोह भी क्या सत्ता हथियाने का ही कार्यक्रम नहीं है?

उ० : यही तो भूल करते हैं। अहिंसक क्रान्ति "सत्ता हथियाने" का कार्यक्रम नहीं है। यह सम्बन्धोंके रूपान्तरणका कार्यक्रम है, जिसकी अन्तिम परिणति सत्ता के शान्तिपूर्ण हस्तान्तरणमें होनी है। यदि लोगोंने बम्बईमें अ० भा० कांग्रेस कमेटी के समक्ष दिये मेरे ८ अगस्तके भाषण[1] में सुझाई पाँच बातोंपर पूरा-पूरा अमल किया होता और अगर अहिंसाका पूरा वातावरण होता तो सरकारकी शक्ति और दमन निष्प्रभाव हो जाता और उसे हमारी राष्ट्रीय माँग स्वीकार करने पर मजबूर होना पड़ता।

यदि विदेशी आक्रमण या ऐसे ही किसी अन्य कारणसे शासक शक्ति सत्ता का त्याग कर दे और फलतः रिक्तता पैदा हो जाये तो जन-संगठन स्वभावतः उसके कार्योंको सँभाल लेगा, लेकिन ऐसी जातीय सरकारके पास अपने आदेशों का पालन करवाने के लिए अहिंसा तथा जन-सेवाके अतिरिक्त और कोई शक्ति-

१. देखिए खण्ड ७६, पृ० ४२६-३८ और ४३८-४२।

स्रोत नहीं होगा। वह जबरदस्तीसे कभी काम नहीं लेगी। विपरीत विचार रखने वालोंको भी उसके अधीन पूरी सुरक्षा मिलेगी।

जोर-जबरदस्तीके तरीकेके मुकाबले अहिंसक कार्य-पद्धतिकी असीम प्रभावकारिताके उदाहरणके रूपमें बारडोली सत्याग्रहका उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि मिदनापुरमें तो आप सत्ताके चन्द प्रतीकोंपर आरम्भिक अवस्थामें ही कब्जा कर पाये और आप उस सफलताको कायम नहीं रख सके। लेकिन बारडोलीमें सत्याग्रही अपने संघर्षकी उपलब्धिको पूर्णतः कायम रख पाये।

इसके अतिरिक्त, आपने देखा कि आपकी बहादुरी हमारी बहनोंके खिलाफ अत्याचारको नहीं रोक पाई। यह चीज तो असह्य है। होना तो यह चाहिए कि उनपर कोई भी अपनी बुरी निगाह न डाल पाये। इसके लिए उच्चतर ढंगकी बहादुरीकी जरूरत है — अहिंसक बहादुरीकी, जो मृत्युको चुनौती दे सकती है और जिसे आक्रामककी कोई भी शक्ति पराभूत नहीं कर सकती। मैं यही करने की कोशिश कर रहा हूँ। इसमें समय लग सकता है। करोड़ों लोगोंमें ऐसे उच्चतर साहसका संचार करने में काफी लम्बा समय लगता है। करोड़ोंकी इस तरहकी अहिंसा वस्तुतः कभी अमलमें आयेगी या नहीं, मैं नहीं कह सकता। लेकिन आप लोगोंको तो इतने वर्षसे अहिंसाका प्रशिक्षण मिलता रहा है। इसलिए आपको यह समझना है कि आपके द्वारा अहिंसामें निहित समस्त तेजको प्रकाशित होना चाहिए।

इसके बाद उन्होंने गांधीजी से यह बताने को कहा कि वे सही दिशामें कैसे शुरुआत कर सकते हैं। उत्तरमें गांधीजी ने उन्हें चरखेको अपनाने का सुझाव दिया, जो "अट्ठारह सूत्री रचनात्मक कार्यक्रमका प्रतीक और केन्द्रस्थ सूर्य है।" उन्होंने कहा कि सामाजिक समेकत्व और अहिंसक संगठनकी सिद्धिका वह सर्वश्रेष्ठ साधन है। अहिंसक कार्य-पद्धतिका मतलब बुराईके कारणोंको अलग करके उन्हें प्रभावहीन कर देना है। अहिंसापर आधारित जातीय सरकार सरकारी नौकरोंपर दबाव नहीं डालेगी, बल्कि कारगर तरीकेसे उन्हें अलग-थलग कर देगी, और तब उन्हें या तो जनतासे जा मिलना होगा या विदेशी सरकारके आदेशोंका पालन ऐसी घोर बर्बरता से करवाना होगा जिससे वह जल्द ही थक जायेंगे। यहाँ तक कि उनके कुटुम्बी और प्रियजन भी उनका त्याग कर देंगे।

लेकिन ऐसा तभी हो सकता है जब जनताके किसी भी हिस्सेको कोई ऐसा एहसास न हो रहा हो कि कोई दूसरा हिस्सा उसके साथ अन्याय और जुल्म कर रहा है। अस्पृश्यता, शोषण तथा साम्प्रदायिक दुर्भावनाका जातीय सरकारमें कोई स्थान नहीं हो सकता, अन्यथा वह विभाजनसे टूटी इमारतकी तरह धराशायी हो जायेगी।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १७-२-१९४६

३८७. पत्र : होमीको

महिषादल
२६ दिसम्बर, १९४५

भाई होमी,

मेरी सलाह तो यह है कि तुम संसदके झंझटमें पड़ो ही मत। लोग कहते हैं तो उससे क्या हुआ? इसके अतिरिक्त मेरा प्रमाण-पत्र किस कामका? भले मानस की भलमनसाहत ही उसका प्रमाण-पत्र है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८८. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

महिषादल
२६ दिसम्बर, १९४५

बापा,

इसके साथ मैं कन्या गुरुकुलसे मिला एक पत्र भिजवा रहा हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि यदि तुम्हीं कन्या गुरुकुलकी बहनको इसका उत्तर दो तो बेहतर होगा।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३८९. पत्र : भाईलालभाई पटेलको

महिषादल
ठिकाना : सोदपुर
२६ दिसम्बर, १९४५

भाईलालभाई,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला है। इसे पढ़कर तुम्हारे उत्साहको ठीकसे जान पाया और मुझे लगा कि मैं खुद अपनी समझके बलपर तो इस उत्साहके साथ न्याय नहीं कर पाऊँगा, इसलिए मैंने अपने साथ मौजूद अनुभवी साथियोंको बताया। मैं कल मिदनापूर आने के लिए जहाजमें सफर कर रहा था। उस समय श्री सतीशबाबू और श्री अन्नदाबाबू[1] मेरे साथ थे। दोनों विद्वान है, विचारक हैं और रचनात्मक कार्यमें पूरा हिस्सा ले रहे है। वे अपने हठपर अड़े रहने वाले लोग नहीं है, सत्यकी साधनामें विचरने वाले हैं। दोनोंपर ट्रैक्टरका प्रभाव नहीं पड़ा, बिजलीकी चक्की आदि चलाने का प्रभाव भी कम ही पड़ा है। मैं तो स्वभावसे ही अलग साँचेमें ढला हूँ इसलिए मैंने स्वयंको शामिल नहीं किया। सतीशबाबूने जो विचार बताया है वह तो मैंने उनसे लिखवा लिया है। मैं वह मूल अभिप्राय ही तुम्हें भेज रहा हूँ। अन्नदाबाबूके पास कुछ ठोस सुझाव हैं, लेकिन वे इस प्रवासके पूरे होने के बाद ही मिलेंगे। जब वे लिखकर दे देंगे तब तुम्हें भेज दूंगा। अन्ततः तो दोनों प्रकारके अभिप्रायोंके बीच विरोध रहेगा ही, ऐसा लगता है। इसलिए बात अनुभवपर ही निर्भर रहेगी। फिलहाल जिसमें तुम्हारा इतना दृढ़ विश्वास है उसपर तुम टिके रहो और अमल करो। मैं तो जिसे मानता हूँ और जिसपर अमल करता आया हूँ उसीपर अमल करता रहूँ, यही न्यायसंगत लगता है। मेरा विचार बदलने के लिए तुम्हें अब भी जो-कुछ सूझे कहते रहना।

बापूके आशीर्वाद

श्री भाईलालभाई पटेल, सित्तेरमी जन्मगांठ अभिनन्दन ग्रन्थ, १९५८, पृ० २५४ पर प्रकाशित गुजरातीकी प्रतिकृतिसे

१. अन्नदा चौधरी, बंगालके वरिष्ठ रचनात्मक कार्यकर्ता

३९०. पत्र : साधु चरणदासको

महिषादल

२६ दिसम्बर, १९४५

भाई साधु चरणदास,

आपका पत्र मिला। विद्यार्थियोंके बारेमें मैंने काफी लिखा है। वह पढ़ लिया जाय और जो अच्छा माना जाय वह किया जाय। इसमें निंद न आने की कौन-सी बात हो सकती है।

साधु चरणदास
हैडमास्टर
बोर्ड हाई स्कूल
सुरादा (गंजाम)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९१. पत्र : धर्मदेव शास्त्रीको

महिषादल

२६ दिसम्बर, १९४५

भाई धर्मदेव शास्त्री,

आप बीमार पड गये हैं क्या? जल्दी अच्छे हो जाइये। बीमार क्यों पड़े?

श्री धर्मदेव शास्त्री
'दर्शन केसरी'
अशोक आश्रम
कालसी, जि० देहरादून

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९२. पत्र : हरिप्रसाद शास्त्रीको

महिषादल
२६ दिसम्बर, १९४५

भाई हरिप्रसाद शास्त्री,

आपका पत्र मिला। अंग्रेजीमें क्यों? जो मैं कर रहा हूं सो भी सत्यके कारण ही। कौन जानता है कि किसमें सच्चा परिणाम होगा। अच्छा तो यही है कि जिसे धर्म माना जाय उसे परिणामकी ओर न देखते हुए करते ही रहें।

श्री हरिप्रसाद शास्त्री
शान्ति सदन
३०, लेन्सडाउन क्रीसेंट
लन्दन–डब्ल्यू० २

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९३. पत्र : हरिरामको

महिषादल
२६ दिसम्बर, १९४५

भाई हरिराम,

आपका पत्र मिला। मैं इस बारेमें कुछ नहीं कर सकता।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९४. पत्र : मुकर्जीको

महिषादल
२६ दिसम्बर, १९४५

भाई मुकर्जी,

आपका २३ डिसेम्बरका खत मिला। आपके पुत्रके साथ थोडी बातें कर ली है। आपकी धर्मपत्नी अब अच्छी होंगी। आपके भेजे नेपालके सब पत्र पढ़ लिये हैं। उसमें से क्या मिल सकता है वह मैं नहीं समझ सका हूं। यह काम तो आप-जैसे जानने वालोंसे ही शायद हो सकता है। नेपाल राज्य या किसीके प्रमाणपत्र से नहीं हो सकता।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९५. भाषण : प्रार्थना-सभामें[1]

महिषादल
२६ दिसम्बर, १९४५

मैं यहाँ यह जानने के लिए आया हूँ कि आप लोग अब तक क्या करते रहे हैं तथा मैं आपके कष्टोंके विषयमें भी जानना चाहता हूँ, जिसके उपरान्त मैं उनमें से कुछके निवारणमें सहायता करने का प्रयत्न करूँगा।

मैं यहाँ भाषण देने नहीं आया हूँ। अपने जीवनमें मैं बहुत-से भाषण दे चुका हूँ। अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मेरे विचारोंमें भी परिवर्तन आ गया है। और मेरे विचारसे भाषणोंसे मैं आपकी कोई सहायता नहीं कर पाऊँगा।

मिदनापुरवासियोंको पिछले कई वर्षमें जो कष्ट भोगने पड़े हैं, उनका उल्लेख करते हुए गांधीजी ने कहा कि मैं पिछले कुछ समयसे इस जिलेमें आने को उत्सुक था और आज यह मौका मिला, इसकी मुझे खुशी है। आपके बीच रहते हुए मैं आपकी राजनीतिक और आर्थिक स्थितियोंका अध्ययन करूँगा।

महात्मा गांधीने श्रोताओंको भगवद्-भजनमें शामिल होने की सलाह दी। ऐसा करने से आपको मिल-जुलकर कार्य करने का अभ्यास होगा। स्वराज्य हमें कोई दे नहीं सकता। उसको प्राप्त करने के लिए जनतामें संगठन-शक्तिका होना अनिवार्य है, जिसका अर्थ अहिंसा या शान्ति भी है।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, २७-१२-१९४५

१. यह सभा गांधीजी की कुटियाके निकट विशाल मैदानमें हुई थी। सभामें एक लाखसे अधिक लोग उपस्थित थे।

३९६. भाषण : प्रार्थना-सभामें[1]

महिषादल
२७ दिसम्बर, १९४५

अभी गाये गये भजनकी लय कायम रखने के लिए हमने जैसा किया, अगर वैसे ही हम संगठित होकर आचरण करें तो प्राकृतिक प्रकोप या राज्यकी नीति के कारण हमारी चाहे जितनी क्षति हो, हमारे साथ चाहे जितना अन्याय हो, परिस्थिति सदा हमारे बसमें रहेगी और हमारा सिर ऊँचा रहेगा। इतिहासमें ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं।

गांधीजी ने आगे सभामें गाये गये भजनका उल्लेख करते हुए कहा कि यदि 'मन्दिर' के स्थानपर 'मुक्ति' शब्द रख दिया जाये तो भी भजनका अर्थ नहीं बदलेगा।

लेकिन कविने गीतमें जिस मुक्तिका उल्लेख किया है और जिसे हम सभी चाहते हैं उसका सही अर्थ क्या है? क्या यह वह मुक्ति या मोक्ष है जो मनुष्यको मरणोपरान्त प्राप्त होता है? या कि यह मनुष्य इस जगतमें जिन तमाम बन्धनोंसे ग्रस्त होता है उनसे पूर्ण मुक्ति है?

गांधीजी ने कहा, मैं समझता हूँ, आप सब इस बातसे सहमत होंगे कि सभी इस जगतके बन्धनोंसे मुक्ति पाने के आकांक्षी हैं। यदि सबकी यही आकांक्षा है, तो संगठित होकर एक लयमें गाने के महत्त्वको आप सबको समझना चाहिए।

हम सब विदेशी दासताके जुएमें बँधे हुए कष्ट भोग रहे हैं और इस कारण सभी उससे मुक्ति पाने को उत्सुक हैं। साथ ही हमारे देशमें यदि बराबरके नहीं तो काफी शक्ति या प्रभाव रखने वाले ऐसे तत्त्व भी होंगे जो देशको दासताकी बेड़ीमें जकड़े रखना चाहते हैं। गांधीजी ने कहा कि हम इन सभी बन्धनोंसे छुटकारा पाना चाहते हैं, लेकिन सबसे खराब बन्धन तो वह है जो मनुष्यको किसी प्रकारकी भी दासता स्वीकार करने पर बाध्य करता है।

मनुष्य अनेक वस्तुओंका दास है — अपनी सम्पत्तिका, अपनी कामनाओंका। हमें इन सबसे मुक्ति पाने की चेष्टा करनी चाहिए। जिस प्रकार आपने समवेत स्वरमें गाये हुए भजनमें तालका पालन किया, यदि उसी प्रकार आप सब मिलकर इन सभी बन्धनोंसे मुक्ति पाने को प्रयत्नशील हो जायें तो मैं समझूँगा कि आप मेरे सन्देशको साकार करेंगे।

हाथ हिला-हिलाकर ताल देते समय तालकी यह भावना मनके अन्दर उठती है। दूसरे शब्दोंमें कहा जाये तो बाह्य हलचलके साथ हृदयका सामंजस्य बैठ चुका होता है। मुक्ति पाने के लिए भी ठीक इसी चीजकी जरूरत है।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, २८-१२-१९४५

१. सभामें एक लाखसे अधिक लोग उपस्थित थे।

३९७. पत्र : अमृतकौरको

महिषादल
२८ दिसम्बर, १९४५

चि० अमृत,

अखबारोंमें तुम्हारे सकुशल पहुँच जाने की खबर है। इस खबरसे पहले तो तुम कोई समाचार भेज ही नहीं सकती थीं। आशा है, वहाँ सब कुछ ठीक रहेगा।

यहाँ मैं नहरके किनारे बहुत ही शान्त वातावरणमें रह रहा हूँ। यह अनाथालय है। Mosquitos (मच्छर) बिलकुल नहीं हैं। या कि mosquitoes ? लगभग एक लाख लोगोंकी उपस्थिति होते हुए भी सभाओंमें पूरी शान्ति और मौन रहता है, इसकी कल्पना करो।

अभी और नहीं।

तुम सबको प्यार।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९८. पत्र : टी० एच० बेयर्डको

महिषादल
२८ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मित्र,

आपका १८ नवम्बरका पत्र मिला। आपका पत्र और पुस्तिका दोनों पण्डित जवाहरलाल नेहरूको भेज रहा हूँ। आपका दावा तो मुझे बहुत बड़ा लगता है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री टी० एच० बेयर्ड
३३, पार्क एवन्यू
पोर्टोबेलो, एडिनबर्ग

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

३९९. पत्र : दत्तात्रेय बा० कालेलकरको

महिषादल
सोदपुर (२४ परगना)
२८ दिसम्बर, १९४५

चि० काका,

तुम्हारे पत्रका उत्तर मैं बोलकर ही लिखवा सकता हूँ। फिलहाल तो सवेरे की प्रार्थनाके बाद जितना लिखवाया अथवा लिखा जा सकता है उतनेसे ही मुझे सन्तोष करना है। और इसलिए अभी मैं रजाईमें से हाथ निकालकर तुम्हें पत्र लिखने की कोई जरूरत महसूस नही करता।

तुम्हारे बारेमें मेरे मनमें एक ही विचार उठता है और वह यह कि तुम चाहे जो सुझाव दो लेकिन मैं जैसा कहूँ वैसा ही तुम्हें करना चाहिए। तुमने अपने पत्रमें यही लिखा भी है। तुम जो अर्थ करते हो यदि वही अर्थ सही हो तो भी मैं यही कहूँगा कि तुम्हें जो अधिकार दिया गया है उसका उपयोग न करके समितिसे पूछने में ही हित है। इससे तुम कुछ खोने वाले नहीं हो, और जब तुम पत्र लिखकर उनसे पूछ सकते हो तो इसमें ढील होने की भी कोई सम्भावना नही है।

हमें विद्यापीठके पुस्तकालयके बारेमें भूल ही जाना चाहिए क्योंकि मुझे उसकी याद नही रहती और याद करने से क्या लाभ?

गुजरातके कामसे तुम्हारे अलग होने की जरूरत मैं नही देखता। यह सारी चीज तुम्हारी कल्पना-मात्र है। इसके अतिरिक्त इसमें अमृतलाल है। अमृतलालको बनाने वाले तुम्ही हो। तुम्हारे समर्थनके अभावमें अमृतलाल कुछ नही कर पायेगा। वह सीधे रास्ते चलने और काम करने वाला व्यक्ति है। तुम्हारी अनेक खोजोंमें से मैं उसे ही एक अच्छी खोज मानता हूँ, इसलिए उसे पूरी तरह खुश रखकर ही तुम इसे छोड़ सकते हो। वैसे भी तुमने इसे छोड़ तो दिया ही है, क्योंकि अमृतलाल तुम्हारी अवहेलना करके कभी कोई काम नहीं करेगा।

तीसरी बात प्रोफेसर बनहट्टीके बारेमें। उनके सम्बन्धमें तुमने भा० भा० मन्दिरके लिए सोचा है, फिर भी उन्हें अध्यापन मन्दिरमें ले लो तो कोई हर्ज नहीं होना चाहिए। अध्यापन मन्दिरका तो जो काम चल रहा है उसके लिए उनकी जरूरत है, जबकि भा० भा० मन्दिरके बारेमें अभी तक कुछ तय ही नही हुआ है।

तुम बीमार हो गये, यह मुझे अच्छा नहीं लगा। इतनी तेजी और शक्तिसे काम करने की जरूरत मैं नहीं देखता। धीरे-धीरे करते हुए जो हो सके वही करना

चाहिए। तुम्हारी यह बात मैं समझता हूँ कि आलस्यके कारण करने को कहीं कुछ रह न जाये। लेकिन उतावलेपनसे करने की आवश्यकता समझने को भी मैं बिलकुल तैयार नहीं हूँ। 'उतावला सो बावला, धीरा सो गम्भीरा', यह दोहा इस समय याद आ रहा है। किसका है, यह तो तुम जानो।

मैं यहाँ हजारोंकी उपस्थितिसे भरी सभामें भी परम शान्तिका अनुभव कर रहा हूँ। यह सर्वथा नया दृश्य है। ऐसा भी मानता हूँ कि सोदपुरमें जो काम हो सका, उसीका यह प्रभाव है। इसके अतिरिक्त अभी तो लोग मेरे भाषणोंकी भी माँग नहीं करते, बल्कि प्रार्थना-सभाओंकी माँग करते हैं। एक ओर यह दृश्य और दूसरी ओर, जैसा कि अखबारोंसे देखता हूँ, गुंडागर्दी चल रही है। कौन जाने, इसका क्या परिणाम होगा या भगवान क्या करेगा? हम अपने छोटे-से काम का बोझ सहर्ष उठा लें, यही पर्याप्त होगा?

आज इतना ही।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०९८७) से

४००. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

महिषादल
२८ दिसम्बर, १९४५

बापा,

इसके साथ मृदुलाका तार भेज रहा हूँ। देवदाससे भी मिल सकोगे। दिल्लीके बारेमें हम क्या करेंगे? यदि ये दो नाम पसन्द न आयें तो हमें किसी अन्य महिलाको खोजना चाहिए। मेरा तो यह भी विचार है कि जब तक कोई महिला न मिले तब तक हमें वर्धा कार्यालयकी मार्फत ही जैसे-तैसे काम चलाना चाहिए, क्योंकि मुख्य बात तो कहीं गाँवमें काम करने की है।

तुमने लिख दिया है न कि ताई राजवाड़ेने प्रस्तावको अस्वीकार कर दिया है? इन दोनों स्थानों (दिल्ली और मध्य भारत)के लिए [कार्यकर्ता] खोज निकालने की बात राजकुमारीने स्वीकार कर ली है। इसके बावजूद देवदासकी योजनाके बारेमें विचार करना तो बाकी रह ही जाता है। कह नहीं सकता कि रामचन्द्रन् और सौन्दरम् इस काममें खप सकते हैं या नहीं। रामचन्द्रन्को नई तालीमका काम अनुकूल आ गया है, इसलिए उन्हें अब इसमें से कैसे निकाला जा सकता है? मेरी यह मान्यता है कि सौन्दरम् अकेली तो इस दायित्वको उठा ही नहीं सकती। अतः इस सम्बन्धमें भी देवदाससे विचार-विमर्श करना।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०१. पत्र : दिनशा मेहताको

महिषादल
२८ दिसम्बर, १९४५

चि० दिनशा,

आज २८ तारीख है। मै मिदनापुरके एक गाँवसे यह पत्र लिखवा रहा हूँ। मुन्नालालके पत्रका मैंने पूरा उत्तर दे दिया है। उसने मुझे सूचित किया था कि यह पत्र तुम सब लोगोंकी ओरसे लिखा गया था। मै नही जानता कि यह पत्र कब तुम्हारे हाथमें पहुँचेगा।

मुझे आशा तो है कि १ जनवरीसे सब-कुछ बदल जायेगा। मेरा मन वही अटका हुआ है। मैं कब वहाँ पहुँचूंगा सो भगवान जाने। उसे जब मुझे वहाँ पहुँचाना होगा तब पहुँचा देगा।

वहाँ हिन्दुस्तानी, उर्दू और मराठीमें एक साइन-बोर्ड लगाना था। वह लगा दिया या मेरे वापस लौटने तक यह काम स्थगित रखा है?

क्या वहाँ अब भी 'मोटे' पैसेवाले रोगी हैं या वे चले गये? यदि रह गये हों तो क्या वे गरीबोंके साथ रहने को तैयार हैं?

अस्पतालके फर्नीचरका क्या किया? तुम्हें बम्बईके लिए जितने फर्नीचरकी आवश्यकता थी क्या वह तुमने ले लिया? या उसका निबटारा मुझे ही करना होगा?

मैं यह जानता हूँ कि वहाँका मासिक खर्च मुझे चलाना होगा। इस सम्बन्ध में कुछ प्रश्न पूछे गये हैं। उनका उत्तर मिलने पर मैं उतने पैसे भेज दूंगा।

मैं समझता हूँ कि वहाँ भरती होने के लिए तत्काल बहुत अधिक रोगी नही आयेंगे। तुम्हारे पास जिन लोगोंकी अर्जियाँ पहले आ चुकी हैं वे तो पैसेवाले ही होंगे। फिलहाल उन्हें तो हम लेंगे नहीं। यह अलग बात है कि नया रास्ता निश्चित हो जाने पर और जब धनी लोग गरीबोंके साथ रहने को तैयार हो जायें तब हम उन्हें ले लें।

मेरी यह प्रबल इच्छा है कि तुम्हें श्रद्धापूर्वक और सोच-समझकर इस नई व्यवस्थाको अपनाना चाहिए।

आशा है, गुलबाई ठीक होगी। मेरे विचारसे अब उसके प्रसवका समय भी निकट आ गया होगा।

मुझे सोदपुरके पतेपर लिखना।

बापूके आशीर्वाद

डॉ० दिनशा मेहता
पूना

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०२. पत्र : कन्या गुरुकुलकी मुख्य अधिष्ठात्रीको

महिषादल
२८ दिसम्बर, १९४५

प्रिय भगिनी,

आपका पत्र मिला है। थोड़ा आश्चर्य हुआ है। गुरुकुलको मैंने धर्मदेवजी की संस्था मानी थी।

मैंने आपका पत्र ठक्कर बापाको भेजा है और उनको लिखा है कि आपको लिखे।

मुख्य अधिष्ठात्री
कन्या गुरुकुल
देहरादून

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०३. पत्र : सी० एन० मुत्तुरंग मुदलियारको

पो० सोदपुर
२८ दिसम्बर, १९४५

भाई मुत्तुरंग मुदलियार,

आपका पत्र मिला। राजाजी के लिये मुझे पक्षपात तो है। मैं मानता हूं कि मद्रासकी बागडोर अच्छी तरहसे उन्हींके हाथ पकड़ सकते हैं। लेकिन आप लोग सब जो बेहतर समझें वह करें। वर्किंग कमेटीके मामलेमें मैं बहुत पडता ही नहीं हूं। जिस बारेमें मुझे पूछा जाता है अभिप्राय [राय] दे देता हूं। इसलिये मेरे पास आने से कुछ होने का काम नहीं है। डा० राजन इत्यादि मित्र आये थे। उनसे भी मैंने वही कहा था। भाई आसफ अलीने जो किया उस बारेमें तो मैं कुछ जानता ही नहीं हूं। अखबारमें जो आया वहीं पढ़ा है।

आपका,
मो० क० गांधी

सी० एन० मुत्तुरंग मुदलियार
४, मौलवी रोड
त्यागराय नगर
मद्रास

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०४. पत्र : दादा धर्माधिकारीको

महिषादल
२८ दिसम्बर, १९४५

भाई दादा,

तुम्हारा खत पढ़ गया। गोपालरावका भी। सब ख्याल करके मेरा निर्णय यह है: सब मित्र कहते हैं इसलिए बगैर परिश्रमके एसेम्बलीमें जा सकते हैं तो चले जाओ — ऐसा समझकर कि मखमलकी गद्दीपर बैठने नहीं, लेकिन काटोंकी गद्दी पर बैठने के लिये। अगर वहां कुछ अच्छा हुआ तो यश पचका है या भगवानका। अगर न हुआ तो खोना कुछ है ही नहीं, क्योंकि बाहर रहना तब भी सत्यकी उपासनाके लिए, भीतर जाना है तब भी उसीकी उपासनाके लिए। विनोबा कहते हैं वह मैं समझता हूं। और यह अभिप्राय उनकी बातें समझते हुए मैं देता हूं। सब विवादको छोड़ो, वार्तालाप छोड़ो, मौन लेकर लोग चुन सकते हैं तो जाओ। चुनावमें तुम्हारे सिरपर कुछ भी परिश्रम होना नहीं चाहिये।

गोपालरावको अलग पत्र नहीं लिखता हूं। यह उनके लिये भी है।

दादा धर्माधिकारी
बजाजवाड़ी
वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०५. पत्र : गोपीनाथ बारडोलोईको

महिषादल
२८ दिसम्बर, १९४५

भाई बारडोलाई,

आपका पत्र मिला। मैंने सब देख लिया है। बात भी खूब कर ली है। आपका प्रोग्राम देखने से ही मैं कांप उठता हूं। ऐसा मान लिया लगता है कि मुझे और ४९ वर्ष काटने हैं तो मैं नित्य दौड़-धूप कर सकता हूं। ऐसी कोई बात नहीं है। अगर मैं यथाशक्ति काम ही करता रहूं, एक जगह बैठकर ही करूं तब तो ४९ वर्ष शायद काट सकूं। मैंने तो आसामको आने-जाने का मिलाकर सात

दिन देने का किया है। आपने सात दिन आसाममें ही रखे हैं। और दो दिन जाने-आने के, ऐसे ९ दिन होते हैं। वह कैसे निकालूं? सब बात आप सुनेंगे और पीछे निश्चय करेंगे कि वहां दो जगहपर रहने से काम निंपटता है कि नहीं। अगर नहीं तो छोड़ दीजिए।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०६. पत्र : हस्तमल पटवाको

महिषादल
२८ दिसम्बर, १९४५

भाई हस्तमल पटवा,

आपका तार मुझे महिषादल मिला। मैं नहीं जानता कि उसमें क्या हो सकता है। आप पंडित जवाहरलालजी को लिखें या तार दें।

श्री हस्तमल पटवा
१३, नरमल लोहिया लेन
कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४०७. पत्र : जवाहरलाल नेहरूको

कैम्प महिषादल
पो० सोदपुर
२८ दिसम्बर, १९४५

चि० जवाहरलाल,

इसके साथ एक पत्र भेज रहा हूं क्योंकि लेखकने लिखा है कि मैं भेजूं। दक्षिण आफ्रिकामें मिला होगा, लेकिन मुझे कुछ ख्याल नहीं है। मैंने तो उसे लिख दिया है कि उसके एड्रेसमें बहुत बड़ा दावा किया है। आदमी दीवाना-सा लगता है।

बिहारमें विद्यार्थीयोंके सामने तुमने जो कहा, उसे पढने की यहां कुछ फुर्सत मिली। मुझे बहुत अच्छा लगा।

तुम्हें थोडा आराम लेने की आवश्यकता है। लिया जाय तो अच्छा होगा।

काम्युनिस्टोंके बारेमें तुम्हें लिखने को मैंने राजकुमारीसे कहा था। आज

अखबारमें दूसरा किस्सा पाता हूं। कतरन इसके साथ है। यह क्या है? इसपर कुछ प्रकाश डाल सकते हैं?

बापूके आशीर्वाद

मूल पत्रसे: गांधी-नेहरू पेपर्स। सौजन्य: नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

४०८. पत्र : कमलनयन बजाजको

महिषादल
२८ दिसम्बर, १९४५

चि० कमलनयन,

मैंने पैसेके बारेमें आश्रममें लिख दिया है।

कमलनयन बजाज

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

४०९. पत्र : श्रीकृष्णदास जाजूको

महिषादल
२८ दिसम्बर, १९४५

भाई जाजूजी,

कांग्रेसके लिये जो खादीकी आवश्यकता होगी उसके बारेमें मेरा दृढ़ विश्वास है कि हमारे मांगना ही चाहिये। इसमें विवेक और कार्यदक्षताकी आवश्यकता रहती है। वर्दीवालेको कातना सीखना ही चाहिये। सवालका मतलब यह होता है कि वर्दीवाले खादी पहिनते नहीं थे, सूत कातते नहीं थे। अब एकाएक तैयार होंगे? कांग्रेस समितियोंके अधिष्ठाताको विवेकसे समझाने की बात रहती है। वे ही खादीको मारना चाहते हैं, और मार सकें तो मारें। कार्यदक्षतासे मेरा मतलब है कि जो काम आज ही शुरू नहीं हो सकता है उसके लिये सूत हम दें और मेरे पास सूत तो काफी रहता ही है, उसमें से देने को तैयार रहूंगा। शर्त यह रहेगी कि जो लोग सूत देना चाहते हैं, लेकिन सूत कातने की क्रिया न जानने के कारण शीघ्र नहीं दे सकते हैं उनका सूत दे दूंगा। और वे कबूल कर लें और कबूलात का अमल करे कि वे कातना सीख लें, और भविष्यमें जो खादी चाहिए उसके

लिए सूत इकट्ठा करें। अगर हम अपने नियमका पालन बराबर करते रहेंगे तो हमें पता चल जायगा कि खादी स्वराजकी बनाने वाली है कि सिर्फ गरीब लोगोंकी अन्नपूर्णा रहने वाली है। यही खत आप विचित्रको भेजना चाहें तो भेज सकते हैं।

श्री जाजूजी
मंत्री, अ० भा० चरखा संघ
सेवाग्राम, वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४१०. पत्र : श्यामलालको

महिषादल
२८ दिसम्बर, १९४५

भाई श्यामलाल,

तुम्हारा खत मिला।

लाला रामस्वरूपके बारेमें मैंने लिखा है न कि जहां तक संभव हो शब्द काटना है तब भी सदस्योंकी राय तो लेनी होगी। भाई पकवासाकी लें, दादा मावलंकरकी लें, वह तो है ही। प्रस्ताव बदलने के लिये जिन्होंने प्रस्ताव किया उनकी भी राय लेनी चाहिये। यह मिल जायेगी उसमें शंका नहीं। थोड़ी देर लगेगी लेकिन बर्दाश्त कर लेना।

तुमने दूसरा प्रश्न उठाया है वह अच्छा है। मकानका एक भी उपयोगके लिये बन्धनमें आना मुझे तो पसन्द है ही नहीं। या तो लाला रामस्वरूप जो उपयोग करना चाहें वह हम कर सकते हैं ऐसा कहकर दान करें अथवा दान ही न करें, वह मुझको अच्छा लगता है। दानी हमारी शर्तसे दान करें — अपनी शर्तसे नहीं।

भाई श्यामलाल
वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४११. पत्र : प्रबोधचन्द्र सेनको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
[२८ दिसम्बर, १९४५][1]

भाई प्रबोधचन्द्र सेन[2],

आपका पत्र मिला। इसी बारेमें मैंने रथीबाबूको लिखा है।[3] विश्वभारतीके सब निवासीयोंको बंगला और हिन्दुस्तानी जानना ही चाहिये। अंग्रेजीकी सबको आवश्यता नहीं होनी चाहिये। विदेशी जो आवे उनके लिए प्रथम हिन्दुस्तानी सीखने का प्रबन्ध करना चाहिए। बंगाल छोड़कर जो अन्य प्रान्तसे आते हैं उनका बंगला सीखने का अनिवार्य होना चाहिये—जैसे बंगालीओंको हिन्दुस्तानी सीखने का होना चाहिये। तब ही विश्वभारती अपने नामके और गुरुदेवके नामके योग्य बन सकती है। मेरी चले तो वहांके सब कारोबारोंको हिन्दुस्तानीमें रखूं। आज यह संभव न हो तो बंगलामें रखूं—अंग्रेजीमें हरगीज नही।

चौथा प्रश्नके बारेमें संपूर्ण माहिती [जानकारी] न होने के कारण कुछ अभिप्राय देना नही चाहता हूं।

बापुके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० १०४०८) से

४१२. भाषण : शिशुसदनमें

महिषादल
२८ दिसम्बर, १९४५

मैं यहाँ तथ्योंका अध्ययन करने आया हूँ। मैंने उनकी जानकारी प्राप्त कर उनका अध्ययन किया और सब-कुछ समझ लिया है। मुझे आपसे जो-कुछ कहना

१. डाककी मुहरसे
२. विश्वभारतीके बंगला विभागके प्राध्यापक और विभागाध्यक्ष
३. देखिए पृ० २९७-९८।

है वह प्रार्थनाके माध्यमसे कहता हूँ। अपने दैनिक जीवनमें उसका आचरण कीजिए।[1]

गांधीजी ने मुस्कराते हुए लड़कोंसे पूछा कि क्या तुम लोग मेरे साथ खेलना चाहोगे। एक लड़केने उनसे आशीर्वाद माँगा तो वे बोले कि मैं आशीर्वाद नहीं दे सकता, क्योंकि तुमने गन्दे कपड़े पहन रखे हैं। फिर वे लड़कोंके अध्यापककी ओर मुड़े और बोले कि मुझे आपसे झगड़ा करना है। उन्होंने अध्यापकको समझाया कि वर्धा शिक्षा योजनाका उद्देश्य बालकोंको गणित और कुछ दूसरी बातें सिखाना-मात्र नहीं है। गांधीजी ने बल देकर कहा कि वर्धा शिक्षा योजना मनुष्यका जीवन ही एक नये साँचेमें ढाल देती है। बालक भला सिर नीचा करके क्यों बैठे? उन्हें तो सीधे तनकर बैठने की शिक्षा मिलनी चाहिए।

याद रहे कि यदि बालकोंका उचित पालन-पोषण हो तो वे हिन्दुस्तानके सर्वोत्तम सैनिक बनेंगे। छः मास तक वर्धा योजनाके अधीन प्रशिक्षण पाने के बाद भी भला लड़के मैले कपड़े क्यों पहनें?

उन्होंने आग्रहपूर्वक कहा कि वर्धा योजनाके अनुसार शिक्षा देते हुए अध्यापकों को निर्धारित पाठ्यक्रमोंकी अपेक्षा उसके सारकी चिन्ता करनी चाहिए। गांधीजी ने बालकोंसे उनको कताईकी प्रगतिके बारेमें भी पूछा।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, २९-१२-१९४५

४१३. प्रश्नोत्तर[2]

२८ दिसम्बर, १९४५

महात्मा गांधीने कहा कि सभी विचारधाराओं और वर्गोंके मजदूरोंकी ज्यादा अच्छी सेवा कर सकने के लिए यदि अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेसके सादे लाल झंडेका प्रयोग करना जरूरी हो तो वैसा करने में मुझे कोई हर्ज दिखाई नहीं देता। लेकिन लाल झंडेका प्रयोग तिरंगे झंडेकी प्रतिद्वन्द्वितामें नहीं किया जाना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, २९-१२-१९४५

१. एक कार्यकर्त्ताने लोगोंके अनेक कष्टों और सरकारी ज्यादतियोंकी शिकायत की थी। गांधीजी उसका उत्तर देते हुए बोल रहे थे।

२. हिन्दुस्तान मजदूर सेवक संघकी बंगाल शाखाके मन्त्री डॉ० मैत्रेयी बोसने गांधीजी से पूछा था कि मजदूर आन्दोलनमें लगे हुए कांग्रेसी लोग अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेसका लाल झंडा इस्तेमाल कर सकते हैं अथवा नहीं।

४१४. भाषण : प्रार्थना-सभामें

महिषादल
२८ दिसम्बर, १९४५

गांधीजी ने कहा कि मैंने यह अनुभव किया है कि किसी सभाकी कार्यवाहीके साधारण नियमोंका पालन नहीं किया जाता है। सभामें शामिल होने वाले व्यक्ति से यह अपेक्षित है कि उसे सभाकी कार्यवाही चाहे पसन्द हो या नहीं, उसे अन्त तक उपस्थित रहना है। यदि इस परिपाटीका पालन नहीं होता और कोई व्यक्ति सभाकी कार्यवाहीके बीचमें एकाएक उठकर चला जाता है तो वह दूसरोंके काममें विघ्न ही डालता है। गांधीजी ने कहा कि ऐसी सभाओंमें शामिल होने वाली अनेक महिलाओंने मुझे बताया है कि ऐसे समारोहोंमें शामिल होने के लिए उनके पास बहुत सीमित समय होता है, क्योंकि उन्हें गृहस्थीके काम-धन्धे भी सँभालने होते हैं। निस्सन्देह यह उनके पक्षमें एक प्रबल तर्क है, किन्तु इस बातके उत्तरमें मैं कहूँगा कि ऐसी स्थितिमें उन्हें पहलेसे समझ लेना चाहिए कि उनके पास सभाके अन्त तक बैठने का समय है या नहीं।

यदि वे सभामें शामिल होने का ही निश्चय करें तो उन्हें सभाके समाप्त होने तक वहाँ उपस्थित रहना चाहिए। कितने ही लोग इस सभाके आरम्भ हो जाने के बाद आये हैं। ऐसे मौकोंपर विलम्बसे आने वालेको सभाके बाहर ही रहना चाहिए।

किसी साधारण सभाके मौकेपर भी ये आचार-नियम लागू होते ही हैं, किन्तु प्रार्थना-सभामें तो उनका पालन बिलकुल अनिवार्य है। इसका कारण यह है कि प्रार्थना-कालमें सब ध्यानमें मग्न होना चाहते हैं और ऐसे समयमें कोई भी बाह्य हलचल अप्रिय होती है। ऐसी सभाओंके संयोजकोंका ध्यान मैं विशेष रूपसे इन सामान्य आचार-नियमोंके पालनकी ओर खींचना चाहता हूँ। उन्हें चाहिए कि वे पहलेसे ही इन आचार-नियमोंकी प्रतियाँ लोगोंमें बाँट दें। यदि वे इस मामलेमें लोगोंको प्रशिक्षित कर लेंगे तो वे जनताकी सेवाका एक कार्य कर लेंगे, अपने आपको और सुसंगठित बना सकेंगे, सार्वजनिक शिष्टाचारको बढ़ायेंगे और लोगोंको एक नई प्रेरणा देंगे।

चरखा-प्रदर्शनकी, जिसमें ५०० स्त्री-पुरुषोंने भाग लिया था, चर्चा करते हुए गांधीजी ने कहा कि मैंने दो प्रकारके चरखे उपयोगमें देखे हैं। एक तो पुराना चक्रवाला चरखा और दूसरा जो पेटी-चरखा कहलाता है। पेटी-चरखेका सूत्रपात मैंने ही

किया है, जिसका कारण यह है कि इस प्रकारका चरखा मुझ-जैसे नियमपूर्वक कातने वाले और यात्रा करने वाले लोगोंके लिए सुविधाजनक और उपयुक्त है। लेकिन लोग यह न भूलें कि चरखेके सम्बन्धमें श्रेष्ठ नियम यह है कि वह दाममें सस्ता हो, और स्थानीय तौरपर उपलब्ध सामग्रीसे तैयार किया जाये। करोड़ों लोग केवल एक ही प्रकारके चरखेका उपयोग करें, ऐसी आशा नहीं की जा सकती, और न ऐसा हो कि उसका निर्माण किसी खास केन्द्रीय स्थानमें ही हो। यदि चरखे उपलब्ध कराने के लिए एक केन्द्रीय भण्डार तैयार कर भी दिया जाये तो भी भला वह ४० करोड़ लोगोंकी आवश्यकताकी पूर्ति कैसे कर सकता है?

जहाँ तक चरखेकी शक्तिका सवाल है, मैं यह दावा कर सकता हूँ कि उससे बढ़कर शक्तिशाली कोई दूसरा यन्त्र नहीं है। मेरे लिए तो चरखा स्वराज्यका, अहिंसाका और साक्षात् अन्नपूर्णाका प्रतीक है।

प्रार्थनामें गाये गये भजनके सम्बन्धमें गांधीजी ने कहा कि उसके रचयिताने यह विचार प्रकट किया है कि कष्ट-सहन करके ही मनुष्य भगवानका साक्षात्कार करता है। ईश्वर-प्राप्तिके लिए जो मार्ग बताया गया है वही स्वराज्य-प्राप्तिके लिए भी उपयुक्त है।

समस्त विश्वमें इस बातका एक भी उदाहरण नहीं है कि कष्ट-सहनके बिना स्वराज्य-प्राप्ति हुई हो। स्वराज्य ही क्यों, कष्ट सहे बिना तो ज्ञान भी प्राप्त नहीं होता। यदि किसी मनुष्यको कष्ट सहे बिना ही कोई वस्तु प्राप्त हो जाये तो वह उसका मूल्य पूरी तरह नहीं समझ पाता और न उसकी कद्र कर पाता है। अतएव, यदि आप लोगोंने आज गाये गये भजनको भली-भाँति समझा है, तो आप याद रखें कि आपको ईश्वरकी ही खातिर सब कष्ट भोगने हैं। यदि यह सत्य है कि कष्ट-सहनके बिना ईश्वर-प्राप्ति असम्भव है तो यह भी उतना ही सत्य है कि कष्ट-सहनके बिना स्वतन्त्रता प्राप्त कर पाना भी असम्भव है। यह भी याद रखें कि स्वराज्यकी खातिर आपने जो दुःख सहे हैं वे निरर्थक नहीं रहे हैं। उन सबसे स्वराज्य तक पहुँचने का आपका मार्ग प्रशस्त होता गया है।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ३०-१२-१९४५

४१५. पत्र : कान्तिलाल गांधीको

महिषादल
२९ दिसम्बर, १९४५

चि० कान्ति,

अभी सवेरेके ६ बजे हैं। चारों ओर घना अन्धकार है। प्रार्थना ५ बजे खत्म हुई। उसके बाद मैं सोने की बजाय पत्र पढ़ने, सुनने और लिखने का काम कर रहा हूँ। ऐसा करते हुए ६ बजे तेरे पत्र तक पहुँच पाया हूँ।

चि० शान्ति अच्छा हो जायेगा। ऐसे कड़वे-मीठे, मीठे-कड़वे अनुभव गृहस्थाश्रम में होते ही रहते हैं।

तू घर बैठे-बैठे चरखा सम्बन्धी जो काम आ पड़ सो करे; यह मुझे अच्छा लगेगा। यदि तुझमें कार्यदक्षता, कुशलता, दृढ़ता, पवित्रता, ईश्वरपरायणता और नम्रता होंगी तो घर बैठे किया गया कार्य तेरे लिए कठौतीकी गंगा-जैसा होगा। विद्यार्थी-जीवन में किये गये ऐसे कार्यको मैं पर्याप्त समझता हूँ।

घर-बार सँभालते और पारमार्थिक सेवा करते हुए जितना बने उतना अध्ययन करने से अगर एक सालकी पढ़ाई पूरी करने में दो साल लग जायें तो भी दुःखी होने की जरूरत नहीं है। आलस्य या मौज-शौकके कारण पढ़ाईमें रुकावट पड़े तो यह जरूर शर्मकी बात मानी जायेगी। जो लोग यह सोचते हैं कि विद्यार्थी-जीवनमें सेवा हो ही नहीं सकती वे भूल करते हैं। विद्यार्थी-जीवन भी सेवा-भावनाको बढ़ाने के लिए ही होता है। इसलिए अगर विद्यार्थी सेवा करने के तात्कालिक अवसरको भुला देता है तो उसकी वृत्ति पारमार्थिकके बदले स्वार्थी हो जाती है, जैसा कि आम तौरपर आज है। फिर, आजका विद्याभ्यास मुख्यतः परमार्थका या देश-सेवाका विरोधी है। इसपर विद्यार्थीको अंग्रेजीकी हँसली पहनने का बोझ उठाना पड़ता है। और जो सीखने योग्य नहीं है उसे सिखाया जाता है और सीखने योग्य — जैसे कि चरखा — नहीं सिखाया जाता है। मेरी दृष्टिसे तो चरखेकी शिक्षा आरम्भसे ही और मुख्य रूपसे दी जानी चाहिए — अर्थात् उसके शास्त्र और शिल्प क्रिया दोनोंकी शिक्षा देनी चाहिए। ऐसा तो है नहीं, इसलिए सरकारी विद्यालयोंमें पढ़ने वाले विद्यार्थियोंको इस कमीको लगनके साथ पूरा करना चाहिए, जैसा कि तू करता है। ऐसा न करने पर तो पारंगत होने का मिथ्याभिमान ही पैदा होगा। इसलिए तू तो चरखे और उसके शास्त्रको किसी भी हालतमें मत छोड़। यह पूरा पत्र सरस्वतीको पढ़वाना और समझाना। इसपर से उसे इस

बातका ज्ञान और भान होगा कि चरखेमें कितनी अधिक सेवा — बल्कि सिर्फ सेवा ही — भरी हुई है। अगर वह न समझ पाये तो मुझे लिखना; मैं उसे फिर समझाने का प्रयत्न करूँगा। वैसे, इसके पूर्व सोदपुरसे लिखा मेरा पत्र मिल ही गया होगा।

वहाँकी राजनीति — राजनीतिक जोड़-तोड़ — के बारेमें तूने जो लिखा वह मैं समझ गया हूँ। तू निर्लिप्त रहकर जितना बने उतना करता जा।

तेरी रिपोर्टकी अंग्रेजी शायद मैं सुधारकर भेजता, लेकिन उसमें दी गई खबर इतनी अच्छी थी कि वह जाजूजी को भेजना उचित लगा और इसलिए मैंने भेज दी। तेरी अंग्रेजी प्रथम कोटिकी न हो पाये, तो इसकी परवाह मैं नहीं करता। हाँ, इस बातकी परवाह मुझे बहुत है कि मनुष्योंमें तू प्रथम कोटिका मनुष्य बने और हिन्दुस्तानकी भाषाओंका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करे। साथ ही तू व्याकरण सम्मत और शुद्ध अंग्रेजी लिख सके तो मुझे अच्छा लगेगा। इसीलिए मैंने इस ओर इशारा किया।

मुझे यहाँ परम शान्ति मिल रही है। कल कोंटाई जाऊँगा। वहाँ भी चार दिनका कार्यक्रम है। ३ जनवरीको सोदपुर पहुँचने का इरादा है। वहाँसे ८ तारीखको असम और १६ तारीखको वापस सोदपुर लौट आऊँगा। हालाँकि हमारा दल बड़ा है लेकिन कोई परेशानी नहीं होती।

पत्रका उत्तर सोदपुरके पतेपर लिखना। मैं कदाचित् २३ तारीखको मद्रास पहुँचूँगा।

तुम तीनोंको,

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्च:]

हरिलाल बंगलौरमें नंजप्पा के यहाँ है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ७३८१) से। सौजन्य : कान्तिलाल गांधी

४१६. पत्र : मदालसाको

महिषादल
२९ दिसम्बर, १९४५

चि० मदालसा,

तेरा पत्र मिला। सुशीला तो तुझे लिखेगी ही। अब यह कहा जा सकता है कि तू भय और दुःखसे मुक्त हो गई है।

स्तनोंका ऑपरेशन होने में समय लगता है, लेकिन यह कोई कठिन ऑपरेशन नहीं माना जाता।

लगता है कि तू अभी बजाजवाड़ीमें ही है। यदि तू चलने-फिरने लगे और मात्र औषधरूप लेकिन पर्याप्त खाना खाये तो तू जल्द ही स्वस्थ हो जायेगी। यह अच्छा हुआ कि विनोबाजी आकर तुझसे मिल गये। गाड़ी भले विलम्बसे चली। इससे वे तुझे ज्यादा समय दे सके।

बच्चेका वजन कम ही कहा जायेगा। इन सब अनुभवोंसे गुजरने के बाद यदि तू अधिक सावधान हो जाये तो सब-कुछ ठीक ही है।

रामकृष्ण खूब अनुभव प्राप्त कर रहा है। वस्तुतः हमारी यह यात्रा ही अच्छे अनुभवोंसे भरपूर है। यह कितने आश्चर्यकी बात है कि लोग भाषण सुनना नहीं चाहते, बल्कि प्रार्थनाकी माँग करते हैं!

जितना तुमसे सहन हो सके उतनी देर तक तुम दोनो धूपमें बैठना और जितनी धूप सेकोगे तुम्हें उतनी ही अच्छी नींद आयेगी। इस समय मैं इसका प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर रहा हूँ। और जितनी ज्यादा नींद आयेगी तबीयत उतनी ही अच्छी होगी और यदि आलस्य-भरी नींद न हो तो उससे मन भी स्वस्थ होता है।

रसगुल्ले[1] का तो रसगुल्ला बनता जा रहा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५८५५) से

१. गांधीजी द्वारा दिया गया मदालसाके पुत्रका उपनाम

४१७. पत्र : मथुराभाईको

महिषादल
२९ दिसम्बर, १९४५

भाई मथुराभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम जो कहते हो वह सर्वथा सत्य है। तुम बम्बईमें हो, अतः तुम्हें पूरी जानकारी वहीं प्राप्त कर लेनी चाहिए। मेरा ऐसा खयाल है कि मरे हुए ढोरों [की हड्डियों] से 'पिकर्स'[1] बनाये जाते हैं। किन्तु अब तुम्हारा पत्र मिल गया है, इसलिए मैं इस बारेमें आगे जाँच-पड़ताल करूँगा।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

श्री मथुराभाई
रतनजी जेठालाल
पिकर्स कारखाना
धारावी रोड
बम्बई—१७

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४१८. पत्र : श्रीपाद जोशीको

खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर
२९ दिसम्बर, १९४५

चि० श्रीपाद,

तुम्हारा खत मिला। तुम्हारे मिश्र लग्नके लिये धन्यवाद। मेरी उमीद है कि यह लग्न भोगके लिये नहीं होगा लेकिन त्यागके लिये और तुम्हारी सेवाशक्ति कम से कम दोगुनी होगी।

भाई जोषी[2] को अलग खत नहीं लिखता हूं।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ५९१६) से

१. मूलमें इसी शब्दका प्रयोग किया गया है; सम्भवतः कोई उपकरण
२. समाजवादी नेता एस० एम० जोशी

४१९. एक पत्र

महिषादल
२९ दिसम्बर, १९४५

प्रिय भगिनी,

तुम्हारा खत मिला। हरिलाल आखरमें पहुंच गया वह अच्छा हुआ। तुम दंपती ही हरिलालका जीवन उद्धार करो। अगर वह अच्छा हो जायगा तो उसे मैं तुम्हारी संपत्ति मानूंगा।

मगर हिन्दी बराबर नहीं समझती हो तो हरिलाल अच्छी तरहसे समझा देगा। वह कान्ति सरस्वतीको लिखता है क्या? मेरे पर एक-दो खत आये थे।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४२०. बातचीत : महिषादलके निवासियोंके साथ[1]

२९ दिसम्बर, १९४५

जवाबमें गांधीजी ने कहा कि १९२० और १९२१ में भी मुझसे यही सवाल[2] पूछा गया था और उस वक्त मैंने जो जवाब दिया था उसीको मैं यहाँ दोहराऊँगा। यह सवाल अहिंसा और मेरी कल्पनाके स्वराज्यके बारेमें लोगोंके अज्ञानको प्रकट करता है। बहनोंके शीलकी कीमतपर मैं स्वराज्य नहीं चाहता। जो चीज अहिंसाके नामसे चलती है, अगर वह आपको बहनोंका शील बचाने की ताकत नहीं देती, या खुद बहनोंको इस लायक नहीं बनाती कि वे अपने शीलकी रक्षा कर सकें तो वह अहिंसा नहीं है।

१. यह बातचीत सुशीला नैयरके "नॉन-वायलेंस ऐंड मॉलेस्टेशन ऑफ विमेन" (अहिंसा तथा स्त्रियोंका शील-भंग) शीर्षक लेखसे उद्धृत की गई है। लेखिकाने बताया है कि २९ दिसम्बर, १९४५ की रातको गांधीजी महिषादल और उसके आसपासके गाँवोंसे आये हुए करीब २०० भाई-बहनोंसे मिले। इनमें वहाँके कार्यकर्ता और १९४२ के आन्दोलनके दौरान पुलिस और फौजवालोंके हाथों सताये गये लोग शामिल थे।

२. गांधीजी ने उनसे सवाल पूछने को कहा। प्रश्न यह पूछा गया था कि जब हमारी माँ-बहनों की लाज लूटी जाती हो, क्या तब भी हमें अहिंसक रहना चाहिए?

सच मानिए, वह कोई और ही चीज है।

और फिर गांधीजी ने बताया कि १९०९ में उन्होंने इस बारेमें 'हिन्द स्वराज'[1] में क्या लिखा है। गांधीजी ने कहा कि अनुभवने उनकी उस समयकी दलीलोंको पुख्ता ही किया है।

.. सीताको रावणसे किसने बचाया? कवि हमसे कहता है कि सीताकी पवित्रता इतनी प्रखर थी कि बिना उसकी स्वीकृतिके रावणकी हिम्मत न हुई कि वह अपने मनकी कर ले।

अन्तमें गांधीजी ने सबको चेतावनी देते हुए कहा कि अगर आप मेरे पास यह कहते हुए आते हैं कि चूँकि आप अहिंसाकी प्रतिज्ञा ले चुके थे, इसलिए अपनी बहनोंकी रक्षा नहीं कर सके तो मैं आपको माफ नहीं करूँगा। अहिंसाको कायरताकी ढाल तो हरगिज नहीं बनाना चाहिए। वह तो बहादुरोंका हथियार है। ऐसे जुल्मोंको बेबसीके साथ देखते रहने की अपेक्षा तो मैं यह ज्यादा पसन्द करूँगा कि आप हिंसक तरीकेसे लड़ते-लड़ते मर मिटें। सच्चा अहिंसक पुरुष ऐसे अत्याचारोंकी कहानी कहने को कभी जिन्दा नहीं रहेगा। वह तो अहिंसक तरीकेसे जूझते हुए अपनी जानपर खेल जायेगा — मर मिटेगा।

[अंग्रेजीसे]

हरिजन, १०-२-१९४६

४२१. भाषण : प्रार्थना-सभामें

महिषादल

२९ दिसम्बर, १९४५

शिविरकी व्यवस्था सँभालने वाले स्वयंसेवकों तथा स्वयंसेविकाओंने गांधीजी और उनके साथियोंकी देखभाल जिस स्नेह और लगनसे की थी उसकी गांधीजी ने मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की। महिषादलकी सार्वजनिक प्रार्थना-सभाओंमें जो अनुकरणीय मौन तथा व्यवस्था कायम रही उसके लिए उपस्थित जनोंको बधाई देते हुए गांधीजी ने कहा कि इससे मुझे बहुत सन्तोष मिला। यहाँ मुझे जो मानसिक शान्ति मिली है वैसी शान्ति तो मुझे सेवाग्राम या सोदपुरमें भी नहीं मिली।

१९४२ के आन्दोलनसे सम्बन्धित घटनाओंकी चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि पिछले चन्द दिनोंमें मैंने जो-कुछ सुना और जाना है उसके बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि यद्यपि लोगोंने अद्वितीय साहस और सहिष्णुताका परिचय दिया,

१. देखिए खण्ड १०।

किन्तु उन्होंने कुछ गलतियाँ भी कीं, खासकर अहिंसाके सिद्धान्तको समझने में। उन्होंने आगे कहा :

इसके अलावा, खुद हमारी ओरसे भी कुछ ज्यादतियाँ हुईं। राष्ट्रीय संस्था और विदेशी शासनमें कुछ अन्तर अवश्य होना चाहिए। हमारी राष्ट्रीय संस्था में हममें आपसी मतभेद नहीं होने चाहिए। मैं तो इससे भी एक कदम आगे जाकर कहना चाहूँगा कि हमें ऐसा आचरण करना चाहिए था जिससे हमारे निकट रहनेवाले विदेशियोंको महसूस हो कि हमारी संस्था विदेशी संस्थासे श्रेष्ठ है क्योंकि हम हिंसा नहीं चाहते। हम अपना काम अहिंसा द्वारा करना चाहते हैं।[1]

राष्ट्रीय सरकारके अधीन विरोधियोंको या हमसे भिन्न विचार रखने वालोंको भी ऐसा नहीं लगना चाहिए कि हम मिदनापुरमें या भारतके किसी भी भागमें अपने इस आदर्श तक नहीं पहुँच पाये हैं। इसपर यह भी कहा जा सकता है कि यह तो बहुत मुश्किल काम है। लेकिन अगर मैं आपकी गलतियाँ न बताऊँ या आपके समक्ष विशुद्ध आदर्श न रखूँ तो हम उस आदर्श तक पहुँचने की आशा कभी नहीं कर सकते। गांधीजी ने आगे कहा :

अगर आप ऐसा नहीं करेंगे तो भले ही मैं दुनियामें अपना यह दावा दुहराता फिरूँ, लेकिन सचमुच कुछ कर नहीं पाऊँगा। अगर मैं ये बातें आपके सामने स्पष्ट नहीं करूँगा तो सफल नहीं होऊँगा। पिछले ६० सालके अपने कार्यकालमें मेरी यह नीति रही है कि अपने साथ काम करने वालोंकी मैं कभी प्रशंसा नहीं करता। मैं उनकी गलतियाँ दूसरोंको भी बता देता हूँ और मानता हूँ कि ऐसा करने से हमारी गलतियाँ ठीक हो जायेंगी।[2]

गांधीजी ने अपना यह विश्वास दोहराया कि सत्य तथा अहिंसाको इतने वर्षोंसे अपनाने और उनपर आचरण करने से भारतका कोई नुकसान नहीं हुआ है, बल्कि लाभ ही हुआ है। यदि अभी तक हम अपना निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाये हैं तो इसमें दोष सत्य और अहिंसाका नहीं, बल्कि खुद हमारा है।

उदाहरणके लिए, अगर हमने अहिंसाके सिद्धान्तको अपने जीवनमें पूरी तरह उतार लिया होता तो दूसरे धर्मोंके लोगोंके खिलाफ भेदभाव करने की भावनासे बिलकुल मुक्त हो गये होते और उन सबकी सेवा समान प्रेम-भावसे करते। मुझे यह जानकर बहुत दुःख हुआ कि महिषादलके इलाकेमें हरिजनोंको आज भी मन्दिरोंमें प्रवेश नहीं करने दिया जाता। आशा है आप अस्पृश्यताके पापसे पूर्णतः छुटकारा पा लेंगे। यह अहिंसाकी दिशामें भारी प्रगति मानी जायेगी।

प्रार्थनामें गाये गये भजनकी चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इसमें भक्तने भगवानसे प्रार्थना की है कि संशय तथा विपत्तियोंसे उसके अन्दर उत्पन्न होने

१ और २. ये अनुच्छेद हिन्दू के, ३०-१२-१९४५ के अंकसे लिये गये हैं।

वाले भयके भावसे वह उसे मुक्त करे। सन्देह करना ईश्वरका अपमान करना है। विपत्तियोंसे घबराना ईश्वरसे दूर भागना है। इसलिए वह आध्यात्मिक तथा शारीरिक दोनों प्रकारके साहस देने की प्रार्थना करता है, ताकि वह भयसे सर्वथा मुक्त हो सके।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ३०-१२-१९४५ और ३१-१२-१९४५

४२२. पत्र : छगनलाल गांधीको

३० दिसम्बर, १९४५

चि० छगनलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरे बारेमें तो सभी समाचार तुम्हें अखबारोंसे मिल ही जाते होंगे। प्रभुदासके यहाँ एक बालिका और बढ़ गई, इस वाक्य-रचनामें किसी तरहके खेदकी गन्ध तो नहीं है न? यदि हम बालक और बालिकामें वस्तुतः कोई भेद न समझते हों और मिथ्या मोहवश बालिकाको जिम्मेदारी न मानते हों तो फिर खेद या जिम्मेदारीका कोई कारण नहीं रह जाता। यदि हम उसका भली-भाँति पालन-पोषण करें, उसे स्वतन्त्र रूपसे विचार करने योग्य और स्वावलम्बी बनायें, एवं यदि वह विवाह करना चाहे तो उसे अपना जीवन-साथी खोजने की कला सिखायें तथा वह चाहे तो इस खोजमें उसकी सहायता करें, तो सब ठीक ही है। इसके अतिरिक्त, ऊपरसे यह लाभ है कि इससे बालिकाओंके पालन-पोषणकी कला हमारे हाथ आ जायेगी और हम अन्य लोगोंके सामने अनुकरणीय उदाहरण भी रख सकेंगे।

इसे प्रभुदासको भी पढ़ने के लिए भेज देना। यदि सम्भव हो तो अब प्रभुदास और अम्बाको संयमका पालन करना चाहिए। यदि वे संयमका पालन नहीं कर सके तो उनकी सेवा करने की क्षमता बहुत कम हो जाने वाली है।

काशीकी निर्बलतासे मुझे आश्चर्य नहीं होता। उसकी निर्बलता बनी ही रहेगी; क्योंकि वह बहुत बेचैन रहती है। अन्यथा मैं यह जानता हूँ कि वह अपने शरीरको गर्म रखकर वहाँकी ठण्ड कुछ हद तक सहन कर सकती है। सर्दीके मौसममें मैंने बम्बई जाने का सुझाव दिया था। यह सुझाव देने में दोष तो था ही, इसके बावजूद मैंने सुझाव दिया, किन्तु उसने इनकार कर दिया। और अब तो ठण्ड भी कम हो गई होगी।

राजकुमारी हैदराबाद (सिन्ध)में है। वह वहाँसे २ तारीखको छूटेगी।
आशा है, तुम स्वयं आनन्दपूर्वक होगे।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४२३. पुर्जा

३० दिसम्बर, १९४५

बालकोंको सुदर कातना चाहीये, कातने की पूर्वक्रिया और बादकी क्रिया सीखनी चाहीये। बालकोंको स्वच्छताके नियम जाणना और पालना चाहीये। उठने बैठने के नियमोंका पालन करना अत्यावश्यक है। सत्य और अहिंसा उनका सहज स्वभाव बनना चाहीये।

मो० क० गांधी

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ७१७९) से

४२४. पत्र : नारायण म० देसाईको

जहाजमें
३० दिसम्बर, १९४५

चि० बाबलो,

तू तो अब बहुत बड़ा हो गया। तुझे भी सेवा करते हुए १२५ वर्ष जीने की इच्छा करनी चाहिए और ऐसा प्रयत्न करना चाहिए।

जैसा तू कहता है, दुर्गाकी तबीयत अगर वैसी ही अच्छी हो तो मैं यह मानूंगा कि तू सचमुच बड़ा हो गया है। सुशी तो अच्छी होनी ही चाहिए।

विवाहको तो जितना टाला जा सके, सामान्यतः उतना ही लाभदायक है।

मैं यह तो सुनता ही रहता हूँ कि तू आयुके साथ-साथ मानसिक रूपसे भी बड़ा हो गया है। तू 'महादेवकी जगह लेना और उनसे आगे निकल जाना।

बापूके आशीर्वाद

नारायण देसाई
सेवाग्राम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४२५. पत्र : पुष्पा देसाईको

मुख्य शिविर : सोदपुर
जहाजमें महिषादलसे कोंटाई जाते हुए
३० दिसम्बर, १९४५

चि० पुष्पा,

तेरा पत्र मिला। तू कायर बनेगी तो कैसे चलेगा? जो आ पड़े उसे झेलना तो चाहिए ही। वजुभाईको तू पति न माने, यह सहन कर सकता हूँ, समझ सकता हूँ। लेकिन भाई तो है न? भाईसे क्या डरना? उसके साथ तू बातचीत न करे, यह कैसे चल सकता है? उसने तो कोई दोष किया नहीं। दोष किया भी हो तो तूने ही किया होगा। तू परम्पराका पालन नहीं करना चाहती। इसमें भी मैं कोई हर्ज नहीं देखता। लेकिन परम्पराका पालन न करने में भी सामान्यतः पूरी दृढ़ता, पवित्रता और विनय होना चाहिए। फिर, तुझे तो बहुत ऊँचा उठना है। तूने साधारण व्यक्तिको अपना पति न स्वीकार करके ईश्वरका ही वरण करने का आग्रह रखा है। तेरी यह हठ इस आग्रहके योग्य तो नहीं है। इसलिए तुझे तो वजुभाईका स्वागत करना चाहिए। तभी तू उसका भी उद्धार कर सकती है और अपना भी। मुझे खुशी है कि तू यह मानती है कि अभी तू नासमझ है। इसलिए नासमझ व्यक्तिको जिस मर्यादाका पालन करना चाहिए उसका पालन तू भली-भाँति करना। यह मर्यादा इतनी ही है कि वजुभाईके साथ एकान्तमें न रह, उसका स्पर्श न कर। बहनके धर्ममें स्पर्शका समावेश नहीं है। स्पर्श हो जाने पर वह उससे दूर नहीं भागती, लेकिन इस स्पर्शमें विकारका कोई स्थान नहीं होता। लेकिन नासमझ होने पर तो सगे भाईका स्पर्श भी बहुधा वर्जित हो जाता है। इन सभी सूक्ष्म बातोंको तू अच्छी तरहसे समझना सीखेगी, तभी तू ईश्वर को पति मान सकेगी और उसके बड़े दरबारमें तुझे स्वीकार किया जायेगा। अन्यथा तो तू कंकड़की तरह साबित होगी।

जब सम्भव हो तब विनोबाके पास जाना। उनसे तुझे स्नेह मिलेगा। ज्ञान मिलेगा, तेरा संकल्प बढ़ेगा। पिताजी या वजुभाईके लिखे पत्र तू न पढ़ना चाहे तो मैं नहीं भेजूंगा। लेकिन मैं चाहता हूँ कि ऐसे पत्र पढ़कर भी तू विह्वल न हो पाये। कल बंगला भजन गाया गया था। शामको तो रोज यहाँ बंगला भजन ही गाया जाता है और यही ठीक भी है। इस भजनकी पहली पंक्ति यह थी कि 'हे प्रभो, संकोच अर्थात् शंकाका कोई अवसर भी मेरे जीवनमें न हो। मुझे

विह्वलतासे बचा लेना।' मतलब यह कि मेरी शंका-मात्रको मिटा देना। तेरा व्रत कठिन है। यह व्रत तूने स्वेच्छासे लिया है। प्रभु-कृपाके बिना इसका पालन नहीं किया जा सकता। यह पत्र दोपहरमें जहाजमें बैठा-बैठा बड़ी सावधानी से लिखवा रहा हूँ—इस आशासे कि इससे तेरा अज्ञान दूर होगा और तू दृढ़ बनेगी। सेवा-कार्यमें लीन हुए बिना शान्ति नहीं मिलेगी। चाहे तो यह पत्र विनोबाको पढ़वा दे। वे तुझे विस्तारसे समझा सकेंगे और इसमें कोई कमी होगी तो उसे भी पूरा कर देंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२६८) से

४२६. पत्र : श्यामलालको

३० दिसम्बर, १९४५

भाई श्यामलाल,

तुम्हारा ता० २६-१२-४५ का खत मिला। तिरुमल्लाई गांवमें बुनियादी तालीम खोलने का खर्च मंजूर करने के बारेमें योजना देखने की आवश्यकता लगती है। इमारतकी जमीनके मालिक क्या हम होंगे? ५००) रुपये मिल गये हैं? तिरुमल्लाई गावकी आबादी कितनी है? खर्च शीघ्रतासे स्वीकार करने की आवश्यकता है तो मालिकी वगैरहका निश्चय करके मेरी स्वीकृति मानी जाय। पत्रका उत्तर जल्दी देने के कारण जहाजमें ही लिखवा रहा हू। ठिकाना तो सोदपुर ही माना जाय।

श्री श्यामलाल
कस्तूरबा स्मारक निधि
वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४२७. पत्र : मोटुरी सत्यनारायणको

बोटमें
३० दिसम्बर, १९४५

भाई सत्यनारायण[1],

तुम्हारे दो खत करीब एक साथ मिले। एक मेरे पर २४-१२-४५ का और दूसरा सुशीलाबहिनपर २६-१२-४५ का। मैं २३-१-४६ को वहां पहुंचूंगा ही ऐसा इरादा कर रहा हूं। उसे सफल करना भगवानके हाथ है।

तुम्हारा दौरा अभी बंद होना ही चाहीये और मद्रासमें काममें लग जाना चाहिये। वहांकी तैयारी सूक्ष्मतासे बराबर की जाये तो हमारा काम सुशोभित हो सके।

सीतारामजी ने मुझसे कुछ बात की ऐसा याद नहीं है। कमलनयनजी से कुछ हुई थी। फिर सोदपुर वापस जाऊंगा तब सीतारामजी से बात करने की कोशिश करूंगा। मद्रासके समारंभकी सफलतापर काफी चीज निर्भर रहेगी। हम संपूर्णतया सच्चे और उद्यमी रहेंगे तो पैसेका मिलना मैं बहुत आसान मानता हूं। 'सच्चे' का मेरा अर्थ पूर्णतया याद होगा। मेरा ख्याल है कि मैंने समझाने की कोशीश की थी।

मध्यवर्ती पार्लमेंटरी बोर्डका अधिवेशन वहां कही होगा ऐसा सरदारने मुझसे कहा था। उनके तरफसे रूकावट नहीं है, लेकिन मौलाना साहेब वहां तक मुसाफरी नही कर सकेंगे। ऐसा उनके दिलमें था। तुम्हारे इस बारेमें कुछ चेष्टा करने की आवश्यकता नहीं है। मैं तो नहीं करता हूं। करनी भी नहीं चाहिये। अपने आप जो होने का होगा सो होगा।

कार्यक्रम पढ़ गया हूं। फजर और शामका रखा है। फजरमें अगर ९ बजे रोज हाजरी देने की होगी तो मुश्किल होगा। सोमवारको तो मौन ही होगा, गुरूवार, शनिवार, इतवार और मंगलवार सवेरे ९ बजे रखा है। मेरा तो वही वक्त मालीश इत्यादिका रहता है। इसलिये २ से ५ बजे तक मेरे पाससे काम लेना सुविधा होगा ऐसा देखकर जो कुछ भी करना है किया जाय।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. दक्षिण भारत हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके मन्त्री

४२८. पत्र : कृष्णचन्द्रको

महिषादल-कोंटाईके जहाजमें
मुख्य मथक[1] : सोदपुर
३० दिसम्बर, १९४५

चि० कृष्णचंद्र,

तुम्हारा पत्र मिला।

तुनाई तुमने शुरू की यह अच्छा किया। विनोबाजी का नया प्रयास बहुत ही पुरानी वस्तु है। अभ्याससे वह सफल हो सकती है। ऐसा प्रयोग एक सज्जनने भरी सभामें करके बताया था। बिनौलेसे कपास निकाला और हाथोंसे ईधर-उधर लंबा कर दिया और उसीकी पुनिया बनाकर कातना शुरू किया। तकलीपर काता। सूत बहुत स्वच्छ था। एक औरतने बिनौलेके साथका कपाससे कातना शुरू किया था, लेकिन इन सब चीजोंकी किमत मैं नही करता हू। विनोबाजी के प्रयोगकी किमत मेरे नजदीक बहुत है क्योंकि वे कहते हैं यह शास्त्रीय और समाजके लाभकी दृष्टिसे करते हैं। इसलिये नये प्रयोगके परिणाम सुनने की उत्सुकता रहा करेगी।

गीताई[2] वगैरहके लिए मैं समझा। जैसे नींदके बारेमें विनोबाजी ने बालकोबाको लिखते हुए सुन्दर लेख बनाया है, वैसे ही घुमते समय मौनकी महिमाके बारेमें लिखें, और उसका अमल करे। मैं महिमा समझता हू, परन्तु समझते हुए इस दौरेमें अमल नहीं करता हूं। लोभ, लालचमें मुझे फंसा देता है। लेकिन मैं जानता हूं कि १२५ वर्ष जिन्दा रहने के साथ-साथ लोभ इत्यादीका त्याग होना ही चाहिए। इस बारेमें आज अधिक नहीं लिखूंगा।

कानम[3] पौनार गया सो तो अच्छा लगता है, लेकिन विनोबा उसे एक घंटा निकाल दें वह कुछ चूभता है।

बलवन्तसिंह खरांगना भले गये। ऐसा ही करते रहें। उसमें लाभ ही होगा। उसका मतलब मैं यह भी करता हूं कि होशियारीबहिनका भली भांति चलता है और वह बिलकुल स्थिरचित हो गयी होगी।

ओमप्रकाशका समजा। उसको मुसाफरीका योग्य खर्च देना ही चाहिये।

वसुमतीबहिनकी तबियत अच्छी रही होगी।

शांताबहिन अच्छी होगी। होशियारी, कैलास, शान्ता वगैरह मुझे लिखें तो अच्छा लगेगा।

१. स्थान
२. विनोबा भावे द्वारा किया गया गीता का मराठी रूपान्तर
३. रामदास गांधीके पुत्र कानम गांधी

चक्रैया अब तो वही तैयार होता रहे, वहां सीखे। अगर उसका मन और शरीर अच्छा रहे तो सब अच्छा ही होगा।

बाकी [पुण्य] तिथी[1] (तारीख) पर हमने भली भांति गीता पारायण की थी और काता। बहारके कुछ लोगोंने हमारे साथ-साथ एक घंटा काता भी।

उस साधुको रखने में मुझे अभी थोड़ा सा भी उत्साह नही है। मैं तो यहा तक समझ गया हूं कि रखने की मैंने सूचना की वह भी निकम्मा मोह और लोभ था।

घड़ीके बारेमें मैं देख लूंगा।[2] याद दिलाना।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५४०) से

४२९. पत्र : मार्जरी साइक्सको

खादी प्रतिष्ठानके पतेपर
सोदपुर (२४ परगना)
कैम्प : कोंटाई
३१ दिसम्बर, १९४५

प्रिय मार्जरी,

यह पत्र मैं खुद लिखने की कोशिश नहीं करूँगा, क्योंकि अभी मैं जहाजमें बैठा हूँ, जो नहरके रास्ते मुझे कोंटाई लिये जा रहा है। इसलिए पत्र बोलकर ही लिखवाना पड़ेगा।

अगर तुम समझती हो कि शुभकामना शब्दोंमें व्यक्त करना जरूरी है तो नव वर्षकी शुभकामनाएँ। अगर हृदयमें यही शुभकामना हो तो इस तरहका प्रयत्न औपचारिक ही होता है।

चार्ली एण्ड्रयूजके बारेमें[3] तो मुझे लगता है कि मेरे सेवाग्राम पहुँचने से पहले तुम्हें कुछ भी नहीं भेजा जा सकता, क्योंकि कागज ढूँढ़ने पड़ेंगे। उन्हें अलग-अलग विषयकी फाइलोंमें रख दिया गया है। कुछ कागज एण्ड्रयूजकी नामवाली फाइलमें हो सकते हैं। उसे सिर्फ प्यारेलाल ही ढूंढ़ सकता है और वह मेरे साथ है। लिखूँ[4] तो मैं दूंगा और वह मेरे लिए खुशीकी बात होगी। तुम्हें इसकी जल्दी तो नहीं ही होगी, क्योंकि तुम्हारी पाण्डुलिपि तैयार होने में अभी कुछ समय लगेगा।

शान्तिनिकेतनमें मैंने जो-कुछ कहा और किया[5] वह कर्तव्यका निर्वाह-मात्र था।

१. हर माहकी २२ वीं।

२. देखिए पृ० २४९-५१।

३. मार्जरी साइक्स सी० एफ० एण्ड्रयूजकी जीवनी लिख रही थीं और उसकी तैयारीके अठारह महीनोंके दौरान वे शान्तिनिकेतनमें "एण्ड्रयूज स्मारक पीठ" के पदपर आसीन रही थीं।

४. तात्पर्य पुस्तककी प्रस्तावनासे है, जो गांधीजी ने १२ जनवरी, १९४७ को लिखी।

५. देखिए पृ० २५४-५५।

निस्सन्देह तुमसे बहुत आशा की जाती है और मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम अपेक्षित स्तर तक पहुँचने की भरसक कोशिश करोगी। इससे अधिक तो किसीके बसमें होता भी नहीं।

मैंने एगथाका पत्र पूरा पढ़ लिया है। जो वह चाहती है वह मैं पहलेसे ही कर रहा हूँ। शिष्टमण्डल[1] को कांग्रेसका सहयोग मिले, इसके लिए मैं जो-कुछ भी कर सकता हूँ, कर रहा हूँ। अगर शिष्टमण्डलका खर्च, जैसा कि समाचारपत्रोंमें बताया गया है, भारतको उठाना है तो यह बुरी बात है। उस स्थितिमें शिष्टमण्डल अपेक्षित गरिमासे रहित होगा। इस पत्रकी नकल या प्रासंगिक अंश तुम एगथाको भेज सकती हो। अगर उसके नाम पत्र लिखवा भी पाऊँ तो समयपर उसे वह शायद मिल नहीं पाये।

स्नेह।

तुम्हारा,
बापू

कुमारी मार्जरी साइक्स
शान्तिनिकेतन

अंग्रेजीकी नकलसे . प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३०. पत्र : बाल द० कालेलकरको

कोंटाई
३१ दिसम्बर, १९४५

चि० बाल,

तेरा पत्र मिला। तू काकाकी और मेरी सेवा करना चाहता है, यह तुझे शोभा देता है। किन्तु फिलहाल तेरा कर्तव्य वही है जो तू कर रहा है। यों समझ कि तूने जो-कुछ सीखा है उसे पूरी तरह शोभान्वित करने में हम दोनोंकी सेवा है। यदि हमारी सेवा करने वाला अन्य कोई न हो तो हमें यह सोचना पड़ेगा कि तेरा क्या कर्त्तव्य होगा, किन्तु यहाँ इस सम्बन्धमें विचार करना अप्रासंगिक है। फिलहाल तो तेरे ज्ञानका उपयोग बिड़लाजी का काम करने में है और अन्ततः प्रसिद्धि या धनकी अपेक्षा किये बिना कोटि-कोटि लोगोंको अपने ज्ञानका लाभ देने में है। यह तो मुझे अच्छा लगेगा ही कि तू फुरसतमें कुछ समयके लिए मेरे पास आकर रह जाये।

बापूके आशीर्वाद

श्री बाल कालेलकर

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. ब्रिटिश संसद-सदस्योंका; देखिए "पत्र : वल्लभभाई पटेलको", ३-१-१९४६ की पाद-टिप्पणी।

४३१. पत्र : वैकुण्ठलाल मेहताको

कोंटाई
३१ दिसम्बर, १९४५

भाई वैकुण्ठभाई,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। उप-समितिमें सम्मिलित न होने का अपना विचार तुम खुशीसे भाई खुशाल शाहको सूचित कर देना। साथ ही यह भी लिख देना कि सतीशबाबूने चूंकि त्यागपत्र दिया ही नही है, अतः तुम्हारे सम्मिलित होने का प्रश्न ही नही उठता।

वैकुण्ठभाई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३२. पत्र : गोपीनाथ बारडोलोईको

कोंटाई
३१ दिसम्बर, १९४५

भाई बारडोलाई,

मैं मुसीबतसे पांच दिन आसामके लिये निकाल सकता हूं। मुझसे आसाम के लिये छुडवा सकते हैं, पर वहां अधिक दिन रखने का लोभ नही कर सकते; न बहुत जगह मुझे ले जा सकते हैं। यह बात मैंने आपके वहांसे जो भाई आये थे, उन्हें बहुत समझाई थी। वे समझ भी गये थे। बात सच्ची यह है कि अभी मैं मुसाफरीके लायक रहा नहीं हूं। बंगाल तो आना ही था, सो आसामको भी भीतर रखा लिया। और क्या करूं? बार-बार इनकार करना भी कुछ अच्छा नहीं लगता है। मेरे पास तार आ रहे हैं। मुझे बचाइये।

बापुके आशीर्वाद

बारदोलाई

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३३. भाषण : प्रार्थना-सभामें

कोंटाई
३१ दिसम्बर, १९४५

गांधीजी ने कोंटाईवासियोंको धन्यवाद दिया कि उन्होंने उतने ही अनुकरणीय अनुशासनका सफलतापूर्वक पालन कर दिखाया है जितना कि बंगालमें जहाँ-जहाँ वे हालमें गये थे देखा गया था। उन्होंने आशा प्रकट की कि किसी और नेता के वहाँ आने पर भी वे वैसी ही अनुशासन-भावनाका प्रदर्शन करेंगे।

गांधीजी ने १९३४ का एक प्रसंग याद करते हुए कहा कि मैं हरिजन-कार्यके लिए उड़ीसामें दौरा कर रहा था, उस समय हेर ब्यूटो नामक एक जर्मन नाजीने अनुरोध किया कि उसे भी दौरेमें साथ रहने दिया जाये। उसका कहना था कि वह हिटलरका एक परम उत्साही प्रशंसक है। उसने सुन रखा था कि मेरी कार्य-पद्धति हिटलरकी कार्य-पद्धतिके ठीक विपरीत है और किस तरह दक्षिण आफ्रिकामें मैंने मुट्ठी-भर भारतीयोंको साथ लेकर, मात्र अहिंसा-रूपी शस्त्रके सहारे जनरल स्मट्सके खिलाफ सफल संघर्षका नेतृत्व किया था। इस कारण ब्यूटोको उस आन्दोलनके प्रणेतासे मिलने का कौतूहल था और उसकी प्रणालीका वह निकटसे अध्ययन करना चाहता था। मैंने अहिंसाके पक्षमें उसका हृदय-परिवर्तन कर सकने की आशामें उसका अनुरोध स्वीकार कर लिया। किन्तु उड़ीसाके जन-समुदायका अनुशासनहीन आचरण देखकर ब्यूटो मुझसे बोला कि अब मैं समझ गया हूँ कि भारतमें मुट्ठी-भर अंग्रेजोंने किस प्रकार ४० करोड़ जनसंख्यावाले राष्ट्रको दास बना रखा है। अपने इस अनुभवके कारण उसे इस बातमें सन्देह था कि भारत कभी अहिंसाके सहारे स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकेगा। उसके विचारमें, भारतको हिटलर-जैसे व्यक्तिकी आवश्यकता थी। किन्तु उन्हीं घटनाओंसे मैंने एक दूसरा ही पाठ सीखा। भारतको, निस्सन्देह, अनुशासनकी आवश्यकता है, किन्तु हिटलरी अनुशासन नहीं। वह अनुशासन अहिंसामय होना चाहिए और अहिंसामय अनुशासन तभी सम्भव है जब वह स्वेच्छासे अपनाया जाये। बंगालके इस दौरेमें मेरा यह विश्वास और दृढ़ हुआ है कि दोनों प्रकारके अनुशासनोंमें स्वैच्छिक अनुशासन कहीं श्रेष्ठ है। आज शाम यहाँ उपस्थित जन-समुदायने जो अनुशासन दिखाया है यदि सवा छः करोड़ बंगाली जनता भी उसीका प्रदर्शन कर सके तो हजारों हिटलर भी उसकी आजादी नहीं छीन सकते।

सभामें रवीन्द्रनाथ ठाकुरका जो गीत गाया गया था उसके सम्बन्धमें बोलते

हुए गांधीजी ने कहा कि उस गीतमें भक्त अपनी आत्मा सत्यको समर्पित करता है और सत्यकी सर्वदा विजयके लिए प्रार्थना करता है। वह यह भी प्रार्थना करता है कि सत्यसे उसे ऐसा बल प्राप्त हो कि विपत्ति या प्रत्यक्ष दण्डका भय भी उसे मन, वचन या कर्म किसी भी तरहसे असत्यकी ओर प्रेरित न कर सके। उस प्रणकी पूर्तिके लिए वह अपना जीवन और अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने को लालायित है। यदि यह गीत केवल आपके होठोंसे निकला हुआ स्वर नहीं, बल्कि आपके हृदयसे प्रस्फुटित एक सच्ची पुकार है तो उससे आपकी सम्पूर्ण जीवन-धारा बदल सकती है और अपने जीवन-कालमें ही आप सत्यसे साक्षात्कार करने में सफल हो सकते हैं।

दमन और उसके बाद आने वाले तूफान तथा बाढ़के कारण हुए विनाशके जिस दौरसे मिदनापुरवासियोंको हालमें गुजरना पड़ा था उसकी चर्चा करते हुए गांधीजी ने कहा कि इन सबसे मेरा हृदय गहरी पीड़ासे भर उठा है। अभी गाया गया गीत इन वर्तमान विपत्तियोंमें, बेशक, आपके लिए एक सन्देश है।

जनताके सम्मुख खाद्य-सामग्री, कपड़े और पीने के पानीके अभावकी समस्याओं की चर्चा करते हुए गांधीजी ने कहा कि यदि आप आलस्य और जड़ताको त्याग दें तो आसानीसे इनका समाधान निकल आयेगा। हाथपर हाथ रखकर, सरकारी सहायताकी प्रतीक्षामें बैठे रहने से कुछ नहीं बनेगा। आपको अपनी सहायता स्वयं करने की क्षमता दिखानी होगी। मेरा खयाल है कि आप लोग जितना कुछ कर सकते हैं, उतना नहीं किया है। यदि कोंटाई और आसपासके इलाकोंके लोग पूरी लगनसे कताईमें जुट जायें तो कपड़ेकी कमीकी समस्याका समाधान तो कर ही सकते हैं। इस दिशामें सफलता मिलने पर दूसरी दिशाओंमें भी राहत मिलेगी।

भाषण समाप्त करते हुए गांधीजी ने कहा कि यदि १९४२ में जनताके आचरण से सरकार उसकी आजादीकी उचित आकांक्षाको पहचान लेती और जनताके मार्गमें बाधा डालने के बजाय उसके साथ सहयोग करती तो भारतका इतिहास आज कुछ और ही होता। किन्तु ऐसा नहीं हुआ। तथापि बीती बातोंपर मैं एक बूंद भी आँसू बहाने को तैयार नहीं हूँ और आपसे भी ऐसी ही अपेक्षा रखता हूँ। आपका सारा ध्यान और शक्ति मौजूदा समस्याओंको हल करने में लगना चाहिए और आज जो गीत आपने गाया है उसमें यह बताया गया है कि आप किस भावनाके साथ इस कार्यको हाथमें लें।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ३-१-१९४६

४३४. पुर्जा : वल्लभभाई पटेलको

१९४५

तुम्हें साफ-साफ कह देना है कि गुप्त रूपसे मदद तो दी ही नहीं जा सकती। तो यह बिलकुल गलत बात है। बात छिपी रह ही नही सकती। प्रकट रूपसे ऐसी मदद कोई नही लेगा और न ली जा सकती है। इस सारी समस्यापर विचार किया जाना चाहिए। उतावली अथवा प्रलोभनमें आकर इतना बड़ा काम नहीं किया जाना चाहिए। भले ही हम हार जायें तो हार जायें। अंग्रेज भले ही मुसलमानोंको पाकिस्तान दे दें।

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २८५

४३५. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको

मुख्य शिविर : सोदपुर
३० दिसम्बर, १९४५/१ जनवरी, १९४६

बापा,

हरिभाऊ पाठकको लिखा तुम्हारा पत्र मिला है। मैं तुम्हारे विचारसे सहमत हूँ। समझाने के लिए मैं इतना और लिखना चाहता हूँ। सवर्ण छात्रोंका हरिजन विद्यार्थियोंके साथ रहना वाछनीय है, लेकिन उन्हें हम मुफ्त नही रख सकते। हमें उनका पूरा-पूरा खर्च मिलना चाहिए। यदि मकान हमारा हो तो उसका किराया मिलना चाहिए, और यदि किरायेका मकान हो तो उन्हें किरायेका अपना हिस्सा देना चाहिए।

बापू

महिषादल-कोंटाईके जहाजमें
[पुनश्च:]

कोंटाई
१ जनवरी, १९४६

सुचेताके बारेमें मैं देख लूंगा। फरवरीमें है न?

ब्रजकृष्ण चाँदीवालासे सम्बन्धित मामला मैं भेज सका हूँ। वह मृदुलाके तारके उत्तरपर निर्भर करेगा।

मेरी राय यह है कि हमें सन्तानम्को अम्बेडकरके सम्बन्धमें [वे जो लिख रहे हैं उसे] पूरा करने देना चाहिए। राजाजी की पुस्तिका[1] पढ़ने के बाद यदि स्वयं उसे लगे कि वह इसपर कोई नया प्रकाश नहीं डाल सकेगा, तो बात अलग है। राजाजी द्वारा लिखित पुस्तिका यदि मुझे मिल गई तो मैं उसे पढ़ूंगा।

तुम्हारे सफरकी बात मैं समझ गया। मेरे सफरके बारेमें तो तुम्हें समाचार-पत्रोंसे मालूम होता रहता होगा। मैं तो रसके घूंट पी रहा हूँ।

हरिजन कोषके विषयमें चि० कनैयो तुम्हें लिखेगा।

यह तो हुआ तुम्हारे २६-१२-१९४५ के पत्रका उत्तर। धर्मदेवके बारेमें एक पत्र तो मैं तुम्हें भेज ही चुका हूँ। वह चीज मुझे अच्छी नहीं लगी। उसकी जाँच करने की जिम्मेदारी मैंने तुमपर छोड़ दी है। अब यह दूसरा चौंकाने वाला पत्र आया है। इसमें लिखी बातें सही हैं या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता। इस पत्रके आधारपर मैं अपनी कोई राय नही बनाता, तथापि मुझे स्वीकार करना होगा कि मुझे डर भी लगता है। इस बारेमें जाँच करना और मीराबहनका पत्र मुझे वापस भेजना।

बापू

संलग्न: मीराबहनका पत्र[2]

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ११९६) से

४३६. पत्र : मैनुअल एस० फर्नांडीजको

कोंटाई
१ जनवरी, १९४६

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला।

आपका मामला ऐसा है कि उसमें पत्र द्वारा कोई भी आपको सलाह नही दे सकता, और अगर आप बिस्तर नही छोड़ सकते तो इस हालतमें आप जो भी कर सकते हैं वह कीजिए। मैं आपको केवल यही सलाह दे सकता हूँ कि कुछ दिन

१. अम्बेडकर रिफ्यूटेड; गांधीजी के सुझावपर लिखी गई पुस्तिका, जिसमें अम्बेडकर द्वारा कांग्रेसपर लगाये गये आरोपोंका उत्तर दिया गया था।

२. यह उपलब्ध नहीं है।

आपको संतरे, अंगूर या अनन्नास-जैसे फलोंके रसपर रहना चाहिए और अगर आपका पेट बिना किसी कष्टके रोज और अच्छी तरह साफ नहीं होता तो आपको प्रतिदिन एनिमा लेना चाहिए। इससे कुछ नुकसान नहीं होगा और काफी लाभ होने की सम्भावना है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री मैनुअल एस० फर्नांडीज
एथेल विला, मोइरा
बारदेज, गोआ

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३७. पत्र : एस० पी० मिश्रको

कोंटाई
१ जनवरी, १९४६

प्रिय मित्र,

आपका २६ तारीखका पत्र मिला। जहाँ तक मैं समझता हूँ आपको अपने पहले वादेपर कायम रहना चाहिए।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री एस० पी० मिश्र
कचहरी रोड
लखनऊ

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३८. पत्र : एम० जे० सुन्दरम्‌को

कोंटाई
१ जनवरी, १९४६

प्रिय मित्र,

आपका पत्र और वह पुस्तिका[1] मिली जिसमें राजाजी की निन्दा की गई है। मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि यह एक अशोभनीय प्रयास है। यह असत्यों और अर्धसत्योंसे भरी हुई है, और अर्धसत्य तो असत्यसे भी बुरी चीज है। उन्होंने कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाया और आज भी वे मेरे वैसे ही मित्र हैं जैसे कि वे १९१८ में थे, जब मैं उनका अतिथि था और मुझसे उनकी मित्रता शुरू हुई थी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री एम० जे० सुन्दरम्
४३, रायपेटा हाई रोड
मैलापुर, मद्रास

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४३९. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

मुख्य शिविर : सोदपुर
कोंटाई
१ जनवरी, १९४६

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारा तार और पत्र भी मिला है। जहाँ सतीशबाबू और हेमप्रभादेवीका प्रबन्ध हो वहाँ तो उसमें कोई कमी रह ही नहीं सकती। इसलिए मैं जहाँ भी होऊँ, मुझे सोदपुरसे डाक नियमित रूपसे मिल जाती है। मैं जहाँ भी होता हूँ वहाँ सतीशबाबू तुम्हारी ही तरह 'चौकीदारके रूपमें' मौजूद रहते हैं। यहाँ भी उसी

१. तात्पर्य राजाजी के अगस्त आन्दोलनमें शरीक न होने तथा पाकिस्तान सम्बन्धी उनकी नीतिको लेकर उनपर लगाये गये आरोपोंसे है; देखिए खण्ड ८१, पृ० ४६०-६१।

प्रकार मौजूद हूँ। "यहाँ" से मतलब कोंटाई (मिदनापुर) से है। नई जगह होने के बावजूद सब-कुछ ऐसे व्यवस्थित किया गया है कि मैं अधिकसे-अधिक फुर्सतमें रहता हूँ। इसलिए तबीयत क्यों बिगड़े? प्रार्थनाका चमत्कार रोज देख रहा हूँ। लोग हजारों, बल्कि लाख-लाख तककी संख्यामें होते हैं, फिर भी प्रार्थना बिलकुल शान्ति-पूर्वक होती है। आवाज नहीं, धक्कम-धक्का नहीं। यह तो नया ही अनुभव कहा जायेगा।

राजाजी से सम्बन्धित लेख[1] भी पढ़ गया हूँ। मामला सुलझ गया हो तो अच्छा ही है। ऐसा इसलिए कहता हूँ कि मेरे मनमें सन्देह बना हुआ है। मेरे पास सन्देह उत्पन्न करने वाले पत्र आते रहते हैं। वैसे इन पत्रोंके उत्तर मैं तभी देता हूँ, जब देखता हूँ कि उसके बिना चल नहीं सकता।

तुम्हारी तबीयतके बारेमें क्या लिखूँ? मुझे तो दिनशाकी बताई बातें ठीक ही लगती हैं। लेकिन अगर तुम प्रतिदिन (शक्तिका) व्यय करते ही रहोगे और समझोगे कि इस तरह सेवा कर रहे हो तो क्या किया जा सकता है?

समाधिके विषयमें[2] आगाखाँने तार दिया था कि "मिलेंगे।" और कोई जवाब नहीं आया। तुमसे बात की, वह समझा। जिन्नाभाई (कायदे आजम)के बारेमें तुमने बहुत अच्छा जवाब दिया। आगाखाँके सुझावके प्रति मुझे कोई आकर्षण नहीं है। मैं तो ऐसे विभाजनके विरुद्ध ही हूँ। ज्यादा मिलने पर।

३ तारीखको मैं सोदपुर पहुँचूँगा। ९ को असम। सम्भवतः १८ को वापस सोदपुर। फिर २३ को मद्रास। मद्रासके लिए अधिकसे-अधिक दो सप्ताह रखे हैं। थोड़े समय तक सेवाग्राममें रहने के बाद, यदि तुम मुक्त कर दोगे तो पूना जाऊँगा। नहीं करोगे तो बारडोली आऊँगा और फिर पूना जाऊँगा।

भाई वैकुण्ठ[3] का पत्र आया है कि बालासाहब[4], तुम और देव[5] उसपर दबाव डाल रहे हो। उसे सदस्य[6] बनाना। बाकी मेरे आने के बाद।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो – २ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २८५-८

१. तात्पर्य मद्रास चुनाव समितिके गठनके सम्बन्धमें एसोशिएटेड प्रेसकी रिपोर्टसे है, जिसमें कामराज नाडारके नाम वल्लभभाई पटेलके तार, पी० सी० सुब्रमणियमके नाम एक पत्र और टी० प्रकाशम्‌के नाम एक वक्तव्यका विवरण दिया गया था।

२. तात्पर्य आगाखाँ महलमें कस्तूरबा गांधी तथा महादेव देसाईकी समाधियोंसे सम्बन्धित जमीनपर अधिकार प्राप्त करने के प्रस्तावसे है।

३. वैकुण्ठलाल मेहता

४. बाल गंगाधर खेर

५. शंकरराव देव

६. बम्बई विधान-सभाका; देखिए पृ० ३४१ भी।

४४०. पत्र : अमृतलाल नानावटीको

कोंटाई
१ जनवरी, १९४६

चि० अमृतलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। रामदास[1] चला गया। यह तो ठीक हो गया। किन्तु अब मुझे अपनी भूलका भान होता है। तुम्हारी इच्छाके बावजूद मुझे रामदास का भार तुमपर नहीं डालना चाहिए था। यदि रामदासकी सँभाल न हो पाये अथवा जिस तरह सँभाल हो सके उस तरह वह न रहे तो मुझे उसे वापस मैसूर पहुँचा देना चाहिए था या फिर वह जिस स्थितिमें रहना चाहता, उस स्थितिमें उसे रखना चाहिए था। अपने सगे पुत्रके लिए हम ऐसा ही करते न? तुम्हारे स्वभावमें जो भोलापन है उसे भी मुझे पहचान लेना चाहिए था। उस भोलेपन को न पहचानकर उसे मैंने तुम्हें सौंप दिया। दासप्पा[2] की तो भूल थी ही, किन्तु उस भूलको सुधारने की जिम्मेदारी मेरी ही थी। दासप्पाने प्रतिज्ञा की थी कि वह रामदासको मुझे ही सौंपेगा। प्रतिज्ञा करने वाले तो बहुत-से पड़े हैं, किन्तु पालन करने वाले बिरले ही होते हैं। किन्तु अब तो जो होना था सो हो गया; मैं अब फिर रामदासको अपनाने वाला नहीं हूँ।

तुम्हारा दौरा — और काकासाहबका दौरा — सफल हो, और उनका स्वास्थ्य ठीक बना रहे।

मैं यह मानता हूँ कि तुम गुजरातके कामके साथ-साथ वर्धामें परीक्षाके कार्यको भी सँभाल सकते हो। इसके अतिरिक्त काकासाहबका काम यदि तुम्हें सौंपा गया तो उसे पूरा करने की सामर्थ्य तो तुम्हें उनका आशीर्वाद प्रदान कर देगा। फिर भी मैं इतनी चेतावनी दे देना चाहता हूँ कि तुम ऐसा कुछ मत करना जिससे गुजरातका काम बिगड़े, क्योंकि यदि गुजरातका काम बिगड़ा तो मैं तो तुम्हें डाँटूँगा ही, काकासाहब भी डाँटेंगे। कारण यह है कि गुजरातका काम तुमने ऐन मौके पर लिया था और उसे बिगाड़ने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है।

बापूके आशीर्वाद

श्री अमृतलाल नानावटी
मार्फत श्री मगनभाई देसाई
गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. रामदास दासप्पा
२. एच० सी० दासप्पा

४४१. पत्र : वैकुण्ठलाल मेहताको

मुख्य शिविर : सोदपुर
कोंटाई
१ जनवरी, १९४६

भाई वैकुण्ठ,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं तुम्हारी अधिकतर दलीलोंको मान लेता हूँ। तुम तो वैकुण्ठवासी हो न? अथवा उसके राजा हो? तुम वैकुण्ठवासी हो अथवा राजा अथवा प्रसाद हो, चाहे जो हो, लेकिन तुम कष्ट-निवारक तो हो ही। इसलिए यदि कष्ट-निवारणके लिए तुम्हारा जाना जरूरी हुआ तो हम उसपर विचार कर लेंगे।

मेरा बंगाल-असमका दौरा ज्यादासे-ज्यादा २० तारीख तक पूरा हो जायेगा। इसके बाद मैं २३ तारीखको मद्रास जाऊँगा। वहाँ ज्यादासे-ज्यादा १५ दिन रहूँगा। उसके बाद मैं सेवाग्राम जाऊँगा। इसलिए हमें इस विषयपर विचार करने के लिए पर्याप्त समय मिलेगा। विधान-सभामें जाने के लिए अपना नाम दे देना, लेकिन इस शर्तपर कि तुम्हें एक कौड़ी भी खर्च न करनी पड़े और वोटोंकी भीख माँगने न जाना पड़े। यह नियम कदाचित् सब जगह तो लागू नहीं किया जा सकता। लेकिन तुम्हारे विषयमें तो लागू किया जाना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९७) से। वैकुण्ठलाल ल० मेहता पेपर्स से भी; सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

४४२. पत्र : दिनशा मेहताको

कोंटाई
१ जनवरी, १९४६

चि० दिनशा,

तुम्हारा २८ दिसम्बर, १९४५ का पत्र मिला। आशा है हवाई डाकसे भेजा गया मेरा २८ दिसम्बर, १९४५ का पत्र तुम्हें मिल गया होगा। तुम्हारे पत्रका तुरन्त उत्तर देना आवश्यक है, इसलिए मैं आज ही उत्तर भेज रहा हूँ।

यदि तुम पूनामें अलगसे रोगियोंको भरती करोगे तो ऐसा करना शोभनीय नहीं होगा। एक ही व्यक्ति एक ओर धर्मार्थ और दूसरी ओर पैसा कमाने का विभाग चलाये, यह तनिक भी उचित नहीं लगता। यदि तुम चाहो तो बम्बईका क्लिनिक अपने पास रख सकते हो, उसका खर्च सहन करने को मैं तैयार हूँ। जनवरीसे पूनाका खर्च मेरे ही जिम्मे है, और उसकी व्यवस्था भी मैंने कर ली है। अन्ततः पूनाका खर्च प्रतिमास ३,५०० आना नहीं चाहिए, किन्तु यदि आता है तो आये। इस राशिके बदलेमें यदि हम इतनी सेवा कर सकें तो यह खर्च मुझे नहीं अखरेगा। फिलहाल मुख्य प्रश्न तो यह है कि तुम पूनामें पैसा कमाने के लिए अलगसे क्लिनिक खोल सकते हो या नहीं। इस सम्बन्धमें मैं अपनी राय दे चुका हूँ।

गुलबाईका मामला तनिक विचित्र है। इस समय तो वह गर्भवती है, इसलिए उसकी बेतुकी बातोंको धीरजसे सहन करना चाहिए। अस्पतालके मामलोंमें सिर न खपाये, यह तो मैं उसे लिखूँगा ही।

डॉ० दिनशा मेहता
नेचर क्योर क्लिनिक
६, टोडीवाला रोड
पूना

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४३. पत्र : पूर्णिमा बनर्जीको

कोंटाई
१ जनवरी, १९४६

चि० पूर्णिमा,

तेरा खत मिला। सीधा है। तेरे राज्यप्रकरणी कामके शोखको मैं मिटाना नहीं चाहता हूं। योग्यता तो है ही। न तेरा ऐसेम्वलीमें जाना मैं बूरा समझूंगा। किसी कांग्रेसीको तो जाना ही चाहिए ना? लेकिन मेरे कहने का मतलब यह है कि तू या कोई भी दो घोडेकी सवारी एक साथ नहीं कर सकते हैं। तेरे जैसा ही एक मलाबारका केस आया है। उसमें भी मैंने यही अभिप्राय दिया है। वह बहिन[1] काबेल है—शायद तेरे ही जितनी। बापा तो चाहते भी हैं। लेकिन मैंने अभिप्राय दिया है कि अगर वह एसेम्बलीमें गई तो हमारा काम तो बीगड़ेगा ही, क्योंकि देहाती औरतोंका काम कोई छोटी बात नहीं है। और उन औरतोंके

१. कुट्टीमलु अम्मा; देखिए पृ० २८७।

मानसका भी ख्याल रखना है। जो देहातमें जाकर रह नहीं सकती है वह त्रूटी तो है लेकिन ऐसी त्रूटी तो हम सबमें है। तेरा मन देहाती है ऐसा मेरा विश्वास हैं। इतना सही है तो मेरी निगाहमें वर्धाका है। दूसरा क्या चाहिये उस बारे में तेरे पास कुछ नहीं है वह आश्चर्यकी बात है। मुझे कुछ आभास है कि वह अखबारमें छप गई है। फिर भी इसके साथ एक नकल रखता हूं और चाहता हूं कि तेरी स्विकृति भेज दे। नहीं भेज सकती है तो तू किसी और बहिनका नाम देगी।

बापुके आशीर्वाद

श्री पूर्णिमा बेनर्जी
४१, जार्ज टाउन
इलाहाबाद

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४४. पत्र : आर० के० पाटिलको

कोंटाई
१ जनवरी, १९४६

भाई पाटील,

आपका खत मिला। आपने ठीक लिखा है। मैं तो हवाबदली और उसके साथ वहांकी सब बातें भूल ही गया था ऐसा कहा जाय।

प्रान्तिक चुनावमें तो नाम दिया जाय इस शर्तसे कि मतदारोंसे भिक्षा न मागी जाय, न पैसोंका खर्च किया जाय। यदि इस शर्तसे चुने जा सकते हैं तो ऐसेम्बलीमें जायं। बाकीका देख लेंगे। मैं आऊं तब विचार करेंगे। फरवरीके दूसरे सप्ताहमें वहां पहुंचने की आशा रखता हूं।

श्री आर० के० पाटील

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४५. पत्र : शंकरराव देवको

कोंटाई
१ जनवरी, १९४६

भाई शंकरराव देव,

तुम्हारा खत मिला। वैकुंठभाईका भी साथ साथ मिला। मैंने उनको लिखा है कि चुनावके लिये वे अपना नाम दे दें। प्रधानपद लेने की तो दूसरी बात है। उसका फरवरी तक तो आसानीसे तय हो सकता है। ऐसा मेरा मानना है। वैकुंठभाईके विरोधमें काफी तथ्य है। इसलिये प्रधानपदके निर्णयके बारेमें मौकुफ किया है। चुनावके बारेमें मेरी स्वीकृति है। इतना मैंने उनको लिखा है कि उनको पैसेका खर्च करना न पडे और मतदारोंसे मतकी भिक्षा मांगनी न पडे। अगर लोग चाहते हैं तब नाम देना ही काफी है। ऐसे दृष्टांत अंग्रेज चुनावमें तो ठीक-ठीक मिल जाते देखा है। हमारे यहां तो ऐसे दृष्टांत है ही।

श्री शंकरराव देव
लक्ष्मी नृसिंह भवन
शिवाजी नगर
पूना–५

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४६. पत्र : राममूर्तिको

कोंटाई
१ जनवरी, १९४६

भाईश्री राममुर्ति,

आपका खत मिला है। प्रो० कुमारप्पा जैसा कहे वैसे करो। मैं मद्रास जाते हुए सभा नहीं कर सकूंगा।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री राममुर्ति

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४७. पत्र : चिन्नाराम थापरको

कोंटाई
१ जनवरी, १९४६

भाई चिन्नाराम,

आपका पत्र मिला। मैं एसेम्बली चुनावके बारेमें न रस लेता हूं न खबर रखता हूं।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री चिन्नाराम थापर
उपप्रधान, डिस्ट्रीक्ट कांग्रेस कमिटी
लायलपुर (पंजाब)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४८. पत्र : सेठ गोविन्ददासको

कोंटाई
१ जनवरी, १९४६

भाई गोविंददास,

आपका पत्र मिला। मैं तो आजकल किसी पत्रको संदेशा भेजता ही नहीं हूं और मेरा अभिप्राय बन गया है कि किसी शुभ साहसको संदेशेकी आवश्यकता ही नहीं होनी चाहिये। साहसकी शुभ्रता ही सच्चा संदेशा है।

बापुके आशीर्वाद

श्री गोविंददासजी
राजा गोकुलदास पैलेस
जबलपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४४९. पत्र : इनायतुल्ला खाँको

कोंटाई
१ जनवरी, १९४६

भाईसाहब,

आपने उर्दूमें खत लिखा सो अच्छा किया। खत आज ही कांटी [कोंटाई] में मिला। आपको मैंने लिखा है कि मैं कांग्रेसका मेम्बर नहीं हूं। कांग्रेसके तरफसे कुछ नही लिख सकता हूं। वो तो मौलाना साहेब ही लिख सकते हैं। मैंने तो मेरा विचार बता दिया है कि आपके कान्स्टीट्यूशनको कोई मानने वाला नही है। मैं तो नहीं मानता हूं।

खत सोदपुरके पतासे [पर] लिखें।

मो० क० गांधी

उर्दूकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४५०. बातचीत : कांग्रेस कार्यकर्ताओंके साथ

१ जनवरी, १९४६

गांधीजी ने महिलाओंको सलाह देते हुए कहा कि आप लोग गृहस्थीके काम-काज करके भी देशकी सेवा कर सकती हैं। सामान्यतः आप अपनी लड़कियोंको विवाह योग्य और अपने लड़कोंको आजीविका कमाने योग्य बनाने के लिए बेचैन रहती हैं। ऐसे परिवार देशकी सेवा करते है, यह नहीं कहा जा सकता। विवाहित पुरुष और स्त्रियाँ अपने बच्चोंकी देखभाल और गृहस्थीके काम-काज करके भी देश-सेवाके लिए बहुत सारा समय दे सकते है। इसके विपरीत वे लोग मौज-मस्तीमें अपना समय बिताते हैं और इस तरह अपना जीवन-चक्र पूरा करते हैं। उनमें से कुछ ऐसे लोग है जो मौज-मस्तीके इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि वे सन्तति-निरोधके उपायोंका सहारा लेते हैं।

यह पूछे जाने पर कि जिन महिलाओंके पति जेलमें है वे देश-सेवा किस प्रकार कर सकती हैं, गांधीजी ने कहा कि उन्हें निस्सन्देह कातना चाहिए। लेकिन हो सकता है कि वह आजीविकाके लिए पर्याप्त न हो। उन्हें कुछ ऐसा धन्धा अपनाना

चाहिए जिससे वे पैसा कमा सकें। तब भी वे देश-सेवा कर सकती हैं। गांधीजी ने जोर देकर कहा कि किसी भी हालतमें महिलाओंको अपनी ईमानदारी और पवित्रताकी बलि देकर जीविकोपार्जन नहीं करना चाहिए। इस समय मेरे सामने प्रति-वर्ष कस्तूरबा कोषके एक करोड़ २५ लाख रुपये खर्च करने की समस्या है। हालाँकि मैं इस रकमका सर्वोत्तम ढंगसे उपयोग करने की कोशिश कर रहा हूँ, फिर भी मुझे पर्याप्त महिला कार्यकर्ता नहीं मिल रही हैं।

गांधीजी ने शहरोंमें रहने वाली महिलाओंको सलाह दी कि वे देहातोंकी सेवा करें। उन्होंने अपील की कि आप अपने हृदय टटोलें कि आप इस बातके लिए तैयार हैं या नहीं और अगर आपका हृदय इसका अनुकूल उत्तर दे तब आप कार्य शुरू करें।

विद्यार्थियोंको सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आपने जो प्रश्न पूछा है वह नया नहीं है। विद्यार्थी किस तरहसे हरिजनोंकी सेवा कर सकते हैं, यह प्रश्न अब नहीं पूछा जाना चाहिए था। यदि आप लोग हरिजनोंकी सेवा करने के लिए तैयार है तो आप बड़ी सुगमतासे ऐसा कर सकते हैं। आप देहातोंमें जा सकते हैं और हरिजनोंसे घुल-मिलकर उन्हें शिक्षित कर सकते है।

अन्तर्जातीय भोजके बारेमें गांधीजी ने कहा कि जहाँ तक मैं कांग्रेसियोंके मनको समझ सका हूँ, मैं जानता हूँ कि अन्तर्जातीय भोजके विषयमें उनमें मतभेद नहीं है, लेकिन मेरा विचार है कि जब तक हम स्वयंको हरिजन नहीं समझेंगे तब तक अस्पृश्यताके विषको दूर नहीं किया जा सकता। यदि कोई व्यक्ति हरिजन के साथ विवाह करने के लिए तैयार नहीं है तो मैं उस विवाहको अपना आशीर्वाद देने की कोई जरूरत महसूस नहीं करता। हरिजनसे विवाह करने का सवाल मुश्किल नहीं है, मुश्किल तो मनके साथ जुड़ी हुई है।

यह पूछे जाने पर कि क्या छात्राओंके लिए अलग संगठन होना चाहिए, गांधीजी ने कहा, हालांकि स्त्री और पुरुषोंके जीवनमें कोई विशेष अन्तर नहीं है तथापि जब तक स्त्री स्त्री है तब तक स्त्रियोंके कार्यके लिए अलग संगठनकी जरूरत हो सकती है। मेरे आश्रममें स्त्रियाँ और पुरुष इकट्ठे रहते और काम करते हैं, फिर भी वैसी जरूरत हो सकती हैं।

रचनात्मक कार्यक्रमकी चर्चा करते हुए गांधीजी ने कहा कि मेरे पन्द्रह-सूत्री कार्यक्रममें चरखेके अलावा कई और भी काम हैं और स्त्रियाँ उनमें से जो चाहें वह काम कर सकती हैं। स्त्रियाँ देशके स्वाधीनता आन्दोलनमें एक बहुत बड़ा हिस्सा ले सकती हैं, जैसा कि वे हमेशासे लेती आई हैं, विशेषकर नमक सत्याग्रहके समय मिदनापुर और भारतके अन्य भागोंमें। इसलिए मैं समझता हूँ कि यह पूछना व्यर्थ है कि राष्ट्रीय आन्दोलनमें महिलाएँ क्या योगदान दे सकती हैं।

पुनर्वास और पुनर्गठन योजना[1] के सम्बन्धमें गांधीजी ने कहा कि आम जनता और कार्यकर्ताओंको सरकारकी अपेक्षा अपने बल और प्रयत्नपर भरोसा करना चाहिए। जल-निकासकी समस्याके बारेमें मैंने गवर्नर श्री आर० जी० केसीसे बातचीत की है और इस सम्बन्धमें जो-कुछ किया जा सकता है सो मैं कर रहा हूँ।[2] यदि आप अपने-आप कोई कार्य अपने हाथमें ले सकें और उसे पूरा कर सकें तो अन्य बातें अपने-आप होती चली जायेंगी।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, ३-१-१९४६

४५१. भाषण : प्रार्थना-सभामें

कोंटाई

१ जनवरी, १९४६

आप लोग इस प्रार्थना-सभामें जैसा शान्तिपूर्ण आचरण कर रहे हैं, यदि साढ़े छः करोड़ बंगाली वैसी ही शान्तिसे रहें और मेरे निर्देशोंका पालन करें तो हजारों हिटलर भी आपके मनको नहीं जीत सकते और न आपसे आपकी स्वतन्त्रता छीन सकते।

अपने इस बंगाल-प्रवासमें मैं बहुत प्रसन्न हूँ, क्योंकि लोग शोर-गुल नहीं करते और शान्त रहते हैं। कुछ वर्ष पहले जब मैं उड़ीसा गया था तब वहाँ बड़ी संख्यामें लोग एकत्र हुए थे और उन्होंने बहुत शोर-गुल मचाया था तथा मेरी गाड़ीको रोक लिया था। उस समय मेरे साथ एक नाजी[3] था, जो दक्षिण आफ्रिकासे वर्धा आया था। उस नाजीने उन घटनाओंको लक्ष्य करके मुझसे कहा कि मुझे आपकी अहिंसा पसन्द नहीं। उसने कहा कि सबसे अच्छा तरीका हिटलरका है और अगर आप अहिंसक उपायसे स्वराज्य चाहते हैं तो सफल नहीं होंगे।

मिदनापुरके कष्टोंका जिक्र करते हुए गांधीजी ने कहा कि इस इलाकेके लोग आज भी कष्टमें हैं। उनके पास पहनने को न कपड़ा है, न खाने को अनाज और न पीने को पानी। इन कष्टोंको दूर करने के दो रास्ते हैं; एक तो है सरकारी सहायताका रास्ता और दूसरा है स्वयं प्रयत्न करने का रास्ता। अगर आप स्वराज्यके योग्य बनना चाहते हैं तो आपका कर्तव्य है कि आप अपने ही प्रयत्नोंसे इन कठिनाइयोंको हल करें।

एक प्रयत्नमें सफलता हासिल करने से शक्ति मिलती है और यह शक्ति

१. कोंटाई तहसील कांग्रेस कमेटीके सदस्यों, केलेघल जल-निकास समितिके सदस्यों, महिला कार्यकर्ताओं, विद्यार्थियों तथा हरिजनोंने गांधीजी के समक्ष कांग्रेसके पुनर्गठन तथा चक्रवात-पीड़ितोंके पुनर्वासकी ११,१३,००० रुपये लागतकी योजना रखी थी।

२. देखिए पृ० १९३-९४।

३. हेर न्यूटो; देखिए पृ० ३३३।

अन्य मामलोंमें सफलता प्राप्त करने में हमारी सहायता करेगी। देशका शासन आपके हाथोंमें अवश्य आयेगा। मुझे इसमें कोई सन्देह नहीं है।

बाढ़ तथा अकाल-जैसी विपत्तियोंके समय हमें एकजुट होकर खतरेका मुकाबला करना चाहिए।

गांधीजी ने कहा कि स्कूलों तथा कालिजोंके शिक्षकोंको भी सामूहिक प्रार्थनाका मर्म समझना चाहिए और विद्यार्थियोंको भी बताना चाहिए। जबर्दस्ती किसी हालतमें नहीं की जानी चाहिए, और जो विद्यार्थी खुशीसे प्रार्थनामें शामिल होना चाहें वे हों। प्रार्थनामें एक चुम्बकीय शक्ति है। जैसे चुम्बक लोहेको अपनी ओर खींचता है उसी तरह प्रार्थना भी सबको, खासकर विद्यार्थियोंको आकृष्ट करेगी।[1]

मुझे बताया गया है कि आप लोग प्रार्थनामें शामिल होने नहीं, बल्कि मेरी आवाज सुनने यहाँ आते हैं। अगर ऐसी बात हो तो मुझे बहुत दुःख होगा। मैं चाहता हूँ कि आप प्रार्थनाके असली मर्मको समझें और यह मानें कि प्रार्थनाके जरिये मनुष्य अपनी मनोवांछित वस्तु प्राप्त कर सकता है।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, ३-१-१९४६, और अमृतबाजार पत्रिका, ३-१-१९४६

४५२. पत्र : रेजिनाल्ड रेनॉल्ड्सको

स्थायी पता : सेवाग्राम

१ जनवरी, [१९४६][2]

प्रिय अंगद[3],

नव-वर्षके दिन सुबह-सुबह ही तुम्हारा पत्र मिला। ये पंक्तियाँ शामके समय बिस्तरपर जाने से पहले लिख रहा हूँ।

मेरा खयाल है कि मैंने तुम्हें कुछ दिन पहले पत्र लिखा था। अपने पत्रमें तुम मुझे उसी रूपमें दिखाई देते हो जिस रूपमें मैं तुम्हें जानता हूँ। बेशक यह अच्छी बात है कि तुमने अपना पुराना प्रिय कार्य फिरसे शुरू कर दिया है। यदि तुम इधर आ सको तो हम सबको थोड़े समयके लिए ही सही, तुमसे मिलकर खुशी होगी।

१. यह अनुच्छेद हिन्दू से लिया गया है। आगेका अंश अमृतबाजार पत्रिका से उद्धृत है।

२. साधन-सूत्रमें यहाँ '१९४५' है, जो भूलसे लिखा गया है।

३. गांधीजी ने रेजिनाल्ड रेनॉल्ड्सको यह नाम १९३० में दिया था, जब वे रावणके पास रामका सन्देश ले जाने वाले अंगदकी तरह गांधीजी का सन्देश (एक पत्र) लेकर लॉर्ड इर्विनके पास गये थे; देखिए खण्ड ४३, पृ० ११।

एगथा[1] भारतमें है। आशा है, मैं जल्द ही उससे मिलूंगा।

स्नेह और शुभकामनाओं सहित,

बापू[2]

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४५४६) से, सौजन्य: स्वार्तमूर कॉलेज पीस कलेक्शन, स्वार्तमूर, फिलाडेलफिया

४५३. पत्र : नरहरि द्वा० परीखको

सोदपुर, कोंटाई
२ जनवरी, १९४६

चि० नरहरि,

सुशीलाबहनको लिखे पत्रमें तुमने एक प्रश्न पूछा है। मूल मसौदेमें गुप्त गतिविधियोंके संचालनकी बात भी थी। वह बात हालांकि निकाल दी गई, लेकिन अभिप्राय तो यही था कि अहिंसामें उसके लिए स्थान नहीं होना चाहिए। मुझे लगता है कि जवाहरलालजी के बयानमें जो तुमने पढ़ा है उसमें और जो मैंने पढ़ा है उसमें अन्तर है। मैंने ऐसा समझा है कि उन्होंने गुप्त गतिविधियोंको अहिंसाका विरोधी माना है। हो सकता है, इसमें मुझसे भूल हुई हो, क्योंकि मैं जल्दीमें पढ़ता हूँ। चाहे जो होना हो, यदि हम अपने अभिप्रायके विषयमें निःशंक हों तो उसपर दृढ़ रहना चाहिए।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९१३९) से

४५४. पत्र : शिवाभाई पटेलको

मुख्य शिविर: सोदपुर
कोंटाई
२ जनवरी, १९४६

चि० शिवाभाई,

तुम्हारा पत्र अच्छा है। तुम्हारे प्रश्नोंके उत्तर में 'हाँ' या 'ना' में दूँ, इसके बजाय अगर मैं तुम्हें अपने विचार ही बता दूँ तो मैं अपनी बात ज्यादा अच्छी

१. एगथा हैरिसन; देखिए खण्ड ८३, "पत्र: होरेस अलेक्जैण्डरको", ३१-१-१९४६।

२. पत्रके अन्तमें राजकुमारी अमृतकौरकी लिखी निम्न पंक्तियाँ हैं, "मैंने बापूको तुम्हारा समाचार दिया और उसे सुनकर बापू बहुत खुश हुए। आशा है, तुम्हारा पारपत्र तुम्हें जल्द ही मिलने वाला है।"

तरह समझा सकूँगा। यदि कोई संस्था मेरे पेश किये गये विचारोंके अनुरूप स्वावलम्बी न हो सकी हो तो इसमें से दो अर्थ निकाले जा सकते हैं। एक तो यह कि कार्यकुशलताकी कमी थी और दूसरा यह कि मेरा अनुमान बिलकुल गलत था। यदि अब तक कोई भी सफल न हुआ हो तो मुझे अपने हिसाबके बारेमें ही शंका होगी। लेकिन शायद तुम देख सकोगे कि ये दोनों निष्कर्ष अप्रासंगिक हैं। मैंने तीन वस्तुओंके बारेमें स्वावलम्बनकी बात की है: (१) गाँवमें काम करने वाले व्यक्तिके बारेमें, (२) नई तालीमकी शालाके बारेमें और (३) किसी भी संस्थाके बारेमें। अब, पहलेके बारेमें मेरा अभिप्राय यह है कि जो सेवक, या कुटुम्ब देहातमें बसने जाये उसे देहातमें ही काम करके अपने गुजारेके लिए कमाई कर लेनी चाहिए—उदाहरणार्थ, वह चाहे जो उद्योग करके—यानी कि गाँवमें चल रहे उद्योगसे स्पर्धामें पड़े बिना कोई उद्योग करके—या गाँवके मौजूदा उद्योगमें शरीक होकर ऐसा कर सकता है। यदि वह स्थानीय लोगोंके बीच लोकप्रिय हो जाये तो लोग स्वयं ही उसका खर्च उठायेंगे। इन दोनों अवस्थाओंको मैं स्वावलम्बनकी अवस्था ही मानूंगा। दूसरे, नई तालीमके विषयमें मेरी यह मान्यता रही है कि शालाकी इमारतका किराया, शिक्षकका खर्च और शालासे सम्बन्धित दूसरे चालू खर्च, यह सब सात वर्षमें विद्यार्थियोंके उद्योगसे निकलना चाहिए। विद्यार्थियोंके खाने के खर्चको स्वावलम्बनमें शामिल करने के बारेमें मुझे सन्देह है। तीसरे, जिस संस्थाका खर्च वे लोग उठायें जिनके लिए वह चलाई जाती है, तो ऐसी कोई भी संस्था स्वावलम्बी मानी जायेगी। उदाहरणके तौरपर अगर हिन्दुस्तानकी ईसाई संस्थाओंके लिए पैसा अमेरिकासे आये तो हिन्दुस्तानके ईसाई अयोग्य सिद्ध होंगे। इस संस्थाका निर्वाह स्थानीय ईसाइयोंको ही करना चाहिए। मुझे लगता है कि अब तुम्हारे पूछने के लिए कुछ शेष नहीं बचना चाहिए। मैंने इन तीन चीजोंके बारेमें बताया, इसका मतलब यह नहीं लगाना कि इनके अतिरिक्त जो गतिविधियाँ चल रही हैं उन्हें निरर्थक मानकर बन्द कर देना चाहिए। मैंने तो हमारी संस्थाओंके विषयमें गहराईसे विचार करके अपने अनुभवके आधारपर मापदण्ड तैयार किया है। हम जिस हद तक इस मापदण्डके अनुसार पूरे उतरेंगे उसी हद तक अधिक अच्छी सेवा करेंगे और किसीके लिए कष्टका कारण नहीं बनेंगे। कोई भी हिसाब लगाते समय चीजोंके आजके ऊँचे भावोंके आधारपर निष्कर्ष निकालना मैं खतरनाक मानता हूँ। उदाहरणके लिए, मान लो कि तुम अपनी जमीनमें कपास, अनाज, शाक-भाजी, फल, दूध आदि पैदा करके उनका इस्तेमाल स्वयं करते हो, तो बाजार-भावों के साथ क्या तुम्हारा कोई सम्बन्ध रह जाता है? गाय, बीज और बैलका खर्च

अभी मैं अलग रखता हूँ। जो-कुछ मैं कह चुका हूँ उसके आधारपर तुम अपने उठाये सवालोंके जवाब आप ही दे सकते हो। अब कुछ और पूछना हो तो पूछना।

क्या महाराज[1] अब रोगमुक्त माने जा सकते हैं?- गंगाबहन[2] मजेमें होंगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (एस० एन० ९५२२) से। सी० डब्ल्यू० ४४१ से भी; सौजन्य : शिवाभाई पटेल

४५५. पत्र : ज० प्र० भणसालीको

कोंटाई
२ जनवरी, १९४६

चि० भणसाली,

तुम चाहे वजन घटाने के लिए उपवास करो या किसी तात्कालिक कारणवश तुम्हें उपवास करना पड़े, यह बात तुम्हारे और मेरे विचार करने योग्य है। मेरा आदर्श तो यह है कि युक्ताहारीको न तो उपवास करना पड़े और न खुराकमें किसी तरह का हेरफेर करना पड़े। इसे आदर्श स्थिति कहा जा सकता है। मेरी आकांक्षा है कि तुम उस स्थिति तक पहुँच सको। उस स्थिति तक पहुँचने की सामर्थ्य तो तुममें है ही। तुम्हारा आहार इस तरहसे व्यवस्थित हो जाये जिससे शरीर यन्त्रवत् काम दे और करे। शरीर हमें दिया गया यन्त्र ही तो है न?

आशा है, फरवरीके मध्य तक मैं वहाँ पहुँचूँगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री० भणसालीभाई,
सेवाग्राम,

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. रविशंकर व्यास
२. गंगाबहन वैद्य

४५६. पत्र : चारुचन्द्र भण्डारीको

सोदपुर, कोंटाई
२ जनवरी, १९४६

भाई चारुबाबु,

तुम्हारे चेकको मैं पहूंच ही सका हूं। कुछ गफलत भी रही। नुकसान तो किसीको हुआ नहीं है इतना ही संतोष। जब सारेके सारे पैसेका खर्च वहीं करना है तो मैं चेकके पैसे अपने पास क्या रखूं? इसलिये वापस करता हूं। तुम्हारे पास कोई कमेटी तो होगी ही, उसके मातेहत हीं इसका खर्च होगा न? उस कमेटीमें कौन कौन है, मुझे बताइये। खर्च करने का बजेट भी मुझे भेजिये, जिसे देखकर मैं पास करुं। अगर आप यही चाहते हैं कि पैसे मेरे पास रहें और आवश्यकता पडने पर भेजता रहूं तो चेक वापस भेज देना। और जैसे लिखते रहोगे और बजट भेजते रहोगे पैसे रुपये भेजते रहूंगा। अच्छा लगे वह कीजिये।

मैं कल सोदपुर जाऊंगा, वहांसे ८ तारीखको आसाम। मुझे खत सोदपुर ही भेजिये।

बापुके आशीर्वाद

साथमें चेक

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ८७००) से

४५७. पत्र : श्यामलालको

कोंटाई
२ जनवरी, १९४६

भाई श्यामलाल,

तुम्हारा पत्र मिला है। किसी भी कोटीमें आते हो। जो पैसे छोडे हैं वह विचारयुक्त छोडे हैं तो कुछ भी कहने का नहीं है। लोकापवादको ऐसी बातोंमें कुछ भी स्थान नहीं देना चाहिये। वे क्या जाने कि हमारी हालत क्या है, हमारी शक्ति क्या है?

साथमें, मंजूरीके लिये जो भेजा था वह दस्तखत करके वापस भेजता हूं।

श्री श्यामलालजी
क० गां० रा० स्मा० निधि
बजाजवाड़ी
वर्धा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४५८. भाषण : स्वयंसेवकोंकी सभामें

२ जनवरी, १९४६

स्वयंसेवकोंकी सलामी लेते हुए गांधीजी ने पूछा कि वे किसी स्थायी टुकड़ी में हैं अथवा अस्थायी तौरपर भरती किये गये हैं। यह बताये जाने पर कि उन्हें उनके आगमनके उपलक्ष्यमें भरती किया गया है, गांधीजी ने कहा कि आपके अपने हितके लिए और लोकसेवाके लिए आपके यहाँ स्वयंसेवकोंकी स्थायी टुकड़ी होनी चाहिए। स्वयंसेवकोंको अहिंसा धर्मको अपनाना चाहिए और उन्हें लोगोंको तंग नहीं करना चाहिए, बल्कि उनकी सेवा करनी चाहिए।

आपको नियमपूर्वक चरखा चलाना चाहिए और सफाईके नियमोंको जानना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि यदि आपको कहीं गन्दगी दिखाई दे तो आपको उसे खुद साफ करने का प्रयत्न करना चाहिए। आपको प्रत्येक मनुष्यको प्रेमकी दृष्टिसे देखना चाहिए और लोगोंके कष्टोंको दूर करने की भरसक कोशिश करनी चाहिए। आपका सारा जीवन प्रार्थनाको समर्पित होना चाहिए। आपको यह समझना चाहिए कि प्रार्थनासे आपके भीतर ऐसी शक्ति पैदा होगी जिससे आप किसी भी स्थितिका सामना कर सकेंगे।

गांधीजी ने स्वयंसेवकोंके कमान अधिकारी श्रीयुत सुधीर चन्द्र दाससे कई प्रश्न पूछे और यह भी पूछा कि लोगोंके पास वर्दी क्यों नहीं है। यह जानने पर कि स्वयंसेवकोंकी उक्त टुकड़ी अस्थायी है और समयाभावके कारण वे वर्दी की व्यवस्था नहीं कर पाये, गांधीजी ने कहा कि स्वयंसेवकोंको ऐसे निर्देश दे दिये जाने चाहिए, ताकि जब और जहाँ स्वयंसेवकोंकी जरूरत हो वे सब एक ही वर्दीमें उपस्थित हो सकें।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ३-१-१९४६

४५९. बातचीत : मिदनापुरके राजनीतिक कार्यकर्ताओंके साथ[1]

कोंटाई

२ जनवरी, १९४६

गांधीजी : तो आप इसे कितने दिनमें सीख लेंगे?[2]

कार्यकर्ता : एक वर्षमें।

गा० : हिन्दुस्तानी हमारे रचनात्मक कार्यक्रमके १८ विषयोंमें से एक है और इन सभी विषयोंपर पूरा-पूरा अमल करने का मतलब स्वराज्य है, इसलिए इस हिसाबसे आपको स्वराज्य प्राप्त करने में कितने दिन लगेंगे?

गांधीजी ने आगे कहा, स्वतन्त्र भारतमें आपको ऐसी राष्ट्रभाषाकी जरूरत पड़ेगी जिसे सभी समझ सकें। मैं अंग्रेजी भाषाका प्रशंसक हूँ। लेकिन वह राष्ट्र-भाषाका स्थान कभी नहीं ले सकती। अंग्रेजीमें इस आशयकी एक कहावत है कि जो वस्तु अपने नियत स्थानपर नहीं होती वह बेकार होती है। अन्तर्राष्ट्रीय मामलोंमें अंग्रेजीके लिए स्थान है। लेकिन हमारे रोजमर्राके कारोबारमें, हमारे घरेलू जीवनमें अंग्रेजीके प्रवेशको मैं बरदाश्त नहीं कर सकता। भारतकी राष्ट्रभाषा केवल हिन्दुस्तानी हो सकती है—हिन्दुस्तानी, अर्थात् उर्दू और देवनागरी लिपियोंमें लिखी जाने वाली भाषा, जो इतनी सरल हो कि उसे बिना कठिनाईके समझा जा सके।

कार्यकर्ताओंने वादा किया कि वे सब उसे छः महीनेमें सीख लेंगे। इसके बाद गांधीजी ने सभाके पहले उनके समक्ष पेश किये गये सवालोंको लिया।

पहले प्रश्नमें उनसे यह सुझाव माँगा गया था कि हम रचनात्मक कार्यक्रम को कैसे सफल बना सकते हैं और अपने रास्तेकी कठिनाइयोंपर किस प्रकार विजय पा सकते हैं।

उत्तर देते हुए गांधीजी ने रचनात्मक कार्यक्रमके विभिन्न विषयोंका वर्णन किया। उन्होंने कहा कि यद्यपि चरखेको मैं केन्द्रीय स्थान देता हूँ, किन्तु हमें उसके बारेमें सनकी नहीं होना चाहिए। १७ और भी विषय हैं, जिनमें से एक है साम्प्रदायिक एकता। क्या आप सभी समुदायोंको एक मानते हैं? फिर, आपको अस्पृश्यतासे पूरी तरह मुक्ति पानी है। इसी प्रकार आपको मातृभाषाके महत्त्व

१. इस बातचीतमें मिदनापुर जिलेके लगभग ५०० कार्यकर्ताओंने भाग लिया था। बातचीतका विवरण समाचारपत्रोंको प्यारेलालने भेजा था।

२. श्रोताओंमें बहुत-से लोग हिन्दुस्तानी नहीं जानते थे।

और स्थानको भी समझना चाहिए। घरेलू मामलों और रोजमर्राके कारोबारकी भाषा सिर्फ आपकी मातृभाषा ही हो सकती है। मैं ७७ वर्षका हूँ, फिर भी पूरी लगनसे बंगला सीखने पर जुटा हुआ हूँ। मैं मिदनापुरसे जाने से पहले ही बंगला पढ़ना सीख लेने की आशा रखता हूँ। मुझे जितनी खुशी बंगलामें आपसे बात कर सकने में होगी उससे अधिक और किसी चीजसे नहीं होगी। मैं आपसे बंगला में बोलकर आपके हृदयको छूने की आशा रख सकता हूँ, अंग्रेजीमें बोलकर कभी नहीं।

फिर, आदिवासी लोग हैं। १९३५ के अधिनियमने उन्हें शेष भारतसे अलग कर दिया है और "वर्जित क्षेत्रों" को सीधे गवर्नरके प्रशासनमें रख दिया है। यह शर्मकी बात है कि हमने उनके साथ ऐसा व्यवहार होने दिया। यह तो हमारा ही काम है कि हम आदिवासियोंमें ऐसा भाव जगायें जिससे वे स्वयंको हममें से एक समझें। अन्य विषय हैं — मद्य-निषेध, ग्रामोद्योग, बुनियादी तालीम, प्रौढ़-शिक्षा, आरोग्य तथा सफाईकी दृष्टिसे स्त्री-शिक्षण, आर्थिक समानता, किसान, मजदूर, विद्यार्थी तथा गाँवोंकी सफाई। अन्तिम विषय सबसे महत्वपूर्ण तथा सबसे कठिन भी है। जब मैं समझदार लोगोंको मल-मूत्र त्याग करके नदियोंके किनारों को गन्दा करते देखता हूँ तब एक बार तो मुझे लगने लगता है कि हमारे लोग स्वच्छताके नियमोंका पालन शायद कभी नहीं कर पायेंगे। उन्होंने आगे कहा:

रचनात्मक कार्यक्रमके पूर्ण अमलका मतलब स्वराज्यसे भी ज्यादा है। इसका मतलब रामराज्य, खुदाई सल्तनत या डिवाइन किंगडम है। ऐसे रामराज्यकी मुझे अभिलाषा है। मेरा ईश्वर ऊपर स्वर्गमें निवास नहीं करता। उसे तो धरतीपर ही साकार करना है। वह यहाँ मुझमें, आपमें मौजूद है। वह सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी है। आपको परलोककी सोचने की जरूरत नही है। अगर हम यहाँ अपने कर्तव्य निभायेंगे तो परलोक तो अपने-आप सुधर जायेगा। इसमें अनिवार्यतः राजनीतिक स्वतन्त्रता भी शामिल है।

ऐसी स्वतन्त्रता अहिंसा और रचनात्मक कार्यके स्वरूपमें निहित सत्यसे ही प्राप्त हो सकती है। कार्य-समितिने रचनात्मक कार्यक्रमका महत्त्व समझा। यहाँ तक कि सुभाषबाबू भी मेरी बातसे सहमत होंगे। मैं नहीं मानता कि सुभाष बाबूकी मृत्यु हो गई है।[1] मुझे लगता है कि वे कहीं छिपे हुए हैं और उपयुक्त घड़ीमें प्रकट होंगे। मैं उनके साहस और देशप्रेमकी प्रशंसा करता हूँ। लेकिन साधनोंके सम्बन्धमें उनसे मेरा मतभेद है। मुझे पूरा विश्वास है कि सच्ची स्वतन्त्रता, आम आदमीकी आजादी कभी सशस्त्र विद्रोहसे प्राप्त नहीं हो सकती।

मेरे लिए संसदीय कार्यक्रम तो रचनात्मक कार्यक्रम आगे बढ़ाने का साधन-

१. खबर थी कि १८ अगस्त, १९४५ को टोकियो जाते हुए एक विमान-दुर्घटनामें सुभाषचन्द्र बोसकी मृत्यु हो गई थी।

मात्र है। कांग्रेसने संसदीय कार्यक्रमको इसलिए अपनाया कि वह नहीं चाहती थी कि व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओंके दास और भारतकी आजादीके दुश्मन विधान-मण्डलोंमें प्रवेश करके भारतके स्वातन्त्र्य संघर्षके मार्गमें विघ्न डालें। अगर आप देशभक्त मन्त्रियोंको विधानमण्डलोंमें भेजें तो उससे मुझे बड़ी खुशी होगी। आपका काम अवांछनीय लोगोंको बाहर रखना होगा।

यदि भारत सत्य तथा अहिंसाके बलपर स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेगा तो वह न केवल शोषित एशियाई राष्ट्रोंको रास्ता दिखायेगा, बल्कि विशाल आफ्रिकी महाद्वीपमें रहने वाली नीग्रो जातियोंके, वस्तुतः यूरोपके भी मार्ग-दर्शकका काम करेगा। छोटे-छोटे राष्ट्रोंको बराबर अपनी स्वतन्त्रता खोने का भय लगा रहता है। वस्तुतः उन्हें स्वतन्त्रता प्राप्त ही नहीं है। किसी अन्य साधनसे भारत आजाद हो ही नहीं सकता।

मिदनापुरकी महिलाओंको क्या-कुछ सहना पड़ा है, इसके दर्दनाक किस्से मैंने सुने हैं। यह उनके लिए नहीं, बल्कि पुरुषोंके लिए शर्मकी बात है। उन नृशंसताओंके मूक दर्शक बने रहने के गुनाहके लिए ईश्वर उन्हें माफ नहीं करेगा। वे एकमात्र यही प्रायश्चित्त कर सकते हैं कि पूरे दिलसे रचनात्मक कार्यक्रमपर अमल करें।

एक अन्य भाईने गांधीजी से पूछा कि श्रमिक कार्यमें अनिवार्यतः जो वर्ग-संघर्ष समाया हुआ है उसके बारेमें उनके क्या विचार हैं।

उत्तर देते हुए गांधीजी ने कहा कि यह संघर्ष तो हमेशा होता ही रहा है। वह तभी समाप्त हो सकता है जब पूंजीपति खुशीसे अपनी वर्तमान भूमिकाका त्याग करके स्वयं श्रमिक बन जायें। दूसरा रास्ता यह है कि हम यह महसूस करें कि श्रम ही सच्ची पूंजी है, बल्कि वस्तुतः पूंजीका निर्माता है। श्रमिकके दो हाथ जो-कुछ कर सकते हैं वह पूंजीपतिका तमाम सोना-चाँदी भी नहीं कर सकता। क्या कोई सोना खाकर जी सकता है? लेकिन श्रमिकको अपनी शक्तिका एहसास कराना है। उसके एक हाथमें सत्य और दूसरेमें अहिंसा होनी चाहिए, फिर तो वह अजेय ही है। पूंजीपति और श्रमिक, अभिजात वर्ग और जनसाधारण, ये तो आदिकालसे चले आ रहे हैं। कठिनाई यही है कि श्रमकी महत्ता और शक्ति को न श्रमिक और न श्रमिक आन्दोलनोंके कर्णधार ही समझते हैं। यहाँ लँगड़ा अन्धेको राह दिखाये वाली बात है।

अब गांधीजी से कार्ल मार्क्सके बारेमें पूछा गया। उन्होंने कहा कि अपनी नजरबन्दीके दौरान मुझे 'कैपिटल' पढ़ने का सुअवसर और सौभाग्य प्राप्त हुआ। मार्क्सकी लगन और विलक्षणताका मैं बहुत कायल हूँ। लेकिन उनके निष्कर्षोंको मैं नहीं मान सकता। मुझे यह विश्वास नहीं है कि हिंसा अहिंसाका मार्ग प्रशस्त कर सकती है। विश्वचिन्तन तेजीसे आगे बढ़ रहा है और मार्क्स पुराने पड़ते

जा रहे हैं। किन्तु इससे उस महान व्यक्तिकी लगन और कार्यकी महत्ता कम नहीं होती।

अन्तमें गांधीजी ने कहा कि ठोस रचनात्मक प्रयत्नोंके बिना स्वराज्य-प्राप्तिके साधनके रूपमें असहयोग और सविनय अवज्ञाके प्रयोगकी बात नहीं सोची जा सकती। रचनात्मक प्रयत्नके बिना असहयोग तथा सविनय अवज्ञामें से प्रत्येक आत्माविहीन मृत शरीरके समान होगा।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ५-१-१९४६

४६०. भाषण : प्रार्थना-सभामें

कोंटाई
२ जनवरी, १९४६

कोंटाई तथा बंगालके अन्य स्थानोंकी प्रार्थना-सभाओंके अपने अनुभवका सार बताते हुए गांधीजी ने कहा कि मैं अपनी आँखोंके सामने ही भीड़के व्यवहारमें होने वाले भारी परिवर्तनोंको देख रहा हूँ। इसपर मुझे कोई आश्चर्य नहीं होता। बंगालने भक्त-शिरोमणि चैतन्यको जन्म दिया और अन्य बहुत सारे भगवद्लीन सन्तोंको भी। मैं उस दिनकी राह व्यग्रतासे देख रहा हूँ जब यहांकी भीड़के व्यवहारका अनुकरण पूरे भारतमें होने लगेगा।

जितनी शान्ति और जितना मौन सम्भव था उतनी शान्ति और मौनका आचरण करके मुझपर जो कृपा की गई है उससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ और जिस तरीकेसे मैंने इस आभार-ऋणको चुकाने का संकल्प किया है वह यह है कि मैं अवकाशके प्रत्येक क्षणका उपयोग बंगला सीखने में करूँ। मैं जबसे बंगाल आया हूँ, यह काम अत्यन्त व्यवस्थित ढंगसे कर रहा हूँ। मैं आशा करता हूँ कि यह संकल्प सभी भारतीय भाषाओंके प्रति जिस प्रेमका प्रतीक है वह कोंटाईके लोगोंके हृदयमें भी भर जायेगा।

सभामें आने से पहले मुझे बताया गया था कि तूफानमें मरने वाले बहुत-से जानवरों और मनुष्योंमें से लगभग ७०० जानवर और ३०० मनुष्य इस प्रार्थना-स्थलके नीचे एक साथ दफन हुए पड़े हैं। जैसा कि गुरुदेवने अपने एक गीतमें कहा है, मिट्टी मिट्टीमें मिल गई है और प्राणी तथा मिट्टीका फर्क बताने वाला कोई निशान बाकी नहीं रह गया है। ईश्वर अत्यन्त दयापूर्वक मानवके दुःखको धरतीके हरियालीके वितानके नीचे छिपा देता है। फिर भी यह उन लोगोंमें मानवोचित भावनाके अभावको प्रकट करता है जिनपर [मृतकोंको दफनाने की]

जिम्मेदारी थी। आम रिवाज यह है कि हर मृत व्यक्तिको अलग जगहमें दफनाया जाये और जहाँ उसे दफनाया जाता है वह जगह पवित्र बन जाती है। जहाँ दाह-संस्कारका चलन नहीं है वहाँ ऐसा ही किया जाता है। इसलिए मैं इस भावना का आदर जरूर करता हूँ, लेकिन मैं इस रिवाजका अन्ध पुजारी नहीं हूँ, बल्कि इस बातसे मुझे सन्तोष होता है कि समान विपत्तिने मनुष्य और जानवरको मृत्युके समय एक बना दिया, और इस प्रकार प्राणी-मात्रकी तात्विक एकताको प्रतिबिम्बित किया। इस विचारसे मनुष्यका अहंकार टूटना चाहिए और मानव जीवन और उससे जुड़े उस मोह-मायाकी क्षणभंगुरता समझमें आनी चाहिए जो[1] उसे तब तक अपने पाशमें बाँधे रहती है जब तक वह उसे तोड़ना सीखकर स्वधर्मके पालनको अपनी जीवन-यात्राका ध्रुवलक्ष्य नहीं बना लेता।

प्रार्थनाका महत्व समझाते हुए गांधीजी ने कहा कि उसके फलस्वरूप आपकी आत्म-शुद्धि होनी चाहिए तथा आपका सम्पूर्ण आचरण बदल जाना चाहिए। अगर कोई यह सोचता है कि प्रार्थना कर लेने के बाद उसे शेष दिनके लिए मनमानी करने का अधिकार मिल जाता है तो वह अपने साथ दूसरोंको भी धोखा दे रहा है। यह तो प्रार्थनाके सच्चे अर्थका उपहास है।

प्रार्थनामें गाये गये गीतके बारेमें बोलते हुए गांधीजी ने कहा कि इसमें भक्त भगवानसे प्रार्थना करता है कि वह उसके दर्शन कर सके। एकनिष्ठ भक्तिके द्वारा ऐसी सिद्धिकी कामना मनुष्यकी श्रद्धाकी परिभाषातीत शक्तिको सूचित करती है। ऐसी श्रद्धासे संसारकी कोई वस्तु अप्राप्य नहीं है। किन्तु ईश्वरके प्रति श्रद्धा सच्ची तभी हो सकती है जब उसकी अभिव्यक्ति कार्यमें हो। मैंने देशके समक्ष जो अठारह-सूत्री कार्यक्रम रखा है वह, मेरी रायमें, कार्यके द्वारा प्रार्थना करना है, क्योंकि वह सत्य तथा अहिंसाके सिद्धान्तोंपर आधारित है। यदि आप इस कार्यक्रमपर पूरा अमल करेंगे तो न केवल हम स्वतन्त्र हो जायेंगे, बल्कि आपका उदाहरण विश्वकी सभी दलित तथा शोषित जातियोंके लिए प्रकाश स्तम्भका काम करेगा।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ४-१-१९४६

१. महात्मा गांधी—द लास्ट फेज, जिल्द १, पृ० १५४ में इस अनुच्छेदका शेष अंश इस प्रकार है: "...जिसने उसे बन्दी बना रखा है। यदि मनुष्य इस मायाजालको तोड़ना सीख ले और स्वधर्म-पालनको अपनी जीवन-यात्राका ध्रुवलक्ष्य बना ले तो आज विश्व जिस दुःखके भार से कराह रहा है वह काफी हल्का हो जाये।"

४६१. पत्र : मदालसाको

सोदपुर जाते हुए जहाजपर
३ जनवरी, १९४६

चि० मदालसा,

तेरा पत्र मिला है। मेरा पहला पत्र भटक गया जान् पड़ता है।

तेरे लिए निराश होने का कोई कारण नहीं है। इस समय मेरे पास ज्यादा लिखने का समय नही है। मुझे और भी डाक निवटानी है।

जल्दी ठीक हो जाना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५८५६) से

४६२. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सोदपुर जाते हुए जहाजपर
३ जनवरी, १९४६

भाई वल्लभभाई,

तुम्हारी चिट्ठी मिली। मैंने निम्नलिखित तार दिया है:

"२० तारीखको बंगाल छोड़ रहा हूँ और ८ फरवरी तक मद्रास। बारडोली से पहले पूना जाने के लिए बहुत उत्सुक हूँ। मार्चके मध्यमें बारडोली आऊँ तो क्या ठीक रहेगा? बापू"

बंगालके कार्यक्रमके बारेमें मैंने जो तय किया था उससे आगे तो वह नहीं जायेगा। मेरी दृष्टिमें यहाँ काम तो बहुत हुआ है। फल तो ईश्वरके हाथमें है। यह मैं जहाजमें लिखवा रहा हूँ। आज शामको सोदपुर पहुँचूँगा। यह पत्र वहाँसे कलकी डाकमें जायेगा। सोदपुरमें चार दिन रहकर ८ तारीखको असम जाना है। इस प्रवासमें यात्रा-सहित कुल आठ दिन लगेंगे। वहाँसे वापस सोदपुर और सोदपुरसे मद्रास जाऊँगा। मद्रास पहुँचने की अन्तिम तारीख मैंने २३ रखी है इसलिए सोदपुरसे २१ तारीखको रवाना हो ही जाना है। मैंने तारमें २० तारीख दी है।

इंग्लैण्डसे जो लोग[1] आये हैं उनसे, मेरा खयाल है, बम्बई, पूना अथवा वर्धा में मिलूँगा। उनके लिए अशिष्टतापूर्ण बातें कहना हमें शोभा नहीं देता। मीठे बोल बोलने में हमारा कोई अहित नहीं हो सकता है। उसमें अच्छे लोग भी हैं। पहलेसे ही उनकी भर्त्सना करने में मुझे कोई लाभ दिखाई नहीं देता।

मेरा पहला पत्र तो तुम्हें मिला ही होगा। पूनाके [नैसर्गिक उपचार गृहका] काम अपने हाथमें लेने के बाद मुझे थोड़ा समय तो उसे देना ही चाहिए। इसलिए मैंने यह सुझाव दिया है कि तुम मार्चके मध्यमें मुझे बारडोली ले जाओ। लेकिन इसमें मैं तुम्हारे आग्रहके अधीन रहूँगा। मैं यह मान लेता हूँ कि तुम बारडोलीमें मुझे १५ दिनसे ज्यादा तो नहीं ही रखोगे। मुझे छोड़ना हो तो भले छोड़ना। यह भी सम्भव है कि उस समय तुम स्वयं कांग्रेसके कामोंमें व्यस्त रहो। मैं मानता हूँ कि तुम मुझे तभी बारडोली बुलाओगे जब वहाँ मेरा कोई उपयोग होगा। इस तरह मैंने अपने मनकी बात तुम्हारे सामने रख दी है। कर्ता-धर्ता तुम्हीं हो। सरदार हो ना! और वह भी बारडोलीके! साथ ही हिन्दुस्तान के भी!

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–२ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २८९-९१

४६३. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

सोदपुर जाते हुए जहाजपर
३ जनवरी, १९४६

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा ३० दिसम्बर, १९४५ का पत्र मुझे ३ जनवरी, १९४६ को कोंटाईमें मिला। पढ़ा जहाजमें। जवाब भी जहाजमें ही लिखवा रहा हूँ। खादीके बारे में तुमने जो लिखा है वह मैं समझा। वहाँ कितनी खादी मिल सकती है, इसका उत्तर मिल जाये तो मैं तुरन्त विचार कर सकता हूँ। जितनी चाहिए उतनी खादी तो मैं भेजने वाला हूँ ही।[2]

मेरे उत्तरसे डॉक्टर [दिनशा] के सन्तुष्ट न होने की बात मैं समझ सकता हूँ, लेकिन मैं विवश हूँ।

१. रॉबर्ट रिचर्ड्सके नेतृत्वमें आने वाले ब्रिटेनके संसदीय शिष्टमण्डलके सदस्य। शिष्टमण्डल ५ जनवरी, १९४६ को भारत पहुँचा। प्रकटतः तो उसका उद्देश्य भारतकी राजनीतिक स्थिति तथा नेताओंके मानसकी व्यक्तिगत जानकारी हासिल करना था, किन्तु वास्तवमें कृष्ण मेननके प्रभावको "कम करना" था। शिष्टमण्डल १० फरवरी, १९४६ को भारतसे वापस रवाना हुआ (देखिए ट्रान्सफर ऑफ पॉवर, जिल्द ६, पृ० ३००)।

२. देखिए पृ० २७५-७७ भी।

जहाँ तक सम्भव होगा, मैं जल्दी आने का प्रयत्न करूँगा। बैंकके हिसाबकी व्यवस्था मैं करने वाला हूँ। पैसा भी कलकत्ता पहुँचने पर मैं तुरन्त दूसरे खातेमें डलवा लूँगा।

जो रोगी गरीबोंके साथ घुल-मिल सकते हैं उन्हें तो हमें भरती करना ही है। किसी व्यक्तिको उसके धनवान होने के कारण अलग कमरा नहीं दिया जा सकता। जो रोगी रहना चाहते हैं क्या वे पैसा देने वाले हैं? हमारे लोगोंके अलावा यदि ऐसे रोगी हैं जो गरीबोंके साथ घुल-मिलकर रह सकते हैं और नियमका पालन कर सकते हैं तो उन्हें लेने में मुझे कोई आपत्ति नही होगी।

सिंहगढ़में जो सामान है वह ट्रस्टमें आ गया है, इसलिए मेरा खयाल है कि अब हम स्वयं उसका उपयोग कर सकते हैं और वहाँसे जो-कुछ लाना हो, ला सकते हैं। यदि डॉक्टरका विचार इससे अलग हो तो मैं वह जानना चाहूँगा।

फिलहाल तो हमारा इरादा पूनाके अलावा और कहीं केन्द्र स्थापित करने का है नहीं। मैं वनमालाको पत्र लिखूँगा।

कंचन मेरे साथ इसी जहाजमें है। उसे थोड़ा जुकाम हो गया है, लेकिन मजेमें है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६११) से। सी० डब्ल्यू० ७२०० से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

४६४. पत्र : रघुनाथ श्रीधर धोत्रेको

सोदपुर जाते हुए जहाजपर
३ जनवरी, १९४६

चि० धोत्रे,

मेरा ख्याल रहा है कि मैंने तुम्हें कह दिया है कि भाई रामचंद्रनको पहले रुपये देते थे वैसे फिर भेजना शुरू कर दें। अगर नही कहा है तो इस खतसे समझो कि अक्तूबर '४५ से शुरू करना है। इस हिसाबसे तीन महिने हो गये। इतना भेज दो और बादमें प्रतिमास भेजा करो। प्रतिमास १००—एक सौ रुपया—भेजना होगा। पता, श्री जी० रामचन्द्रन, द्वारा गांधी आश्रम, तिरुचेंगोडु।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४६५. पत्र : शचीन्द्र नारायण रायको

सोदपुर जाते हुए जहाजपर से
३ जनवरी, १९४६

भाई सचेन्द्र नारायण,

आपका खत मिला। हम प्रेमसे सब कुछ कर सकते हैं। प्रेम कभी अधैर्य नहीं बताता, न कभी क्रोध करता है, ऐसा ही बर्ताव इस्लामी भाईके साथ करने से उनका क्रोध मिट सकता है।

प्रोफेसर सचेन्द्रनारायण राय
३१, शाह साहिब लेन
ढाका

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४६६. पत्र : श्रीमन्नारायणको

सोदपुर जाते हुए जहाजपर से
३ जनवरी, १९४६

चि० श्रीमन,

तुम्हारा खत मिला। मैंने तो जिस रोज तुम्हारा खत मिला उसी रोज सफाई [सुधार] करके भेज दिया था।[1] आज ३०-१२-४५ के खतका जवाब दे रहा हूं। जहाजपर हूं। सोदपुर जा रहा हुं।

मेरे आने की तारीख मुकर्रर करना दुस्वार है। पुना पहले जाऊं या वर्धा यह सवाल थोड़ा विचारणीय हो गया है। तब भी ८ फरवरीको मैं वर्धा पहुंचने की भरसक कोशीश करुंगा। १२ तारीखको अगर सोमवार नही है तो वह रखो[2], नहीं तो ११ तारीख २ बजे रखो। स्थल सेवाग्राम ही रखा जाय।

प्रान्तिय असेम्बलीके बारेमें मेरी उदासीनता समजो। लेकिन झुकाव उसी ओर है, योग्यता है और सब राजी है तो अवश्य जाओ।

बापुके आशीर्वाद

पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद, पृ० ३०९

१. देखिए पृ० २०४।
२. हिन्दुस्तानी प्रचार सभाकी बैठक

४६७. पत्र : वी० एस० श्रीनिवास शास्त्रीको

सोदपुर
४ जनवरी, १९४६

भाई साहब,

जगदीशन्‌ने मुझे बताया है कि आप फिर अस्वस्थ हैं, यहाँ तक कि आपने इस पृथ्वीपर सिर्फ दो महीने और रहने की बात कही है।[1] आप ऐसा क्यों नहीं कहते कि करोड़ों लोगोंके समान आप भी ईश्वरके हाथोंमें हैं और यह मानने से बिलकुल इन्कार कर दें कि आप अपने मित्रोंको छोड़कर जाने वाले हैं। पता नहीं, मैं अपने मनकी बात साफ तौरपर कह पाया हूँ या नहीं। जगदीशन्‌ द्वारा तैयार किये गये दुगुने दिलचस्प संकलन[2] को मैं धीरे-धीरे लेकिन निश्चय ही पढ़ रहा हूँ।

स्नेह।

आपका,
छोटा भाई

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०५२४) से; सौजन्य : एस० आर० वेंकटरामन। जी० एन० ८८२५ से भी

४६८. पत्र : एल० एफ० फिलिप्सको

सोदपुर
४ जनवरी, १९४६

प्रिय मित्र,

आपको प्रमाणपत्रों या सिफारिशोंपर नहीं, बल्कि अपने गुणोंपर भरोसा करना चाहिए।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री एल० एफ० फिलिप्स
९९, स्टीफेन हाउस
डलहौजी स्क्वेयर
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. उनकी मृत्यु १७ अप्रैलको हुई थी।
२. तात्पर्य शास्त्रीके गोखले सम्बन्धी लेखों और भाषणोंके संकलनसे है, जो माई मास्टर गोखले शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था। गांधीजी ने इसकी प्रस्तावना लिखी थी; देखिए खण्ड ८२, "प्रस्तावना : माई मास्टर गोखलेकी", २०-१-१९४६।

४६९. पत्र : आगाखाँको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
२४ परगना
४ जनवरी, १९४६

भाई साहब,

आपका ३०-१२-१९४५ का स्नेहपूर्ण पत्र कल कोंटाईमें मिला। उसके बाद मैं जहाज द्वारा आज सवेरे सोदपुर पहुँचा हूँ और यह लिखवा रहा हूँ। आपको तो मुझे गुजरातीमें लिखना चाहिए न? अंग्रेजीमें लिखना तो हमारे लिए वास्तवमें शर्मकी बात होनी चाहिए।

मैं ८ फरवरीके आसपास वर्धा पहुँचने की आशा करता हूँ। फिर दस दिनके बाद पूनाके लिए रवाना हो जाऊँगा। उस समय जैसे आप चाहेंगे वैसे करूँगा। अगर आप बम्बईमें हुए तो वहाँ मिलूँगा या पूनामें जैसा आपको अनुकूल होगा वैसा करूँगा। मौलाना साहब तो उस समय हाजिर नहीं होंगे। इस विषयपर मिलने पर विचार कर लेंगे।

समाधिके विषयमें मैं समझ गया हूँ। आपने जिन सुविधाओंका सुझाव दिया वे मेरे लिए काफी होंगी। मैं यह नहीं चाहता कि दिनमें जब चाहे तब महलमें जा सकें। भक्ति भावना अथवा आदर भावनासे जो लोग जायेंगे वे निर्धारित रास्तेसे और समयपर जायेंगे। मैं इसीमें उसकी पवित्रताका आदर हुआ मानूंगा।

यदि समाधि आप बनवा देंगे तो मुझे अच्छा ही लगेगा और आपके लिए भी यह शोभनीय बात होगी। संगमरमरमें बनवाने का विचार तो मेरे मनमें कभी रहा ही नहीं। किसी हद तक पक्की चीज बन जाये, इसीमें ही मुझे सन्तोष मिल जायेगा। महादेव और कस्तूरबा तो ग्रामीण बन गये थे, झोंपड़ीमें रहते थे। तो उनकी समाधि भी सादी ही होनी चाहिए न? नक्शा मैं बनाऊँगा, लेकिन इस सम्बन्धमें हम मिलने पर बात करेंगे।

आपका हीरक महोत्सव शानदार तरीकेसे और निर्विघ्न सम्पन्न हो।

आपका,
मो० क० गांधी

हिज हाईनेस आगाखाँ

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४७०. पत्र : कैखुशरू नरीमानको

सोदपुर
४ जनवरी, १९४६

भाई नरीमान,

तुम्हारा तार मिला है। मैं तो बहुत खुश हुआ हूँ। लेकिन कोई शर्त नहीं रखता। कांग्रेसके सच्चे सिपाही बनकर रहो।

मो० क० गांधीकी दुआ

श्री कैखुशरू नरीमान

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४७१. पत्र : मृदुला साराभाईको

सोदपुर
४ जनवरी, १९४६

चि० मृदुला[1],

तेरा पत्र मिला। तूने बहुत ठीक खबर दी है। यह जवाब जल्दीमें लिखवा रहा हूँ। कारण यह है कि अभी जहाजसे सोदपुर आकर पत्र लिखवाने बैठा हूँ। सवेरेका वक्त है।

सरलादेवीका मामला तो निबट गया है। वही प्रतिनिधि [एजेंट][2] रहेगी, तब तो तू अधिक काम भी कर सकेगी और सरलादेवीकी पूरी मदद भी करेगी।

देवदास तो देवदास ही है। तू फिक्र मत कर। उसकी भावनाको मैं समझ सकता हूँ। उसके काम करने की पद्धतिमें भी तो अन्तर है न? शेष बादमें।

बापूके आशीर्वाद

श्री मृदुलाबहन साराभाई
रिट्रीट
पो० आ० शाहीबाग
अहमदाबाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. सम्बोधन देवनागरी लिपिमें है।
२. गुजरातमें कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्टकी

४७२. पत्र : वीरेन्द्रकुमार रायको

सोदपुर
४ जनवरी, १९४६

भाई वीरेन्द्रकुमार,

आपका हृदयद्रावक खत मिला। भगवान आपको शांति दे।

मो० क० गांधी

श्री वीरेन्द्रकुमार राय

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४७३. पत्र : फतेहचन्द नाहटाको

सोदपुर
४ जनवरी, १९४६

भाई फतेहचंद,

जैसे आप दस मिनिट चाहते हैं ऐसे सब चाहें तो मेरे क्या हाल हो सकते है इसका विचार करो। मुझको मिलने से कोई लाभ होने वाला नही है। खामखाह समय बर्बाद करोगे और वैसा भी मैंने जो लिखा है, उसे पढ़ो, और सेवा किया करो।

मो० क० गांधी

श्री फतेहचंद नाहटा
सभापति
कुष्ठिया महकमा कांग्रेस कमिटी
कुष्ठिया

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४७४. पत्र : श्यामलालको

सोदपुर
४ जनवरी, १९४६

भाई श्यामलाल,

तुम्हारा ३१ तारीखका खत मिला। नानाभाई भट्टको लिखो कि किसी भी लायक बहिनको चुने। मनुभाईकी विजयाको मैं लायक समझूंगा अगर बालकोंकी उपाधि [चिन्ता] कम कर सके तो और [वह] दिन-प्रति-दिन कम होनी चाहिये। विजयाबहिन काम कर सकती है। शहरोंमें तो काम करना नहीं है, देहातोंमें ही जागृति लाना है। इसमें विजयाबहिन बराबर काम कर सकती है ऐसा मेरा मत है। लेकिन विजयाबहिनकी पंक्तिकी कोई दूसरी साध्वी बहिन मिले तो जैसे विक्टोरियाको लॉर्ड मेलबोर्न[1] था वैसे नानाभाई किसी बहिन प्रतिनिधिके लिए बने और उस बहिनको आगे करे और बढ़ावे।

श्री श्यामलालजी
क० गां [रा०] स्मा० निधि
बजाजवाड़ी
वर्धा
(सी० पी०)

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४७५. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
४ जनवरी, १९४६

गांधीजी ने कहा, आज कुछ दिन बाद मैं फिर आप लोगोंके बीच लौट आया हूं। ८ तारीखको फिर असम चला जाऊंगा। यहां ७ जनवरी तक प्रार्थना चलेगी। कह नहीं सकता कि असमसे लौटकर फिर यहां प्रार्थना कर सकूंगा या नहीं।

मैं मिदनापुरकी तीर्थ-यात्रापर गया था। यह दौरा इतना शान्तिपूर्ण और

१. (१७७९-१८४८); महारानी विक्टोरियाके प्रथम प्रधान मन्त्री; जिन्होंने रानीके शासन कालमें अनेक उदार कानून बनवाये।

व्यवस्था इतनी प्रभावोत्पादक थी जिसकी मिसाल नहीं है। मैं तीन-चार स्थानोंमें गया — डायमण्ड हारबर, महिषादल, काकरा और कोंटाई। इनमें से प्रत्येक स्थानके लोगोंने जैसा व्यवस्थित आचरण किया वह प्रशंसनीय था। प्रार्थनाके समय उपस्थित लोगोंकी संख्या लाख-लाख तक पहुँच जाती थी। बहुत-से लोग बहुत दूर-दूरसे आते थे। उनमें से प्रत्येक पूरी तरह शान्त रहता था और कोई भी व्यवस्थामें विघ्न नहीं डालता था। डायमण्ड हारबरसे मैंने यह व्यवस्था देखी।

गांधीजी ने कहा कि रामनाममें इतना आकर्षण है कि वह मनुष्यके सम्पूर्ण विचार और अस्तित्वको अपनेमें लीन कर सकता है, इसीलिए मैंने आपसे कहा है कि रामनाम लेते समय आप लयके साथ ताली दें। ताली बजाते हुए हम प्रार्थनामें लीन हो जाते हैं। आपको मालूम है कि सिपाहियोंको ऐसा प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे वे अनुशासित हो जाते हैं और एक साथ काम करना सीख लेते हैं। अनुशासन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण चीज है; इसीलिए तो अंग्रेजीमें "डिसिप्लिण्ड सोल्जर" (अनुशासित सिपाही) मुहावरा प्रचलित है।

आप भी आजादीके सिपाही हैं। राज्यके सिपाहियोंको वेतन मिलता है और वे अनुशासनका पालन करते हैं। आजादीके सिपाहियोंको वेतन नहीं मिलता; लेकिन वे अनुशासनका पालन करके ही शक्ति प्राप्त करते हैं। बादशाह (अब्दुल गफ्फार) ख़ाँके शब्दोंमें, आप सब खुदाई खिदमतगार, ईश्वरके सेवक हैं। आपको अनुशासनका पालन करना है और इसीलिए मैंने प्रार्थनाके समय ताली बजानेका नियम चलाया है।

प्रार्थनामें गाये गये भजनका मर्म समझाते हुए गांधीजी ने कहा कि यह भजन बहुत मधुर है। इसमें कवि — रवीन्द्रनाथ ठाकुर — ने कहा है कि यदि कोई आपकी पुकार नहीं सुने तो भी आप निराश न हों, बल्कि अपने आदर्शके लिए काम करते रहें। विफलता मिलने पर भी हताश न हों। आपकी आशाएँ और आकांक्षाएँ पूरी हों अथवा न हों, आपको काम करते जाना है। जो ईश्वरमें अनुरक्त है वह कभी हताश नहीं होता; वह तो ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करने के लिए स्वर्गके द्वारपर दस्तकें देता ही चला जाता है।

स्वराज्य अब तक नहीं आया है, लेकिन मैंने आशा नहीं छोड़ी है। आपको दस्तक देते रहना है; फिर तो एक-न-एक दिन स्वराज्य अवश्य आयेगा।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ५-१-१९४६

४७६. पत्र : आर० जी० केसीको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
५ जनवरी, १९४६

प्रिय मित्र,

मेरी मिदनापुर जिलेकी यात्रा और प्रवासका अधिकारियोंने जो प्रबन्ध किया उसके लिए मैं आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ।

प्रेसिडेंसी जेलके अधीक्षकने मुझे लिखा है कि श्री एस० बक्शी मुझसे मिलना चाहते हैं। इसलिए मैं उनसे जरूर मिलूंगा। यह काम मेरे असमसे लौटने के बाद ही होगा। क्या उस समय मैं वहांके अन्य कैदियोंसे भी मिल सकता हूँ?

श्री सुधीर घोषने मुझे बताया है कि आप मुझसे अगले सोमवारको मिलना चाहेंगे। उस दिन मैं आपसे शामके साढ़े सात बजे मिलूंगा।

बिजली कर्मचारियोंको राहत प्रदान करने के लिए[1] आपका धन्यवाद।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० १३४

४७७. पत्र : एम० ई० सी० मैथ्यूको

कैम्प, सोदपुर
५ जनवरी, १९४६

प्रिय मित्र,

पत्रके लिए धन्यवाद। आप जब भारत पहुँचेंगे उस समय मैं कहाँ रहूँगा, कह नहीं सकता। फिर भी आपकी ही तरह मैं भी यही चाहता हूँ कि हमारी

१. तात्पर्य कलकत्ता इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनीके कुछ बर्खास्त कर्मचारियोंकी नौकरियोंकी बहालीसे है।

मुलाकात हो। भारत आने पर मेरा पता लगाने में आपको कोई कठिनाई नहीं होगी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री एम० ई० सी० मैथ्यू
१८२, सी बोर्न रोड
साउथ बोर्न वेस्ट
बोर्नमाउथ, हैण्ट्स, इंग्लैंड

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४७८. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

सोदपुर
५ जनवरी, १९४६

चि० मुन्नालाल,

मैंने दिनशाजी को कल १०,००० रुपये भेजे हैं। इसलिए जनवरीसे लेकर मेरे आने तक जो खर्च हो वह इसमें से मजेमें चलाया जा सकेगा।

कचनको जुकाम और बुखार हो गया है। चिन्ता करने की कोई बात नहीं है। सुशीलाबहन दवा दे रही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६१२) से। सी० डब्ल्यू० ७२०१ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

४७९. पत्र : जीवणजी डा० देसाईको

सोदपुर
५ जनवरी, १९४६

चि० जीवणजी,

रचनात्मक कार्यक्रम सम्बन्धी पुस्तिका[1] मुझे कल ही मिली। बहुत देर हो गई। इतना ज्यादा समय क्यों लगा? कीमत ढूंढने में मुझे कुछ समय लगा। कीमत पीछे लिखने का क्या उद्देश्य है? या यों ही कुछ नया करने में कोई खूबी है? मनुष्यकी आदत तो सर्वप्रथम आवरण पृष्ठको देखने की होती है और उसीमें से वह कीमत आदिका पता लगा लेता है। प्रस्तावनाके नीचे हस्ताक्षर नहीं दिये गये हैं।

१. गांधीजी की लिखी हुई; देखिए खण्ड ७५, पृ० १६१-८३। यहाँ तात्पर्य द्वितीय संशोधित संस्करणसे है, जो हालमें छपा था; देखिए पृ० ७०-७१।

कहीं ऐसा तो नहीं सोचा कि जब लेखकने प्रस्तावना खुद दी है तो हस्ताक्षर देने की क्या जरूरत? लेकिन मुझे यह बात ठीक नहीं जान पड़ती। फिर, मैंने अपने ७ दिसम्बर, १९४५ के पत्र[1] में भी तुम्हारा ध्यान इस ओर आकर्षित किया था। यह चि० कनैयाको भी याद है। तुमने प्रतियाँ भी बहुत कम भेजी हैं। यहाँ तो बहुत प्रतियाँ खप जातीं। हिन्दी, गुजराती, उर्दू आदिका क्या हुआ?

बापूके आशीर्वाद

जीवणजी देसाई
पो० बॉ० १०५
अहमदाबाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९६१) से। सी० डब्ल्यू० ६९३५ से भी; सौजन्य : जीवणजी डा० देसाई

४८०. पत्र : दिनशा मेहताको

सोदपुर
५ जनवरी, १९४६

चि० दिनशा,

तुम्हें दस हजार रुपये कल भेजे हैं। इससे ट्रस्टके नाम खाता खोलना। जिस बैंकमें तुम्हें ठीक लगे उसीमें खोलना और चैक तुम्ही काटना, क्योंकि पैसा मैंने तुम्हें ट्रस्टी और डाइरेक्टरके नाते भेजा है। मैंने पैसा भेजने में उतावली की, क्योंकि मैंने समझा कि तुम्हारे पास तो कुछ रहा नहीं, हालाँकि इससे मुझे दुःख हुआ। मैंने समझा यह था कि तुम्हारे पास फालतू पैसा पड़ा रहता है और ऐसे मोटे खातेमें इतना पैसा तो होना ही चाहिए। यदि मुझे यह मालूम होता कि तुम्हारे पास पैसा रहता ही नहीं है, तो मैं पूनासे चलने के पहले ही पैसेका बन्दोबस्त कर देता। लेकिन अब तो जो हुआ सो हुआ।

गुलबाईका पत्र आया है। वह जरा चौंकाने वाला है। वह दुःखी है। उसे दुःख न देना। ऐसा लगता है वह अरदेशरको टीका लगवाने में आनाकानी कर रही है, और तुम लगवाने का आग्रह कर रहे हो। मैं तो टीका लगवाने में विश्वास ही नहीं रखता। गुलबाईको ऐसा ही लिख रहा हूँ। तुम्हारी जगह मैं होऊँ तो गुलबाईकी इच्छाका सम्मान करूँ। आखिर लड़केपर माँका अधिकार ज्यादा है। पुरुष बीजारोपण करके हट जाते हैं। नौ महीने भार तो माता ही उठाती है और बादमें भी बालकको दूध माता ही देती है और उसे पालती-पोसती है। लेकिन गुलबाईका दुःख यह नहीं है। दुःख तो तुम्हारे व्यवहारके कारण है। इस विषयमें थोड़ी बात तो हमारे बीच हुई ही है। उसके साथ धीरजसे बात करके समझाना।

१. देखिए पृ० १८४-८५।

तुम परेशान-से लगते हो। मैं तो अब भी सुझाव देता हूँ कि तुम ट्रस्टमें से वेतन लो। मेरे ध्यानमें यह बात तो है कि ट्रस्टके दस्तावेजमें वेतन लेने की बात नहीं है, लेकिन इतना सुधार तीनों ट्रस्टी मिलकर कर सकते हैं। दूसरे धन्धे भी करने हों तो वैसा करो। मनुष्यका पहला धर्म यह है कि अपने प्रति वफादार रहकर सच्चा बने। ऐसा न करने पर आदमी कामका नहीं रह जाता, दम्भी बन जाता है या खोटा। तुमने मेरा कहना मानने का आग्रह किया था, इसका अर्थ समझना। जो ऐसा आग्रह करता है वह या तो दूसरेकी बात समझ जाता है या नहीं समझता तो श्रद्धापूर्वक मान लेता है, और यह श्रद्धा समझसे ज्यादा कामकी चीज होती है। ऐसा न होने पर आदमी परेशान होता है। ईश्वर न करे कि तुम्हारी स्थिति कभी ऐसी हो। मैं तुम्हें निस्तेज नहीं देखना चाहता। मेरे सम्पर्क से ऊँचे चढ़ो तभी मुझे सन्तोष प्राप्त होगा।

अधिक विचार करने पर यही ठीक लगता है कि गुलबाईका पत्र ही तुम्हें भेज दूँ, ताकि तुम खुद उसके मनको समझ सको और दुःखको जान सको। सब काम शान्ति और धीरजसे करना।

मैं २१ फरवरीकी रात तक वहाँ पहुँचूंगा; नहीं तो २३ फरवरीको; क्योंकि २२ तारीखको बाकी पुण्यतिथि है और उस दिनको कहीं स्थिर रहकर मनाना चाहिए। यह ट्रेनमें नहीं किया जा सकता, क्योंकि ट्रेनमें पूरी 'गीता' का पाठ मुश्किल है।

लगता है, चि० सुशीला गांधीने तुम्हें पत्र लिखा है। उसे तुमने उत्तर नहीं दिया क्या? न दिया हो तो दे देना। आजकल वह दिल्लीमें देवदासके साथ है। उसे कुछ फायदा हुआ है, ऐसा नहीं जान पड़ता। उसे क्या हुआ होगा? क्या उसे थाइरॉइड नामकी दवा दी गई थी? मैं तो सब भूल गया हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४८१. पत्र : गुलबाई मेहताको

सोदपुर
५ जनवरी, १९४६

चि० गुलबाई,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं तीसरा पत्र लिखने का विचार कर ही रहा था, तभी कल तुम्हारा पत्र आया। मैं तो चेचकके टीके लगवाने में विश्वास रखता नहीं। मेरा विचार अब भी बदला नहीं है, दृढ़ है। इसलिए मेरी चले तो मैं चि० मरवेशरको टीका न लगवाऊँ, चेचक हो जाने के खतरेको उठाने को तैयार रहूँगा। लेकिन दिनशाका चेचकके टीके लगवाने में विश्वास है, यह मैं जानता हूँ।

नैसर्गिक उपचारके सम्बन्धमें उसके और मेरे दृष्टिकोणोंमें भेद है। यह जानते हुए भी मैं उसके साथ हूँ। क्योंकि उसे मैं सच्चा आदमी मानता हूँ और सच्चे आदमीको या तो मैं सँभाल लूँगा या वह मुझे सँभाल लेगा। मुझमें तनिक भी दुराग्रह नहीं है; आग्रह है, और वह तो होना ही चाहिए। आग्रहके बिना मनुष्य सत्यपर दृढ़ रह ही नहीं सकता। वह बाधाओंका सामना करने से घबराता नहीं, क्योंकि सत्याग्रहीका विश्वास मात्र ईश्वरपर ही होता है। इसलिए चेचकके टीके के बारेमें तुम दोनों समझ-बूझकर जो ठीक लगे सो करना।

मैंने तुम्हारा पत्र दिनशाको भेज दिया है, क्योंकि तुम्हारा पत्र दिलचस्प और प्रशंसाके योग्य है; फिर भी, उससे तुम्हारा दुःख प्रकट होता है, इस बातको दिनशाको जानना ही चाहिए। मैंने उसे पत्र भेजकर गलत तो नहीं किया न ?

तुम्हारा प्रसवकाल कब होगा ?

उपचार गृहकी चिन्ता न करना। उसके खर्चकी चिन्ता तो मुझे ही करनी है। खर्चके लिए पैसा कल ही भेजा है। मेरे हिसाबसे, गरीबोंका खाता चलाने में जो खर्च अभी पड़ता है उसे चालू रखने की जरूरत नहीं रहेगी।

माँजी बालकृष्णवाले मकानमें जायें, इसकी जरूरत मुझे नहीं लगती। मेरे आने तक जहाँ हैं वहाँ रहना हो तो वहीं रहें। मेरा सुझाव तो यह है कि जिस घरमें मुझे रखा जाता था उसीमें माँजी रहें। मेरे आने पर मुझे वहाँ रखना हो तो रखना। मेरे साथकी मण्डली तम्बूमें रहेगी, इसलिए तुम्हें दिक्कत नहीं होगी। इस तरह मुझे जो कमरा देती हो वह और उसके साथका स्नान-कक्ष तथा निकट का कमरा, ये काफी होंगे। दिनशाकी नई कमाई होने लगे तो देखा जायेगा। उसके पहले नये खर्च न करना बहुत जरूरी है। चाहे जिस कारणसे भी वह हिम्मत हार जाये यह मुझे जरा भी अच्छा नहीं लगेगा।

तुम और अरदेशर मजेमें होंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४८२. पत्र : हीराबहनको[1]

सोदपुर
५ जनवरी, १९४६

चि० हीराबहन,

तुम्हारा पत्र मिला है। तुम्हारी शुभेच्छा पूरी हो।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह पत्र देवनागरी लिपिमें है।

४८३. पत्र : हसमुखको[1]

सोदपुर
५ जनवरी, १९४६

भाई हसमुखभाई,

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। इसमें मैं क्या आशीर्वाद दूं? इस विवादको मैं पूरी तरह समझा भी नहीं और अगर काम शुभ हो तो उसे चाहे कोई कितना बड़ा आदमी हो, उसके आशीर्वादकी जरूरत नहीं रहती। काम अपना आशीर्वाद आप ही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४८४. पत्र : नगीनभाई मास्टरको

सोदपुर
५ जनवरी, १९४६

भाई नगीनभाई,

तुम्हारा पत्र मिला। विजयाबहन और वालजीभाईके लिए तुम्हारा प्रयत्न सफल हो। मैं जानता हूँ कि तुम यह काम कर सकते हो, और मुझे यह अच्छा लगता है।

श्री नगीनभाई मास्टर
बम्बई कांग्रेस कमेटी
कांग्रेस हाउस
विट्ठलभाई पटेल रोड, बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह पत्र देवनागरी लिपिमें है।

४८५. पत्र : मार्गरेट स्पीगलको

सोदपुर
५ जनवरी, १९४६

चि० अमला[1],

तेरा पत्र पढ़कर खुश हुआ। तूने अपने वर्गके एक विद्यार्थीको व्यक्तिगत तौरपर पढ़ाने से इनकार कर दिया, यह बात तेरे लिए शोभाजनक है। तुझे बधाई। अब तू और भी विषय पढ़ा सकेगी, इसलिए यह अच्छा ही है। आचार्य सीलको तू अपना दुश्मन क्यों मानती है? जो व्यक्ति कुत्ते-बिल्लीको भी अपना मित्र मानता है वह भला मनुष्यको शत्रु कैसे मान सकता है? अहिंसामें विश्वास रखने वाले व्यक्तिका कोई शत्रु हो ही नहीं सकता।

यदि तू बिल्लियोंकी संख्यामें वृद्धि करती जायेगी तो उन्हें सँभाल नहीं पायेगी।

मेरी तबीयत अच्छी है।

बापूके आशीर्वाद

[गुजरातीसे]
स्पीगल पेपर्स। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

४८६. पत्र : वनमाला परीखको

सोदपुर
५ जनवरी, १९४६

चि० वनमाला,

तुझे अथवा जोहराको मैं लम्बा पत्र लिखने वाला नहीं हूँ। मैं ८ तारीखको असम जाऊँगा, बादमें १४ तारीखको वापस यहाँ आकर यहाँसे जितनी जल्दी सम्भव होगा उतनी जल्दी मद्रास पहुँचना है। मुझे उम्मीद है कि मैं २२ जनवरी, १९४६ को वहाँ अवश्य पहुँच जाऊँगा और वहाँसे जल्दीसे-जल्दी ८ फरवरीको सेवाग्राम और २१ अथवा २३ तारीखको पूना। जोहरा कैसी है? तुम दोनों या अगर जोहरा कमजोर है तो तू अकेली ही मुन्नालालभाईकी मदद करना। सामर्थ्यसे बाहर जाकर कुछ नहीं करना है।

यदि तुम दोनों मुझे पत्र लिखोगी तो मुझे खुशी होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५७९७) से

१. जर्मन यहूदिन, जो १९३३ में गांधीजी के आश्रममें आई थीं

४८७. पत्र : सावल एल० इदलानीको

सोदपुर
५ जनवरी, १९४६

भाई इदलानी,

जो खत आपने मुझे लिखा है सो उर्दू या हिन्दीमें क्यों नहीं लिखा ?

जो सवाल पूछा है वह कांग्रेसके सदर साहबसे पूछो।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री सावल एल० इदलानी, जर्नलिस्ट
लालचन्द नानमल बिल्डिंग
जमशेद रोड
करांची

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४८८. पत्र : सुबोधलाल सरकारको

सोदपुर
५ जनवरी, १९४६

भाई सुबोधलाल सरकार,

आपका पोस्टकार्ड मिला। अंग्रेजीमें क्यों? मैं धनबाद जाने का नहीं हूं।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह पत्र गुजराती लिपिमें है।

४८९. भाषण : कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलनमें–१[1]

५ जनवरी, १९४६

अपनी पुस्तिका[2] 'कन्स्ट्रक्टिव प्रोग्राम : इट्स मीनिंग एण्ड प्लेस' के संशोधित तथा परिवर्धित संस्करणमें, जिसकी एक प्रति एक दिन पहले ही उनके हाथमें आई थी, उल्लिखित १८ सूत्री रचनात्मक कार्यक्रमके विभिन्न विषयोंके बारेमें बताते हुए गांधीजी ने कांग्रेसी कार्यकर्ताओंसे कहा कि आपको इस बातका ध्यान रखना चाहिए कि चरखा और खद्दर अपने-आपमें बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण होते हुए भी रचनात्मक कार्यक्रमके १८ विषयोंमें से एक है।

सविनय अवज्ञाका उल्लेख १८ विषयोंके अन्तमें किया गया है। पुस्तिका में इसे इसलिए स्थान दिया गया है कि पुस्तिकाकी विषय-वस्तु रचनात्मक कार्यक्रम केवल एक आर्थिक कार्यक्रम ही नहीं, बल्कि स्वराज्य-प्राप्तिका साधन भी है।

सविनय अवज्ञा दो प्रकारकी है, व्यक्तिगत और सामूहिक। व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा हर व्यक्तिका जन्मसिद्ध अधिकार है, ठीक उसी तरह जिस तरह सामान्य जीवनमें आत्म-रक्षा हर व्यक्तिका जन्मसिद्ध अधिकार है। इस तरह की सविनय अवज्ञा करने के लिए किसी प्रकारकी विशेष अनुमतिकी जरूरत नहीं है। जिस तरह सामान्य जीवनमें कोई व्यक्ति छुरी, रिवाल्वर अथवा मुक्के का उपयोग करके आकस्मिक हमलेका सामना करेगा उसी तरह रचनात्मक कार्यकर्ता मुक्के अथवा शस्त्रोंके अहिंसक प्रतिरूपके तौरपर सविनय अवज्ञाका सहारा लेगा। इसके लिए किसीसे अनुमति अथवा आदेश लेने की कोई जरूरत नहीं। रचनात्मक कार्यके प्रति सरकारके विरोधपर विजय प्राप्त करने के लिए किस तरह सविनय अवज्ञाका उपयोग किया जा सकता है, यह बताने के लिए गांधीजी ने एक काल्पनिक उदाहरण सामने रखते हुए कहा कि मान लीजिए

१. प्यारेलालके "वीकली लेटर" (साप्ताहिक पत्र) से उद्धृत। बंगालमें कांग्रेस और खासकर रचनात्मक कार्यक्रमके पुनर्गठनके बारेमें गांधीजी की सलाह लेने के निमित्त ५ और ६ जनवरीको प्रान्त-भरके कार्यकर्ता, जिनमें महिलाएँ भी शामिल थीं, उनसे मिले। गांधीजी के सभामें आने के पहले उन्हें प्रश्नोंकी एक लम्बी सूची दी गई। इन प्रश्नोंके उत्तर देने के पूर्व गांधीजी ने उनके समक्ष हिन्दुस्तानीमें अपने कुछ उद्गार व्यक्त किये।

२. ७-१-१९४६ की अमृतबाजार पत्रिका में यह भी कहा गया है कि इस पुस्तिकाको अपने स्तम्भोंमें छापने के लिए गांधीजी ने अमृतबाजार पत्रिका तथा हिन्दुस्तान स्टैन्डर्ड को बधाई देते हुए यह आशा व्यक्त की कि ये दोनों पत्र इस कार्यक्रमपर अमल कराने में पूरा सहयोग देंगे।

कोई कार्यकर्ता आदिवासियोंकी सेवामें लगा हुआ है। यदि सरकार उसे उन लोगोंके बीच जाने से रोकती है तो वह उस आदेशकी अवज्ञा करेगा। इसपर हो सकता है कि सरकार उसे जेलमें डाल दे। वह कार्यकर्ता सरकारके इस कदमका स्वागत करेगा। यह उसके कार्यका बहुत शुभ आरम्भ होगा। आदिवासियोंको सेवा करने के कारण ही वह जेल गया, यही बात आदिवासियोंके हृदयमें उसके लिए पवित्र स्थान बना देगी।

सामूहिक सविनय अवज्ञा स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए है। इसके लिए रचनात्मक कार्यक्रमपर लगभग पूरी तरह से अमल करना इसकी अनिवार्य शर्त है। अगस्त, १९४२ के "भारत छोड़ो" प्रस्तावको इस सिद्धान्तके अपवाद-रूप माना जा सकता है। इससे सम्बन्धित प्रश्नका उत्तर देते हुए गांधीजी ने कहा कि उस समयकी असाधारण परिस्थितियोंमें वह प्रस्ताव उचित था, लेकिन मैं अभी उन परिस्थितियोंकी चर्चा नहीं करना चाहता। इसके अतिरिक्त, यह आन्दोलन कभी शुरू ही नहीं किया गया।

इसके बाद गांधीजी ने रचनात्मक कार्यक्रमके प्रथम दो विषयोंको लिया और उन्हें बताया कि उनसे किस तरह स्वाधीनता-संघर्षको मदद मिलती है। उन्होंने कहा, पहला विषय साम्प्रदायिक एकता है। यदि हम सभी जातियोंके बीच हार्दिक एकता स्थापित कर सकें तो दुनियाकी कोई भी ताकत हमारे बीच अब के समान फूट नहीं फैला सकती। लेकिन आप इसे ऐसी राजनीतिक जरूरत समझकर न करें जिसे काम बन जाने के बाद त्याग देना है और न तीसरे पक्षके प्रति सामान्य अरुचि व्यक्त करने के प्रतीकके तौरपर ही ऐसा करें। यह बात तो एक बच्चा भी समझ सकता है कि एकताबद्ध भारतका मतलब स्वतन्त्र भारत है। यही बात अस्पृश्यता-निवारणपर भी लागू होती है।[1]

अपने भाषणके दौरान गांधीजी ने शरतबाबूके इस आशयके हालके भाषण[2] का उल्लेख किया कि चूंकि गांधीजी की तरह वे भी निर्बलकी नहीं, बल्कि सबलकी अहिंसामें विश्वास करते हैं, इसलिए उन्हें लगता है कि अनुशासनकी भावनाके संचारके लिए सैनिक प्रशिक्षण आवश्यक है, क्योंकि अनुशासनके बिना सच्ची अहिंसाको आचरित नहीं किया जा सकता। इस कथनपर टिप्पणी करते हुए गांधीजी ने कहा कि मुझे नहीं मालूम कि शरतबाबूकी बातका जो विवरण प्रकाशित हुआ है वह सही है या नहीं। खुद मुझे भी अपनी बातोंके गलत विवरणके प्रकाशनसे बहुत मुसीबतें उठानी पड़ी हैं। लेकिन यह कथन जिस रूप में प्रकाशित हुआ है उसको देखते हुए कहना पड़ेगा कि इसके एकाधिक अर्थ लगाये जा सकते हैं।

१. आगेके चार अनुच्छेद ६-१-१९४६ की अमृतबाजार पत्रिका से लिये गये हैं।
२. जो बंगाल विधान-सभामें दिया गया था

सैनिक प्रशिक्षण अहिंसाके आचरणमें सहायक होता है, यह एक अर्ध-सत्य ही है। यदि सैनिक प्रशिक्षणसे तात्पर्य पूर्ण अनुशासनकी भावना भरने से है तो यह कथन सही है, लेकिन यदि सैनिक प्रशिक्षणसे तात्पर्य शस्त्रास्त्रोंके संचालन तथा मारने की कलाके प्रशिक्षणसे भी है तो उसका मेरे अहिंसक कार्यक्रममें कोई स्थान नहीं हो सकता।

अपनी प्रार्थना-सभाओंमें अहिंसक अनुशासनकी हिमायत मैं खूब ही करता रहा हूँ और जहाँ-कहीं जाता हूँ, लोगोंको अनुशासनकी शिक्षा देने की कोशिश भी करता हूँ। इस तरहके अनुशासनको मैं सैनिक अनुशासनसे भी श्रेष्ठ मानता हूँ, क्योंकि सैनिक अनुशासन तो दण्ड-भयके जोरसे लागू किया जाता है, जबकि अहिंसक अनुशासन सर्वथा स्वेच्छासे प्रेरित होता है और वह मारे बिना मरने की शक्तिसे युक्त होने की अपेक्षा रखता है।

अगर मुझे यह पता चले कि मेरे विचार शरतबाबूके विचारोंके विपरीत हैं और यदि बंगालके लोग मुझसे पूछें कि हम किसके विचारोंका अनुसरण करें तो मैं बेझिझक कहूँगा कि आप शरतबाबूके विचारोंका अनुसरण करें और मेरे त्याग दें क्योंकि बंगालका नेता मैं नहीं, शरतबाबू हैं। लेकिन इस प्रसंगमें तो मुझे पूरा यकीन है कि हमारे विचारोंमें कोई फर्क नहीं है, क्योंकि हालमें ही शरतबाबूसे मेरी जो बातचीत हुई उसके दौरान उन्होंने मुझसे कहा था कि अहिंसाके मामलेमें मैं आपके साथ अन्त तक जाना चाहता हूँ। इसलिए मेरी रायमें तो शरतबाबूने जो सैनिक प्रशिक्षणकी हिमायत की है वह अहिंसाके सन्दर्भमें ही लागू होती है। और किसी भी दृष्टिसे यह चीज मेरी कल्पनाकी अहिंसा से तो क्या, कांग्रेसकी अहिंसा-विषयक आस्थासे भी मेल नहीं खाती।

इसके बाद गांधीजी ने प्रश्नोंके उत्तर दिये।

प्रश्न: आपने चरखा-सेवकोंसे कांग्रेसके राजनीतिक कार्यके प्रति अनासक्त रहने को कहा है। मेरा अनुभव यह है कि इस तरहके चरखा केन्द्र लोगोंको स्वराज्य-संघर्षके सजग योद्धा बनाने में विफल रहे हैं। दूसरी ओर अन्य केन्द्रोंने, जहाँ कार्यकर्ता चरखेके साथ-साथ कांग्रेसका भी काम करते रहे, सविनय अवज्ञाके दौरान अपेक्षाकृत अच्छा काम किया है। इसलिए आप कृपया इस मामलेमें स्पष्ट निर्देश दें।

गांधीजी: यह अच्छा प्रश्न है। लेकिन यह स्पष्ट विचार प्रस्तुत नहीं करता। मैंने तो सिर्फ इतना ही कहा है कि यदि खादी कार्यकर्ता एक साथ बहुत सारे कामोंको हाथमें लेगा तो वह खादी-कार्यके साथ न्याय नहीं कर सकेगा। खादी-कार्य पूर्ण एकाग्रता से करने की जरूरत है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि यह यन्त्रकी तरहसे किया जाये। कोई भी खादी-सेवक उन चीजोंके प्रति उदासीन नहीं रह सकता जिनसे खादीका सम्बन्ध है और न स्वाधीनता-संघर्षसे खादीके सम्बन्धको

वह नजरअन्दाज कर सकता है। हमारा अनुभव है कि जहाँ भी चरखेका बहुत ज्यादा काम किया गया है वहाँ लोगोंने स्वाधीनता-संघर्षके लिए अपेक्षाकृत अधिक साहस, एकता और संगठन-क्षमताका परिचय दिया है।

प्रश्न : आपने अक्सर यह कहा है कि चरखा अपने पूरे अर्थोंके बिना कुछ भी नहीं है। यदि हम चरखेको राजनीतिक कार्यसे नहीं जोड़ते तो फिर लोग उसके पूरे अर्थोंको किस तरह समझेंगे?

गांधीजी : 'पूरे अर्थों' में राजनीतिक कार्य आता है, लेकिन इसमें और भी बहुत सारी चीजें आती हैं। आम लोगोंको आर्थिक राहत पहुँचाने की दृष्टिसे चरखा निस्सन्देह एक बहुमूल्य साधन है, लेकिन जैसा कि मैंने अक्सर कहा है, भारतकी स्वाधीनताके सन्दर्भमें खादी-कार्यक्रमका जो महत्त्व है उसके बिना खादी-कार्यक्रमका मेरे लिए आज कोई मूल्य नही है। लेकिन साथ ही यदि आप केवल राजनीतिक लाभके लिए चरखा-कार्य हाथमें लेते हैं तो इससे उसका प्रयोजन विफल हो जायेगा और आप राजनीतिक और आर्थिक दोनों दृष्टियोंसे उसे व्यर्थ बना देंगे।

जब तक हम चरखा-कार्यको राजनीतिक कार्यसे नही जोड़ते तब तक उसका कोई राजनीतिक महत्त्व नही होगा, ऐसा कहने का मतलब यह है कि आपको अहिंसा की कार्य-पद्धतिको कोई जानकारी नही है। अब मैं 'कुष्ठरोगियोंकी सेवा' को लेता हूँ, जो १८ सूत्री कार्यक्रमका एक दूसरा विषय है। बेशक, स्वीकृत अर्थमें इसे किसी प्रकारके राजनीतिक कार्यसे नही जोड़ा जा सकता। तथापि यह कहना बेतुका होगा कि स्वराज्यके सन्दर्भमें इसका कोई महत्त्व नहीं है। अहिंसक कार्य-पद्धतिके अन्तर्गत प्रत्येक सच्ची सेवा, प्रत्येक उचित कार्य देशको राजनीतिक स्वाधीनताके उसके उद्देश्यके निकट ले जाता है, भले ही उसका अपने-आपमें कोई प्रत्यक्ष राजनीतिक महत्त्व न हो।

यदि आप मुझसे यह कहें कि स्वराज्य-प्राप्तिके साधनके रूपमें आप अहिंसामें अपना विश्वास खो बैठे हैं तो मैं मान लूँगा कि चरखे अथवा रचनात्मक कार्यका आपके लिए कोई उपयोग नहीं है। और उस हालतमें मेरे लिए आपका भी कोई उपयोग नहीं रह जायेगा। लेकिन चूँकि आपने अहिंसामें अथवा मुझमें अपना विश्वास नही खोया है, इसलिए चरखे और रचनात्मक कार्यके प्रति आपकी उदासीनता को मैं आपके आलस्य और जड़ताका सूचक ही मानता हूँ। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि भारतमें पिछले २५ वर्षोंमें जो आश्चर्यजनक जागृति आई है वह पूर्णतया अहिंसा और उसके प्रतीकके रूपमें चरखेको स्वीकार करने का परिणाम है। हमने जिस हद तक चरखे और रचनात्मक कार्यकी अवहेलना की है उसी हद तक हम अपने लक्ष्यको प्राप्त करने में असफल रहे हैं।

प्रश्न : २३ दिसम्बरको आपने हिन्दू कार्यकर्ताओंको 'सलाह'[1] दी थी कि वे

१. देखिए पृ० २८२।

मुसलमान जनताकी निस्स्वार्थ भावसे सेवा करें, क्योंकि अन्तमें इसका असर जरूर होगा। इसे दीर्घकालिक नीति कहा जा सकता है। तो क्या हमें मुसलमान जनताके बीच कोई राजनीतिक कार्य नहीं करना चाहिए? मुसलमानोंपर इसका जो असर होगा वह तो होगा ही; इसके अलावा क्या तटस्थता और राजनीतिक अलगावकी नीतिसे गैर-मुसलमानोंमें मुसलमानोंसे दूर रहने का एक नया रुख पैदा नहीं होगा और इस तरह इससे क्या उन्हीं लोगोंका प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा जो राष्ट्रको विभाजित करने में लगे हुए हैं?

गांधीजी : प्रश्नकर्ताके प्रति पूरी तरहसे आदर-भाव रखते हुए मैं कहना चाहूँगा कि मैं इस प्रश्नको समझ नहीं सका हूँ। यदि करोड़ों हिन्दू गैर-हिन्दुओंको अपने सगे भाई-बहन जैसा समझें और बिना किसी राजनीतिक उद्देश्यके उनके साथ वैसा ही व्यवहार करें तो उसका परिणाम निश्चित रूपसे ही भारतकी राजनीतिक एकता में होगा। क्या इसे 'दीर्घकालिक' प्रभाव कहेंगे? ऐसा प्रतीत होता है प्रश्नकर्ताको मालूम नहीं कि अहिंसा किस तरहसे अपना काम करती है। हमारे साम्प्रदायिक सम्बन्धोंकी आजकी विषाक्त स्थितिमें मैंने जिस बातका विरोध किया है वह है कांग्रेसमें गैर-हिन्दुओंको दाखिल करने का कांग्रेसियोंका प्रयत्न, क्योंकि इससे वर्तमान अविश्वासकी भावनाको बढ़ावा मिलेगा। लेकिन मान लीजिए कि मैं बादशाह खाँ से मैत्री स्थापित करता हूँ तो इससे दो सम्प्रदायोंके बीचकी खाई और भी चौड़ी कैसे हो जायेगी? इसके विपरीत, इससे कुछ हद तक साम्प्रदायिक तनाव तुरन्त कम हो जायेगा। यदि इस चित्रको हम करोड़ों गुणा बड़ा करके देखें तो हम पायेंगे कि प्रश्नमें जो शंका उठाई गई है वह बिल्कुल काल्पनिक है।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, ६-१-१९४६ और १३-१-१९४६

४९०. पत्र : अनसूयाबहन साराभाईको

सोदपुर
६ जनवरी, १९४६

चि० अनसूयाबहन,

तुम्हारा पत्र मिला है। यहाँसे मैं कोई सुझाव दे सकूँ या मार्गदर्शन कर सकूँ, ऐसी स्थिति नहीं है। सर राधाकृष्णन तो उस ओर जा रहे हैं, इसलिए यह बेहतर लगता है कि उनसे मिलो। मुझे तो लगता है कि यहाँसे कोई भी ऐसा कुछ नही कर सकता जो तुम्हारे लिए उपयोगी हो।

तुम 'पीपल्स' क्यों लिखती हो? 'पीपल्स' का मतलब तो अनेक प्रजा-समूह, अर्थात् 'नेशन्स' हुआ। हम क्या 'नेशन्स, हैं? और हैं तो कितने और कहाँ? ग्रेट ब्रिटेनका एक प्रजा-समूह है। लेकिन यूरोपके अनेक प्रजा-समूह हैं। उसके अलग-अलग देश भी हैं। क्या हिन्दुस्तानके बारेमें ऐसा है?

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९१. पत्र : अनसूयाबहन साराभाईको[२]

सोदपुर
६ जनवरी, १९४६

चि० अनसूयाबहन,

चि० मृदुलाने लिखा है कि तुम बूढ़ी होती जा रही हो और अक्सर खटिया पकड़े रहती हो!!! यह क्या? ऐसा क्यों? तुम बूढ़ी हो तो मेरा क्या होगा? कहाँ १२५ वर्ष और कहाँ तुम और मैं? १२५ कोई सिर्फ मेरे लिए ही नही है। सबके लिए है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१ और २. ये दो पत्र देवनागरी लिपिमें हैं।

४९२. पत्र : सोराबजी कापड़ियाको[1]

सोदपुर
६ जनवरी, १९४६

भाई कापड़िया,

तुम्हारा भेजा बहन जोशीका पत्र मिला है। उन्हें मैंने उचित उत्तर दे दिया है।

बापूके आशीर्वाद

सोराबजी पी० कापड़िया
'मुम्बई समाचार'
बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९३. पत्र : सरबनबहनको

६ जनवरी, १९४६

प्रिय भगिनि,

मुझे खद्दर मिली है। मेरी दृष्टिमें अबला कोई नहीं है। जो कुछ भी करती है उसे अबला कौन कह सकते हैं।

बापुका आशिष

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ७९३१)

१. यह पत्र देवनागरी लिपिमें है।

४९४. पत्र : के० टी० भाष्यम्‌को

सोदपुर
६ जनवरी, १९४६

भाई भाष्यम्‌,

तुम्हारा लम्बा खत मिला है। मुझको किसी तरहसे अब मार्गदर्शक न माना जाय। वह दिन चले गये जब मैं ऐसे कामोंको कर सकता था। मेरी सलाह है कि जो कुछ भी मैंने अब तक बताया है उसमें से सही लगे वह करना। इसलिये वहीं सब मिलकर कर सकते हैं वह किया जाय भला या बुरा। ऐसे कामोंके लिये मैं बिलकुल निकम्मा बन गया हूं।

बापुके आशीर्वाद

श्री के० टी० भाष्यम्‌
काटनपेट
बंगलोर सिटी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९५. भाषण : कांग्रेस कार्यकर्ता सम्मेलनमें–२

६ जनवरी, १९४६

सम्मेलनके दूसरे दिन[1] गांधीजी से मिलने पर बंगालके कार्यकर्ताओंने जाना कि कैसे कठिन आदमीसे वास्ता पड़ा है। वे लोग गांधीजी से कुछ प्रश्न पूछें, इसके पहले गांधीजी ने ही उनसे पूछ लिया कि क्या आप लोग हिन्दुस्तानी जानते हैं। लगभग आधे लोगोंने ही उत्तरमें अपने हाथ उठाये। इसपर गांधीजी ने पूछा कि आप लोग कितने दिनोंमें हिन्दुस्तानी सीख लेंगे। कुछ लोगोंने उत्तर दिया "एक सालमें।" गांधीजी ने टिप्पणी की :

यह तो ठीक नहीं है। कोंटाईके लोगोंने तो छ महीनेका ही समय मांगा।[2]

अब कुछ लोगोंने ऊंची आवाजमें कहा, "तो ठीक है, छः महीने ही सही।"

१. पहले दिनके सम्मेलनके विवरणके लिए देखिए पृ० ३७८-८२।
२. देखिए पृ० ३५५।

लेकिन गांधीजी ने इसपर भी उन्हें फटकारते हुए कहा कि राष्ट्रभाषा सीखने में आप कोंटाईके देहाती लोगोंसे बेहतर नहीं हैं। कलकत्ताको तो उनसे आगे होना चाहिए। उपस्थित लोगोंमें से किसीने आपत्ति करते हुए कहा कि हम सब कलकत्तावासी नहीं हैं। लेकिन चारों ओरसे आतो "तीन महीनेमें" की तेज आवाजमें उस आपत्तिकर्ताका स्वर डूब गया। [गांधीजी ने कहा:]

अब कुछ बात बनी। लेकिन आप सब एक स्वरमें "छः महीने" ही कहें और अपना दायाँ हाथ उठाकर इस बातका अनुमोदन सूचित करें।

इसपर असंख्य हाथ उठ गये, लेकिन गांधीजी की तीक्ष्ण दृष्टिने एक ऐसा स्थल लक्ष्य कर लिया जहाँ हाथ नहीं उठे थे।

देखता हूँ, बहनें झिझक रही हैं। तो क्या आजाद हिन्दुस्तान सिर्फ मर्दोंके लिए ही होगा और औरतें हमेशा जनानिस्तानमें ही रहेंगी? अगर नहीं तो आप सबको एक स्वरमें "सब" की आवाज देनी चाहिए।

उत्तरमें "सब, सब" का कर्णभेदी स्वर गूंज उठा। गांधीजी प्रसन्न हो गये। ...उन्होंने कहा कि अब इस वादेको पूरा करना आपका काम है। कलकत्तामें हिन्दुस्तानी सीखने की काफी सुविधाएँ हैं, आपको उनका लाभ उठाना चाहिए।

एक भाईने पूछा कि हिन्दुस्तानी सीखने का मतलब हिन्दुस्तानी समझ सकना है या उसे पढ़ और लिख सकना भी है। इस प्रश्नका लाभ उठाकर गांधीजी ने कहा कि अगर आप देशके सभी वर्गोंके लोगोंके साथ सीधा सम्पर्क रखना चाहते हैं तो देवनागरी और उर्दू दोनों लिपियोंको सीखना आवश्यक है। उत्तर भारतमें मुसलमान तो क्या, सभी हिन्दू भी देवनागरी लिपि नहीं जानते। अपनी बातके समर्थनमें उन्होंने देवनागरी लिपि न जानने वालोंमें पंजाब केसरी स्वर्गीय लाला लाजपतराय, कांग्रेसके संस्थापकोंमें गिने जाने वाले पण्डित अयोध्यानाथ और सर तेजबहादुर सप्रूके नाम बताये। उन्होंने कहा कि उर्दू लिपि सीखना मुश्किल नहीं है। जो भी हो, मैं बुद्धिजीवियोंकी भूमि बंगालसे कठिनाईका बहाना नहीं सुनना चाहता।

इसके बाद गांधीजी का ध्यान अखबारकी एक कतरनकी ओर दिलाया गया, जिसमें रचनात्मक कार्यके सन्दर्भमें संसदीय कार्यक्रमकी उपयोगिताके सम्बन्धमें उनके नये विचारोंका विवरण दिया गया था। तात्पर्य, 'खादी-जगत्' में उनके हालके एक हिन्दुस्तानी लेखसे था। "संसदीय कार्यक्रमके प्रति पूर्णकालिक रचनात्मक कार्यकर्ताका क्या रुख होना चाहिए? भारतकी मौजूदा परिस्थितिमें क्या विधान-मण्डल-जनताकी इच्छाका सचमुच प्रतिनिधित्व कर सकता है? अगर परिस्थिति प्रतिकूल है, अर्थात् यदि सरकारका रुख विरोधका है तो क्या कांग्रेसजनोंको विधान-मण्डलोंमें काम करते रहना चाहिए और आजकी परिस्थितियोंमें वे रचनात्मक कार्यकी प्रगतिमें क्या सहायता दे सकते है?"

उत्तरमें गांधीजी ने कहा कि मैंने चार-सूत्री असहयोग कार्यक्रमके अंगके रूपमें विधान-मण्डलोंके बहिष्कारकी सलाह दी थी। मेरी अब भी यही मान्यता है कि अगर उस कार्यक्रमपर पूरा अमल किया गया होता तो भारतको स्वराज्य मिल गया होता। लेकिन पूरा देश उसके लिए तैयार नहीं था। देशमें एक बड़ी संख्या ऐसे लोगोंकी थी जो देश-सेवामें संसदीय प्रतिभाका उपयोग करना चाहते थे। उन्हें अपने तरीकेसे देशकी सेवा करने से कोई रोके, यह मुनासिब नहीं था। इसलिए एक व्यावहारिक आदर्शवादीके रूपमें मैंने इस बातको मान लिया कि कांग्रेसजन विधान-मण्डलों तथा अन्य निर्वाचित संस्थाओंपर कब्जा कर लें — और किसी कारणसे नहीं तो कमसे-कम स्वार्थी लोगों तथा भारतकी आजादीके दुश्मनोंको इन संस्थाओंमें प्रवेश पाने से रोकने के लिए ही सही।

कोंटाईमें कही गई अपनी बातको दोहराते हुए उन्होंने कहा कि मुझे इससे अधिक खुशी और किसी बातसे नहीं होगी कि आदर्श भंगी विधान-मण्डलोंके लिए निर्वाचित होकर वहाँ कांग्रेसका प्रतिनिधित्व करें। खुद मैं भारतका सर्वोच्च भंगी होने का दावा करता हूँ। मेरा आदर्श भंगी कोई अनभिज्ञ कठपुतली मात्र नहीं होगा, बल्कि वह अच्छी सामान्य बुद्धि और वर्तमान समस्याओंपर विचार करने और उनके सम्बन्धमें निर्णय लेने की क्षमतासे युक्त व्यक्ति होगा। वह शिक्षित व्यक्ति होगा, हालाँकि हो सकता है, वह अंग्रेजी नहीं जानता हो। मेरी समझमें नहीं आता कि ऐसे किसी आदमीको कांग्रेस-अध्यक्ष क्यों नहीं होना चाहिए। विधान-मण्डलोंमें जाने वालोंका काम रचनात्मक कार्योंको बढ़ावा देना होगा। लेकिन मैं यह चेतावनी दे देना चाहता हूँ कि मात्र संसदीय कार्यसे हमें स्वराज्य नहीं मिलेगा। स्वराज्य तो संसदसे बाहर आम जनताके बीच किये गये कार्यके फलस्वरूप ही मिलेगा। पूर्णकालिक रचनात्मक कार्यकर्ता अपने कामको नुकसान पहुँचाये बिना संसदीय प्रवृत्ति आरम्भ नहीं कर सकता। लेकिन जो लोग अपना पूरा समय रचनात्मक कार्यक्रममें नहीं लगा रहे हैं वे जनताकी इच्छा होने पर विधान-मण्डलमें प्रवेश कर सकते हैं, बशर्ते कि उसके फलस्वरूप कार्यकर्ताओंके बीच प्रतिद्वन्द्विता न हो और वे चुनाव जीतने के लिए कोई खर्च न उठायें।

प्र० : बंगालके अनेक भागोंमें काश्तकार मुसलमान और जमींदार हिन्दू हैं। हालमें कुछ जगहोंमें मुसलमान काश्तकारोंने हिन्दू जमींदारोंकी जमीन जोतने से इनकार कर दिया है। इस हालतमें हिन्दू जमींदारोंको क्या करना चाहिए?

उत्तरमें गांधीजी ने कहा कि मैं जो राय देने जा रहा हूँ वह बिलकुल मेरी निजी राय है। आप सब जानते हैं कि मैं कांग्रेसका चवन्नीका सदस्य भी नहीं हूँ, इसलिए कांग्रेसकी ओरसे कुछ नहीं कह सकता। मैं तो व्यक्तिगत हैसियत से एक सत्याग्रहीके नाते ही बोल रहा हूँ।

यद्यपि यह सवाल साम्प्रदायिक पृष्ठभूमिमें पूछा गया है, लेकिन जैसा कि मुझे दिखाई देता है, यहाँ असली झगड़ा साम्प्रदायिक नहीं, बल्कि आर्थिक है। बंगालमें किसान मुसलमान और जमींदार हिन्दू हो सकते हैं। लेकिन आन्ध्रमें तो किसान और जमींदार दोनों हिन्दू हैं, फिर भी कुछ इलाकोंमें ऐसा ही झगड़ा दिखाई दे रहा है।

गांधीजी ने आगे कहा, भूस्वामित्वपर मेरे विचार सभीको मालूम हैं। जमीनका एकमात्र आधिकारिक स्वामी वही है जो उसे जोतता है। मौजूदा जमींदार जमीनके मालिक तभी रह सकते हैं जब वे उसके ट्रस्टी बन जायें। जो जमींदार ट्रस्टी बन गया है, यदि उसके खेतोंके काश्तकार जमीन जोतने से इनकार कर देते हैं तो वह उनपर अदालती कार्रवाई नहीं करेगा और न किसी अन्य प्रकारसे उन्हें मजबूर करने की कोशिश करेगा। वह उन्हें उनकी मर्जीपर छोड़ देगा और ईमानदारीसे की गई मेहनतसे अपनी रोजी कमाने की कोशिश करेगा। यदि वह ट्रस्टीके रूपमें अपना काम ईमानदारीसे कर रहा होगा तो जल्दी ही वे पश्चात्ताप करते हुए उसके पास आयेंगे और उसका मार्गदर्शन और सहायता माँगेंगे। क्योंकि वह अपनी विशेष स्थितिका उपयोग श्रमिकोंका शोषण करके अपनी जेब भरने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें सहयोग और संगठनकी शिक्षा देने के लिए करेगा, ताकि वे अधिक उत्पादन कर सकें और उनकी स्थितिमें सुधार हो सके। इसका मतलब यह होगा कि जमींदार खुद सबसे अच्छा काश्तकार बन जाये। जो मालिक अपनी सम्पत्तिको मात्र अपनी लालसाओंकी पूर्तिका साधन मानता है वह उसका मालिक नहीं, बल्कि गुलाम है। इसलिए बंगालके जमींदारोंको मेरे ट्रस्टीशिपके सिद्धान्तको केवल अपना-भर लेना है; फिर तो उनकी कठिनाइयाँ सहज ही दूर हो जायेंगी।

प्र० : क्या ट्रस्टीकी सम्पत्ति उत्तराधिकारके रूपमें उसके बच्चोंको मिलेगी?

गां० : जो मालिक ट्रस्टीकी हैसियतसे सम्पत्तिका मालिक है वह अपने बच्चोंको विरासतमें वह सम्पत्ति तब तक नहीं देगा जब तक कि उसके बच्चे भी उस सम्पत्तिके ट्रस्टी न बन जायें और ट्रस्टी बनने के अपने दावेको सही सिद्ध करके न दिखा दें। अगर वे इसके लिए तैयार नहीं हैं तो ट्रस्टीको अपनी सम्पत्तिका ट्रस्ट बना देना चाहिए। कोई हट्टा-कट्टा नौजवान परोपजीवीकी तरह बिन-कमाई आय पर जीवित रहे, यह चीज उसके लिए नैतिक दृष्टिसे सर्वथा पतनकारी है। पिताको अपनी सन्तानमें श्रमकी गरिमाकी भावना जगानी चाहिए और उन्हें ईमानदारीसे की गई मेहनतसे अपनी रोटी कमाना सिखाना चाहिए। जहाँ तक धनाढ्य लोगोंकी बात है, मैं उनमें से बहुतोंके साथ अपने व्यक्तिगत सम्बन्धके आधारपर यह कह सकता हूँ कि यदि देशमें दुर्भावना और वर्गगत द्वेषसे रहित ट्रस्टीशिपके *अनुकूल* वातावरणका निर्माण किया जा सके तो वे लोग रास्तेपर आ जायेंगे।

प्र० : हालमें जेलोंसे रिहा हुए बहुत-से कांग्रेसजनोंको अपनी या अपने परिवारोंकी रोजी कमानी पड़ती है। आजकी आर्थिक परिस्थितिमें उन्हें इस प्रयोजनसे शहरोंमें जैसे-तैसे शरण लेनी पड़ी है, उससे गाँव उनकी सेवासे वंचित होने लगे हैं। क्या प्रान्तीय या जिला कांग्रेस कमेटियाँ उनके लिए सवेतन सेवाकी व्यवस्था नहीं कर सकतीं ? अगर कर सकती है तो आप उन्हें इसके लिए आवश्यक धन किस प्रकार जुटाने की सलाह देंगे ?

गां० : यह प्रश्न देशकी वर्तमान, दयनीय दशाको प्रकट करता है। शहर न केवल गाँवोंका धन, बल्कि उनकी प्रतिभा भी चूस रहे हैं। इस प्रक्रियाको रोकने का एकमात्र उपाय है कि कांग्रेसजन अपने जीवनको अपना भगवान, अपना सर्वस्व न बनायें, बल्कि स्वयंको मात्र अपने आदर्शको समर्पित कर दें। फिर उनकी चिन्ता भगवान करेगा। श्रमिकको अपने श्रमकी कीमत तो कहीं भी मिल सकती है, लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरे पास कोई जादूकी छड़ी नहीं है, जिसके द्वारा मैं लोगोंके दृष्टिकोणको इतना बदल दूँ कि वे अपनी इच्छासे गरीबीको अपना लें। इसलिए मैं यह आवश्यक मानता हूँ कि प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी या स्थानीय एजेंसियाँ एक कोष एकत्र करें, जिससे उन सेवकोंका गुजारा हो सके जो गाँवोंकी सेवाके लिए स्वयंको समर्पित करना चाहते हैं। लेकिन मुझसे कोषकी व्यवस्था करने की आशा न रखें। मेरे याचनाके दिन बीत चुके हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि अगर किसी नेक कामको चलाने वाले ईमानदार कार्यकर्ता सुलभ हों तो ऐसा कोई भी काम पैसेके अभावमें कभी रुका नहीं है। कलकत्तामें 'थैलीवालों' की कमी नहीं है, और अगर गाँवोंमें काम करने की कोई व्यावहारिक योजना तैयार कर ली जाये और उसे हाथमें लेने के लिए सच्चे और लगनशील कार्यकर्ता आगे आयें तो मुझे पूरा यकीन है कि पैसा भी मिल ही जायेगा।

प्र० : आपने स्वराज्यके लिए कातने की सलाह दी है। यदि उस कार्यक्रमको उसके सही मानोंमें लागू करने के प्रयत्नमें मजदूरीके लिए की जाने वाली कताईको सीमित करना पड़े तो क्या हमें उसे सीमित करना चाहिए ? इससे वे गरीब लोग ही कठिनाईमें पड़ जायेंगे जिन्हें कताईकी मजदूरीसे कुछ राहत मिलती है। और अगर हम मजदूरीके लिए की जाने वाली कताईको इसी तरह कायम रखते हैं तो सूतके एवजमें खादी खरीदने के नये नियमोंके कारण गरीबोंको राहत देने के लिए उत्पादित खादीको खपाना हमारे लिए अधिक कठिन हो जायेगा।

गांधीजी ने कहा कि मैंने तो यह सलाह दी है कि सभीको अपने लिए नहीं, बल्कि स्वराज्यके लिए कातना चाहिए। चार करोड़ लोगों द्वारा ऐसी सजग और पारमार्थिक कताई एक यज्ञके समान होगी, और इस यज्ञमें से स्वराज्य प्रकट होगा। यह अभिजनों और सामान्य जनोंको, दिमागी काम करने वालों तथा शारीरिक श्रम करने वालोंको एकताके सजीव सूत्रमें बाँधेगी। लेकिन हुआ यह है कि हालाँकि हमारे

प्रयत्नोंसे हजारों स्त्री-पुरुषोंको आयका एक पूरक स्रोत प्राप्त हो गया है, खुद कातने वाले ही खादी नहीं पहनते। वे स्वराज्यके सन्दर्भमें खादीके सर्वांगीण अर्थोंको नहीं समझते। इसलिए मैं इस निष्कर्षपर पहुँचा कि अगर खादीको, पण्डित जवाहरलालके शब्दोंमें, सचमुच "स्वतन्त्रताकी पोशाक"[1] बनना है तो सभी कातने वालोंको ज्ञानपूर्वक खादी अपनानी चाहिए और जो लोग खादी पहनना चाहते हैं उन सबको कातना चाहिए। इस प्रकार मजदूरीके लिए की जाने वाली कताई और यज्ञ-भावसे की जाने वाली कताईमें कोई अन्तर्विरोध नहीं है। दोनों एक-दूसरेकी पूरक हैं।[2]

प्र० : हिंसा बुरी चीज है।... उसका स्थान वह रचनात्मक कार्यक्रम ही ले सकती है जिसका प्रतीक चरखा है। लेकिन लगता है, इसमें से जीवन्तताका गुण जाता रहा है। इसके क्रान्तिकारी महत्त्वको उजागर करने के लिए क्या किया जाना चाहिए?

गां० : डॉ० राधाकुमुद मुखर्जीने अपनी एक पुस्तकमें कोलब्रुकका यह कथन उद्धृत किया है कि गरीबीके पुराने घर भारतमें चरखा गरीबोंको दाल-रोटी देने का साधन है। स्वर्गीय रमेशचन्द्र दत्तने दर्शाया है कि किस प्रकार ईस्ट इंडिया कम्पनी की समृद्धिका आधार भारतीय सूती कपड़ेका व्यापार था। उसकी बराबरीका सूती कपड़ा चीन हो या जापान, दुनियाका कोई देश नहीं बना सकता था। आरम्भमें ईस्ट इंडिया कम्पनी भारतीय सूती कपड़ेके अपने एकाधिकारका 'नाजायज फायदा उठाकर अपना खजाना भरती रही। उससे न केवल कम्पनीको भारी व्यापारिक लाभ हुआ, बल्कि ब्रिटेनकी जहाजरानीको भी काफी प्रोत्साहन मिला। बादमें बहुत-से यान्त्रिक आविष्कार होने पर लंकाशायरने अपना सूती कपड़ा-उद्योग विकसित किया। इसके फलस्वरूप भारतीय सूती कपड़ेसे उसकी स्पर्धा आरम्भ हो गई। अतः अब भारतीय कारीगरोंके शोषणके बदले उनकी कारीगरीका नाश किया जाने लगा।

एक अंग्रेज लेखकने कहा है कि कपासका इतिहास सभ्यताका इतिहास है। राजनीति वाणिज्यकी चेरी है। भारतीय इतिहास इसका बहुत उपयुक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। हमारा सूती कपड़ा बनाने का काम जब अपनी पूरी पराकाष्ठा पर था तब हम अपनी जरूरतकी सारी कपास खुद पैदा करते थे। बिनौले मवेशियोंको खिलाये जाते थे, जिससे लोगोंको स्वास्थ्य-वर्धक दूध मिलता था। खेती फूल-फल रही थी। रुईसे तरह-तरहके सुन्दर कपड़े बनाये जाते थे, जिसका एक नमूना ढाकाकी जामदानी थी। इसके सहायक उद्योगके रूपमें हमारी मसूलीपट्टमकी रंगरेजी और छपाईकी कला संसार-भरमें प्रसिद्धि अर्जित कर रही थी। पारखी लोगोंका

१. देखिए खण्ड ६५, परिशिष्ट ८।

२. आगेका अंश ३१-३-१९४६ के हरिजन से प्यारेलालके "हाउ टु मेक इट डायनमिक?" (इसे जीवन्त कैसे बनायें?) शीर्षक लेखसे लिया गया है। प्यारेलाल बताते हैं कि यह प्रश्न कलकत्तामें बोरकामताके खादी-सेवकोंने गांधीजी से पूछा था।

कहना है कि हमारे पुराने देशी रंगोंके टिकाऊपन, चमक और सुन्दरताकी दुनियामें कहीं सानी नहीं थी। आज यह सब खत्म हो चुका है। आज भारत नगा है। हमें उसके नंगेपनको ढंकना है। अगर इस कामके लिए कोई चरखेसे बेहतर विकल्प बता दे तो मैं आज ही चरखेका त्याग कर दूं। लेकिन अब तक ऐसा कोई विकल्प नहीं मिलता और मैं यह कहने की धृष्टता करूँगा कि उसके मिलने की सम्भावना भी नहीं है।

इसपर यह सवाल पूछा जा सकता है, "जब चरखा भारतकी आजादीको जाने से रोक नहीं पाया तो वह उसे वापस कैसे ला सकता है?" इसका जवाब यह है कि पहले चरखा आजादीकी कल्पनासे नहीं जुड़ा हुआ था। तब वह अहिंसाकी शक्तिका प्रतीक भी नहीं था। पुराने जमानेमें वह हमारी गुलामीका प्रतीक था। हमने यह महसूस नहीं किया था कि हमारी प्रगति, समृद्धि, बल्कि स्वतन्त्रता भी चरखेपर निर्भर है; अन्यथा हमने इसको विनाशसे बचाने के लिए संघर्ष किया होता, सत्याग्रह किया होता। जिस चीजको हमने अपने अज्ञान और उदासीनताके कारण गँवा दिया उसे अब अपनी बुद्धि और ज्ञानसे वापस पाना है। आज हमने अपने विषयमें सोचना बन्द कर दिया है। सरकार कहती है कि बंगाल दरिद्र प्रदेश है और इस कथनको हम आँख मूँदकर स्वीकार कर लेते हैं। साढ़े छः करोड़ आबादीवाले प्रदेशको दरिद्र कहना खुद अपने बौद्धिक दिवालियेपनका ढिंढोरा पीटना है। क्या बंगालके गवर्नरने अभी कुछ ही दिन पहले[1] अपनी एक रेडियो वार्तामें यह नहीं कहा था कि बंगालके किसान सालके छः महीने बेरोजगार रहते हैं ? क्या विश्वके किसी भी हिस्सेकी आबादी आधे वर्ष बेकार रहकर जीवित रह सकती है? यदि वर्षके अधिकांश समयकी उनकी मजबूरीकी बेकारीको दूर नहीं किया गया तो वर्षाके सभी जलका संग्रह करके उसका उपयोग सिंचाईके लिए करने पर भी जनसाधारण जीवित नहीं रह सकता। हमारी सच्ची व्याधि दरिद्रता नहीं, बल्कि आलस्य, उदासीनता और जड़ता है। सिंचाई इंजीनियरीके क्षेत्रमें आप भले चमत्कार कर दिखायें, लेकिन अनाजसे भरे कोठारोंसे ही हमारी गुलामी दूर नहीं हो सकती और न होगी। गुलामीको मिटाने के लिए जनसाधारणकी मानसिक तथा शारीरिक जड़ताको मिटाना होगा और उसकी बुद्धि तथा रचनात्मक क्षमताको जगाना होगा। मेरा दावा है कि भारत-जैसे विशाल महाद्वीपमें चरखेके सर्वांगीण ज्ञानके साथ उसके व्यापक चलनके द्वारा ही वह जागृति आ सकती है। चरखेकी तुलना मैंने केन्द्रस्थ सूर्यसे की है और अन्य ग्रामोद्योगोंको सौरमण्डलके ग्रह कहा है। सूर्य ग्रहोंको प्रकाश और ऊष्मा प्रदान करता है और उन्हें कायम रखता है। उसके बिना वे टिक नहीं सकेंगे।

प्र० : यदि आपका यह कहना ठीक है कि स्वराज्य हाथ-कते सूतके धागेपर निर्भर है तो चौथाई सदीके खादी-कार्यके बाद भी हम आज तक उसे क्यों प्राप्त नहीं कर पाये हैं?

१. ८ दिसम्बर, १९४५ को; देखिए पृ० १९३-९४ भी।

उ० : क्योंकि हमारा श्रम ज्ञान-प्रेरित नहीं था। कब्रकी शान्ति कब्रको मृत्युका घर बनाती है, लेकिन आत्माकी शान्ति उसे दिव्य ज्ञानका मन्दिर बनाती है। इसी प्रकार निष्प्राण श्रम करना दासताका प्रतीक है। ज्ञानसे प्रकाशित श्रम स्वतन्त्रताका प्रतीक है। दोनोंमें जमीन-आसमानका फर्क है। खादी-सेवकोंको समझ लेना चाहिए कि खादी-शास्त्रके पूर्ण ज्ञानके बिना स्वराज्यके सन्दर्भमें निष्ठापूर्वक किया गया खादी-कार्य निष्फल श्रम साबित होगा।

प्र० : कताई विज्ञानसे आपका क्या तात्पर्य है? उसमें किन चीजोंका समावेश है?

गां० : मैंने अक्सर कहा है कि मैं भोजनके बिना रह सकता हूँ, किन्तु यज्ञार्थ कताईके बिना नहीं। मैंने यह दावा भी किया है कि भारतमें मेरे-जितनी अचूक नियमितता और आत्मिक लगनसे शायद किसीने कताईका काम नहीं किया है। इतने पर भी मैं कहूँगा कि ये सारी बातें वैज्ञानिक ज्ञानका स्थान नहीं ले सकतीं। वैज्ञानिक ज्ञानका तकाजा है कि हम जो छोटीसे-छोटी क्रिया करें उसके भी हेतु और कारणकी सदा खोजबीन करते रहें। चरखेमें स्वराज्य और शान्ति समाई हुई है, यह कहने-भरसे काम नहीं चलेगा। वैज्ञानिक मानसवाला व्यक्ति किसी वस्तुको मात्र विश्वाससे ही वैज्ञानिक मानकर नहीं बैठ जायेगा। वह तर्क द्वारा उसका आधार ढूँढ़ने का आग्रह रखेगा। विश्वास जब तर्कसे सम्बन्धित बातोंके क्षेत्रमें प्रवेश करता है तब वह पंगु हो जाता है। जहाँ तर्कका क्षेत्र समाप्त होता है वहाँसे विश्वासका क्षेत्र शुरू होता है। विश्वासपर आधारित निष्कर्ष अटल होते हैं, किन्तु तर्कपर आधारित निष्कर्ष श्रेष्ठतर तर्कके समक्ष डगमगा सकते हैं और गलत साबित हो सकते हैं। विज्ञानकी मर्यादा बताने का मतलब उसके महत्त्वको कम करना नहीं है। हमारा काम न विज्ञानके बिना चल सकता है और न तर्कके बिना — दोनों अपनी-अपनी जगह अनिवार्य हैं।

मैंने चरखेकी खोज पहले-पहल विशुद्ध अन्त:प्रेरणासे ही की थी। उसके पीछे ज्ञानका बल नहीं था — यहाँ तक कि मैं चरखे और करघेको एक ही समझता था। लेकिन बादमें मैंने स्वर्गीय मगनलाल गांधीकी सहायतासे उसकी सम्भावनाओंका पता लगाने का प्रयत्न किया। उदाहरणके लिए, हमारे सामने यह प्रश्न उपस्थित हुआ : तकुआ लोहेका क्यों बनाया जाये, पीतलका क्यों नहीं? उसे पतला होना चाहिए या मोटा? उचित मोटाई क्या होगी? हमने आरम्भ मिलके तकुएसे किया। तब तकुएका होल्डर बाँस और लकड़ीका बना होता था। बादमें हम चमड़े और ताँतकी बेयरिंगका इस्तेमाल करने लगे। देखा गया कि तकुए सहज ही मुड़ जाते हैं, लेकिन उन्हें सीधा करना बहुत मुश्किल होता है। इसलिए हमने बुनाईकी सलाईसे तकुआ बनाने की कोशिश की और अन्तमें छातेकी कमानीसे। इस सबके लिए आविष्कार-क्षमता और वैज्ञानिक शोधकी आवश्यकता पड़ी।

वैज्ञानिक मानसवाला खादी-सेवक इतने पर ही नहीं रुक जायेगा। वह स्वयं से पूछेगा: "चरखा ही क्यों, कताई मिल क्यों नहीं?" उत्तर यह होगा कि हर आदमी के पास कताई मिल नहीं हो सकती। अगर लोग अपने कपड़ेकी जरूरतके लिए कताई मिलोंपर निर्भर करेंगे तो जिसका भी नियंत्रण उन मिलोंपर होगा वह उन्हें भी अपने नियंत्रणमें रखेगा और इस प्रकार उनकी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता समाप्त हो जायेगी। आज कोई भी लन्दन और न्यूयॉर्ककी बिजली और जल आपूर्तिको काटकर २४ घन्टेमें पूरेके-पूरे लन्दन और न्यूयॉर्कको अपने बसमें कर सकता है। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता तथा पारस्परिक निर्भरता दोनों समाजमें जीवनके लिए आवश्यक हैं। कोई रॉबिन्सन क्रूसो ही आत्म-निर्भरताकी स्थितिमें हो सकता है। अपने सामर्थ्यानुसार अपनी महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिए सब-कुछ लेने के बाद ही शेष बातोंके लिए मनुष्य अपने पड़ोसियोंका सहयोग पाने का प्रयत्न करेगा। यह सच्चा सहयोग होगा। इस प्रकार चरखेके वैज्ञानिक अध्ययनके फलस्वरूप हम समाजशास्त्रमें प्रवेश करेंगे। जब तक हम चरखेसे सम्बद्ध विविध विज्ञानोंका गहरा अध्ययन नहीं करेंगे तब तक हमारे हाथोंमें भारतको स्वतन्त्रता दिलाने वाली शक्ति नहीं आयेगी। जब हम उसका ऐसा अध्ययन करेंगे तब न केवल भारत स्वतन्त्र होगा, बल्कि पूरी दुनियाको सही रास्ता मिल जायेगा।

पण्डित जवाहरलाल नेहरूने सर्वथा उचित कहा है कि किसी समय भारतमें खोज-वृत्तिकी कमी नहीं थी, किन्तु आज वह वृत्ति छिप गई है। एक बार वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्राप्त कर लेने पर यह चीज हमारे हर कार्यमें—खाने, पीने, आराम करने और सोने सब-कुछमें—प्रतिबिम्बित होने लगेगी। हर चीजका नियम वैज्ञानिक ढंगसे होने लगेगा और मनमें उसके हेतु और मूलका पूरा बोध विद्यमान रहेगा। अन्तिम बात यह है कि वैज्ञानिक मानसवाले व्यक्तिमें अनासक्ति भी होनी चाहिए, अन्यथा वह पागलखानेमें पहुँच जायेगा। उपनिषद्में कहा गया है कि ब्रह्माण्डमें जो-कुछ भी है, सब ईश्वरका है। यह उसीका है, और इसलिए उसे उसीको समर्पित करके उसका भोग करना चाहिए। भोग और शोक, सफलता और विफलता तब आपके लिए समान होगी।

एक बात और। मान लीजिए कोई जालिम चरखेको ही नष्ट करना चाहता है। उस स्थितिमें हम क्या करेंगे? मेरा उत्तर यह है कि उस स्थितिमें चरखे के साथ हमें स्वयं भी मिट जाना चाहिए, लेकिन उसके नाशको देखने के लिए जीवित नहीं रहना चाहिए। इस तरह अपना बलिदान करने वाले प्रत्येक खादी-सेवकके बदले हजारों सेवक उठ खड़े होंगे। अपना वह उत्सर्ग उसने जिस ध्येयको लेकर किया है उसपर वह विजयकी अन्तिम मुहर लगा देगा।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, १३-१-१९४६, और हरिजन, ३१-३-१९४६

४९६. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
६ जनवरी, १९४६

सभामें शामिल होने से सम्बन्धित सामान्य नियमोंके बारेमें गांधीजी ने महिषादलमें जो बात कही थी[1] उसीपर यहाँ भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि यह आम नियम है कि सभा आरम्भ हो जाने के बाद किसीको सभास्थलमें प्रवेश नहीं करना चाहिए और न सभाके दौरान वह जगह छोड़नी चाहिए। जो लोग इस नियमको भंग करते हैं वे दूसरोंको परेशान करते हैं। अगर किसीको सभा में कोई दिलचस्पी नहीं हो तो भी उसे उन लोगोंका खयाल करना चाहिए, जो सभामें उपस्थित हैं, और सभाकी समाप्तिके पहले वहाँसे नहीं निकलना चाहिए। यह सभी सभाओंके लिए आम नियम है। लेकिन प्रार्थना-सभाओंके सम्बन्धमें तो हमें और भी सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि प्रार्थनामें लोगोंको अपने मन को एकाग्र करके ईश्वरपर केन्द्रित करना पड़ता है।

प्रार्थनामें गाये गये भजनका उल्लेख करते हुए गांधीजी ने कहा कि आपको भजनके मर्मको अपने हृदयमें उतारना चाहिए। इसमें कवि रवीन्द्रनाथने कहा है कि मैं ईश्वरको दुःखोंके रूपमें भी अपनी ओर आते देखकर नहीं डरूँगा। इस सम्बन्धमें मैं "द हाउण्ड ऑफ हैवन" शीर्षक एक अंग्रेजी कविताकी[2] ओर आपका ध्यान दिलाना चाहूँगा, जिसमें ईश्वरका वर्णन निरन्तर अपने शिष्यका पीछा करते शिकारीके रूपमें किया गया है। ईश्वर अपने भक्तको अकेला नहीं छोड़ सकता, क्योंकि विश्वके उस सिरजनहारको बराबर इस बातकी फिक्र रहती है कि दुनिया व्यवस्थित रूपसे चले। इसलिए असली दुःख तब आता है जब हम ईश्वरको भूल जाते हैं, आनन्द तब आता है जब हम अपने मनमें भगवान को बसाते हैं।

यह[3] भी एक तरहका दुःख ही है, लेकिन आपको ऐसा महसूस नहीं करना चाहिए। साबरमती आश्रममें, जो स्टेशनसे थोड़ी ही दूरीपर है, एक व्यक्तिने मौनव्रत लिया। एक दिन उसने मुझसे कहा कि पूजाके समय गाड़ीकी सीटीसे मुझे बहुत बाधा पड़ती है। मैंने उसे सुझाव दिया कि रूई या रबड़से अपने कान बन्द कर लो, जिससे सीटीसे तुम्हें बाधा न पड़े। कुछ दिन बाद उसने फिर

१. देखिए पृ० २१५-१६।
२. फ्रान्सिस थॉम्पसनकी
३. तात्पर्य निकटसे गुजरती एक ट्रेनकी सीटीसे है, जिससे गांधीजी के भाषणमें बाधा पड़ी थी।

मेरे पास आकर बताया कि अब, उसे रूई या रबड़की जरूरत नहीं थी, क्योंकि उसने ध्यानको इतना अधिक एकाग्र करना सीख लिया था कि कोई आवाज उसके कानमें प्रवेश नहीं कर सकती थी। मैं कहना यह चाहता हूँ कि दुःख चाहे किसी भी रूपमें आपके पास आये, आपको विचलित नहीं होना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, ७-१-१९४६

४९७. तार : वल्लभभाई पटेलको

एक्सप्रेस

सोदपुर
७ जनवरी, १९४६

सरदार
मार्फत पावरफार्म
बम्बई

ईश्वरकी इच्छा हुई तो तीन मार्चको बारडोली पहुँच जाऊँगा।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९८. तार : कस्तूरी श्रीनिवासनको

एक्सप्रेस

सोदपुर
७ जनवरी, १९४६

कस्तूरी श्रीनिवासन
'हिन्दू'
मद्रास

आपका तार मिला। स्वीकार है।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

४९९. तार : मोटुरी सत्यनारायणको

सोदपुर
७ जनवरी, १९४६

सत्यनारायणजी[1]
मार्फत दक्षिण [भारत हिन्दी प्रचार सभा]
त्यागरायनगर (मद्रास)

राजकुमारीने जाकिर साहब या सईदैन[2] के बारेमें लिखा है। इन दोनोंमें से कोई राजी न हुए तो राजकुमारी खुद करेगी।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

५००. पत्र : शारदा गो० चोखावालाको

सोदपुर
७ जनवरी, १९४६

चि० बबुड़ी,

आज मौनवार है। सवेरेकी प्रार्थनाके बाद मैं यह पहला पत्र तुझे लिख रहा हूँ। तू कैसी है? आनन्द कैसा है? मैं तो अभी इधर ही हूँ। यहाँसे १९ अथवा २० तारीखको मद्रासके लिए रवाना होऊँगा।

तुम सबको,
बापूके आशीर्वाद

मूल गुजराती (सी० डब्ल्यू० १००६५) से। सौजन्य: शारदा गो० चोखावाला

१. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (मद्रास) के मन्त्री

२. ख्वाजा गुलाम सईदैन, अलीगढ़ स्थित टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेजके प्रिन्सिपल; बादमें भारत सरकारके शिक्षा मन्त्रालयमें सलाहकार तथा सचिव

५०१. पत्र : जी० ई० बी० एबेलको

खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर (कलकत्ताके निकट)
७ जनवरी, १९४६

प्रिय श्री एबेल,

श्रीमती सरोजवासिनी गोहोने अभी-अभी मुझसे मिलकर अपने पति श्री एस० सी० गोहोके बारेमें वाइसराय महोदयसे निवेदन करने को कहा है। कहा जाता है कि श्री गोहो 'अभी चन्द रोज पहले तक' मलायामें भारत सरकारके एजेंट थे और खबर है कि वे सिंगापुरमें गिरफ्तार कर लिये गये हैं। श्रीमती गोहोने वाइसराय महोदयकी सेवामें प्रस्तुत अपने प्रार्थना-पत्रकी एक नकल मुझे दी है। मैंने उनसे यह कहने का साहस किया है कि मुझे दिखाये गये कागजातमें, जो सरकारके पास भी मौजूद हैं, कही गई बातें अगर सही हैं तो वे अपने पतिको सुरक्षित मानें। इस सम्बन्धमें मुझे आवश्यक जानकारी उपलब्ध करायें तो कृपा होगी।[1]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ७५-७६

५०२. पत्र : सरोजवासिनी गोहोको

सोदपुर
७ जनवरी, १९४[६][2]

प्रिय भगिनी,

आपने जो कागज दीये वह पढ़ गया हूं। और मैंने इस बारेमें काम शुरू किया है। चिंता न करे।

मो० क० गांधीके आशीर्वाद

श्रीमती सरोजवासिनी गोहो
६/१, कांटापुकुर लेन
बाग बाजार पो० आ०, कलकत्ता

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. एस० सी० गोहोपर शत्रुके साथ सहयोग करने का आरोप लगाया गया था। मार्च, १९४६ में उन्हें रिहा कर दिया गया।

२. साधन-सूत्रमें '१९४५' है, जो स्पष्ट ही चूक है; देखिए पिछला शीर्षक।

५०३. पत्र : ए० बी० एम० इनायत हुसैनको[1]

सोदपुर
७ जनवरी, १९४६

भाई साहिब,

आपका खत कल शामको मिला। आज मेरा खामोशीका दिन है। कल आसाम जाता हूं। आप लोग १६ तारीखको २-३० बजे आइये। मैं आधा घंटा निकाल दूंगा।

आपका,
मो० क० गांधी

जनाब ए० बी० एम० इनायत हुसैन
जनरल सेक्रेटरी
मुस्लिम अनएम्प्लॉयड रिलीफ एसोसिएशन
१८, मिर्जापुर स्ट्रीट
कलकत्ता

उर्दूकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५०४. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
७ जनवरी, १९४६

हर नागरिक द्वारा सफाईके नियमोंके पालन किये जाने की आवश्यकतापर जोर देते हुए गांधीजी ने लोगोंसे याद रखने को कहा कि प्रभुपरायणताके बाद सफाईका ही स्थान है और अगर आप सफाईके नियमोंका पालन करेंगे तो आपके हृदय भी निर्मल होंगे।

गांधीजी ने कहा कि इन दिनों मैं ज्यादा घूमता-फिरता तो नहीं हूँ, फिर भी मित्रगण मुझे बताते हैं कि सड़े फलोंकी गुठली, कागजके टुकड़ों और दूसरी बेकार की चीजोंको इधर-उधर फेंककर लोग शहरकी सड़कोंको कैसा गन्दा कर देते हैं। यह भी कहा जाता है कि कलकत्ता तो गन्दा रहता ही है। लेकिन आप सच मानिए, अगर हर नागरिक अपना फर्ज निभाये और सफाईके नियमोंका पालन करे तो कलकत्ताका रूप बदला जा सकता है।

गांधीजी ने जीवनके अन्य क्षेत्रोंमें भी उनसे सफाईके नियमोंका पालन करने का अनुरोध किया।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, ८-१-१९४६

१. मूल पत्र उर्दू लिपिमें था, परन्तु उसकी यह प्रति गुजराती लिपिमें है।

५०५. भेंट : छात्र-शिष्टमण्डलको[1]

कलकत्ता

[७ जनवरी, १९४६ या उसके पश्चात्][2]

अब जो मुझे सुनाया उसीमें जवाब आ जाता है। १. आप लोगोंको हिन्दुस्तानी में ही बोलनेकी आदत शुरू करना चाहीये। जानना इतना काफी नही है। इंग्रेजी बोलनेमें शरम होनी चाहिए।

२. विद्यार्थीओंको इसी कामके लिये मिलना चाहिये। और सभा बुलानी चाहीये। आज तो विनोबा है, दादा, आर्यनायकमजी, आशादेवी, रामचन्द्रन्, महेश इ० पडे हैं, जो मार्गदर्शन कर सकते है। आचार्य कृपलानी और सुचेतादेवी तो है ही। ऐसे तो धीरेन मजमुदार और विचित्रनारायण भी हैं, उनको भी लेना। ऐसे बहुत पडे हैं जिन सबका नाम मैंने नहीं दिया है। बात यह है कि आप लोगोंमें दृढ़ता और सत्य होना चाहीये तो सब कुछ हो सकता है, आज नही। इन सबको पूछो, आर्यनायकमजी तो यही हैं, कृपलानी है, सुचेता है। सोच कर करो। बादमें पश्चाताप नहीं होना चाहीये। राधाकृष्णजी से मश्विरा करो। काशी विद्यापीठमें यों आसानी है, तो मुझे क्या पूछना — आप ही सोचकर जो उचित लगे सो करे। प्यारेलालजी से बात करो। वह आप लोगोंके जैसे ही [विद्यार्थी था और [जब] मेरे पास आ गया।

भेंटकी फोटो-नकल (जी० एन० १०८५४) से

५०६. तार : मुन्नालाल गंगादास शाहको

कलकत्ता

८ जनवरी, १९४६

मुन्नालाल
नैसर्गिक उपचार गृह
पूना

कंचनकी बीमारीसे चिन्ता हो रही है। यदि तुम यह समझते

१. बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयके विद्यार्थियोंके रचनात्मक मण्डलके मन्त्री आर० अच्युतन के अनुसार, जनवरी, १९४६ में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयके विद्यार्थियोंकी एक मण्डलीने सोदपुर आश्रममें गांधीजी से मिलकर उनसे अहिंसक क्रान्तिके निमित्त... रचनात्मक कार्य आरम्भ करने के उद्देश्यसे गांधी सेवा संघके पुनरुद्धारके प्रश्नकी चर्चा की। उस दिन गांधीजी का मौन था, इसलिए उन्होंने उत्तर लिखकर दिया...।

२. जनवरी, १९४६ में गांधीजी का प्रथम मौन-दिवस ७ जनवरीको पड़ा था।

हो तुम्हें आना ही चाहिए तो आ सकते हो। मैं असम रवाना हो रहा हूँ। सुशीलाबहन कंचनके साथ रह रही है। डॉक्टर विधान रायकी देखरेखमें इलाज हो रहा है। मैं नरहरिको लिख रहा हूँ कि यदि तुम वहाँसे चले आते हो तो वह तुम्हारे स्थानपर मणिभाईको भेज दे।

बापू

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६२७) से

५०७. तार : नरहरि द्वा० परीखको

एक्सप्रेस

सोदपुर
८ जनवरी, १९४६

नरहरिभाई परीख
सेवाग्राम
वर्धा

कंचनकी बीमारी गम्भीर। मुन्नालाल आना चाहे तो आ सकता है। इसलिए सम्भव हो तो मणिभाईको पूना भेज दो। असम जा रहा हूँ। वहाँ पाँच दिन ठहरूँगा। पता गोहाटी होगा।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५०८. पत्र : वल्लभभाई पटेलको

सोदपुर
८ जनवरी, १९४६

भाई वल्लभभाई,

नीचे लिखे अनुसार कल तुम्हें तार भेजा है[1]:

"ईश्वरकी इच्छा हुई तो तीन मार्चको बारडोली पहुँच जाऊँगा। बापू।"

मैं तो १ मार्चको ही आना चाहता था, लेकिन देखता हूँ, यह सम्भव नहीं है, क्योंकि फरवरीके २८ दिन हैं, और मुझे बारडोली आने से पहले कुछ दिनोंके

१. देखिए अगला शीर्षक।

लिए पूना भी जाना चाहिए। इसलिए दो दिन बढ़ा दिये हैं, जिससे ऐसा मानकर चल सकूं कि तीस दिनका महीना होगा। सिर भिगो लिया है तो मुँडाना चाहिए ही। पैसेका दुरुपयोग मुझसे सहन नहीं हो सकता। और मैं कुछ न करूँ तो इस नई चीजमें दिनशाकी पैठ नहीं हो सकती। इसलिए वर्षाका काम जल्दी निबटा कर पूना होते हुए बारडोली आऊँगा, और बादमें पूना लौट जाऊँगा। अभी तो ऐसा ही इरादा है।

संसदीय प्रतिनिधि मण्डलके विषयमें कुछ तो मैं लिख चुका हूँ।[1] हमें उसका अपमान नहीं करना चाहिए, बल्कि उसका स्वागत ही करना चाहिए। जैसे पहले ऐसे लोगोंके आने पर लोग नासमझी करने लगते थे, वैसा करने की जरूरत नहीं है, बल्कि हमारे घर आये लोगोंका हमें किसी तरहका अपमान नहीं करना चाहिए। उनके सम्मानमें कोई भोज आदि आयोजित किया जाये और कांग्रेसियोंको आमन्त्रण मिले तो उसे अस्वीकार करने की जरूरत नहीं। मैं खुद तो कहीं-न-कहीं उनसे मिलूंगा ही। मिदनापुरसे लौटने पर मैं गवर्नरसे मिलने वाला तो था ही। उनसे कल रात मिला तो उन्होंने पूछा कि उन लोगोंसे मैं कहाँ मिल सकता हूँ। मैंने उन्हें अपने कार्यक्रमकी तारीखें बताईं। बहुत सम्भव है, वे मुझसे मद्रासमें ही मिलें। और कोई तारीख ठीक बैठती नहीं लगती।

डॉ० महमूद मुझसे मिलने आये हैं। परसों मुझसे मिले थे और चूँकि मैं असम जा रहा हूँ, इसलिए मुझे विदा करके पटना लौट जाना चाहते हैं। इसलिए आज जायेंगे। इसी बीच गवर्नरको मालूम हुआ कि वे आये हैं इसलिए उन्होंने मिलने का प्रस्ताव रखा। कोई घंटे-भर उनकी मुलाकात हुई होगी। लगता है, कोई खास बात नहीं हुई। लेकिन मिलकर खुश हुए। मैं तो अब तक डॉ० महमूदके साथ पन्द्रह मिनट भी नहीं बैठ सका हूँ। वे आये और मेरा मौन शुरू हुआ। कल पूरे दिन तो मौन ही चला। शामको आये तो मैं गवर्नरके यहाँ चला गया। वहाँसे लौटा तो पौने दस बज चुके थे, इसलिए सहज ही बैठा न जा सका।

मेरी तबीयत अच्छी है। कंचनकी बिगड़ गई है। आशा है, ठीक हो जायेगी। बड़ा सख्त किस्मका एनीमिया है। वैसे एनीमिया तो उसका चला ही आ रहा था, लेकिन उसने परवाह नहीं की। आज असम जा रहा हूँ। उसे छोड़ने को मन नहीं होता, लेकिन मुझे तो ऐसा अनेक बार करना पड़ा है न? बहुत सम्भव है कि सुशीला उसकी खातिर रुक जायेगी। यह पत्र सुबह-सुबह प्रार्थनाके बाद लिखवा रहा हूँ। आजकी स्थिति कैसी होगी, यह तो बादमें मालूम होगा। अभी तो सोई हुई है। सुशीला भी सोई हुई है। रातमें बहुत देर तक वह उसके पास थी।

यहाँके अनुभवसे पत्र भरने लगूँ तो वह बहुत लम्बा हो जायेगा। उतना समय नहीं है, और तुम भी वह सब पढ़कर क्या करोगे?

1. देखिए पृ० ३९०-९१।

राजकुमारी तो यहाँ है ही। बीचमें उसे हैदराबाद (सिन्ध) जाना पड़ा था। वह मेरे साथ असम जायेगी। बादमें उसे मैसूर जाना पड़ेगा।

बापूके आशीर्वाद

सरदार वल्लभभाइ पटेल
६८, मरीन ड्राइव, बम्बई

[गुजरातीसे]
बापुना पत्रो–२ : सरदार वल्लभभाईने, पृ० २९१-९३

५०९. पत्र : जी० ई० बी० एबेलको

खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर (कलकत्ताके निकट)
८ जनवरी, १९४६

प्रिय श्री एबेल,

साथमें आपके पढ़ने के लिए एक कतरन[1] भेज रहा हूँ। इसमें दी गई जानकारी क्या सही हो सकती है?[2] शायद आप वाइसराय महोदयको कष्ट दिये बिना भी मुझे इसके सम्बन्धमें बता सकते हैं।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

संलग्न पत्र : १

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ४४

१. ६ जनवरी, १९४६ के हिन्दुस्तान स्टैण्डर्ड में यह खबर छपी थी कि बहादुरगढ़-कैम्प में आजाद हिन्द फौजका राष्ट्रगान गाने के कारण आजाद हिन्द फौजके पच्चीस कैदियोंको संगीन भोंककर मार दिया गया और कई फौजियोंको "जय हिन्द" का नारा लगाने के कारण दण्डित किया गया।

२. जी० ई० बी० एबेलने उत्तरमें सूचित किया था कि प्रतिरोध करने के कारण ४२ कैदियों के नितम्बोंपर संगीनें चुभाने से खरोंचें आ गईं और कोई मारा नहीं गया और न किसीको "जय हिन्द" का नारा लगाने के कारण सजा दी गई।

५१०. पत्र : जी० ई० बी० एबेलको

खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर (कलकत्ताके निकट)
८ जनवरी, १९४६

प्रिय श्री एबेल,

वाइसराय महोदय डॉ० विधानचन्द्र रायको जानते हैं। वे भारतके अग्रगण्य चिकित्सकोंमें से हैं। उन्होंने कलकत्ताके कई अस्पतालोंका कुशलतासे प्रबन्ध किया है। भारत सरकारने भी उनकी सेवा प्राप्त की है। वे भोर समिति[1] के भी सदस्य थे। कांग्रेसने बर्मा और मलायाके लोगोंके लिए एक राहत-मिशन संगठित किया है। डॉ० राय द्वारा दिये गये कागजातसे मुझे पता लगा है कि सरकार मिशनको आवश्यक सुविधाएँ देने में झिझक रही है, जिसका कारण यह है कि सरकार जितना कर सकती है सब-कुछ कर रही है। लेकिन ऐसी सेवाके मामलेमें तो एक शक्तिशाली सरकार द्वारा किये गये तमाम कार्य भी पर्याप्त नहीं हैं। प्रस्तावित सहायता न मिल पाने पर तकलीफमें पड़े लोगोंको कष्ट होगा, इसलिए मैं यह तो मानना नहीं चाहता कि कांग्रेसका मिशन होने के कारण सरकार इसे स्वीकृति देने में झिझक रही है। मुझे पूरी आशा है कि डॉ० विधानचन्द्र राय जो मूल्यवान सहायता देने को तैयार हैं उसे अस्वीकार नहीं किया जायेगा।[2]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ७३

१. भारत सरकार द्वारा नियुक्त स्वास्थ्य सर्वेक्षण तथा विकास समिति
२. इसके उत्तरमें ३० जनवरीको जी० ई० बी० एबेलने लिखा कि यह प्रस्ताव अस्वीकार करना ही होगा, क्योंकि बर्मा सरकार स्वयं ही चिकित्सा सम्बन्धी राहतकी व्यवस्था करने का प्रयत्न कर रही है, और वह इस मिशनको सुविधाएँ नहीं दे सकती।

५११. पत्र : स्टीवन लीको

सोदपुर
८ जनवरी, १९४६

प्रिय मित्र,

आपके तत्काल और स्पष्ट उत्तरके लिए धन्यवाद। मेरा इरादा इसका पूरा-पूरा उपयोग करने का है।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

श्री स्टीवन ली
फ्रेंड्स सर्विस यूनिट
१, अपर वुड स्ट्रीट
कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५१२. पत्र : आर० जी० केसीको

खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर
८ जनवरी, १९४६

प्रिय मित्र,

कल रात आपसे जो टिप्पणी भेजने का वादा किया था वह भेज रहा हूँ।

१. महिषादल-तमलुक सबडिवीजन, जिला मिदनापुर

श्रीधर चन्द्र गोस्वामी नामक एक व्यक्तिके आवेदन-पत्र देने पर २७ जून, १९४४ को पीठासीन अधिकारी (प्रेज़ाइडिंग ऑफिसर) ने जब्त की गई चीजें लौटाने का आदेश दिया था। मेरी जानकारीके मुताबिक, अब तक वे चीजें लौटाई नहीं गई हैं और अगर वे गुम हो गई हैं तो उनका कोई मुआवजा भी नहीं दिया गया है।[1] मूल कागजात साथमें हैं। (संलग्न पत्र १)[2]

१. उत्तरमें आर० जी० केसीने लिखा कि प्रार्थीने इन चीजोंकी नीलामीके बाद दावा दायर किया और इसलिए उससे नीलामीमें मिली रकम लेने को कहा गया, लेकिन उसने इनकार कर दिया। चीजें लौटाना सम्भव नहीं है, लेकिन अगर वह मुआवजेकी माँग करते हुए जिलाधीशको प्रार्थना-पत्र दे तो इस माँगपर विचार किया जायेगा।

२. यह और इस पत्रमें उल्लिखित अन्य संलग्न पत्र उपलब्ध नहीं हैं।

२. कोंटाई सबडिवीजन

यहाँ और शायद दूसरे सबडिवीजनोंमें भी जो पानी खारा हो गया है उसे निकालकर साफ करके पीने योग्य बनाया जाना चाहिए।

साथमें फ्रेंड्स सर्विस यूनिटका मूल पत्र भेज रहा हूँ, जिससे पता चलता है कि यह काम कितना जरूरी है। (संलग्न पत्र २)

३. अभय आश्रम, कोमिल्ला

साथमें एक कागज भेज रहा हूँ, जिसपर "संलग्न पत्र ३" लिखा हुआ है। मेरी समझसे तो इससे एक विचित्र स्थितिका पता चलता है। मुझे इस बातकी व्यक्तिगत जानकारी है कि आश्रमकी गतिविधियाँ सर्वथा लोकोपकारी और रचनात्मक थीं। वहाँ समाज-सुधारके आदर्शोंपर आधारित शालाएँ चलती थीं, जो मुख्यतः कातने वाले मुसलमान परिवारोंके बच्चोंकी जरूरतें पूरी करती थी। ये बच्चे मजदूरीके लिए कातते थे। सूत, कपास, और खादी रखने के लिए एक डिपो खोला गया था। श्री सुरेश बनर्जीकी सुयोग्य देख-रेखमें एक अस्पताल चलाया जाता था।[1] (संलग्न पत्र ३)

४. अन्य खादी केन्द्र

जिन अन्य खादी केन्द्रोंका नुकसान हुआ है उनका संक्षिप्त उल्लेख संलग्न पत्र सं० ४ में किया गया है।[2]

५. बिक्री-कर

बिक्री-कर अधिनियम १ जुलाई, १९४१ को पास किया गया था। हथकरघा कपड़ेको इस अधिनियमके प्रभावसे बाहर रखा गया, लेकिन ३० मार्च, १९४४ को उसमें संशोधन किया गया और करको प्रति रुपया एकसे बढ़ाकर दो पैसे कर दिया गया। २५ जून, १९४५ को गवर्नरके अध्यादेश द्वारा उसे बढ़ाकर तीन पैसे प्रति रुपया कर दिया गया। हथकरघा कपड़ा यद्यपि मूलतः कर-मुक्त था, लेकिन उसपर भी कर लगा दिया गया, लेकिन यह नहीं मालूम कि कब लगाया गया। १० रुपये तककी धोती, १५ रुपये तककी साड़ी और १८ रुपये तककी गया अधिनियमके प्रभावसे बाहर हैं।

मेरा कहना यह है कि खादी, अर्थात् हाथसे कता और हाथसे बुना कपड़ा या हाथसे कता सूत कर-मुक्त रखा जाना चाहिए। तर्कसंगत बात तो यह होगी

१. आर० जी० केसीने उत्तरमें लिखा कि इन संस्थाओंपर से प्रतिबन्ध हटाने के प्रश्नपर और इनकी सम्पत्तिको हुई क्षतिका मुआवजा देने के बारेमें भी विचार किया जायेगा।

२. उत्तरमें आर० जी० केसीने लिखा कि ज्यादातर खादी केन्द्रोंकी अचल सम्पत्ति या तो लौटा दी गई है या बदलेमें मुआवजा दे दिया गया है। बाकी खादी केन्द्रोंके मामले विचाराधीन हैं। जिन केन्द्रोंके भवन जब्त किये गये थे उनके भवन लौटाने या बदलेमें अन्य जगह देने के आदेश जारी किये जा रहे हैं।

कि हाथसे बुना कपड़ा भी, मिलके सूतसे बुने जाने के बावजूद, कर-मुक्त रखा जाना चाहिए, क्योंकि इसपर कर लगाने से हथकरघा बुनकरोंका नुकसान होता है। इसलिए धोती, साड़ी और लुंगीके कर-मुक्त रखे जाने से बात नहीं बनती। खादीसे प्राप्त राजस्व बिलकुल मामूली है। हाथसे बुने कपड़ेसे प्राप्त राजस्व काफी है, क्योंकि हाथसे बुने कपड़ेका परिमाण इतना अधिक होता है कि उससे खजाने को कुछ आय जरूर हो जाती है, लेकिन बेचारे बुनकरोंको नुकसान पहुँचाकर। लेकिन खादीपर कर लगाने से हजारों गरीब कातने वालोंका भारी नुकसान हुआ है, और इससे खादीके इस्तेमालमें इतनी बड़ी बाधा उपस्थित हो जाती है कि यह कर उन लोगोंके लिए एक प्रकारकी सजा बन जाता है। मेरी निश्चित राय है कि इस अधिनियमके प्रणेताओंकी ऐसी कोई मंशा नहीं थी। इस असावधानी की ओर सरकारका ध्यान दिलाने-भरसे ही इसे सुधार दिया जाना चाहिए। यहाँ मैं यह भी बता दूँ कि अखिल भारतीय चरखा संघके सभी भण्डार लोकोपकारी शाखाएँ हैं। संचालक अ० भा० चरखा संघके नौकर हैं, और प्रिवी कौंसिल के हालके निर्णयमें संघको लोकोपकारी संस्था करार दिया गया है, जिसपर आय-कर नहीं लगाया जा सकता।[1]

प्रसंगवश यह भी बता दूँ कि यद्यपि ताजा दूध इस अधिनियमके प्रभावसे बाहर रखा गया है, दूधकी बनी अन्य सभी चीजों — जैसे उबला दूध, पास्तरीकृत दूध, दही — पर इस अधिनियमके अनुसार कर लगा दिया गया है। यह धारा मेरी समझमें नहीं आती। मूल अधिनियमका नाम बंगालका १९४१ का अधिनियम है।

६. फेनी

फेनी उस क्षेत्रमें आता है जिसपर जापानियोंने बमबारी की थी। इसलिए सरकारने ९८ गाँव खाली करवाये थे। कहते हैं, यह आश्वासन दिया गया था कि लड़ाई बन्द होने के छः महीने बाद गाँव ग्रामवासियोंको लौटा दिये जायेंगे। लेकिन लगता है २८ गाँव अब भी सरकारके कब्जेमें हैं। गाँव खाली करवाते समय व्यापारिक वस्तुओंके हटाये जाने पर सख्त पाबन्दी लगी हुई थी। इस मामले की बारीकीसे छान-बीन करने की जरूरत है।

साथमें मुझे उपलब्ध कराया हुआ एक विवरण भेज रहा हूँ, जिसपर "संलग्न पत्र ५" लिखा हुआ है।[2]

१. आर० जी० केसीने गांधीजी को बिक्री-करकी तुरन्त जाँच करवाने का आश्वासन दिया।

२. आर० जी० केसीने लिखा कि आठ गाँवोंको तो हवाई अड्डोंमें बदल दिया गया है, इसलिए सरकार उन्हें स्थायी तौरपर अधिकारमें ले लेगी। जो अन्य १४ गाँव ईंटें बनाने के लिए लिये गये थे वे छोड़ दिये जायेंगे। आर० जी० केसीने यह भी लिखा था कि यह आरोप गलत है कि सरकार द्वारा लिये गये गाँवोंसे लोगों द्वारा चल सम्पत्ति हटाने पर रोक लगा दी गई थी, इसके विपरीत उन्हें हटाने के लिए लोगोंको मदद दी गई थी।

यह पत्र मैंने जल्दीमें लिखा है। मुख्य उद्देश्य यह है कि आपको यथासम्भव कमसे-कम पढ़ना पड़े। लेकिन अगर और भी कागजातकी जरूरत होगी तो असम से लौटने पर भेजने को तैयार हूँ। मैं १४ तारीखको वहाँसे लौटने की आशा करता हूँ। जैसा कि मैंने पिछली रात आपको बताया था, मैं खुद इस बातकी जिम्मेदारी नहीं ले सकता कि ये सभी तथ्य सही हैं। ये तथ्य मुझे मेरे सहयोगियोंने यह कहकर उपलब्ध कराये हैं कि ये सही हैं। लेकिन अगर बात ऐसी नहीं हो तो मैं अपनी भूल सुधार लूँगा। किन्तु अगर वे सही पाये जायें तो मेरा निवेदन है कि उनकी जाँच-पड़ताल तुरन्त करना जरूरी है। मैंने इस बातका ध्यान रखा है कि उन्हीं शिकायतोंका जिक्र करूँ जिन्हें विशेष कठिनाई या खर्चके बिना दूर किया जा सकता है, तथापि इन शिकायतोंको दूर करनेसे ज्यादासे-ज्यादा जरूरतमन्द लोगोंको राहत मिलेगी।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

संलग्न पत्र : ५

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ११६-१८

५१३. पत्र : देवदास गांधीको

सोदपुर
८ जनवरी, १९४६

चि० देवदास,

प्रभुदयाल[1] के विषयमें लिखा तेरा पत्र ३-१-१९४६ को मिला। मैं तो अपने काममें पूरी तरह व्यस्त हूँ। लगता है प्रभुदयालका काम ठीक चल रहा है। उसे तूने रोक रखा होगा। जो हो उसकी खबर देना।

कंचन तो बहुत बीमार हो गई है। मुझे आज असम जाना है।

आशा है, वहाँ सब कुशल होगा।

बापूके आशीर्वाद

श्री देवदास गांधी
'हिन्दुस्तान टाइम्स'
नई दिल्ली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. प्रभुदयाल विद्यार्थी

५१४. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

सोदपुर
८ जनवरी, १९४६

चि० मुन्नालाल,

मैंने निम्नलिखित तार[1] दिया है:

कंचन बीमार तो थी ही। उसे एनीमिया (रक्ताभाव) तो था ही। डॉ० विधानने अपने खून लेने वालेको भेजा और खून मँगवाकर उसकी जाँच कराई। उसे एनीमिया निकला। इसी वजहसे उसकी खाँसी जल्दी दूर नहीं हो रही है। उसकी देखभाल तो ऐसी हो रही है जैसी करोड़पतिकी भी नहीं होती। डॉ० विधान आते रहते हैं और सुशीलाबहनका मार्गदर्शन करते हैं। सुशीलाबहनने तो एक बार उसे बहुत सख्त बीमारीसे अच्छा किया था, इसलिए कंचनको उस पर पूरा-पूरा विश्वास है। इसलिए तुम आकर कुछ विशेष कर सकोगे, ऐसा मैं नहीं मानता। लेकिन कदाचित् तुम्हें आने की इच्छा हो तो मुझे तुम्हें रोकना नहीं चाहिए अथवा उसके गम्भीर रूपसे बीमार होने की खबर न देना भी अनुचित होगा। यह सोचकर ही मैंने तुम्हें उपयुक्त तार दिया है। तुम यदि वहाँसे रवाना हो चुके होगे तो इस पत्रकी जरूरत नहीं रह जाती। लेकिन मैंने यह सोचकर पत्र लिखाया है कि तुम अभी वहाँसे रवाना नहीं हुए होगे। यदि वहाँसे चल चुके होगे तो वहाँके काम-काजकी देखभाल कौन करेगा, यह सवाल उठा। इसी-लिए मैंने मणिभाईको सेवाग्राम तार दिया है कि यदि वह जा सके तो तुरन्त पूना जाये। यदि तुम रवाना नहीं हुए हो तो वह तुम्हारी मदद करेगा। पूरी-पूरी मदद लेना। यदि तुम रवाना हो ही चुके हो तो मणिभाईको जो ठीक लगेगा वह करेगा।

तुम्हारा पोस्टकार्ड मुझे कल मिला था। उसका उत्तर मैं अपने पहलेके पत्र में दे चुका हूँ।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६१३) से। सी० डब्ल्यू० ७२०२ से भी; सौजन्य: मुन्नालाल गं० शाह

१. देखिए पृ० ३९९-४००।

५१५. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

९ जनवरी, १९४६

गत (मंगलवारकी) रात मेरे लिए भयंकर रात थी। हर स्टेशनपर भीड़ काबूसे बाहर थी। जो नारे लगाये जा रहे थे उनके पीछे हालांकि सद्‌भाव ही था, लेकिन इस उम्रमें वे मझे खुश नहीं कर सकते थे, पहले कभी करते रहे हों तो करते रहे हों। क्योंकि मैं जानता हूँ कि स्वराज्य इससे कहीं सच्ची और सख्त धातुकी बनी चीज है। इन नारोंसे कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। आरम्भिक अवस्थामें, जब लोग भयवश अपनी आवाज सुनने में भी डरते थे, शोरगुल और नारोंका कुछ मतलब था, लेकिन आज जबकि हमारे स्वराज्य प्राप्त करने — और शायद चन्द महीनोंमें ही प्राप्त करने की सम्भावना दिखाई दे रही है, इस सबका कोई मतलब नहीं है। दो स्टेशनोंके बीचमें जो थोड़ी-सी झपकी ले सका उसके अलावा मुझे बिलकुल सोने नहीं दिया गया। अगर मुझे रोज-रोज ऐसा करना पड़ा तब तो मैं १२५ वर्ष जीने की आशा नहीं कर सकता। अब मित्रगण समझ जायेंगे कि मैंने जी कड़ा करके ऐसा फैसला क्यों किया कि पूर्व बंगालका थोड़े दिनोंका भी दौरा नहीं करूँगा। पूरे बंगालका दौरा करने में मुझे बड़ी खुशी होगी, लेकिन जो सामान्य रूपसे हम सबका ध्येय है उसीकी खातिर मुझे अपनी इस इच्छापर नियन्त्रण रखना है और मैं मित्रोंसे भी कहूँगा कि वे भी ऐसा ही करें। वे और आम लोग उतनी ही सेवासे सन्तोष मानें जितनी कि मैं पहले की तरह दूर-दूरकी यात्रा किये बिना कर सकता हूँ। विभिन्न स्थानोंके नेता अपने आसपासकी जनताको समझायें-बुझायें और सलाह दें कि लोग शोरगुल न करें, नारे न लगायें और धक्कम-धक्का न करें।

एक घटिया और गन्दी आदत तो छोड़ ही देनी चाहिए। हर ट्रेनमें एक जंजीर होती है, जो सिर्फ खतरे या दुर्घटनाकी हालतमें ही इस्तेमाल करने के लिए है। किसी भी अन्य स्थितिमें इसका इस्तेमाल करना और फलतः ट्रेनको रोकना न केवल दण्डनीय अपराध है, बल्कि यह एक ऐसे उपकरणका बेहूदा, विचारशून्य और खतरनाक दुरुपयोग भी है जिसकी व्यवस्था केवल भारी आपात् स्थितियोंके लिए की गई है। ऐसा दुरुपयोग एक सामाजिक अपराध है, और अगर इसका चलन पड़ गया तो यह जनताके लिए दुःखदायी चीज बन जायेगा। जन-सुरक्षाके लिए मानव-दयाकी भावनासे सुलभ कराये गये इस उपकरणसे मनमाने दुरुपयोगके खिलाफ लोगोंको सख्त चेतावनी देना हर देशप्रेमीका कर्तव्य है।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, १०-१-१९४६ और ११-१-१९४६

५१६. भाषण : प्रार्थना-सभामें[1]

शालकुची
९ जनवरी, १९४६

गांधीजी ने कहा कि भजनके दौरान मैंने अनुभव किया कि कुछ लोग गायनकी तालका ध्यान नहीं रख पाये, लेकिन यह चीज क्षम्य है। मैं चाहूँगा कि इस तरहकी सामूहिक प्रार्थनाकी रीति पूरे हिन्दुस्तानमें अपनाई जाये। मुझे बताया गया है कि असममें स्त्रियाँ काम करते समय मधुर गीत गाती रहती हैं — जैसे कि कातते या बुनते समय। मैंने देखा कि आजके भजनमें स्त्रियोंने भाग नहीं लिया। हो सकता है, समवेत गायनमें उन्हें शर्म महसूस होती हो, लेकिन जब तक स्त्रियाँ शर्माना नहीं छोड़ेंगी, स्वराज्य नहीं मिलने वाला है।

प्रार्थना-सभामें आपने जैसी शान्ति कायम रखी उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। कुछ ही महीनोंमें शायद हमें स्वराज्य मिल जाये और हम कुछ ही महीनोंमें शान्तिपूर्ण तरीकेसे स्वराज्य प्राप्त करना चाहते हैं। लेकिन अगर लोग वक्त-बेवक्त चीखते-चिल्लाते रहेंगे तो क्या हमें स्वराज्य मिल सकता है? उससे तो यही प्रकट होगा कि हममें आवश्यक अनुशासनका अभाव है।

महात्मा गांधीने अपनी यात्राके अनुभव तथा कुछ स्थानोंमें लोगोंके अनुशासनहीन आचरणका उल्लेख करते हुए कहा कि इससे प्रकट होता है कि अब तक लोगोंने अहिंसाके सिद्धान्तको पूरी तरह नहीं सीखा है। उन्होंने आगे कहा कि अनुशासनहीनता तो हिंसाका ही एक रूप है। यदि चालीस करोड़ लोगोंने या उनमें से ज्यादातर लोगोंने भी सत्य तथा अहिंसाके उस सन्देशको हृदयंगम कर लिया होता जिसका प्रचार कांग्रेस पिछले २५ वर्षसे करती आ रही है तो भारत स्वतन्त्र हो चुका होता। लेकिन इस पर हमें निराश या हताश नहीं होना चाहिए। चालीस करोड़ लोगोंमें पूर्ण अनुशासन तथा अहिंसाको प्रतिष्ठित करना कोई मजाक नहीं है। इसके लिए समय चाहिए। पचीस वर्षका समय इतने बड़े कामके लिए अपर्याप्त है। मैं जो १२५ वर्ष जीना चाहता हूँ वह इसीलिए कि अपने विचारोंको फलीभूत होते देख सकूँ। लेकिन मेरे १२५ वर्ष जीने की जो शर्तें हैं वे अगर पूरी नहीं हो जातीं

१. प्रार्थना-स्थल, ब्रह्मपुत्रके उत्तरी किनारेपर था। प्रथम दो अनुच्छेद अमृतबाजार पत्रिका से लिये गये हैं।

तो मैं उतने दिन जीने की आशा नहीं कर सकता। यदि ये शर्तें पूरी हो जायें तो मैं ही क्यों, इस भारतका कोई भी आदमी उस आयु तक जी सकता है, बावजूद इसके कि इस देशमें औसत आयु संसारमें सबसे कम है। लेकिन यह जाहिर है कि जैसा अनुभव मुझे पिछली रात हुआ यदि मैं वैसे अनुभवोंसे गुजरता रहा तो मेरा जीवन-दीप महीने-भरमें ही बुझ जायेगा।

गांधीजी ने आगे कहा, अंग्रेज जान गये हैं — या एक-न-एक दिन जरूर जान जायेंगे — कि वे एक जाग्रत राष्ट्रको संगीनोंके जोरपर सदाके लिये दबाकर नहीं रख सकते। इसलिए वे लोगोंको सत्ता सौंप देने का फैसला कर सकते हैं। तब अगर लोगोंमें अनुशासन और संगठन-शक्ति नहीं होगी तो वे अपनेको भारी उलझनकी स्थितिमें पायेंगे। मुझे आशा है कि लोग मौका आने पर बेखबर नहीं पाये जायेंगे।

गांधीजी ने कहा कि शान्तिकी सृष्टि करने वाला ईश्वरके नामसे बड़ा मन्त्रमुग्ध करने वाला कोई नहीं है। इसीलिए मैंने सार्वजनिक प्रार्थनाओंके आयोजनमें लोगोंको तालके साथ ताली देकर रामधुनमें शामिल होने को आमन्त्रित करने का चलन आरम्भ किया। इससे आम लोगोंमें अहिंसा और अनुशासनकी भावनाका समावेश होगा। मुझे यह देखकर बड़ी खुशी होगी जब पूरे भारतमें इस तरह की सामूहिक प्रार्थनाएँ होने लगेंगी।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दू, ११-१-१९४६, और अमृतबाजार पत्रिका, ११-१-१९४६

५१७. वक्तव्य : समाचारपत्रोंको

गौहाटी
१० जनवरी, १९४६

मैंने समाचारपत्र[1] में इस आशयका सरासर निराधार समाचार देखा है कि मद्रास पहुँचने से पहले मैं दो दिन उड़ीसामें रुकूँगा। अगर मुझसे जरा भी बन पड़ता तो कुछ दिन उड़ीसा और कुछ दिन आन्ध्रमें रुकने से मुझे खुशी होती। लेकिन मैं अपने शरीरकी मर्यादाओंको जानता हूँ। रोज-ब-रोज इससे जितना काम करते बन पड़ रहा है वही इसकी क्षमताकी चरम सीमा है। इसलिए मैं अपनी यात्रामें न उड़ीसामें और न आन्ध्रमें ही रुक सकता हूँ, और इन दो प्रान्तोंके अपने मित्रों और सहयोगियोंसे निवेदन करता हूँ कि वे मुझे अपना पूर्णतम सहयोग दें और अपने यहाँके लोगोंको बता दें कि जो चीज मुझे असम्भव

१. ८-१-१९४६ की अमृतबाजार पत्रिका

प्रतीत होती है उसकी आशा वे मुझसे न रखें। पता नहीं, इस खबरके लिए कौन जिम्मेदार है।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, ११-१-१९४६

५१८. तार : जामिनी बोसको

एक्सप्रेस

गौहाटी
१० जनवरी, १९४६

जामिनी बोस[1]
कांग्रेस कार्यालय
चटगाँव

आपका तार मिला। आवश्यक कार्रवाई कर रहा हूँ। इस अत्याचार[2] का प्रत्यक्ष कारण देते हुए पूरा विवरण तार या डाकसे भेजिए।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. चटगाँव कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष

२. गंजाम पायनियर कोरके चार जवानोंने चटगाँवके निकट एक स्त्रीका शीलभंग करने का प्रयत्न किया था। गाँववालोंने जब उनके इरादेको नाकाम कर दिया तो कोरके जवान बड़ी संख्यामें आये और उन्होंने घरोंको आग लगा दी, आदमियोंको पीटा और औरतोंके साथ अभद्र व्यवहार किया तथा लूट-पाट की।

५१९. पत्र : आर० जी० केसीको

कैम्प : सरानिया आश्रम
गौहाटी
१० जनवरी, १९४६

प्रिय मित्र,

साथमें आज प्राप्त एक तार[1] की नकल भेज रहा हूँ। किस्सा ऐसा मालूम होता है जिसपर सहज ही विश्वास नहीं होता। मैं जानता हूँ कि आप जाँच-पड़ताल करेंगे और इसमें यदि सत्यका कोई आधार होगा तो आप आवश्यक कदम उठायेंगे।[2]

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

महामहिम बंगालके गवर्नर
कलकत्ता

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ११४

५२०. पत्र : मीराबहनको

सरानिया आश्रम
१० जनवरी, १९४६

चि० मीरा,

यह पत्र तुम्हें सिर्फ यह बताने को लिख रहा हूँ कि हिमालयके दृश्योंके तुम्हारे चित्रोंको मैं कल ही ठीकसे देख पाया। जितना मैं कर पाया उससे अधिक गहरे अध्ययनकी वे अपेक्षा रखते हैं। लेकिन अपनी कृतिमें तुमने जिस

१. देखिए पिछला शीर्षक; साथ ही "तार: बंगालके गवर्नरके निजी सचिवको", १२-१-१९४६ भी।

२. आर० जी० केसीने गांधीजी को सूचित किया कि अपराधियोंपर फौजदारी अदालतमें मुकदमा चलाया जायेगा।

प्रेमका समावेश किया है उसे समझने और सराहने में मुझे कोई कठिनाई नही हुई। चित्रोंके पीछे तुमने जो निर्देश दिये हैं उनमें बड़ी सावधानी की है।

आशा है, तुम्हारे लम्बे पत्रके उत्तरमें लिखा मेरा पिछला पत्र[1] तुम्हें मिल गया होगा। मैं कितना चाहता हूँ कि मनुष्यों और अन्य प्राणियोंके कारण तुम्हें इतनी भी परेशानी न हो! यहाँ मुझे जो अद्भुत अनुभव प्राप्त हो रहा है उसके बारेमें तो दूसरे लोग ही लिखेंगे।

स्नेह।

बापू

मूल अंग्रेजी (सी० डब्ल्यू० ६५१४) से; सौजन्य: मीराबहन। जी० एन० ९९०९ से भी

५२१. पत्र : तैयबुल्लाको

सरानिया आश्रम
१० जनवरी, १९४६

भाई तैयबुल्ला,

कल रात मेरे यहाँ पहुँचने पर जब लगभग १० बजे तुम्हारा पत्र मुझे दिया गया उससे पहले ही मेरे किसी मित्रने, जो तुम्हारा भी मित्र है, मुझे तुम्हारी क्षतिके बारेमें बता दिया था। जो अवश्यम्भावी है उसपर दुःख कैसा? और मृत्यु तो सभी जीवोंकी नियति है। जरा सोचो कि मृत्युके बिना जीवन कैसी यातना बन जाता! इसलिए क्षति तो एक रस्मी शब्द ही है। फिर, सच्ची मित्रता की अन्तिम कसौटी प्रियजनकी मृत्युसे ही होती है। और पाक 'कुरान' से जो आयत तुमने उद्धृत की है वह मेरी बातकी पुष्टि कर देती है। ईश्वरने जो दिया है वह भले ले ले। हम तो उसके महान नामकी प्रशस्ति करें। मेरी प्रार्थना तुम्हारे साथ है।

मेरे पास न आकर तुमने अच्छा किया है।

स्नेह।

बापू

मु० तैयबुल्ला
नवगाँव

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० ३७६५) से। प्यारेलाल पेपर्ससे भी; सौजन्य: प्यारेलाल

१. देखिए पृ० ३३३।

५२२. पत्र : चम्पा मेहताको

सरानिया आश्रम
१० जनवरी, १९४६

चि० चम्पा,

तेरा पत्र कल रात यहाँ मिला। लगता है, तूने अच्छी सफलता प्राप्त की है। कान्ता परोपकारी तो है ही। उसे बच्चोंकी देखभाल करना आता है। इसलिए तूने जो लिखा है उससे मुझे आश्चर्य नहीं बल्कि आनन्द होता है। सरला कैसी है? कान्ताकी अपनी तबीयत कैसी है? उससे मुझे पत्र लिखने को कहना।

तूने शान्तिके बारेमें कुछ नहीं लिखा है। उम्मीद है, सभी बच्चे अच्छे होंगे।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८७५९) से। सी० डब्ल्यू० १०४६ से भी. सौजन्य : चम्पा र० मेहता

५२३. पत्र : अमतुस्सलामको

गौहाटी
१० जनवरी, १९४६

चि० अमतुस्सलाम,

तू बिना बहस किये मेरा कहा कर रही है, इसलिए अच्छी हो ही जायेगी। तुम दोनो बहनें[1] मद्रास चलने लायक हो जाओ, तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा। लेकिन ईश्वर चाहेगा सो करेगा। आज अब शायद किसी औरको नहीं लिखूँगा। सबको आशीर्वाद।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ५०३) से

१. अमतुस्सलाम और कंचन मु० शाह

५२४. पत्र : पुष्पा देसाईको

सरानिया आश्रम
१० जनवरी, १९४६

चि० पुष्पा,

तेरा पत्र मिला। विनोबाजी से मिलती रहना।

पिताजी को विनयपूर्वक लिखते रहना अपना धर्म समझना। सत्यके मार्ग पर चलने के लिए जो सेवा-कार्य सौंपा जाये उसे नम्र भावसे और प्रेमपूर्वक करना चाहिए। यदि तू इतनी बात समझ लेगी तो तेरा सारा कार्य सुगम हो जायेगा। ईश्वर तुझे सत्यके मार्गपर ले जाये, यह कहना तो पुनरावृत्ति होगा। क्योंकि सत्य ही ईश्वर है। अतएव सत्यकी आराधना ही सत्यके मार्गकी खोज है। इस दृष्टिसे तू भक्ति मार्गके सभी निहित अर्थोंपर विचार कर।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९२६९) से

५२५. पत्र : कृष्णचन्द्रको

सरानिया आश्रम
१० जनवरी, १९४६

चि० कृष्णचंद्र,

तुम्हारे दो खत मेरे सामने हैं। साथमें खत रखे हैं। पारनेरकरका भांजा मर गया, खेदकी बात है। अनंतरामजी का समझा। वे भाजी पैदा करेंगे तो अच्छा होगा। जमीन आर्यनायकमजी को कहां और कितनी चाहिये देख लो। मेरा तो अभिप्राय है कि जो उनको चाहिए सो उनको देना चाहिए। दूसरा उत्तर रहता होगा लेकिन आज तो इतना ही।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५२६. भाषण : प्रार्थना-सभामें

गौहाटी
१० जनवरी, १९४६

उपस्थित लोगोंने भजनमें जिस सुन्दर रीतिसे साथ दिया था उसके लिए उन्हें बधाई देते हुए गांधीजी ने कहा कि मुझे खास तौरसे इस बातकी खुशी है कि बहनें बिना किसी संकोचके पूरे मनसे उसमें शरीक हुईं। रामनाम लेने में झिझक, भय तथा लज्जाके लिए कोई स्थान नहीं है। जिस मनुष्यको घट-घट-व्यापी ईश्वरका बोध है उसे किसी बातका डर नहीं होता।

"वन्देमातरम्"के स्थानपर "जयहिन्द" का नारा नहीं लगाना चाहिए?[1] सुभाष बोसके मुखसे निकले ये शब्द बहुत कर्णप्रिय हैं। लेकिन उसके कारण "वन्देमातरम्" को भुला नहीं देना चाहिए। उसका उच्चारण तो कांग्रेसकी स्थापना-कालसे ही किया जा रहा है। पहले आपको "वन्देमातरम्" और फिर "जयहिन्द" कहना चाहिए। मैं आपके इस अभिवादनका प्रत्युत्तर पूरे मनसे दूंगा, लेकिन इसे "वन्देमातरम्" के बिना नहीं होना चाहिए। अगर आप बलिदानकी ऐसी परम्परासे जुड़कर "वन्देमातरम्" का त्याग कर सकते हैं तो मुझे आशंका है कि आप "जयहिन्द" का भी त्याग कर देंगे।

गांधीजी ने अपना यह विश्वास दुहराया कि सुभाषबाबूकी मृत्यु नहीं हुई है, बल्कि वे कहीं छिपे हुए हैं।[2] उन्होंने कहा कि अगर मैं उनसे सम्पर्क कर सकूं तो मुझे यकीन है कि "वन्देमातरम्" के बारेमें वे भी मेरे विचारका अनुमोदन करेंगे।

[अंग्रेजीसे]

हिन्दू, १२-१-१९४६

१. साधन-सूत्रके अनुसार गांधीजी के प्रार्थना-स्थलपर पहुँचने पर कुछ लड़कियोंने "जयहिन्द" का नारा लगाकर उनका स्वागत किया था।

२. देखिए पृ० ३५३।

८२-२७

५२७. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

गौहाटी
११ जनवरी, १९४६

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा तार मिला। तुम नहीं आ रहे, यह बिलकुल उचित है। मैंने तुम्हें जो तार दिया था वैसा तार देना मेरा धर्म था। तुम्हारे पिताश्रीके देहान्तके समय मैंने तुम्हें स्पष्ट रूपसे तुम्हारा धर्म समझाया था। तुम उस धर्मपर दृढ़ रहे हो। तुम्हारा कल्याण हो। कंचनके बारेमें मुझे सुसमाचार मिलते रहते हैं। मैं यह पत्र प्रातःकाल लिखवा रहा हूँ। कल रात मुझे सुशीलाका तार मिला था। उसमें लिखा था कि कंचनकी तबीयत सुधरती जा रही है। उसका कहना है कि इसमें पेनिसिलीनका प्रताप है। मैं यह मानता हूँ कि सुशीलाने उसकी अच्छी तीमारदारी की है। वह वहाँ केवल कंचनकी खातिर ही रह गई थी। अब देखें क्या होता है। कदाचित् इस सख्त बीमारीसे कंचनके जीवनमें परिवर्तन हो जाये। वह बहुत भली है, लेकिन उतनी ही भोली भी है। वह उम्र बढ़ने के साथ-साथ समझदार हो रही है, ऐसा नही लगता। कही तुम तो इसका कारण नहीं हो? आसपासके लोग ऐसा तो समझते ही हैं, साथ ही यह भी मानते हैं कि इसमें मैं भी भागीदार हूँ। लेकिन मैं इस आरोपको स्वीकार नहीं करता। लेकिन यह तो अलग बात हुई। मैंने यह वाक्य इसलिए लिखा है कि कदाचित् तुम इस विषयपर विचार करना चाहो।

मणिभाई तो वहाँ आ ही गया होगा, क्योंकि उसे वहाँ लाने का मेरा इरादा तो था ही, लेकिन कंचनके मामलेको देखते हुए मैंने उसे वहाँ भेजना अपना धर्म समझा और उससे कहा कि यदि वह खाली हो तो तुरन्त वहाँ पहुँच जाये। मुझे उसका अनुभव तो थोड़ा-सा ही है लेकिन शान्तिलालने, जो सेवाग्राममें रह चुके हैं, और महादेवकी बहन निर्मलाके पति ईश्वरलाल देसाईने मुझे उसके बारेमें यही छाप डाली है कि वह असाधारण व्यक्ति है। नरहरिको तो मणिभाई का अनुभव भी रहा है। मणिभाई उसीके सान्निध्यमें तैयार हुआ है। इसलिए मणिभाईकी तुम्हें पूरी-पूरी मदद मिलनी चाहिए। वह कुशल तो है ही।

हिसाब-किताब अंग्रेजीमें रखने के मेरे आग्रहके पीछे केवल जहाँगीरजी[1] का विचार है। यदि जहाँगीरजी का इसपर आग्रह न हो तो भले ही मराठी अथवा

१. जहाँगीर पटेल

हिन्दीमें हिसाब-किताब रखा जाये। इतना जरूर हो सकता है कि महीनेकी तारीखें अंग्रेजीमें लिखी जायें, जिससे जहांगीरजी देख सकें।

यह पत्र तुम दिनशाजी को दिखा सकते हो। मेरा कोई भी पत्र तुम उन्हें दिखा सकते हो।

साथका पत्र मणिभाईको देना। डॉक्टरके लिए जो पत्र लिख रहा हूँ वह डॉक्टरको दे देना।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६१८) से। सी० डब्ल्यू० ७२०४ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

५२८. पत्र : सीताचरण दीक्षितको

गौहाटी
११ जनवरी, १९४६

भाई दीक्षितजी,

तुम्हारा स्वच्छ खत मिला। अच्छा किया कि तुमने स्पष्टतासे लिखा है। यह मैं एक महिलाश्रमसे ही लिखवा रहा हूं। आश्रम गौहाटीमें है। यहां कस्तुरबा निधिका शिबिर है। एक तरफसे देहात है, दूसरी तरफसे गौहाटी शहर है। बिलकुल शांति है।

नकशा बनाने में जो अनाजका उपयोग हुआ था उस सबकी खिचडी बनेगी जानकर संतोष हुआ। गरबा मुझे प्रिय है वह सर्वथा सच है, और वह मैंने वहां बताया था। सारा दृश्य मुझे एक तरफसे प्रिय लगा, दूसरी तरफसे अप्रिय लगा, दुःखद लगा।[1] उसका कारण मैं शब्दोंमें व्यक्त न कर सका क्योंकि मेरा दिल भर गया था। दिल तो बंगाल पहुच गया था। तुमने जितना किया उसमें कुछ भी गलती थी ऐसा मैं कह ही नही सकता हूं। ऐसा था ही नहीं। सारा दृश्य प्रेमका था, और मेरी इजाजतसे किया था। फिर भी श्रीमन्नारायणसे मैंने कुछ बातें की थी। उसमें भाव तीसरा ही था। यह मैं बता सका था कि नहीं उसका स्मरण नहीं। लेकीन नहीं बता सका तो अब बताता हूं। महिलाश्रम एक गरीबोंकी संस्था है, उत्तम भावसे पेदा हुई है, उसमें जमनालालजी के भाव हैं, विनोबाजी की तपश्चर्या है, गरीब बहिनोंकी सेवा करने का बडा साधन माना जाता है। और उसकी देखभाल शांताबहिनके हाथमें है। कहां ऐसी सस्थाका वहिवट [प्रबन्ध] और कहां बंगाल और हिंदुस्तानकी करोडों गरीब बहिनोंकी करीब २ नंगावस्था। उसके

१. देखिए पृ० १४७-४८।

बीचमें मेरा साक्षीपन। वह मुझको उस समय चूभा। इस दृश्यको लिखाते समय भी दिल रुदन करता है। श्रीमन्नेे वह भाव, अगर मै न समजा सका तो देख तो लिया और व्यक्त किया। यह मैं प्रातःकालमें लिखवा रहा हूं। अधिक कहने की आवश्यकता है या अधिक जानना है तो मेरे आने पर पूछो। यह पत्र सबको पढ़ा सकते हो।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकल (सी० डब्ल्यू० १०४२१) से। सौजन्य: सीताचरण दीक्षित

५२९. पत्र : मणिभाईको

सरानिया आश्रम, असम
११ जनवरी, १९४६

चि० मणिभाई,

नरहरिभाईने मेरे तारका उत्तर दे दिया और जैसा कि मैं सोचता था वैसा ही हुआ। भाई मुन्नालालकी पूरी तरह सहायता करना। अपनी तबीयतको ठीक रखते हुए तुमसे जितना हो सके उतना करना। मैं तुम्हारे प्रत्येक कार्यमें दृढ़ता, माधुर्य, स्वच्छता और निपुणताकी आशा सँजोये हुए हूँ। तुम्हारे बारेमें ऐसी छाप चि० शान्तिलालने मुझपर डाली है और जहाँ तक मैं तुम्हें परख सका हूँ, तुमने मुझे सचमुच इसका अनुभव कराया है। मेरी ऐसी इच्छा थी कि मैं तुम्हें अपने साथ ही पूना ले जाऊँगा, किन्तु संयोगोंने कुछ और ही करने को विवश किया; और मुझे लगता है कि जो हुआ सो ठीक ही हुआ। मुझे पत्र लिखना। मेरे कार्यक्रमकी तारीखें तुम्हें मुन्नालाल देगा।

आशा है, तुम्हारे सेवाग्राम छोड़ देने से नरहरिको कोई असुविधा नहीं होगी।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३०. पत्र : दिनशा मेहताको

सरानिया आश्रम
११ जनवरी, १९४६

चि० दिनशा,

चि० मुन्नालालकी पत्नी कंचनबहन बहुत बीमार है, इसलिए मैंने तार दिया था कि यदि वह आना चाहे तो उसे मुक्ति दे दी जाये। मैंने यह मानकर कि किसीको वहाँ भेजा ही जाना चाहिए सेवाग्राम तार दिया और जिन्हें मैं बहुत योग्य मानता हूँ ऐसे म[णिभाई] को भेजने के लिए भी कहा। वे तत्परतापूर्वक पूनाके लिए रवाना हो गये हैं। यह मुझे बहुत अच्छा लगा। मुझे यह बताया गया है कि मणिभाई बहुत अच्छे कार्यकर्ता हैं। मैं इस बातको मानता हूँ। मुझे उनके बारेमें कोई व्यक्तिगत अनुभव नहीं है। तुम्हें अनुभव होगा।

आशा है, मैंने तुम्हारे नाम जो १०,००० रुपये भेजे थे वे तुम्हें मिल गये होंगे, इसलिए नये खातेमें पैसोंकी कमी महसूस नहीं होगी।

पहलेसे ही जो पुराने रोगी वहाँ हैं वे नये ढंगसे गरीबोंके साथ मिल-जुलकर रहें। सबको घड़ीकी सुईके साथ चलना चाहिए। इसके अतिरिक्त उन्हें तभी रखना जब वे पैसे दें अन्यथा उन्हें जाने देना। वास्तवमें, यही सच्ची मित्रता मानी जायेगी। रोगियोंकी इच्छानुसार अब हम उन्हें अलग कमरा तो दे ही नहीं सकते। असलमें ऐसे रोगियोंको भी फिलहाल हम नहीं रख सकते जिन्हें अलग कमरेकी जरूरत है। रोगियोंको जितने एकान्तकी जरूरत हो उसकी व्यवस्था करने के लिए तो मैं तुम्हें लिख चुका हूँ। आशा है, तुम्हें यह याद होगा। यदि मैंने तुम्हें न लिखा हो तो यह मानना कि यह नई हिदायत है।

मुन्नालालका कहना है कि अंग्रेजी पद्धतिके अनुसार वहीखाते रखना महँगा पड़ता है। मैं भी यही मानता हूँ। इसलिए यदि हम देसी पद्धतिके ही अनुसार हिसाब-किताब रखें तो क्या हर्ज है? देसी पद्धतिके अनुसार भी बहुत सही हिसाब रखा जा सकता है। भारतीय व्यवसाय संघ देसी ढंगसे ही वहीखाते रखकर लाखोंका व्यापार करते हैं और इंग्लिश बैंक इनके साथ लेन-देन करते हैं। और चूँकि हमारा खाता ऐसा होगा और होना चाहिए जो हिन्दुस्तानीको शोभा दे इसलिए इसमें स्वदेशीकी भावना जितनी अपनाई जा सके उतनी अभी से अपनानी चाहिए। यह पत्र जहाँगीरजी को दिखा देना। उन्हींके कारण हमने अंग्रेजी पद्धतिसे वहीखाते रखना स्वीकार किया था। किन्तु मेरी मान्यता है कि

अंग्रेजी पद्धतिसे हिसाब-किताब रखने से ही यदि ४०-५० रुपये मासिकका खर्च बढ़ जाता हो तो जहाँगीरजी उक्त खर्चको बचा लेने के पक्षमें होंगे। मैं जो पैसा दूंगा उसे तो हमें गरीबोंका ही मानना होगा। पैसे मुझे भले धनी लोग दें किन्तु मेरे हाथमें आने के बाद वह गरीबोंका हो जाता है और उसका उपयोग गरीबोंके लिए ही किया जाता है। मेरा सारा व्यवहार इसी तरह चलता है और इस बातसे मुझे कष्ट होता है कि अपनी वृद्धावस्थाके कारण अब मैं उस हद तक नहीं कर पाता, परन्तु मैंने इस स्थितिसे समझौता भी कर लिया है क्योंकि अब मैं किसी और तरहसे कर ही नहीं सकता। किन्तु मुझे अपने दोष तो दूसरों पर कदापि नहीं लादने चाहिए।

आशा है, तुम्हें मेरा पिछला पत्र मिल गया होगा, और तुमने उसका उत्तर लिख दिया होगा।

फिलहाल जिस खर्चके बिना काम चलाया जा सके उस खर्चको बचा लेना। मैं वहाँ २० या २१ फरवरीको पहुँचने का पूरा प्रयत्न करूँगा। सफलता देना ईश्वरके हाथमें है।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३१. पत्र : सुशीला गांधीको

सरानिया आश्रम, गौहाटी
[११ जनवरी, १९४६][1]

चि० सुशीला (गांधी),

अरुण[2] के पत्रके नीचे तूने जो लिखा है उसे मैं पढ़ गया। उसे लिखा पत्र मेरे विचारोंको अभिव्यक्त करता है। तू घबराना मत। कालिदासकी एक प्रसिद्ध पंक्ति है और मैं समझता हूँ कि वही 'भागवत' में भी है। जिसमें कहा गया है कि प्रेम फूलकी तरह कोमल और लोहेकी तरह कठोर होता है।[3] जिसे अवसरके अनुसार कोमल और कठोर होना आता है वही प्रेम है, बाकी तो सब मोह है। समझदार लोगोंको भी यह बात ध्यानमें रखनी चाहिए कि ऐसे उत्कृष्ट कथनोंके अर्थका भी अनर्थ किया जाता है।

ऐसे कई अवसरोंपर मुझे तुम सबकी याद आती है। और कई अवसरोंपर यह महसूस होता है कि अच्छा हुआ कि तुम यहाँ नहीं आये। तू वहाँ जो अनुभव

१. यह पत्र इसी तारीखके पत्रोंमें मिला है।
२. सुशीला गांधीका पुत्र
३. वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि, उत्तररामचरित, २/७

प्राप्त कर रही है और अरुण एव इला जो देख रहे हैं वह भी उपयोगी ही है। और कदाचित् तुलनात्मक दृष्टिसे यह सब अच्छा माना जायेगा। इला तो यहाँ से कुछ ग्रहण ही नही कर सकती, अतः उसके लिए तो मैं यहाँका वातावरण सर्वथा खराब मानता हूँ। तुझे शान्तिकी जरूरत थी। मेरे साथ रहने में तुझे शान्तिका अनुभव हो ही नही सकता, और सो भी तब जबकि मैं दौरा कर रहा हूँ। यह ठीक है कि अरुणका मामला अलग ढगका माना जा सकता है, इसके अलावा कुल मिलाकर तेरी आँखोंके सामने उसका अधिकसे-अधिक सुरक्षित होना सम्भव है। वह अच्छा लड़का तो है ही। मैं यह मानता हूँ कि यदि यह अच्छाई इसी तरह बढ़ती रहे तो समझ लो उसने सब-कुछ पा लिया। बाकी सब तो इसके साथ-साथ चलता ही रहता है। और जहाँ भलाई नहीं है वहाँ इन्द्र का सिंहासन भी निरर्थक समझना चाहिए।

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३२. पत्र : कैलाश मास्टरको[1]

गौहाटी
११ जनवरी, १९४६

चि० कैलाश,

तेरा पत्र मिला। यदि तू वहाँ सबसे अच्छे प्रमाण-पत्र प्राप्त कर ले तो यह माना जायेगा कि तू बहुत अक्लमन्द हो गई है। और फिर मेरे कहने के लिए कुछ नही रह जायेगा। इससे मुझे बहुत प्रसन्नता होगी एवं प्रभुदासने तुझसे जो आशा की है और मुझे बँधाई है वह पूरी होगी। इसके अतिरिक्त मेरा आशीर्वाद तो तुझे प्राप्त है ही कि तू इतनी अच्छी बन सके। सीखने वालेके लिए वहाँ सीखने की काफी गुंजाइश है।

तेरे भाईका पत्र मिला था जिसका उत्तर मैं साथ भेज रहा हूँ। यह पत्र पढ़कर उसे दे देना। जब तक तू स्वयं भली-भाँति स्थिर न हो जाये तब तक उसे आने के लिए प्रोत्साहित नही करना और जब तक वह अत्यन्त परिश्रमी, दृढ़ और सर्वथा आज्ञाकारी न बन जाये तब तक उसे आने मत देना। उसके कमाने का प्रश्न तो उठना नहीं चाहिए। ध्यान रखना कही उत्साहमें आकर प्रोत्साहन देने से तुझे पछताना और अन्य लोगोंको परेशान न होना पड़े। इसका तुझे बराबर ध्यान रखना चाहिए। तुझे अपने अक्षर अभी और बड़े बनाने चाहिए और अच्छे तो बनाने ही है। तूने उर्दू तो सीख ली है न?

बापूके आशीर्वाद

कैलाशबहन

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह पत्र देवनागरी लिपिमें है।

५३३. पत्र : जितू मास्टरको[1]

गौहाटी
११ जनवरी, १९४६

चि० जितू[2],

तेरा पत्र मिला। तुझे अपने अक्षर सुधारने चाहिए। मुझे खुशी है कि तेरा आश्रममें रहने को मन करता है। किन्तु यह मार्ग विकट है। अपने घर रहते हुए भी तू आश्रमका जीवन बिता सकता है और आश्रममें जो उद्योग चलते हैं उन्हे तू कर सकता है। यदि ऐसा करने की सामर्थ्य तुझमें न हो तो आश्रम तुझे ऐसी सामर्थ्य नहीं दे सकता। इतने-भरके लिए आश्रममें रहने की इच्छा करना तो मोह ही है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३४. पत्र : अरुण गांधीको[3]

गौहाटी
११ जनवरी, १९४६

चि० अरुण,

तेरा पत्र मिला। पहलेकी अपेक्षा तो यह अच्छा लगता है, यद्यपि इसमें सुधारकी गुंजाइश तो है ही, और जो तुझे करना चाहिए। मैं तुझे यह सलाह दूंगा और चाहूँगा कि तू चाहे कहीं भी क्यों न हो अपने व्रतका पूरी तरहसे पालन करे।

इस बातको मैं अच्छी तरहसे समझ सकता हूँ कि यात्रामें कठिनाइयाँ होती हैं। यह भी समझमें आने वाली बात है कि कभी-कभी इच्छा होने के बावजूद कताई की ही नहीं जा सकती। तू आलस न करे और किसी अनिवार्य

१. यह पत्र देवनागरी लिपिमें है।
२. कैलाश मास्टरका भाई; देखिए पिछला शीर्षक।
३. यह पत्र देवनागरी लिपिमें है।

कारणवश कात न सके तो इसमें मुझे कोई हर्ज नजर नहीं आता। एक व्रतका पूरी निष्ठासे पालन करने से बाकी सब सरल हो जाता है। यह निरपवाद अनुभव है।

इला उद्धत क्यों होती जा रही है? उसके बड़े भाईके तौरपर इसके लिए मैं तुझे दोष दूंगा। वह तो बहुत अच्छी लड़की है। इसलिए उसे तो तू बहुत आगे बढ़ा सकता है।

बापूके आशीर्वाद

अरुण गांधी
दिल्ली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३५. पत्र : प्रभुदयाल विद्यार्थीको

गौहाटी
११ जनवरी, १९४६

चि० प्रभुदयाल,

तुम्हारा खत मिला। अच्छा लगा। सुशीलाबहनके लिए जो पत्र था वह मैंने पढ़ लिया था। और मेरा ख्याल है उन्होंने उत्तर भी दे दिया था।

जब तक तुमको रिहाई न दें तब तक वहीं रहना ही योग्य है।

तुम्हारा खर्च, वापस जाने का भी, मैं ही दूंगा। वह पैसे देवदाससे ले लेना, और वह भी मेरे खाते पर। दे० वहां होते हुए आश्रमसे भेजने की कोई आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। यों तो सरकारने लिखा ही है कि तुम्हारा आने-जाने का खर्च वो ही देने वाले हैं। इतना तो सिर्फ तुम्हारी जानकारीके लिये लिखता हूं। आजकल दिल्लीकी आबोहवा उत्तम मानी जाती है। [अच्छी] आबोहवा और निर्मल खुराक सामान्य तरह स्वास्थ्यके लिये पर्याप्त होती है।

जामियाकी बात मैं समझा। वहां अगर रहने दें तो अच्छा ही होगा। जगह के कारण न रहने दें वह एक बात है। अगर पैसेका अभाव कारण है तो कहना कि तुम्हारा खर्च आश्रमसे निकलेगा।

भाई श्रीरामको मैं लिखता हूं।[1] तुमने मुझको खबर दी सो अच्छा किया है।

मैं यहासे १४ तारीखको सोदपुर पहुंचूंगा। वहांसे शायद १९ को निकलकर

१. देखिए अगला शीर्षक।

मद्रास पहुंचूंगा। इसका मतलब यह हुआ कि जो खत १९ तक पहुंच जाता है वह सोदपुरके पतेपर लिख देना।

द्वारा देवदास गांधी
हिन्दुस्तान टाइम्स
नई दिल्ली

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

५३६. पत्र: श्रीराम शर्माको

[११ जनवरी, १९४६][1]

भाई श्रीरामजी शर्मा,

प्रभुदयाल मुझे लिखता है कि तुम्हारा एक लड़का तुम जेलमें थे तब गया और दूसरा जेलके बाद। तुमको क्या लिखूं? क्या आश्वासन दूं? और मृत्युके बारेमें आश्वासन ही क्यों? मृत्युका भय क्या? मृत्यु दुःखद वस्तु है क्या? और जन्म सुखद? रामायणादि महाग्रंथ भी ऐसा क्यों सिखाते हैं? क्योंकि विचार करने से हम देख सकते हैं कि जन्म-मृत्यु एक ही चीजके दो पक्ष है। उसमें अच्छा-बुरा क्या हो सकता है? बगैर मृत्युका संसार ही भयंकर नकशा लगता है। शायद तब संसार ही मिट जाता। यह सब ज्ञानवार्ता नहीं है लेकिन मेरे उद्गार जो मनमें आते हैं उसका ही कथन है।

प्रभुदयाल लिखता है कि जेलमें जो तुमने मनन किया उससे सत्य और अहिंसा के युगल प्रति तुम्हारी श्रद्धा बहुत बढ़ गई है। और लिखता है कि तुम और सारा परिवार सुन्दर सूत कातते हैं। यह सब सुनकर मुझे आनन्द होता है।

आसामकी मुसाफरी कल खतम होगी। कलकत्तासे १९ तारीखको निकलकर मद्रास जाने का इरादा है और सेवाग्राम पहुंचने की तिथि ८ फरवरी है।

मद्रासका ठिकाना दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, त्यागरायनगर होगा। कलकत्ताके लिये तो ठिकाना खादी प्रतिष्ठान, सोदपुर है। कहीं भी पत्रोत्तरकी आशा रखूंगा।

बापुके आशीर्वाद

श्रीराम शर्मा
बल्का बस्ती
नागपुर

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

१. यह पत्र इसी तिथिके पत्रोंके बीच मिला है। इसके अलावा पिछले शीर्षकसे भी यही तिथि ठीक जान पड़ती है।

५३७. पत्र : अद्वैतकुमार गोस्वामीको

[११ जनवरी, १९४६][1]

भाई अद्वैतकुमार,

आपका पत्र मिला है। मैं पता निकालने की कोशिश कर रहा हूं। देखें क्या होता है।

राजासाहब[2] का मेरे पर खत आया है। मैंने पढ़ा नही है।

आपका,
मो० क० गांधी

श्री अद्वैतकुमार गोस्वामी
[मार्फत] म्युनिसिपल कमिश्नर
वृन्दावन

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५३८. पत्र : शान्ता नेरुलकरको

सरानिया आश्रम
[११ जनवरी, १९४६][3]

चि० शांता,

तुम्हारा खत मिला। दबा-दबाकर लिख रही है। ऐसा काई कारण नहीं है। मैं जवाब न दूं वह दूसरी बात है। तेरा खत तो चाहिये ही।

तुम्हारी बीमारी मुझे चुभती है। जिसको देहातकी सेवा करना है उसका शरीर तो वज्र-सा होना चाहिए।

बापुके आशीर्वाद

श्रीमती शांता नेरुलकर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें यह पत्र इसी तिथिके पत्रोंके बीच मिला है।
२. शायद् राजा महेन्द्र प्रताप; देखिए "पत्र : जी० ई० बी० एबेलको", १२-१-१९४६।
३. साधन-सूत्रमें यह पत्र इसी तिथिके पत्रोंके बीच मिला है।

५३९. भाषण : कस्तूरबा स्मारक समितिकी बैठकमें[1]

गौहाटी
११ जनवरी, १९४६

उपस्थित लोगोंको सम्बोधित करते हुए गांधीजी ने कस्तूरबा स्मारक ट्रस्ट के उद्देश्योंके बारेमें बताया और कहा कि इसकी स्थापना[2] उस समय हुई थी जबमैं जेलमें था। बादमें मैंने कोषका ट्रस्ट बनाने में हाथ बँटाया।[3] कस्तूरबा ट्रस्टकी समस्त योजनाका उद्देश्य स्त्रियोंको स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बनाना रहा है। इसका मतलब यह नहीं कि इससे पुरुषोंकी स्थिति हीन हो जायेगी; बल्कि यदि स्त्रियोंकी दशामें सुधार होगा और वे प्रगति करेंगी तो इससे पुरुष भी अपने-आप प्रगति करेंगे। यह एक अच्छी बात है कि संसारके कई अन्य देशोंकी तरह भारतमें स्त्रियों और पुरुषोंके बीच झगड़ा नहीं होता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि भारतीय स्त्रियोंकी स्थिति यूरोपीय देशोंकी स्त्रियोंकी स्थितिसे बेहतर है। यदि असमके साधनों का सदुपयोग किया जा सके तो इसका रूप बदला जा सकता है। निरर्थक बातों में बहुत-सा समय नष्ट किया जाता है। यदि आप लोग एक डायरी रखें और उसमें २४ घण्टेके अपने कामका हिसाब लिखा करें तो आपको इसके बारेमें पता चल जायेगा। जो समय बरबाद करते है उसका थोड़ा-सा भी हिस्सा यदि आप रचनात्मक कार्यमें लगायें तो आपकी स्थितिमें आश्चर्यजनक सुधार होगा। असममें मूगा उद्योग ऐसा है जिससे लोग अपनी दशामें काफी सुधार कर सकते हैं और इस तरह अपने देशकी बहुत ज्यादा सेवा कर सकते हैं।

गांधीजी ने कहा कि मै जानता हूँ कि बहुत सारी स्त्रियाँ केवल मुझे देखने के लिए यहाँ आई हैं। लेकिन में आपसे कह सकता हूँ कि यदि आप मेरे रचनात्मक कार्यक्रमको कार्यान्वित करने के लिए अपनी सारी शक्ति लगा दें तो उससे आपको अत्यधिक लाभ होगा।[4]

गांधीजी ने इस बातपर जोर दिया कि सौन्दर्य आभूषणों अथवा अच्छे-

१. यह बैठक सरानिया आश्रममें हुई थी। इसमें स्त्रियोंके उद्धारके प्रश्नपर गांधीजी से सलाह माँगी गई थी।

२. १८ मार्च, १९४४ को

३. १९४४ में; देखिए खण्ड ७७।

४. इसके बादका अंश १३-१-१९४६ के हिन्दू से लिया गया है।

अच्छे कपड़ोंमें नहीं, बल्कि वह तो कोई अच्छा काम करने और अपने आपको दूसरोंकी सेवामें समर्पित करने में समाहित है।

कुछ प्रश्नोंके उत्तर देते हुए गांधीजी ने कहा कि कांग्रेस और कस्तूरबा स्मारक ट्रस्टमें कोई सम्बन्ध नहीं है, लेकिन एक तरहसे दोनोंमें पूरा सम्बन्ध है। यदि कांग्रेसी लोग इसमें रुचि लेते हैं तो सम्बन्ध है और नहीं लेते तो सम्बन्ध नहीं है।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, १३-१-१९४६, और हिन्दू, १३-१-१९४६

५४०. भाषण : प्रार्थना-सभामें

गौहाटी
११ जनवरी, १९४६

गांधीजी ने कहा कि प्रार्थना मेरा जीवन है। मेरे विचारमें जो व्यक्ति प्रार्थना नहीं करता वह नीरस और हर प्रकारसे विपन्न व्यक्ति है। मैं नहीं जानता कि हमें परलोकमें मोक्ष मिलेगा अथवा नहीं। मैं तो इसी लोकमें मोक्ष का आकांक्षी हूँ और मुझे परलोकको कोई चिन्ता नहीं। लेकिन चूंकि मैं एक सामाजिक प्राणी हूँ, इसलिए मैं केवल अपने लिए ही मोक्ष नहीं चाहता। यही कारण है कि मैं आप सबको प्रार्थनामें शामिल करना चाहता हूँ।

गांधीजी ने कहा कि मेरे महिला आश्रम (गौहाटीसे कोई २० मील दूर एक जनजातीय इलाकेमें स्थित रचनात्मक केन्द्र) जाने की बातको लेकर जो गलतफहमी पैदा हुई उसका मुझे दुःख है। मैंने वहाँ जाने का कोई वादा नहीं किया था, लेकिन वहाँ कुछ लोग इकट्ठे हो गये और मेरे न जाने पर उन्हें दुःख हुआ। मै यहांके लोगोंकी मार्फत उनसे और सारे भारतके लोगोंसे यह कहना चाहता हूँ कि अपनी बड़ी उम्रको देखते हुए अब मुझमें जगह-जगहपर जाने की शक्ति नहीं रह गई है। इसलिए मैं एक स्थानपर रहकर काम करना चाहता हूँ।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, १२-१-१९४६

५४१. पत्र : होशियारीको

[११ जनवरी, १९४६ के पश्चात्][1]

चि० होशियारी,

तेरी चिट्ठी मिली है। मन कभी-कभी अशान्त कैसे हो सकता है? तू बराबर होशियार हो गई है तो अशान्तिका कारण हो ही नहीं सकता है। अपने सेवा-काममें रत रह जाना वही तो धर्म है ना? और आश्रममें तो प्रतिक्षण सेवा-कार्यमें रत रहने की बात है। पीछे पूछना क्या? तेरी शारीरिक प्रकृति भी अच्छी होनी चाहिये। उसके लिए कटिस्नान, घर्षणस्नान और पेटपर मिट्टी और घूमना इतनी चीज तो है ही। और मानसिक दृढ़ताके लिए, एकाग्रताके लिये रामनाम।

गजराज पाठशालामें बराबर जाता है? उसको लिखने के लिये कहो।,

बापूके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५४२. तार : बंगालके गवर्नरके निजी सचिवको

गौहाटी
१२ जनवरी, १९४६

निजी सचिव
गवर्नर महोदय
कलकत्ता

चटगाँव कांग्रेस कमेटीके अध्यक्षने यह आरोप लगाते हुए तार भेजा है कि पायनियर सैन्य-दलके कुछ लोगोंने महिलाओंके साथ अभद्र व्यवहार किया और जब उनका प्रतिरोध किया गया तब बदला लेने के लिए वे और साथियोंको साथ लेकर वापस आये और उन्होंने ग्रामवासियोंपर हमला किया, घर जला डाले और सम्पत्ति लूटी। विश्वास है कि पूरी जाँच की जायेगी और उचित न्याय किया जायेगा।[2]

गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ११४-१५

१. साधन-सूत्रमें यह पत्र ११ जनवरीके पत्रोंके बाद रखा मिला है।

२. देखिए पृ० ४१३।

५४३. तार : भोपालके नवाबको

एक्सप्रेस

गौहाटी
१२ जनवरी, १९४६

हिज हाइनेस भोपाल
बड़ौदा हाउस
नई दिल्ली

आपका कृपापूर्ण तार मिला। भोपाल आना तो असम्भव लगता है। दिल्ली के बारेमें निश्चित नहीं हूँ। पत्र लिख रहा हूँ।

गांधी

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५४४. पत्र : सर स्टैफर्ड क्रिप्सको

स्थायी पता : सेवाग्राम, बरास्ता वर्धा (भारत)
कैम्प : गौहाटी
१२ जनवरी, १९४६

प्रिय सर स्टैफर्ड,

आपका १९ दिसम्बर, १९४५ का पत्र[1] पाकर खुशी हुई। मैं बंगाल और असमके दौरेपर हूँ, इसलिए आपकी शुभकामनाएँ कल ही प्राप्त हुईं। राजकुमारी ने आपके साथ अपनी बातचीतका विवरण मुझे दिया और बताया कि आपके मन

१. पत्रमें कहा गया था : "मेरी हार्दिक आशा है कि इन आगामी महीनोंके दौरान पारस्परिक समझ, सम्मान और विश्वासके बलपर हम भारतके लिए अधिक सुखद और उज्ज्वल भविष्यका निर्माण कर पायेंगे। मैं जानता हूँ कि इसके लिए आप जीवन-भर प्रयत्न करते रहे हैं और मैं कामना करता हूँ कि प्रभु आपको वह दिन दिखायें जब आपकी इच्छाओंकी पूर्तिके रूपमें आपकी आशाएँ परवान चढ़ें। सदाकी भाँति आगे भी मैं हमारे दोनों देशोंके समक्ष उपस्थित समस्याओंके सुखद समाधानके लिए अपना योगदान करूँगा।"

में मेरे प्रति कितना स्नेह है। मुझे आशा है कि इस बार[1] आप लोगोंमें भारतीय विचारधाराके अनुरूप सही कारवाई करने का निश्चय है। सम्राट एडवर्डने उचित व्यवहारके बारेमें क्या कहा था, वह मुझे भली-भांति याद है। तब मैं दक्षिण आफ्रिकामें था। सवाल अंग्रेजों और बोअरोंके बीच हुई सन्धिकी व्याख्याका था और सम्राटने दयापूर्वक इस बातका आग्रह किया था कि अंग्रेजोंके बजाय बोअरोंकी व्याख्या स्वीकार की जाये। कितना अच्छा हो, अगर इस प्रशंसनीय आचार-नियमकी इस बार पुनरावृत्ति हो।

आपके साथ मैं भी यह आशा करता हूँ कि यह नववर्ष धरतीके लोगोंके लिए वह अत्यावश्यक शान्ति और सद्भावकी वर्षा लेकर आयेगा जिसके वे प्यासे हैं और जिसके लिए उस "शान्ति-दूत" [ईसा] ने अपना जीवन अर्पित कर दिया।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

सर आर० स्टैफर्ड क्रिप्स
बोर्ड ऑफ ट्रेड
मिलबैंक
लन्दन, एस० डब्ल्यू० १

[अंग्रेजीसे]
गांधीज़ोज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० १७५-७६

५४५. पत्र : जी० ई० बी० एबेलको

स्थायी पता : खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर
कैम्प : गौहाटी
१२ जनवरी, १९४६

प्रिय श्री एबल,

मैं गांधीजी की ओरसे लिख रही हूँ। दो-तीन दिन पहले उन्हें योकोहामा जेलसे राजा महेन्द्र प्रतापका १९ अक्तूबर, १९४५ का पत्र प्राप्त हुआ। पत्र अमेरिकी रेडक्रॉसके माध्यमसे आया। उन्हें राजा महेन्द्र प्रतापके एक मित्रका भी पत्र मिला है, जिसमें कहा गया है कि महेन्द्र प्रतापके भारतमें किसी जेल

१. तात्पर्य कैबिनेट मिशनसे है, जिसके तीन सदस्योंमें सर स्टैफर्ड क्रिप्स भी थे। भारतीय समस्याका समाधान ढूँढ़ने के उद्देश्यसे मिशन भारत आने वाला था।

में होने की अफवाह है। क्या यह सच है? अगर सच है तो क्या आप गांधीजी को उनके सम्बन्धमें कुछ जानकारी देने की कृपा कर सकते हैं।[1]

हृदयसे आपकी,
अमृतकौर

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० ७८

५४६. पत्र : मु० रा० जयकरको

कैम्प : गौहाटी
१२ जनवरी, १९४६

प्रिय डॉ० जयकर,

आपका कृपा-पत्र और सप्रू कमेटी[2] की रिपोर्टकी प्रति मुझे असमके दौरे में मिली। मैं सोच ही रहा था कि मुझे अब तक रिपोर्टकी प्रति क्यों नहीं मिली है, और मुझे समाचारपत्रोंमें उसके सम्बन्धमें प्रकाशित खबरोंसे ही सन्तोष करना पड़ रहा था। मैंने यह सोच लिया था कि मेरी प्रति सेवाग्राम भेज दी गई होगी और लौटकर ही उसे देख पाऊँगा। इसलिए अपने गौहाटी-प्रवासके दौरान आपका पत्र और रिपोर्टकी प्रति पाकर मुझे दुगुनी खुशी हुई।

पता नहीं, साथकी कतरन आपने देखी है या नहीं।

अगर समय मिला तो रिपोर्ट पढ़ने का मेरा इरादा है। बहरहाल आपके और डॉ० राधाकृष्णनके साथ हुई अपनी बातचीतसे मुझे इस रिपोर्टके बारेमें इतनी जानकारी तो मिल ही गई है कि मैं यह मान सकूँ कि संविधान-निर्माताओंके लिए यह बड़े महत्त्वकी चीज होगी।

आपके नाराज होने के डरसे यह पत्र तो मैं अंग्रेजीमें भेज रहा हूँ, लेकिन आपको यह बता दूँ कि इन दिनों ज्यादातर भारतीय मित्रोंको मैं सोच-समझकर हिन्दुस्तानी में लिखता रहा हूँ, या जब मुझे किसी दक्षिण भारतीय भाईको हिन्दुस्तानीमें लिखना उसपर ज्यादती करना लगता है तब मैं कोई दक्षिण भारतीय भाषा जानने वाले किसी व्यक्तिको विशेष रूपसे उस भाषामें पत्र लिखने के लिए बुलाता

१. जी० ई० बी० एबेलने गांधीजी को सूचित किया कि राजा महेन्द्र प्रताप टोकियोमें हैं और अब वे ब्रिटिश भारतीय नागरिक नहीं हैं।

२. नवम्बर, १९४४ में गैर-दलीय सम्मेलनकी स्थायी समिति द्वारा नियुक्त। तेजबहादुर सप्रू, मु० रा० जयकर, एन० गोपालस्वामी अय्यंगार और कुँवर जगदीश प्रसाद द्वारा संकलित इसकी रिपोर्ट २७ दिसम्बर, १९४५ को प्रकाशित हुई थी। इसमें दिये गये सुझावोंके सार-संक्षेप के लिए देखिए परिशिष्ट २।

हूं, इसलिए यदि मेरा राष्ट्रभाषामें लिखा पत्र किसी दिन आपके पास पहुँचा तो आशा है, आप बुरा नहीं मानेंगे।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

संलग्न पत्र : २८-१२-१९४५ के 'स्टेट्समैन' की "आउट ऑफ डेट" शीर्षककी कतरन।

डॉ० मु० रा० जयकर
विंटर रोड
मलाबार हिल, बम्बई

[अंग्रेजीसे]

गांधी-जयकर पेपर्स : फाइल सं० ८२६, पृ० ३७। सौजन्य : राष्ट्रीय अभिलेखागार

५४७. पत्र : जी० ए० नटेशनको

[स्थायी पता :] सोदपुर
१२ जनवरी, १९४६

भाई नटेसन,

आपके दो पत्र मिले।

शास्त्रीजी[1] की तबियतके बारेमें मुझे जगदीशन्ने लिखा था। मैं उनको तो मिलूंगा ही। मेरे 'असली घर' पर जाने का तो मैं अबसे निश्चय नहीं कर सकता हूं। जाने-आने में जो परिश्रम मुझपर पड़ता है और जो वक्त जाता है वह मुझे खटकता है।

जो आदमी बहुत कम पढ़ता है वह किताबोंके बारेमें क्या लिख सकता है?[2] मेरे पास शास्त्रीजी की कलम कहां है? उनके लिए कहा जा सकता है कि उन्होंने जितना पढ़ा है उतना शायद बहुत कम लोगोंने पढ़ा है और जो उन्होंने नहीं पढ़ा है वह शायद ही पढ़ने लायक होगा। लेकिन मेरा हिसाब उल्टा है। पढ़ने लायक सैंकड़ों पुस्तकें मैंने पढ़ी ही नहीं हैं। ऐसी हालतमें क्या लिखूं और लिखने का समय कहांसे निकालूं?

आपका,
मो० क० गांधी[3]

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० २२४०) से

१. वी० एस० श्रीनिवास शास्त्री; देखिए पृ० ३९४।

२. जी० ए० नटेशन उस समय इंडियन रिव्यू नामक पत्रिकामें, जिसके वह सम्पादक थे, "बुक्स दैट हैव इंफ्लुएंस्ड मी" शीर्षकसे एक लेखमाला लिखवा रहे थे।

३. यह पत्र मूलतः हिन्दीमें लिखा गया, लेकिन इसका तमिल अनुवाद भी उपलब्ध है।

५४८. पत्र : मार्गरेट बारको[1]

१२ जनवरी, १९४६

प्रिय मार्गरेट,

क्षमा करना यदि मैं कहूँ कि मैं यह भूल ही गया था — हालाँकि भूलना नही चाहिए था — कि तुम शिलांगमें हो। आज ढुबरी जा रहा हूँ और कल वहींसे असमसे विदा लूँगा। अपने भुलक्कड़पन — और इजाजत दो तो कहूँ कि मुझसे मिलने तुम्हारे गौहाटी न आने के जुर्मकी सजाके तौरपर मुझे तुमसे मिले बिना जाना पड़ेगा, हालाँकि तुम यहाँसे इतनी करीब रहती हो। फिर भी, अच्छा ही हुआ कि तुमने मुझे शिलांगमें अपनी उपस्थितिकी याद दिला दी और बता दिया कि तुम्हारा काम अच्छा चल रहा है।

मुझे यकीन है कि राजनीतिक उथल-पुथलमें भाग न लेने के बारेमें मेरी हिदायतोंको मानने से तुम्हें फायदा हुआ होगा।

हाँ! मेरी[2] के पत्र तो काफी हद तक नियमित रूपसे आते रहते हैं। मैं तुम्हारी इस बातसे सहमत हूँ कि जब तुम्हारे पिताको उसकी सेवाओंकी जरूरत नही रह जायेगी तब वह भारत लौट आयेगी। लेकिन जहाँ तक मुझे उसके पत्रोंसे आभास होता है, उसके निकट भविष्यमें भारत आने की सम्भावना नजर नही आती। ऐसा लगता नहीं है कि कभी वह समय भी आयेगा जब तुम्हारे पिताको उसकी सेवाओंकी जरूरत नही रहेगी। अगर वयोवृद्ध श्री बार 'ईशोपनिषद्' की शिक्षा के अनुसार जीवन व्यतीत कर रहे हैं तो मेरे हिसाबसे उन्हें पूर्ण आयु तक अर्थात् १२५ वर्ष जीना चाहिए। तुमने यह लघु उपनिषद् पढ़ा है क्या? नहीं पढा है तो तुम्हें वहाँके पुस्तकालयसे अथवा कमसे-कम डॉ० विधानचन्द्र रायके संग्रहसे तो वह पुस्तक प्राप्त करनी चाहिए। मेरा खयाल है, तुम्हें मालूम है कि वहाँ उनका एक बंगला है।

मैं ४-५ दिन कलकत्ताके निकट सोदपुरमें स्थित खादी प्रतिष्ठानमें रहूँगा और फिर मद्रासके लिए रवाना हो जाऊँगा।

स्नेह।

बापू

कु० मार्गरेट बार
मलकी, शिलांग

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह पत्र मार्गरेट बारको १२ जनवरीको किसीके हाथों पहुँचा दिया गया था।
२. मार्गरेट बारकी बहन

५४९. पत्र : सीता विजयराघवाचारीको

कैम्प : गौहाटी
१२ जनवरी, १९४६

चि० सीता,

तुम्हारा खत पाकर मुझे बड़ा हर्ष हुआ है। मैं देखता हूं कि कुछ हिन्दुस्तानी तो जानती हो। फिर अंग्रेजीमें क्या लिखना था? मुझे ठीक याद है कि तुम किस तरह अपने पू० पिताकी[1] सेवा करती थी और उनके लिये सबकुछ थी। लेकिन पिताजी के जाने से दुःखी क्यों होती हो?[2]

मेरा सेलम जाना कठिन बात है। लेकिन अगर जब मैं मद्रास पहुंचूं तब किसी रोज वहां आकर मुझे मिलो तो मैं राजी हूंगा।

पिताजी का मेरे प्रति प्रेम था, वह मुझे खूब याद है। मै इस महीनेकी २१ ता० के बाद मद्रास पहुंचने की आशा रखता हूं।

बापुके आशीर्वाद

श्रीमती सीता विजयराघवाचारियार
सेलम

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स । सौजन्य : प्यारेलाल

१. सी० विजयराघवाचारी ; १९२० की नागपुर कांग्रेसके अध्यक्ष
२. उनका देहान्त १९ अप्रैल, १९४४ को सेलममें हुआ था।

५५०. पत्र : सरलाबहनको

सोदपुर
१२ जनवरी, १९४६

चि० सरला[1],

तुम्हारा खत मिला। उसमें सब खबर दी है। शारीरिक प्रकृति अच्छी रहते हुए जो-कुछ कर सकती है वह करो।

नैनीतालके मित्रकी खबर मुझे दी वह अच्छा किया। वह मकान हस्पताल बनने के बाद काफी गरीब लोगोंकी मदद देता होगा।

उर्दूका अभ्यास भूल नहीं गई होगी। १० मिनिट रोज समय देने से जो फायदा होता है वह कभी घंटों देने से नहीं होता है। यह अलिखित नियम है।

बापुके आशीर्वाद

श्रीमती सरलाबेन
लक्ष्मी आश्रम
[कौसानी]

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५५१. पत्र : एन० जी० रंगाको

गौहाटी, आसाम
१२ जनवरी, १९४६

भाई रंगा,

तुम्हारा खत मिला है। आगामी पुस्तक[2] के लिये जो कुछ करना है वह करो।

तुम्हारी नई किताब[3] तो अब तक मिली नहीं है। मिलने पर देख लूंगा।

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. कैथरीन हिलमैन; इंग्लैंडमें जन्मी यहूदिन। वे उदयपुरके एक प्रायोगिक विद्यालयकी अध्यापिकाके रूपमें पहले-पहल १९३२ में भारत आई थीं।

२. अनुमानतः महात्मा गांधीज मेसेज टु ऑप्रेस्ड रेसिज

३. अनुमानतः आउट लाइन्स ऑफ नेशनल रिवॉल्युशनरी पाथ, जो दिसम्बर, १९४५ में प्रकाशित हुई थी।

५५२. बातचीत : हरिजनोंके साथ[1]

गौहाटी
१२ जनवरी, १९४६

गांधीजी ने उनकी मजदूरी, रहने की जगह और खाने की चीजोंकी सुलभताके बारे में पूछताछ की। जब उनका ध्यान अगस्त आन्दोलनके पीड़ितोंसे मिलने के कार्यक्रमकी ओर दिलाया गया तो वे यह कहते सुने गये कि अब मैं उनसे भी मिलूँगा।[2] वे तो शहीद हैं और उनके लिए बहुतोंके दिलमें हमदर्दी होगी, लेकिन इन हरिजनोंके लिए किसीके दिलमें नहीं होगी।

हरिजनोंकी अवस्थाकी चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मुझे मालूम है, वे कैसे रहते हैं, क्या खाते हैं। उनकी स्थिति लगभग वैसी ही है जैसी कि भारतके दूसरे हिस्सोंके हरिजनोंकी है। गांधीजी ने हरिजनोंके दो मुखियाओंसे कहा कि वे इन्तजार करें और श्रीमती जयप्रकाश नारायणसे मिलकर उन्हें अपनी अवस्थाकी विस्तृत जानकारी दें। उन्होंने कहा कि आप लोगोंके लिए मुझसे जो भी हो सकेगा, करने की कोशिश करूँगा।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, १३-१-१९४६

५५३. बातचीत : अगस्त आन्दोलनके पीड़ितोंके साथ

गौहाटी
१२ जनवरी, १९४६

इन पीड़ितोंको अपना आशीर्वाद देते हुए महात्माजी ने कहा कि अपने देशके लिए उन्हें जो कर्तव्य करना था वही उन्होंने किया। ऐसी कोई बात नहीं है जिसके लिए उन्हें या उनके परिवारके लोगोंको दुःखी होना चाहिए। कलकी सभामें मैंने लोगोंसे निर्भय होने को कहा था। आपको (उन लोगोंके परिवारोंके सदस्योंको) भी निर्भय होना चाहिए।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, १३-१-१९४६

१. गांधीजी ने सरानिया आश्रममें लगभग चार सौ हरिजनोंसे भेंट की थी।
२. देखिए अगला शीर्षक।

५५४. भाषण : राजनीतिक कार्यकर्ता सम्मेलनमें[1]

गौहाटी
१२ जनवरी, १९४६

कार्यकर्ताओंको रचनात्मक कार्यक्रमकी सम्भावनाएँ समझाते हुए गांधीजी ने एक उदाहरण दिया कि किस तरह लगभग २५ लाख रुपयेकी पूँजी लगाकर लगभग ५ करोड़ रुपया गरीबोंकी जेबोंमें पहुँचाया जा सका। उन्होंने कहा कि आजके मूल्यदरके अनुसार भारत प्रतिवर्ष एक अरब रुपयेके कपड़ेका उपभोग करता है। रचनात्मक कार्यक्रमके एक ही विषय, अर्थात् खादीपर अमल करके इस राशिको लोगोंकी जेबोंमें से बाहर जाने से रोका जा सकता है।

संसदीय कार्यक्रमके सम्बन्धमें गांधीजी ने वही बात दोहराई जो उन्होंने सोदपुरमें कही थी।[2] उन्होंने कहा कि मुझे इस बातका पूरा यकीन है कि सब लोगोंके विधान-मण्डलोंका बहिष्कार कर देने से देश अथवा राष्ट्रको कोई नुकसान नहीं होगा। इसके विपरीत उससे हमारी शक्तिमें और भी वृद्धि होगी। लेकिन मैं यह भी महसूस करता हूँ कि आजकी स्थितिको देखते हुए ऐसा करना व्यावहारिक नहीं होगा और एक यथार्थवादी होने के नाते मैं स्वार्थी और भारतकी स्वाधीनताके शत्रुओंको विधान-मण्डलोंमें जाने से रोकने की जरूरत समझता हूँ। विधान-मण्डलोंका मुख्य कार्य रचनात्मक कार्योंको आगे बढ़ाना होना चाहिए। जो कार्यक्रम रचनात्मक कार्यमें बाधा पहुँचाये वह अपनाने योग्य नहीं है। रचनात्मक कार्यक्रमके उदाहरणके तौरपर गांधीजी ने आदिवासियोंकी सेवाओंका जिक्र किया। उन्होंने कहा, आज शासकोंने उन्हें पृथक श्रेणियोंमें विभाजित कर रखा है और इसी कारण उन्हें जनजातियोंके रूपमें वर्गीकृत किया गया है। यह बड़े शर्मकी बात है कि वे जिस राष्ट्रके अभिन्न अंग हैं उससे उन्हें अलग रखा जाये। यह रचनात्मक कार्य करने का विशाल क्षेत्र है और मेरा अनुरोध है कि आप सब यह कार्य हाथमें लें। इस प्रकारके रचनात्मक कार्यको हाथमें लेने से आपको कोई नहीं रोक सकता। और यदि रचनात्मक कार्य अपनाने के कारण आपको जेलोंमें ठूँस दिया जाता है तो आपको जेलोंसे भी नहीं डरना चाहिए। इस सम्बन्धमें गांधीजी ने चम्पारन सत्याग्रहमें उन्होंने जो रुख अपनाया था उसका जिक्र किया।

१. सम्मेलनमें लगभग सात सौ कार्यकर्ता उपस्थित थे।
२. देखिए पृ० ३८७।

अपने लम्बे और प्रभावशाली भाषणके दौरान अपनी बातको ठोस उदाहरणों द्वारा समझाने के लिए गांधीजी ने अब्बास तैयबजी, बादशाह खान और पण्डित जवाहरलाल नेहरूके नाम लिये।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, १४-१-१९४६

५५५. सन्देश : असमके छात्र स्वयंसेवकोंको

सरानिया आश्रम
१२ जनवरी, १९४६

मैं असम छात्र संघके सभी स्वयंसेवकोंको उनकी सेवाओंके लिए धन्यवाद देता हूँ और उनकी सफलताकी कामना करता हूँ। मेरा आशीर्वाद उनके साथ है।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, १४-१-१९४६

५५६. पत्र : विचित्रनारायण शर्माको

स्टीमरसे
१३ जनवरी, १९४६

चि० विचित्र,

तुम्हारा २६-१२-१९४५ का खत मुझे मिला है। मुझे मिलना है तो अवश्य मिलो। दादासे मश्वरा करना है तो करो। मैं देखता हूं कि तुम्हारी और जाजूजी की पटती नहीं है। मैं आग्रहसे दोनोंको साथ रखने की चेष्टा करुं वह ठीक होगा कि दोनों अपने अपने ढंगसे अलग काम करें यह ठीक होगा? इन दो बातोंमें से एकपर मैं कायम नहीं हो सकता हूं। दोनोंके लिये मेरे पास समर्थन है। अगर तुमने स्वतंत्र रूपसे चरखा संघसे भिन्न काम किया तो क्या नुकसान हो सकता है? दोनों खादीके सेवक हैं। सम्भव है कि जाजूजी की कैद में मेरठ गांधी आश्रमका विकास रुक जाता है। पेट भरके काम नहीं कर सकते हैं। अगर ऐसा है तो और जवाहरलालजी, पंतजी की भी यही राय है तो खादी यू० पी० में अलग क्यों न बने? माना कि खादीके प्रेमके ही कारण ऐसा किया जाये, और यू० पी० में ज्यादा सफलता मिले तो हानिके बदलेमें लाभ ही हो

सकता है। मेरे जीवनमें ऐसे दृष्टांत काफी पड़े हैं जिसमें मैंने इसी तरह उत्तेजन दिया है और लाभ भी हुआ है। अंतिम दृष्टान्त हिंदी साहित्य संमेलन का है। मैं उसमें से निकल गया। टंडनजी का विरोध क्या करुं? उन्होंने साहित्य सम्मेलन बनाने में मुख्य हिस्सा लिया है। उनकी आजकी नीति मुझे प्रिय नहीं है। मैं पाता हूं कि बाहर रहकर हिन्दी भाषाकी मैं काफी सेवा कर सकूंगा और संभव है कि ज्यादा सेवा कर सकूंगा। ऐसा नहीं हुआ तो अपनी भूल कबूल करुंगा और टंडनजी के पीछे पीछे ही चलूंगा। अगर मैंने भूल नहीं की है तो हिंदी सा० सम्मेलनके कामको बाहर रहकर बढ़ाऊंगा। बात यह है कि हमारे काममें स्वार्थ नहीं, और अंतिम उद्देश्य एक ही है। अगर सबके साथ मिलूं तो शायद निश्चयपूर्वक एक ही बात कह सकूं।

इस पत्रको अच्छी तरहसे सोचो, दूसरोंसे मश्वरा करो और फिर मुझे लिखो कि क्या करना उचित समझते हो। मद्रासमें शायद २१ तारीखको पहुंचूंगा और १५ दिन वहा रहूगा। अगर वहां आना है तो आओ। जाजूजी तो वहां होंगे ही। मद्रास मेरे पहोंचते ही तुम्हारे वहां पहुंचने की आवश्यकता नही है। फरवरीके आरंभमें आने से भी कार्य हो सकता है। मेरा मतलब तो इतना ही है कि सब खादी भक्तोंका संपूर्ण विकास हो और खादीका जो स्थान होना चाहिये वह मिले। इतना है सही कि अगर अहिंसामें तुम्हारा अंतरसे विश्वास नहीं है, खादीको अहिंसाका प्रतीक नहीं मानते हैं और खादीके बारेमें मैंने जो आज नीति अखत्यार की है उसमें विश्वास नही है तो अलग बात हो जाती है। विचार-श्रेणीमें अगर वहां तक भिन्नता जाती है तो दूसरी ही बात हो जाती है। और इन तीनोंके बारेमें भिन्नता होते हुए भी अगर खादीको चलाना चाहते हो तब तो [संघसे] अलग ही होना चाहिये। तब तो जाजूजी से मतभेदकी बात नहीं होती है। तब सिद्धान्त-भेदकी बात खड़ी होती है और अगर सचमुच जड़में यही है तो इसे भी साफ करना ही चाहिए।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५५७. पत्र : पट्टाभि सीतारामैयाको

आसामके दौरेपर
१३ जनवरी, १९४६

भाई पट्टाभि,

इसके साथ कलकत्ता के 'नेशनलिस्ट' की एक कटिंग[1] भेजता हूं। इसमें जो लिखा है क्या वह सही है? अगर यह सही है तो हम इस तरह किसीकी अवज्ञा क्यों करे? जो कुछ भी हो हमें तो अविनयके सामने विनय करना है। यह अहिंसाका भेद है। अगर आपकी सभाकी तरफसे १० (दस) आदमी आवें तो उसमें अविनय है ही नहीं।

सोचो और जो यथार्थ लगे सो करो।

बापुके आशीर्वाद

पट्टाभि सीतारामय्या

पत्रको नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५५८. पत्र : भोपालके नवाबको

पी० एस० पर्शीयन
१३ जनवरी, १९४६

नवाब साहब,

आपका तार आया था। उसका जवाब[2] मैंने गौहाटीसे भेजा था सो मिल गया होगा। मेरी हालत कुछ अच्छी नहीं है। कामका बोझ इतना आ पड़ा है कि मैं एक घंटा निकालूं तो एक घटेका काम बढ़ जाता है। ऐसी हालतमें मैं भोपाल कैसे आऊं? देहलीके बारेमें थोड़ीसी गुंजाइश रखनी है। क्योंकि कोई ऐसी वजह हो कि मैं छूट ही न सकूं तो वहां जाना होगा। ऐसी हालतमें आपको इत्तला दूगा।

मेरी लाचारी आप समझेंगे। और क्या कहूं?

आपका,
मो० क० गांधी

हाथोंहाथ

उर्दूकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह उपलब्ध नहीं है।
२. देखिए पृ० ४३२।

५५९. भेंट : यूनाइटेड प्रेस ऑफ इंडियाको[1]

[१३ जनवरी, १९४६]

यह पूछने पर कि चूंकि "जय हिन्द" का नारा मूलतः सुभाषचन्द्र बोस द्वारा एक युद्ध-घोषके रूपमें शुरू किया गया था, इसलिए क्या अहिंसक कार्रवाईके लिए इसे अपनाना उचित होगा, गांधीजी ने कहा :

"जय हिन्द" नारा सुभाषबाबूने सशस्त्र-युद्धमें एक युद्ध-घोषके रूपमें लिया था, इसका मतलब यह नहीं कि अहिंसक कार्रवाईमें उसका त्याग किया जाना चाहिए। इस आधारपर तो हमें "वन्देमातरम्" का भी त्याग करना होगा, क्योंकि "वन्देमातरम्" का नारा लगाते हुए लोगोंके हिंसापूर्ण कार्रवाई करने के उदाहरण भी देखने को मिले हैं। यदि कोई चीज तत्वतः बुरी है तो उसका त्याग करना मनुष्यका निश्चित कर्तव्य हो जाता है। मेरी रायमें "वन्देमातरम्" और "जय हिन्द" का एक ही अर्थ है। एकमें हम भारत-माताको नमन करते हैं और इस तरह उसकी विजयकी कामना करते हैं, दूसरेमें केवल उसकी विजयकी कामना अभिव्यक्त की गई है। ये दोनों नारे एक साथ लगाने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। जैसा कि मैंने पहले भी कहा है,[2] "जय हिन्द" "वन्देमातरम्" का स्थान नहीं ले सकता।

यह पूछे जाने पर कि क्या सुभाषचन्द्र बोसके लिए आपके हृदयमें उतना ही आदर और प्यार है और नेताजी ने अपनी कथित पुस्तिक 'फादर ऑफ ऑल नेशन्स' में आपके बारेमें जो लिखा है उससे क्या आप, जैसा कि असमके कुछ लोगोंका विश्वास है, अवगत हैं, गांधीजी ने उत्तर दिया :

सुभाषबाबूने मेरे बारेमें जो कुछ कहा है वह मैंने नहीं पढ़ा है। लेकिन आपने जो-कुछ बताया उसपर मुझे कोई हैरानी नहीं होती। सुभाषबाबूके साथ मेरे सम्बन्ध सदा अत्यन्त पवित्र और उत्तम रहे हैं। बलिदानकी उनकी क्षमताके बारेमें मुझे हमेशासे मालूम था। लेकिन उनकी सूझ-बूझ, युद्ध-चातुर्य और संगठन-क्षमताके बारेमें मुझे पूरी जानकारी उनके भारतसे भाग निकलने पर ही हासिल

१. गांधीजी से यू० पी० आई० के विशेष संवाददाताकी यह बातचीत "पर्शियन" नामक जहाज में हुई थी। गांधीजी इस जहाजपर १२ जनवरीकी रात गौहाटीमें सवार हुए थे और १३ जनवरीको धुबरी पहुँचे थे।

२. देखिए पृ० ४१७।

हुई। हम दोनोंके दृष्टिकोणोंमें साधनोंके सवालपर जो भेद है वह तो सबको मालूम ही है, इसलिए उसके बारेमें कुछ कहना बेकार है।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, १५-१-१९४६

५६०. भाषण: प्रार्थना-सभामें

ग्वालपारा
१३ जनवरी, १९४६

गांधीजी ने अपनी यह बात दुहराई कि चरखेके अलावा और किसी भी उपायसे अहिंसक स्वराज्य, जो रामराज्यका ही दूसरा नाम है, प्राप्त नहीं किया जा सकता। रामराज्यकी परिभाषा बताते हुए उन्होंने कहा कि उसमें निर्बलसे-निर्बल व्यक्तिको भी वैसी ही स्वतन्त्रता और अधिकार प्राप्त होंगे जैसी स्वतन्त्रता और अधिकारोंका उपभोग सबलसे-सबल व्यक्ति करता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि शारीरिक रूपसे दुर्बल होने पर भी व्यक्ति स्वतन्त्रता-संघर्षमें समुचित हाथ बँटाये। दूसरे शब्दोंमें, बच्चों और स्त्रियोंको पुरुषोंकी बराबरीकी भूमिका निभानी चाहिए। स्पष्ट है कि सशस्त्र युद्धमें यह सम्भव नहीं है।

भारतीय इतिहासके अध्ययनसे मैंने यह जाना है कि जब भी लोगोंने अपनी सुरक्षाके लिए शस्त्रोंका सहारा लिया, उनपर अत्याचार और भी बढ़ गया। अपनी बारी आने पर तथाकथित संरक्षक ही अत्याचारी बन गये। लेकिन चरखेके प्रतीक द्वारा अभिव्यक्त अहिंसाके अन्तर्गत स्वतन्त्रता-संग्राममें पुरुष और स्त्रियाँ बिलकुल बराबरीके धरातलपर साझीदार होते हैं। शर्त यह है कि उनके द्वारा काते गये सूतका हर तार स्वराज्यके निमित्त एक ज्ञानमय यज्ञ हो, और उसके पीछे यह संकल्प हो कि चरखेपर किये गये किसी भी प्रहारका हम प्राणोंकी बाजी लगाकर प्रतिरोध करेंगे। चरखेसे मेरा मतलब सिर्फ हाथ कताईसे ही नहीं, बल्कि हाथ कताई जिनका प्रतीक है उन सभी चीजोंसे है। इनमें अन्य सभी ग्रामोद्योगोंका पुनरुद्धार तो शामिल है ही, लेकिन साथ ही मेरे अठारह-सूत्री रचनात्मक कार्यक्रमके सभी विषय शामिल हैं। उदाहरण के तौरपर गांधीजी ने कौमी एकता और पूर्ण अस्पृश्यता-निवारणका उल्लेख किया और कहा कि ये दोनों अहिंसाके स्वाभाविक परिणाम हैं।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, १५-१-१९४६

५६१. भाषण : ढुबरीमें

१३ जनवरी, १९४६

उपस्थित लोगोंको सम्बोधित करते हुए गांधीजी ने कहा कि आपसे मैंने इतनी देर इन्तजार करवाया, इसका मुझे दुःख है। कुहासेके कारण जहाज चल नहीं पा रहा था। मैंने बंगालके दुःखोंके बारेमें सुना है और स्वयं उन्हें देखा भी है। मैं असम भी इसलिए आया हूँ कि यहाँके लोगोंके दुःख बंगवासियोंके दुःखसे कम नहीं हैं। असममें मैं ज्यादा दिन नहीं रुक सकता क्योंकि कलकत्ता में मुझे बहुत जरूरी काम है। उन्होंने इस बातपर जोर दिया कि स्वराज्य स्वर्गसे आने वाला नहीं है; और न कोई आपको देने वाला है। सब-कुछ आपके स्वावलम्बनपर निर्भर है और स्वराज्य चरखेके द्वारा मिलेगा।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, १५-१-१९४६

५६२. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

रेलगाड़ीमें
१४ जनवरी, १९४६

चि० मुन्नालाल,

तुम्हारा पत्र मिला। डॉ० दिनशाकी उदासीनता मुझे ठीक नहीं लगती। यह अच्छा है कि जहाँगीरजी तुम्हारी मदद करते हैं। तुमसे धीरज और शान्तिपूर्वक जो हो सके वह करते जाओ। जो जाना चाहे उसे जाने देना। मणिभाई तुम्हें पूरी मदद देता होगा। नये मरीज न लेना। यदि पुराने रोगी अपने खर्चपर रहना चाहें तो उन्हें भी नये नियमोंके अनुसार रहना होगा। हमें उनके पैसेसे चिकित्सालय नहीं चलाना है। गरीबोंकी दुआसे चलाना है। जो रोगी आयें उन्हें डॉक्टर ऐसा इलाज बताये जो वे घर बैठे-बैठे कर सकें। यदि कोई स्नान आदिके लिए आना चाहे तो आ सकता है। किसीको उपचारगृहमें नहीं रखना है। आने पर मैं सब-कुछ व्यवस्थित करने की उम्मीद करता हूँ। यदि यह पत्र जहाँगीरजी को पढ़वाने की जरूरत हो तो पढ़वाना। डॉक्टर तो इसे पढ़ेगा ही।

खादीकी व्यवस्था यात्रासे वापस आने पर करेंगे। खादी मिल जायेगी। मैं समझता हूँ, कंचन मजेमें होगी।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६२३) से। सी० डब्ल्यू० ७२०५ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

५६३. पत्र : प्रेमा कंटकको

रेलगाड़ीमें
मौनवार, १४ जनवरी १९४६

चि० प्रेमा,

तेरा पत्र मिला। इसका जवाब क्या दूँ? तू कोई चीज मान ले और उसका अस्तित्व ही न हो, तो क्या उत्तर दिया जाये? यदि कोई यह कहे कि आकाश में पुष्प हैं, तो उससे क्या कहा जा सकता है?

रजत सीप महुं भास जिमी तथा भानुकर वारी।
जदपि असत्य तिमि काल तिमि भ्रम न सकय कोउ टारि।[1]

तुलसीदासका यह दोहा याद करके हँसना हो तो हँसना।

तू इतनी नाजुक-मिजाज होगी, यह तो मैंने सोचा ही नहीं था। और हरिभाऊको तू कैसे विशेषण देती है? तू जब शान्त चित्तसे लिखेगी तब ज्यादा लिखूँगा। सुशीलाका पत्र मिल गया है। मैंने तो बापाको यह सलाह दी है कि जहाँ योग्य बहन प्रतिनिधिके रूपमें न मिले वहाँ जगह खाली रखी जाये।

तेरी इच्छाके अनुसार तेरा पत्र फाड़ दिया है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० १०४४३) से। सी० डब्ल्यू० ६८८२ से भी; सौजन्य : प्रेमा कंटक

१. दोहेका शुद्ध रूप इस प्रकार है:
"रजत सीप महुं भास जिमि जथा भानुकर बारि।
जदपि मृषा तिहुं काल सोइ भ्रम न सकेइ कोउ टारि॥"
अर्थात् सीपमें चाँदीके और जलमें सूर्यकी किरणोंके होने का आभास होता है। यद्यपि ये दोनों बातें तीनों कालोंमें असत्य ही हैं, तथापि इस भ्रमका निवारण कोई नहीं कर सकता।

५६४. पत्र : मथुरादास त्रिकमजीको[1]

रेलगाड़ीमें
१४ जनवरी, १९४६

चि० मथुरादास,

तेरा मोढ बनियापन जायेगा नहीं !!! दोष किसका है, तेरा या तारामतीका ? अब झटपट सगाई कर दे, इससे तुम सबको शान्ति मिलेगी। जीवन तो सगाई और विवाहके लिए ही है न ? इसमें मैं अपनेको कहीं नहीं पाता। अतः मुझसे क्या पूछना ? इसका यह मतलब नहीं कि तू जो करेगा वह गलत होगा। मैं जहाँ जाऊँ वहाँ तुझे क्यों जाना चाहिए ? मैंने तो अलग रास्ता पकड़ लिया है। उसे समझे बिना किसीको मेरे साथ सम्मिलित क्यों होना चाहिए ? जिसने सत्य ही बोला होगा तो वह कभी मिथ्या नहीं होगा। तू निर्भय होकर अपने रास्ते चल।

अपने स्वास्थ्यका ध्यान रखना। मेरे स्वास्थ्यके बारेमें तो जो अन्य लोग लिखते हैं सो देखना। इस बारेमें समाचारपत्रोंमें ठीक-ठीक खबर प्रकाशित होती रहती है।

तुम सबको,
बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५६५. पत्र : अमृतलाल वि० ठक्करको[2]

रेलगाड़ीमें
१४ जनवरी, १९४६

बापा,

आज मौनवार है, इसलिए मुझे ही लिखना चाहिए। तुम्हारा बहुत ही संक्षिप्त और सारपूर्ण पत्र मिल गया है।

जवाहरलाल देशकी स्वतन्त्रताके अतिरिक्त और कोई बात ही नहीं सोचते। इसके लिए वे अपनी पूरी ताकत खर्च कर देते हैं। ऐसी स्थितिमें लोग उनके पीछे पागल क्यों नहीं होंगे ?

१ और २. ये दोनों पत्र देवनागरी लिपिमें हैं।

सुचेताके बारेमें मैं समझ गया। सुशीला पैके मामलेको जितने अच्छे ढंग से निबटा सको निबटा देना। अपने मन्तव्यपर मैं जमा हुआ हूँ। जहाँ तुरन्त महिला प्रतिनिधि न मिले हमें राह देखनी चाहिए। हमारा काम तो चलता ही रहेगा। इसके बावजूद यदि तुम कुछ और करना चाहते हो तो वैसा करने को मैं तैयार रहूँगा।

असममें मैंने उन स्वामीजी और महिला विद्यालयके बारेमें भी सुना। दोनों मामले विचार करने लायक हैं। लगता है स्वामी पराकाष्ठापर पहुँच गये हैं। मुझे उनका उत्तर मिल गया है।

अमलप्रभा कदम फूँक-फूँककर, किन्तु अच्छी तरह चल रही है। उसके पिता उसके पक्षमें हैं। यह जगह गाँवमें ही है, किन्तु गौहाटीके पास है। मैं वह गाँव देख आया हूँ। मैं रोज उधर ही घूमने जाता था। मुझे नजर आता है कि उतावलीसे हमारा काम नहीं बनेगा।

हरिजन-कार्यके लिए अच्छी राशि इकट्ठी हो गई है। आदिवासियोंके लिए भी कुछ रकम रखी गई है। तुम्हारा मद्रास न जाना मुझे अच्छा लगता है। अपने स्वार्थके लिए मैं तुम्हारी उपस्थितिका उपयोग कर सकता हूँ, किन्तु वह गलत माना जायेगा। तुम्हें किसी तरह कुछ आराम तो लेना ही चाहिए। तब तुम दूना काम कर सकोगे। यहाँ तक कि मनुष्य द्वारा निर्मित यन्त्रोंको भी आरामकी जरूरत होती है। जूतोंकी जोड़ीको भी यदि आराम मिले तो वे ज्यादा चलते हैं, फिर मनुष्यका तो कहना ही क्या?

बापूके आशीर्वाद

श्री ठक्कर बापा
हरिजन कालोनी
दिल्ली

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५६६. पत्र : शंकरनको

ट्रेनमें
१४ जनवरी, १९४६

चि० शंकरन्,

तुम्हारा खत मिला। आज मौनवार है। इसलिए लिखवा नही सकता हूं।

तुम्हारा उत्तर संपूर्ण है। मुझे अच्छा लगता है कि जहां तबीयत सुधार रहे हैं और नैसर्गिक उपचार सीख रहे हैं।

'जीवन-सखा'[1] शायद सोदपुरमें होगा? मुझे आसाममें नही मिला। इसी गड्डीसे सोदपुर जा रहा हूं।

जैसे दा० दीनशाहका [उपचार-गृह] ग़रीबोंके लिये नहीं था ऐसे ही बालेश्वरजी का भी गरीबोंके लिए नहीं लगता है। इसका उपाय ढूंढ़ना होगा। तुम्हारा उपचार संपूर्ण होने के बाद इस बातको सोचेंगे। मैं २१ को मद्रास पहुंचने की आशा करता हूं और ८ फरवरीको वर्धा। 'जीवनसखा' के खास अंकके बारेमें संदेशा भेजने का उत्साह नहीं है। सब अच्छी वस्तु अपना आशीर्वाद रखती है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५६७. पत्र : एच० सी० दासप्पाको

ट्रेनमें
१४ जनवरी, १९४[६][2]

चि० दासप्पा[3],

तुम्हारा खत मिला। तुमारे भाईके बारेमें शोचनीय खबर है, फिर पिताजी बीमार। लेकिन अंतरमें विचार करें तो देखते हैं कि मृत्यु और अनेक प्रकारकी

१. नैसर्गिक उपचारकी एक पत्रिका

२. साधन-सूत्रमें "१९४५" है, लेकिन यह पत्र १९४६ के पत्रोंके साथ मिला है।

३. एक वकील, जिनका नाम जुलाई, १९४० में राजनीतिक कारणोंसे वकीलोंकी सूचीसे काट दिया गया था

व्याधि जन्मके साथ हैं ही। उसका शोक मिथ्या है।

मेरे माइसुर [मैसूर] आने के बारेमें मुझे बड़ा संदेह है। देखें मद्रासमें क्या हाल होता है।

यशोधरा[1] को आशीर्वाद। उनको लिखने को कहो। रामदास[2] ठीक होगा। कैसे चलता है? अब वहीं स्थिर हो जाय तो अच्छा होगा। हिंदी-उर्दू खूब सीखें, कातने की सब क्रिया करें।

बापुके आशीर्वाद

श्री दासप्पा

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५६८. भाषण : प्रार्थना-सभामें[3]

सोदपुर
१४ जनवरी, १९४६

मुझे खेद है कि आज मैं आपसे बोल नहीं सकता क्योंकि मुझे ढुबरीमें रात्रिको १२ बजे मौन लेने का मौका मिला। मुझे कहने से हर्ष होता है कि वापसी में लोगोंने स्टेशनोंपर काफी शान्तिका पालन किया। मैं चाहूंगा कि ऐसी ही शांति हर मौकेपर रखी जायगी। चितागांगके देहातमें जो हाल बन गये हैं[4] उससे आपको ऐसी ही परेशानी हो गई होगी जैसी मुझे हुई और चलती है। सरकारको अपना धर्म बजाना होगा। लेकिन मेरा ख्याल हमारी ओर जाता है। अगर हम सबमें औरत और मरदोंमें सच्चा सत्याग्रह पैदा हो जाये तो ऐसी बिना [स्थिति] बन ही नहीं सकती है। दूसरी तरहसे डायमंड हारबर[5] में जो हो गया सो भी दुःखद प्रकरण है। आजका भजन इन बातोंमें योग्य निर्णय करने में सहायभूत होता है। सो तो कल बताने की कोशिश करूंगा।[6]

भाषणकी फोटो-नकल (जी० एन० ८०२७) से

१. एच० सी० दासप्पाकी पत्नी
२. एच० सी० दासप्पाके पुत्र
३. यह भाषण कनु गांधीने पढ़कर सुनाया था।
४. यहाँ संकेत गंजाम पायनियर सैन्य-दल द्वारा ग्रामीणोंकी सम्पत्ति लूटने की ओर है; देखिए पृ० ४१२ और ४३०।
५. गंगासागर मेलेके अवसरपर गंगाके मुहानेपर स्थित संगम टापूपर जाने वाले तीर्थ-यात्रियोंके जहाजपर सवार होने के लिए जो लकड़ीके घाट बनवाये गये थे उनके अचानक टूट जाने के कारण १४७ व्यक्ति मर गये और ८० घायल हो गये थे।
६. देखिए पृ० ४५७-५८।

५६९. पत्र : बेग, डनलप एण्ड कम्पनी लिमिटेडको

सोदपुर
१५ जनवरी, १९४[६][1]

महानुभाव,

श्री राजकुमार सरकारकी विधवा श्रीमती प्रफुल्लबाला सरकारने मुझे अपने संकटके बारेमें लिखा है। उनका कहना है कि उनके पति आपकी कम्पनीमें १,६५० रु० की भविष्य-निधि छोड़ गये हैं, लेकिन वे यह रकम इसलिए नहीं निकलवा सकती कि आपके सामने और भी दावे पेश किये गये हैं। उनका कहना है कि वे असहाय अवस्थामें हैं और उनपर कई बच्चोंके भरण-पोषणका बोझ है।

अगर उनकी अवस्था, जैसी उन्होंने बताई है, उतनी ही बुरी है तो क्या आप कृपया मुझे यह सूचित करेंगे कि आप उनकी सहायता कर सकते हैं या नहीं? उनका पता है: श्रीमती प्रफुल्लबाला सरकार, तारापद कुमारका घर, ग्राम अन्तपुर, डाकघर श्यामनगर, (२४ परगना)।

आपका सच्चा,
मो० क० गांधी

मेसर्स बेग, डनलप एण्ड कम्पनी लिमिटेड
(मैनेजिंग एजेंट, जगतलाल एलायन्स नॉर्थ जूट मिल्स)
२, हेयर स्ट्रीट, कलकत्ता

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. साधन-सूत्रमें "१९४५" है, जो स्पष्टतः चूक है।

५७०. पत्र : चम्पा मेहताको

सोदपुर
१५ जनवरी, १९४६

चि० चम्पा,

आज मैंने भाई गटुभाईके पत्रका उत्तर नीचे लिखे अनुसार दिया है।[1] इसके अतिरिक्त या इससे अधिक मुझे और कुछ नहीं सूझता।

श्रीमती चम्पाबहन मेहता
सेवाग्राम

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५७१. पत्र : गटुलाल जटाशंकर दवेको

१५ जनवरी, १९४६

भाई गटुभाई,

तुम्हारा पत्र कल मिला। मगनभाईके मामलेमें मैं क्या कर सकता हूँ इसकी मुझे कोई खबर नहीं। मैं उतना समय नहीं दे सकूंगा जितना वे चाहते हैं। इसके अतिरिक्त इस मामलेमें पड़ना मेरे लिए बहुत मुश्किल है। इसलिए मेरी राय यह है कि तुम्हें किसी अच्छे वकीलकी सलाह लेनी चाहिए और जैसा वह कहे, वैसा ही करना चाहिए।

गटुलाल जटाशंकर दवे
करणपरा, शेरी नं० २३
राजकोट

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. देखिए अगला शीर्षक।

५७२. पत्र : हातिम अलवीको[1]

सोदपुर
१५ जनवरी, १९४६

भाई हातिम,

तुम्हारा पत्र मिला, लेकिन निरन्तर दौरेपर रहने के कारण मैं इसपर कैसे विचार कर सकता हूँ? तुम्हारा यह सोचना गलत है कि देशबन्धु, दीनबन्धु, सरदार आदि उपाधियाँ मेरी खोज हैं। इसलिए मैं इन खोजोंका श्रेय नहीं ले सकता। मैंने उपर्युक्त नामोंको स्वीकार कर लिया है। मुझे तो यह भी खबर नहीं है कि यह खोज किसी एक व्यक्तिकी है जिसे हम पहचान सकें। यह भी कहा जाता है कि "हरिजन" नामकी खोज भी मैंने की है, किन्तु यह निराधार बात है। इस नामकी खोज करने वाले काठियावाड़के कोई अस्पृश्य भाई थे। वे अभी जीवित हैं या नहीं इसकी मुझे खबर नहीं। इसलिए तुम्हारा यह मानना कि खोज करने की ऐसी सामर्थ्य मुझमें है, सही नहीं है।

भाई जमशेद[2] के लिए कोई उपयुक्त उपाधि खोजना मुझे अच्छा तो लगता है, किन्तु मैं ऐसा शोधकर्ता होऊँ तभी तो झट याद आयेगा न? तुम्ही कुछ सोचो न! ७ जनवरी निकल गई; इससे परेशानी क्यों? जब उपाधि मिल जायेगी तो हम उसका प्रयोग आरम्भ कर देंगे।

हातिम अ० अलवी
कराची

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

१. यह पत्र देवनागरी लिपिमें है।

२. जमशेद नसरवानजी मेहता, "आधुनिक कराचीके निर्माता" जिनके ६१वें जन्मदिनपर कराचीके लोगोंकी ओरसे अभिनन्दन-पत्र भेंट किया गया था। अभिनन्दन-पत्रमें उन्हें "आधुनिक कराचीका महान वास्तुकार" कहा गया था।

५७३. पत्र : रामेश्वरी नेहरूको

सोदपुर
१५ जनवरी, १९४६

प्रिय भगिनी,

तुमारा २० तारीखका खत कल मिला। एसेम्बलीमें जाने का कोई विरोध नहीं है, किसीको तो जाना चाहिये। लेकिन उसकी किमत मेरी दृष्टिमें बहुत कम है। जो दूसरे कामोंमें अपना समयका उपयोग कर सकते हैं, और करते भी हैं उनको एसेम्बलीमें जाना फायदामन्द होगा, इस बारेमें मुझे पूरा शक है और खास कर जो कस्तूरबा निधिका प्रतिनिधित्व करती है ऐसी बहिनोंके लिये। इस बारेमें बापाके साथ मैं पत्रव्यवहार चला रहा हूं। मेरी राय है कि ऐसी बहिनोंको एसेम्बलीमें जाना अच्छा नहीं होगा। कस्तूरबा निधिका काम चलाने के लिये एक अनोखी योजना रखी गई है न ? उसका ज्ञान तो अनुभवसे ही मिलेगा। लेकिन हम मोहके वश होकर गलतीमें तो न पड़ें। केवल इस दृष्टिसे तुम्हारा एसेम्बलीमें जाना मुझे चुभेगा सही। अपना परोक्ष अभिप्राय उस बारेमें दो।

बापुके आशीर्वाद

श्री रामेश्वरी नेहरू
वारिस रोड
लाहोर

पत्रकी नकलसे : कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट। सौजन्य : नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय

५७४. पत्र : कृष्णचन्द्रको

सोदपुर
१५ जनवरी, १९४६

चि० कृष्णचंद्र,

तुम्हारा खत मिला।

गजराजके टोन्सील जानें से अच्छा ही हुआ होगा।

मावजीभाईका समजा।

चकरैयाका स्थान राजूके साथ ही लगता है। वहांसे रहकर शायद वह तैयार हो सकेगा।

हमारें यहां हिन्दी 'कुरान' तो काफी पड़े हैं ऐसा ख्याल है। उसमें से कोई भी उनको दिया जाय। हो सकता है कि वह सब किताबें ता[लीमी] संघमें दी गई हैं, वहांसे भी वह उनको दी जा सकती है। देख लेना।

लड़के-लड़कियोंके वारेमें हंसि होती है वह निर्दोष भी हो सकती है, दोषित भी। उस वारेमें कोई एक नियम नही बन सकता है। जीवन खतरेसे ही बना है और बनता रहेगा। हमारा तो मध्यम मार्ग हो सकता है। हमारे भजनोंमें रायचन्दभाईका एक है।

"निर्दोष आनन्द ल्यूटे गमे त्यांथी भले", शायद यह भजन भजनावलीमें है। जिसको बूरा करना ही है वह सर्वथा निर्दोष करते हुए भी मनसे दोष करेगा। सुवर्ण इलाज यह है कि हम सर्वथा सब स्थितिमें निर्दोष रहें। उस निर्दोषता का असर वायुमण्डलपर अपने-आप पड़ता ही है। जिस वारेमें मेरे आने पर पूछना है तो पूछना।

उस साधुके प्रति हम सर्वथा उदासी बनें। साफ-साफ कह दें कि उसे आश्रम में जगह हो ही नहीं सकती है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (जी० एन० ४५४४) से

५७५. पत्र : हरि गणेश फाटकको

सोदपुर
१५ जनवरी, १९४६

भाई हरिभाऊ,

तुम्हारा पोस्टकार्ड मिला। सावित्रीबाईके बारेमें बापाको लिखो। प्रेमाबहनसे सावित्रीबाई बढ़ जायगी?

मैं यहांसे १९ तारीखको मद्रास जाऊंगा ऐसी उम्मीद है और वहां कुछ दिन तक रहना होगा। ८ फरवरीको सेवाग्राम पहुंचने की आशा रखता हूं।

भाई हरिभाऊ फाटक
६२५, सदाशिव
पूना सिटी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५७६. पत्र : जी० अन्नास्वामीको

सोदपुर
१५ जनवरी, १९४६

भाई अनुसामी,

आपका अंग्रेजी पत्र मिला। मुझे पूरा डर है कि मैं पोंडिचरी जगहपर, इच्छा होते हुए भी, जा नहीं सकूंगा। मेरी आशा है कि इतनी हिन्दी तो आप सब लोग पढ़ ही लेंगे।

जी० अन्नास्वामी
पोंडिचरी

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५७७. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
१५ जनवरी, १९४६

गांधीजी ने कहा कि जो लोग डायमण्ड हारबर दुर्घटनाके शिकार हुए हैं वे अब नहीं रहे, लेकिन उनके कुटुम्बियोंका क्या होगा? लेकिन चटगांवमें ज्यादा लोगोंकी जानें नहीं गई हैं।

इन दो घटनाओंने मुझे विचलित कर दिया है, लेकिन ऐसा होना नहीं चाहिए। अगर हजारों, लाखों अथवा करोड़ों लोग मारे जायें तो भी मनुष्यको शान्त और स्थिर रहना चाहिए। यदि हम इसे शान्तिपूर्वक सह सकें तो हम अन्तरात्माकी आवाजको सुन सकते हैं।[1]

सरकारको इन दो घटनाओंके सम्बन्धमें अपने कर्तव्यके प्रति सजग रहना चाहिए, लेकिन साथ ही लोगोंको भी अपना कर्तव्य नहीं भूलना चाहिए। सोमवारकी प्रार्थनामें जो भजन (अन्तर्मम विकसित करो) गाया गया था उसमें मार्ग बताया गया है। यह प्रार्थना हमारे हृदयोंके द्वार खोलने के लिए है। ऐसा करने पर यह सारा संसार एक विशाल बिरादरी बन जायेगा।

गांधीजी ने कहा कि यदि मैं डायमण्ड हारबरमें होता तो मैं स्त्रियों और पुरुषोंको वहाँ न जाने की सलाह देता। मैंने १९१५ के हरिद्वार के कुम्भ मेलेमें ऐसा ही दृश्य देखा था, जब गंगामें डुबकी लगाने की रेल-पेलमें १७ व्यक्ति डूब गये थे। डायमण्ड हारबरमें तीर्थ-यात्रियोंको घाट पर जाना था और सरकारको उन्हें जहाजपर चढ़ाने और ले जाने की उचित व्यवस्था करनी चाहिए थी। तथापि यदि सरकारने अपने कर्तव्यका पालन न भी किया तो इसके लिए सरकारको दोष देने से हमें कोई लाभ नहीं होगा। लोगोंको उचित मार्गका अनुसरण करना चाहिए। हरिद्वारमें हुई घटनाके लिए सरकारको दोषी नहीं ठहराया जा सकता। हाँ, डायमण्ड हारबरके बारे में जाँच करने पर यह पता चल सकता है कि जहाजपर चढ़ाने आदिकी समुचित व्यवस्था नहीं की गई।

चटगांवमें वस्तु-स्थिति और भी खराब है। लोगोंने सरकारी विवरण पढ़ा है और उससे जामिनीबाबू द्वारा भेजे गये विवरणकी पुष्टि हुई है। लेकिन

१. देखिए पृ० ४१२ और ४३०।

लोगोंने, भजनमें कहे अनुसार अपना फर्ज अदा नहीं किया। इस भजनमें हमसे दृढ़, क्रियाशील और निडर बनने की अपेक्षा की गई है। मुझे पूरा विश्वास है कि यदि लोगोंने इन गुणोंका पालन किया होता तो चटगाँवमें जो घटना हुई है वह न होती। आपने इस भजनको जिस तरह प्रार्थनामें गाया यदि उसी तरह आप इसे गा सकते हैं तो उसमें कहे गये सन्देशके अनुसार कार्य क्यों नहीं कर सकते? गुरुदेवके शब्द केवल बंगालके लिए नहीं हैं। हर जगह सन्तोंने इसी सन्देशका उपदेश दिया है।

एक अंग्रेजने व्यंग्यपूर्वक मुझसे पूछा कि अपनी गुलामीका राग अलापते रहने से क्या भारतीयोंको स्वाधीनता मिल जायेगी? मेरा खयाल है कि उसका कहना ठीक था। गुलामीकी बातको बार-बार दोहराने से हमारा कोई हित नहीं होने वाला है। गुलाम लोग तो शाश्वत कष्टों और दुःखोंमें जीते हैं और इन्हें दूर करने के लिए काम करके ही हम स्वराज्य प्राप्त कर सकते हैं। केवल आलोचना करने से विदेशी भारत-भूमिको छोड़कर नहीं चले जायेंगे। यदि लोग सत्याग्रहके सन्देशको समझ लें, यदि व्यावहारिक जीवनमें उसपर अमल करें तो इन दुःखोंसे छुटकारा पा सकते हैं। आखिरकार सत्याग्रह क्या है? यह तो मनुष्यमें अन्तर्निहित सत्यकी उत्कट लालसा-भर है और इसी लालसामें शक्ति निहित है।

चटगाँवमें दो महिलाओंपर आक्रमण किया गया और बदलेमें दो व्यक्तियोंपर हमला किया गया। फलतः सौ लोग आये और उन्होंने गाँववालों पर हमला किया और गाँवमें आग लगा दी। यदि लोग सत्यपर दृढ़ होते तो ऐसी दुर्घटना कभी न हुई होती। बादमें मुझे मालूम हुआ कि उपद्रवी लोग हमारे देशवासी थे और इसलिए भाई थे। यदि ऐसी बात है तो उनके इस कृत्यके लिए मैं भी कुछ हद तक अपनेको जिम्मेदार समझता हूँ और इसलिए उनकी कुवृत्तियोंको मिटाने का प्रयत्न करना मेरा भी कर्तव्य है। दूसरी ओर डायमण्ड हारबरमें बहुत सारे यात्रियोंकी मृत्यु हुई। यह दुर्घटना इसलिए हुई कि भारतीय लोग तीर्थ-यात्राका सच्चा महत्व समझने में असफल रहे हैं। तीर्थ-यात्राका मतलब कष्ट सहना है। रेल अथवा स्टीमरसे यात्रा करना कोई तीर्थ-यात्रा नहीं है। कन्याकुमारीसे हरिद्वार तक रेलमें सफर करना तीर्थ-यात्रा नहीं है।

मैं एक लम्बे अर्सेसे यह बात समझाता आया हूँ और भविष्यमें भी समझाता रहूँगा, भले ही उसका परिणाम कुछ भी हो। मैं अपना सन्देश देता रहूँगा, चाहे केवल पाँच लोग ही मेरी बातपर ध्यान दें।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, १९-१-१९४६

५७८. पत्र : जीवणजी डा० देसाईको

[सोदपुर
१६ जनवरी, १९४६

चि० जीवणजी,

तुम्हारे तीन पत्र मेरे पास पड़े हैं—१३ दिसम्बर, १९४५ का, ७ जनवरी, १९४६ का और ११ जनवरी, १९४६ का।

तमिलमें 'आत्मकथा' प्रकाशित करने के बारेमें मैं ज्यादा बहसमें नहीं पड़ूँगा। उसके लिए समय भी नहीं है। बड़ी मुश्किलसे समय निकालकर यह पत्र प्रातःकाल लिखवा रहा हूँ। मैंने अंग्रेजीमें अच्छी पुस्तकोंके एकाधिक अनुवाद देखे हैं। मुझे इसमें कोई बुराई दिखाई नहीं दी। हमने 'आत्मकथा' का स्वत्वाधिकार अपने पास रखा है, उसके पीछे उद्देश्य केवल यही है कि कोई उसका दुरुपयोग न कर सके। अगर हम एक व्यक्तिको अनुवादका अधिकार दे दें और यदि कोई और परोपकारी व्यक्ति आगे आये जो अच्छा अनुवाद कर सकता हो तो हम उसे अनुमति क्यों नहीं दें? मेरी यही विचारधारा है। ज्यादा बात तो कभी मिलने और फुर्सत होने पर ही करेंगे। इस बीच अन्तिम निर्णय तो मैं तुम्हारा ही मानना ठीक समझूँगा। क्योंकि मुझसे उतावलीमें कुछ हो जाये और उसका बोझ तुम्हें उठाना पड़े, यह उचित नहीं होगा।

फिनिश भाषामें अनुवाद करने की अनुमति देने का विचार फिलहाल मैंने स्थगित कर दिया है, क्योंकि उसका इरादा मुझे नफा कमाने वाला लगता है।

तुम्हारी ओरसे और खबर आने पर ही 'हरिजन' के सम्बन्धमें कुछ निर्णय लूँगा। क्योंकि जब तक सरकार भी यह न चाहे कि 'हरिजन' प्रकाशित हो तब तक उसे प्रकाशित करने में खतरा है। मुझे लगता है कि इस सम्बन्धमें तुम्हारे साथ बात कर चुका हूँ।[1] सरकारके प्रतिबन्ध हटा लेने-भरसे हमारे 'हरिजन' प्रकाशित करने की बात ठीक नहीं लगती। इस विषयमें भाई मावलंकरसे और यदि सरदार वहाँ हों तो उनसे बात करके मुझे लिखना। हमें जल्दीमें कोई कदम नहीं उठाना चाहिए।

'रचनात्मक कार्यक्रम' का संस्करण मिल गया है। तुम्हारी लिखी यह बात ठीक है कि प्रतियोंका हिसाब तुम्हारे पास रहे और तुम्हें नियमित रूपसे पैसा मिलता रहे तभी तुम अधिक प्रतियाँ भेज सकोगे और भेजनी भी चाहिए। अभी तो और

१. देखिए पृ० ७४-७५।

प्रतियाँ न भेजना। यहाँके दो समाचारपत्रोंने पूरी नकल प्रकाशित की है। तुम जिस भाषामें प्रकाशित करना चाहो उस भाषामें प्रकाशित करना।

आमुख और मूल्यके बारेमें तुमने पूरा स्पष्टीकरण दिया है।

'भजनावली' के सम्बन्धमें चि० कनु तुम्हें अलगसे लिखेगा और जब तक उससे पूरी सामग्री न मिल जाये तब तक नया संस्करण प्रकाशित नहीं करना।

राजेन्द्रबाबूने जो अनुवाद भेजा है उसे तुम प्रकाशित करो तो मुझे अच्छा लगेगा। इसके विषयमें भाई किशोरलाल और नरहरिके साथ भी चर्चा कर लेना।

राष्ट्रभाषाका कोश मेरे साथ-साथ घूमता रहता है। महादेवभाईकी 'गीता' के आमुखकी बात मैं भूला नहीं हूँ। मद्रास जाने से पहले यदि यह कार्य पूरा हो सका तो मुझे खुशी होगी। लेकिन यह सब भगवानके हाथमें है। मैं तो जितना मुझसे रोज बनता है उतना काम करके सन्तुष्ट हो लेता हूँ। मैं सब चीजों को पूरा नहीं कर पाता। इसमें मैं अपनी कार्यदक्षताका अभाव देखता हूँ। यदि यह दोष दूर न हुआ तो मैं १२५ वर्ष तक जीवित रहने का अपना निश्चय पूरा नहीं कर सकूँगा। अब जो हो सो हो।

'नेशन्स वॉयस' फिरसे प्रकाशित करना उचित जान पड़े तो प्रकाशित करना।

'रचनात्मक कार्यक्रम' में गो-सेवाके सम्बन्धमें और कुछ लिखने का तुम्हारा सुझाव अच्छा है। मैं उसे "पशु-सुधार" के अन्तर्गत मानकर चलूँगा। मैं मानता हूँ कि यह चीज रचनात्मक कार्यक्रममें छूटनी नहीं चाहिए थी। अब दूसरे संस्करण के समय इसका ध्यान रखा जायेगा। यदि तुम्हारी वर्तमान संस्करण तुरन्त खप जाये और तुम्हें कुछ संशोधन-परिवर्धन सूझे तो वह भी बताना।

मैं १९ तारीखको यहाँसे रवाना होकर २१ तारीखको मद्रास पहुँचूँगा। मेरा पता होगा: दक्षिण [भारत] हिन्दी प्रचार समिति, त्यागरायनगर, मद्रास। वहाँ ज्यादासे-ज्यादा पन्द्रह दिन लगेंगे। यदि जल्दी काम खत्म कर सका तो करूँगा। बादमें ८ तारीखको सेवाग्राम। एक दिन बम्बई रहकर २१ तारीख को पूना जाऊँगा।

बापूके आशीर्वाद

[पुनश्चः]

दुबारा नहीं पढ़ा है।

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ९९६२) से। सी० डब्ल्यू० ६९३६ से भी; सौजन्य: जीवणजी डा० देसाई

५७९. तार : मोटुरी सत्यनारायणको

एक्सप्रेस

सोदपुर
१६ जनवरी, १९४६

सत्यनारायणजी
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा
त्यागरायनगर (मद्रास)

खेद है कि इक्कीससे पहले नही पहुँच पाऊँगा। तेईस तारीखसे पहले कोई कार्यक्रम निश्चित न करना। अपना सामान्य कार्य करते रहो। ऐसा मत समझना कि मैं किसी विशेष ट्रेनसे आऊँगा।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५८०. पत्र : आर० जी० केसीको

सोदपुर
१६ जनवरी, १९४६

प्रिय मित्र,

आपके दो कृपा-पत्र मिले हैं। १८ तारीखको शामके साढ़े सात बजे आपसे, कदाचित आखिरी बार (हालांकि मैं उम्मीद करूँगा कि ऐसी बात न हो) मिलकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी।

मुझे खुशी है कि आपने दोनों भयंकर दुर्घटनाओं[1] के सम्बन्धमें तत्परतासे उचित कारंवाई की है।

ऐसा लगता है, नमकके प्रश्नपर मैं अपनी बात स्पष्ट नहीं कर पाया हूँ। लेकिन लिखित तर्क प्रस्तुत करके मैं आपको कष्ट नही दूँगा। शुक्रवारको मिलने पर समय रहा तो इस विषयपर बातचीत करूँगा।

हृदयसे आपका,
मो० क० गांधी

[अंग्रेजीसे]
गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७, पृ० १३१

१. चटगाँव और डायमण्ड हारबरकी; देखिए पृ० ४३० और ४५०।

५८१. पत्र : चक्रवर्ती राजगोपालाचारीको

सोदपुर
१६ जनवरी, १९४६

प्रिय सी० आर०,

यहाँसे १९ को चलकर एक बड़ी मण्डलीके साथ २१ को वहाँ पहुँचूँगा। यदि सम्भव हो सके तो मुझे महीनेकी २२ तारीखको ट्रेनमें नहीं होना चाहिए। उस तिथिको बा का निधन हुआ था और उस दिन हम 'गीता' पारायण करते हैं। २१ और २२ ये दो तारीखें निजी और जरूरी मुलाकातोंके लिए ही होंगी। अभी तो सिर्फ शास्त्री[1] का ही ध्यानमें है। नटेशन मुझे मेरे पुराने घर अर्थात् अपने घर ले जाना चाहता है।[2] तुम देख लेना कि क्या करना चाहिए। शेष मिलने पर। आशा है, बहुत कोलाहलपूर्ण प्रदर्शन नहीं होंगे। शोरगुल और अनुशासनहीन भीड़से मुझे उलझन होती है।

स्नेह।

बापू

[पुनश्च:]

संसदीय प्रतिनिधिमण्डलसे २३ फरवरीको मिलने की आशा है।

अंग्रेजीकी फोटो-नकल (जी० एन० २११५) से

१. वी० एस० श्रीनिवास शास्त्री, जो बीमार थे; देखिए पृ० ३६४।
२. देखिए पृ० ४३४।

५८२. पत्र : जहाँगीर पटेलको[1]

सोदपुर
१६ जनवरी, १९४६

भाई जहाँगीर,

तुम्हारा शुद्ध गुजरातीमें लिखवाया हुआ पत्र मिला। मुझे बहुत खुशी हुई। फिर भी यदि हम दिनशाजी का काम करना चाहते हैं और बेहतर काम करने के खयालसे यदि मेरा अंग्रेजीमें लिखना अनुकूल जान पड़े तो मैं वैसा ही करूँगा।

मैं २१ फरवरीके पहले पूना पहुँचने का प्रयत्न करूँगा।

यह तो तुम्हें मालूम हो ही गया होगा कि मैं पैसे भेज चुका हूँ। मुझे केवल इतनी ही चिन्ता है कि क्लिनिक करोड़ों लोगोंको लाभ पहुँचाने लायक बन जाये। अब तक तो यह केवल धनिकोंके लिए ही रही है। लेकिन इन सबके बारेमें तो जब हम मिलेंगे तब विस्तारसे विचार-विमर्श करेंगे। फिलहाल तो तुम जितना कर सको और करवा सको उतना ही काफी है।

श्री जहाँगीर पी० पटेल
पटेल ब्रदर्स, पटेल हाउस
१०, चर्चगेट स्ट्रीट
फोर्ट, बम्बई

गुजरातीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५८३. पत्र : डॉ० एन० बी० खरेको

सोदपुर
१६ जनवरी, १९४६

भाई खरे,

आपका खत मिला। आपने हिन्दुस्तानीमें लिखा और हस्ताक्षर उर्दू लिपि में लिखे उससे तो मुझे बहुत ही आनन्द हुआ।

मलाया ब्रह्मदेशमें आप क्या करते हैं और क्या कर सकेंगे; उसे मैं देख रहा

१. यह पत्र देवनागरी लिपिमें है।

हूं। और चाहता हूं कि अच्छा ही हो। मलाया-ब्रह्मदेशमें डॉ० [विधानकी सेवा-मंडलीके जाने में क्या हर्ज है?[1]

कांग्रेसके बारेमें आपने लिखा है वह मैं समझा। इस बारेमें मैं ज्यादा लिखना नहीं चाहता हूं।

आपका,
मो० क० गांधी

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० ४८७१) से। सौजन्य : डॉ० एन० बी० खरे

५८४. पत्र : जी० रामचन्द्र रावको

सोदपुर
१६ जनवरी, १९४६

भाई रामचन्द्र राव,

आपका खत मिला। अच्छा लगा है। मनोरमाका विवाह हरिजनके साथ करने का निश्चय हुआ वह भी अच्छा लगता है। लेकिन जो अनुमान नास्तिकताके पक्षमें निकालते हैं, वह सही नहीं है, अथवा आपकी नास्तिकता आस्तिकताका रूप लेती है—[जैसे मैं मानता हूं।

शादी मैं सेवाग्राम आश्रममें कराने के लिए तैयार हूं। और विधि जो मैंने तेंदुलकरके लिए रखी वही रखूंगा। और विधि कराने वाला मेरी देखभालके नीचे हरिजन ही होगा। इसमें आप कुछ कहना चाहें तो कहेंगे। एक बात है—मनोरमाकी आयु १७ साल ही है, शायद वह लड़की मुझे याद भी है। कमसे-कम वह दो वर्ष तक ठहरे ऐसी मेरी सूचना [सलाह] है। अगर ऐसा सोचा है कि विधि आज कर लें और लड़कीकी आयु १९ होने के बाद वह पतिके साथ रहे, तो मेरी सलाह है कि पतिके साथ रहने लायक बने तब ही विवाह विधि करें। दरम्यान दोनों जो अधिक सीखना चाहिए वह सीख लें। कमसे-कम हिन्दुस्तानी दोनों लिपिमें अच्छी तरहसे कर लें। और चर्खाकी अगली पिछली सब क्रिया।

बापूके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ९१९४) से

१. देखिए पृ० ४०३।

५८५. पत्र : मद्रास कपड़ा मजदूर संघके मन्त्रीको

सोदपुर
१६ जनवरी, १९४६

मंत्रीजी,

मेरा इरादा किसी भी सभामें जाकर बोलने का नही है। जो मैंने आज तक कबूल कर लिया है, उसके बाहर कुछ भी करने की इच्छा नही और शक्ति भी नही। आपको जानना चाहिए कि वो दिन जब मैं कही भी चला जाता था और कितनी ही सभाओंमें बोलता था, चले गये। इसलिये आप मुझे माफ करेंगे। मेरेसे मिलने के लिये आप श्री सत्यनारायणसे पूछें।

मो० क० गांधी

मंत्री
मद्रास लेबर यूनियन फॉर टेक्सटाइल वर्कर्स

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

५८६. पत्र : अवधनन्दनको

सोदपुर
१६ जनवरी, १९४६

भाई अवधनंदन,

तुम्हारा खत मिला। पहला हस्ताक्षर हम कोई पढ़ नहीं सकते हैं दूसरे और तीसरे ही ठीक है। मेरा ख्याल है कि हमारे हस्ताक्षर जब स्पष्ट नहीं रहते हैं तब सामने या नीचे स्पष्टतया हरेक अक्षर लिखने चाहिये। अंग्रेजोंमें हस्ताक्षर खसुसन न पढने लायक ही करते हैं। उसका अनुकरण हम क्यों करे? यदि करे तो आज जो प्रथा निकली है वह भी करें — अर्थात् नीचे शुद्ध अक्षरमें लिखें।

जो शिकायत तुमने की है वह यदि सही है तो सोचने लायक है। लेकिन तब आपका खत सत्यनारायणको दिखाने की इजाजत होनी चाहिये। आप लोगों को बात करने के लिये मैं वक्त देने की चेष्टा करुंगा।

पत्रकी नकलसे: प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य: प्यारेलाल

५८७. पत्र : टी० जे० केदारको

सोदपुर
१६ जनवरी, १९४६

भाई केदार,

आपका ता० १२-१-१९४६ का खत मिला। मुझे बहुत आनंद हुआ। देखें क्या होता है।

मैं ८ तारीखको सेवाग्राम पहुंचने की आशा रखता हूं। वहां १० दिन ठहरुंगा, पीछे पूना।

श्री तु० ज० केदार
ऐडवोकेट
नागपुर

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५८८. पत्र : मोटुरी सत्यनारायणको

सोदपुर
१६/१७ जनवरी, १९४६

भाई सत्यनारायण,

तुमको कल तार दिया है। मैंने तुमको कहा था कि नहीं कि २३ की आगे पहुंचने की कोशिश करुंगा? तब २२ तारीख बा की मृत्युतिथि है सो तो ख्याल नहीं रहा। चि० कनुने [बता] दिया। इसलिये २१ को वहां पहुंचने का निश्चय किया। और २३ को वहां पार्लीमिन्टके लोग होंगे उनसे मिलने का भी है। इसलिये भी एक दिन आगे तो वहां मुझको पहुंचना ही चाहिये। मेरी उम्मीद है कि मेरे दो दिन आगे आने में आप लोगोंको तकलीफ नहीं होगी। राजकुमारीने फोनपर वार्ता की वह समझ गये होंगे। खास ट्रेनके बारेमें तुम्हारा कोई खत नहीं आया। खास ट्रेनका खर्चा करना निरर्थक है। अगर खास ट्रेनसे दूसरोंको लाना है तो दो दिन आगेसे क्या लाना? दूसरोंके लाने के लिये खास ट्रेन करें वह दूसरी

बात है — जो उचित जंचे वह करो। उसका अर्थ यह है कि हरेक अपना अपना खर्चा दे देगा तो खास ट्रेन करने में कोई हानि नहीं है।

मेरे साथ २२ लोग होंगे। २-३ बढ़ भी जायेंगे। नामकी फेहरिस्त[1] साथमें है। बापा वहां आयेंगे। [उन्हें] मेरे साथ ही रखना। वे खुद भी [यही] चाहते हैं। देख लेना अगर लोग ज्यादे हो जायं तो दूसरी जगहपर रखने का हो सकता है। लेकिन मैं चाहूंगा यह कि मेरे साथवाले सब साथ ही रह सकें तो अच्छा है।

बापुके आशीर्वाद

[पुनश्चः]

१७ जनवरी, १९४६

जिस खतके बारेमें तार था आज मिला। लेकिन उपर [जो लिखा] है तो काफी है।

श्री सत्यनारायणजी
द्वारा हिन्दी प्रचार सभा
त्यागरायनगर, मद्रास

पत्रकी नकलसे प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५८९. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
१७ जनवरी, १९४६

गांधीजी ने कहा कि शुक्रवार[2] इस बारके मेरे सोदपुर-निवासका अन्तिम दिन होगा। इस आश्रममें रहने और आप सबके साथ प्रार्थना करने की आकांक्षा मेरे हृदयमें हमेशा रहती है। मैं अपने दौरोंके कारण यहाँ लगातार नहीं रह पाया। किन्तु मेरे दौरोंके अच्छे परिणाम निकले हैं। मुझे आशा है कि यहाँके लोग सामूहिक प्रार्थनाकी रीति कायम रखेंगे।

गांधीजी ने कहा कि आप सब लोगोंको मिलकर और पूरे हृदयसे सुर मिलाकर भजन गाना चाहिए। मैं आपको पहले भी बता चुका हूं और फिर बताता हूं कि सैनिकोंको एक साथ कदमसे-कदम मिलाकर चलना पड़ता है। आरम्भमें तो उन्हें इस प्रकार चलवाने में कुछ दबावका इस्तेमाल किया जाता है, किन्तु जैसे-जैसे उन्हें इसका अभ्यास होता जाता है, दबावका भी अन्त होता जाता है, और उनकी चेष्टाएं सुगम और आसान हो जाती हैं। सैनिकोंको तो बर्खास्तगीका भय दिखाकर अनुशासित रहने के लिए मजबूर किया जाता

१. यह उपलब्ध नहीं है।
२. १८ जनवरी

है, किन्तु प्रार्थनाके मामलेमें सबके ईश्वर-भक्त होते हुए भी किसीको सुर में या समवेत रूपमें गाने के लिए बाध्य करने का कोई सवाल ही नहीं उठता। लेकिन यह तो आपके अपने ही हितमें है कि आप प्रार्थनामें सम्मिलित हों, और यदि आप एक सुरमें ईश्वरका नाम लेंगे तो आपके हृदयकी शुद्धि होगी और हृदयमें नवीन शक्तिका संचार होगा। ईश्वरके भक्त बनने का आपको यही पुरस्कार मिलेगा।

सभामें गाये गये भजनके सम्बन्धमें गांधीजी ने कहा कि इसमें भक्तका निवेदन है कि वह अपने सांसारिक कर्तव्योंके माध्यमसे ईश्वरका अभिवादन करेगा। ईश्वर ही तो हमारा सच्चा मित्र है और हमारा पिता है, वही हमारी माता है, बल्कि यों कहें कि हमारा सर्वस्व है। हमारे सांसारिक मित्र और सम्बन्धी तो मृत्युको प्राप्त हो जाते हैं, किन्तु ईश्वर अमर है। वह कभी भी हमारा साथ नहीं छोड़ता। इसलिए यह भजन हमें बड़ी सटीक रीतिसे सिखाता है कि हम ईश्वरको याद रखें, जो जीवनके हर क्षेत्रकी हमारी गतिविधियोंमें हमारा चिरन्तन मित्र है। यह भजन यह भी बताता है कि हम अपना अन्तरचक्षु खुला रखें क्योंकि इसी चक्षुसे तो हम ईश्वरके दर्शन कर सकते हैं।

गांधीजी ने भाषणके अन्तमें कहा कि आज भजनसे हमें ऐसा बहुत कुछ प्राप्त हुआ है जिसका हमारे सामान्य जीवनमें बहुत मूल्य होगा। हम सबको इस भजनकी शिक्षाएँ हृदयमें उतार लेनी चाहिए। यदि प्रार्थनामें शामिल होने के बाद आप लोगोंके हृदयमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ और आप यों ही घर वापस लौट गये तो समझिए कि आप अपने जीवनमें एक बड़ी चीजसे वंचित रह जायेंगे।

[अंग्रेजीसे]

अमृतबाजार पत्रिका, १८-१-१९४६

५९०. पत्र : अमृतलाल चटर्जीको

सोदपुर
१८ जनवरी, १९४६

चि० अमृतलाल,

तुम जानते है ना कि बीमार पड़ना गुनाह है? बीमार होकर अच्छे होने का इलाज न करना दोगुना गुनाह है।[1] इसलिये शीघ्र अच्छे हो जाओ। तुमारा स्थान वर्धामें है। वह भी छुटा। अब तो अच्छे होकर ही जा सकते है।

बापुके आशीर्वाद

पत्रकी फोटो-नकल (सी० डब्ल्यू० १०४१३) से। सौजन्य : अमृतलाल चटर्जी

५९१. बातचीत : चटगाँवके कांग्रेसजनोंके साथ

१८ जनवरी, १९४६

चटगाँवके कई कांग्रेसी नेताओंने सोदपुर आश्रममें गांधीजी से मिलकर १९४२ से इस जिलेकी जो हालत रही है उसके बारेमें, खासतौरसे युद्ध-कालीन अर्थ-व्यवस्था और जिन लोगोंसे बस्तियाँ खाली कराई गई थीं, उन्हें फिरसे बसाने के सम्बन्धमें, लगभग एक घंटे चर्चा की।

इन नेताओंने गांधीजी से कसाईपाड़ाकी हालकी घटनाके विषयमें भी चर्चा की। गांधीजी ने कहा कि जिन लोगोंसे बस्तियाँ खाली करवाई गई उन्हें फिरसे बसाने की समस्याकी ओर तो मैं काफी समयसे ध्यान दे रहा हूँ। उन्होंने उन लोगोंसे इस सम्बन्धमें पत्र-व्यवहार करने को कहा और बताया कि अगर अठारह-सूत्री रचनात्मक कार्यक्रम पूरा किया जाये तो यह समस्या हल हो सकती है।

[अंग्रेजीसे]
हिन्दुस्तान टाइम्स, २१-१-१९४६

१. अमृतलाल चटर्जीको पेचिश हो गई थी और उसका डाक्टरी इलाज कराने से उन्होंने इन-कार कर दिया था।

५९२. भाषण : प्रार्थना-सभामें

सोदपुर
१८ जनवरी, १९४६

गांधीजी ने कहा, मुझे दुःख है कि इस दौरेपर तो आज मैं प्रार्थना-सभामें अन्तिम बार बोल रहा हूँ। फिर कब बंगाल आ पाऊँगा, यह तो ईश्वर ही जाने। मेरा चटगाँव जाने का इरादा था और मैं मुन्शीगंज भी जाना चाहता था, लेकिन अपनी यह इच्छा पूरी नहीं कर सकता। महात्मा गांधीने आगे कहा :

अपने इस प्रवासके दौरान यद्यपि मैं जैसा चाहता था उसके अनुसार बंगाल के विभिन्न हिस्सोंमें नहीं जा सका, फिर भी मैं यही कहूँगा कि मैं बंगालमें थोड़ा-बहुत जो भी कर पाया उससे मैं सन्तुष्ट हूँ। मेरा सिद्धान्त मुझे यह सिखाता है कि अगर मैं दस मोर्चोंपर जूझ रहा हूँ और एकपर भी सफल हो जाऊँ तो उतनेमें ही सन्तोष मानूँ।

चटगाँवकी घटनाका जिक्र करते हुए गांधीजी ने कहा कि इस सवालपर दूसरोंके दोष निकालने से कोई फायदा होने वाला नहीं है। हमें खुद अपने गिरेबान में झाँककर देखना चाहिए। हमेशा दूसरोंके दोष निकालते रहने से तो खुद हमारे ही दोषी हो जाने का खतरा है, ऐसा हमें याद रखना चाहिए। अगर हमेशा दोष निकालना हमारी आदत बन गई तो हम कभी किसीकी सेवा नहीं कर पायेंगे। तुलसीदासने अपनी अद्वितीय शैलीमें यह बात बिलकुल स्पष्ट बता दी है कि जड़ या चेतन कोई पदार्थ ऐसा नहीं है जिसमें सिर्फ दोष-ही-दोष या गुण-ही-गुण हों। गुण-दोष तो हमें थोड़े-बहुत हर वस्तुमें दिखाई देंगे, और कथा-कहानियोंमें वर्णित हंसकी तरह हमें हर पदार्थके दोषको छोड़कर गुणको ही अपनाना चाहिए। इसीमें हमारी भलाई है। कविकी इस नैतिक शिक्षाको याद रखें और तदनुरूप आचरण करें। अगर आपका ध्यान हमेशा धब्बोंकी ओर लगा रहेगा तो आपके हाथमें भी धब्बे लग जायेंगे। इसलिए अपने ही कल्याणके लिए दोष निकालने की आदत छोड़ देना ही ठीक है। चीनमें एक स्तम्भ है, जिसमें तीन बन्दर बने हुए हैं: एकने अपनी आँखें बन्द कर रखी हैं, दूसरेने कान और तीसरेने मुँह। इससे यही शिक्षा मिलती है कि बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो, बुरा मत बोलो। ये चीनी प्रतीक जो शिक्षा देते हैं उसे आप सब लोग हृदयमें उतार लें।

सामूहिक प्रार्थनाकी आवश्यकता समझाते हुए गांधीजी ने कहा कि मुझे आशा है, अपने-अपने घर लौटकर आप अपने परिवारके सदस्यों तथा बच्चोंके साथ

मिलकर प्रार्थना किया करेंगे। सिनेमा और थियेटर तो आप अक्सर जाते हैं, लेकिन ये दोनों चीजें किसी भी हालतमें हमारा उतना कल्याण नहीं कर सकतीं जितना कि सामूहिक प्रार्थना कर सकती है। मैं खुद भी लन्दनमें एक प्रसिद्ध थियेटर देखने गया था और मैं व्यक्तिगत अनुभवसे कह सकता हूँ कि उससे मुझे कोई लाभ नहीं हुआ। कोई नाटक जो थोड़ा-बहुत ऐतिहासिक ज्ञान दे सकता है उससे सामूहिक प्रार्थनाकी तुलना करते हुए गांधीजी ने कहा कि सामूहिक प्रार्थना नाटकसे हजारों गुना अधिक लाभदायक है। रंगमंच हमें क्या सिखा सकता है? जो यथार्थ नाटक यह विश्व प्रस्तुत करता रहता है उसके समक्ष उसकी क्या बिसात है? मैंने रंगमंचपर नायककी भूमिका अभिनीत करते देखी है। क्या मेरी कल्पनाके रामका अभिनय रंगमंचपर किया जा सकता है? जैसे दुःखान्त दृश्य हमें विश्व रंगमंचपर देखने को मिलते हैं वैसा यथार्थ और प्रभावपूर्ण क्या किसी भी रंगमंचपर अभिनीत दुःखान्त नाटक हो सकता है? माताएँ घरोंकी व्यवस्था सँभालने वाली देवियाँ हैं और वे बच्चोंका लालन-पालन करती हैं, इसलिए खास तौरसे उनसे मेरा अनुरोध है कि वे अपने बच्चोंका ईश्वर और दिव्यतासे परिचय करायें और शाश्वत आनन्दसे परिपूर्ण भजनोंसे अपने घरोंको सुशोभित करें।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, १९-१-१९४६

५९३. पत्र : घनश्यामदास बिड़लाको

सोदपुर
[१९][1] जनवरी, १९४६ [या उसके पूर्व]

चि० घनश्यामदास,

यह खत कन्या गुरुकुलसे मिला है। विचार किया कि तुमको ही भेज दूं। मैं नहीं जानता क्या उचित है।

बापूके आशीर्वाद

मूल पत्र (सी० डब्ल्यू० ८०७६) से। सौजन्य : घनश्यामदास बिड़ला

१. साधन-सूत्रमें तारीख धुँधली पड़ गई है। गांधीजी सोदपुरसे इसी दिन रवाना हुए थे।

५९४. तार : सुचेता कृपलानीको

१९ जनवरी, १९४६

कोई तार नही मिला। मैं खुद तुम्हारे विधान-मण्डलमें जाने के खिलाफ हूँ।

बापू

अंग्रेजीकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स। सौजन्य : प्यारेलाल

५९५. पत्र : सुचेता कृपलानीको

सोदपुर
१९ जनवरी, १९४६

चि० सुचेता,

तेरा अल्लाहाबादसे भेजा हुआ खत मेरे सामने है। प्रातःकालकी प्रार्थना के बाद यह लिखवा रहा हूं। आज ढाई बजे मद्रासके लिए कुछ [कूच] करूंगा।

तेरा रिपोर्ट अच्छा है। दिल्लीके बारेमें और प्रतिनिधित्वके प्रश्नपर मैंने बापाको लिखा है। मेरा विचार ऐसा बन रहा है कि जिस जगहपर हमको प्रतिनिधि न मिल सके वहां [मिलने] तक ठहरना और वह काम केन्द्रके मारफत करना। ऐसा करके [चलें तो] हमें स्त्रियोंको प्रतिनिधित्वके लिए[1] कोई रुकावट नहीं आ सकती है। इस दृष्टिसे मेरी भावना यह रहती है कि ब्रजकृष्णसे सब काम लें, लेकिन उनको बाकायदा प्रतिनिधि न बनावें। अगर यह विचार तुझे पसंद नहीं होगा अथवा बापाको अथवा तुम दोनोंको तो जैसा तुम लोग करोगे ऐसा मैं चलूंगा। जिस कामको मैं खुद नहीं चलाता हूं उसमें मेरी नीति यही रहती है। और यही योग्य है। ऐसा मेरा विश्वास है। इसलिये तेरा स्वतन्त्र अभिप्राय मुझे भेज दो।

यू० पी० के बारेमें मैं पूर्णिमा[2] से पत्रव्यवहार चला रहा हूं। कोई निर्णय मैंने नहीं किया है। इस नियुक्तिके बारेमें दूसरा प्रश्न उठा है। जो ऐसेम्बली के चुनावमें जाय वह प्रतिनिधि भी रह सकती है क्या? हमारे पास ऐसे ३-४ केस पड़े हैं। दुर्गाबाई, कालीकटवाली बाई (नाम भूल गया हूं), रामेश्वरीदेवी और

१. अर्थात् स्त्रियोंको प्रतिनिधि रखने के कारण
२. पूर्णिमा बनर्जी

शायद पूर्णिमा भी। मेरा ख्याल है कि जो प्रतिनिधि होती हैं उनको ऐसेम्बलीमें जाना और प्रतिनिधिका कार्य पूरा करना अशक्य नहीं तो कठिन तो है ही। और हमारी प्रतिनिधि ऐसेम्बलीमें है ऐसा ज्ञान भी देहाती बहिनोंको विम्हल [विह्वल] बनाने का संभव है। तेरा अभिप्राय भेज दे। मद्रास आने वाली है क्या? बापा आने वाले हैं। तू आ सकती है। आवेगी तो रहने का प्रबन्ध मैं कर लूंगा।

बापुके आशीर्वाद

श्री सुचेता कृपलानी
स्वराज भवन
इलाहाबाद

पत्रकी नकलसे : प्यारेलाल पेपर्स : सौजन्य : प्यारेलाल

५९६. पत्र : मुन्नालाल गंगादास शाहको

सोदपुर
१९ जनवरी, १९४६

चि० मुन्नालाल,

अभी तो मैं काममें बहुत व्यस्त हूँ। इसलिए तुम्हारे एक-दो पत्रोंका उत्तर नहीं दे पाया हूँ। उनमें कोई विशेष बात नहीं थी। स्थितिमें कुछ सुधार हुआ है, यह अच्छी बात है। लेकिन मैं तुम्हारी कठिनाई समझ गया हूँ। उसे धीरजके साथ ही हल कर सकेंगे। यहाँसे ज्यादा नहीं कर सकता। इतना ही काफी है कि तुम किसी नये खर्चमें न पडो। खादीके बारेमें मैं आकर देख लूंगा।

कचनको तुमने जो लम्बा तार दिया वह मैंने पढ़ा और मुझे स्वीकार करना होगा कि तुम्हें यह नहीं भेजना चाहिए था। बालकृष्णने तुम्हें यह तार देने के लिए कैसे उकसाया सो समझमें नहीं आता। इसे "वेवला" [बेसलीका] व्यक्ति द्वारा दिया गया तार कहा जा सकता है। यदि तुम "वेवला" शब्दका अर्थ जानते हो तो तुम मेरी बात अच्छी तरहसे समझ गये होगे। "वेवला" की अंग्रेजी मुझे नहीं आती। प्रत्येक भाषामें कुछेक शब्द ऐसे होते हैं जिनका अनुवाद हो ही नहीं सकता। वही बात "वेवला" के बारेमें भी कही जा सकती है। इसे विनोद समझना, भर्त्सना तनिक भी नहीं। आने की इच्छा होने पर मैंने तो तुम्हें आने की अनुमति दी थी। अब तो कंचन अच्छी है और यदि वह स्वयं अपनी हठ छोड़ देगी तो इस बीमारीसे खूब लाभ उठायेगी। आज मैं मद्रास रवाना होने वाला हूँ। कंचनको ले जाऊँगा अथवा नहीं, यह निश्चित नहीं है। डॉक्टर विधानने एक्सरे

करवाया है। यदि रिपोर्ट अच्छी हुई तो सुशीलाबहन कहती है कि उसे ले जाया जा सकता है। अभी कंचनको चलने की अनुमति नहीं है।

मणिभाईको भेजने का उद्देश्य यह था कि अवसर आने पर तुम वहाँसे एकदम निकल सको। और अब यदि तुम नहीं आये तो भी मणिभाई तुम्हारे साथ रहकर तालीम ले। अब तो जो हुआ सो हुआ।

इतना तो तय है कि कंचनकी जैसी देखभाल हुई है वैसी एक बादशाह को ही सुलभ हो सकती है। और डॉक्टर भी वैसा ही मिला है जैसा बादशाहको ही नसीब होता है।

जहाँगीरजी का पत्र आया था। उन्होंने लिखा है कि उनसे जितना बनेगा उतना जरूर करेंगे। कंचन मेरे साथ जा रही है।

इसे फिर नहीं पढ़ा है।

बापूके आशीर्वाद

गुजरातीकी फोटो-नकल (जी० एन० ८६१६) से। सी० डब्ल्यू० ७२०२ से भी; सौजन्य : मुन्नालाल गं० शाह

५९७. पुर्जा

सोदपुर
१९ जनवरी, १९४६

हुगलीमें जो बांध[का]काम हुआ जिससे लोगोंको बड़ा फायदा पहोंचा उसे मैं रचनात्मक कार्यका हिस्सा ही समझता हूं।[1] और ऐसी शोधक शक्ति सब सेवकमें होनी चाहीये।

मो० क० गांधी

पुर्जेकी फोटो-नकल (जी० एन० ८०२८) से। सी० डब्ल्यू० १०५१७ तथा १०५२६ से भी; सौजन्य : रत्नमणि चटर्जी

१. तात्पर्य ग्रामवासियों द्वारा मुण्डेश्वरी नदीपर आराम बागमें सिंचाईके लिए बनाये गये बाँधसे है, जिसका खर्च स्वेच्छासे अदा किये गये महसूलसे पूरा किया गया था।

५९८. भाषण : बालासोरमें[1]

१९ जनवरी, १९४६

गांधीजी ने कहा कि मैं बंगाल और असममें काफी-कुछ बोल चुका हूँ और आपने मेरे भाषण अखबारोंमें पढ़े होंगे। उन निर्देशोंका आप पालन करें। गांधीजी ने हरिजनोद्धारपर जोर दिया और कहा कि मैं चाहता हूँ कि सवर्ण हिन्दू और हरिजन लोग भाइयोंकी तरह मिल-जुलकर रहें। आपने जो अनुशासन दिखाया है उसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ। बलरामपुरमें भी लोगोंने ऐसा ही अनुशासित व्यवहार किया था।

[अंग्रेजीसे]
अमृतबाजार पत्रिका, २१-१-१९४६

५९९. रोजके विचार[2]

१ नवम्बर, १९४५

जीने की मजे जीने की जंजाल छोडने में है।

२ नवम्बर, १९४५

भूतकाल हमारा है, हम भूतकालके नहीं हैं। हम वर्तमानके हैं और भविष्यको बनाने वाले हैं, भविष्यके नहीं।

३ नवम्बर, १९४५

सच्चा सेवक ही सद्गृहस्थ है। वह बदलेमें लेने की इच्छा न करते हुए देता ही है।

१. जब ट्रेन बालासोर पहुँची उस समय गांधीजी सोये हुए थे। लेकिन जब उन्हें बताया गया कि कुछ लोग प्लेटफार्मपर उनसे भेंट करने के लिए अनुशासनपूर्वक खड़े हैं तो गांधीजी दरवाजे तक आये और उन्होंने उनके समक्ष भाषण दिया।

२. आनन्द तो० हिंगोरानीके अनुरोधपर गांधीजी ने उनके लिए २० नवम्बर, १९४४ से "रोज के विचार" लिखना आरम्भ किया और लगभग दो वर्ष तक यह काम जारी रखा। इन विचारोंको आनन्द तो० हिंगोरानीने बापूके आशीर्वाद शीर्षकसे पुस्तकके रूपमें प्रकाशित किया। इस खण्डसे सम्बन्धित अवधिके विचार अन्तिम तिथि १९-१-१९४६ के अन्तर्गत एक ही शीर्षकके रूपमें दिये गये हैं। १ नवम्बर, १९४५ से पूर्वके विचारोंके लिए देखिए इस ग्रन्थमालाके खण्ड ७८, ७९, ८० और ८१।

४ नवम्बर, १९४५

राई जैसा दोष छिपाने से पहाड़ जैसा बनता है। जाहर करने से नाबूद हो सकता है।

प्रतिपदा, ५ नवम्बर, १९४५

श्रद्धा बुद्धीसे परे है, उसकी विरोधी नहीं है।

६ नवम्बर, १९४५

देशों [के] बीचका समुद्र तैरना[1] आसान है, व्यक्तिके बीच या प्रजाके बीच का समुद्र तैरना कठिन है।

७ नवम्बर, १९४५

भोगको मनुष्य नही भुगतता है लेकिन भोग मनुष्यको भुगतता है अर्थात खा जाता है।

८ नवम्बर, १९४५

सब अपने समयपर वृद्ध होते हैं। एक तृष्णा हमेशा युवा ही रहती है।

९ नवम्बर, १९४५

अनासक्तिके साथ अनियमितताका मेल कभी नहीं जमता है।

१० नवम्बर, १९४५

जो मनुष्य शरमके मारे विवेक बताता है वह सचमुच अविवेकका प्रदर्शन करता है।

११ नवम्बर, १९४५

जिनको धर्मका ख्याल नही रहता है ऐसे दस प्रकारके लोगोंमें लोभी, कामी, क्रोधी और शराबी लोगोंको विदुर गिनाते हैं।

१२ नवम्बर, १९४५

त्याज्य वस्तु मुफ्त मिले तो भी न लेना कर्तव्य है।

१३ नवम्बर, १९४५

अपना दोष दूसरे [के] न जानते हुए जो अपने-आप प्रगट करता है और लज्जित होता है उसे दूसरा कोई लज्जित नहीं कर सकता है।

१४ नवम्बर, १९४५

निर्दोष और निःस्वप्न निद्रा समाधि है, योग है, अनासक्त कर्म है। (विनोबा के खतके आधारपर)

१५ नवम्बर, १९४५

सच्चे भक्तके लिये कुछ भी अशक्य नही है।

१. इस वाक्यको गांधीजी ने गुजरातीमें लिखना आरम्भ किया था और "देशो वच्चेनो समुद्र ओळंगावो" तक लिखने के बाद वाक्यको हिन्दीमें पूरा किया; साथ ही गुजराती वाक्यांशका हिन्दी पर्याय भी ऊपर लिख दिया।

१६ नवम्बर, १९४५

भक्त भगवानमें लीन होता है।

१७ नवम्बर, १९४५

जो भगवानमें लीन है वह भगवानके बाहर किसीमें या किसी चीजमें लीन नहीं हो सकता।

१८ नवम्बर, १९४५

कहते हैं घर जलाकर तीर्थ नहीं होता। सही तो यह है कि घर जलाकर ही तीर्थ होता है।

१९ नवम्बर, १९४५

बदुकका भय बंदुक फुटने [छूटने] पर मिट जाता है। प्रेमका बंधन बढ़ता ही जाता है फिर भी बंधन ही नहीं लगता।

२० नवम्बर, १९४५

मनुष्यके सच्चे दुश्मन छे होते हैं। काम, क्रोध, मोह, मद, मान, शोक। इनको जीतने से औरोंको जीतना आसान बात हो जाती है।

२१ नवम्बर, १९४५

बूरा काम करना तो सब मानते हैं मोह है, अज्ञान है। लेकिन अच्छा काम करने के लिये बुरा काम करना[1] अच्छा समजा जाय, वह उससे भी गाढ़ मोह या अज्ञान कहा जाय।

२२ नवम्बर, १९४५

मनुष्य अगर अपनी शक्तिके बाहर काम न ले तो गभराहटको स्थान ही नहीं रहता।

२३ नवम्बर, १९४५

जो मनुष्य एक वस्तु नहीं समजता है उसे करने के लिये उसे मजबूर करना सख्त सजासे अधिक सजा है।

२४ नवम्बर, १९४५

मैं एक आदमीको देखता हुं और मानता हू मेरा भाई है और प्रेम करता हू। बादमें पाता हूं कि वह मेरा भाई नहीं है। वह तो है सो है तो उसका त्याग करता हूं। इसमें दोष किसका?

१. अर्थात् बुरे साधनसे काम लेना

२५ नवम्बर, १९४५

जिस वस्तुका चिंतवन हो नही सकता उसके बारेमें तर्क वितर्क करना फिजुल नहीं तो क्या?

२६ नवम्बर, १९४५

जब दीवाना जैसा हमारे सामने आवे और जगहका, खाने का कब्जा ले तब क्या किया जाय? अहिंसक क्या उपाय है? सरल जवाब तो है कि प्रेमपूर्वक कब्जा लेने दें और खाने दें।

२७ नवम्बर/३ दिसम्बर, १९४५

जो मजदुरी नहीं करता लेकिन खाता है वह चोरीका अन्न खाता है।

२८ नवम्बर/३ दिसम्बर, १९४५

जब तक एक भी मनुष्य काम नही होने के कारण भूखों मरता है तब तक कौन चैनसे खा सकता है?

२९ नवम्बर/३ दिसम्बर, १९४५

तुमारे जेबमें एक पैसा है वह कहांसे और कैसे आया है वह अपनेसे पूछो। उस कहानी सें बहूत सीखोगे।

३० नवम्बर/३ दिसम्बर, १९४५

जिसको रोटी न मिलने से मरना है उसे तो ईश्वर रोटीमें ही देखने में आवेगा।

१ दिसम्बर, १९४५/३ दिसम्बर, १९४५

नंगोंको कपड़ा देकर उनकी नदामत क्या करना? उनको काम दो जिससे वह निजी परिश्रमसे कपड़ोंके लिये धन पैदा करे।

२/३ दिसम्बर, १९४५

जो शरीर श्रम कर सकते हैं उनके लिये सदाव्रत खोलना पाप है। उनके लिये काम पैदा करना पुण्य है।

३ दिसम्बर, १९४५

जो श्रद्धा कभी बुझती नहीं है मगर बढ़ती है वह अनुभवका रूप लेती है।

४ दिसम्बर, १९४५

सौंदर्य चेहरेके रंगमें नहीं है लेकिन सत्यमें ही है।

५ दिसम्बर, १९४५

मनुष्य एक शासनके तावे रहता है उसके मानी है कि वह व्यक्तिगत स्वातंत्र्यकी किमत देता है।

६ दिसम्बर, १९४५

जब शासन ऐसा खराब रहता है कि उसके तावे नही रहा जाता है तब व्यक्तिगत स्वातंत्र्यका त्याग करके भी मनुष्य अहिंसक विरोध करता है।

७ दिसम्बर, १९४५

सच्च तो यह है कि जितने आदमी हैं इतने धर्म हैं लेकिन जब आदमी अपने धर्मकी जड़ तक पहोंचता है तो देखेगा कि धर्म तो एक ही है।

८ दिसम्बर, १९४५

साधनका हम ख्याल रखें तो साध्य हमारे पास ही है। यानी साधन और साध्यके बीच अंतर ही नहीं है ऐसे कहा जाय।

९ दिसम्बर, १९४५

भूल कबूल करना झाडुके समान है। झाडु गंदकी साफ करता है, भूल का स्वीकार कम काम नहीं देता।

१० दिसम्बर, १९४५

एक संपूर्ण पुरुष असत्यको दूर कर सकता है, भले असत्य कहने वाले अनेक हों।

११ दिसम्बर, १९४५

हिंसक कार्यकी मर्यादा है और वह निष्फल हो सकता है। अहिंसाकी मर्यादा है ही नही और कभी निष्फल नही जाती।

१२ दिसम्बर, १९४५

श्रद्धाकी परीक्षा सबसे कठिन अवसरपर होती है।

१३ दिसम्बर, १९४५

हिंसा दुर्बलका शस्त्र है। अहिंसा सबलका।

१४ दिसम्बर, १९४५

जो मनुष्य अपनापनकी रक्षा करना चाहता है उसे सब आर्थिक वस्तु गंवाने की तैयारी रखनी है।

१५ दिसम्बर, १९४५

जो धर्म इस लोककी बातको छोडता है और परलोककी ही बात करता है वह धर्म नहि हो सकता है।

१६ दिसम्बर, १९४५

जो जबरन गरीब है वह स्वेच्छासे गरीब नही बन सकता है।

१७ दिसम्बर, १९४५

पवित्रता परदेमें नहीं रहती। उसे रक्षा ईश्वरकी ही चाहिये।

१८ दिसम्बर, १९४५

धर्म पालनमें से जो अधिकार निकलता है वही स्थिर रहता है।

१९ दिसम्बर, १९४५

[जब तक] सोना और हीरा जमीनकी आंतोंमें पड़ा है तब तक किसीके उपयोग का नहीं है। मनुष्यकी मेहनत उसे जमीनमें से निकालती है और सोना हीरा बनाती है। इस दृष्टिसे उसे बनाने वाला मजदुर है।

२० दिसम्बर, १९४५

जैसे मुझे खाने पहनने का हक है उसी तरह मुझे अपना काम अपने ढंगसे करने का हक्क है। वही स्वराज है।

२१ दिसम्बर, १९४५

किसीके विचार जानने की इच्छा न रखना, न उसपर अपना अभिप्राय बनाना। अपना विचार स्वतंत्र रूपसे करना निर्भयताका लक्षण है।

२२ दिसम्बर, १९४५

जब हमारा रक्षक और साथी परमेश्वर है तो कितना भी तुफान हो, कितना भी अन्धकार हो हम क्यों और किससे डरें?

२३ दिसम्बर, १९४५

संपूर्ण अहिंसामें द्वेषका संपूर्ण अभाव होता है।

२४ दिसम्बर, १९४५

अहिंसामें सबका भला रहता है, नही कि सबसे अधिक संख्याका ही भला। सबका भला सिद्ध करने के लिये आवश्यकता होने से अहिंसकको मरना है।

२५ दिसम्बर, १९४५

प्रार्थनाके लिये हृदय आवश्यक है, वाचा नही। बगैर हृदयकी वाचा निरर्थक है।

२६ दिसम्बर, १९४५

पवित्रता बाहरकी रक्षा मांगती ही नहीं है।

२७ दिसम्बर, १९४५

हमारा सबसे बड़ा शत्रु विदेशी नही है, न कोई दूसरा। हमारा शत्रु हम ही हैं अर्थात हमारी वासना।

२८ दिसम्बर, १९४५

जो किसीकी गुलामी करना नहीं चाहता है उसे ईश्वरकी गुलामी करना है।

२९ दिसम्बर, १९४५

हिंसा त्याज्य है क्योंकि उससे [जो] लाभ होता लगता है, वह आभास है, नुकसान होता है वह कायमी है।

३० दिसम्बर, १९४५

मनुष्य अपने विचारका पुतला है।

३१ दिसम्बर, १९४५

सही धर्मको सेवकी मर्यादा नहीं होती है।

१ जनवरी, १९४६

अगर हम साफ कागद [कागज] को देखें तो हम नहीं कह सकते हैं उलट क्या सुलट क्या। ऐसे ही अहिंसा और सत्यका है। एकके सिवाय दूसरा रह ही नहीं सकता।

काशी, २ जनवरी, १९४६

दुःखकी बात मानी जायगी यदि मृत पशु और मृत मनुष्य देहको एक ही खड्डेमें दफन किया जाय। विचार करने से लगेगा कि वही दुःखमें हम भव्य सुख उत्पन्न करते हैं कि सब जीवका ऐक्य सिद्ध करते हैं।

[सोदपुर जाते हुए, ३ जनवरी, १९४६

शारीरिक दुर्बलता सच्ची दुर्बलता नहीं, मनकी दुर्बलता ही सच्ची दुर्बलता है।

सोदपुर, ४ जनवरी, १९४६

सेवककी सच्ची बेंक आम जनता है जो बेंक कभी टूटती नहीं।

सोदपुर, ५ जनवरी, १९४६

जो त्याग दिलसे नहीं होता है वह स्थिर नहीं रहता है।

सोदपुर, ६ जनवरी, १९४६

दुःखके समय जो भगवानका दर्शन करता है, उसे कोई भय नहीं लगता है।

सोदपुर, ७ जनवरी, १९४६

जिस तालीमका असर हमारे चरित्रपर नहीं होता है वह कुछ कामकी नहीं है।

आसाम मेलमें, ८ जनवरी, १९४६

स्वच्छता जब भीतरी और बाहरी रहती है तब वह ईश्वरमयताको पहुंचती है।

आसाम मेलमें, ९ जनवरी, १९४६

हे जीव! तू अनासक्त है तो तुझे शोरगुलको और मारपीटको भी बरदाश्त करना है।

सरानी या गौहती, १० जनवरी, १९४६

तुझे क्या, लोग तेरी निंदा करे या स्तुति! जो धर्म समझ वही किया करे।

सरानी या गौहती, ११ जनवरी, १९४६

सबल ही क्षमावान हो सकता है। बलहीन दण्ड देने में असमर्थ है इसलीये वह क्षमावान हो ही नहीं सकता है।

सरानी या गौहती, १२ जनवरी, १९४६

जो अर्थशास्त्र नीतिसे भिन्न या विरोधी है वह निषिद्ध है, त्याज्य है।

जहाजमें धुबरी जाते हुए
१३ जनवरी, १९४६

मनुष्य वहां है जिधर उसका मन है, नहिं कि वहां जिधर उसका देह है।

सोदपुर, १४ जनवरी, १९४६

जो विरोधीकी दयाकी अपेक्षा करती है सो अहिंसा नहीं है।

सोदपुर, १५ जनवरी, १९४६

अनासक्तिका एक लक्षण यह है: अनासक्तका कोई कार्य दिनके अंतमें बाकी नहीं रहता।

सोदपुर, १६ जनवरी, १९४६

अनासक्तको अखूट [अटूट] धीरज होनी चाहिये।

सोदपुर, १७ जनवरी, १९४६

अनासक्तको कभी क्रोध होना ही नहीं चाहिये।

सोदपुर, १८ जनवरी, १९४६

जो मनुष्य यह मेरा और वह तेरा मानता है, वह अनासक्त नहीं हो सकता है।

मद्रास जाती हुई ट्रेनपर
१९ जनवरी, १९४६

अनासक्तको अपना कुछ नहीं हो सकता है।

बापूके आशीर्वाद (रोजके विचार), पृ० ३४७-४२६

परिशिष्ट

परिशिष्ट १

गांधीजी के साथ हुई अपनी बातचीतका लॉर्ड वेवल द्वारा दिया विवरण[1]

मैंने कांग्रेसी नेताओंके हालके भाषणोंपर खेद प्रकट किया और कहा कि हिंसाके प्रचारसे केवल हिंसा ही पैदा होगी, विशेष रूपसे भारतमें भड़कने वाले तत्त्व युवा विद्यार्थियों और गुण्डोंके होते हुए; और फिर जातीय व साम्प्रदायिक घृणाको उकसाने से ऐसा वातावरण पैदा नहीं होगा जिससे कि अगले वर्ष होने वाली बातचीतमें कोई हल निकल सके। उन्होंने कांग्रेसके भाषणोंमें हिंसाकी बातको स्वीकार किया और बताया कि वे उनकी उग्रताको कम करने की कोशिश कर रहे हैं। मैंने कहा कि हिन्दू और मुसलमानोंके बीच किसी तरहका समझौता होना आवश्यक है, भले ही यह समझौता बँटवारेके लिए हो। उन्होंने कहा कि उन्होंने हमेशा ही समझौतेके लिए प्रयत्न किया है, लेकिन वे अंग्रेजोंकी "फूट डालो और राज करो" की नीतिसे निराश हो गये हैं। मैंने कहा कि यह बेतुकी बात है, हमने तो दोनोंको एक साथ लाने की भरसक कोशिश की; साम्प्रदायिक भावनाओंमें वृद्धिका कारण १९३७-३९ के दौरान कांग्रेस मन्त्रिमण्डलोंके वे कार्य हैं, जिनसे मुसलमानोंने यह महसूस किया कि उन्हें कांग्रेसके हाथों न्याय नहीं मिलेगा और उसीसे मुस्लिम लीगका जन्म और पाकिस्तान बनाने के विचारका आविर्भाव हुआ। उन्होंने किसी हद तक कांग्रेस मन्त्रिमण्डलोंकी पैरवी की और कहा कि सभी गवर्नरोंने उनकी निष्पक्षताको स्वीकारा है। मैंने कहा कि इसमें सन्देह नहीं है कि मुसलमानोंपर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा है, भले ही सचाई कुछ भी रही हो; और उन्होंने इस बातको माना भी। तब मैंने कहा कि अंग्रेज तो भारतीय राष्ट्रवादियों द्वारा अंग्रेजोंपर लांछन लगाने और उन्हें गलत तरीकेसे पेश करने के आदी हो गये हैं। लेकिन इसकी भी एक सीमा होती है। ऐसे मौकेपर जबकि हम समझौता करने की भरसक कोशिश कर रहे हैं, हमारा विरोध करना कोई बुद्धिमानीकी बात नहीं है। दूसरे, स्वतन्त्रता मिलने के बाद भारत यह अपेक्षा करेगा कि रक्षा और व्यापारिक विकासमें अंग्रेज उसके साथ सहयोग करें। मैंने यह भी कहा कि जिस घृणाको इस समय उकसाया जा रहा है अगर उससे कोई अव्यवस्था पैदा हुई तो निश्चय ही मेरा यह

१. देखिए पाद-टिप्पणी १, पृ० २११।

कर्तव्य होगा कि मैं उसे दबाऊँ, और अपने अधिकारका प्रयोग करके मैं उसे हर हालतमें दबाऊँगा। इस बातपर वे सहमत हो गये और बोले कि भारतको व्यापार या रक्षाके मामलेमें ब्रिटेनसे किसी प्रकारकी भी सहायताकी आवश्यकता नहीं है। भारत अपने व्यापारका विकास अपने ही ढंगसे करेगा, और उसकी रक्षा अहिंसाकी नैतिक शक्तिमें निहित होगी जो कि अन्ततोगत्वा विश्वको जीत लेगी और विश्वमें शान्तिकी स्थापना करेगी। मैंने कहा कि हम दोनोंमें से शायद ही कोई इस अभीष्ट परिणामको देखने के लिए जीवित रहे, और सबसे महत्वपूर्ण बात तो अगले एकाध वर्षमें भारतमें व्याप्त हिंसाको रोकने की है। इसके साथ हमारी बातचीत समाप्त हो गई। वैसे, उनका रवैया अस्पष्ट होते हुए भी मित्रतापूर्ण ही था, और उनका स्वास्थ्य भी ठीक लग रहा था।

[अंग्रेजीसे]

द वाइसरायज जर्नल, पृ० १९२-९३

परिशिष्ट २

सप्रू समितिके प्रस्ताव[1]

बम्बई

२७ दिसम्बर, १९४५

संवैधानिक प्रस्तावोंपर अपनी अन्तिम रिपोर्टमें सप्रू समितिने कहा है कि "समिति एकल भारतीय संघके पक्षमें है, जिसमें पूरा ब्रिटिश भारत और सभी भारतीय रियासतें शामिल हैं; कोई प्रान्त या रियासत संघसे अलग रह सकते हों, यह अधिकार नहीं है।" यह रिपोर्ट २७ दिसम्बर, १९४५ को समाचारपत्रोंको जारी की गई थी। इसे माननीय सर तेजबहादुर सप्रू, माननीय श्री मुकुन्द राव जयकर, माननीय सर एन० गोपालस्वामी अय्यंगार और कुँवर सर जगदीश प्रसादने तैयार किया था।

अपने प्रस्तावोंमे इस सिद्धान्तको शामिल करते हुए समिति यह सिफारिश करती है कि चुनावोंके बाद जिस संविधान निर्माण संस्थाकी नियुक्ति की जाये, उसे एक ही राष्ट्रका संविधान निर्माण करने के आधारपर काम शुरू करना चाहिए और समिति यह अनुरोध करती है कि क्रिप्स प्रस्तावोंमें पृथक्-पृथक् रियासतों या प्रान्तोंको संघमें शामिल न होने का जो अधिकार दिया गया है, उसे वापस ले लिया जाये।

१. देखिए पृ० ४३३-३४।

समितिकी यह मान्यता है कि उसने पूरी रिपोर्टमें देशके सामने जो कई पेचीदा समस्याएँ हैं उनके प्रति रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाने का प्रयत्न किया है, प्रत्येक दृष्टिकोणसे उनकी छानबीन की है, प्रत्येक तथ्य, स्थिति अथवा विचारणीय तर्कका यथासम्भव निष्पक्षतासे मूल्यांकन किया है और उन निर्णयोंपर पहुँचने का प्रयत्न किया है जो कि उनके विचारमें भारतके स्थायी हितोंको बढ़ाने वाले हैं और ऐसी सम्भावना है कि प्रबुद्ध भारतीय इसे पसन्द करेंगे।

रिपोर्टमें कहा गया है: "समितिकी यह दृढ़ धारणा है कि भारतका भविष्य प्रजातन्त्रात्मक संविधान अपनाने में ही निहित है। प्रजातन्त्रमें अन्तिम प्रभुसत्ताधारी तो मतदाता है, जो कि उन लोगोंको चुनता है जिन्हें उसका प्रतिनिधित्व विधान-मण्डल और कार्यकारिणीमें करना है। अतः वयस्क मताधिकारकी सिफारिश की जाती है। वर्तमान स्थितियोंमें, धार्मिक समुदायोंको विधान-मण्डल और कार्यकारिणीमें सेवाके लिए न्यायोचित और पर्याप्त अवसर देने का अधिकार क्षम्य है, लेकिन इन पदोंके उम्मीदवारोंको यह महसूस करना चाहिए कि उनके पद पूरे राष्ट्रकी अमानत हैं और इसी कारण उन्हें सभी समुदायोंका समर्थन प्राप्त करना चाहिए।"

संयुक्त सामान्य निर्वाचक-मण्डल

समितिने सिफारिश की है कि पृथक् सम्प्रदायोंपर आधारित निर्वाचक-मण्डलोंको समाप्त कर देना चाहिए और उनके स्थानपर संयुक्त सामान्य निर्वाचक-मण्डल होने चाहिए जिनमें सीटोंका आरक्षण हो। समितिकी रायमें, भारतके लिए संसदीय सरकार अनुपयुक्त नहीं है और इसे विभिन्न सम्प्रदायोंवाले विधान-मण्डल या कार्यकारिणीके साथ-साथ चलाया जा सकता है। समिति द्वारा प्रस्तुत संवैधानिक प्रस्तावोंका एक आधारभूत पहलू अल्पसंख्यकोंके लिए पर्याप्त और कारगर सुरक्षाकी व्यवस्था है।

संयुक्त निर्वाचक-मण्डलके महत्वपर जोर देते हुए समितिका कहना है कि "कोई भी ऐसी सरकार जो केवल सत्तामें ही नहीं है बल्कि अपने निर्णयोंमें अपनी सक्रिय भूमिकाको स्वीकार करती है, न्यायसंगत रूपसे स्पष्टतः गलत निर्णयको (वह निर्णय जो कि मुसलमानोंके लिए पृथक् निर्वाचक-मण्डल बनाने के लिए चालीस साल पहले लिया गया था), जिसका प्रभाव इतना हानिकर रहा हो, ठीक करने के कामसे पीछे नहीं हट सकती। हम आशा करते हैं कि ब्रिटेनकी वर्तमान लेबर सरकारमें, जिसके इतने ऊँचे प्रजातन्त्रात्मक आदर्श हैं और जिसके पीछे भारी बहुमत है, संसदकी सहायतासे इस निर्णयको रद्द कराने में साहसका अभाव नहीं होगा। हमें इसमें सन्देह नहीं है कि इसको रद्द करना स्वयं मुसलमानोंके ही स्थायी हितमें होगा।"

केन्द्रमें समानता

चूँकि समिति पृथक् निर्वाचक-मण्डलको समाप्त करने को बहुत महत्व देती है, अतः इसका विचार है कि केन्द्रीय विधान-सभामें अनुसूचित जातियोंको छोड़कर सभी हिन्दुओं और मुसलमानोंके प्रतिनिधित्वमें समानता रखने में कोई बड़ी हानि नहीं है। इस सम्बन्धमें हिन्दुओं द्वारा उठाई गई आपत्तियोंमें बहुत बल है, क्योंकि इसका मतलब है कि आबादीके आधारपर अनुसूचित जातियोंको छोड़कर दो हिन्दुओंको एक मुसलमानके बराबर माना जायेगा और पिछले इतिहासको ध्यानमें रखते हुए यह भय भी कोई बेबुनियाद नहीं है कि संयुक्त निर्वाचक-मण्डल अपनाने की महत्वपूर्ण शर्तको लागू किये बिना ही ब्रिटिश सरकार समानताकी सुविधाको मान ले। अतीतमें, प्रत्येक विशेष सुविधा नई-नई माँगोंको जन्म देती रही है। लेकिन समितिने यह प्रस्ताव रखने का साहस पृथक् निर्वाचक-मण्डलकी समाप्तिपर होने वाली साम्प्रदायिक एकताके हितमें किया है। लेकिन यह इस बातपर जोर देती है कि जो शर्तें और सीमाएँ समितिने बताई हैं, समानताकी सिफारिशमें वे भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं। जहाँ तक समानताकी बात है वह केन्द्रीय विधान-मण्डलके निचले सदनमें और संघीय कार्यकारिणी तक ही, जो कि अखिल भारतीय नीति निर्धारित करने वाले अन्तिम अंग हैं, कायम रहेगी, और इसके लिए यह जरूरी है कि इस नीतिको ज्यादासे-ज्यादा हिन्दू और मुसलमानोंका पर्याप्त समर्थन मिले। लेकिन ये बातें प्रान्तीय विधान-सभा या कार्यकारिणी, या सेवाओं या प्रशासनके दूसरे क्षेत्रोंपर लागू नहीं होतीं।

सीटोंके आरक्षणके साथ संयुक्त निर्वाचक-मण्डलोंकी बात प्रजातन्त्रसे निश्चय ही हटकर है, लेकिन यह उम्मीदवारीके प्रश्नपर बिना किसी नियन्त्रणके पृथक् निर्वाचक-मण्डल और सामान्य निर्वाचक-मण्डलके बीचका अनिवार्य रास्ता है।

सेवाओंमें रियायत लागू नहीं होनी चाहिए

समितिका यह विचार है कि समानताकी रियायतको सिविल या सैनिक सेवाओं पर लागू करना अन्यायपूर्ण व अनुचित होगा। किसी भी दूसरी सेवाकी भाँति, सरकारी सेवाओंमें नियुक्तिका आधार व्यक्तिगत गुण और योग्यता होनी चाहिए। समिति यह भी नहीं सोचती कि मुसलमान शिक्षाके क्षेत्रमें उतने ही पिछड़े हुए हैं जितने कि वे तीस या चालीस साल पहले थे। जहाँ तक दूसरे समुदायोंका प्रश्न है, वर्तमान अनुपात उचित ही है, लेकिन भावी सरकारोंको उनमें संशोधन कर देना चाहिए जिससे कि पिछड़े वर्गोंको भी पर्याप्त प्रतिनिधित्व मिल सके। समितिका यह भी विचार है कि समानताके सिद्धान्तको रक्षा सेवाओंपर लागू करना खतरनाक होगा।

—मुसलमान एक अलग कौम नहीं है, इस मान्यताको स्वीकार करते हुए समिति पाकिस्तान या भारतके विभाजनके सन्दर्भमें यह मानती है कि जाति, भाषा या संस्कृतिके आधारपर मुसलमानोंकी पृथक् राष्ट्रीयता सिद्ध नहीं की जा सकती। यदि केवल धर्मको ही विभाजनका आधार माना जाना है, तब तो कई दूसरी जातियाँ भी अलग राष्ट्रीयताका दावा कर सकती हैं।

यह घोषित करते हुए कि आत्म-निर्णयका अधिकार कोई निरपेक्ष अधिकार नहीं है और इसे केवल परिस्थितियोंको देखकर ही लागू किया जा सकता है, समितिने भारतीय परिस्थितियोंके सन्दर्भमें और भारतीय जनमतको ध्यानमें रखते हुए पाकिस्तान बनाने की सम्भावनाओंपर विचार किया है। उसका कहना है: "स्थिति यह है कि श्री जिन्ना द्वारा प्रस्तावित पाकिस्तानकी योजना न तो पंजाब और बंगालके हिन्दुओंको, और न सिखोंको और न कांग्रेसको, और न हिन्दू महासभाको ही मान्य है। श्री जिन्नाने सी० आर० फार्मूलेको तो पूरी तरह ठुकरा दिया है और इसका पंजाबके हिन्दू और सिखोंने और बंगालके हिन्दुओंने भी विरोध किया है।"

पाकिस्तानकी स्थापनाका प्रस्ताव व्यवहार्य नहीं है

"इस प्रकार यह तो स्पष्ट है कि पाकिस्तानकी स्थापना सभी दलोंकी सहमतिके बिना नहीं हो सकती, अब चाहे वह श्री जिन्नाके आदर्शोंके अनुसार पूरा बने या फिर सी० आर० फार्मूलेके अनुसार खण्डित रूपमें, और इसकी स्थापनाका जबरदस्त विरोध होगा। इस सम्बन्धमें मध्यस्थताको तो नकार दिया गया है। वैसे भी जब पूरे देशके भाग्यका निर्णय किया जाना है, तो इसका प्रश्न ही नहीं उठता है। पाकिस्तानकी स्थापना केवल दो ही सूरतमें हो सकती है — या तो अंग्रेज जबरदस्ती करें या फिर गृह युद्ध हो।"

उपमहाद्वीपकी रक्षाकी समस्याओं तथा विभाजनके बादकी अल्पसंख्यकोंकी स्थितिपर विचार करने के बाद, रिपोर्टमें कहा गया है कि समितिका यह निष्कर्ष है कि "पाकिस्तान बनने से किसी साम्प्रदायिक समस्याका हल नहीं होता, बल्कि और नई-नई समस्याएँ पैदा होंगी: यदि अन्य प्रमुख विषयोंको छोड़ भी दिया जाये, तो भी रक्षाकी दृष्टिसे देशका दो स्वतन्त्र राज्योंमें बँटवारा, दोनों ही राज्योंकी सुरक्षाके लिए खतरनाक होगा और फिर यदि ब्रिटिश सरकारका भारतकी एकतामें, जिसकी उन्होंने स्वयं स्थापना की है और पोषित किया है, सच्चा विश्वास है तो ब्रिटिश सरकार द्वारा इस प्रकारकी विप्लवकारी योजनाका समर्थन करने का कोई औचित्य नजर नहीं आता।

इस रिपोर्टने प्रो० कूपलैंडकी क्षेत्रीय योजनाको "विलक्षण, अवास्तविक तथा अव्यावहारिक" बताया है।

विभाजन और बँटवारेसे सम्बन्धित सभी योजनाओंको रद्द करते हुए, समिति यह निष्कर्ष निकालती है: "हमें इतना तो यकीन है कि भारतका विभाजन एक ऐसा घिनौना कार्य होगा जो न तो इतिहास और न ही राजनीतिक औचित्यकी दृष्टिसे न्यायसंगत होगा। यह देशकी महानता, सुरक्षा व आर्थिक विकाससे मेल नहीं खाता और इसका परिणाम निरन्तर संहार या फिर निरन्तर विदेशी प्रभुत्व होगा। इससे अल्पसंख्यकोंकी समस्या हल नहीं होगी, बल्कि बढ़ेगी और उलझेगी तथा इससे भारतके १८ वी शताब्दीके अन्धकारमय और निराशाजनक युगमें चले जाने का भी भय है।"

समिति यह निश्चित रूपसे महसूस करती है कि "राजनीतिक एकता बरकरार रह सकती है तथा हिन्दू और मुसलमान भी सद्भावपूर्वक साथ-साथ रह सकते हैं, जैसा कि वे हजारों सालोंसे रहते आये हैं।"

रिपोर्टमें आगे उन व्यवस्थाओंपर विचार किया गया है जिन्हें अपनाकर भारत एकसूत्रमें बँधा रह सकता है और साथ ही सभी जातियोंको अपने-अपने विकासके लिए पर्याप्त अवसर भी प्रदान कर सकता है। इस सम्बन्धमें, समितिकी बुनियादी सिफारिशोंमें एक ऐसी व्यवस्था है जिसके अनुसार केन्द्रीय विधान-सभामें, विशेष हितोंको दी जाने वाली सीटोंको छोड़कर, ब्रिटिश भारतके मुसलमान प्रतिनिधियोंकी संख्या अनुसूचित जातियोंके अलावा, हिन्दू प्रतिनिधियोंके बराबर ही होगी। यह समानताकी पेशकश इस शर्तपर होगी कि संयुक्त निर्वाचक-मण्डलवाली बात सीटोंके आरक्षणके साथ, सभीपर यानी देशमें सभी निर्वाचित संस्थाओंपर लागू होगी तथा समितिने आगे यह भी कहा कि यदि मुसलमान इस शर्तपर सहमत न हों और पृथक् निर्वाचक-मण्डलपर ही जोर दें, तो न केवल इस पेशकशको वापस लिया हुआ माना जाये, बल्कि हिन्दू भी साम्प्रदायिक निर्णय (कम्यूनल एवार्ड) में संशोधनकी माँग करने के लिए स्वतन्त्र होंगे।

वयस्क मताधिकारके लिए व्यवस्था

दूसरी महत्वपूर्ण सिफारिश वयस्क मताधिकारके लिए व्यवस्था सम्बन्धी है। यदि राजनीतिक सत्ताको कुछेक लोगोंके हाथोंमें केन्द्रित होने से बचाने के उद्देश्यसे भारतीय लोकतन्त्रको हस्तान्तरित किया जाता है तो पूरी वयस्क जनसंख्याको ही मताधिकार देने का खतरा मोल लेना पड़ेगा। आम जनतामें राजनीतिक जागरूकता काफी बढ़ गई है और १९३७ में जो पिछले चुनाव हुए थे, वे तो अपनेमें ही बहुत शिक्षाप्रद रहे। आज औसत आदमी ज्यादासे-ज्यादा राजनीतिक दृष्टिसे सोचने लगा है, और अगर उसका निर्णय गलत है, तो वह किसी औसत यूरोपवासी मतदातासे किसी भी दृष्टिमें ज्यादा बढ़कर या ज्यादा घटकर नहीं है क्योंकि यूरोपमें तो वयस्क मताधिकार काफी समयसे प्रचलित है।

पाकिस्तानकी माँग किये जाने से पहले मुसलमानोंकी आम तौरपर राय यह थी कि अवशिष्ट अधिकार प्रान्तोंको ही सौंपे जायें, जिससे प्रान्तोंको उन मामलों में, जो अधिकारोंके बँटवारेके समय स्पष्ट रूपसे नहीं बताये गये थे, कानून बनाने की पूरी स्वतन्त्रता हो। यद्यपि मजबूत केन्द्रका मामला युक्तिसंगत है, समितिने समझौतेकी दृष्टिसे और शान्ति तथा सौहार्दको ध्यानमें रखते हुए, मुसलमानोंकी रायके अनुसार ही अवशिष्ट अधिकारोंको प्रान्तोंको सौंपने की सिफारिश की है। श्री पी० आर० दास और कुछ अन्य सदस्य इस सिफारिशसे सहमत नहीं हैं।

जबकि केन्द्रको सौंपे जाने वाले विषयोंको कमसे-कम कर दिया गया है, यह व्यवस्था की गई है कि आवश्यकता होने पर विभिन्न इकाइयोंके कानूनी और प्रशासनिक कार्योंमें समन्वय स्थापित करने और पूरे भारतकी राजनीतिक अखण्डता तथा आर्थिक एकताको कायम रखने का अधिकार केन्द्रको ही होगा।

समुदायोंका प्रतिनिधित्व

समिति संविधानमें ऐसी व्यवस्थाकी सिफारिश करती है जिससे केन्द्रीय कार्यकारिणीमें विभिन्न समुदायोंका प्रतिनिधित्व, विधान-मण्डलोंमें उनकी संख्याके आधारपर हो। मन्त्रिमण्डल केवल इस अर्थमें मिला-जुला होगा कि मन्त्रिमण्डलमें विभिन्न समुदायोंका प्रतिनिधित्व होगा, परन्तु सुव्यवस्थित कार्य-संचालनकी दृष्टिसे प्रधान मन्त्री द्वारा अपने सहयोगियोंका चुनाव करने में कोई बाधा नहीं होनी चाहिए। समिति आशा करती है कि सहयोगियोंका चुनाव, चाहे वे किसी भी समुदायके हों, उनकी राजनीतिक सम्बद्धताके आधारपर होगा। पृथक् निर्वाचक-मण्डलोंके स्थानपर संयुक्त निर्वाचक-मण्डलके लागू करने से उम्मीदवार सभी समुदायोंसे समर्थन प्राप्त करने पर मजबूर होंगे, जिससे राजनीतिक दलोंके उभरने में सहायता मिलेगी और इनमें से प्रत्येक दलमें विभिन्न समुदायोंके लोग होंगे। इन्हीं तर्कोंके आधारपर "सम्मिलित" (कोलीशन) सरकारके स्थानपर "संयुक्त" (कम्पोजिट) सरकारका विचार किया गया है। यह भी व्यवस्था की गई है कि विधान-मण्डलके प्रति सबका संयुक्त रूपसे उत्तरदायित्व होना चाहिए। समिति ब्रिटिश नमूनेको बेहतर समझती है अर्थात् जिसमें प्रधान मन्त्री अपने सहयोगियोंका चुनाव स्वयं करता है। वैसे स्विट्जरलैण्डके नमूनेको अपनाने का भी सुझाव दिया गया है, जिसके अनुसार केन्द्रीय विधान-मण्डल संयुक्त अधिवेशनमें एकल हस्तान्तरणीय मत द्वारा मन्त्रिमण्डलके सदस्योंका चुनाव करता है और मन्त्रीगण विधान-मण्डलकी अवधिके दौरान ही अपने-अपने पदपर बने रहते हैं।

भारतीय रियासतें और महासंघ (फेडरेशन)

भारतीय रियासतोंके सम्बन्धमें समितिका कहना है कि संविधानमें ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए ताकि भारतीय रियासतें फेडरेशनकी इकाइयोंके रूपमें

तयशुदा शर्तोंपर समय-समयपर शामिल हो सकें। परन्तु भारतीय संघ(यूनियन) की स्थापनाके लिए किसी भारतीय रियासत अथवा भारतीय रियासतोंकी किसी न्यूनतम संख्याका फेडरेशनमें शामिल होना जरूरी नहीं समझा जाना चाहिए। अतः समितिका विचार है कि यूनियन और फेडरेशनको एक नहीं समझना चाहिए और संघमें वे राज्य भी शामिल हो सकते हैं जो औपचारिक रूपसे फेडरेशनमें सम्मिलित न हुए हों।

समितिका कहना है: "हमारी सिफारिश है कि इस समय रियासतें और ब्रिटिश भारत जिस एकतासूत्रमें बँधे हुए हैं, नये संविधानको कमसे-कम वह एकता तो बनाये रखनी चाहिए, भले ही उनके बीचके सम्बन्ध संघीय न हों। हम यह मानते हैं कि फेडरेशन निकटतर, अधिक घनिष्ठ और प्रभावशाली बन्धन है तथा हम सच्चे दिलसे आशा करते हैं कि कालान्तरमें और पूरी तरह विचार-विमर्श और जाँच-पड़तालके बाद, सभी रियासतें भारतीय संघकी संघबद्ध इकाइयोंके रूपमें—कुछ तो अलग-अलग रूपमें और अधिकांश संगठित समूहों और उपसंघोंके रूपमें —शामिल हो जायेंगी। इस सुखद लक्ष्यको प्राप्त करने में जो अन्तर्निहित कठिनाइयाँ हैं, और १९३६-३९ के बीच लॉर्ड लिनलिथगोने जो बातचीत शुरू की उनके अनुभवके आधारपर यह आशा नहीं बँधती कि यह विचार-विमर्श और जाँच-पड़तालका कार्य अनेक वर्षोंके असीम धैर्यके बिना सफलतापूर्वक पूरा हो सकेगा। जो इकाइयाँ केन्द्रीय संघमें शामिल होना चाहती हैं, यदि हमने उन्हें उस समय तक लटकाने की कोशिश की, जब तक कि कुछ राज्य या राज्योंकी न्यूनतम संख्या अथवा अन्तिम अनिश्चयी राज्य फेडरेशनमें शामिल होने को सहमत न हो जायें, तो इसका अर्थ ऐसी नीति अपनाना होगा जिसका उद्देश्य विदेशी राज्यकी समाप्तिको और पूर्णतः स्वायत्त शासनकी प्राप्तिको अनिश्चित काल तक स्थगित करना है। अतः समिति इस बातपर जोर देती है कि भारतीय संघकी स्थापना इस प्रकारकी प्रतीक्षाके बिना की जानी चाहिए और भले ही अलग-अलग रियासतें यह फैसला करने में कि वे संघबद्ध इकाइयोंके रूपमें शामिल हों या नहीं, अपनी इच्छानुसार समय लगायें, लेकिन उन सब रियासतोंको शुरूसे ही भारतीय संघमें शुमार माना जाना चाहिए। इन रियासतोंको परस्पर और शेष भारतसे एक सर्वोच्च सत्ता (पैरामाउंटसी) के माध्यमसे केन्द्रीय संघमें शामिल माना जाना चाहिए।

जहाँ तक सर्वोच्च सत्ताका प्रश्न है, रिपोर्टमें कहा गया है कि "ब्रिटिश आधिपत्यको, जो कि इस समय सर्वोच्च सत्ताके अधिकारोंका प्रेरणास्रोत है, समाप्त होना पड़ेगा और नया केन्द्रीय संघ यानी केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल संघमें सम्मिलित न होने वाली रियासतोंपर अपने अधिकारका प्रयोग करेगा।" समितिको आशा है कि रियासतोंके शासक इस अपरिहार्य स्थितिपर आपत्ति नहीं करेंगे।

समितिका यह भी विचार है कि सम्राटके प्रतिनिधिका पृथक् पद समाप्त किया जाये और उसके अधिकार-क्षेत्रमें जो सर्वोच्च सत्ता है, उसे

केन्द्रीय मन्त्रिमण्डलको हस्तान्तरित कर दिया जाये। ऐसा सुझाव है कि रियासतों के मामले केन्द्रीय मन्त्रिमण्डलके एक मन्त्रीको सौंपे जायें और उस मन्त्रीकी सहायताके लिए एक पुनर्गठित राजनीतिक विभाग हो। जो रियासतें संघमें शामिल न हुई हों उनपर सर्वोच्च सत्ताके अधिकारोंका उपयोग करने के लिए भारतीय परामर्शदाताओंकी एक समिति भी मन्त्रीकी सहायताके लिए होनी चाहिए।

"राज्याध्यक्ष"

"राज्याध्यक्ष" के प्रश्नपर, समितिका कथन है: "सभी दल इस बातपर सहमत है कि संविधान भारतकी स्वतन्त्रतापर आधारित होना चाहिए और इस लिए भारतके लोगोंकी, केवल जिनसे विधान और प्रशासनके सभी अधिकार प्राप्त होने चाहिए, अपराजेय प्रभुसत्ताको कानूनन और वास्तविक रूपमें माना जाना चाहिए। किसी भी विदेशी सत्ताको भारतीय संघपर किसी अधिकार-क्षेत्रको लागू करने की अनुमति नहीं होनी चाहिए और इसलिए इस समयकी यह प्रथा किसी भी भारतीय राजनीतिक दलके किसी पक्षको मान्य नहीं होगी जिसके अनुसार "सम्राटके अधिकार-क्षेत्रमें सभी जगह पार्लियामेन्टमें सम्राटकी अक्षुण्ण प्रभुसत्ता" के सिद्धान्तके आधारपर. ब्रिटेनकी पार्लियामेन्ट सभी अवशिष्ट अधिकार प्रयोगमें लाती है। वर्तमान मुख्य प्रशासककी दोहरी भूमिका है — एक वाइसराय और दूसरी सम्राटका प्रतिनिधि। नये संविधानमें उसके स्थानपर राज्याध्यक्ष होना चाहिए। उसे वे अधिकार होंगे जो कि संविधानके अन्तर्गत उसे दिये गये हों और वे अधिकार भी होंगे जोकि सम्राटके पास हैं। इनमें वे अधिकार भी शामिल है जो कि भारतीय रियासतोंके सन्दर्भमें सम्राटके कार्यकलापसे सम्बन्धित हैं। राज्याध्यक्ष स्वेच्छापूर्वक काम नहीं कर सकता, उसे केवल मन्त्रिमण्डलकी सलाहपर काम करना होगा। उसका कार्यकाल पाँच सालका हो सकता है और सामान्यतः एक व्यक्ति इसपर कार्यकालकी एक अवधिसे अधिक नहीं रहेगा।"

अल्पसंख्यक अधिकार

अनुसूचित जातियो और दूसरे अल्पसंख्यकोंके अधिकारोंपर विचार करते हुए, समितिने यह व्यवस्था की है कि इन समुदायोंको भविष्यमें कानूनके द्वारा कार्यकारिणीमें स्थान दिया जायेगा और वे प्रशासनके उत्तरदायित्वमें भागीदार होंगे। संविधानके निर्माणमें उनकी बात अच्छी तरह सुनी जायेगी और जल्दबाजीमें किये गये किसी भी परिवर्तनके विरुद्ध उन्हे सुरक्षा दी जायेगी। इसी प्रकार उन्हें मौलिक अधिकारोंका, साथ ही देशमें सर्वोच्च ट्रिब्यूनल (पंचफैसले) द्वारा लागू किये गये अधिक महत्त्वपूर्ण अधिकारोंका भी लाभ मिलेगा। अल्पसंख्यक आयोग इनकी भलाईका सतर्कतापूर्वक ध्यान रखेगा और जब कभी उन्हें हानि पहुँचेगी, उन्हें राहत

दिलाई जायेगी। समिति आशा करती है कि जब उनके अधिकार सुनिश्चित और सुरक्षित हो जायेंगे, तो अल्पसंख्यक भी अपने बीच मौजूद उपजातियोंको नजरअंदाज नहीं करेंगे।

जहाँ तक अनुसूचित जातियोंका प्रश्न है, समिति सिफारिश करती है कि पूना समझौतेमें दिये गये निर्वाचनके तरीकेको जारी रखा जाये।

सशस्त्र सेनाओंका भारतीयकरण

सशस्त्र सेनाओंके भारतीयकरणपर विचार करते हुए समितिने कहा है, "सेनाएँ वास्तविक स्वराज्यकी किसी भी प्रणालीके अन्तर्गत ये किसी उत्तरदायी मन्त्रालयके सदस्यके मातहत होनी चाहिए। सशस्त्र सेनाओंके अनुशासन अध्यक्ष, कमाण्डर-इन-चीफ (सेनाध्यक्ष)को मन्त्रालयके आदेशोंपर काम करना होगा और डोमीनियन (राज्य)की समरूपताको ध्यानमें रखते हुए, सशस्त्र सेनाओंकी सर्वोच्च कमान राज्याध्यक्षके अधीन होगी; सशस्त्र सेनाओंके शासनके लिए भारतीय कानूनमें व्यवस्था की जायेगी और ब्रिटिश आर्मी एक्ट और इस तरहके दूसरे कानून जो भारतीय सेना पर लागू होते हैं, खत्म कर दिये जायेंगे।"

समिति राष्ट्रीय सेना बनाने व उसके शीघ्र विकासपर बहुत जोर देती है।

सम्बन्ध-विच्छेद

अलगावके प्रश्नपर विचार करते हुए, समितिको रियासतों द्वारा अलगाव सम्बन्धी क्रिप्सकी पेशकशमें निहित व्यवस्थापर घोर आपत्ति है। समितिकी राय है कि यह व्यवस्था विद्रोहको मान्यता देती है और संविधानको नकारती है। सारांशमें, यह एक संविधानेतर कार्यवाही है और संघकी कोई इकाई यदि संघसे अलग होने के अधिकारका अपनी पसन्दके मुताबिक एकतरफा इस्तेमाल करती है तो इस कार्यवाही को संविधानमें कानूनी मान्यता देना कोई समझदारीकी बात नहीं है।

समितिकी रायमें, संविधान निर्माण संस्थाको पूरे एक राष्ट्रके लिए संविधान निर्माण करने के आधारपर, काम शुरू कर देना चाहिए, और अल्पसंख्यकोंकी सुरक्षाके लिए यह भी व्यवस्था की गई है कि संविधान निर्माण संस्थाका कोई भी निर्णय तब तक वैध नहीं माना जायेगा जब तक उसे उपस्थित तथा मत देने वाले लोगोंकी तीन-चौथाई संख्याका समर्थन प्राप्त न हो। संविधान-सभाके वैध निर्णय ब्रिटिश सरकारको अवश्य मानने होंगे। समितिका कहना है कि अब वह अवस्था आ चुकी है जबकि ब्रिटिश सरकार उत्तरदायित्वसे और ज्यादा बच नहीं सकती। इसलिए उन्हें चाहिए कि वे मामलेको टालें नहीं और स्थितिको बदतर न बनने दें।

अन्तरिम सरकार

अन्तमें, समिति देशके सभी समुदायों और दलोंसे आग्रहपूर्वक यह प्रार्थना करती है कि वे इसकी सिफारिशोंमें निहित सिद्धान्तोंको स्वीकार करें। अगर कोई समझौता न हो, तो समिति सम्राटकी सरकारसे यह अनुरोध करती है कि वह केन्द्रमें एक अन्तरिम सरकारकी स्थापना करे और मुख्यतः इसके द्वारा बताये गये सिद्धान्तोंपर आधारित, एक नये संविधानके निर्माणके लिए उपयुक्त व्यवस्था करने के उद्देश्यसे आगे कार्यवाही करे और अब जो अधिकार उसके पास हैं उन सबको उपर्युक्त रूपसे स्थापित सत्ताको सौंपते हुए, निकटतम सम्भावित तिथि तक इसका कार्यान्वयन करे।

[अंग्रेजीसे]

द इंडियन एनुअल रजिस्टर, १९४५, जिल्द २, पृ० १७६-७८

सामग्रीके साधन-सूत्र

'अमृतबाजार पत्रिका': कलकत्तासे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'कंस्ट्रक्टिव प्रोग्राम : इट्स मीनिंग ऐंड प्लेस' (अंग्रेजी): एम० के० गांधी, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १९४८।

'खादी-जगत्': अखिल भारतीय चरखा संघ, सेवाग्राम (वर्धा) के तत्वावधानमें प्रकाशित मासिक पत्रिका।

'गांधीजीज कॉरस्पॉण्डेन्स विद द गवर्नमेन्ट, १९४४-४७' (अंग्रेजी): सम्पादक: प्यारेलाल, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, १९५९।

'गांधीयन कॉन्स्टिट्यूशन फॉर फ्री इंडिया' (अंग्रेजी): श्रीमन्नारायण, किताबिस्तान, अहमदाबाद, १९४६।

'द इंडियन एनुअल रजिस्टर, १९४५', जिल्द २ (अंग्रेजी): सम्पादक: नृपेन्द्रनाथ मित्रा, द एनुअल रजिस्टर ऑफिस, कलकत्ता।

नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय, नई दिल्ली।

'पाँचवें पुत्रको बापूके आशीर्वाद': सम्पादक: काकासाहब कालेलकर, जमनालाल सेवा ट्रस्ट, वर्धा, १९५३।

प्यारेलाल पेपर्स: नई दिल्लीमें श्री प्यारेलालके पास सुरक्षित कागजात।

'बा बापुनी शीळी छायामां' (गुजराती): मनुबहन गांधी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५२।

'बापुना पत्रो – ४: मणिबहेन पटेलने' (गुजराती): सम्पादक: मणिबहेन पटेल, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५७।

'बापुना पत्रो – २: सरदार वल्लभभाईने' (गुजराती): सम्पादक: मणिबहेन पटेल, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५२।

'बापू — मैंने क्या देखा, क्या समझा?': रामनारायण चौधरी, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, १९५४।

'बापूकी छायामें मेरे जीवनके सोलह वर्ष': हीरालाल शर्मा, ईश्वरशरण आश्रम मुद्रणालय, प्रयाग, १९५७।

'बापूके आशीर्वाद' (रोजके विचार): आनन्द तो० हिंगोरानी, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, १९६९।

'महात्मा: लाइफ ऑफ मोहनदास करमचन्द गांधी', जिल्द ७ (अंग्रेजी): डी० जी० तेन्दुलकर, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मन्त्रालय, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।

राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नई दिल्ली: गांधी साहित्य और गांधीजी से सम्बन्धित कागजपत्रोंका केन्द्रीय संग्रहालय तथा पुस्तकालय।

विश्वभारती, शान्तिनिकेतन।

'विश्वभारती न्यूज', जिल्द १४ (अंग्रेजी)।

'वेवल: द वाइसरायज जर्नल' (अंग्रेजी): सम्पादक: पेंडेरेल मून, ऑक्सफर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, लन्दन, १९७३।

'श्री भाईलालभाई पटेल, सित्तेरमी जन्मगांठ अभिनन्दन ग्रन्थ, १९५८ (गुजराती)।

साबरमती संग्रहालय, अहमदाबाद: गांधीजी से सम्बन्धित पुस्तकों और कागजातोंका पुस्तकालय और अभिलेखागार।

'हरिजन' (१९३३-५६): गांधीजी की देखरेख और हरिजन सेवा संघके तत्वावधानमें प्रकाशित अंग्रेजी साप्ताहिक। इसका प्रथम अंक ११ फरवरी, १९३३ को पूनासे प्रकाशित हुआ था; इसके बाद २७ अक्तूबर, १९३३ से मद्राससे प्रकाशित होने लगा; १३ अप्रैल, १९३५ से पुनः पूनासे प्रकाशित; तदनन्तर अहमदाबादसे प्रकाशित होता रहा।

'हितवाद': नागपुरसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'हिन्दुस्तान टाइम्स': नई दिल्लीसे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

'हिन्दू': मद्राससे प्रकाशित अंग्रेजी दैनिक।

तारीखवार जीवन-वृत्तान्त

(१ नवम्बर, १९४५ – १९ जनवरी, १९४६)

१९४५

१ नवम्बर: गांधीजी पूनामें।

८ नवम्बर: पूनामें हिन्दुस्तानी प्रचार-सभाकी बैठकमें शामिल हुए।

१० नवम्बर: भागलपुर जेलमें महेन्द्र गोपको फाँसी दे दी गई।

१२ नवम्बर: जवाहरलाल नेहरूकी गांधीजी से भेंट।

१५ नवम्बर: गांधीजी खड़कवासला गये।

१९ नवम्बर: पूनासे बम्बईके लिए रवाना हुए।

२० नवम्बर: बम्बईसे वर्धाके लिए रवाना हुए।

२१ नवम्बर: सेवाग्राम पहुँचे।

२२ नवम्बर: समग्र ग्राम विद्यालयके विद्यार्थियोंके समक्ष भाषण दिया।

२३-२५ नवम्बर: कस्तूरबा स्मारक ट्रस्टकी बैठकोंमें भाग लिया।

२६ नवम्बर: हैदराबाद राज्य कांग्रेसके सदस्योंके साथ बातचीत की।

२७-२८ नवम्बर: चरखा संघकी बैठकोंकी अध्यक्षता की।

३० नवम्बर: महिला आश्रम, वर्धामें भाषण दिया। कलकत्ताके लिए रवाना हुए।

१ दिसम्बर: कलकत्ता पहुँचे। सोदपुर आश्रममें ठहरे। बंगालके गवर्नर आर० जी० केसीसे भेंट की।

३ दिसम्बर: आर० जी० केसीसे भेंट की।

१० दिसम्बर: लॉर्ड वेवलके साथ बातचीत की।

१२ दिसम्बर: डॉ० एन० बी० खरेकी गांधीजी से भेंट।

१८ दिसम्बर: गांधीजी शान्तिनिकेतन पहुँचे।

१९ दिसम्बर: सी० एफ० एण्ड्रयूज स्मारक अस्पतालका शिलान्यास किया।

२० दिसम्बर: शान्तिनिकेतनसे रवाना।

२१ दिसम्बर: सोदपुर पहुँचे।

२२ दिसम्बर: आर० जी० केसीसे भेंट की।

२३ दिसम्बर: बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी और सम्बद्ध संस्थाओंके सदस्योंके साथ बातचीत की।

२४ दिसम्बर: मिदनापुर जिलेके लिए रवाना।

२५ दिसम्बर: महिषादल पहुँचे।

३० दिसम्बर: महिषादलसे कोंटाईके लिए रवाना।

३१ दिसम्बर: कोंटाई पहुँचे।

१९४६

१ जनवरी : स्थानीय कांग्रेसी नेताओंके साथ बातचीत की।

२ जनवरी : स्वयंसेवकोंकी रैलीमें भाषण दिया। मिदनापुरके राजनीतिक कार्यकर्ताओंके साथ बातचीत की।

३ जनवरी : कोंटाईसे सोदपुरके लिए रवाना।

४ जनवरी : सोदपुर पहुँचे।

५ जनवरी : कांग्रेस कार्यकर्ताओंके सम्मेलनमें भाषण दिया।

६ जनवरी : कांग्रेस कार्यकर्ताओंके सम्मेलनमें भाषण दिया।

८ जनवरी : सोदपुरसे असमके लिए रवाना।

९ जनवरी : अमीनगाँव, सौलकुची गये। गौहाटी पहुँचे।

१० जनवरी : गौहाटीमें।

१२ जनवरी : राजनीतिक कार्यकर्ताओंके सम्मेलनमें भाषण दिया।

१३ जनवरी : गौहाटीसे ढुबरीके लिए रवाना।

१४ जनवरी : सोदपुर पहुँचे।

१५ जनवरी : अलीपुर जेल देखने गये।

१७ जनवरी : डमडम जेल देखने गये।

१९ जनवरी : सोदपुरसे मद्रासके लिए रवाना।

शीर्षक-सांकेतिका

विविध

सांकेतिका

ई

उ

ए

ओ

क

ख

ध

न

भ

य

र

ल

ह

भूल-सुधार

प्रस्तुत खण्डमें पृष्ठ ३९, शीर्षक ५५ में मृदुला साराभाईके स्थानपर भूलसे मृदुला आरसभाई प्रकाशित हो गया है।